

## अथाची मिथ

प्रथम दृश्य

(भातू वन्दना—पवित्र वासक द्वारा सम्मिलित गाने)  
(असावरी)

धन्य धन्य मातृभूमि ! सर्वत्र ज्ञान मुक्तक खानि ।  
धन्य तो पवित्र मॉटि । धन्य अमृत तुल्य पानि ।  
धन्य तो बसात जाहिमे बरेछ ज्ञानजान ।  
धन्य तीर्थ सदाश देश आस्त तपोवन समान ।  
कोन देशमे भेलाह मृप विदेह सग महान ?  
कन्या ककर कोखिसे भर्तेव अलि सिधा समान ?  
ठाम ठाम ओखनधरि कीर्ति अलि चिन्तमान ?  
कतहु गीतमक मुण्ड, कतहु कविम मुक्तिक स्थान ।  
वाचस्पतिक डीह कतहु, मनेषक कतहु धाम ।  
कतहु पक्षधरक टोल, कतहु ज्ञानमक शम ।  
राजा शिव सिंहक कतहु पोखरि ओहमे उदार ।  
कतहु संस्कृतिक खोत मंडन मिथक इनार ।  
कतहु विसयीक नाछ जकरा तर बैसि बैसि  
संविज्ञ-कवि-कोकिल अमर विद्यापति कंठ गान ।  
कतहु सदा कटु मातृ खाडी महुँक साग मध्य  
ओखन चमकत अलि अथाची केर स्वाभिमान ।

## द्वितीय दृश्य

(पवित्र अथाची मिथ पूजापर बैठत छथि । आधीमे दूध दीप तीवेय, कुत्त,  
सराह, पंचपात्र, अर्घ्य, पंटी आदि ।)

(सालक शंकरक प्रवेश)

शंकर—माधुजी, मधुवीएत एकटा विद्यार्थी आएल छथि ।

पं० अथाची—देने अवियोग ।

(शंकर आधुनुकके नेने अर्पित छथि । आधुनुक पं० ओके प्रणाम कय  
बैसत छथि ।)

पं० (आसीदाद बैठ) —की समाचार ?

वि०—हम आधीन ग्यायमे जाचार्य कय सम्प्रति मन्त्रभाषक अनुमीतन  
कय रहत छी । आधुनिक प्रकरणमे एक ठाम गोक जका परिष्कार महि होएत  
अछि...

पं०—की ?

वि०—साधुतावच्छेदक समाधिच्छिन्न साधुतावच्छेदक सम्बन्धान्तरि निष्ठ  
प्रतिबोधिता निकषक के अभाव—

पं०—शंकर हेतुभावच्छेदक समाधिच्छिन्न हेतुभावच्छेदक सम्बन्धान्तरि  
साधुतावच्छेदक महि हेतु भाषित गोक । महि के ?

वि०—हूँ । वैह ।

पं०—शंकर, तोरा त ई विषय दूजल छीह ?

पं०—हूँ, माधुजी ।

पं०—एखन परिष्कार क' रहत ।

पं०—जैव ।

वि०—परन्तु ई त एखन...

पं०—अवस्था देखि महि सुझाव । ई अवच्छेदकता-प्रकारता आदि समस्त  
विषयमे निश्चित छथि । शंकर । आधुनिक नशाक बुझा रहत ।

पं०—देख, चिन्तामणिकार महिमे ई अक्षय कहैत छथि के साधुताक  
व्यवस्थित । अर्थात् सामान्य निष्ठ प्रतिबोधिता निकषक के अभाव शंकरा  
अधिकरणमे हेतुक वृत्ति महि भेलाइ सेहो व्याप्ति गोक । एखन त बुझिए गोक  
ईकैक ?

वि०—(कनेक अवसात करते जकी) —अरे ! है ।

स०—परम्व ई विद्यात लक्षण नहि । गनेश उपासनाय अग्रमे एहि लक्षण पर पहुँचेत छवि मे हेतु-व्यापकसाध्यसामानाधिकरन्व्य व्याप्ति । भुवोक्त परिभाषा और एहि परिभाषामे भी अंतर छैक हे भूमिदिक ?

वि०—नाह ।

स०—तबन बल, दुसा देत छी ।

वि०—(उदित) आश्चर्य । हम विदित्यक जेहन ताल भुवोक्त सलहूँ साहूँ अधिगमनराएष । प्रेषित बालक ई अपूर्व सत्कार । अग्र ई देश ।

पं०—संकर ! हिनक संका-समाधान कय पुनः जविहूँ । (संकर विचार्योके संक' जाइत छवि । पं० भी पुनः पुनःमे लखैत छवि । चौकेक कालक अनन्तर हमक इती सवनीक प्रवेश ।)

स्त्री०—ऐ ! अन्वगत जे देलाह अति सनिका जीवन की करैवेह ?

पं०—आइ मानत की भेल अछि ?

स्त्री०—साइ भाइ जेल अछि । वा डेहेंक चावर घरमे छलैंक तकर बत राजविदेक अछि और बाही महेक पटुबाक साम ।

पं०—तबन इही खुदा खोजा देखैहूँ ।

स्त्री०—परतु घरमे न दही अछि न खुदा ।

पं०—तबन सोहारी छामि दिखौहूँ ।

स्त्री०—परतु भोकस कहाँ अछि ?

पं०—(विचिंत मुद्रामे) तबन उपाय ? बाहीवेस किछु बहराएत ?

स्त्री०—चौकेक सम्हाल बहरा सकैत अछि । से कही न उछाड़ि क' सरि रिदैहूँ ।

पं०—परतु खंटाह कथीक संग ?

स्त्री०—नेनेधक हेतु चौकेक भगत छैक । सकरे कीसि कय सोहारी छामि देत छिदैहूँ ।

पं०—(प्रसन्न होइत) परक सज्जा कहाँ राखि गेल । गृहिणीके एहेन होमक बाही ।

स्त्री०—अबन गाव काकिहूँ नहि पुहल गेल अछि । बाही केर भ' बरतक सएकन काज अछि आइत ।

पं०—जेन ! हम दुहिवाके अवका १८वैत छिएक । लही और परतुन औरि-कालीक कर्ण ।

(स्त्री जाइत छविहूँ । संकरक प्रवेश)

पं०—को संकर ! सधरा मुसा देलहुन ?

स०—है । आज सधरा सधमे किछु संका छिहूँ से भोजनोत्तर हुता देजैहूँ ।

पं०—हो, कनेक गोविदा समातके त देखहोक । लोटा नैने आह । हुन हुता क' लेने आवहूँ ।

(अनर जाइत छवि । स्त्रीक प्रवेश)

स्त्री०—(अस्थान्त प्रसन्न होइत) ऐ, दिन फिर गेल ।

पं०—तै की ?

स्त्री०—घरमे अग्रमन जहमी आवि बेसीहूँ ।

पं०—से कोना ?

स्त्री०—बाहोमे कष्टाह उछाड़ैत छलैके कि छातीहँ ठस ह' बल्लैक ।

पं०—(विचिंत मुद्रामे) देखैत छिएक त कतलक कमवा ! सरि क' अणकी छैक ।

पं०—वास्तवमे ?

स्त्री०—हम भुति कहब ? तेना क' राइन छैक से हाथसँ टकतीने नहि हमसँ छैक ।

पं०—अही भीक जकी देखि लेलैकेक अछि ? सोने चिकैक ?

स्त्री०—अना सोन गहि चिन्हैक ? देख, एकटा नेने काएस छी । (पं० जी तबनीय कय देखैत छवि ।)

पं०—है, सबसँ चिकैक । कतेक रास हेतैक ?

स्त्री०—आब लीसे कलश महार होइक तबन ने भुतिऐक ।

पं०—वेश, त जाइ । बहार कौने आइ । अपना कुतै हैत कि गोविदाके बासप देखैक ?

स्त्री०—मला कहूँ । एहो एहन मरतु लोक जनका देखैत छैक ? हम मरतुहि उछाड़ि लखैत छी । (सटकल जाइ छवि)

पं०—(स्वगत) ई देखी कया भूति पड़ैत अछि । एहन अतिवि-सत्कारक हेतु करेन एकटा कौन नहि छल । आज मनीषा रहि गेल । अहा ! एहि देखीके

हम लाख छरि एकोटा आभूषण नहि देखिऐन्ह । परंतु तबधि कहियो मन छोट नहि केलन्हि । एहि देखि कहियो के भूषणक प्रबोजन को ? ओ त इतय भूषण होइत छथि ।

(शंकरक प्रवेश । छाती मोटा मेने ।)

शं०—बाबूजी, दूध त नहि भेल । गोपियाकेँ छेहरैयत कामनपर ल' गेलन्हि अहि ।

(स्त्रीक प्रवेश । कलश आवि क' राखि बैठ छथिन्ह ।)

स्त्री—एहिधे राखि क' लगकी भरल छैक । कलस उठोने नहि छठैत छैक ।

पं०—(विचार करैत) एहि स्वर्ण मुद्राक की होमक बाही ?

स्त्री—कभल पड़िबैत हमरा भूषण यदुवा दिव' जे पाहुन भेल सोहारी बनसहन । (एकटा लगकी बैठ) शंकर, हे, ई लई । सोइम मोदीक ओतय पति जात, एक सेर भूषण...

पं०—बल्लह, पथर । ई मुद्रा एकर अनामति रहत । शंकर, ई जोटा कन्धक राखि कय भूषण केने जाबहु ।

(शंकर जाइत छथि ।)

स्त्री—(अचरित होइत) ओहि जोटाकेँ शंकर यानि गिबैत छलाह । (कनेक संकुचित होइत) जाब दसक रखकक प्रबोजन को ?

पं०—(बगरीर मुद्राकेँ) ई कलस नहि जाति ककर छरोहरि भिर्क । आनक संभित केल तब हमरा लोकनि अपन कानमे लगानी से उचित नहि । सर्वसात्वक सिद्धांत छैक जे एहन इव राजकोपमे समर्पित क' दिऐक । राजा ओकरा प्रजाक उपकारमे लघावहि । (स्त्रीकेँ उदास होइत देखि) की, अहिक समय विवाह त नहि होइत छथि ?

स्त्री—नहि । अजय शास्त्रक एहने जाशा छैक तबन अमकर छन तय अथर्वक बाही के बनी ?

पं०—(प्रसन्न होइत) जाब हम निश्चिन्त भेलहुँ । कलसकेँ भूमि क' राखि दिथौक । ओकरा अनामति राजमे पठा देईक ।

(शंकर बाटीमे भूषण क' अर्पित छथि ।)

पं०—(स्त्रीकेँ) जाब कहाँ अरुपट सोहारी छानि लियन' । अतिथिकेँ भोजन करवाये विजय नहि होमक बाही । (स्त्री जाइत छथिन्ह ।)

पं०—शंकर, काँइ तोरा राज-समामे जात पड़तौह ।

शं०—जे आता ।

पं०—बल्लह, दशमपर । पाहुनकेँ देखिऐनग' ।

(दूध मोटे जाइत छथि ।)

### तृतीय दृश्य

विधिवेदक राजसभा—महाराज विद्वांसपर बैसत छथि । दरबार लागल छैन्ह । एक पाएक तागूरापर अर्पित छथि ।

(काफी)

धन्य ई विधिवेदक दरबार ।

सदधी तथा सरस्वती दूहु छथि अहँ एकाकार । धन्य०

जनिब विमल दशक विद्वानि विदित सकल संसार ।

वेद विहित शासन करैत छथि जे भूषण विद्यागार । धन्य०

गो-आश्रण-रक्षक दीनक पालक धर्मक अवतार ।

करनि निरन्तर प्रजा नगकेँ छन-जन सौँ उपकार । धन्य०

सदा सनातन रीति-नीति सौँ पालनि पुचि आचार ।

उचितक त्याग करनि नहि कहियो तजनि न कुज व्यवहार । धन्य०

पटित पुगी विविध अतिकेँ करनि सदा सखार ।

विद्वानक आदर करबामे जनिका हर्ष अपार । धन्य०

बानी एहन हित के जयमे के अछि एहन उवार ?

आत्त-दीनकेँ एना करै अछि दोसर के उधार । धन्य०

लौकिक-मताका होइछ जिनकर दिन दिन जग विस्तार ।

पुन-पुन औषध अमर नाम कय सुखी रहथु सरकार । धन्य०

(एकीक अगन्तर राजपरिषद उठि कय)—ओयान् । एकटा मेला दरबार मे उपस्थित भेल छथि जे किछु निवेदन करब चाहैत छथि ।

महाराज—वेण ।

(पालक शंकर सामने जाबि कय अभिवादन करैत छथिन्ह ओर आगमे बसत छथि पल बैठ छथिन्ह ।)

स्त्री पल यदि कहैत छथिन्ह—सरकार, सरिसवक एक ब्राह्मणक भूमिसे एक कलस बगरी बहुरूपन छथिन्ह तँह राजकोपमे बसा करवाक हेतु पठोने छथि ।



(दरबारमें) — साबु साबु ! कल काहण । को दे बिकाह ?

महा० — शकरजी ! अहो क नाम ?

सं० — शंकर ।

महा० — निनकर बालक ।

सं० — पं० जयराज मिश्रक ।

राजपंडित — भीमाव । सम्प्रति मोहन विद्वान देश भूमि के लो नहि बलि  
कोर संतोषी तेहन छवि जे सदा कहु शायी भाव छेह सङ्गोसं निर्वाह करैत छवि ।  
ओ ककरोसं किछु नहि दोगैत छविह । जे अपाची मिश्रक नामसं प्रसिद्ध छवि ।  
सरकार त हुनकर नाम पुननहि हेबैह ।

महा० — हो, हो । बहू बिकाह ? अहा ! ग्राम छवि । एहन विद्वानक पुण्य  
से ई मिथिला देश तीर्थ बनल अछि । मंत्री, कतेक स्वर्ण-मुद्रा छैक ?

(मंत्रीक संकेतसं दीवान ओ आगो बलि ओ कलक उत्तिनैत छवि तथा कछी-  
जहदी अगोपीक धाक लगवैत पर्वत छवि ।) सरकार एक हजार आठ टा बहका  
मोहर छैक ।

महा० — (राज पंडितसं) एहि हउक को होनक चाहि ?

राज पं० — कोनो लोकोपकारी कार्यमे लगगओल जाय । बाहिर ओहि  
छामक जयराजके विशेष उपकार होइक ।

महा० — हुनकर विचार जे ओहिछाम एक विद्यापीठ स्थापित कैल जाय बाहिमे  
विद्यार्थीयणके निःशुल्क शिक्षा ओ भोजन भेटैह । विद्यालय ओ सजमे और जे सर्व  
पहुँचक से राखसं देख जैक ।

दरबारी सभ — बहुत बलम विचार ।

राज पं० — ई विद्यापीठ हुनकहि नामपर ओलस जाय — मयाची विद्यापीठ ।

महा० — मंत्री ! एकर प्रबंध सीध होमक चाहि ।

मंत्री — जे आजा ।

महा० — बालक ! जहाँ की पढ़ैत छी ! एकटा श्लोक त सुनाइ ।

सं० — सरकार, जयन जनाओल की जनकर ?

महा० — (आपसं) अहाँ एही अवस्थामे श्लोक-रचना करैत छी ! जेह, त  
जरा क' सुनाउ त एकटा ।

सं० — बालीसहुँ अवदानन्ह । ममे बाला सरस्वती  
अपूर्णे पञ्चमे चर्चे वर्णयामि बहत् अक्षम् ।

महा० (चकिर होइत) बह ! की भूखें सरकार ! एहेन केनाके पुरस्कार  
देइक चाहि ।

राज पं० — अवश्य ।

एक दरबारी — ई श्लोक हिनकर जनाओल कवयनि नहि भ' सकैत अछि ।  
निदय केनो शिक्षा पढ़ा क' विद्या कैलैकैह अछि ।

दोसर दरबारी — यदि ई वास्तवमे जलोक बनवैत छवि त एही नाम समझा-  
पूति क' क' देखावतु ।

महा० — की ओ आभक ! जहाँ तस्कात समझा पूति क' सकैत छी ?

सं० — सरकार, ऐखन परीक्षा त' बल जाय ।

महा० — जेह, त कोनो समझा विजोग ।

(हुनू दरबारी आपसमे विचार करै) — हमरा लोकनि एकटा समझा हेत  
छिन्ह ।

सहजगीर्वा पुष्पः सहस्राक्षः सहस्रगन्धः

सं० — (सुरत)

पलितश्चकितश्छन्नः शयनो तत्र भ्रूयते

सहजगीर्वा पुष्पः सहस्राक्षः सहस्रगन्धः

सकल दरबारी — बाह ! बाह ! बाह ! की मिलवण समझार !

(सहाराज मुख भय व्यक्त रहतभाला उठारि बालकक गरमे पहिरा देत  
छविह ।) पुष्ट दरबारी हाथ मलेत छवि ।

महा० — शंकर ! अहाँक माता पिता अन्व छवि जे अहाँ सभ बालक-रत्न  
मेदगैह अछि । हम म/कोबाँद देत छी जे अहाँ अपने पिता समान यशस्वी होउ  
कीर हेतक भोरम बहाउ ।

(शंकर हाथ जोड़ि बिनयपूर्णक अभिवादन करैत छविह ।)

महा० — (राजपंडितसं) हिनक पिता वस्तुतः एहि श्लोक रहल बिकाह । हमरा  
बिनावा होइह अछि जे हुनका

राज पं० — (तपस) परंतु भीमान् ! ओ त' कतहु जाह नहि छवि ।

एक दरबारी — ऐ ! एतथा सर्व !

दोसर — एहग अभिमान ।

महा० — हम स्वयं जे क' हुनक वस्त्र करवैह । बाहिरा ओ कदा बहका  
छवि अछि जे पूछी स्वयं तुल्य चीक । मंत्री, होश बलवाउ ।



राज पं० - ई चिन्तार महाराजों हो !

सम्पूर्ण सरकार- महाराजक जय हो !

चतुर्थ दृश्य

(पं० अयाची मित्रक घर। पंडित अयाची मित्र कोनों प्राचीन साधन-रत्नसे लिखित ग्रन्थक सनस बंध रहत छथि। आसपास बहुत रास पुस्तक खोल छैन्ह। एही एक छोकीक खालीमे पिउर रखने ठकुरी बाहि रहल छथिन्ह।)

स्त्री - (ठकुरी कटैत) एखन छवि सकर देलाह नहि !

पं० - आविजहि हैवाह !

स्त्री - जय ज' मेर छवि ती आवेला होइछ ।

पं० - एखन देखे तलवा छमेर मेर छैक । कोनो बिधा नहि ।

(तेपयमे पंटा छवि)

स्त्री - बुझि पईत अछि जेना हाथी आवि रहल हो ।

पं० - है, प्रायः एही बिल आवि रहल अछि ।

(शंकर अद्वैत छवि)

पं० - (हैर छवि) बाबूजी, विविध स्वयं देलाह अछि ।

पं० - ऐ ! विविध ? जो कि एक कष्ट कैलहि ! (हृदयवा ज' घटैत छथि। स्त्रीकेँ) - ये ! खट दई सन समेट । महाराज आवि रहल छथि। छोट सी बोलैत नका कुमारा बिल्क दिओन ! खार, पैर धोबक हेतु पीड़ी पानि आनह ।

(शंकर भायकेँ प्रणाम कर एक लोटा पानि, पीड़ी तथा छड़ाम अद्वैत छवि। पंडितान पुस्तक सभकेँ समक्षमा राखि आसन तयार छथि -)

पं० - ऐ ! हय अतिवाति अर्ध छिन्ह ! अतिमिकेँ सत्कार कमी ज' क' करबैह ?

स्त्री - घरमे जनक सुवाची त अछि । घरगु...

पं० - जनपानक जायइ कथी ज' क' करबैह ? घरमे मखान हैत ?

स्त्री - बारि लोट रहेक से लक्ष्मी-पूजा मे भ' रेलैक ।

पं० - बाइको किछु बहुराएत ?

स्त्री - बू एकटा खरीक पाकस होइ से सम्भव !

पं० - (प्रत्यक्ष सय) देख, त बड़ी लक्ष्मी जनपान पठा देब । शंकर, तौहें जाह ।

(स्त्री और शंकर दुनू भीतर बंदत छथि। पं० अयाची मित्र महाराजकेँ

बहुरा अतिवाति अर्ध छिन्ह !)

पं० - बैसन होबी (हाथसे लोटा उठाय कर धोखाक हेतु उद्यत होइ छथिन्ह।)

महा० - (हाथसे लोटा नैत) हाँ-हाँ ! ई की ! अरसे थोड़क बिकहुँ । हय त बननेक दर्जनक हेतु आएल छी ।

पं० - हय त सरकारक एक साधारण प्रजा बिकहुँ ।

महा० - तहाँ सन प्रजा बाहि बेगमे रहबि के देश सय चीक ।

पं० - और अपने सन तबूब राखा बाहि राज्यमे रहबि के राज्यी सय चीक ।

(इह भोटे बँसैत छथि।)

महा० - हय अरसे किछु साजस आइल छी ।

पं० - हय कोन योग्य छी ? तयारि कहाँ छरि लाइल हैत ताहिमे अन्वया नहि करब ।

महा० - हमरा किछु सेवा करवाक आना भेटो ।

पं० - कोन सेवा ?

महा० - जयनेक नामसे ई परगना लिखि देबक चाहैछ छी ।

पं० - परगना ज' क' हय की करब ? सेवा कहुँ सहीतर नहि । जोहिमे जे साधनात बहुपद अछि ताहिसे उदरपूर्ति भ' जाइत अछि । उखन बेसी भूमिक प्रयोग की ?

महा० - लखन और जे इच्छा हो जेह आवेन सीत आव ।

पं० - महाराज ! हमरा नाम थोड़क अयाची मित्र । अह छरि एहि योग्यमे करोने किछु नाचना नहि कैत । ताकि कय एहि तरहेँ निमहि भेल । तखन आब थोड़क बिकहुँ हेतु एहि संकल्पकेँ बाग क' छी, ई उचित नहि । अनेक दानचौखता से नाम उठावक हेतु अनेको बाजान भेटि जैताह । हमर ठेक बाब दूटय नहि छैत अर्थक ।

महा० - सय बिकहुँ अरसे । एतना दिनसे हमरा हाथ बँदेला ऊपर रहैत आएल अछि । अह हय अनेक समय सन स' भेलहुँ ।

पं० - ई जयनेक सौभाग्य थीक ।

(साबल अंकर एक सराईमें डू हा पावन शरीका लेने अवैत छवि ।)

पं०—विधिवेग जाति क' सहृदय माहृष त नहि होइत छवि । परन्तु, एतन कबने हमर अविधि कबने छी । तँ एतना साहस करैत छी । (आगामे सराई राखि दैत छविम्ह ।)

महा०—ई अनुवग प्रसाद योफ । अमृत दुग्ध । एकरा हन अवश्य ग्रहण करब । परन्तु एहि प्रसादकेँ हम सब छोटे बाँटि क' खाएब, तँ अपना संग लेने जाएब ।

(महाराज बादरपूर्वक शरीकाकेँ उठा लैत छवि ।)

संकर—गाछमें बहुत रशी फरल छैक । और लेने भाउ ?

पं०—बताह ! एतेक राते पड़ि रेलमह, तथापि लेनमति नहि छूटजोहूँ जसि ?

महा०—अपने त हमरातँ नहि किछु मजलहूँ । आज हमही जानेतँ किछु मजल छी ।

पं०—विधिवेग और हमरातँ माउ'ब ?

महा०—हूँ । अवश्य बाड़ीक साग-पातक जे मुख्य अछि ते हमर सम्पूर्ण रान-मंझारक नहि । हम अनेई यह मजल छी जे ओहि बाड़ीक छोड़केँ साग हमार भेलब ।

पं०—जंकर !

(संकर बोहिक' जाट छवि और एक चर्चरी साग तोड़िक' लेने अवैत छवि । महाराज बादरपूर्वक घोषालावे लपेटि लैत छवि । पं० जी भीतर जा क' सागदेने जगेउ सुनारी लेने अवैत छविम्ह ।)

महा०—हम अनेक दसैतसँ कृतार्थ भेलहुँ ।

पं०—और अनेक चरणसँ ई कुटी छग्य क' गेल ।

(समगोटे ठठैत छवि ।)

पञ्चम बुद्ध

(अशाधी निष्क शङ्की । संकर तथा सवाही साग तोड़ैत छवि । पं० अशाधी ओहि साग बाहल धेनुक पीठवर हाव करैत छवि और ओकरा मुहमे सागक बाँट-पात दैत छविम्ह ।)

सं०—बाबूजी । हमरा जे पुरस्कार भेटल से त नहि देखल ?

(माया बहार कय देखैत छविम्ह ।)

पं०—ई रत्नक माता निकैक । साया महाराजक एहिरवाक चरु ।

सती—हामरे माता जय) एकर कसेक मुख्य वैनैक ?

पं०—हमरा लोकनि की बुलवैक ? परन्तु साय देवसँ कय त नहि हूँक ।

सती—मजल त एहीसँ सभल दुःख-कारिद्रु पार ?

पं०—साहिमे कोन सम्बेह ? अहाँ भाववती छी जे दुःखक समये कयाधने होबन भरिक बहल दूर भ' गेल ।

सती—(एकाएक किछु स्मरण कय) अरे, ई त बेस मन पड़ल, नहि त भारी बाप लसैत ।

पं०—सै की ?

सती—ई अज हक नहि राखि सकैत छी ।

पं०—सै किदेक ?

सती—जाहि दिन संकरक जन्म भेल रहैह तहिना समसिकेँ निछाउर देराक हेतु धरने किछु नहि रह्य ।

पं०—तखन ?

सती—तखन ओ कयार करा सेतक जे दिनक पहिल कयाइ के होइन्हि से हमरा ह' देख ।

पं०—तखन ऐतन ओकरा जया पठविओर ।

सती—संकर, जाह, मरणी भायकेँ बदा लखीक ।

(संकर बोड़ल जाइ छवि ।)

पं०—ई त बड़ रस रहल जे अहाँकेँ सनसपर मन पड़ि गेल । नहि त भारी प्रत्यक्ष लसैत ।

सती—अहाँ 'प्रथम कयाइ' लख के कहलियेक ताहिसेँ मन पड़ि गेल । बाद मरणी भाव वैदाल भ' जाइति ।

(संकरक संग मरणी भायक प्रवेश)

सती—सरणी जय । संकरक निछाउर त तोरा बाँकि छीह ।

मरणी भाव—की हूँक पातलिनी ? तखन ई कयाव जगताह—

सती—हिनक पहिल कयाइ मरने जाबि गेल से जँह । (माया हावसे दैत छविम्ह) तोरा अजसँ काइ उपाय भ' गेलहुँ ।

मरती माय—ई जाल फिर भगवत के हम की करव ? इहिले वरु पू पछेरी  
महुए ई दितहुँ व...।

रानी—बताहि । ई वेचनापर एक मोटा रमेना भ' जैतीह ।

म० माय—औरतक हौमा त' क' हम की करव ?

रानी—और नहि किछु ए एकटा पोखरिए खुवा लिह' । नाब ए रहि  
जैतीह ।

म० माय—हूँ, मनकीनी, ई त बेस कहत । जहाँ समझ प्रसन्न जेबु हमरो  
धर्म न' काएत । अपमान पहुँचै वेडा सभके देबुह ।

छठम दृश्य

(अमावी निमक ओह । सत्समीप चमेतिमा पोखरिक जोड़क निहू बंध )

एक कल्लव कोहि डीहपर आवि अतिपुर्वक बोड़ेन माटि सभ माथमे  
तपईत छवि । तबमन्तर हाथ जोड़ि अम्बग करैत छवि—

हे डीह ! अमर कीर्तिक निधान ।

जकरा कण-कणमे स्वाभिमान

विक बिप्र अयाचिक वर्तमान

से माटि धोक लन्दन समान

सावा कट्टा बाड़ीक साग

रखने छल जे साहायक पाग

तकरा सन बाड़ी कोन अन्ध ?

सम्तोषमयी तौ भूमि धन्य !

हे धन्य धन्य प्राचीन ओह ।

तौ पूजनीय धरणी बिकीह ।

जकरा पर कैलन्हि नाम अमर,

धधदाय, भवानी ओ शंकर ।

पोखरि चर्मेनिमा विद्यमान

एखनो करैत अछि कीर्तिगात

भुवेन तथा भूपति देशक

होइत छसाह केहन महान ।

प्रकटाउ अमावी मित्र केरि

जानू शंकर के एक बरि

गृहिणी पुनि होयि भवानी सन

सादर भल जिनकर जीवन !

हे डीह ! सत्सगुण मूर्तिमान

पदरज जकरा मे विद्यमान

होइत ब्रह्मपिक ठाग ठाम

हे पुनि ! जहाँ के अछि प्रणाम !

( पटाक्षेप )



## मंडन मिश्र

दृश्य १

[ मंडन मिश्र का इलाहाबाद का दृश्य । एकटा सड़की पतिमरनी भास नका लड़की पहिरने पालि भरि रहल जालि । एकटा मुवा संस्कारिक धवेस । कीरीन पहिरने, नाथ पूँइल, एंश हाथमे थपिड, दोखरा हाथमे कमंडलु, गैरमे धुआंभ, जलाटपर बदन-रेखा । ]

मंडनमि (पतिमरनीसँ) : ओठ मंडन मिश्र क घर जनैत छिऐम्ह ?

पतिमरनी : किरक मे जलजनि ? हुनको त इनाद छैन्हि । एहिठाम पतिमरनी भलि रहल छैन्हि । इम हुनके पतिमरनी छिऐम्ह ।

मंडन : तब एहिठामसँ कतेक दूर छैम्ह ?

पतिमरनी : (चिड़चिड़ाते) यँह पुचायी काल मे घर ऐबैत किरक से हुनके निकैम्ह ।

मंडन : ओहिठाम त डू टा घर देखल रहैत जालि ।

पतिमरनी : तबन मुँह । जाहि घरबाजपर अहाँके सुगाक पिजरा टांगल सेठय ओर सुगाक मुँहसँ 'हवतः प्रमाण परतः प्रमाणम्' सुनाइ पड़य छैह नृजन मे पंडन ओर घर धिरैम्ह ।

मंडन : (चलित होइत) दे । सुगाक मुँहसँ 'हवतः प्रमाण परतः प्रमाणम्' ।

पतिमरनी : एहिमे आश्चर्य कोन ? पंडन ओर ओहिठाम रातिदिन ओपठाक चर्का होइत रहै छैन्ह । हवतः प्रमाण परतः प्रमाणम् वाक्य ध्वनित रहल मुँहसँ रहै छैन्ह । तबन सुगाक मुँहसँ ई सभ शब्द नहि बहरैतक त की बहरैतक ?

मंडन : (ओर बेसी चकित होइत) जेय दे । अहाँ खवासिन भ' क' 'मीमासा'क नाथ कोना जनलैह ? हवतः प्रमाण परतः प्रमाणम् लोकनिक विषय लोक । ई सभ जान अहाँके कोना शक भेल ?

पतिमरनी : ओ मंडनमि ! अहाँके एतेक आश्चर्य किरक होइत जालि ? ई मिथिया देल जालि । एहिठामक साधारणो दूरबाज-घरनाह आधुनिक विषय मुँहसँ बाडि । ओर हम त मंडन मिश्रक खवासिन निकैह । हुनके अश्व-पालि देखल लागल जालि । तबन एतबो किरक ने कुतर्क ?

मंडन : अश्व ई मिथिया देल जालेक पतिमरनीओ एतेक आश्चर्य होइ छल ।

पतिमरनी : अहाँ कोन देशसँ आएल छी ?

मंडन : हम दूर दक्षिण देशसँ आएल छी ।

पतिमरनी : तबन हाथ-पैर ओठ । सत पीठ ।

मंडन : (स्वगत) एहन सीतल मिथिले हो । अश्वन खवासिनक ई हाथ तबन गोशालिन नहि जानि केहन हीहमिह । (पकड़) ओ दे ! अहाँक एहन अश्व संस्कार कोना बल ? अहाँ पढ़ि जालि अहाँक मनकिनी बहुत उच्च विचारक छल ।

पतिमरनी : किरक मे रहतीह ? सम्पूर्ण बैद-पुस्तक पढ़न छैन्ह, सभ साधने पारंगत छल, छोटी दसन मिह्लापर रहैत छैम्ह ।

मंडन : अब, एहन मिथिल ।

पतिमरनी : अहाँ मिथिल कहे छी ? ओ साक्षात् घररनतीक अवतार छल । नामो त सरस्वती छैन्ह । यथा नाम तथा गुण ।

मंडन : अहाँ ! सभ परिवार !

पतिमरनी : पढ़ने ई बदायक छँकुरी ओ आद-गोन का लिय । तबन जल पिउल । एहिठामक मेह भ्रमहार छैक ।

मंडन : जाहूँ रे जातिव-सरकार । भाट-भाटपर एहन सुंदर व्यवस्था । एहि पत्र-पुमि विरहक मेहनत गाय मुँहसँ छलहुँ ताहूँसँ जाति क' वैश्वरामे आएल । (पकड़) मुझे ! हमरा आश-पानक विशेष विषय जालि । अतएव अमा कक ।

पतिमरनी : तबन अहाँ बचानपर चल । हम गालिकके खबरि दैत छिऐम्ह ।

(प्रस्थान)

मंडन : सभ ई मिथिलाक बादि जाले कन-कनमे घररनतीक बात छैन्ह । एहि ओरमुनिमे आनि हुमर अन्य ताकत भ' गेल ।

## दृश्य-२

[ पवित्र मंदिर मिथक दलान । पिचकामे गुम्मा टाडन । मंडप सिध भासनपर नीवल पुका कय रहुत छवि । कदाविन कालि कहै छैहू- 'मासिक, एकटा दूर देखक संघासी आएन छवि ।' मंडप मिथक एकेतपर ओ एकटा मृगचने भानि ओहिठाम कोठा दैत छैहू । ]

( संकराचार्यक प्रवेश )

सं०—( अभिवादन करैत ) हमरा लोक संकराचार्य कहै अछि । अपनैक नाम सुनि हम गुरुर देखैत देखैत अपनैक द्वारपर उरखित भेल छी । आद अपनैक एतेन पावि हम कृतार्थ भ' गेलहुँ ।

सं०—हमर अहोमाय के साक्षात् संकरक अवतार संकराचार्य हमरा दर्शन देवक हेतु आवि गेल छवि । एहिसें वादि तीतपर ओर की भ' सकैत अछि ।

सं०—हम कयनेहँ एक मिला मंगिय आएन छी ।

सं०—की आदेश ? कहल जाओ ।

सं०—अपनैके हम गुरुवरु बुझैत छी । आदेश नहि, प्रायशः कय सकै छी ।

सं०—'सर्वस्वाभ्यगतो भुक्त' । अतिथि देवता शरक भंड होइ छवि । कोतर के नयनेमे लघु रहितहुँ अपनैक विद्यामे बहस्पति छी ।

सं०—हम एक विशेष अभिप्रायहँ अपनैक सेवामे उपस्थित भेल छी ।

सं०—कहुत जाओ ।

सं०—ओष्ठविलुपण जनसकें नास्तिक बना रहत छवि । लोककें बेदय आस्था उठल जा रहल छैक ।

सं०—मिललामे लोककें देखैत अत्यन्त निरुता छैक । एहिठाम नास्तिकताक जेग भाव नहि ।

सं०—परन्तु तपुर्व देखैत नास्तिकताक नवीन स्थापित करवाक हेतु हमरा लोककें संघटित होमय पड़त । हमर विचार अछि के कर्मकाण्डक विमिश्रता हमरा लोककें अनेक दलमे विभाजित कय देने अछि । यदि हमरा लोकनि वेदान्तक आधारपर देखैके एकताक मूलमे आसि सकी त बहुत उत्तम हो ।

सं०—हँ, ई त विचारणीय विषय हो ।

सं०—तेहू विचार-विमर्श करवाक हेतु हम एतेक दूरतें आएन छी । कोनो अज-दराजव्यवस्था आस्ताई नहि चाहैत छी ।

सं०—जहर जो वितण्डा त बाल-बिनोदक बहुल रिक्तैक । गम्भीर समयवाक सवावागि बाई द्वारा होवक चाही । 'बाई आदे जायते सरवबोधः ।'

सं०—बस, बस, हय येहू आहैत छी । सम्प्रति देखैत अगमहि विद्वानक मंगिपुट्ट निकहुँ । अनेक वादि के' एहि महत्त्वपूर्ण विषयक विवेचना के क' सकै अछि ?

सं०—परन्तु ताकि विवेचनमे एकटा मध्यस्थक रहब आवश्यक होइ छैक के विचार दृष्टि' दुहू पक्षक विषय सुनि निर्णय करय ।

सं०—हमरा अनेक बीचमे मध्यस्थक इच्छा नहि पड़त । तवापि यदि अनेक अनुपति हो त हम एक विवेचन करी ।

सं०—बहु ।

सं०—हमरा जोत जेल अछि ते जयमेक पत्नी भाग्यत् सरस्वती स्वरूपा विनोद । एतन विदुषी चरमे अछैत मध्यस्थक जोहूमे दूर जैबाक कोन प्रयोजन ? 'अक्त चापलु विवेत किमर्थ एतंत ब्रवेत् ।'

सं०—बेश, हय बजा क' पुछैत छिऐहू । ( निपथ्व दिस ) ए ! कनेक एहूँर त आएव ।

( सरस्वतीक प्रवेश )

सं०—( अभिवादन करैत ) अपनैके एकटा प्रार्थना अछि । हमरा लोकनि किछु शास्त्र-चर्चा करय चाहैत छी । अपनै मध्यस्थक आसन ग्रहण नैत जाय ।

सरस्वती—बेश । परंतु हमर प्रस्ताव होइछ के अहाँ लोकनि पहिने भोजन क' लैत बाट । नवन मुद्रास्त भ' शास्त्र-चर्चा करै जाएव । हमहूँ गृत्कार्यसं निविष्ट भव अट्टी दुनू गोटाक जन वसि सकय ।

सं०—जेहन अपनैक आशा हो ।

सं०—तबत बने जल ।

( तन मोटाक प्रस्थान )

## दृश्य-३

मंडप ओ संकर सोझ-तोझी छोट-छोट चौकीपर बसल छवि । बीचमे परस्पर एक ओंख तिहासनपर आसीन छवि । हुनका हाममे दू टा माला छैहू । ओ हुनके संघटित कय कहै छविहू—देख, यही दुनू गोटाकें हम एक-एक टा भाग पतिरा दैत छी । बिचकर पक्ष ग्लून हेतैहू तिनकर माला मोडि जैतैहू । ]



प्र०—बहा ! मन्त्रविद्याक एहूक जन्तकार निजिमे धूमिगोचर होइह ।

म०—बेह, त जहाँ प्रारम्भ कर ।

प्र०—प्रारम्भ करवात पूर्व हमर एकटा प्रार्थना ।

म०—से की ?

प्र०—यदि कांश/ण्डक खेठना सिद्ध भ' जाय त हमहु' बुद्धशास्त्रमे प्रवेश क' जाय । यदि कामकांडक खेठना सिद्ध भ' जाय त आनहु' ज्ञानास प्राप्त करी । ( मंडन मिथ मरस्वती विष्णु तर्क छथि । मरस्वती सवेतस रत्नकृति क' देख छथिन्ह । )

म०—बेह, हमरा स्वीकार छथि । एवमस्तु । जहाँ पूर्वपक्ष कर ।

प्र०—हमर पक्ष मे 'मन्त्र' अतिथि कहल' जैह जहँतक ग्राम धरम कल्याणक साधक थीक । कर्मकांडक ज्ञानसक-उदात्तता चाक हउपर आधारित थीक, जे पार-धार्मिक सत्य छथि ।

म०—जहाँक जे प्रतिज्ञा छथि सकर हेतु दिव' ।

प्र०—हेखासल विप्रहृस्वतने रहित न्यायकम-वाक्य पुरस्सर हुहु मोटा । कपलः अपना-अपना पक्षक प्रतिपादन करैत जात ।

म०—बेह, त सुनल जाओ ।

प्र०—जे खवासिन ! बाहरसे पदां अछा विजोकर ।

( खवासिन पदां उपवेश छथि । )

खवासिन—( पदांसे बाहर आविक' ) बस, ज' रेल । जाब बलस तम जिगासा, बह-जिगासा ।

( मंडन मिथक हवाहू हुर मेने अर्ध छैह । )

हुरवाहू—ऐ सुवृत्तमणि ! मालिक की करै छथि ?

प्र०—एकटा बड़का पंडित ऐलाहू छथि । हुनके संग शास्त्र-पत्रमि आगल छथि ।

हुर०—तखन त हुनकासे एखन भेंट नहिहू हूँ । जाब बलकीनिहू हिसाब क' देखीहू ।

प्र०—बलकीनिहू कोन कर छथि ? ओहो मारवासे बैसति छथि । अगिहु एबक काम क' रहल छथि ।

हुर०—तखन त हुनकी से भेंट देख दुईह ।

प्र०—एहो हारै त हमरा बाहर जाइ क' देखिहू अछि जे केओ नीतर आविक' जाय नहि देख ।

हुर०—तखन हमरा बोनि के देख ?

प्र०—हम देख । बलकीनी हमरा सभटा बार बोनि देने छथि । बस, बोनि बोनि बैत छी ।

हुर०—एखन त जहाँ बरक मालिक भेल छी ।

प्र०—से स तले । एखन हमरेपर सभटा अछि । जाब जने छी ई साक्ष्य मे कतेक विम परि पवै छथि ।

हुर०—कोन विषयपर मारवासे चले छैह ?

प्र०—मीमांसा ओ वेदमत्तपर । कर्मकांड ओ ज्ञानपट्टपर । मूर्धन्यायन ओ संवाचनपर ।

हुर०—तखन त जहाँ करिवापबला नहि छैह ।

प्र०—साहिब कोन सेह ? पुहु त दिगजे छथि । संभव से कहलूक दिन लागि जाइहू ।

हुर०—तखन त किहू दिन जहाँक राख बनत । देख, हमर बलकीनी बड़ बड़ा छथि । तीवरे किहू वेदि सेन छथि । जहाँ कंजूसी नहि करब ।

प्र०—बलकीनीक बस्तु छैह । अकरा अतेक बाहुमि क' सकैत छथिहू परंतु हमरा त जे अधिकार नहि छथि । तखन जुनादहरी जतना जहाँक प्राप्ति हूँ से बरखे भेटत । हम एको दामा गाहू कपक ।

हुर०—हम केवल परिहास केने छथिहू । आदापक अंत ल' क' के माथपर पर चढ़ाओत ?

प्र०—बेह, बस । हम जहाँक बोनि लोखि बैत छी ।

( हुहुक प्रत्याग )

दृश्य—४

[ मंडन, सकर ओ मारवासे बैसल छथि । मंडन मिथक माना सीसल छैह । मरस्वती मध्यरातक आवाजसे निर्णय सुनबैत छथिन्ह—अपनी पुहु मोटा साइत दिन पर्वत शास्त्र-पत्राँ कौल । बहुलो विषयक गभीर विवेचन भेल । हुहु पक्षक धुति हम अपनपूर्वक सुनल । अखि हुर गिरिय जैह छोड़ के सहर आर्थजीक वेदमत्त-पक्ष



समीचीन छैन्हूँ । ( माता दिस नाकि ) माता सेहो गृहि विषयक प्रमाण दए रहल अछि ।

म०—देवि ! हमहुँ अहाँक निषेधकें शिरोधार्य करै छी ।

म०—अब देवि ! अहाँक ई श्राव्य इतिहासमे अपर रहल । विद्वत्ता भी निषेधप्रमाणक एहन सुन्दर दृष्टान्त विवरमे भेटए दुनैथ । ( नमस् मिश्र दिस नाकि ) और अपनहुँ सेहो उदाहरणक परिचय देल अछि से जाइत छीक । अपने दुहु गोटा प्रथम विवह ।

म०—तबस हमरा की आज्ञा होइत अछि ?

म०—तुमर प्रार्थना स्वीकार हो । अपने सम्पत्ति-धर्ममे सीधिल भय वेदान्तक प्रचारमे सहायक बनल आव ।

म०—सम्पत्तिहीन, अछूत । एहन अहाँ केवल माया धनपर विषय प्रसक्त कीन छी । तिरक अहाँ गिनी हम त एहन धर्मपाते छिछेन्ह । अहाँ हमरागें शास्त्रार्थ कल । पहिने हमरा दरास क' जिव' अलग हिनका सम्पत्ति वनैन्ह ।

म०—( किछु कुञ्चित होइत ) परम्पू—

म०—( विद्वत्तेत ) परम्पू की ? खरी ई सम्पत्ति-पुष्ट करबामे पुष्टकें होइत अछि तबै छैन्ह । किन्तु शास्त्र-पुष्टमे त कोनो दोष नहि । रैदिको दुगमे शर्मा यागवल्कलकें शास्त्रार्थ कैं रहल ।

म०—हे त अवश्य । परम्पू—

म०—परम्पू किन्तु नहि । अहाँ प्रत्यक्ष कह ।

म०—देवि ! ई अवश्य है । अहाँ प्रत्यक्ष करी छै उचित ।

म०—बेस, तबस दिय' । अहाँक बहू त निषेधक अछि । तबस मृष्टि कोना करै छल ?

म०—मृष्टि केवल मायाक अछि । उहा अवगत अद्भुत शक्ति ई गृष्टिक सीमा

म०—अहाँकें मृष्टिक प्रमाण प्रस्तुत अछि ? ( तबस विचारमे लगेत छल ) बिना शीघ्रक विकार तबै मृष्टि भ' सकै छैक ?

म०—कनेक हुना क' सकै ।

म०—बिना शीघ्रक व्यापार तबै अद्भुत मृष्टि भ' सकै छैक ? बिना धातुक परिणति तबै शर्माधार भ' सकै छैक ?

( तबस हुनक मुँह तबैस चुप रहि जाइत छल । )

म०—धुन-मोहितकें शीघ्र होइ छैक से अहाँकें हुनकें म०—

म०—देवि ! छत्र करव । हमरा एहि विषयक पूर्ण ज्ञान नहि अछि ।

म०—तबस रहिने अवन-विमानकें सम्पत्ति ज्ञान प्राप्त क' क' जाइ । तबस हमराकें शास्त्रार्थ करव ।

म०—देवि ! हम अहाँकें दितव्य प्रमाण भी जानुवैक छी । मानि तब । तब अवन दरासकें स्वीकार करै छी । अवन-प्रक्रियाकें पूर्ण अध्ययन करैक उपरान्त शीघ्रकें सेवामे पुनः अवतरिब हैव । एहन आज्ञा भेटै ।

( दुहु गोटा कें अभिवादन करि अवतरि करै छल । )

म०—देवि । हमरा त प्रत्यक्ष ज्ञानकें मन छल । अहाँकें शास्त्रार्थ प्रमाणकें प्रमाणकें ?

म०—एहन तबस अवन नहि मानव अछि । किन्तु दिन और राहुँतब अवनकें अवन क' जिव' । तकरा उदाहरण त मठ को वैराग्य छैन्ह ।

दृश्य—५

[ सरस्वती, शरर ओ मन्त्रमित्रक प्रवेश ]

सरस्वती—मन्त्रमित्र जी, अहाँ प्रमाणानुसार जाबि पैसहुँ । शास्त्र अर्थकें उपरान्त अहाँकें पुनः श्रेष्ठ अछि अवनप्रमाण तब । अहाँकें उदाहरण हमरा छै । मन्त्रमित्रकें जनीत सिद्ध हैव । ( शान्ति ) जाने वरन-वध छी । जाइ शान्ति-गीतकें धारण करी छै उचित ।

म०—अवनप्रमाण ( भीतर जाइत छल । )

म०—देवि । जाने अवन प्रमाणकें । अवन अवनकें श्रवण ! एहमे पहिलकें शास्त्रार्थकें निषेधाकें पाठि अहिमादमी ज्ञानकें प्राप्त छल ।

म०—सम्पत्ति जी, हमरा केवल अवन कतबकें प्राप्त करै अछि । जनी छै अछि ?

( मन्त्रमित्र सम्पत्तिकें जेवने जाबि उदाहरण होइत छल । श्रेष्ठकें महल प्रमाणकें हममे कमजोर तबै । )

म०—सम्पत्ति । आव अहाँ 'सम्पत्ति' री सम्पत्तिकें जनि पैसहुँ । शीघ्रकें शान्ति तब । तावत् शिवा हमराकें त 'मिथ' । मन्त्रमित्रकें कमजोर अवनप्रमाणकें स्वीकार हो । कोनो मठ वा विद्यालयमे ई अवन जनि देखैक ।

( मञ्जन मित्र साक्षर प्रहृत करेन उक्ति । )

सं० — अरु अनेक नर नाभकरण हो छे उचित । देखीसो । जयनहि एकर  
उपयुक्त नाम बीछि देन जाइन्ह ।

सं० — हिनका देखत। जो ईश्वर हुइमे जगाव भनि छिन्ह । तेँ हमरा जीन  
सुखराचार्य नाम उपयुक्त देखिन्ह ।

सं० — बह छुन्दर ।

सं० — स्वामीजी ! जाब अहाँ हिनक संग भूमि जलपिपाक प्रकार कइ ।  
ओइ भिक्षुएण जेदक मूलोऽक्षर कन रहल छथि । अहाँ लोकनि देखिने पुनः साहित्य-  
साक संस्कार कइ । अहाँ पुनः गोटाक सहयोग मनि-काकन मोर मोर ।  
ई योग देनक हेतु कल्याणकारी हो ।

सं० — भगवति ! अहाँक वरदान सकत हो । हम अहि भिक्षाक हेतु पुनः  
दूर जाएल छलहुँ छे भेटि गेल । अरु हमरा जीनक समस्त वीच मनोरथ पूर्ण भेल ।  
अन्य अहाँ संग हकी ! अग्य हिनका मन स्वामी ! ओ अग्य अग्य भिक्षा देल !!!  
अने एहन एहन आदर्श-द्वयनि होइत छथि ।

( अग्य सयोग )

अग्य ई पावन भिक्षा देल ।

बिहुनी अहाँ सरस्वती सन और मञ्जन सदाश द्विजेष्ट ।

महिमा जिनकर शक्ति अने छथि, स्वर्ग शारदा जेष्ट । अग्य०

( वटाक्षेप )

□

## एहि बाटे अबे छथि सुरसरि धार

( १ )

आइसो पचास वर्षक बाद ! सौराष्ट्रमे सामुदायिक बिबाह मजबूत रहल अछि । समाजसेवा भोजनक अन्तर्गत जनमन्दिरक प्रांगणमे सभा भवित अछि । अन्तर्गत नरनारी समवेत छथि । एक बृद्ध सौराष्ट्रक इतिहास पुनः 'एहि छथि—' एहि सभहे २० वर्ष पहिने एहि सभा गान्धीमे बन्दल गमल छल । ह्यागेक शोक जानल जाइत छल । 'कल्याण'क वर्ष क' लेल छल 'कल्याण', जाहिमे ककरा बने छलह काकाक पिता । ... प' खु एक दिन गोपबिन्दु बट घरि बेचक खोर अविनय सीता मकट भेलोह । मिथिलाक माँ सभ'मे नभ देवता आबि गेलन्ह । ओ गंगाक सहरि अका बइलोह और जोहि सहरिमे समस्त बटक पंजियार जा ति बकप्राही बर बरना ब'पक समेत अतिथा क' वि गेन भ गेलाह । और ओहि कनकके ओ पोछि क' सौराष्ट्रक ई पुण्यभूमि धरमपत्नी बनि भेल छथि, जहाँ प्रतिबन्ध विवाह यज्ञक समाप्ति होइत अछि । एहि सीधेमे मे से ई पाँच दश वर्षमन्दिर बसति रहल अछि जाहिमे सदैवक अपन इतिहास छैक ।

ई सभ परिवर्तन कोना भेलक ? देख, अतीतक समीक्षा देखाओल जा रहल अछि ।

( २ )

मध्यम स्तर चलल । १९११ । सौराष्ट्र सभा जमकल अछि । बङ्क गच्छाद बरक भेला आदल अछि । हमरो शहरजी ओछाओल अछि, जाहिपर हमरो बाप अपना-अपना बालकके ओझा पहिरा कम बेसोते छथि । जाल पोषर धानी, देसवी खादर को गुछा, सूट धी टाह, सभ प्रकारक बेधपूपाई मुसविस्त 'नाम' विचवार्न रहल अछि । सभसभ एके छप्प छलि रहल अछि—'कौ हमार ?' कुम्भारक पुत्री जका विद्यावत पुत्री कहा रहल अछि । कल्याण लोकनि तहिना बहुको मन्दिरके समीप करैत बने छथि जेना सीतामढ़ीक हाठमे आएल होमि । बटक लोकनि बट बका मुँह कोते छथि ।

एहि बीचमे एक बङ्का पिहकारी छल । को बाल छैक ? एकटा लोक बरक हरी अपना पतिव्रत छंग एहि सभमे पदार्पण कैलन्हि अछि । बाकफाव

एहि बाटे अबे छथि सुरसरि धार २२२

कोक-टिप्पणीक बोझार भेल रहल छल—'बाम रो बाप । एहन कजपुत ब'ने के कहियो ने भेल छल । आइ घरि सौराष्ट्र सभामे लोक धीर रहि पड़ल छल । ई क' बिक्री ? को करय आइति छथि ? एहिमे क' बोमो समाशा छैक ?... की वर्ष छथि ? कजपुत ! हम अपने समस्त आँवर पसारि एक विधा मागि रहल छी ।'

...बरे ! ई स तिसक दहेकपर जेवपर श'य आएल छथि, एह दिनकर मुँह देखि क' लोक तयार छाड़ि देल । ई कसि क' पिहकारी ! हा हा हा हा.. ही ही ही ही.. इ इ इ इ

महिमाक माँसमे तोर भरि ऐलन्ह । एक दुस दस ब' पृथ्वीपर कजपुत, रोम जलम ।

बृद्ध बचसाह—बर्म नौरक ओ प्रथम बिन्दु क'मिदक प्रथम बिन्दु छल ! अ छि ठाम ओ समल नाहि ठाम एकटा मन्दिर अछि गेल । ई जे 'अधुना'क प्रागजनीक मन्दिर देखैत छिएह ते तकरे हमारक बीक ।

( ३ )

रोजर रोल चलल । १९२२ । एहि बेर सौराष्ट्र सभामे एक मूख प्रगतिशील लोका टोम-ब'क हुनु छल म' आइति छथि । ओ लोकनि मारा सदा रहल छथि । बिक्री बरा बर, जाबु कपल बर । जे मंगला हमार, से रहल दुभार... सभसाह, से कलसह । बटक पंजियार, होछ होछियार । आब गति पतत ई रोमदार ।

आइतूर पवित्रत समाजमे बोबाजय मुक होइछ । एहि ठाम हरीपलक कोन काज ? ई लोकनि अपने-अपन पकमकी देखावत आएल छथि । भना, सीधेमे 'पुढक' नामे दखल देबाक कोन प्रयोग ? आइ, अपना बरक काल 'ब'त' 'न'ब'न' सीधु । बुरिहू फू'यु । नोतासलिक पूजा करय । वेग'के' गानबुन । जनपद ओठ छैन त मतार गानबुन' । एना बिकरि किएल छथि ?

बरहामे खडक नचि गेल 'हम सम दल हमार सेम बा कोस हमार भव । साहित्य हिका कोन मतलब ? गहरीके' मेम सोदावर' देखा । इहो म'निक बेट' नरममे करतीह । नखन हँसोमि क' तिहति । एखनेसे अपना प'न'न' धोओ कि एक मारि छथि ? ई सभ गृहमकी महि, परिश्रम छथि । ने न'न'न'मे जनक लेबय देखिह । हमार'बिनी महिमत ! हे, देवहो । एहे दक्षिण बनि बने कोह । ई सभ सभामे क'ति की ? देवहो, बरन ।



देव, पारिक। एव, दु, गीर, पारि... ई त हाँवत हूँ। ताँ तनी पड़ि रहै।  
मेरा बाबाक धाममे गेटहुनिदा देवय धाधनि हो।

आध बोध बाबू दरवाक मोटरी नेमे कोटहर व' क' निकलताह। आरुणा  
बाट देखने छैन्ह, बोध बाबू भारी जवजहमे पड़ल छथि। ने तैत बने छैन्ह, ने  
छोरेन। हे मिये। आरुणा। बोध बाबू हाका फोरि रहल छथिन्ह। सधामह  
बलक नायिका हुगका मायमे रोड़ीक गिनक लगा रहल छथिन्ह। दरहु ई की  
कहूँ। धननायिकाक बाबवर कैओ रोड़ा फेलकमिह। मोरल सिंगुर बरौ रक्तक  
धार बूधम लगलैह। मैह, टप ह' एक बुध धूमिपर बलन। रोल बलन।

बुध बलनाह—ई कर्मिक बोधर भिषकी छल। आहिठाम ओ रक्तधु  
खमा, लाहिठाम एकटा दोसर मंदिर बनि गेल। ई मे 'छिन्नमस्ता' मन्त्रकी  
मंदिर देखै छी से तकरे स्मारक भीक।

( ४ )

आध तेसर रोल बलन। १२६६। एहि बेर सु दक मुँह भिक्षिया मय-  
पुवरी हाथमे चताका लय बुनि रहल छथि। मोरी जकाँ मल कैंने—हरब तिनक  
मल रहल कुमारि। मे महि करताह द्रव्यक भनि, मैह भरताह कम्पाक भान।  
गिनक कक दूर, तखन धिय' छिन्नुर।

बलाकालीमे कलबली भनि गेल। कुमारि सभ लाग धाधके' पोरि क'  
बोधि गेल। विवाहक हेतु अछलत अछि। ताहि दिनक लगल दहिरीकल गोटेक  
एला एक चुटकी सिंगुर छोटि क' समके' रक्तिलामे बरक क' लिनेह। परगु भाष  
न केओ लेहन पुच्छि गहि। हे हस्तिह देव। हे मरुदेव सा। अहाँ लोकनि  
कतय छी?

ही पाव। तौ जे कहल, मुदा ई नववोवराक फोल लगे तँक छरि बेत  
मनगल। की कहे छह? अबनुरिया मम कंचनन' बेतो आगिनीके' मुनेत छथि।  
दरसँ गुनके' अक्षिक महत्त बँत छथि। कम्पाक तेओरँ बरक भरमे मदी आगि  
लेनेह। ओ बिना रामे कम्पाक गुलाम बनि रहल छथि। हे देखह एकटा बर  
छान-बगह मोहि मोहि स्वयंवरक दलमे जा मिलन। मैह तँह। बोहर, पैसर,  
पारिब, कहाँ मरि मनवह? बम बर कनक साँझ जकाँ छप छप आगमे फँसल जा  
रहल छथि। आब बाप यथिया यिया क' रक्ते रहल रहल। देखह, मोहि बरक  
गरमे एक कम्पा भाया दय रहल छथिन्ह। नववोवराक बम आरती कय रहल  
छथिन्ह। तखनी तब तब ककि रहल अछि। रोल बलन।

एहि पाटे बने छथि मुरतरि आर/१२१

बुध बलनाह—तहाँ ओ बँस दूवस गेल तहाँ बेतर मंदिर बनि गेल।  
छोटमे जे तिलकासुरमिनीक मंदिर देखैत छी से तकरे स्मारक भीक।

( ५ )

पारिब रोल। १२६८। एहि बेरक कालि लुली गहि, आनाक भीक।  
महसोमारी एहिबेर तीराठ तकापर आरमण क' देने छथि। गाम-गामसँ, बर-बरसँ,  
रहीगन जना भेल छथि। जे लोकनि पहिने मेहो छनीह सेहो सभ भेरीनाद कय  
रहल छथि। रजबन्दी बलक सवस्था अद्भुत साहब देखा रहल छथि।

एकटा दृश्य देखू। बरक बाप बज्जामसँ सभा रहल छथिन्ह। आनी  
पुर्वी-पुर्वीत कम्पाकल आनी बरक जा रहल छँह। ताहो भीममे एकाएक  
बरीनन' धिनली जकाँ कम्पा आगिभूँत कय कहे छथिन्ह—'हमरा हेतु गनी, स  
हमरा साय जनी'। सायत कम्पा ओ बरक माय छहो कोहिठाम आगि बाह छथिन्ह।  
बरक माय पैली छीनि कम्पाक मायक हाथमे बँत छथिन्ह और बरक हाथ कम्पाक  
हाथमे। बुनू सनधिन सर मिलैत छ' और बुनू सगरी बराक व' देखैत छथि।  
मेरवसँ जयघोष होन अछि—'मेहर, दाँसीक जय। पुनारपुरवासीक जय।'

देखैत-देखैत सभाक बापओर रहीगन हाथमे आदि गेल। ओ लोकनि  
समस्त बटुका वंदी लो गबिया जना कय होनिकादहन कैमिह। देखू, मोरी  
बराबमे बायक बाब साँझि पोछा धु-धु कय बरि रहल अछि। मोही बनिने  
छापी कय बहली बर-कम्पाक विवाह क' रहल छँह। रोल बलन।

बुध बलनाह—बाहि स्वाममे ई होनिकादहन भेल, तहाँ पारिब मंदिर  
बनि गेल। ई जे 'गामापुखी' बीबीक मंदिर देखि रहल छी से तकरे स्मारक  
भीक।

( ६ )

पारिब रोल। १२६९। एहि बेर कम्पाक दोसर दृश्य अछि। बरकओ  
नर-नारी सभसेत छथि। विचार होइ अछि जे सोराठक काबाकर कय सोराठ  
बना हो। तिरक-नदेक प्रवा स बाब छठिह गेल। परगु वयापि सभासमे  
कोक व्यक्ति छथि जे बेटा-बेटीक विवाह पाकाँ जकाँ बाह अछि। बार-दोर ओ  
विधि-व्यवहारक हेतु फँत बेधय पहुँत छँह दिनका लोकनिक रजामे एहिठाम  
धोबुदायिक विवाह-पत्रक नववरा कैम जाय। साँझनिक अग्याँ टका संघ कय  
ईश्वर कार्य हो।

देखें-देखें ई प्रस्ताव कामे कामे परिणत हुआ छल अछि । आज साप्ताहिक विवाहक वृद्ध देख । सहस्रों भागक बर-कन्या इहोम वपन माता-पिताक संग उपस्थित छथि । हिनका लोकनिक विवाह भ' रहल छन्ह । वैदिक निष्कर्ष हवन पूरवपर । परन्तु कोनो आश्रय नहि । आर्यो रीतिभे । विद्वान् जन य पुरोहित बैसल छथि । ओ देवीपर बर-कन्यासँ प्रणिजा करयल छथि । नमो भक्ति विधिका आवस्यो शासन करय । विधिका भारत मातृक हृदय इकठप भिड़ोह । हन हुनकासँ नवीन छति सांसार कह देखके अनुप्राणित करय । अम मई विधिसे ।

एव प्रकारे सहस्रों विवाह संवस कर रहल अछि । गौतमाय, भोजमाय, समक प्रवस साप्ताहिक रूपसे अछि । यत्रक समायनम समदाउनिसे होइत अछि । कन्या जोशनि माता-पिताक आशीर्वाद संग वपन-वपन समीप पर असाध्य हेतु ना रहल छथि । गौतम सम रहल अछि—

“बर रे जवन सी सिराजीके पोससहु ।  
विद्या विविध ब्रह्म ।  
मृहक कायमे निपुण बनोसहु ।  
बहु-विधि कला सिखाय ।  
सुन्दर शीस स्वभाव बनोसहु ।  
अन्यादखे बेधाय ।  
तेहन धियाके पठा रहल छी ।  
सामुर योग्य बनाय ।  
जाउ धिया निज सामु-समुर संग ।  
पति सो प्रेम लगाय ।  
रहब कृपाल सी, सदा प्रकृतिस्त  
परके स्वयं बनाय ।”  
(रील अष्टम ।)

बुद्ध वज्रसह—आहि ठाम एहि साप्ताहिक विवाहक लारा छि विवाहक लारी पौचम मन्दिर ननि गेल । ई जे ‘वरदा’ देवीक मन्दिर देखैत छी ते तकरे स्मारक भोके ।

सम रील समावे प्र' गेल । बुद्ध वज्रसँ गेलाह—“...एहि तरहें अपने देखि गेल छी ई सौराठ कोना ‘सौराठ’ ननि गेल । अत पचास वर्षत एहि प्रमंगली मे साखी प्रम-विवाह भेल अछि । विधिका एहि विवाह-यज्ञक अनुकरण जानो

जन प्रीतिमे भ रहल अछि ।... पचास वर्ष पहिने के सौराठक गाछो कलकलकर मगै छल छी आइ देवक पवित्र तीर्थ ननि गेल अछि । आहि देवीपर साखी पित । रलिदान पहुँत छलाह, साहिपर आब साखी कन्याक उदार भय रहल छन्ह । पुरना हठक साखी साखी क' मुखा देख, आज भव-भव चरोहर बनकी देखल अछि ।

...ई प्रम कोना प्रीति ? विधिका लारी-समावे नम भेत्तया आनि गेलैह । ओ गयाक सहरि अक' बइसोह कोर कोहि सहरिसे कान्तिक गौतम उठल

भाबु, भाबु, दूर घटक बैजियार ।  
होत्र बरागल आब होशियार ।  
आब नहि चलत तिसक रोबियार ।  
महि कैओ टाका गनल हवार ।  
समद अल्पन हाट-बजार ।  
एहि बाटे धर्म छथि सुरसरि सार ।

कोर, जो सुरसरि सार सरिपहुँ तेहन देखल देखीह के सौराठक कनटा रबलि छी-बहा क' राक क' देखिध कोर जे कोहि सहरिमे पड़लाह से... □

## संगठनक समस्या

धीमान् सभादक बी,

अतः कुशलं, तदास्तु । आगतां पुरति के अनेक वस भेटल । परंय लेख को पठाउ से कृतिहि ने कछि ।

नहि जानि कोन सभमे ई उम्माद तयार भेल के सामाजिक संगठन करी । एक निवेदन लिखल और विशिष्ट व्यक्ति क लुची बनाय एक विसर्ग बिबा भेलहु । कहल के पहिने विचारलैलें बीगनेस करी । सर्वप्रथम बेवाकए भेटलाह । एतना-पूर्वक कहलैलहु—समाजिक संगठन—

बेवाकए होकेत कहलाह—प्रथमपक्षे प्रतिक्रियातः । 'संगठन' सभे बहुत लोक । ई कोनो तरहें बिबा नहि स' सकैत अछि ।

हम कहलैलहु—परंतु...

बी०—परंतु की ? 'सद्' आतुए आकरके नहि छैक, सकल उपसर्ग-प्रत्यय संगर्भक कभीमे ? कहीं लोकनि बसबनेस करन से हम कोनो मानक ? 'सद्' आतु कहीं कतयतें जनतहु ? पारिवारिक सुख देखाउ । 'संगठन' कयमनि भए नहि सकैत अछि ।

हम मनहि मन कहल—सरिपहु नहि स' सकैत अछि । बिक्रमको नहि । यद्यपि अपने सन-सग बिबा-विषयक विषयमान रहलाह तावत 'संगठन' के कोन सभा 'रक्तो' नहि स' सकैत अछि । प्रथमपक्षे कहलैलहु—सभमे कोन कसए एहिटाक कोनो आहो ?

'बी० की बजलैलहु—'संगठन' सभ होयक आहो । सभके सभे पदसद् स' सकैत अछि । 'सभ' उपसर्गपूर्वक 'सद्' आतुए एतए मारय जवाउ । एतए कोनो बिबा नहि ।

हम कहलैलहु—बैक, स' स' रहो ।



बै० जी बजलाह—ले मरि, काटि के बनाइ दिओक । ता धरि हम एहि कामतपर हस्ताक्षर मरि कूँ लखै छी ।

अगस्य 'संघटन' काटि के 'संघटन' करय पड़ल । तदुपरांत द्वितीय अध्यापक ओतय गेलहुँ । ओ कर्मकांडी छलाह । 'संघटन' नाम देखैत बजलाह—एकर अर्थ की ? यहू ने जे समय संघके संघटन होइक जसत् समय छुटल सभ छाव, किछु स्तुत्यास्तुत्यक विचार मरि रह्य । ओ सँह करबाए अछि त एहिमे हमरा किएक समेत छी ? सब लोक त भाव मउते जाइत अछि । किछुओके स बाँधल रह्य दिओक ।

हम कहलैहुँ—बै० जी, जे अर्थ मरि छैक ।

कर्मकांडी—तखन की अर्थ छैक ?

हम—यहू ने सब गोटे पारस्परिक सहयोगमें काम करी, आहिसे सामूहिक शक्ति हो ।

कर्मकांडी—तखन केवल 'अर्थ' शब्द । ताहिमे हमरा आसि मरि । परन्तु 'टन' मरि हुटाइ दिओक । तखन हम हस्ताक्षर करब ?

आब 'संघटन' अछि तब केवल 'अर्थ' रहि गेल । ततःपर तृतीय अध्यापक जे भेटलाह से सँदिह छलाह । बजलाह—'संघ' किएक ? ई त बोझ सम्प्रदायक शब्द धिकैक । मास्तिक धिसु सब बेद विरोध करबाक हेतु जवन सभ हमसँ छल । हमरा लोकनि सगलसभ धर्म सँ भेद-विषय नाम किएक ग्रहण करब ? जे कि दोहर कोनो भयद मरि छैक ?

हम कहलैहुँ—बै०, त जेह सब अर्थके वेदाभुक्त मरि पड़्य से कहल जाओ ।

साकसैही ओ सोचय लगलाह । सोचैत-सोचैत बजलाह—'समवाय' नाम दाखि सकैत छी ।

बसतु । 'संघ' काटि 'समवाय' बनाओल । आब जे अध्यापक भेटलाह से नैवायिक छलाह । 'समवाय' नाम देखैत ओ शास्त्रार्थक मुद्रामे आवि गेलाह । बजलाह 'समवाय' मरि सबसँ धीक । जे बसतु मरि धीक शक्य, हेतु प्रमाण किएक ? आदि त सबतः समवाय सम्प्रदायकेन अर्थमे रहितहि अछि । तखन एहि हेतु बँडाक कोन काम ? समवाय कहियार मरि छल जे अहाँ पारम्पर करब ?

ई तर्क सुनि हम भगवानके 'सोहराव' जगलहुँ जे दीनसंगी । बवा-दिगो । कदम-पदालन । ई जटिल तर्कबास बिधा सुनलसँ सब अछि त तबसँ मरि अछि । नैवायिकजोक बापन हमर उठार कक । परन्तु जे अहाँ मरि करब ? एहँ एहँ सोचलसँ त अहाँ बसतु मनोरंजन करैत रहै छी । मरि त एहँ एहँ नैवायिकक मरि करबाक अहाँक प्रयोजन की छल ?

नैवायिकजी हमरा पूव देखि बजलाह—कोनै छी की ? सबसभ हमरा अहाँक अहाँमे मरि अछि तबसँ । किएक त चिकीर्षाप्रयत्नाधारक मरि अछि । जे चिकीर्षा ओ प्रमाण कार्यक विगल होइ छैक । प्रायभासविगल कार्यम् । तखन प्रायभास सँहेतहि, तखन विगल होतैत करब ? पहिले अहाँ ई छिड कर जे समवायक एहन अर्थ अछि, तखन तत्प्रायप्रतिपक्षिक कार्यसक निष्पन्न भ' सकै छल । अन्धभास मेधा करब अर्थ कीक ।

हम भाषपर हमर मन सँसलहुँ । एतना पढा अपर नैन । आब की सँस भाव ?

नैवायिकजीके किछु बवा बाबि गेलहुँ । बजलाह—देख, मरिअभास मरि अहाँक कारण अहाँ लोकनि समवाय ओ 'समयोग' भेद मरि बुझैत छी । दिव्य-अन्धभासः सदाचारः । अतिप्रयत्नः सदाचारः । सदाचार अर्थ ओ जगलसँ धीक । समयोग मरि ओ सान्त धीक । यहू हुनूमे भेद धिकैक । अन्धभास प्रयत्न समयोग क हेतु छैक जे अहाँ अछि, 'समवाय'क हेतु मरि । आब बुझलैक ?

हम मध्ये कहल—द्वानिजान ! जौ एतना बुझबाक शक्ति रहैत त बरैक समय ई निवेदन स' क' देबाक पूछैत किएक करितहुँ ?

अस्तु । नैवायिक जी अपने हाथमें 'समवाय'के काटि 'समयोग' बनौलन्हि ।

तदुपरांत जे अध्यापक भेटलाह से ताहिअर्थ त छलहुँ । 'समयोग' अर्थ अछि बिहृतय लगलाह । व्यापक करैत पुछलहि—की ? एहिमे केवल भावके एतना अर्थ मानिकी रहलैह ? अहाँ लोकनि एहन युवक छी । फलभास समवाय के । जे-जे मन होय जे करै आउ । परन्तु हमरा सम-सम बुझक हेतु त आब लोक मानि लखि । जे सब तदर्थ तदर्थी छल जे लोकनि समयोगमे समझिअ रहै ।

आब कोन उपाय ? जतहि जाइत छी ततहि एक परम भागि जाइ अछि । एतना विवशतामे पड़ल छलहुँ कि अवोलीवीवी विवशतामे सोचैत बजलाह—आब

१२५:५५

जाता है दिने नहि छैक लखन मायं किछु खोरा हैत ? अहाँ कोन दिसतें  
जाएल छी ?

हम यखिगल ॥

पदो- लखन खोरा दिहू नये कहलहुँ । एक रादरा, दोसर दिहूगल ।  
नञ्ज कतहुँ काज हो ।

तायत जागुरेराचार्य सेहो ओहिठाम जावि तरसिथि भेलहुँ । सभ बात  
सुन बगडाहूँ ओओ, पावत लोकक दिस ओ जागु गान्त नहि हैनेक तायत सगडा  
अब हैब अखनब । अतइय यदि जही रणायो एकठा आई छी त लोक सभके  
गुनलरि ओमदियौक । ओहिमे पित्त जो बाहु हुनूकेँ शसन करवाक सामर्थ्य छैक ।  
यदि अहूँकेँ पुनलरि भेटवाये कठिनता हो त ह्वर उदुम्बरपाक प्रचार करू । पाव  
भरिक दान केवल सवा टाका मात्र । अहाँ घाम पाछाँ पठा बैब ।

ई कहि पँचजी एक डिम्बा हमरा हाथमे बगडा रहलहुँ । हुन अर्धत आया  
विदा भेलहुँ कि जाटमे भेटलाह कनोरन का । पुछलहुँ ओ, कतय ओकाइत छी ?

सभटा बात सुनि कहलहुँ—हे ओ ! अहूँकेँ थोहर कोनो काज नहि अछि ?  
तखन थनू । हमरा एकटा छोट ओरवाक अछि । एक दिसतें जहाँ रहसी धरोने  
छाड़ब ।

एअ प्रकार हम वैहन सेवारीमे पबदा भेलहुँ जे ऐसन का क' सट्टी भेटल  
अछि । भूदक जोरतें तेहन बरदा पड़ल जे हाथ अकसका रहल अछि । इहना  
दिशतिमे हम सेख कोना क' छिजू जे अखनहि नहू ।

अपनेक कुलवाकासी  
सेवान्व या □

## दलानपरक मरप

आजि दिन साजराकाक दलानपर मरप भवि गेल । हुनका ओ दलान  
धनुषीक हमार मरप लोक आएल रहल । कामन-बाजुर होइत रहल । साही बीचमे  
पहुँचि पेल न जायदादा । ५० जो पाम-हुमारी भाला बजवत बटम-धरु - मेज  
जाओ । मोलबाबा कहलबिन्ह—अही विहाग छी, पहिने अही लिप । ५० जो  
कहलबिन्ह—मारा, ई बेला न' सकै छैक ?

दीनारापन रिपनो केनबिन्ह—एही विरहुतामर्त रेल सुटि जाइत छैक ।

एला सुनैत मोलबाबा अकन मरपक बटुआ फोडलबिन्ह तोर मोननि  
केवल सुनैत डा करे कह, परन्तु हमार करिन्ह गहो छुल्ल बलि । एकवेर ताद-  
वर ममे बैसल के हुनर रिपिना समुर गाढ़ीपर बलि रहल छलि । साही सीरी न'  
देने रहल । हम् बाहिबिन्ह त गहोके भीतरसँ हुनक हाथ पकड़ि कहा कितिऐह ।  
परन्तु बिना ईर छुने हम् करिनिहेह कोना ? ई प्रणाम करक हेतु हम् रो मोना  
उतरम पडल आब ओ बिना आशोबाद देने कोना बहिबिन्ह और बिना मोरलापोक  
टकके त मोननि रिपिना कोना ? ओ दावत बरना कोइने बटुआ बाहर कप  
कोइत सजलबिन्ह, ताबत गहो वपन जावत । हम् कहलबिन्ह—'बपने बलि भेल  
आओ ।' ओ बजवत—ई कोना न' सकैत बलि ? मोना, पहिने अने पडल  
आओ ।' ताबत गहो निकसि गेल ।

मधुसूत बजवत—जा दे बाब ! एह तिरहुताम !

मोलबाबा हटैत कहलबिन्ह—साय लोकनि विरहुताम देखलहु कहिमा ?  
एही विरहुताम म हाँ विरहुतामक ताबवेरी ओके कहियो सतान नहि भेलैह ।

ओलापन उरुताम म पुछलबिन्ह—ओ कोना, बाबा ?

मोलबाबा बजवत करेन बजवत—सायवेरी लोक हसी जातिमे बैसलबिन्ह ।  
हुनकरी मरप-बादमे जानि त उचिती होयल जनीह—अही बजवत, त अही पुन्य ।  
ई कहलबिन्ह—पहिने अही बाहर बजवत । ओ कहलबिन्ह—पहिने अही बाहर  
बजवत । एव प्रकार दुनू मोना मरे रानि ओ मोना टाढ़े रहि जाव । एहना रिपिनि  
मोना होइतहु कोना ?

रतिकीत बजवत—हुनकरी मोन बाबा !

मोलबाबा एक बटुआ कपरा मुँहमे दैत बजवत—हो, ताहि दिनक मोन  
बाजवती होइत रहल । मोनक मरप कि बाब देखबामे बाबि छकैत बलि ? ओही  
मरप-क मरप मरप मा ओ मरप मा --कहियो एक तग बैसि मरप मरप  
नहि कहलबिन्ह ।

ओलापन पुछलबिन्ह—ओ विरहुताम ?

मोलबाबा बजवत—हो, हुन मोना पबीबज रहल । के वंश, के छोट, मे  
नहि करिमा रहल । सजवत के तोरमे बैसल, के बटुआ ? एही हेतु हुन मोटे कहिमा  
एक मोनमे बलि बैसलहु । कपल देखीत पूरल जाबि त एक ओलापन मरप  
न क ठान होइतहु, दोवर ओलापन मरप मरप ।

सायोनिय बजवत—ताहि दिन एहना एहना लोक रहल ।

मोलबाबा कहलबिन्ह—तो देखल कहिमा ? एही मरप-बादमे केनक मरप  
नहि मोनक कारण मोनमनि मा अने वेलाक दोवर विवाह करीबल ।

ओलापनक उरुताम देखि मोलबाबा दोवर बटुआ नहि सत कया मरप-  
मरप—मोनमनि मा वेलाक विवाहमन अशक्य गेल रहल । ताबि मोनक काल  
मरप बजवत मरप मरप त कहलबिन्ह—मरप, मरप, मरप । बाब पून न' गेलैक ।  
मरप-क मरप मरप—मरप और मोन आओ ।

मोनमनि मा कहलबिन्ह—नहि, नहि, हम् गलिमे दही मरप आओ ।

मरप-क मरप मोनमनि—मरप, त हुनकरी ।

मोनमनि मा बजवत—नहि, एको छी नहि । हमार बाजवत मरप बलि ।

मरप, न एहने मरप । केवल कया माणि मेन जाओ—ई कहन मरप-क मरप  
देख हेतु विरहुताम । मोनमनि मा हँ-हँ करिहु हुनकरी मरप-क मरप  
मरप । मरप-क मरप मरप मरप मरप मोनमनि मा कोनहुना एही नहि  
मरप मरप । अनेमा मरप-क मरप मरप मरप मरप मरप मरप मरप ।  
ई मरप-क मोनमनि माके केसि होलैह । अनेमा मरप-क मरप मरप मरप  
के मरप क कहलबिन्ह—'मरप एहिमरप । दोवर विवाह कया देखोह । एहिमरप  
दिनक मोनमनि मा मरप-क मरप नहि मरप । हुनकरी लोक करिबल छैक, ताबत आब  
त मरप-क मरप क कोन गेलाह ? पाछा करिबत मोन मेहोरा मरप-क मरप,  
मोनमनि मा मरप मरप नहि मरप । वेलाक दोवर विवाह मरप-क  
मरप ।

ओलापनक उरुताम रहि गेलाह । पुन्य बजवत—मरप मरप मोनमनि



हा। हुनका भोजनकाल पटक क' जबरदस्ती मुँहमे बही कीजि दिवैहू पवन  
आरकला बूझि पठिबैहू। एतुन दगड़िअल लोक। बाप रे बाप !!

भोजनबाबा हुनका डेंटैत कहलथिहू— सो दूतबेमे बघाहटि होईत छहू ? एही  
मर्दाक खातिर फेटकटाइ आक हाँक टुटि गेलैहू।

भोजनबाबा से कोना, से कोना ?

भोजनबाबा पुनः थोड़िक कतरा मुँहमे देल बजलाहू— फेटकटाइ आ समझिअर  
देत रहबि। बजला काल लाख छोटी दिहाइमे देलकैहू। फेटकटाइ आ बजला  
के कहलथिहू री, मोटरीमे बाहि ले। परंतु फेटकटाइ आक समझि अहमिअ  
भोजनबाबा। सो अड़ि गेलथिहू जे छोटी बड़िआ जेल जाबो। फेटकटाइ आ  
बजलाहू बर्गी। भ' गेलैक। हम न' गेल। बोच बाबू कहलथिहू— सला ई  
कोना भ' सकैत नहि ? एहिबाबत अथवा ज्ञान करि लोक जबरदस्ती छोटी देलत से  
को कहल ? ई कहैत बोचबाबू हुनका हाँके छोटी अवेदम लगलथिहू। फेटकटाइ  
आ बजलाके छोटावध भजलाहू। आव दूहू समझिमे हावाबाहि होमय भजलैहू।  
परंतु बोचबाबू जबरदस्ती रहबि। एक डेर तक क' जे पकड़लथिहू से फेटकटाइ  
आ सभे बाहि गेलाहू। ऊपरसँ बोचबाबूक सीम मनक छोरी। फेटकटाइ आक  
हाँक टुटि गेलैहू। सो बरबादियमे लडा क' गाय गेलाहू। परंतु बाहरे बोचबाबू।  
अथवा बजल ठेक नहिअ छोड़लथिहू। समझिके छोटी बड़िआहू क' बिरा भेलाहू।  
साहि दिन मर्दाक एतबा बिचार रहैक।

प० जी अनुमोदन करैत कहलथिहू— साहिमे कोन छैहू ?

भोजनबाबा प्रोत्साहन पाथि बजलाहू आव जे केमो बुद्धिबाध पाठक जका  
कलत छे निगहलैक ? पाठक जी पुरी बेल रहबि। ओहिठाम लज्जापत्रीक अटकक  
महोत्सवक डेटनैहू। परंतु जी अड़ि गेलाहू जे जगसाध भगवान छबि से को ? बिनु  
लौजमे शाह नहि आ सकैत छिएहू। जी हू जीहू छोटी देलाहू त प्रसाद सँबैहू,  
नजिअ कानन। अरु रहु। अंतमे हुनके जिहू रहलैहू। अगलापत्रीक दिहलै हू  
जोड़ छोटी बिदाह डेटलैहू, लज्जा बजल मुँहमे देलथिहू। आवक जीकमे कि एतका  
बिचार क' सकैत छैक ?

मारकला कहलथिहू— कयबबि नहि। कयबबि नहि।

भोजनबाबा ओह अधिक उत्तेजित होइत बजलाहू—हो, आव जे केमो नैजा  
चौकरिक बरि करव जे दिनहूकै ?

भोजनबाबा—से की बाबा ?

भोजनबाबा कहलथिहू—नैजा केपरि विपरिवावाट आइत रहबि। सगरे

हो, भाबहु सेहा लभ रहबिहू। आवन मभके पाड़ोमे अडभोज भ' गेलैहू त  
अरु ओहिठाम रहि गेलाहू। एक मोटा पुछनरैहू त कहलथिहू—नहि माहोपर  
हमर भाबहु अड़िअ छबि साहिबेर हम कोना पैर ब' सकैत छी ? हम दोहरा  
देत जेएहू। आव एतबा बिचार नकराये छैक ?

मारकला बजलाहू—अहो। साहि दिन को अरुन मर्दाक छलैक ?

भोजनबाबा बजलाहू—मर्दा। छ तेहन छलैक जे बुद्धिबाध पाठक जगन रसोके  
महोत्सव बिदागरी नहि होमय देलथि जे खातिर छ पुण्यक माहवर कबि क' कोना  
जेमेहू ? आव त लोक हजोके जोरीपर अडभोज बिदा करैत थछि।

मारकला कहलथिहू—बाबा साहि दिन मर्दाक बहुत बिचार रहैक।

भोजनबाबा कहलथिहू—बिचार त लडा रहैक जे मुहो छोटासरे कल  
राम साधुरक इलाके छबि पकड़ल, सभावि मादसो मोर नहि उठावयहू। साहि  
दिनक अथवा सेहन सकोची होथि जे तिलोही नहि कापि जे कुड़कुड़ क' उठत।  
सावड अथवा होइहू त पहिने कापिमे फुला जेथि। नैसन साधु भजथिहू छैन  
कोना ल' क' माथ सापि जेथि। कहियो स्त्रीपणक सोका उधार छाती नहि  
राखि। आवक पुछमे एतबा बिचार होइहू ?

भोजनबाबा कहलथिहू—पुछमे कोन कप, आव त स्त्रीपणके एतका  
बिचार उठत वा रहत छैहू।

प० जी बजलाहू—साहि दिनक स्त्रीपणमे दोनरे बिचार रहैहू।

भोजनबाबा कहलथिहू—बिचार त सेहन रहैहू जे हमर समझिमे जगन पुनः  
मर्दा कोकोके नहि देनथि, जे कोली आन पुण्यक मुँहमे पडि जाइत। आवक  
कोके एतबा बिचार होइक ?

मर्दान्त बजलाहू—आव त कोलोके कोन कया जे

पोंबाइ पाठक बजलाहू—साहि दिनक कोमे बिचार अडभोज रहैहू।

भोजनबाबा बजलाहू—सेहन बिचार रहैहू जे हमर दोसी कहियो खानके  
पैर नहि मगौतथिहू।

कपलाकत मुछलथिहू—से किएक, बाबा ?

भोजनबाबा कहलथिहू—हमर पीसाक माग रहैहू रायबुलाय खा। ई  
पीसा खानके कहियो पैर नहि लगानथि जे हिनका अंतके पतिक नाम पड़ै अछि।  
एही छाने ओ 'रायसिधुनी'के 'श्यामसिधुनी' कहथि।

मारकला बजलाहू—अहो। साहि दिन केहन जय-कममे निष्ठ रहैक।

भोजनबाबा पाकक पूरासे गोसि देत बजलाहू—हो, जय-कममे छ तेहन निष्ठ



[illegible]

कमलकांति रत्नसिद्धि—अन्य सप्तहस्त एहं न एहं न शोक ।

सोनवावा न्हसनिहू ह्यो, ताहि दिसक सोक बासोनिहू खेड कुमठ !  
 पुंडिया दहू कहियो 'ब' अक्षरक वेड नाहू कटान्हि । हुमक कधद रैहो जै कथन  
 कोनी सोकर बाककक वेड नहि कटीत दिरेक त 'ब' अक्षर कोन भदरात केन जति ?  
 गहो द्वारे जो बुद्धिके 'बद्धि' निषण !

फौजदार बाठवा बख्शहाह कहा ! की क्षमता विचार !

आलयावा कहलसिन्ह—एदुमभरमे कोनो आदक ईंट वपमोनसिन्ह त प०  
मूठसिन्ह हुनका ओखक प्रपशित धई हेनसिन्ह ।

कशीनाय वृद्धयधिष्ठु — से शिक्षा, दाया ?

भोजनवाचक वचनाह—**पौ जी महलसिंह** के भाति बनने काधि देने हैत ।  
 वपमि पात्रि देने ओ मारदे करत । से लभ पीछम भेनु दैवे करसिंह । ताहिमे  
 मोहेन जुबे करतैह । पैह रिचगदि रहिनहि गोहुरेशक प्रयासित कर देनसिंह ।  
 कपतकाव वचनाह—**बो** अरुष पविष्ठत ओ जेसिमि होइत वचनाह ।

बोनबाबा सनसाल—पण्डित लक्ष्मण गणेश शिंदे यांचे एकमेव सतसक  
हे पान सतसकपती काउंट भात फेकल गेल ।

सबोदर जोधर पुत्रलपिम्ह— हे कोना ?

भोजनवादा जगताह—सगळो टोळक लोक भोजन खाव जेन्ना ईशसक्त रह्य।  
 नहुंगहो सध्याव देवमणि पाठक सेरो ओहिये सन्निभिय रहयि। जगज ओ भोजन  
 कश्य नगमळू त सरकारी बाइड कान पळमणियह—हो, ई की पिकें ? केवो  
 कसपरीह—सजमम धिकें । ई सुनियह ओ पसो पर यमन करव जगताह । सम  
 हरे पें गेल ।

सत्यमेव जयते—सिद्ध, बाबा ?

भोजबाबा बगनाह—सहामहोदयकाय कहलन्हि ले सनगम पूर्वजन्मक मुलमल होइ अछि और नगदेव ले मरै अछि से अगरेही मोहर (छापर) ब'क' जन्म लैव अछि । एतावत। समकेँ हिमदिवापाट या चाँच नरण प्रागल्भ्य करय एहँसिह ।

काशीबाबू राजवाहू—बहा। श्री धर्मशास्त्रक विचार हुनका लोदनिके  
रहेह !

धोलसाहा कहलबियाह - धातुमयक मनेहुन बिबर रहैहू में मुमकील  
साहसा जो कयल कृपारीके बिन; सनाहे पूंने फिह सेनाह ।

रतिरान्तरं पुरुषमयिगुहं कैः किं एक, वाचा ?

भोक्षणाया माकये भोगि संत मज्झाहू ह्री, हुनक तर्क ई जे एक प कुमारि,  
 कोनर कथा । तर्हिसे प्रवेश करै त मागि पड़ि जय । एतयत ओहि कतम  
 मज्झिमसो दा मरिह सैत्तहि ।

सुखसुख मोक्षदि क्यलाह बाहू दे मयदि ।

मोवसाया कहलविश्व यही नयाँ शिक्षा हारे पुढारी हँडकोक जानू धनाभोरति  
विह कहियो अपरा टोपी सर इको तहूँ दैमोसन्हि, ने एकटा रको भयम छुथि त  
धरद क्रिष्ण भयं गद जदगुय । आव पुहुन विचार कोकने हैतव ?

सादरका बचलाङ्ग - कदमदि लिहि ।

भोजनवाला मन्त्री इत्यादि लैंग राजाहू आव त दुये बरसि येलेक । हाडीके  
पाठर खेलक, भोडके साधकिस खेलक, रामलीलाके सिनेमा खेलक, भोजके पाठो  
बैलक, पाठके बाहु खेलक, सफुडके अन्नी खेलक, और मर्मादके कम्पुनिस्ट  
खेलक । आज किछु दिनके पसकट्टी को भानक काजह, धन का छति जाएउ । बरम्भ  
माव हमरा शिष्टिक कदेक दिन आमी जाल ? ये रहवाह से सतहाह ।

ई कहीत भोगबाह वान-कुपारी सेलरिह और जराठी देवैत जिना भ'  
सेलरिह ।



## चौपाड़िपरक गल्प

आहि दिन १० मोक चौपाड़िपर नाहिहारी सभ बैसल रहल। बिशो भ गल रहैत, घरभु मोमनधे विष्णु मिलल रहैक।

ताही मोचमे पहुँचि गेलहूँ मोचबाबा। हुनका अविग्रहि सभ उलनयित भ' उठल नै आब गल्पक छलका उठल।

काबोबाब कहलबिहूँ—आब बाबा। भइलहुँ जेरपर जुगलहुँ। अखन येह सहुत छिड़ल अछि नै पहिनेक लोक भुबो छल कि आबक कोक ?

मोचबाबा बहुत बातें तसिदानी कहार करैत बजलहुँ—हो, ताहि दिनक मोच जेतेक भूष-धी कुचक क' क' पौँकि देल छल तेतेक आबक लोककेँ पामि बूझ क' जिन छेक। हुनका लोकनिब पुरखा एक भैन दूध एक छोकमे बाँदि जाइत छलहुँ। ताही मोचपर एक हजार दल-बैलक छीबि सैत छलहुँ। आब लोक एक सिन्धुवा दूध बाहुमे घोरि क' बूझैत अछि। जेना छैयबिया नेनाकेँ मोटी देल जाइ छेक। तखन साबिक बला बल-बीर कहलौं हेनैक ?

जोषकास कहलबिहूँ—ताहि दिन मोट जाति रहैक। आब कंपो...

मोचबाबा उत्तर देलबिहूँ—हो, हुनका सूरक लोक कमकठ पनहोई एव पूर अगेत जेन ह' क' एक सूरमे मोच कोस पलि जाय। आबक बाबु जेना जे १००० विनहार जेरेकी वृत्तमे सवसव करैत छल ते पूर कोटा खातिर जाइ गइ देलक बात नकै छल। पहिनेक लोक कोस भरि मैदान लोटा भ' क' पलि क'इत छल। आब त आबकेँ घर लग देखला बलबैत अछि।

पुनःपुन पुछबिहूँ—एकर कारण की, बाबा ?

मोचबाबा नाकक हुनू पुरामे मोछि कोभैत बजलहुँ—हो, ताहि दिनक लोक एकबीस वर्ष धरि एकछाहुँ बहावर्षक पालग करैत छल। आब त बीसमे वर्षसँ तिमैनाक नैड गायब बने अछि—'तेरा मेरा धार हो गया।' हुनका लोकनिब पुनः भरि-भरि बड़ा बोझा बाइल छलहुँ और भासने एक जेर लोग करैत छलहुँ।

भाइर लोककेँ पाय धरि आहार पचैवाक हेतु बाबाधारक राज रहै छैत मोच बिहार दिवस भैल बाहुन। तखन जे गति होनक चाहै छैत होइ छैत, एना पहिनेक पुनः कवनजभापर बिजय प्राप्त करैत छलहुँ, तहाँ आइकाहुँक पुनः कुचबिहारक कटिहार धरि पहुँचैत-पहुँचैत हाँकब आनि जाइत छल।

१० मोक अठ्ठोठन गैलबिहूँ—हँ बसार्थ कहल। आइक मोचमे मो बलबोव महि रहलैहूँ।

मोचबाबा उठनातेँ सुपारी-मोचर प्रहान करैत बजलहुँ—लोकक कोन कथा जे अगोमे आब की बीर नहि रहलैत। एकरा मकनिसाँ तहुँक मोचमे लवैत रहल। ताहिमे कोस लोक भाँकि क' एक मोचका ज' भैलैहूँ। जे देखि हुनका कहिय नासु नैमि देखलैहूँ।

कानिवा पुछलबिहूँ—हँ तँ छवि किये ?

बाबु कहलबिहूँ—एकरा पहिलुन आल मन पड़ि गेल। एक बेर हुनका मोचमे एहिना कोस लोक भाँचने रहल ते मोहोमे अदबल रहि गेल। जखन हुनकाँ छोटोनिब तखन मोच छुटलैक। ताहि दिनक बहूयो तेहन असगर होइत छल।

य एकका बजलहुँ तखन नै लीको तेहन कोषबास होइत छल।

मोचबाबा कहलबिहूँ—हो, तँ ने सगरे वर्षक बूढ छलहुँ अपन आइल तेन जगज कप लेल। हुनका मोचगिर लोको धारमे तेहन बैस रहैहूँ जे पाथर भू भ' जाइत। आबक पुनः पुन त पाटिबोत केँ फूटब कठिन।

कोपाइ बाठक बजलहुँ—ताहि दिनक बीरों दोसर रहैक।

मोचबाबा सुपारी नहैत बजलहुँ—हो, हुनका कोन कथा, लोको सभ तेन कोषवती होइत छलैहूँ। येन देल कोष जहाँ एकटा महिनक भरलहुँही मोटा कहि मोचकाइकेँ जगटा देखलैहूँ।

मोचबाबाकेँ रस लेत देखि मोचबाबाक कोस कहि गेलैहूँ। बजलहुँ—हो, ताहि दिनक मोचमे तेहन बिजान होइत छल। हावीक मकतक छल। ते कुचमे जेना देल जाइत। आब तेहन रंग-रंग देखैत की नै बिपाइत-बिपाइत निहु दिने कुचमे हवानमे कितनिजसँ बरका देल जाएत। तखन मोचक हूय दीनय देना जगज कोसत जा सन पड़लयाव कोस बजलहुँ।

मोचर मोचर अनुमोदन केलबिहूँ—अपने बहुत बीर कहैत छी।

मोचबाबा कतरा बँटैत बजलहुँ—ओहन-ओहन बिजान छातीक बूझ मोचि क' जे तँकाग फूट होय नकर हुनको बिजान होयक। आइकाहुँक लोक त लकोन भेल बा रहल अछि।

कमलाकांत बजलाह—हो कोना ?

भोजबाबा बजलाह—देखू ताहिने के लान धर इठरत त नैक टा दामन बनवत जे हिम दू से बरियानी सुनि तबय । अतः नैक टा बजायत जाहिमे हजार पंच लै बाहुन वेचि क' अ' सकथि । अतः तैहूँ अटकन्ये दरबाजा नमवेन अछि जे जाहि टा कुलीनै कजिल नहि सेंटय । धुन सब कथ जे दू टा कथ अ' जिन' और अपन बात छक ।

दीनभारायन समर्थन कैलनिह—ठीक कहै छी, बाबा । अब सभ घरनु होत येन जा रहल अछि ।

भोजबाबा बजलाह—हो, ताहि दिनक स्त्रीएन आगिण हावक छोड़ी पहिरेन रहथि । हमरा लोकनिक अपनने बिसहारी बनय । आज त पंच गजलै कजिल केओ रचितहि ने छथि । नहिना जे'गयो छोड़ होइत-होइत आब एक ओसरर आवि गेलहुँ अछि । परतु नमबुबतोएकेँ किएक बोय विओहु ? पहिलो जोवन पहिने छति हावक परबहु बनेत छलाह । अतः एक बीतक पंच पहिरेन छथि ।

पंच बी अनुदोन कैलनिह—अपने सत्य कहै छी । आब सभ घरनु मधु साहरण अ' रहल छैक ।

भोजबाबा कथा बजलाह—पहिलेक लोक वेम बनतु पलंद करि छल । पंच पोहरि, पंच हमार । पंच भोटा, पंच घारी । तेहन-तेहन खाचर बनय जाहिमे एक बीरा बाउरक भास रहिह लिप' । हमरे सामुरसें ततवा टा डाला भाएल जे चारि टा भाँवा ओकरा छत्र क' साएन । आब त लोक कजिया-पुतराक छेद करै अछि । हमरा पोठाक सामुमे जे अँकार सगोलक छे साइकिनक पटी बन-तन भाटी आगिमे राखि देनक ।

कमलाकांत बजलाह—सत्य कहै छी, बाबा । पहिने लोक रंध बनतु पतिव करैत छल ।

भोजबाबा बजलाह—देखू, काये वनेत छल त रामाएन मरामारत सभ जे पुस्त दर वृद्ध काज आनय । आबक कविता भगजोएवी जकाँ भवक र' उमर, फलत र' मिलाएल । पहिनुक रचल पुराण सभ भरि अगम पढ़ैत रह, तबानि आठ नहि लागत । आबक कथा-विहासी घंटा भरिमे पढ़ि क' लोक जेकि दै अछि । पहिने माछ-माछ गरि रामलीला जतैत छल और लोक भरि-भरि रात्रि आबि क' देखैत छल । आब तेहन सिमेर चलल अछि जे दूरए जंदाये बसरचर' ल' क' लखकुच पर्वत देखा देत । पहिने एनटा छपद धार'त होइ छल जे जड़ाइ बटाये जा क' समाप्त होइ छल । आब त अदर भिगटमे एक टा गीत जतम । जतवा कानमे लोक लग्गी करैत अछि ।

धारकका पुछलनिह—एकर कारण की ?

भोजबाबा नाति लैत बजलाह—अबनेमे पुस्तक त अबक लोकमे छैत नहि छैक । अब जेगनी पढ़ विबाह । आइकाहुँक आनन्द बूझत लखक आनि थिक । मृत घटवस, सुरत मिलाएल । ताहि दिनक अतः अदर लोक आनि होइत छल । तब त जतैत छल, देरी भरि रहैत छल ।

पंच बी बजलाह—पहिलेक लोक उदास होइत छल ।

भोजबाबा बजलाह—एहिमे कोन संदेह ? ताहि दिन पंचनक आगिमे एक अँक बाउरक भास जाति क' परल आइ छलहुँ । देखू ल' क' दूत परलन गेल छल । आब समस पलल अछि । ई समस' लोग अपाधन आदिब'र कैलक जे पहि कहि । ओ भारी सुदपटी छल हैन ।

मोड़क फास गरि भोजबाबा कुरा रहलाह । लोक दूजम रहल । यतन दू ' सत्यता पंच करैत बजल ह—हो, ओवेकेँ बिदे दोप दिओन ? प्रह्विओमे बंद सजीवता आबि गेलैक अछि ।

जाहिने पाठक पुछलनिह—हो कोना ?

भोजबाबा बजलाह—ताहि दिनक जाहि होसर रहैक । सभ घरनु पंच होइत । हमर कानाक मृतही माछीमे एकटा पुरल जलेनाक काछ रहैत । छे एक एक टा जामुन आवा आवा पावक पुनवजामुन जकाँ होइक । बीकू बाबूक कजानेमे नेहा केनाक बीर फुटैत जे एक एक टा बीर एक एक शाहीपर जदा क' अवेत । एकरा पोठाक मोहिठामसें एक टा कटहर जाइत रहव जे काइन गेस त छोड़े तीन शायक मेदा ओहिमे तँ बहराएल ।

अबनेमोबाबकेँ विनियम देखि भोजबाबा कहलनिह—दो मुँह को बनी तू ' हम एही आँखिमे दू-दू हावक बाजि देखै छी । मकोन जन-जन मकडक राना । कुचिपार तेहन जमटवर होइक जे एक बेर एक टा काँड़ छी मान गरि अवन रहि गेल । हमरा नामक चाइपर एकाटा राहकि कोआक मुँहमे खसि पड़ैक । जे जनमि भेलैक । हो बः । ओ गच्छ जे साइत जेन छे एक पसीरी राहकि ओहिमेत बहएल । आब ई बात हेतैक ?

मोबेजान बजलाह—बाब रे बाब ।

भोजबाबा अँटैत कहलनिह—तँ एतथेमे बगलटि तोड़ैत छह । हम बसुबसे तवेक टा बजला माछ देवल, जे ओकर घुँग ल' क' साटी करैत छल । एकर कारण ओताक अँटले एकटा कडीत बहरैत रह छे हमरा नमिदानी एतेक टा ।





मारवादी बजलाह—हह भ' गेल, बाबा !

भोलबाबा बटेसकइलबिह—तो देखलहु कहिया ? फुलहुधरि बाह लेहन  
मुकुमारि रहिनि जे थहो कटने आगुरमे फोका पड़ि जायन्ह । एक बेर बलाबापर  
बैर पड़ि गेलैन्ह त भरबामे छैला क' गेलैन्ह । अथवारिबासी बिबिधिके सोझि  
क' जाय । यमपुरनाकी हथोरिया रातिमे बलबि त नामपर केराक बीर क' लेनि  
के छाहु नहि लागि जाय । जान स ई क्षम कत उपवास जकां लगनोह ।

भोलाकाय बजलाह—हाव रे कीमलमा !

भोलबाबा एक चूटकी कतरा मुँहमे रखैत बजलाह—पराधु ई नहि बूझै  
जाह जे ओ लोकनि केवन प्रपञ्चदेहि होइ छलीह । तेहन-मेहन कलाबील जनेन  
छलीह जे भावक हजोकेँ हिय दुखन छैन्ह । हिरनीवाली कदना केशसँ गतर बतरा  
करैत छलीह । बभमभकाली तेहन केही मूठ कटैत छलीह जे हु जोड़ जनक एक  
छोडकी जवाबीक कोहनामे भरि दैत छलीह । धनपुरवाली के सोही लिखैत  
छलीह ते देखि पलीबाक भम भ' जायत छलैक । एक बेर मागपंचमीमे छापक  
बिल कोठपर काइलहु ते ओहिपर सेपनोर पहुँच गेलैन्ह ।

मारका बजलाह—बहू । ओ लोकनि भयार्थ गृहलक्ष्मी होइत छलीह ।  
भाइक लोकमे ओहन चमत्कार कहाँ ।

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह—कमत्कार त तेहन-तेहन ऐकमे हो जे  
बहुओह त कय जकां मुक्ति पड़तोह । सटसिमरिवाली जे पू बगबनि ते दूक  
काहाँ देतो भोलाबभ । महिनाबपुरवाली तेहन बड़ यमाबनि जे एक रसी कोटि  
क' मुँहमे दिव' ओर पैलक पैल पामि बिबैत रहू । बिबलवारवालीकेँ एक बेर  
पाहुन ऐलबिन्ह । घरमे केवन पाउरे छ रहैन्ह । परन्तु ई ओहीसँ हनुका, पूड़ी,  
ठरकारी, चटनी बना क' बोबा देलबिन्ह ।

काशीनाथ बजलाह—एकर नाम छैक बाकविद्या ।

भोलबाबा बजलाह—हमर अपने ताबु एहन फुतिपर छलीह जे बतन  
कालमे हन हाकी क' क' तीस टा चूटकी बजनें छी तबना कालमे तीन टा ठरकारी  
तरि लेनि ।

मुकुन्द बजलाह—ते वा कोन मय बनैत रहनि ?

भोलबाबा बजलाह—ओ एकरे बेर तीनटा कुचुहिमा बोकि क' सभ घर  
कड़ाही भड़ा देबिन्ह । एहन जे ओ माधिनानि क' सभमे टनटन करछ-उरछ

एक माधिनानि की मनहर सवे 'नतरा' बजोनाह ? एक घरमे छलित दा  
देब' जाय देनि ।

रतिकनन बजलाह—बाबा ! ओर जे गहिरीक घरतु आइकाहिह बला  
जान गहिह त स्त्रीयजन' नहि रहैन्ह ।

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह—जानमे आबि बजलाह हो, आइकाहिह  
जानमे बजलाह जेह । ताहि 'दम' जसली बइल रहैक । पुरमुखरी डेवकीक  
बिभरनी तेहन निष्ठुहि बजव जे छती पर बम' क' क' बजव त कलामे छेद क'  
गडा । भावक सुपरीसँ 'मुपरी' दइ 'छपा' होह ।

लक्ष्मीर कोषी बजलाह—तजि दिव' माधन होमर छलैक ।

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह—भोलक तेहन बड़ होइत छलैक  
जोड़, दोन घर दन एकरा हरिम कोकै रहिनि । ते एक दिन खेनाइम-  
जोड़, दोन घर दन एकरा हरिम कोकै रहिनि । ते एक दिन खेनाइम-  
जोड़, दोन घर दन एकरा हरिम कोकै रहिनि । ते एक दिन खेनाइम-

एक दिन खेनाइम-जोड़, दोन घर दन एकरा हरिम कोकै रहिनि । ते एक दिन खेनाइम-  
जोड़, दोन घर दन एकरा हरिम कोकै रहिनि । ते एक दिन खेनाइम-

## धूरपरक गप्प

भोहि दिवस भयंकर जयसी लघने रहल । धारकका धूरपर बैसल लोक भागि सर्पित रहल । बीच-बीचमे तेहन पुरवैयाक झटक झटक के लोक तिरुति खटप । काशीबाब बजलाह एहने अइसे श्रावण बाछा बेचि क' फबल किसलमिह । भोलबाबा कहलमिह—हो, सीरा लोननि जाइ बैसलह कहिया ? जाइ भाएल रहल धनासी हलसीमे । एक बेर के ताड़के रँउल से लो माघ धरि पैसले रहल । सभक डींगरी दैनदरेन बाजल जयमे ह । पूरु गुराई ओहि के लोख धूलय, पैपो देह 'क' अंधर बनि काइक ।

बधुकात पुछलमिह—से को याबा ?

भोलबाबा कहलमिह—दाइमे ठेहन छठने 'क' अंधर बनिए जाइ छैक । एहने जाइमे हमर पोताके केनो पुछलमिह के बाछी बैसल ? एखन ई उत्तर देलमिह के हुपरा याछी नहि ।

पुनः कहलमिह—बाबा, एकर अर्थ नहि बुझलियेन ।

भोलबाबा बजलाह—एकर अर्थ ईह के बाछी नहि रहल अरन काटीक अयाव अछि । बाछीक मोचरछे दोइटा जोइत अछि । यदि केनो नहि रहल त बागियासी कधीसँ करब ?

धारकका कहलमिह—अहा ! ताहि दिन अगबग की मरमर रहैक ।

भोलबाबा बजलाह—भाकूबानुयं त सेहल रहैक के एकटा ह्वाय कुमुमपुर सेउरीक बहुआसिनके छला बैसलह ।

पोताभाब पुछलमिह—से कोना, बाबा ?

भोलबाबा नोचि भैव बजलाह—भोबाकेँ एक ठाम बर देखल हेतु पछीनमिह । ओ भाबि क' कहलमिह—'धरकर ! धूरकर रहैसी की बाह ? बाह धरि बैसल नहि बसलह, कहियो जनका जमीनपर नही नहि बिरलमिह, ककरो 'महि' महि कहलमिह, मगकेँ एकेँ अछिअ तके छमि । ई धुनिनहि पड़लमिह नरनय भम

अवद'न पठा देखमिह । 'गोरी क' जाय तेन-ह के तुमहा बलाह, धीन ओ लोख छि, आंगदेवे नही फिर छमि ।

अगबगनी माय बजलाह—हह ! नाहि दिन केहन-केहन धुसँ रहल ।

भोलबाबा कहलमिह—हो, धूमं त सेहल-सेहल रहल के नमोनाखयन ओ बहर पड़ल नहि छमि । तयानि भम दिन कोरे बा म'यमि ।

भोलबाबा—से कोना, बाबा ?

भोलबाबा कहलमिह—हो हुनका पुइटा रलोकक सन्निध पद भर्त रहल । एक तर्कमे भी गुरी नना, दोसर उपलक्षणक हल । एखनम भमकेँ हुमा देखिह के 'तस्मै' अर्थात् खीर भोजन करा क' 'यव' अर्थात् कंभा बैस करल ।

पुनः कहलमिह—भार रे ! एहन भारि से बीस !

भोलबाबा तटीता बाहर करैत बजलाह—हो, मकरसावनत बरां-पी पूरे काठ से बालोल रहल । कोनो हवी मर्ममयी हो त भोजनपर 'बेटा न बेटी' मिह क' यंत्रमे मढ़ि पहिरा देखिह । ओ बेटा होइत त कहलमिह—देखू, हम पहिराहि लिखि देने छमि, बेटा, न बेटी' अर्थात् कया नहि । बेटी होइत त कहलमिह के—देखू हम लिखि देने छमि के 'बेटा न, बेटी' अर्थात् कया । ओ तर्कमे 'क' आइक त कहलमिह—देखू, हम पहिराहि लिखि देने छमि के 'बेटा न बेटी' अर्थात् कया-बाजक किछु नहि ।

एतबहिमे बाजलमिह के सधुका लगलह । ओ वरि क' कर्मभक जोड़मे सधुका क' ऐसा । ई देखितहि भोलबाबा हुनका देखल छल कहलमिह हो डि ! एवको भूय दानियो ल' गेल छलह ?

भारकवीक सिट्टीमिट्टी बंद 'क' गेलमिह । भोलबाबा कहल सधलमिह—ई गेहर कोय नहि, बुनक दोष दिकेन । श्राद्ध दिन एतेक मर्वावा गेहक के लोक लोचो करल त केका खोलि क' । पानिक भम माटिपोर भयहृद करल । अरबक लोका त ठाढ़े ठाढ़ भयं देख अछि ।

पं० जी कहलमिह—अहा ! ताहि दिनक मर्वावाक कोम रुभा ।

भोलबाबा बजलाह—मर्वावान त एतेक बिचार रहैक के हमर पोता बाह-पनि दिख लाय त लोटा पिलास दुह ल' क' । लोक पुछलह जे बिलास बिदेस ? देखल कहलमिह के सधुकाक हेतु पूरु पाय ल' जाइ छी ।

छोड़ के हवी पढ़ि लेवैत । ... मेल तद्विषय छोड़ी छोड़ी  
की करैत छह ? बुद्धिमान पढ़ता व ... मई के मई ने माता  
है व तैरी-ह । आदर छोड़ने एव ...

पारकवा वचन-ह ... विचार रहैत ।

मोववावा कहलबिहू विचारन तेहन रहैत के अन्तराहो-परी गोता-  
मयानि अना घेह के सामु-भार तःरी- ... समझिन के तु आ-लहरी छै-  
रहैत । केओ कहलबिहू ने समझिन के विचार के चो छै । तखन ओहि रम्य  
गिनुक हेतु माता-दोरी और आ-पि-पचो बुद्धि वचन गी-वि-क' पढ़ा देलबिहू । समझिनो  
तेहने मनावावाली रहलबिहू । भविष्यक वर्णन एकटा कुतुब रहैत । नकरी ताहकि  
मे एक जोड़ सान धोरी चोड़ देलबिहू । आज एतवा विचार लोके-हेतुके ?

कोपवावा दादा तबर्जन करैत कहलबिहू कथमणि भवि । ओहि समय  
जातिक केहन मनावा रहैत ?

मोववावा वचन-ह—मनावा केहन रहैत के हयन सन-सन बूढ़ बसमानुस  
बूढ़योमे सिद्ध मेने मेन करिदि । जहो गीन मीन देलबिहू कि रगड़ि केनिहू ।  
वचनमे अपन सासुसोई मेठ होधि । तै तःदि दिनन सासु सकेन पढ़ा करबिहू के  
केबाड़क दोनमे गोरलकीक देका केकि देवियन । अ नक मातु न जगताक संग एवके  
रिक्तावर मीन के वजार करै ।

मायोमाक कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा वचन-ह ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

पारकवा वचन-ह ... विचार रहैत ।

मोववावा विचारन तेहन रहैत के अन्तराहो-परी गोता-  
मयानि अना घेह के सामु-भार तःरी- ... समझिन के तु आ-लहरी छै-  
रहैत । केओ कहलबिहू ने समझिन के विचार के चो छै । तखन ओहि रम्य  
गिनुक हेतु माता-दोरी और आ-पि-पचो बुद्धि वचन गी-वि-क' पढ़ा देलबिहू । समझिनो  
तेहने मनावावाली रहलबिहू । भविष्यक वर्णन एकटा कुतुब रहैत । नकरी ताहकि  
मे एक जोड़ सान धोरी चोड़ देलबिहू । आज एतवा विचार लोके-हेतुके ?

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ...

मोववावा कहलबिहू आज तःदि- ... कोपवावा कहलबिहू  
आखिमे कावर के ईत सननि ... कोपवावा कहलबिहू  
क कोडीक काहवर राख देलबिहू ।



मुकुन्द बनवाह—हः, एहो एहन बघाह बूझ होइत अछि !

मोलबाबा कहलबिहू—हम त एक सँ एक भकबूबा देखै छी । तासा पड़लानक छटा के गुद अछर लिखबैत रहैह त य द ध । ई छुनि ओ गुदनी के बरबाइत क' देखिहू ।

कालीबाब ते किएक बाबा ?

मोल—हुनकर इच्छा रहैहू जे मेरा 'बघम' नहि गइय, 'लछन' पड़य अबातु मेरा क हाल जानय, देवाक पट्टि से ओकरा न म मे देखल 'ल' अछर भरि देखिहू—तासा तस्नुमान

पशुकामत—हुह रह्यि ।

मो—ते ई एकटा पडिअ हुनका पर इयोधः पत्नीकैहू

आधी नकार, परता नकार

पछे नकारेण हतो दकार

त्रिभिर्नकारैः परिवेष्टितस्य

कदा दानववितथेह नन्दनस्य

अबत आदिमी मे 'न' अयो मे 'न' । बीच मे एकटा 'व' अछर छैहो त ओकरा पर 'न' अछर । उअन तीन-तीन अकार से युक्त नन्दन के नाम करवाक लागि कहाँ से कोनैहू ?

मारकका कहलबिहू—अहा ! केहू-केहू अपूरे पंडित होइत छलाह !

मोलबाबा गजनाहू पडित त तेहन-तेहन होइत छलाह जे जतना कालमे एकटा देव फेकत जाय ततना कालमे क्षमसा पूर्ति क' देखि । अलेखपुरक एकटा पंडित दलीक बनोवहू ।—

नाना नाना नना नाना निनी निनी निनी निनी ।

नुनू नुनू नुनू नुनू नानानिनी नुनूनुनू ।

आमक पंडित केँ एकटा कर्ष जगजग बहूह त कटहर, बूझ, बमोट, ठीमू अगव लगवैहू ।

प० जी बज्जाह—एहि मे कोन तथैहू ? बाबू मे जोइन पंडित रहलाह जे भाहूय साक्ष्याय ।

तासाईक नाम मुनि मोलबाबा केँ और बेसी कोस आदि गेलैह । बज्जाह भइस्यो त तेहन-तेहन होइ छलाह जे गुरपरा साक्षी भास-म बड़ाव नहि होइह ।

क शीन य पुछल'बहू ये किएक, बाबा ?

मोलबाबा कहलबिहू ओ गुनबिहू जे कान खड़ाव पहिने पडिहू ? सोब रहैहू दहिना तखन पुछबिहू जे वया भिरेह पट्टि ? ताक कहैहू थामा । उअन पुछ'बहू जे दहिना भिरेह ते ? एहि प्रश्नक कहियो समाधान नहि भ' रहैहू । ई दुनू गवाइ लखाम ओहि पडल रहि गेलैह ।

फोलाह पाठक बज्जाह—अहा ! त तिन केहन-केहन विषय पर साक्ष्याय बनैत छल ।

मोलबाबा कहलबिहू साक्ष्याय त एहन-एहन विषय पर बनैत छल जे खन छट'छटि गेल न ओकर सटव कही गेल ? ए लखाम घोरोमे पाव हो वा हुन ? भंवाइसायक काल छुटैह फहवाक हो त कतव कही ? स्त्री केँ मोल हो वा न ?

पुकाता पुछल'बहू—बाबा, अत मे को फाया, त ?

मोलबाबा अंत मे तैहू तनेव जेन जे अजग स्त्री केँ भाछ पयैत नहि ए छैह तखन मोल कही छै भ तकी छैह ?

पौषाह पाठक बज्जाह—अहा ! की बिजघण युक्ति ।

मोलबाबा मोलबाबी बाइर कौनहि । दुनू गुणमे मोलि कोचैत बज्जाह—पवित्र'भं त तेहन-तेहन देखै छी जे कोन लोकरे' विचारते नहि हँसैक । एक बेर फलाजी बाँदरेमे साक्ष्याय छिड़ल जे स्त्रीलिङ्ग होइय बाबू या नहि ? कारी कालक उअ रहैहू जे होइक सही । उअर केन पलाक गम रहैहू जे नहि गम सही । दुनू गडधत युक्त ए प्रमाणक नयाँ होइय ला । ए पजे दिन भोगे तदार्थ चलल छै राखि मे ११ सदि गेल । एक बड़ैया मोलि छर्ब'भ' गेल उअरि कहियाएल नहि । उअन एकटा मकरस्थ बाइल गेलहु भिड़कर भाबा कारी काल उअर रहैहू । ओ मकर मर्क अदभयन करेय तालवज पर तिछाअत रह्यनिहू ।—

कुचोद्गमानधिः पाठः बालिकाना विघीयते ।



मनुजों के लिये ही यह विधि थी, जो अब बन्द हो गई है।

मोक्षदाता धर्मचिन्ता में लगे हुए थे, जो अब भी लगे हुए हैं। मोक्षदाता के 'मोक्ष' की दृष्टि से ही वे लोग थे। मोक्षदाता के लिये ही वे लोग थे। मोक्षदाता के लिये ही वे लोग थे।

कहो तो यह सही है! उन्हीं के लिये ही यह विचार

मोक्षदाता विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे।

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे।

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे।

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार

मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे।

ई कहते हैं मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे। मोक्षदाता के लिये ही यह विचार लगे हुए थे।

## पोखरिपरक गरप

कोहि दिन भोज खा क' ओके किरल पल अवैत रह्य कि सधुनारी पोखरि  
तय वर्ग महरय जलमेक ओके पय क' प्रह्लादान धर अगि बैसन । मईयादे  
बहुका लीक पसरल रहैक से लो- रें भरि भेन

सबोदर पोखरि बजलाह- हह ! गभी री भित्तक अवकतक छल । आब  
न क' ठंडा भेन ।

दीपनारायण कहलनिह आब एही पुरववाक भहरा पर लभ टा पातलन  
पनि भ'एन ।

'ओकेक मानबहु त ल'भा'रके' एयके म'योदे छाप भ' जैत'ह ई कहैत  
बोलवावा जेहो ओहि मोझी के आबि सम्मिलित भेलाह ।

भोलवावाक स्वर सुनिनिह तब केबो उल्लसित भ' छलन ।

'साज बाबा, साठ बाबा' कहि सभलोक हुनका सेनु स्मान बनाबय ललल'ह ।

भोलवावा कीच मे सुप्रसन्न भ' गति जेलाह । ललन बजलाह- सबोदर खेवे  
के फल'ह बाछि ? बहुत त पधारा टा जाम । हुनर पोशा जेना पिबलाक बाद स  
मानबहु देखि लेनिह । हुनकर भोजनक ई हिसाब रहै'ह जे

बोध सोहारी सरकारी संग

दही-दूध संग तीस

मधुर केर भी लसफस पावो

तैं रे चाखीस ।

एही द्वारे को 'बानीसा मा' कहै छलाह ।

भूटवून बजलाह- बाप रे बाप ! एहन खाचुर लोक !

भोलवावा बटुआ सें सुगरी-धरीता बहर करैत बजलाह बगहारि को  
जोनेत छह ? ललनका क बोझा पाठक तेहन रहि के एक बे मकदून त बा  
संग एक पमेरी गुक फीकि जेलाह । हुनकर सिद्धांत रहै'ह जे-

खस्सी छाँछ कटहर

तीनू बाह एकसर ।





भोजनार्थी पुनः एतत् शरीरं कृत्वा लग्नमधिशः तत्र च खण्डि अग्नी जातः।  
राशि लग्नमधिशः कं शीतल जायते। एक ब्रह्मणः पञ्चमे ब्रह्मण एक टा कनोटी  
ओकारा हेतु शीतल जायते। यदेक मे वभावः तन्मय ते हेतुन जे एक शोनीर्षे ज-  
गति टी हृदिमोक हर्षं दयम् करत। एक शेर मन्त्रक एक बिल्ली वन कोनो  
हर्षय के सैरा देखैक। ये ओकरा देखै तवेक जाँत फूँकि बेलकैक जे भाषक राशि  
मे गमाइ फोटि ज्वाले अके फरये आ कं सुनल, नगाधि देखै गमेना फूँकि बेलकैक।  
तन्मय जोहरिमे आ कं सरि गइय पाविमं हाड भय राशि भरि झलार राग नरैत  
रहैत। ताहि दिनक मसामाये एतुन जोर रहैक।

परिचालन गृहनिर्माण कार्य में सहायता के अभाव में क्या कार्यवाही होना है ?

भारतवासी सहस्रभिः गाड़ी द्वारे से भीषण 'ह' क' सीढ़ी पर चढ़े।  
 नयादुखीने ज मि उ पक क्षय सरभारिक भूठ पर चढ़े, तीसरे जमीन भूठ पर।  
 जमन सहरन चढ़ि क' पुष्टावैर को सोना सय भाईन ही द चढ़लसिंह को  
 नयभीषाक जलस्थन सर विधा क'। रावन कप्तान सोचनक जे हिनका सबत  
 भारी सहाय देल आय। अब, कोनो मित्र-प्रेमभाक सटकल हन हिनका देखा  
 देन-सह। ई देखिने देखेन भ' बैसाह।

गमिजनदन वरदाः ॥ ५३ ॥ सावित्रि दिनद सदावी ॥

भोगप्राप्त। कबरा से दिवसां बहुत दिनों तक रहकर दफन हो गई। एही ठाम कुमुदपुर केवहीक बहुत आन सोयनि ओ यमुना सो के तः उचि से उगता भौतिक वेष्टन जति। भूकम्पक प्राणी जिनो जून सति रहने। यतिमे हरदि नहि बैस लेले। हुनका छोटी चक्षा नहि विमलपद्म। कह्यो सल म' व' सद्युक्तता नहि संशय।

का.जी.प.प. व.ज.न. ४ — (११२) अर्थ नहि बुझविदेक, सःका ।

मोक्ष वा लज्जा- भव ईश्वर को धर्म की शक्ति प्रदान करता है। यदि  
मेरे पति पर ईश्वर का प्रभाव है तो मैं भी प्रभावित हो जाऊँगी। अतः मैंने अपने जीवन में  
ईश्वर का ध्यान किया।

द्वीपं महाद्वीपं यत्नं नमो वा ॥ दत्तं नमो भगवते ॥

भोजबाबा ज्ञानार्थी भद्रबाबा स्वयंसाह हीराजी व कृष्ण पोसने रहसि  
करा लातूर निवासने मायावा भाईव अर्चन, मातोबाबा हनीक भाब्ये साग  
दिन समेष्टिष्टक तेम सयें ह। लाभाबाबूक रेखानामे चंवनक पोच बा पडूह।  
नयाहूर रागेव फी जग होहल्ल ल पर्याप्त मोठ बराक पेंर सेरि।

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

[illegible]

सद्व्यवस्था विधानात् नानि द्वितीयं पदम् अस्ति चेत् = ।

[illegible][illegible]

॥ एक थोड़ा छाता स मय था। ॥

भोजन से बचाना - गर्मी लीकने वाले कपड़े पहनना ? ईस  
प्रकार तब कोहला बूझने वाले जी कोरा जोर से मर्यादा कायम रखा है वनह स  
होम उर्फ अद्वैत ।

नमोनाथ पुत्रनविभू—केवल यथा मेरु इहैवः ॥५॥ ?

ओजवाहो गीति छैन कह्य लभननिहू-वाइय दिम वाइय गति एक गुरा  
 हुनगधर धरमिल रहि गेनैक । गंभूरी नाम दुवि गीनैक । सेहक वाहि ऐनेक जे वाछ  
 लभ लभ कलमयन छे जेन । गहरी यमि बाह जे गहि पोषरिक भिड पद जे चक्र  
 गह छेक सकरा ऊपर ॥ ५ ॥ अलत रह्य ॥ ५ ॥ गह नर गहारी मोदुका  
 हुनबाहु-छय कह्य बहा को ल' गीनेक सकर चला नहि । लखन कह्यक माध प्राव  
 को लखन लखन धर ओह्य बागम त जेन । काकोर द्वेरी छे क ओर निछ नहि  
 मनेक ।



## रेलक झगड़ा

महिला दृश्य

[ स्थान - स्टेशन-क प्लेटफार्म। एक प्रौढ़ा महिला मंजुषा नामक जमाने के बड़े बस में बैठी है। ओम्हर रेलक भीतर से एक नवयुवती आया। 'क' क' काट छवि, प्रौढ़ाक बायीं कुली मध्य पर बेटी विद्योत नेगे भव्यमयक से छवि । लायन् गंठी यदि काट छवि । ]

नवयुवती - एहिमे अगह नहि छैक । आया बड़ ।

प्रौढ़ा आया कहाँ बड़ ? गाड़ी छवि नइक छैक । ( कुली में ) प्रमाण भीतर छर ।

[ कुली कुलीमें भीतर सामान राखि बैठ छैक । महिला नवयुवती यदि आया छवि । लायन् गंठी जमाने समेत छवि । आया प्रौढ़ा ओ लक्ष्मीमे द गि भव्य छैक । ]

प्रौढ़ा कनेक दुगुनि क' पैग ।

नवयुवती हम कनेको नहि टसकय ।

प्रौढ़ा त अहाँ एता पररि क' किऐक बैसल हो ?

नवयुवती - हँ, हम आरि धूरे पररि क' बैसल । जहाँ के लोकवहारि ? ने मय । तोह ओहिना ओइकत रह ।

प्रौढ़ा माय - गय । कनेक दिनको बैसल भइल मे । कनेक कसमसे हेतोक त की हेतोक ?

नवयुवती - के त नहि हेतैक । हम पहिनहि यना क' बेरे छलैक । आया आइ-आइ जेनाह ।

प्रौढ़ा - के कि हमरा टिकट नहि छवि ? ई बाबू किछु जहाँक परोदत त नहि छवि ।

नवयुवती - एहि बस भर छी गोटाक सोट छैक और छी मोटा पहिनहि से बैसल छवि । आया एकटा और जहाँ के बैसल क' हम अपन देह नहि छिनयाएय



प्रो० अश्वमेध सुभाषि, छात्राध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, दिल्ली

ਰਾ. ਸਿੰਘ ਨੇ 1 ਅਗਸਤ 75 ਖਾਣੇ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਮੰਗੀ ਹੈ।

[illegible][illegible]

५. एक प्रमाणित विचार कइत छी ? एक पैतय देवदूत त को पैतय ?

७३. हृत्प गजिज ने भ नमं जेहू । ई एहि पर भोले नहि मई छति

डॉ० जय० शर्मा रसद नहि देतें तबक हूँ देखीन ते धनी ना।

॥५॥ ॥५॥

[illegible]

प्रौ० ( संयोज ) व निम्न १५ वें १५ वें १५ वें

२०. , समकल देना ) खरादार । अही मय' कोम सुमय ?

પ્રો. (પુનઃ ચીર્ષત) : હવે મહાકવિ કોઈને મિલેવું મંજૂર ? બંને : હવે તો તારા  
તેવણ પોળ છીં !

८० शब्दप । ५ । उनें छी जे ह्म के छी ?

प्र० के.के. रं. । यह अकमलको अति लक्षणों को कर पर साधन ।  
 अथर ही जी बालक आदि गेल ल लोकों को लोकों के क' मही बुनीय छिए ?

१३ → मखन हूँ अंगरेजों से भेंट करा दिये। उरू, एहि ठाम से, देव ।  
( लखन से उदास हो कर लौटते हैं ) ।

प्र०॥ अही नूक दावण येतो हीच सचताक हणाय एहि काम सं ।

( कृष्ण हाथवाह भू रत्न छैहूँ - कलापी तलमी बादकार हूँ वाक मंग कर  
छैहूँ, मरनु स्थल काम प्रीति अवदंती संसति गहि जाइ छविहूँ । एही सचपने  
पौडक बरददास हूँ जाइ छैहूँ और सबनोक कंचुकी मसति बड छैहूँ । कृष्ण  
विसें हूँ कि रहल छवि । )

[रक्षाएन सहयोगी वृद्धा माय बेटीक वध जय वधुइ के सम्मिलित होइ  
छे।]

२७—( प्रीति ) सय गन् ! हसभूषरो । श्री हंसरा बेटी न मरमपुत्र  
हरन ७ मारि सोटा के कपार फोड़ि वैवीक ।

[ ई कहै= तुनी लाहा 'क' क प्रीडा पर इहँसा उधिनह । सभा लोक 'हा' की  
त भ'छि प्रीडा उठि क अडि भ' माइ छवि । एक कान भुँह क' क' निझको  
प्रग्न ता रेने रहै अछि । लक्ष्मी दोहरा कान भुँह करेने बँसलि छवि । मादो  
सुह ना रहत अछि । ]

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਬਲਰਾਮ

[ समाप्त : बहुमेका बहुका एकेकाई—न।ही ठ।यु अलि ]

( एक युष्किक प्रवेष्ट )

सुप्रसन्नः । मया, तुल्यं नै । भाग्यं भाग्यं पेलौ ।

पौ० - हो, खुली है रहो, सगोल उबारो ।

( कृषीक संघ वृद्ध बोटाक अध्यक्ष )

प्र०. टी. बाबू, सौ. सिद्धा पाननी आदिगणे सुदूर पडोसाला ये सभ वना  
म. पो. १)

५०—हे की, माय ?

प्र०। ही मेहनत दूसरों की ओर एकटा ओड़िये सत्र के विधुन" नः ।  
 दित्त देव सल । आधिर मंडुए हंसय देलक ।

१७ जोसो हुबनाबासो देहरी मोमी सब हैसिक । होंगे मोनी करी  
 १८ नोड बाँटो ।

५०---बहि, सै त पक्षि-भिक्षनि कीही छति । गोद-भार । ऐसनी मुझने  
 पक्ष करैक । मुझा साखरी बढावा । पुट्टी-पुट्टी चमकै छलै । लागति हमरा,  
 ५१ एम-तेय भाइय । अंगरेजी जैत छति ।

यू० - कोनो-कोनो जगहकी जानी नबरी स्रोतान होइ भक्ति । लेकिन ओकर  
बनपदकीस भक्ति होइइ । ऐं । ई बटइहागा कोना दूट भलीक ?

श्री०—जबरे ! यह सिनकातीरी करव लागनि । ताहीमे दृष्टि नैम ।

प्र०—तबबम सोंह दू भोस कपरस किऐक ने लोले ?

प्र०—वैत ह्यहं दुःखानि भूमेन तैद्यै रैतैरैतै जे कोको बुधनहि  
 'होत । ओ भक्तिका का' भयत कोपा ध' लेलक । वधन ह्यहं कवि के' मरइमर' ।



बू०—हो ईसाई ! फिरोज, माय छति ह ! आन कोन प्रभाव हैनेक ?

मु०—आज उषास की हैनेक ? जखन ओ देखतीहू जे बहू मरगारिषा छोड़ो कसिदी छेक ओर अर बुलसाहू जे बहू कसिदी हएरा माय सँ एहीक छोटासा छोड़ो हैनेक ।

बू०—( कर्म-कर्मवैत ) हो ईसाई ! कोन बाबा मे चलहूँ से महि आनि ।

नी०—सँ एबा हने छे ? अकारमे कोसर भर-वश नहि भेटतीक नी ? ओ, हम बिबाहे नहि काब ।

बू०—मुनह एकर बाग । गप्प छोड़ो, बेसी नमनस नहि कर । लोग मग मुनकटनि आहि परदे-

बू०—माय ! एकरे फिरोज कजसति करैत छीहूँ त सोटा ल' के कवार कोकर नमलहीन । पहिनहि समझि-सिझा क' लेने ।

बू०—हो, कर्म बिगड़े छेक त छतिना छीहूँ छेक । बहूक जोमाइ सँ त ई कबा पठन और चकरी मेहोरा-भिनती करम काइनि छलहुँ टकरे लोहू काबि देनिहूँ । बाब कोन बूँह देखैनेक ?

बू०—अन्धारे मे कि तोरा तपये' नीक जका देखने हैनेक ? ज' सकै अछि जे नहिनी किछीक ।

बू०—कला कहूँ त ! ओहीन राखे मुनमसुखी भिर्नेक, और मुँह नहि देखने हैत ! कीवन कहै छेक जे छमटा परियोग ज' गेल, और बहुरिया बर घुमे अछि ।

बू०—तखन त एनबा दिजक कीन छेन तम टा अर्थ !

बू०—ब'बू, बहिन केँ और अउरीनी चमड़ा । हु-असर और रवि सेत लखत बाब सोसरा मेर पर केँ टीक पकड़ि गाछोतें ठेलि देत ।

नी०—माय, छी एबा नहि जान । हम कि जानि कब ओना कोनियेक ?

बू०—हमरो अंग पर नहि चढ़ल जे मिसर मटोरी लाइन सँ आनि क' एहि हुनमे अछि सकैत छबि । जो गाछोतें जसदि क' देखिनिहूँ त ई अर्थ नहि होइत ।

बू०—एहन साइ धरि कतहु नहि भेल हैत । हो बाबू, हमरा व कोकर कारिक' कजवाक नक करै अछि ।

बू०—आब कजमे कोनो फल रहि । ओ लोकनि बापत आबबि ताहि सँ पहिनहि डेरा-कडा कुच कथ बिदा भ' जाइ । ई बाग छीनने-तोपस रवि आन से ' माता-पोटा मरियाबह ।

पञ्चम दृश्य

[ मयुराश्रय एवं हुनक मायक जयेंत ]

मयुराश्रय—भाय ! मगाभाइ नहुँ रख रखतहि ।

माय—से की ?

म०—बहू तिलचिखनी छोड़ो अहाँक घरमे कतिपय इति व जयेंत, से अमर्या पहिनहि परिचय करा देलहि ।

मा०—आ मे का ई ! ओरा कोना जात भयोहूँ ?

म०—काशीबाप केँ मग करक सँ देखलियो त । मगमे एकटा चमपासानी छोड़ो, और पाछा आछा बूझि माय । बहू बूझ तोहर कोनैक दुईना बँलकीक ।

मा०—हो, सधे कहै छहूँ ।

म०—हम अरगा आनिछै देखलियेक अछि । अछिना छै कहै छै तछिना मगडा हुनिना मिलैत छैक ।

मा०—हमरा चिरबास नहि होइत अछि । ज' सकै अछि कीहने कोनो दोसर होइत ।

म०—बेस, तखन भवना आनि सँ देखि से । बहू काशीबापक शांति-पाछा अरेबन बिस जा रहल छीक ।

मा०—त हो ! सते । बहू छेक । आन की करक जाही ?

क०—करव की ? फिरि चमू । ( कुनो सँ ) हो सामन उठावहूँ ।

ब०—हो चमवाभू ! हम कतेक समय हो आएल छलहुँ । एना बेरंग बापत बैबाक मन नहि करैत अछि ।

म०—तखन कि आब कोकर हामर्य कारि अँधाक मन करैत अछि ?

मा०—हो, आनि क' त नहिइ जेने हैत । ओ तम त जपने लखे मरन काइत हैत । देखक सगड़ा अइक मगरा नीक ।

४० ई. पू. में मृत नहुँ। भाव गौतम के पश्चिम उत्तर दिशा में प्रवास  
कर जा कर जैन धर्म का प्रचार करने लगे थे।

ਮਾਤ ਦੇ ਧਾਏ ਦੇ ਤੌਲੀਲ ਉੱਚ ]

१ श्रीगुरुदेव काशीम ० । १५५ ॥ दूधक भाव से दो दोष दयाभाई  
 दोषों भवामे धरैस छवि । बूढ़ दल गज शक्ति के दधि अवाध छवि ।  
 जगदीश ॥ दिस ताक्य नर छवि, धोड़ा दोषरा दिस । बड़ा कोषन एहद नर  
 ॥ १५६ ॥ श्रीगुरुदेव काशीम ० । १५६ ॥ दूधक भाव से दो दोष दयाभाई  
 दोषों भवामे धरैस छवि । बूढ़ दल गज शक्ति के दधि अवाध छवि ।  
 जगदीश ॥ दिस ताक्य नर छवि, धोड़ा दोषरा दिस । बड़ा कोषन एहद नर

सधुकाज ( काङ्गोपख सं ) अरु तपरा पय के एहि तरहें भेदअव  
करअः हेतु बयोनि छतिऐएतु ?

कालोनाथ (अष्टमि द्वादश) —अनन्त ने लक्ष्मी के गर्भ में । हृदय में  
"हृदये गरम भस्मिन् स्त्री ।

॥०. कियल 'रग' कइ । 'हंय नग' क' क' कहै छिएन ?

पक्ष—( प्रोड. भग. आ. वि. )—नवनम हमारी व्यवसाय भाग हो। इस नहि  
के कारण

मन ( गीहः ) एव । ते भवन्ति कस्यचिच्छब्द से तोरा से भाषी नमि  
मंगुलम् । ह्यमर उ चर होइ भवि जे फल कतहु बनि नै जाव । एत बोध  
इदमि ।

तक्षो ( बूढ़ा सँ ) माथ । जग, दुपही सभ बीयर हउवाये जलो । एहिमे  
गदि बाट कदारस होइत रहसोक ।

४० (तथापि) चूष्य भवत्येते । ई कथा त गच्छते केशी, आन  
दोसरो ठाम सुगोक्त त हृदि जेतोक्त । जाव रह भरि आन सुगारि !

तथैव ( समस्तिकम् ) माय । कुपारि रज्ज्व राश नहि छेक कि तु न्याय  
के हीन क' क' बुद्ध राश राश छेक । ह्यम अपरा अद्विपर काभिर नद्वन सकोन  
अन्याय वीरुह" । बुद्ध बित्त तौ सागका मेरु—सखी बडी तौ बैलक हाड सखम ।

[illegible]

च० ( प्रीति ५० ) - को कहे छौ ? आइकाएक काय देखि किछु कुरिपहि  
न भएछ । काय पयायन कइबाक मुह न तहिउ रहस । ह्व अपना शिरोक दिना  
सकी मंगै छौ ।

[ एकाएक प्रोद्गाक नेग्रमे एक दोसर प्रकारक चन्क आबि जात छन्हि । जेना कोनो दिग्यज्योति बाबि गेल होइए । ]

श्रीका (सूची में) - परमेश्वर हमारा तब सिद्ध होइ अणि मेरी हमरा समयिन कहनि ।

जुडी ( भाइजयंत सें ) ऐ\* \*

प्रोवा—है, हमारी एकटा एहने बेजगदिर कथ्या रह्यो । जिवित रहैत त  
उतये डा बेलि रहैत । हनरा एहि जग्याक जालिये कोही रमाक ननिबिम्ब देखाइ  
पके अछि । ई बेटी हनरा द' दिय' ।

१० नाम ! तुम की बर्तन से ?

श्री० मोक्ष। एतन्मिदं कथं विप्रैः । दृष्ट्वा तैश्चस्त्रिभिर्ब्रह्मैकं त्वमसि ।  
अथि जन्मसंज्ञायां विमलान्तरं दृष्ट्वा अस्मिन्नेतिह ।

तब { तमकि कष } महिं ए ॥ वंय डारा हुमरा अममिगल कयव  
कोन मयिकार मः ?

श्री०—साधुदया अधिकार, जहाँ ईश्वरानु हेतु जातिके शरणा कहे रही।  
अब निरु। इस अर्थसे कोरसे जहाँ ईश्वरानु हेतु।

( जो तपनी के अदि एक पक्षि जवन कोरे में बैठा बैठ छदिन्हू । तपनी दुरन्ति-कक्षि जानव भगित छति ) :

સતી- સમ્ય જાણવાય ! અહીં સદા વેદ થી ।

ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ !

श्री०—हूँ बीमा ! हमरा कसिया दसिअ भ'ज । ननु भावय म' जही क'  
एहम रहल भेटि गेल अछि ।



म० परम " "

धी०—पुत्र-पुत्रसु किछु नहि । एहने सोचोगत पुत्र हमार नाही ।

म०—ई कोन जक भूमि पैल ?

धी०—भयवातक जक ।

म०—नौ, हमार अपराध माफ कर ।

म०—आब जाक' हमार सोच भेल ।

बूढ़ी—अप्य भयवान् । अप्य भयवती । हमार भरोस नहि छल । भयवान्  
नहिना सभक भिगड़ल वनवभुम्ह । समधि । हमार मन होइ अलि अत्रिभ भुम्ह  
अमृत नै मरि थी । हमार आजीवनी सिध' ।

( ई कहैत जो सखी तँ लहड़ बहार नम मोदाक मुँहमे छ' पैत छविम्ह ।  
मोडा सैदा अपना डिङ्गनकेरिबर मे सँ रसगुल्मा बहार करैत छवि ) ।

मोडा ( तरणीक मुँह मे रसगुल्मा पैत )—की ने ? आब त मे हमार सँ  
लगड़ा करबे ? नौ लगड़ा करबे त ई ओर मोड़ि लेजो । ( ई कहैत तरणीक ओर  
के भूमि पैत छविम्ह । तरणी मुसकुरा क' रहि जाइत छवि ) ।

[ गाढ़ी छोटो पैत बिदा न' जाइत अलि ] ।

## परिचर्तन

पण्डितजी विद्यालयमें ऐसा ही देखें छवि के डेरामे लाजा बंद अछि । बाहर कसपर पनियरगोले पानि भरल देखि पुछलनिहू— की तम ! मलकीनी कसय मेनपुःह अछि ?

परानु ओ जेना सुगमाहिण नहि कैंतहैंहू । कमधि क' बेल माथपर उठोनक और दोसर दिख बिदा भ' बैलि ।

छजन पण्डितजी मनचनबाकें छोर कैंतहि । ओ चतुरापर बैलि तमानक गहों बनवैत छन पं० जो पुछलनिहू— री । मलकीनी कसय मेनपुःह अछि ?

परानु मनचनबाक मुहँसि आते नहि बहरैलैंक ।

पं० की चिन्तिबा क' कहलनिहू— री ! मर्बत की होइ छीक ?

मनचनबा किछु गोहिपा क' बाजल, परानु पं० कीकें स्पष्ट बुझना लहि बलैहू । तमसा कम पहलचिहू— री ! कइमे पहादेव अटकल छपुःह की ? एना मरा-चकोर किएक लागि गेलीक अछि ?

एहि बेर मनचनबा साहस कय बाजल ओ सिनेबा तेन छवि ।

ई सुनिछहि पं० कीकें छवि देलकेंहू । बरबर कैंत पुछलनिहू— कछन मेनपुःह ?

मन०—करीब दू-ऊदाह अवे—

पं० की—कसरा तम ?

मन०—एहिछामहँ त एतकरिए नेन छवि ।

बाद पं० कीकें नहि रहि मेनैहू । मनचनबाक काम एककि कहलनिहू— री ! तो किएक जाय देखहुन ? कुन तौल अड़ाक सेर क' गिरै छै से एही आतिर ? नयकहराम ललितन ।

मनचनबा कहलकी हू भालिक । हुमर तिमाल र' दिम । काम एहिदम पुकारा बहि हैछ । ओत काम गइहा, मारि जाय कीपहा !

ई कहि मनबनमा चारमे छोटय मयन कुत्ता उतारि क' पछिरन जावन ।  
ताबत् पाछाँ भई-महुँ डेग रीत सजकित बिचलई पछिताइन अर्द्धत दृष्टि-  
भोबर भेलौह । ओ चुपचाप कबिरसँ कुँजी बाहर कब लागी छोड़ल लगनीह ।

साथ प० जीक पुपकार छट ।—छवरदार जे आय एहि घरमे गैर रखलहुँ ।

पछिताइन स्तमित रहि गेलीह ।

प० जी कबकि क' कुछनमिह अहाँ कतय भेल छन्ह ?

पछिताइन आसँ स्वरमे कहलमिह कनेक 'जायिक रानी देखल भन  
मेनियेक । रातिमे प्र भावत-भातसँ छुट्टी देब कहिन । तँ कहलहुँ जे दिनेमे  
क' जाबी ।

प० जीक अतिमवर्षी होमल लगलहुँ अहाँ समय टा लाज-छाछ चोरि क'  
पीबि गेलहुँ । अँछिमे एकरेली पामि गहि रहल ? दिन बहाइ पर जाति क'  
बिदा भ' गेलहुँ ! से बी हम गौर भेल छलहुँ ? ओर सिनेमा कि कोनो लोभ  
छलैक जे पुन सटक हेतु पड़पड़ क' बिदा भ' गेलहुँ । बाटमे कहैको ओक देखल  
हैत के समय भी कहने हैव ? हमरा एहिठाम के जाहि जि-हैत छल ? अहाँ हमर  
नाक कटा होइहुँ !

पछिताइन गटगट लपटा घुमल रहलीह ।

प० जी प्रथम कँजमिह—ककरा संग छलहुँ ?

पछिताइन अजतापूर्वक कहलमिह बोकीन ताहेबक साइनसँ हेतु

छलनीह ।

प० जी पुन बाज-वर्षी करम लगलहुँ—ओहिनाइन एनारमे छति पड़लहुँ  
त महुँ छति पड़व ? सब सखी सुमर पाइय, सुहरी कहय हयहुँ । अहाँ तित  
कटा क' पड़वमे दिजगइत छी ? छजन लाल रोह बगर क' जानि, अपनो जाति  
बिसरि गेलौह । देखी कुनो बिदायकी बोल ! अहाँ मय-मय जाति सिखैत छी ?  
सिनेमावे एकत एक गुंडा-अजारा रहैत छल । बिना धूमकेको जीक धरक स्त्री  
कोनय आइ छल ? ओहिनाइन टिकट के कटोलक ? केओ बिहारी त नहि भेटय ?

पछिताइन बिछु साइन क' कहलमिह टिकट त हम मरये कटा मेनियेक ।

ओर बिहारीमे एकटा कबिराजके देखलियेहुँ ।

प० जीक ओसि भितमे जेना पृष्ठ पड़ि गेलहुँ । कबिराज जी हुनक अनन्य  
बिब छलमिह । जाइ ओ पछिताइनके मजबुतिसँ सिनेमामे टिकट गटय  
हयि मरये भी पुनके सोचिन्ह ? प० जी इनामिह भरय लगलहुँ । ओहिनाइन

जोइत बजलहुँ—कुनदा ! दासली ! नाथ भरि जन्म साभवेर पाठ कैलियेहुँ ओर  
ई हुन नृतक पयसा मो बला क' कर्मनाशमे भला ऐनीह । मला कबिराज जी  
भी कहल हैत ? जाइ हुपर बाग छति पड़ल !

पछिताइन अपराधिनी कहीं मूलिमत् अछि रहलीह ।

प० जी हुनका बिस आयेय मैत्रसँ गकैय मजमाह—अहाँ एवम विकलि  
न रहपर भयसँ । जान मोटा चोटा बाहु और अही मन होय परि जाइ ।  
साबत् पर्वत हय एहि घरमे अन्न-अन्न ग्रहण नहि कम तकै छी ।

ई कहैत प० जी समकित कत कबिराज जी बिस लदा भेलहुँ । सोइमे दूर  
पर कबिराज जीक मत्ता रहैलहुँ । जवन प० जी हुनका पछुअइये पड़लहुँ त  
ओरसँ कबिराज ओक अलंजित स्वर सुनाइ पड़लहुँ । प० जी काम पाकि क'  
सुनय लगलहुँ ।

कबिराज जी अवका पक्षीपर वरमि रहल छलाह अहाँ घरि जन्म मुर्दा  
रहि गेलहुँ । हय कहैत छी जे महुँ को किम देखि जाइ । जाइ आबिरी बिन  
छेक । परम्पु महुँके साहसे गहि होइत छल । बिना रजवारके कतहु जाइए  
नहि सकैत छी । गालजाल लकी सखडाम एकटा बरबाह बाहो । एहि पयुकीवम  
पंत मरणे गोक ।

प० जी हेतु स्वरमे उत्तर देलमिह सिनेमामे कौक लोक रहैत छैक ।  
गुंडा अजारा ।

कबिराज जी भाषण होमय लगलहुँ गुंडा अजारा कि अहाँ के उद्धा क' ल'  
जाएत ? लोक देखि जेत जाइत कि अहाँक सोनिये मिया जाएत ? जे देखल  
तयस अहाँ देखि लेबैक । अजनासे लोक क' क' पूज । ई बीसम जनपदी  
पिकैक । पुनिवा बहुत जागो मदि भेल छैक । जाइ ओ पुन नहि छैक जे 'वीर  
देवि नहि चौधत बाहर, नहि एकसरि बहुशायि । जाइक आइक अवर जीव सम  
जाति न कोवम जायि ।' कक काम को समय जाति भेल छैक जे 'वीर देवि को  
चौधत बाहर, पूव एकसरि बहुशायि । घर बाइन सन भूमि देखके, कनकला  
जाति जायि ।' ओर सिनेमा हाउस छ एहि कामसँ पाँच निमडक रास्ता छैक ।  
एवम तय कहै छी तयन अहाँके सास्तक्य किएक होइ अछि ?

पुन मेही बाइज सुनाइ पड़ल—हमरा धुने एकरि जाएव बार नहि लागत ।  
केओ बिहारी भेटि जाएत त भी कहल ? नहि, नहि, हमरा छँई नहि हैत । एहि  
सँ बस कँठ दबाक' भारि दिव ।

कविदासजी और अधिक उत्तेजित होकर बोलना शुरू। 'बाहरी'। हमारा ध्यान वहीं लगाए रखें ? एही ठाम पौरुषताओं के देखें। बाहरी मंडिनी-धो से देखें—को शान से जा। क' से जोड़ कराने ५, 'टकर' ५, 'टी' ५ से बाहरी। की-बुझको ! की छुती ! की वेगी ! इन वृ-मिश्रित धरि देखिते रति 'देव'। और एक सही की ! घंटा मरितें हन कति रहन सी ये बहू 'न' बाउ, देखना योग्य 'विनय'। धीक परानु बहूक परे महि उठैत अछि। अवना-अवना कर्षक बात पकितवा अपने ओहन भुक्तकोन अछि, तकर रती त एहन हृषिकार और हमरा क'रिपर बहूँ सेन बैदकुक। धन्य आता पवित्रबाक छैक से ओहन हृषी-रान भेटनैक अछि। क'पिक रानी सब निर्भीक ! आनन ओरानन हमरा भेटन त पूजा करितैक। ओकर व'रधोवनो ए'टि काममे अछि 'न' त क'रि अछि ?

तब पर मेही कंठमें सिद्धकन प्रारंभ सेन और कविदास जीक छद्म और से खटखटाव जस्तै-ह। आन ५० जो आह्वान २५ अचित मटि मुकुरहि। नृपपहि बसकलाह और बाजार होइत बरा दित ऐलाह।

५० श्री जयना पादकपर पदु'बे छवि त देखै छवि के एकरा भिषा लामन धरि और मनचनमा ओहिपर पैरी बड़ा रहल अछि। पृष्ठभावर बहलकै-ह—धनकीनी एही दूगते नैहर जा रहल छवि।

५१ श्री बहूचमिन्—आन नैहर बंधाक काह भहि। पैरी नतर। और हे ! ई दोदा व' अवतन ! ओ मुद्रा बजतें पियास होइयु'ह से बहूच के पक्षिने बलबद क' लेपि। □



## युगक धर्म

रमेश बाबू, जो कथा साक्षान्त मन्त्री होता। देवदासे दुर्गात सृष्टि, मोन-हरभावेमे भवा। जोवन करावने के गुण। कहीं छरि वनेम कक ? कोरे छरि कूल तोड़त अछि। मोन-हरभावेमे सीर विपरीत अछि। कहीं-कहीं बनेत अछि। इतना कम भगवतीन पूजा करैत अछि। ई कम कार्य सुप्रीत्यर्थ पक्षिगहि कब लैत अछि। ई ऐक नै हो। बंधा केहन छैक। एक पक्षरि नखुआ पाहि, दोसर पक्षरि गहवा पाहि। पुण्यपाठ से करैत अछि हो बहा हू। को सुख-सुख पक्षि लवकारण से सुनिने रहो। राति से रामायण महाभारत पढ़ि के जाइतसे सुनबैत अछि। ओर ताहिपर विनीत केहन से भिन्न पाय-विनिपादनक पर दबोने कहियो सुनति नहि। सलज्ज सेहू के मागोसँ भरि मुँह नहि बनेत अछि। रमेश बाबू। मोहन कथा दिखबै पुनैत अछि। यदि जो अहंकार घरे आनि आप त अपन भावै सुनू।

एतना कहि पं० असुरामन सा रमेश बाबूक मुछाकनि लक्ष्य करय लगलाह के पति नखुआक केहन प्रभाव हुनकार परवने ह अछि। उन्मु रमेश बाबू पूर्ववत निगरेठक भूषा छेड़बैत रहलाह। पुनः हाथक पड़ो देखि बनलाह—पं० जी, अब टेनिन का ह'इम हो गया अछि, नयस्ते।

ई कहि रमेश बाबू रेकेड नयबैत बिबा न' गेलाह। पं० जी एक भिन्न छरि मुँह बोने छ ह'इम अछि। तयबैत पन पहिरि सुअ छेड़त बिबा गेलाह। राटमे भेटलपि-ह बिबावत चौधरी। ओ सभ रा राग जुमि कहछियन्ह—पं० जी, कहीं बाबूमे नेन बहार करम भेलहुँ ? रमेश बाबूके हन खुब जेन छियन्ह। कतेको कथागत हुनका द्वारपर अवस कवार पड़कि कय रहि गेल छियन्ह, परन्तु हुनका माफपर पाछी नहि जैसँन्ह। रामायण पाठ करयवाली कथाके ओ देखय नहि कहैत छयि। ते अवनको 'बाबू कहि क स्वामीके पिछो लिखैत अछि, एकरा ओ पशुपुत्र्य नुकीत छयि। ओ गोली लगा क' मरि जैताह से सब बचूत, किन्तु जोवन कथाके विवाह नहि करताह। जहाँ अर्थ दुर्गापाठक नाम कहि क' हुनका पीर ह'इम कहियन्ह। अब ओ कथा कमपरि अहिके ह'इम लयय नहि।

पं० जी अवन कथार छोकैर बनसाह ई हुनकर बुद्धिक कोप बहुत बिबा हमार कर्मक सोप कहूँ जवन एहन सर्वगुण सर्वज्ञ कुलीन क पा हुनका पमिर नहि, तखन केहन कन्यासँ बिबाह करय चाहैत छथि ?

बिछोड़म चौधरी एक चूटकी कथार पं० जीः आगी बड़बैत कहलपिन्ह— पं० जी। जहाँ छी सामिक लोक। आइकाहूँक नमदुरिवाक हलक महि जकैत छिएक। रमेश बाबूकें जाति-पाति, वंशभूम वा कुल-पर्यायसँ कोनो प्रयोजन नहि। हुनका केवल अर्थकी पढ़ल कन्या चाहिये। हुनकाके मारिओ पड़ैत से हुनका पसिब पड़ैत। पछानु संरक्षकमे हथोली पड़वधानी हाथनिह। से एकटा सड़की— जिस नगिस झाक नाम हो० एम० सी०क रिश्तमे केवने छथिन्ह ताहीपर हुनका छथि। कन्याक बाप नहि छैक ओ माय।

रघुपरास चौधरी जी बड़ीकाल धरि पं० जीक हानमे योद्धम सभ कुल-हुता क कहैत रहलपिन्ह।

सभ किछु सुनि सेवाक दरार-त पं० जी अवन टोक कोलि सेलहि और पतिव्रत करैत बजल।—बाबू हमार कन्या जखन जोहि धामे नहि गेल त ओही छौड़ी नहिप सामय पावोसि। हम ऐवन भाक' रमेश बाबूक पिलीक कानमे सभटा बात छ' दैत छियैत, जेना हेत जेना हम एहि कर कें मछटाएय।

ई कहि पं० कुरुरानन झा धागवय जकां दुइतकसय सभ दिश भेलाह।

रमेश बाबू कसहु जैबाक हेतु चूट-चूट अगवैत छलाह ता हुनक पिती भाबि क कहलपिन्ह—रमेश। तोरना किछु सय करवाक छथि।

रमेश बेसि गेलाह। बिती कहय लगलपिन्ह—देखहु, आब सोरा बापक ह्यामवर हथड़ी छिओहु ओओ ई सिहता मनमे देनहि सेलीहु के पुगहुक मुँह होओ। तौ आब बापटी पास भेटहु पर नसाएव जकरी छौह। तखन जेहूत वयस कूलक तौ बिबाह।

रमेश जानू टोर्कत कहलपिन्ह बाबा साहब। जरा मुकससर में कहिए। मुझे जखी एक लड़की को देखने छना है।

पिती कहलपिन्ह—सह बूझि क' त भ्रम बाएन छी। तौ जाहि कन्या के देखब चाह सह तकर पूरा हुलिया हथरा भेदि गेल छथि। ओ टेलीफोन आकिसमे काम करैत छथि। ओकर माय तोय सैसानक चाहैत छौह। जखन कन्याक बिषयमे सभ सुनि छैबह तखन जोहियल जैबाक कामे नहि पड़सोह।

रमेश बाबू चुपचाप धैर्य पूर्वक पितीक सेवपर सुनय लगलाह। बिती पहिने गलक पुनू पुरामे भोगि भोजि सेलति तखन कहय लगलपिन्ह—जने छह ? कन्याक मूम भी छैक ? कर्महे उदरा ? बाप तेजबनता छैक ? माय छोटबनती छैक ? कान कान बुझिओ ओ मासम्भाति भेटोके' पड़ोतक अछि से जगजाहिर छथि। हमरासँ सभटा जिकेक बोनीबह ? ओ छौड़ी अरना मायोसै टपसि छथि। बचसय ध दस वर्षमे बाप गहि हैनेक। ताह बाप मन नमसरि। बी० एम-सी० की खेलक जे जग जीति लेखल धर्म, कर्म, देवता, बिबर किछु नहि सुमैत छथि। ते ओकरा मद्रवा लयैत छैक ते दिग्गुण। पठित सभके' सूखै क' क' बुझैत छथि। जन्म त एही देशमे भेलैक छथि, परगु मेयक कान कटैत छथि। जुला पंताबा पहिरने, फाक कसने, माथपर मुलही रखने, कानमे कोंगस लगोने सैकड़ो पुष्यक बीचमे टेलीफोनक काम करैत छथि। ओकरा सुजा-धुतिक एकोरसी विचार नहि। क्रिस्ताम जवकीक बीचमे रहैत छथि ओकरा सयक सय चाहत बिबैत छथि। सिगरेट पिधैत छथि। कमेक बयनी छिटपिट करय आबि गेल छैक ते अपना भाग मे ककरो जगदिसहि ते छथि। भंटे-भंटे फँसग बकसति, कोखन छाड़ीमे, कोखन शालवारमे, कोखन गाउनमे। जहाँ पीच बजे साँस क' आच्छातसँ छुड़ी भिटनैक कि उबरका जुता पहिरने छुडकि क' हु-हु सीको एकबैरमे उतरैत बाएल और साहकितपर सवार भय दस द' टैनिवक गैदामदे जा कुरैति। सुबै छियेक जे बारह वजे शति क' बजबसँ बीज क' क' अर्यस छथि। हो, साम-मैदाय त एकोरसी छैह नहि। कमेक बार-बोहक सग पाईमे जाइत छथि, सिनेमा देखैत छथि, उकर ठेकाना गहि। मायके' खुसी होइ छैक जे बाह। हमर भेटो बूब कगाइत छथि। कहीं धरि कहिओह ? ओ सड़की सभटा घाब सकोच धोरि क' भोजि गेल छथि। निरंजय तेहू जे जौबिया पहिरि क' पोछरिमे हेनि जाइत छथि। बस टा छोड़ा आगि बसो चरने रहै छैक। एहन हुकायछिनी जी घरमे भाबि गेल त परक सस्यामावे बूझल तोर एकछे एक सुन्दर कुलीन काया भेटि जौहोह। ओ ओकरामे भी छैक ? ओकर माय कि एको छशम तोर देखोह ? नहि तोहै पूबि गेलोह। ऊपरसँ पाउहर पोतने रहै छथि ताहियर त छौड़ी भागसँ छटल बाइ छथि, कतहु गेब जकां मोरि रहैत त नहि जाबि की करैत। एको धड़ी सभ गहि। सरिखन मुट्टी-मुट्टी चमकैत रहे छैक। एहन कन्यासँ कि घर बसि सकैत छथि ? जखेनी नोबेल पडसोह, सिनेमा देखसोह, गियानो बजोहोह, बस करतोह। मोहन सड़की उबय हाथो पासब थीक। बायमे सैकड़ो रुपयाक हथो-झीस, सेन्ट-पाउहर, सामा-बैसरी

रमेश बाबू और बेसी नहि सुनि सकलाह। पुछलपिन्ह—बाबाजी ! आपने ओ कहा है क्या वह सब सब है ?

बिस्ती बलिग भूँइ म' कालमिन्ह हव बल तर छी, जे एको बात कति कहन होएओह । ओ मग केहन माय बिनी अलि जे हुइए मिनटमे सोचके मोहि जेग अछि । तोह जइतहु त वेना बनिबैतहु, तेना मुकुरैतहु जे तो बिबव जगमे सीति जइतहु । ई त रज रहल जे हुइए ऐन ओकावर पतर लागि मेम ।

रमेम बाबू अवन। बिस्तीक पैरपर छति बइलाह । पित्तो बइबव होइत कहमविन्ह—ई भगवत कथा ओक जे तोरा अगमे मुकुटि म' गेलौह । अय त ओहि लइकीके देखबाक हेतु पटना गहि जेबहु ?

रमेम बाबू हुनक पैर चैबहि कहमविन्ह—तही, आमाजी ! अब छने देखने भी कोई जरूरत नहीं रही ।

बिस्ती बइबव मातिके कंठ मवा जेतहि । बइलाह—जोर स बोअक संतान ! महादेव का क शोणिन । अगम बसक भर्वावा कहियो छुटि तबैत छैक ? हम आवए हुम माइ धी के तेहन कइ जवाब गइ । दंत छिऐक जे फेर तोरा कुठिदे-साक साइते गहि हेतैक ।

रमेम बाबू कहमविन्ह—आमाजी ! जाय तलल खभले । अभी तक मुझे टिटेस नहीं मालूम था । मगर आज जे तो 'डिप्लिमा' दिया, उधै पूँकर मैं जब एक मिनट भी देर करना नहीं चाहता । अगर उसका बाया बर्सेलिकेकम की लइकी में मौजूब हो तो मैं जान का 'लकी' समझूँगा । मैं फौरन टेलिग्राम भेज देता हूँ कि मैं मैरिज के लिए तैयार हूँ । " आमाजी, इसका कंडित भाव ही को है ।

ई कहि रमेम बाबू अपना बिनीके मपटि गेलान । बिस्ती विस्मयमे लवान, मध हुँह सकैउ रहि जेतमिन्ह ।

## महारानीक रहस्य

ओहि दिन यहाँ महारानी रहैक, हय बलजमे भगत चाह विवैत रही। संगी लल साग-सगरज खेति क' जगज-जगज मर बनि गेल रहयि। एतकरके लमव क'टव अकहुत बूझ पड़ेत मन। लागत देखैत छी जे मधुकरजी लटकल आवि रहल छथि।

मधुकरजी रंगीन लोक। तेहन-तेहन गुलाबी गंध छोड़ैत अथि जे सुननाहर के रस भेटि जाइत छैन्ह। से आइ एतेक दिनपर मधुकरजीके देखि मन छलल-मिलल भ' उठल। कहलियेन्ह—आइ, जाइ, मधुकरजी, मरलहु बेर पर ऐलहु'। चाह पीबू।

मधुकरजी अपन टोप ओ बरसाती जूटी पर टांगि, आहक हेतुस पर आवि रचित ह' हम कहलियेन्ह—इह! काइ कतेक दिनपर जहाँके देखल। जहाँ त जायामने रहैत छलहु' ? देख कहिमा ऐलहु' ?

मधुकरजी अपन देखी कमल बहार कथ सोनहुला अपनक लीला साक करैत भजनाह—यैह मास दुइएक होइ अछि। बाद फेर जोड़िदाम बीबो नहि करब।

हम कहलियेन्ह—से किएक ? जहाँके त पुने छलहु' जे राजा राजेव हईल तेनी मानैत छथि। देखो पहिने जालमुद छल। साथ एकदम रुठल नग छी। बाल की छैक ?

मधुकरजी हमर संगपुरिये जका। नयनमे डू चारि बच जेठ छलाह, लचापि संगिए बकौ बच होइत छल। लतेक घाय नहि रहैत छल।

मधुकरजी एम्हर-ओम्हर तकलन्हि, फेर नहुँ-नहुँ बजलाह—हमरा शरीरके पक्षह स जोड़िदामक महाराजी बुरि क' देखन्हि।

हमहुँ किछु फिछु रतिक लोक न ओहि समय तकपुबक। ई गप्प सुनि तेहन मुगुहल आगत जे माहक प्याली हाथमे रहि गेल। पुछलियेन्ह, से की मधुकरजी ? कनेक बुझाई कहू।



३३/अथर्ववेदः

मनुकरजी काहूक बुसकी लैत बसताह—बापी बाहे छीह कि बीर किछ  
महीबह ?

हम कहसिये—तुरंत बंगसंत श्री ! बंदी नजीला जलद मेहरा आपन ।  
कहसिये—बोव, कष्टमेद, आपमेद वरीरह जो कुछ हो, से भावी ।

पञ्चमरुकी आरु सुप्पस्त भ्रं क' वैति मैलाह तौ च भविते मरु ये ह्य  
राजा साहेब क आरु मोसाहेबने कलिपेह । धिकार कोरेवाने हबरे नाइक लभने  
जातो रहित छव । परन्तु परन्तु की कहिवोह ? सभटा कर्मक कात होर छेक ।  
ओहिनामक महाराजी हमरा साहेब क' देखति ।

हमरा समय गुरुगुदी उदय लागल । कहलिये—कतक करिछा क' कल ?  
जोहिठामक महाराजीके जहाँको काल ?

श्री गजगाह—जरे । हे मुनि पूछत । श्री कन्या कोकत छनिभू ? हमरे  
जभा कतेको भोगाहेव ओहिदामर पका ऐसाहू खि ।

हम अन्वित होकर पुस्तकालय - महकें कोना खानि भिन्न ?

गणकारनी कह्य सलसोह ही, एक राति हग अपम केराहे सुतल रही ।  
पयिक समय रहैक, केकाह सुजले छोकि देलियेक । धरतम बसात चलेत रहैक से  
उपार सेहमे लोक लागल : पुरखेपाक सहारादे के अकि लागल से सेमुष भ' सुति  
रहलहे । अजम जाणा राति क' निद दूदल से देखैत की के गहारा नी छतोप  
सवाद छधि ।

ताजपुर केपरा काबिक' टेकुलरर प्लेटक पवार लया बैलक लजन जो  
बलि गेल (अधम गधुकरजी धोपमे कटा गइल बबलाह -ही जी, हम त बरमर  
कादिय भगलहूँ)। माली धुक-धुक करय लागल। मुँहो जोल मति भहराम। पहिले  
कक्षिओ एहन अनुपम रह्य रहि। हम करे राकदम भ' गेलहुँ। देखल जे काब  
केबाद धूलन रह्य देख उचित मति। जोतरसँ बदक देखिएक। अधिक समझा  
लिहकीओ लया बैलिक

जाये हमर ईह भुक्तक सागव । तथानि साह कथ पुकनिपेह—नो कथेन  
काल धरि रह्योह ?

भयभूतकी तोन-नरीचक बुझी गिजदेस नहूँ-महूँ बखसाहि—ओ गरि राति रहतीह। भिनभराही रातिमें जा क' जाग होबन्हि। ओ येतीह ठकम जा क'

हमरा होन गेल । ता'त' हम पत्नी-पत्नीस मय गेल रही । भरि राखि समारण  
 गेल । एतबो कति नहि कुल गंध के लटि क' धोनी पहिरी । पिपसि नंद मुखाइ  
 छन पदतु सेहम पल रही जे पाणि बरि क' गीत से नहि होय । दर्शगरी देखल ता  
 होर सेहम बुझि पड़ल जेव सभदः एव केनो भूषि नेने हो । ओहि दिग हम भरस  
 बदरीनो नहि केत ॥

हमेश मुहूर्त बहुरायस-बाप रे दाप । एहल नवरयस...

अधुकरवी पैमानक कतारमे सिरका मिलैत यमलाह—हो, अबरदस्त कि  
अबरदस्त सब । लोकके खेता-खेता क' भाई छुआह ।

हम मुकलियेह—हमका पछाड़मय्या केबो नहि सँह ?

बभ्रुकरो बलवाह—ककर बापक सकल छिक ? की बकरापद संगे छविह  
तकारा मानि पिया क' छोड़ैत छविह । शरीरक समटा सख छोनि क' छिद्रो बना  
देत छविह ।

हम कहलियेह—बरनु राजा साहेब ।

मनुकरात्री वसन्त - रात्रि साहसक त क्षपने दुग्गा बरे सीह कटित भेल किट  
छवि जहाँ एक नेर मसारासी धरैत छविन्त त 'काय-बाप' करम लगै छवि । तेना  
क' बजाय छविन्त के छवि नहि होइत छैह ।

तुम मुझ से मिलो । मधुकरजी कहते हैं कि मैं जब साहू-सोप जाऊँ तो  
होइत छोड़ । लखन ओहि बैरागी का क'सल देखि जावतु । यदि जो महाराजो  
मदनगुप्त से मेरे ऊपर बिस्तार नहिं ओ सका-बसका पहलमानक धोषि सटका  
वेव खींचत ।

हम भुज्य होइत कसिदिमह—सबका हुनका शानकी पुनक नाही। वहि,  
पहन शिपाने अहि जेबाक नाही।

मधुकरजी शामसिंह कोटेली बचसह...तीं त ह्य कोटिकामध्ये पदार्थ ऐवढी ?  
 गहित ह्यरा कोम कासक कम्पी छल ? दुध, दही, धो, यथाह—असता ये जाद,  
 सपटा दरबारहें मेढेत छल । परमू जी सपटा सोबत क' जाइत छल । विशेष त  
 पहासाती मिश्र शक्ति क' बहूनि जाइत छलीह ?

हम पुष्पलियेन—अहाँ केवाड़ किशक मे बगद क' जैत छसहुँ ।

को बजलाह—दूर बताह । सो महाराजो त्रैदाह बम्ह नीलो लागपवानो  
पिकीह ? तो बजला मनी बजैत छह ।

हम कनेक तबुजिन होइत पुछलियेह—ओ कनेक दिन छरि भजेत रह्योह ?  
मधुकरजी अमितेठ निरोप करैत बजलाह—कोनो मधुर नहि येतैवह ?  
हम तुरत पटो खजाओल । बेगना खायल । हम कहलियेह—अदिया-ब'रनी  
पिछाई के काओ ।

मधुकरजी निर्विकार भावत पुन सगन कया कहल पमलाह—करीब छी  
मास छरि ओ खरैत रह्योह । बहिनो त डीक बारह बजे राति क' जावनि । हम  
परी देखि क' बूति जाइ के जाव ओ बीबीह । परन्तु 'गणेश' क' कोनो गिमम नहि  
रह्योह । एकै दिनमे हूँ-दू बेर क' अगम्य लागि गेलोह । हम लाख मरग मेल,  
धरन्तु ओ हमरा नहि छोड़लनि । जखन एकदम अचानक बगलहुँ तखन एकदम  
अचानक पावि खुप-प बलहि ऐलहुँ । आय गान भेटे छी अ केर ओहठाम जेबार  
नाम ली ।

तावत टेबुलपर रहलहुँ, फीम-चोप, रसमलाह ओ जाइतकीमक पवार लागि  
मेल । मधुकरजी कोहिमे हुनि बेलाह ।

हम किचित अज्वाइत पुछलियेह—मधुकरजी, एकटा बाल पूछू ? महाराजीक  
बाल की छैतैह ?

मधुकरजी अतिस रसगुला मुँहमे बैत विस्फारित देखबे हमर मुँह ताक्य  
लपलाह । बजलाह—एकर बर्ष नहि जायल । तोहर आवाज की ?

हम कहलियेह—पह पूछे छी के रानी साहिबा कग सर्वक हैतोह ?

मधुकरजी ठठ क' हुँकि पड़लाह । अनेक जोरसे टेबुलपर हाथ पटकलहि  
के पेटतम अज्वाइत बजल । पुन बजलाह—तो की से की बुल गेलहुँ । रानी  
साहिबाकेँ त हम कहियो श्रम नहि छियेह । जा कि साधारण ओकरा सोझा होइ  
छलियेह ?

हम विस्मित होइत पुछलियेह तखन जहाँ एकीकालमे के महाराजी के  
कहैत ऐलहुँ अछि ?

मधुकरजी पुन अट्टहास करैत बजलाह—हो बुडियोगा । ओ मनेरिया  
मधुसारी पिकीह जहिना कपडा-कोली जखमे, तहिनर जासाममे । अपियु ओहूँसे  
बेसी । एतयो मुसनामे नहि ऐलीह ?

हम जवाब दनि बैलहुँ । कहलियेह—तखन जहाँ ओतेक राते नाउ बग  
क' कियेक कहलहुँ के ओ घुआवा एहूँनि लाइत छलहुँ, एत क' बैत छलीह,  
पानि पिवा क' छोड़ैत छलीह, पाने बलीमे तर क' बैत छलीह ।

मधुकरजी तीव्रियागे हाथ पोछेय बजलाह त एहिमे कृति की कहलियोह ?  
मनेरियामे त ई सप हैबे करइ छैक

हम कहलियेह—परन्तु जहाँ त और बहुत बात सन कहलहुँ अछि ।

मधुकरजी सौंफ बिचरैत बजलाह हम एकोटा पाठ एहन नहि कहलियोह  
अछि जे मनेरिया महाराजीक विषयमे नहि होइह । तो मिला क' देखि सैन् ।

हम कहलियेह—धम्म छी, मधुकरजी ! जहाँ त मोनूमा बसा परि कैल ।

एहिलहि सोझ-सोझ मनेरियाक नाम कियेक नहि कयि बैलहुँ ?

मधुकरजी बजलाह हम कि जातय ऐलहुँ जे सो साहित्यक विद्यार्थी भय  
एतयो बलकार नहि बुझइह ? परन्तु होओ । तो लक्ष्य नहि बुझलहुँ से एक तरह  
नीके मेल ।

हम पुन मुँह सकैत पुछलियेह—हो की ?

मधुकरजी कनेक मुसकाइत बजलाह—बैबे छह ते ? ओही 'महाराजी'क  
कुवासे एतेक राते पेटक पवार एहिठाम लागि गेल यदि सोझ-सोझ 'मनेरिया'  
कहि हेने रहलियोह त सो एतना धावनी भंगितहुँ ?

ई कहि मधुकरजी एक बेर श्रुतिपूर्वक डेकार केलहि और तबुलपरत सगन  
बरसाती ओ टोर छल, हमरा धम्मनाम बैत बिदा क' बैलाह । □

## सात रंगक देवी

( १ )

प्रायः ६० वर्षे बहिलेक पथ्य कहे छी । हम कहिनक सभसुर मेन रही । हुनक ससुर सर्मनास्तगय । साठि-सत्तरसे कम नहि छल होइनिह । हम बचन बँवा काल आठन आठ त ओ १० बी जागी-जागी कइम आठसद्वैत, आठसैत, आठगक मुँह बरहँ बई करनिह—‘हे । पाहुन आवि रहल छवि ।’ यवि साह पर हुनक स्त्री कोनो दोगसँ हुनकी कुलकी दैत देखैक परनिह त ओ हुनका मेने-नेने सोने पसबाहुक काँकीमे मुनिनाक गाछ तर जा क’ ठाढ़ क’ बबनिह । तखन हमरा कहिनि—‘आज पाहुन’ अघिउ छाइन मलीयर ब’ गेल । चलबाक दिन हम १० ओछँ कहलिऐह—‘हम कनेक पुनक प्रभाव करलिऐह ।’ ई मुनिमहि १० बी त’दबईहँ हमर मुँह ताकय लगलाह । पुन बजलाह—‘एकर छतर हम भोजमोतर देख ।’ मसरा काल १० बी कहलिह—‘हे बी बटुक । हम अष्टीक प्रकनपर निचार फँस । प्रमथीतके पुषवते मुषक बाही । तँ को कहिक प्रमथ्यर कनकम धिरीह । आस्रहँ एहिमे कोनो टा दोष नहि परंअ.. परंअ.. ई बात हमेक लोक बयबहारक बिदअ.. कनेक समीरक बिदअ सँ. ऐ’ ऐ’.. बूझल कि ने ।’ हम कहलिऐह—‘हँ, बूझल ।’ और ओहि मजालक्या देवीके मानस प्रणाम करैत ओहि घरतँ बिबा भेलहुँ ।

( २ )

एक और ठामक हाल कहे छी । हम कोनो बोझीमे गेल रही । ओहिठाम एकटा परिचित भेटि गेलह । रामाक खबराम कहनिह ‘काजो, कम-हँ-कम एक घंटाक हेतु हमरा ओहिठाम बसय पड़ल ।’ हम कहलिऐह—‘चलितहुँ त बबरम, परंतु एखन एकाटा बखरी—’

ओ हमर हाथ ब’ क’ बजलाह—‘तै नहि हैत । हमरा आठनक हसीपन कहिके देखनीह । ‘कःपाराज’क लेखकके देखबाक एहन सुवोप कहिवा भेटतैह ?

४२, सचिनी

आज एहि पर 'तहि' कोना कील जाय ? भा बुझ प्रमसे जाना दलानपर  
ना केनाह । कहलन्हि—'कहिक समटा पुस्तकक मोट' टा टा बांटे अछि । एहीन  
के पढ़बामे बहुत बत लगैत छैह । होल-पड़ोसमे कोन एहो टा टा होइतह ।  
आहिक नाम तहि जेनाह होइ ? पूर, अपमा बसलान कहलन्हि—हो, अपमा  
मायके कहलन्हि के कहोस-पड़ोसक एहीगणके बतबा लेल ।

सो देव, कालक बाहू जो भोजन बजला है। 'देव, त आज कनेक भाग्यो अलस  
जाओ।' हम समझे गवईक अनुभव करैत हूँ। 'तुम नालस हूँ।' बीच भाड़ा  
जाक जो कहलसि - 'खब जगत कष्ट कपनेके' बरम पड़स। इसीपण देखव  
चाहैत छलसि। सँ कनेक भाँखि भूति लेल जाओ। हम जेतो समा ब' जातस  
परसँ जति पढ़ा'तु। लक्ष्मीर हमारा पुरा विद्वान महि बस जो अपन भुन  
भुन कर रहलसि। हमर दुःख मनके जाँत स्त्रीपणके सम्भावित बस कहलसि -  
'आब देख जाय, सभ सोष्ट।' जोसारा पर आगि म' नोक जका देखि रोह। यह  
'कामवासना' के लेखन लिखल। तत पर सुदीक्ष सुमनन, पंडितके कसकत भाँखि  
सकत जानने पड़ल जामन। हमरा पक्षेव जमी देखलसि हे कहि लहि, परम  
हम धरि भितकी टा नहि देख सक'पयेह। आहि लक्ष्मीर दक्षिणपणके नमस्कार  
करैत हम आँखनसँ बाहर देखहुँ।

{ 1 }

आज एक तेज़र तमक हुआ हुआ। आजकाले भोजन करके गेलहुँ त देखे  
हो जे धासन पारि, यारी, बाथी सब यवस्थापन बाजल। वेस पूरमे जहाँ गोसाकार  
सँकार लागल, वरन्तु केओ लोक नहि। हँ, एकटा नृणाक मोटरी आगोस राखल।  
गृहवति कीहि दिन तमैल बगलाह हँ। हिनका नीक जवनी भोजन करबैन्ह।  
गृहस्थाभीक गोसा पुसर ओहि मोटरीक तरसो तहँ-तहँ एकटा लहठो वला हाथ  
बहराएल, पंखा नेहो। हमरा अनुमानतँ बूझि पड़ल जे ओ देवी प्राय गोसरा बिस  
हुँह गुल क' बैसन छथि। कारण जे पंखा बंदबाद हमरा नकेदर बजरस लागल।  
बखन-बखन धट्ट द' आवाज होइक लखन-लखन कीहि पदाक मोटरमे एब बेर क'  
बस' बाध मुगड़ पड़ल। हम पू-एक बेर कहबो कोलयेह जे आइ पंखाक कोनो काज  
नहि। वरन्तु पंखा बंदिराम पहिले हमर सासिकाक अग्रभागपर आवाज करब  
यहल। ओहिबै लख भिन कथन त लखन गृहवति आबि पुछारी बेलन्ह—'कतौ  
कहल ज संह भि ?' स्वामीक आइ मुसँस देरी ओ देवी छोर घेरी तहुँकि गेलीह

कीर को दीक्षा हमर जाय छोड़ि रेलक । पुनः मनुष्यतिक बीबासो पूर्वादि हम ओहि  
दीक्षापासी बेबीके प्रहाम करैस पोढ़ी परतो उति गेलहुं

( ۳ )

एक मित्र किन्तु बैसी राहस्य कंसमिह । कहलमिह—'भाजी, जाह जहाँक सोअन हमरे कोहियाम हेत । ओ व्यास क' जहाँ इारे' मायूर बाछ लौगेने छवि ।' यथासमय मित्र सहोदर आबि क' अपना ओहिहास न' गेलाह अपना स्वीकै' गेरे बब ककुभसिह 'हे ऐ । हमरा तोनमि आबि गेलह' । पुन' आसनपर बैसभा छल कह्य लगलाह— 'हे जी । हम यहाँ-तहाँ नहि गयेस छी कहाँ गेलहु' ऐ । पारी आगू' सनयन देखल जे मायक आनर मोहक लिमाल धरि लटकीने दुनक परमो प्रथमधर गतिसेँ अपैत गँचेत लजीयो खड जकाँ गकुभित होइत पारी नेने आबि रहल छामिह । हुनू पारी आगामे राखि ओ मुँरें द' पड़ैलह । जेना विकट परीकामे बास क' धुलल होखि, सेना फलक द' निशान छोड़ैत ई देखि मित्र सहोदर कहलमिह 'हे जाह छी कहाँ ? एन्हर हुनू जरिकोच बैरे छबिथोह ।' ओ हमरा आग' अरिपौच परसंत तकौचें हवय जरि-कोचक अवका मनि गेलीह । मित्र बहलमिह—'और निछु आपह करिगोह ।' ओ बहुत प्रयास कैलमिह बजबाक । परन्तु कंससँ पाद उखचरित सहि स' सकलैन्ह । केबन किछु मृगकुशा क' रहि मेरीह जे हयरा श्रुतिभोषर नहि भेल ।

तस्मिन् भित्तं महीरस्य श्रवणं करोत श्रवणम्—“पुच्छं छविः के किञ्च श्रवणं  
पाणी ?”

सुख कहुनिऐह—महि । अथवाव : हम बहुत पाणि केनहु ।

( 2 )

एक भिन्न अधिक प्रगतिशील बहुरैजात। भिन्नमिहि थे—‘बी’ जाती। हम वृत्त बेकती एक दिनक हेतु पटना जाति रहन सी। जहाँक भीतय ठहरा।’ ऐन उत्तर को जवना स्त्रीसँ परियम करालहि—‘यँह बिनीह हमर...।’ दोस्रो हुन शाय जोड़ि हमरा नमस्ते करैत पुछलहि—‘को ? एहूर किछु मप तिखल गेलैक अजि ?’ हुम कहलियै—‘हँ, ‘खट्टर कना क दोसर भाग।’ बी कनेक पछाहत अक! बअसोह—‘बी, अति नहि तकीत छैक ?’

हम कहति रह्यहूँ—'कि एक नहि ? भइया देव ।' भोजनोत्तर दिव महोदय कोने पावरीं बाहर गेलाह । हुनके पत्नी अन्धकार पहुँच रह्यहूँ । हा प्रेतल

'बट्टर कका' द' गेल । हम कहलियेहि—'तिय', अहीन पुस्तक अ बि गेल । परन्तु ओ मुँह फेरि क' ठाढ़ि न गेलीह । हमरा भूमि पड़ल प्राय हमर बात ओ नहि सुनलन्हि । तँ लखे जा क' ओर हल्लिया—'हिनऐं—' दुरलभ ले मछी पही छे कादि गेल अछि ।' परन्तु ओ किछु उत्तर नहि द्य छप द' नीनामे बैसि रहलीह । हमरा एहि अपवहारक किछु मर्षे नहि लगल । मित्र महीपयक ऐला पर कहलियेह त हूँ क' बजलीह—'हँ ओ हमरा समझ लोकमें बजैत छिय परन्तु हमरा परोक्षमे परी रखैत छिय । जाब फेर बजलीह । ओर ओ देरी सरिन्ह' सिद्धांतोत्तु भुग्रा जाल । पुन. काहि उठलीह—'ओ पुस्तक कहुँ जहि ? तिय' ने ।'

( १ )

एक दिन एक परिचित कालेज-कन्या अपना घण एक मछ पुष्पकेँ लेने रिचवाँ छतरलीह । डेरमे जाबि बजलीह—हमरा बिन्हत कि मे ?

हम कहलियेह—मया बिन्हत मे बिबे ?

ओ बजलीह—हिनकेँ संग एहि दुसरे हमर विवाह भेल अछि । इहो एम० ए० पाहलस्ये छिय । हम फिलासकी लेने छी, ई साइकोलोजी लेने छिय अरनहि सँ काजीवाँब देमावक हेतु लेने आएल छियेह । अखिल कयाक एहन कोनकिता देखि भन गइब न' गेल । हम पुन' गेटाक हेतु मधुर रंगा देखियेह । ओ बजलीह—'तू टा प्लेटक कोन क ज छेक ? हमरा लोकनि एकमेसँ स लेस छी ।' ई कहि ओ निर्विकार भावसँ एगटा अतिरली छोटीत प्लेट केँ हवामीक भाग सखा देखिह । मन्त्रमे रंजनास दुबिछा नहि । नेजमे जय नहि । जेग ओ खोजनक अ अमर्य हरिको होयि । अपना पिअकाक दंभनसँ पुन हस्तज पसी ।

( २ )

'हे ओ ! जानो छठन कि हम रजाइ देहपरसँ ओजि तिय' ? ई 'अस्मिन्टम' बंजना परली दिसे छलपिन्ह कि अकस्मात हम ओहिठान पहुँच गेलहुँ ।

हमरा देखि ओ बजलीह—'देखू मे, हिनका छटावक हेतु मिस्र एहिना पुन करय पड़ैत अछि । एकर बाब डंडा क' रहल छैह ।' पुनः हुनका मुँहपर छे ओहना हठधैत कहलियेह—'देखू ई केँ ऐलाह अछि ?' सहनन्तर भाग्य-विनोदक द्वारा बहुत जागल । हमरा लोकनि एक संग बैसि साथ रिचलहुँ । पति प्रोफेसर

परली डाक्टर । १० बजे ओ अपना ह्यूटीपर गेलाह, ई अपना ह्यूटीपर गेलीह । ४ बजे ओ ऐलाह, ४ बजे ई ऐलीह । अखिल चिह्न कको चहकैत बजलीह—'हे ओ ! हमरा बसबसे बाद बुगल अछि । महे लोकनि बसब २' पक्षि कहलियेह—'हमरा तँ काइ बहुत रास लिखाक अछि, हिनका लेने ओयोह ।'

ओ बजलीह—बैस, लखन हिनकेँ लेने जाइ छियेह । हमरा सभकेँ ऐव मे देरी हेल । महे २ पजे छे मेन । देखब, सुतवा काल प्रम पिउब नहि बितरय । ई कहैत ओ चटपट तैयार भ हापक पड़ी देखि चुमकीसँ कार स्टार्टे' केतहि ओर हमरा मनमे बैसाय हव 'काइ' करय लगलीह ।

१२ बजे राति क' हमरा लोकनि कतबसँ आपस ऐलहुँ त पतिदेव फोफ कटैत रहलियेह । परली पू लण मधुर दिग्ग दृष्टिसँ हुनका दिस लकैत बजलीह—'देखू, ई मछहो नहिह लगलीह । एहन जासती केओ हेल ? यमि हम भाइ रहियेह त एको दिन अपन परिधवाँ ई नहि क' सकैत छिय । देखिबोह त कसैक राति मछर कटलौह अछि ।' ओ स्नेहमयी देवी अपना कोमल हाथ पतिक मास पर फेरल लगलीह । पुन. बजलीह—'अब महे' सुतुग । हम हिनका मचाहरी ठीक क' बैस छियेह । ओर ओ ओतरसँ मचाहरी आसवध अछि गेलीह ।

हम अपना कोठरीमे जाबि ओहि मधुर दीपक औषक रसाशयन करय लगलहुँ । ओहि देवीक सखः प्रकृतित अवैकमल समान प्रकृतित मुखमंजल ओ अमरता कुलपर पड़ल आसकासोन ओसक छुँब सखान निर्मल वचि मुसकान बिमरकक नलु नहि । ओ मेमा एहि पाबिब संसारसँ ऊपर कोनो दिग्ग लोकक मेचका होयि ।

ई सातो देवी सप्तभिम्बल कको हमरा स्मृतिक आकाशमे अथम क' रहल छल । घन उठैत लखि—'कहने बेर हविमा बिसेम् ?

( ३ )



## नौ लाखक गण

कोहि दिन सायंकाल आम पिबेत रही कि शाहि जीबने मोकर एक डा 'विजिदिग काहे' व' गेल । जोरिपर बगैकी अंगरमे निवसल छलैक—'आ कारणेकी, मोहबुसर, भिबिलेटेव पिबम कपनी, बंवाई ।' साम देखि एव अनुमान केल जे कोनो अस्पष्टरीय गजबत हैतार । परन्तु अखन धमा पटोलिऐल त देखे छी जे पूछ ताम उज्जर रोदधामी ओ अस्त वेनामामे एक भार पुवक अरुति रहल छल । माचपर कीकरनुमा अबैत छादीक टोपी । हाथमे अटोपी । कायस्त बिधवापूर्वक कुर्सीपर बैसलाह । तबुसर मैथिलीमे गण्य प्रारम्भ केलन्हि—'तुन सोशे बंवाईत आवि रहल छी । मैथिलीमे पिबुसर बनेबाक अछि । अनेक नाम चुनल तै किछु आइबिया हेतु आएल छी । बरब अनेक 'देगलामा' हुन पढ़ने छी । हुनरा 'बमबाहु' चुनि चुली ।

हमरा कृतमपूर्वक अपना नाम बिस तकीत देखि ओ बजलाह—एहि नामक कहानी छैक से पाछी आव हैव ।

हम पुछलियेन्ह—जहाँ कोन बिल बलायम जाइत छी ?

ओ बजलाह—फिरक नाम हैत 'मिथिकरी' । ओहिमे मिथिलाक रीति-रिवाज, धर्म-अवहार, उगतमम विवाह, पूजा-पाठ प्रोजन-पाठ, लीन-न ब, बग-बाव—सबक दृश्य रहल । आव एहिमे दस लाख, बीस लाख, जतना लाग्य

हम पुछलियेन्ह—शुनिग कसम हैत ?

ओ बजलाह—'इतडोर धुटिग' बंवाईत हैत, परन्तु 'आउटडोर धुटिग' मिथिलाक माटिपर हैन । किछु भूमाटी पाखरिपर, किछु कोराक समानाछीमे, किछु सिमरिया धाटपर, किछु दहिगगा जिनाक मुका-मुकाय गाममे—

हम पुछलियेन्ह—क्याकर के तब रहलाह ?

नौ लाखक गण/४६

ओ उत्साहपूर्वक बजलाह—तामी-तामी कमिनेता-कमिनेकीक तहयोग हमरा भेटि रहल अछि । एहि हमर 'स्कीम' सफल भ' गेल त हमाराई लामा-बकेवा पुनर्बैवह । चिन्तामे चिन्तार निपबैवह । नरमित मेहरामे जामि क' लचारी गेलीह । मधुयामा मगरीनीमे माटिक मडावेब बनोछि । कामिनी कीमल कर्णपुर मे कोडी धारतीह । नूतन सबकनियो बनतीह । बँजयतीमासा मिथिकरी दमरिह ।

हमरा मुँहपर विस्मयक भाव देखि ओ बजलाह—कमिनेकीमे केओ एहन नहि छवि जिनकार हमरा आरभीयता गहि हो । मिथिलाम आरंगीक रह बजा क' बेल छवि । ककलू कापे मिबवैत छवि । मिथी हमरा देखतहि मिथकी अमायम लगतीह । छुरिया आव बुल-पुल ग' बेनीह अछि, तमागि हमरा देखितहि टोकि क' लोहारी बेलत लावि बैतीह ।

हम—जहाँके एतना भविष्यता कोवा भेल ?

ओ—भविष्यता त एहिमे बहुत बेसी दूर अछि । एक बेर कुञ्जित एहि बेनहूँ त नलिनी जयवंत मायलम कादि क' माघमे बट्टी बेलन्हि । बीना राम योअनि लोक सगरीह । नूमदीप कोर अपन हाथे कोर सानि क' खोलीतहि । नियार हुनतामा तियार करत क' मुँहमे लगा बेलन्हि ।

हम पुनः ब्रह्म रोहरैलियेन्ह—एतना भविष्यता कोवा भेल ?

ओ अगशस्त बजलाह—कला भविष्यता कस बैस छैक । एक बेर सता अगेवाकरके एकटा लम भविष्यत रहैन्ह से हम तँबारि देखियेन्ह ताहियाई ओ हमर शिष्या बलि बेनीह । तहिमा एक बेर पद्मिनीके बुरद करैत काल ताम धुब क' देखियेन्ह, तहिमाई लोचु कहिल हमर पुचारिग भ' गेल छवि ।

हम जहाँ विधवासक स्वरमे पुछलियेन्ह—जोकारमायसे त जहाँके परिचय हैत ?

ओ बजलाह—कय बेर जगड़ा भ' भुक्ल अछि । हम हुनका यबैगामे मोकर नहि करैत छियेह । केवल हाव-भाव देखबैत छवि ।

हम—अधमकरक विषयमे जहाँकी सम्मति अछि ?

ओ हुनक 'टेकनीक' नाम बहुत पुरान भ' बेनेह । भुक्कसाक नबीन लोली पर हमर एकटा पन्थ जिकागे भुनिवसिटीसँ बहरा रहल अछि । आठ 'मोहदूम'क नाम भ' रहल । हम छपैत बेरी पुन सिट अनेक सेबावे बठा देब ।

हमरा पुत्र है पर किन्तु जन्मिन्वातक भाव देखि जो कलहाह—भीकर 'कोरवई'  
हर्षपत्नी राधाकुम्हार लिखि रहल छथि ।

हम विद्यार्थर करीस पुठसिदेसु—बहाकि स जसिनेसो समसु बसुत सिगद  
सम्बन्ध सैत ?

श्री राजवाड़ा—मिकट कि मिकट सन ? राजकुमारसँ एकपिठिया जका  
हैनावेनी होइत रही अछि । जब बेर दिल्लीसँ मुबारसँ लकपटक ज' गेल अछि । एत  
बेर देवानस्य हमर स्टेटर देखि मेहोरा करम भागल के एतने हमरो चुनवा बह ।  
मिकिन भीनाकुमारी सरक खातिर सोइके स्टेटर चुनतन्ह ? माता पिन्हा लसक  
खातिर सोइके माता गधतन्ह ? एही सभ द्वारे त जो लस द्यारसँ तितरिया जाइ  
रही बाह अछि । लकूमादे जका ।

हम खुशामदेंद—'हीरो'क पार्श्व कलाया नेईक ?

भी बजलाह ओना त खपोकधुमारसँ जय गुनीलक्षण परांत सभ गोटे  
 पूँह बोले छथि । परभु नायकक भूमिकामे हम स्वयं उत्तरय चाहैत छी । कारण  
 से हीरोइन मृतन छथि ओ हमरो संग पार्थ करय चाहैत छथि ।

तामस बोधक चाय-पकीड़ी जान हनुका जागी राखि बेलबैन्ह । ओ प्यारी  
 के कनेक ठोरमे लगान नीचा राखि बेलपाम । हम पृष्ठभिएह— की ? कम मीठ  
 छिक ? ओ मुंह बनबैत सबभल नहि खीनी बेसी छेक । हम सिर्फ कक्षा अमच  
 सैत छी । बंहरिनि ई जान तमके दुखस छेक । जखन गोरारही ककाक लग बैसि  
 आप गिबैत छी त ओ अपने हाथे ठीक जाधा अमच खानी हकरा प्यासीमे राखि  
 दैत छथि ।

तुम भीकरके कहलसैक— ई स' जो । दोसर चयन मेमे अबहुन ।

तय मौकरके कहलएक-इतना गी। दोहरे पाद...  
 तावत ओ भातुक छगुना जाय लगलाह। आइत-आइत गेना सग पाद  
 गेल होइत लेन। बजनाह - एहमे किस्स बिकसीमे तारकेबरी बहिन तगि क' बोलौने  
 रहथि।

हम धुलभिए-ह-लक्षा ! अशोक के कुम्हारों परिये बसि ?

हम धुल्लिपै-हूँ-जल्हा ! अहाँके हुनकास पोरबने बाँटे  
ओ बजबाहू—ओ सलोदरो बहिर्तले केसी सानैव लखि । राखी गन्हुवे  
साकनि । एक बेर फातिगमे रोखहुँ त आशुहितीवा दिन दिना पुग्ने नहि छोड़लदि ।  
दान को भुल्ये क' ।

इस कहानि में -- राजा वही बड़ भाग्यवान् ही ।

ओ सजावट—हैं, तेत धरनेन ऊँचाई कइना सवका लोकसे लागि रहैत  
अछि, जाहि दिन नेहूँ ककान सभ जेँत जलपान करैत रही। नेहूँ ककान  
कलजगिह 'हो, तौ' सिवाइ तरेन नहि करैत छह ? आइ चित्त करत, काहि  
आहु राखयत मन) के एता बेवोह।' इतिरा नहि देखे आश्रित रहयि  
बबरीह हैं, सँया। लाख भोजीके देखवान मिहता होइ अछि।

हमारा सुहृदर नविशालतः नामक देखि जो बजलाहू—अपने के आदेशवत् होत है। परन्तु आदेश एकटा भुल विषय कहि देत छी। एक दिन स्वयं राजपति हमरा बना क' पुछलनि 'हो, सोरा 'पद्मभूषण' बना दिओहू ?' हम हाथ बोझि कहतिऐनिहू—'काकाजी, हम नामक भुलन कहि छी। एहिना कलाक सेवा करत दिख'।'

सावत दोसर नाम काबि गैतौम्ह । ओ एक ओट पीरि सबसाहू - ई नाम  
हीरु भटि । ठोक एहने चाव हमरा बस्यथा पीसी बला क' बंत छति ।

इस पुछविष्टि—‘मासशुभकर्तार’ काहि रहल छी ? ओ गर्जेत मुखकुराहत बलसाह—ई ! ओ हमरा नदय ऐने छवि के नसकल ! जाबो त मासमेंट हाडल से ठहरी । इस गाँपुर माछक विशेष धेनी छी । तँ ओ बरही मास होनसे पोतने रहै छ’स । कोल ठेकास ककस पछुंथि जेदेहि ।’

इमं कश्चिदेतिह—इमदा ब्रूयत रहित त तमहं मागुर मास गयोने रहितहं।

को नजनाह—महि, आई याहि ह्वरा वोक भित्तिस्तरक ओहिठाम राखत  
महि। ओ साहे भाज बने नबोने छथि। ... श्री ? अपनेक माया सब सिगार पीदि  
तबो श्री ?

द्वय कहलियेसु—अवश्य, अवश्य ।

को बेबीसॉ सिगरेट ओ लाइटर बहार कौनहीं । ताही संघ एकटा एकटकी  
नोट बहरा क' मोबा क्षति पहुँचैह । ओ मयानमे खधियाय लगलैह । परम्बु  
को बेबियो क' तपेमा क' डेलखिह ओर सिगरेटक भूँसा उड़ावय जललैह ।

रूप मोकल्लो कहलियेक—'रौ, मोट उड़ल आइ छेन्त ।'

१६६ श्री बज्रवार्ता - कोनो बात नहि छैक, छोड़ि दिओक । एहिना बातक प्रज्ञा

सावध भोकर दोड़ि क' जाति बैसकीह । जी वृथापूबं क कोकर । किस तक  
हस्तमिन्—हम खाल नीट महि दुई छी । भौही स' जो ।

हम पुछलिये—सबसे बड़ी कौ प्रोब्लम कौछि ?

ओ वन एह—एहिस सभे हम दक्षिण आगम । महाराज महापुरुष एकटा कमीन छैन्ह । ताहिमे राय केबाक हेतु हमरा मनीने छैव ।

हम—कहाँ कोन दुनसँ आएव ?

ओ दुनसँ नाहि एनेसँ जएव । मित्रादमजी काहिह सहरसँ माय खेल छथि । ओ हमरा अधिकारीमे जतारैत जैसाह ।

हम—बहुतजब महापुरुष की कमीन छैन्ह ?

ओ महाराज बीन करोड़ लग क' एकटा कटुधियो धोमस जाइत छथि । ओही सप्तरासमे हमसभे विचार लेबाक छैन्ह ।

हम—सबसँ ओहीमे कौनो कसना चिन्तक निर्माण कब सकी छी ?

ओ बससह—नहि । ओहिमे एहन बेरी छैक और हल कसोसँ कसो 'विधिकरी' रिलीज करक जाई छी । पंज करोड़ मैजिलमे केसो एहन महि हिसाह के ई देखबाक हेतु एक टका सभे नहि करथि । परगु सभटा 'क्रोफिट' हम अपनहि लेबन नहि चाहैत छी । अधिकसँ अधिक गोटा एकर लाभ उठाबथि तँ हम अपना प्लेट बिज सभकेँ सेपर देखय चाहैत छैन्ह । परगु एक-एक सभसँ बेतोक नहि । एक सभसँ एक हजार बतबासमे त कोनो देखि नहि लगैन्ह । यदि कितन चर्माक मेज त एक-एक सेपर दोहरकेँ एक-एक लाख तका भ सकैत छैन्ह ।

ई कहि ओ १००)क रसीव हमरा हाथमे एम्हा देखनि ।

ई मय मय सोतरसँ हजोगण मुनैत रहथि । ओही लाइन जाबि गेलीह हमर स्त्री, कस्य पुनीह दसपदि गभ छोटे अपना-अपना नामसँ एक-एक का सेपर लेबथि । एव प्रकारे २००) हमरा घरसँ भेटसँह । तबबचल ओ पड़ी ईश्वर बससाह—आब हमरा आशा भेटो । चोक मिनिस्टर इन्डिआमे बँचन हिसाह । हम पुन बंबई पहुँचि क' पलायन करज ।

सदनसर हमरा ओहिना वस्तुगत पुरख प्रतीका मय अगसहू जेना ओहीमे छोक हमरा वाट नकैम छथि । ओ साक्षक स्वप्न देखय लगसहू । परगु कसो लय कोनो समाचार भेटत । ई 'विधिकरी' बहरैजोह, मे हुनकर विज्ञापन । कश्मक टा बिट्टी हुनका सामने चोलीएहू किन्तु एकोटाक वतार नहि भेटन । राजहूओ ओ जावाई तार पुनि क' वाबस जाबि गेल । तथामि आशा रहि टूटन । कवाचित पठा सदसि मेम होइन्ह ?

एक वर्षक बाद बंबई जाबाक अवसर भेटन । हुनक मेम 'ऐड्रेस' पर मेमहू । सोने जायरी छ नि गेलहु, कनहु पता नहि लागल । अन्ततोगत्वा एक रातीमे एक छोटे-छोत होटलमे जात भेल ज ओहि जागक व्यक्ति किछु दिन रहिमे एकटा कोठरी क' क' रहै छलाह । होटलक एक कपेक बकाया राखि एक राति कुपेबास पड़ा देलाह । पानवला, चायबला, मिठाइबला, अन्नबिरबला, धोबी, हुनान—सभ हुनका जोहमे भेल किरे छैन्ह । सैकड़ो पैप-उधारबला हुनका गाम पर हकम कानि रहल छ'पहू दूरे ४२० छलाह । कहीं गेल ह सकर पड़ा महि । केवल साईमबोर्ड टा अपन ओइने गेल छथि । ओहिपर 'आ आरमको' अर्बोजीमे लिखल छैन्ह, जे 'साखंडी ला'क बंबइया संस्करण पिनीह ।

मिचिलेदेव क्रिष्मक आस। मेचिलेदेव स्मिथिद अका' छथि गेल । विधिकरी'क विधिमे २००) सगल जे सगुर स्वप्न देखैत छथहुँ छि भंग भ' गेल । सबसँ बड़ पुमि सतोप केल जे जी साक्ष भेटन नहि, त कमसँ कम मय त जी साक्षक हुनसहुँ अकरा बसोसति ई मोलबचल मय तैमार भ' सकल । □

रंगशाला

आपका विना नष्टिना हानिसे प्रत्यक्ष मैंने छी कि एकरा सगल पट्टेदि मे वहुत  
जब परिधन पुरस्कारि नृत्त एकटा कपल कार्य हैन सजनाह हगरी लोक 'बन बाहू'  
कहो जाछि, पा नृ भूवनवन प्रचारि'क भाग भूय। सहज नाउ नहि छाँटय। अथ  
क. १८ सं १ विवाद दिशोक।

एतन् विदित्वा परिचय माविकः कथम् भवेत् समर्थः क्षति पश्य । ओ  
१ राट् २१ एकटा स्तिनेता कथामो भवेति रहस्य छी 'मोक्षदा रत्नशास्त्र' । कदा  
२ तान् भवेत् त्वेक ?

हम कहलिनहूँ बहुत गुनहर । अनेक ध्येय की रहत ?

श्री. दशरथ—विश्वनाथ प्राचीन संस्कृतिक प्रदर्शन। हमारे अपने दिन  
पवित्रोत्सव रहते। हमें यह विचार होय अत्यंत ही वे पहिल प्रथम कोन बनावोन  
५।

१५. १) मैथिली शास्त्रियों की संज्ञाओं में से एक शब्द क्या है ?

भा. बलराज—सैधिलो बलराज छेहें की ? छ मा छि छी ! ते कहएक टा  
नभनेवी शेयार भा रहल छी । सोमा भिक्ष पुरीवा, मनेव कुमारी, नगिन कथवा,  
रगन वरिणी !

हमरा मुँह पकीय देखि ओ बजलहु हम चुनि चुनि कऽ परो खेम केँ जमा  
कीय अछि । जखन ई कटार (तारिका) नभ भयस, भगनीहु तखन पदाँ पर सोअन  
जागि रहल दृष्टभोग ।

हम तुल्यमान् अपनेक हृदयिनी ( रंगदासा ) कृत्य रहत !

भां गवल ह ए-गदि, गुत गदरबाग मे । परानु देहातक सीवरी (क्षय) लेवन  
 दैत स गामो सभदे हमर कैथ्य ब्यावह ।

१. अस्मन्मैत्रेयाक एषा प्रसिद्धा चरितम् ।

हम यह सब सब कुछ भी सोच नहीं पाए हैं। फिर क्या है ?

ओ ब्रजवासी ! कहि मैं निधिवत् गोम्व नदव ।  
जहि यह एवम धरि किन्ध नहि नदव ही ।

हम सोचने का प्रयत्न है। मगर मंदमक आत्माओं पर एतद् धरि कोनों बिज गहि अब नहि अछि ।

ई सुनिवहि ओ उल्लसि गलव ।  
बजन ह वध, वध । तब टपटप बान  
कहत । नैन हम अहाँ से तब दख लेनहु ।  
आब हम पथ ही धरिने देख किन्ध  
बनारध । हमहु प्रेमदासा ( दिवाकरदास )  
आइयो छी । देख, एहि प्योत (कषा)  
के कहन समका देख छी । अहु नीच-नीच मे  
आबि कऽ रिखत (अवगत) ।  
देखि गेल मरध ।

+ + +

बिछु दिनक बाद अकस्मात् हम जगुन सेट भ. बेज ।  
हमरा देखिबहि बजताह - अहाँ एकी दिग एतहु नहि ?

हम पुछनिहू - ओ, पिथ कहिबार्थ प्रारम्भ हैत ?

ओ बजताह - बाह, शूटिब बतियो रहल छैक !  
आब ननु हमरा नैग ।

ई पत्तेन ओ हमरा बरि अऽ मोटरमे बैस गेलहु ।

ओतब पहुँचतहु त देखी छी जे अस्तित्व अऽ रहल अछि ।  
मंडन मिथक बाग भरल मरम अछिन्ह और ओ गदि कय पिनाप कऽ रहल छवि ।  
'हाम पिता मरलाक गहुँचसह !'

जम पास की अवैत देखि कऽ ओ और बेसि मरारीत पलाटि देखिहू ।  
'मरमो मरलो मरमो ।

जम बाबू हमरा कलक नहऽहु देखु, वरि अछि मंडन मिथ ।  
केहन गदल छवि । और ओ सब हुकर मरुगन बाइरेटर ( संगीत-निर्देशक ) ।

ई कहि ओ एक व्यक्ति दिग सकल कर्तव्य ।  
मनीष-निर्देशक देखलहु ओ कंगुलको कसि रहल अछि । ओ मरम मिथ के उतरा कोजबिनु ।  
आब मंडन मिथ सरमक ओलादी बैसहुय सगलाहु - पयनी पयनी...  
'सारेस' 'सारेस'...  
'मरे मरे सा'...

कौनई ( स. ५ ) नाम से जान रहल छल मंडन मिथक मार सुकुम्भ्या  
पर एतल अछिन्ह । और मंडन मिथ ईसन कल्याणक बारीकी देखिबारे पनीना  
पनीना तऽ रहल छलाह ।

हम हम बाबू के पुछनिहू - हिनकर पिताक मृत्यु देखिबारे की तात्पर्य ?  
ओ बजताह पिताक आइमे त मकराकायसे आइबारे भेल छैन्ह ।  
हम अजुनईने भुविब छलल अछि ।

मर अने अने रंगक मारी पर किमिती रंगक बीमरी ( कचुकी )  
जम मरम ओ दार के पाकल निजकारक पर मर तल अछिन्ह एक नथीयन  
अकारक परी मरी अछिन्ह भेलीह । जम बाबू हमरा हाथ दाहि कऽ लहुँ-लहुँ  
बजताह - बैरु बिलीहू हिलोहन ( नायिका ) । मंडन मिथक छी -  
'सरस्वती' । देखु, केरम गदल करैत अछि ।

छरमगी होकमुहमे ओहूठम घंति गेलीह और एक देखी कमाल कऽ कऽ  
ओर दखल मारीह । हुनक हू बूब पोर पुरेबऽ छलहु, तँ ओहि कमालमे  
अकारक तल ललाकल छलैक । परन्तु ओ ओलिमे तैग कुतूहा कऽ सगलहु मे  
ओरक दार गल पर बहि देखैन्ह । ई देखैत मेक-अप कास्टर ( मरारीजी )  
दीहल त जात गलदर होखि गेलीह ।

कऽ ओ ओर मरम पोल गेल । और पलक पर हू सुँद जम अऽ देल  
कऽहु, केरम कायलसे जे टप कऽ मारक बिनु जकी अछिन्ह ।

ओर ओ मरम-मरम ( बिजकार ) गहिबहिसे तैमार छलाह ।  
बिनु अस्त-सुरित आ टप दऽ रने-सौट ( पिथ ) अऽ गेलहु ।

आब सरस्वती बेनी मरुगन शीक-सगीदसे संग पुरवाक हेतु प्रभु हामे ताल  
बसल लबलीह । हुनक कोसरी ( कचुकी ) बेनी कामल अछिन्ह, ताहि से अकर-सक  
अछिन्ह । सोम नेर काँठन छलहु । परन्तु हुनक स्वासोच्छवास  
अकारक दार पछरी अछिन्ह, तँ बजल कील नहि कय सकैत छलीह ।  
जम मरुगीना संगीत अऽ मेवक सगल ओ 'हू काउ' कहि देखिब अऽ गेलीह ।

परन्तु कोटोपकर बहि मलमकेन्ह । फेरसे सोच देखल देखैन्ह ।  
किनेक त 'हू काउ' कहि काल हुनक बेमारीनी बहि ललकल छलहु ।

सैर, सोमरा कोटो जेल भेल । एहि बेर सरस्वती अपन  
अमारदासा बैसलैत बजनीह - 'हू काउ' ।

शूटिब सगल भेल । सगल विसर्जित ।





## अचारक पातिल

हम आजि गयेन बी० ए० से गर्वित रही । यहीन छुट्टी दिवस पर पटना गया  
रही । पूजापाठमे सकल गरीबे गवार बेलहुँ और पढी पाँच पादक स दस्यो ली  
नक अन्तिम २ दिवस पढी । १ दिवस सेम दीरस अ ये रहल छथि । अन्तिम कउ बसलस  
— २५, २६ रहल छी ? तदन कि न ? हमरा भुँस नै 'हुँ' कुनद देदी ओ पातिल  
हमरा गोठ पर र लि देखलस । होसैत होसैत बसलसहुँ हमर छोट भाय उमाकान्त  
पढल स पढ़ल छथि से अक्षिपामे रहल छथि । हुनके खातिर ई बेचार ।

हम पुछलियेह कोन मठिया ?

ओ बजलसहुँ अहाँ स मिटी होस्टलमे रहल छी । बीट्टीचें उन्नर ले -  
अन्ना, ओपेक कंकाल नहि रहल । पं० चतुरानन्द घासी जी स निमिहरे लेवन्ह ।  
आल त पठबा देनाथे हुनका पहुँचि जैवन्ह ।

हम कहलियन्ह देल हम हुनके ओहिठाम पठबा देवन्ह ।

ताकू गच्छिअर बीटी देखलक और पात्री बसय गामि सेल । ओ हाथ जोड़ि  
नमस्कार केलहुँ और हमहुँ मल निदुरा कउ उत्तर देलियेन्ह । ओ हमरा सम्बोधन  
कल और किछु बायस लगवाहुँ परलु भाडोक बदलसहुँ से ओ सुबाइ नहि पड़ल ।  
मुआइनि और हावक इतरासँ बूझि बलस से बेचार निबस स्थान पर लीस ओ  
मुआइनि बसमे पहुँचि जाय, उकरे पुनः स्मरण करा रहल छथि ।

हम बस बजे अपना होस्टलमे पहुँचलहुँ । ११ बजेसँ शरमेज रहल ।  
बस सचेंट (भीकर) नै एकटा चुली देलियक और कहलियेह - ओ, ई पातिल और  
चिट्ठी पं० चतुरानन्द जी कें दउ अबहुन । हे, बेमिहरे, अन्का महि इतिहास और  
पं० ओ नै बसब निबस कउ तने अपिहै ।

पुनः हम अटपट एगनादि हलस सम्मन कब बजास गेलहुँ । जलस खातिर  
धरे कालेगई फिरलहुँ स ओ एक बादामी रंगक पलेक दो कागज हाथ से दिसक ।  
देखलियेह त हुँ जाइत भिक्षल अछि

'सुभाषितः । बेचार पातिल परमानन्द भेल । जलस अहाँ पाक भउ गेलहुँ ।  
रति । ओ चतुरानन्दस्य ।'



ओ बजलाह नहि ।

हम कहलियेन्ह—हम पहिले अनुमाने सामरिक ओहिठाम पठा देल छिये ।  
एक बारस अचार बलि होल अन्तर ।

उमाकांतक मुँह पर दऽ उड़ि गेलन्ह । बजलाह हुनका ओहिठाम कि एक  
पड़ोसियेन्ह ?

हम कहलियेन्ह—अहाँक भाय कहने रहल ।

उमाकांत उठल होइत बजलाह आब ओ हमरा नहि भेल ।

हम पुछलियेन्ह से भियेक ?

ओ बजलाह—सँह । भविष्यक मुँहमे पड़ल वस्तु उपरो होम परन्तु हुनका  
शास्त्रे पडल वस्तु ऊपर नहि तऽ पकैत बलि ।

हम कहलियेन्ह—बेस, त पहिने बहो चेष्टा कर । अहाँ बुने नहि देल त हम  
कोनो भुक्ति लगाव ।

✕

✕

✕

दू बारि दिनक बाद हम पहिले अनुमाने लोक ओहिठाम गेलहुँ । ओ  
हमरा देखलहुँ बजलाह—ओ ! ओहि निष्ठाविमा की भरो की कहि देखलहुँ ? राम  
राम ! एही बात कहल कहल जाइत । अचार सैदास वस्तु उत्तक, नीक छैलक ।  
ओकर बखत पुरमा साठि होइत । अहाँ हमरा उदाओल के अनमल केल । अपन  
अन्तरहुँ । और । पछ देखहुँ त भीके केल । परन्तु आव ओकर ओर-धोम की ?  
हम उमाकांत की पता नऽ देखलियेन्ह जे भुवानी मन मुँह गेल सेनैत । हे ओर  
ममाचार भूहुँ ।

हम त गुम्म रहि गेलहुँ ।

दोसर दिन संध्याकाल हम उमाकांतक डेरा पर गेलहुँ । ओ उदास भव  
बजलाह—छान्नी ओ त समेटे हमरे डोढ लगलाह ।

हम कहलियेन्ह—बेस, एकटा भुक्ति लगाव दिअ । जो कदाबखत भुक्ति गेल  
त अहाँक अचार ऊपर तऽ जाएत ।

हुनका निश्वास नहि भेलन्ह । बजलाह—कोन भुक्ति लवैकेक ?

हम कहलियेन्ह—अहाँ देखैत रहू । ओदेक ओर अचार बचै करद ?  
अलि ?

ओ बजलाह—हँ, भरत अनते रही ताहिभेल भाउ बल कौन छैक ।

५ पुष्पापरा—एतए एक पुरान पारिव हैन ?

उमाकांत—एतए घरमें एक पैस पारिव नऽ एतए ।

अनुमाने पारिवमे गधेट भरल गेल । और ऊपरस अचारक कौन राखि  
देल गेलैक । तबन सैत भूआल कवि कऽ ओकर मुँह बाहि देल गेलैक ।

एतक भेजा पर एका कहीं सिद्धी जिलल गेल ।

रसि की उमाकांत की भुभाओबाद । आगो उमाचार जे एक बालन  
अचार गेल छीह ते तौ बचने नहि सँह । कारण जे एक बालनमे छुछुभरि पाँच  
गल गेल सँह भूआल त तीरा बलि गेलीह । त तीरा गेल दोसर बालन भीक लैकार  
गल रहल छिओह । पछिपुछ ककरो दऽ दिहौक । ओ सास्त्री ओ होबि त हुनके दऽ  
दिअहुँ । बिषय की निश्चिओह ? भूव मन लगा कऽ पढ़िह । इति

ताहर भुभाकांभी

रमाकांत

हम उमाकांतमे पछलियेन्ह—एतए देहावसे भोभो सब बारसी जाएल अलि ?

ओ बजलाह—हँ पुँजरी कीक नामसे एकटा मकर आएल सँह ।

हम कहलियेन्ह—बेस बसन प्राय काज पलि जाएत ।

✕

✕

✕

तऽ उमाकांत ग रहि गेलै छी । आहि आसमी की काना काना भिन्ना  
पदा कऽ बिदा केल गेल, ते सब भूमि कऽ की करम ?

छारीज जे ओ अन्तरातर बनि सास्त्री कीक ओहि ठाम पहुँचल और  
पछि ओ उमाकांत उमाकांत बिबाधी कल रहि छल ? हमरा त रानीही  
बाउ । तसें भाउ नहि । कलरा हो कऽ दिअ ।

रसि की सिद्धी पदा पारिव हमका आगोम राखि देखलैन्ह ।

अनुमाने आसमी एक गोसमे छिहौ गलि नेमैत । तबन सादर पदना  
भेज गेलक हवने अनुमान कऽ गेल छल ।

अनुमाने जो अँकरा कहलियेन्ह तौ आहि कल पर सँ हाव पर ओ  
बाउर नऽ । बसई भगत ! गहर की मुँह सँह नहि । दिनका हाव धरा कऽ कल पर  
कऽ जाइत ।

गम्हर दानिप की सवला-पथनी हैवसे कहेतो कि-१५ ॥ १५ ॥ जेना जेना  
मरुत हय वैर ओ कउ आगल न जायसी की मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुत ॥  
उमाक-पक मरुतयिन ॥ १५ ॥

५

५

५

हम पुत्रवाप हमार मरुत कोउ मरुत मरुत, मरुतयिन ॥ १५ ॥  
उमाकान्त मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥

लोकि कउ दैलत मरुत ॥ भरि कउ मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥  
मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥  
मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥

उमाकान्त मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥

हम कइतिमरे-ह ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥

श्रीन हरिना पं० मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥  
मरुतयिन ॥ १५ ॥ जेना ॥ मरुतयिन ॥ १५ ॥



## विक्रिसाक चक्र

हम पूरा बदलते बड़े करार की। एक कचहरी, दोसर बरतना। तों को तेरो मनो करत अछि त आशीर्वाद दैत छिरेक के "बकील कापडर से कावन रहन।" यस्तु एक बेर हम हबब केरमे पड़ि गेनहुँ। मोकबमाक केरमे अ नहि, इनकर केरमे।

बात ई बेरमेक के बेट बिगड़ि देल। गलहुँ कविराजक ओहि ठाम। ओ माझि देलिक बजलहुँ छी मात पथ कम,

हम पुछलियैह - की पथ ?

ओ पूत को बजलहुँ - प पथ, क पुपथ।

हम कहलियैह - बरबादा त हमरो पथल अछ। प से पथ होइ छैक।

ओ बजलहुँ के आशय नहि। 'प' अक्षर बना बहू अर्थक पथ होइ। बेदा, पसर, पथि, पिछा, पवाकीक बाव। क अक्षरबादा बस्तु भुपथ होइ। जेना - कबोमा, कदहूर, करैला, करमोक साग।

हम कहलियैह प्रथम त कबद के छोटि कऽ पाठिया आइ। कन कनक म्बलम बेदा। कबोदोकि बजल पुरी। और पूजा, पिछुला, पथिच पन्थुअ मम दऽ पथ होइ ?

बेदाओ बिस्मयपूर्ण नेमई हमरा विल ताकि बजलहुँ औजी। आइ धरि भही मन गीबी हमरा रहि बेटल छन। जौ हमर दबदब करक हो न जीन बेदि लिह।

बलम उदितन पथीदा खाइत आइत कहएक भास भऽ गन और 'प' से कोनो कम नहि बहरापन त बलहुँ एक होमियोनबह अरिग।

ओ कविराजक प्रदन पूछल सदनहुँ। मोठ नीक खन अछि कि नमनीन ? गन्ने हकह पथ होइ अछि कि गबग ? बलद साँद छी त गहिने रहिना और उठैत अछि कि बाम ? हलादि।

पथीदा कनक पावना मरम। एर हुनकर दुःख पड़लहुँ। बजलहुँ - आब हमरा विपश्यन (बसक) भेटि देल। नरत ओमिरा १००० अही साउ।





आकाश में उड़ाने वाला अथवा ... का दोष भी नहीं था।  
 ... का दोष ... नहीं ... । ... का दोष ... ।

कहना प्रमाण ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।

... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।

... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।

... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।  
 ... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।

... का दोष ... । ... का दोष ... । ... का दोष ... ।

रेशमी दोलाइ

लीक फकी बंदूक बहिषी है छलहूँ भी मंदी रहि होक और मारी सतारय  
न भि गेल । भाव बेवसाध हुनु बाएकत रहि रीदाभाय । साध रातिक समय ।  
मय निद सँ गेर भेल छल । बेको बेसले बेसन नीचाइल, केमो छरक धरल ककरो  
भाबसँ माथ अजरैत !

इ हा गाहा से लोकमें पधन चल । काने बीत जासी कालु मंहि । परन्तु  
 सनर मद् पर केवल एक रेखासी नोजनई आच्छादित सभस्यमान मूर्ति इष्टिगोबर  
 भेल । बँजर म्म जोड़ सुन्दर पुलदार बट्टी जेना मूक भाषाई ई कहि रहल हो ने  
 एहि जगतीक जगन मुद्रन करकक अधिकार एकपल इमरहि टा बसि । कहि  
 लोकनि एहि म्म "य एवक सादत नहि कइ ।" जगण रमणी जगन एहन आगक  
 प्रहरीक इवटी पर रासि भिषिबल भय सुनि छलीह ।

निश्चये तातलि भइ भइलाने कोवा जखानी आव ? केओ पुन-पुन  
नेपने रहितंगर छ दोसर कात छन । परलख एककिनी भइलाने की एखन जाओ ?  
रोजो छाधारण नहिना नहि, 'लेरी' । किनेक अ तेंकेंद वरामने एकदरे यात्रा करन क  
माहुर लेखिए बाप सकेत छथि । एखन की करी ? हिनका मद्रपर एक कास दीसि  
रही । बा ठाके रही ? एही तर्क-वितर्कले किछु निश्चय नहि बाप सकलहु । पुन  
अवना मन कं कमाबाज भौल -हुन ज्यनै जहानीहुने पड़न छी । ई बोठरी एहि  
सुचनोक एक नऽ समयनगा अ छैन्ह नहि और ने एम्हा किछु ईहक खात पत्तपक  
गद्दा छैन्ह । ई सार्वजनिक हलान थिकैक । ई एतेक अनिजिहवार पुराणा दीखने एना  
निधिल मऽ कऽ पड़ल छति और हम नाने भइला कऽ अङ्गारत जेना एखनोना दखे  
छाड़ छी । ई बिबुध प्रलंता दीक ।

परम, सबहि सहस्र ओहि बहानर जेनाक छाहिन नहि भेल । के जाने  
आहिपर जइसहि ठेठ जूँ अर जंगेजो भाषाक कुलसही बरितस जानय । अथवा  
बंजारी आपन ...।

हम ओहि नहार्न एक हाथ कटाके टुकनर बेसि येसहु । आब देखी  
पोसाई के पीक चका गिरीक्षण करवाक अवसर भेटल सोभाव्य कीसहोस देखि वृत्ति

[illegible]

हम वैदिक तर्कशास्त्र कायेंत समझें कि सुवर्णीय सौरमण्डल एक कूटमेधा विता भयल गेल । ओहिपर सुन्दर बलारमे बाबू भक्तिम खर्चैत "महासुखसता ।" हम मनुष्य समेत सुखि गेलहुं । हमरा भान होमः बाबू जेदा विद्वक शभरत माधुर्य राखइत भीतर भक्ति केन्दीभूत भय गेल हो ।

रेलमो दोनाइ को सुकम दुखिचो मेकन सोना छतार बुझि महल के कलभार-  
जगनिह । एका ललान लभि । निहक तो दोनाइक क्रिपु भय छार भलगल छरीक के  
रेलक श्रीवगनिमे भदयन दुभ भकी इसरीक जइत छन । बिजलीक प्रखर प्रकाश  
मे भीभर जगै दु-अवगैतु सुरयगे स्पन्दन एकाच करयइला छन ।

इस अंगना मन में छिपकारस "छिः। परस्वी दिक्ष एता गहि शक्य  
जाते।" अस्तु बाही" क अनुसार यदि लोक चर्चन में कहिये मे जीयवमुक्त भ-  
रत रहैत, भ-ई मयाक संसार बोधा भविष्यै ? क-पात्रक मृष्या कर्तव्यमुक्त में  
दवा देणय। मृत भवतु लपरति कृत्य भागि मे भना विप्रस्य पत्रा ही लपर  
भवि मुनि भव दश भवामक काद बीज। बापी तीव रामायणक ओ दलाक  
कथन क देत

‘हरिःपीतुः चक्रुः सैतुः कुम्भेभुः सरदन्तिनाम् ।

शिवमस्ति न भोक्तुं दृष्टमः अस्मद्वयः ॥

गार्होपनीत स भिक्षुतं क्षमि 'मागतं पुण्यं होय, महिं वापा' । सत्तनं एतल  
अमित्तं औत्तरेकं वातनिकं अत्तम्पे मेने कांन बोप ? और थदि वावे होइक स एहि  
मे इतर कात अवपण ? अकईय-अति के रोक्क कनक साध्य छेक ? सोइह सन  
निज कय ओ सक्कत कनक जे भूगवक दिम महि भिज-एव, भूतक समुत्त प्रसन्न  
करत जे अति तम महि बरकव पण्यक जूक भइसभा बरम जे आइ विरम होय  
एव महि पटनपण्य व ई कय सई भिजसनेक ? यदि एवणपण्य होइसना मिलि कः  
सय एवण भिज साधन समाधि सधायि सबबोत्तक भाष्यक एक बसाधुन हूतक  
सय गोप-एवण जइया जेनेगू । दुवधी दिम भूगवक अति ई कनक महि  
समाधन धन के कोरी महि कटि सक्कत अछि ।



अन्तः। 'देवकी' दोनोही भोसरातें २००० धो मधुसूतन दुनोहीन छी । न केन्द्रितिनु कनि दन छत । सहसाभी जाननि पाक पडैत छलहु । परन्तु हम एक-एक निज तें विनिमेष दृष्टि सँ धरैत रहलहु । "या निजता सर्वभूतानां दक्षिण आरति धरती ।"

समाधि भंग भेज कल्पित तं कल्पित कल्पित । नृपतिन एकटा तदीन म धी प्रथम नैरिह । ओ हमरासँ बेसी व्यावहारिक बुद्धि मनीत छलहु । ते सोचें ओहि गरा म न कय बेस रहलहु । मुन्तीक पीधानम । बेस मधुसूतन भद्र चुन्तीमाली बेस मेलाहु । हुनक कुनो अयबाव लय हेमरा भावपर छलहु । एहन सन धम बे हमरे भावपर वेदी राखि देन । भावजन स्थाने कल्प रहैक ?

आज हमरी बाहम जागल । अन्त एक गोटा ओहि गरापर भेजे केलाहै वलन हमही किऐक उपरवा करैत रहू ? और ई रहनी ओबो क्वासासुनी त कर्मण नाहि जे भवति जखनीहु । ओर यदि किछु हेबो करत तें पहिने हुनके ( मवावसुन ) पर कजारीनु ।

हम हुनका सौरममे आ रीति रहलहु ।

एने एने एक सुटम लागल । हम मुन्तीक 'माधुसूतना' बाधपर केहुनी दन भोसकि गेलहु । परन्तु कमर धराइते-धराइते कान ठेनाय दोलाइतें कनेभी एसी भद्र मेने ई कूट सविधी सकाँ बडि कड फुलकार छोडि नायनि ।

परन्तु मधुसूतना जखन सहज होइ छथिन्ह तखन सीके जगति कड जागीमे गेली जखि पडैत छैक । दोलाइतानी सरसर गरमि भद्र जे एक बेर गरोट फाँसल्लि न ओ गरोट हमरा कोटो जाबि गेलीहु । दोलाइक सरस हुनक अगारक फूल मन जागल हमरी सखी करैक दहन । हुनक विषाज केबावज हमरा जखिपर छितरा गेलहु । चुपचाप एक तर के हाथमे लय तापल त पूरे बेड हल ! मुन्ती तुकेगी छवि नाहिमे सवेह नहि । हमरा भगवानमे विनय आस्था नाहि । कतेक लोक नायिकी कहैत छथि । परन्तु ओहि सभम बुद्धि पडल जे भगवान अचरय छथि ओर कृपाविधान छवि पहिने ।

मुन्तीक ओहन सुसर स्वर्ग पाबि हम पुसकित भद्र गेलहु । दिन सामुस्य मुक्ति भेटि गेल हो । मनहि-मन बेनीक बदना करव लागलहु । हे विश्वक सर्वप्रथम गुरुदरी ! हमर कोनो पूरे जन्मक उपरवा छन जे ई समुद्रम पीछाग हमरा प्राप्त भेल । दोलाइते भावत रहल कारण यद्यपि अहाँक मुखचन्द्र हम नहि देखि सकै छी तथापि जहाँ बेसीरु-विजयिनी छी, एहिमे हमरा सन्देह नहि छथि । अहाँ

तखनी, सारस्वती ओ दुग्री जीभक प्रतीक छी । जखनी छी बे देवकी परिधाने कहि रहल छथि । सरस्वती छी बे मूढकेसमे अङ्कित नावे कहि रहल छथि । और १. किस्मका छी तकर न पैस प्रभाव जे एकविनी निर्भय भद्र यात्रा बना रहल छी । भूत और भुलकात्तें रोमन महीक मोखन रोमन जेना पोषित कम रहल छथि जे 'हम अपन आत्मरक्षा करवा मे समय छी' । हे अपरिचित सुन्दरी ! अहाँ सिद्धि, नई देवीकाफिर या फिरोक सेनके जे होइ, हुन अहाँक लक्ष्यरस धन्यवाद देन छी यदि अहाँ जनाभी गाँडीमे रहितहुँ वा एही काम जगति यैरालि रहितहुँ अथवा पूर्वकत करक वृत्ति रहितहुँ छ कि हमरा ई अथापि मग्राँ स्वर्गिय सुख प्राप्त होइथ ? आइ हम तरि गेलहु ।"

हम हुनक दोलाइ-मण्डित मस्तक के कामा गाँवर रक्षने ओहीवा गर्वक अनुभव करव लगलहुँ जेना ओहि सुख सौन्दर्यपर हमर एकाग्रित हो ।

हमरा मधुसूतनी उत्तरक छल । परन्तु ओहि अक्षय अरीहर क छोडि कड जगल पोना सकैत छलहुँ ? एहन-एहन अवसर कि बीममे सारस्वती भेटैत छैत ।

गाँडी जखनपर आबि गेल । सग बाभी कतरि गेलहु । रहि गेलीह केवल ओ रहलमयी सुन्दरी और हुनक अगारक कामे हम । आज उन्मुक्त-पूर्वक प्रतीक्षा करव लगलहुँ जे दोलाइक अन्ततानसँ कन्तमुलक वर्णन छैत ।

हाथ देल छी तें एक मु ४ बेरागी ओहि कोठरीमे रेलि देलक । "माधुसूतन नयन" छै ? माधुसूतनाजी ! ओ माधुसूतनाजी ।"

सहसा दोलाइ हलक, और ओहि तरसँ माधुसूतनाक जे कम प्रकट भेल ते जेना फिरोक उठलहुँ । हे राम ! वादी-मोड मकाम । नकली केश जखनी देवकी साक्षीपर देवकी ओनी और चीनीमे देख सन हन भु छ ललका मेड बना कड फलने । 'दोलाइक' स्थानमे 'दोलाइक' भद्र उठल ।

बैरागी दन आबि हुनकर स्वागत करव लगल । केओ रीर पज रि भद्र चत्परीक लेलकैनु । केओ माया एहिरीकैनु । केओ मूढकेन हाथमे लड लेलकैनु तखनी अपन भक्तमोदीमे आबि मदकसेत जनकपुरमला द्वेमे गेलीहुँ म गेलहु । 'कोबर' ओ 'कुनवारी' सीला करक हेतु ।

× × ×

भावाक आदरज हलक उत्तर जखन आबिजक ककाओहि दूर भेल तें देखे छी जे दोलाइक पर कन्ती कका छल । पुछलहुँ की हो जनेछ ? तों कका छै ?

हमरा निर्वाणदेव क्षीण पुन पुनर्जन्त नो ग ४ : २ हि पटने मे पड़े  
छह ? छुट्टी मे नाम रहि गेलाह ?

हम कहलियेह— कमेक लनकपुर चल बेल बनहूँ । परिसमा देखक हेतु ।

फगुरी कका परम भक्त छलह । माधुर भय बजनाह बाहु-बाहु ! अवश्य  
अवाक बाही । मुने छी आइकाहि प्रीतिमता, माधुर्यता आदि बहुतो मन्तक सीला  
भट रहल छैह । 'कोबर' देखलह कि रहि ?

जी व जरि बेल । परंतु कहलियेह—है, माधुर्यता के त देखलियेह ।

फगुरी कका सतीसमय के धर्मस बनह । बनलह अहा ! जो व  
पहुंचल सत्य छभि । भगवानक अनन्य सखी ! सहित्य ओही रूपमे रहल छभि  
एहन-एहन महात्मक संगतिसे वैराग्य भट जाय ।

हम कहलियेह—साहिबे कोन सम्यह ? हमरा व दुबका देखितहि वैराग्य  
भट गेल ।

फगुरी कका बजनाह—बाहु ! लोहर मिच्छ देखि बट प्रसन्नता भेल ।  
आइकाहुक कालेजिया छोड़ा कि ई संभ मानैल छल । अपना धर्मकर्ममे एहिना  
बलि राखी ।

हम बुनबाव फिरगी गाड़ीसे मधुबनी पास ऐलहुँ । सहिमारें यदि कोनो  
महिषा के देखे मुनजि देखै छियेह त हम ओहि दुका के फराकें प्रयाग  
करै छी !

## बीमाक दाम

[ बीमाक दाम मसनद पर ओइठल छबि । कानसँ किछु ऊँच मुनेय छबि,  
मनाँ कानदाम ओ विकदाम दासल छेइ । ]

एकटा भुंछीनी बही-भाता सोमने हिसान कइ रहल छबिन्ह । एकटा  
मोनाइय मोति बना रहल छबिन्ह । कदात पर मोति रहल छेइ । एक परबतजीक  
मनेस साधारण देख, बिस्तार बसल, मुँह पर दीमताक धार । ]

बाबू साहेब—ई के छबि ?

पण्डितजी—हमर नाम थीक पिबाइर मा ।

मोनाइय—कभने ?

पण्डितजी—तुम साहिब, आकरण ओ भावक साधारण दिखल । सरसपने  
बिचालयक प्रधनाभावक छी ।

मोनाइय—की चीक ? कहल गेलो ।

बाबू साहेब ( बिचिपाक )—कने हथरो कहल । छबि मा भवने नतिमने  
पाइ छइ ।

मोनाइय—( ओर हँ ) ई बड़ भारी पण्डित छबि ।

बाबू—कोन काजि जायल छबि ?

पण्डित हथरो एकटा कम्बोवास करवाक अछि । दान दीम सायक हाथे  
राम चहो ताइने कमा रतक । मुनमने भावक बलि पे भवना बालक बाइ  
मोम गढ़ि रहल छबि । भरने समाने धनमाल ओ प्रतिनिधित्व अछि छी । एहि  
परने हमर कमा मुखसँ रहनीह । तँ हेतु अपनैक ओहि दान जाएल छी ।

बाबू—की कहि सकुन्ह ? कने हथरो बुझ के कहल ।

मोनाइय—ई पण्डित छबि ।

बाबू—की ? बीमाक प्रति ?

मोनाइय—हँ ।

बाबू—नोट त सब बुझने छीह । कहि सकुन्ह

पण्डित—कौ ?

मोसा०—ई महाशय्यामे हाथ उठाने छोटै । तौ भावकक प्रति हाका नहि गन पकैत छनि ।

पण्डित—बाहू ! कौ आराम लिहायत ! एहने-एहने उदार विचारकक व्यक्तिता समयान्त सधुदय होएत । बाबू साहेब धन छथि । हम ईह जास राखि कऽ आएत छन्ह ।

मोसा०—'परन्तु' ।

पण्डित—परन्तु कौ ?

मोसा०—बाबू साहेब विनकमे एकी पाद नहि लेतह । परन्तु बालक के पक्षमे जतना कार्य पढ़ैतह अछि तै...

पण्डित—कौ कौ ?

मोसा०—सबना कल्याणत कौ वैषय पढ़ैतह ।

पण्डित—है ! अपना सम्पत्ति कौ तौ लोक 'व्यवस्थित' अछि । कल्याण कौ पोषणमे तौ पढ़ैतह हमरो कार्य लगल अछि से हब कहौ मछल छिएह ?

मोसा०—बाबू साहेबक गह सिद्धान्त छन्ह । बालकमे जतना कार्य पढ़ैतह अछि से समझ मुशोभी कराके गरीमे दर्ज करै लेल छथि । मोसाबा बिगु नेमे बाबू साहेब कसरो भावक नहि कऽ सकै छथीह ।

पण्डित—ई बात हमरा बुझिमे नहि जवैन अछि ! बालक कौ हम किछु छीनि त नहिह लेबैन्ह । हुनके भावक भऽ कऽ रहूणीह । तखन बाबू अमीक मछल छथीह ?

मोसा०—एतेक दिन पौसकक ।

पण्डित—हम पिता भऽ कऽ कथा कौ एतेक दिन पौसक । ईहो पिता भऽ कऽ बालक कौ एतेक दिन पौसकैन्ह । हिसाब-किताब बराबरि । तखन पौस की मछल छथीह ? किछु बनकर नेना त पौसका नहिह केने छथीह से लोक पोस देतैन्ह ।

बाबू० ( कनकर बाप कऽ कऽ ) कौ कहैत छथीह ?

मोसा०—भीषक सब...

४, ४०० बीअलो हमरा बहुत खर्च पड़ल अछि । मुजोरी से हिमाय दारि करै कहैन्ह ।

पण्डित ( स्मरण ) बड मुश्किल ! हम हिमाय देलु ? जेना हमरे का-मका केना पर बीअक जम्मा देम होबैन्ह !

मोसा०—पण्डितजी ?

पण्डित—हमरा बुझा गेल ।

मोसा०—कौ बुझा गेल ?

पण्डित—जवन अपना औरस पुत्रक ई हान दलम हमरा कथा कौ एति दलम निर्वाह कोना हेल ? दलम सर्वक बाद कदाचित् हमरो कथा-बोझिक समझा के कल्याण कोरि कऽ हमरा तौ भोगल करै लागयि त कौन आनन्द ? हब बाज पड़ैत छन्ह सम्भवतै । ई अपन धन राखलु । हब चललहु । नमस्कार ।

( पण्डितजी जाइ छनि )

बाबू० कौ विचार भेलैन्ह ?

मोसा०—सर्वक नामे गुनि बिदा भऽ गेलह ।

बाबू०—हह ! मछलिपुत्र भऽ जइतह ! एतेक दिन भीषामे हम सब कौन अछि से जीतिना दऽ दिखैन्ह ? एहने-एहने कल्याण के मसालाक पालमे मुह पाल रहल ।

( लायत ओकील साहेबक प्रवेश )

बाबू साहेब आज ई दोसर के पहुँचलथीह ?

मोसा०—ई ओकील साहेब छथि से एक बेरि और आयल रहबि ।

बाबू०—कौ भीषक प्रसन्न ?

मोसा०—है । ( ओकील से ) वसन जाओ ।

बाबू०—द्विक. त काँदा देने छिएह । मुजोरी, हिमाय बुझा रहल ।

मुजोरी ( यऽ जातऽ उगलऽ गऽ कऽ )

भीषक जम्मा मे १ वर्षक अवस्था छनि

खेवा-मेनवाते

२०००)

मिडिल पास करैतमे

१०००)

दीडिका पात करैतमे

४०००)

कुल जाइ ६०००

बहु मोटा-मोटी हिसाब अछि । एहिमे अकर तकलीन कहि मुझा दिमन्ह ।

ओकील साहेब—एहि हिसाबमे हमरा किछु छुटि बूझि पहुँच अछि ।

बाबू०—को कहैत छथि ?

मोसा०—कहैत छथि जे हिसाबमे किछु गलती अछि ।

बाबू०—( जितिया कऽ )—को गलती अछि ?

मुन्गीजी—बरफार, एको बादक बनती एहिमे नहि अछि । हम कहएक बेरि जोड़ने छी ।

मोसा०—कोन जाल बनती बूझि पहुँच अछि ?

ओकील—कने कागज-पेगिख मज्जा दिमऽ ।

( मुन्गीजी कागज-कलम-दवात बड़ा दैत लखीन्ह, ओकील साहेब गिला कऽ मुन्गी छथिन्ह । )

(१) बीमारक जन्म दिनामे बीमारक माय को जे परिचय पकतन्ह तकर मेहनतना—

८४)

(२) बीमारक माय, सो मास दस दिन बीमार को जे पेटमे रखलथोन्ह तकर भाड़ा एक रुपैया रोजक हिसाबमे—

२५०)

(३) भोजन भोजन जे कष्ट भोजन्ह तकर हरजाना—

४०६)

(४) आद-पुङ्ग-निरवामी इत्यादिमे खर्च—

१००)

(५) छठिहार, सैक, काचर, भटि, पचरिया, बखीजी आदिक भस्मे—

१००)

(६) बीमारकेँ जगम दूध जे बिबीसथोन्ह तकर दान

२) सैरक हिसाबमे हू मन दूधक दान—

१६०)

(७) बीमारकेँ सनपान करीमे बीवनक जे लभप्रति भेरीन्ह तकर हुआना—

१०००)

कुल थोक २१००

( मुन्गीजी ओ बीसाहेब मुसुफियाइत छथि )

५०० को कहि छथिन्ह ।

मोसा०—ई करैत छथि जे बादमे जे ठाका बाँका और सब मुन्गीजी सेहो कोहि निमऽ ।

बाबू० ( प्रसन्न भऽ )—ठीक, ठीक जकर बेसी सब पढ़ा देबन्ह । मुन्गीजी को जोड़ि देखब कहन्ह । हुनका बहुत बात बोखाने छथिन्ह । ( २५५ छैत २५५ मज्जा ) मुन्गीजी ।

( मुन्गीजी मुसुफिह सहोमे जोड़ऽ मज्जा छैत )

ओकील०—आज गुल जबा कनेक भेल ?

मुन्गीजी—एगारह हजार छै ।

ओकील०—एकर सूँड़ भोजू ।

बाबू० ( मोसाहेबसे )—को कहे छथि ?

मोसा०—कहे छथि जे एहि कपियाक भूँड़ि मुन्गीजी नहि जोड़ने छथि ।

बाबू० ( जितिया कऽ )—मुन्गीजी मुसुफिह छथि । कपना अकिमन ठीक सब दाबी रहैत छैन्ह । परन्तु कहियो ई नहि पुरसोन्ह जे एतेक दिवस भूँड़ि जाई कऽ चढ़ा दिदेक । अपना हिसाबमे एक-एक अछी कऽ जोड़ि लेताह । ओर हमरा बेरि नमकहरामो ! ( मुन्गीजी मुसुफिय छथि गोड़न सदैत छथि । )

ओकील०—कतना भेल ?

मुन्गीजी—बाळ सँ बाळ रुपैया साढ़े एगारह आना ।

ओकील०—कुन थोड़ कनेक भेल ?

मुन्गीजी—बारह हजार सात रुपैया साढ़े एगारह आना ।

ओकील०—एहिमे हमरा किछु छूटो भेटत ?

मोसा० ( बाबू साहेब सँ उच्च स्वर )—बारह हजार सात रुपैया साढ़े एगारह आना होइत छैन्ह । पुछी छथि जे एहिमे किछु छूटो भेटत ।

बाबू०—सात रुपैया साढ़े एगारह आना जोड़ि कहन्ह ।

ओकील०—बैस वं बारह हजार भेल ! हद गनि दैत छी ।

( ओकील साहिन मोटक मोक बेहार कऽ बनी करैत छथि । )

बाबू० ( प्रसन्न भऽ )—बस, हम पढ़ने छुटुइत चाहैत छथिन्ह । मुन्गीजी कपियार साबह ।



ओशील०—कलक पड़ि गेल जाओ ' पड़िने रजिस्ट्री नः जाइत त मोक छल ।

बाबू०—गोन मातक रजिस्ट्री ?

ओशील०—बैह के माद दिन से अहाँक बालक हमर बालक भऽ जेताह । ओ के कर्नाइ-छटेताह के खस हमर हैन । अहाँ के केवल रिफरेशन छऽ से सम्बन्ध रहल ।

बाबू०—है-है-है !

ओशील०—है, एहि जत पर जे अहाँके मजूर हो त ई सभ टा मोट हेंसोधि लिखऽ ।

बाबू०—अहाँ हँसी करैत छी ।

ओशील०—नहि, नहि, हँसी सहि करैत छी । हथ मोलनिदा बना कऽ अनैत छी । रजिस्ट्री हमरा कयाक नामसे हैतन्ह ।

( मोसलेन तथा बु'बीजी मु'ह जाधि कऽ हँसैत छथि । )

बाबू० ( बिगिना कऽ )—सौ खस छोटी-छोटी की करैत छह ?

[ ओशील साहेब अपन सभटा मोट हेंसोधि ओहि अकल बिदा होइत छथि । ]

ओशील०—( पलेट-चलैत ) बेस, हमरा अहाँक सोदा नहि पटल । सम्बन्ध ।

( पडलैव )



## धोखा

हमसमे एकटा भारी दीप अछि जे सौजन्य मुहठाम नीर मान बहुत जल्दी बिसरि आइत अछि । एही द्वारे कोनो ठाम भारी धोखामे पड़ि जाए छी । मुँह न किछार अर्को समेध अछि कतहु देखने छियैनहु जतर । परन्तु कस और कहिया, ते स्मरण नहि । एहन स्थितिमे की कौन आय ? तेहन मौनसमे गप्य करै पड़ैत अछि जे देखार नहि होइ । परन्तु तथापि कसैक बेर एकटाइए जाइ छी ।

एक बेर पहिलेजा पाठ ३५ कऽ जाइत रहै । एकटा परिचित तन व्यक्ति के अपना ठगताक सामने अर्धत देखियेह । एहन-एहन बेर हम अलवारक धारण लऽ भेट छी । के बिस्तारि करो गऽ ? दसितहि मुख्य लागतह — 'कहू सा जो बनेहूँ कतसहुँ अछि ?'

एहि जवनक भावार्थ ई जे आराखे के बसल छी ते आब चुनकि जात कीर हमरो जनहु दीयऽ । तहि एतवे धरि बात रहैत त कोनो तरेक हजें भए परन्तु ई त सोदि लोभ कऽ धोखोदार गए कथर जाइतह । ओर एकर नाथो स्मरण नहि । धनता स्थितिमे के ई अन्त धेगहो ? उत्तर हम अलवारमे भूवि देखहुँ । एहन तन जम के हय तस्मीन छी, केओ कोनो जुनि ।

परन्तु तथापि ओ बहामुभाव छीकिए बैतहि — 'की जी सा की ! कहूँ कुरान' ।

हम मनमे कहैत कुशल त ओही भावि कऽ पीनव कैजहुँ । एसन कुशल पहिए पुछितहुँ ताहीमे कुशल प्रम ।

मफासल लिपटना बैसवीत अंधा स्थान स्थानी कऽ देखियेह । ओ भावि कऽ बैसनाह । हम अलवारमे पड़ि लेवहुँ । हिनकासँ कोन तरहेँ गप्य आरम्भ कैस जाय ? की कहिकऽ संवाधन करिओह ? ह्युति-पटल पर बहुत सल देख, परन्तु कोनो संज्ञा विशेषण या थिया एहन गप्पि बहरावण जकारा आधार पर हिनकासँ कालावण कैय सगी ; हय एही तारतम्यमे छलहुँ कि ओ पूछि बैसनाह 'की समाचार छैक ?'

आज हमारा उछाल थोड़ा बेस। मेहनत विस्तार से आसपास गप्प मारते हैं। जे हाजीपुर पहुँचा देखिएँ। हम मनाचय लगलहुँ। मेरे हैं बम्बन एही ठाम उनरि होतर जाइन धरति व भयमान-मर्याद रहि जाव। बुलबुलेंह अपने व पदोपी दिख जाएव ?

ओ ककबका का बजलाह — नहि, दटोरी किरक जायव ? हम कहलियेँह — बोलिगा बुझने छलहुँ ।

परन्तु हुनका मनमे बम्बेह भऽ गेलैह। बजलाह — की भी ज्ञा जी ! अहाँ हमरा भीगल नहि ?

आज कोना कहिजोह के नहि ? मुँहसे बहदा बेस — आज ! बीमहस जियेँह नहि ?

ओ बलिदानपुनक हमरा दिस लकीन बजलाह — अम्मा, कहूँ हमर गाम की थिक ?

आज महा संकटमे पड़ि गेलहुँ । की उत्तर दियोह ? एक बेर मुँहसे फूति बहरा गेल अछि, तकर रखा करव जखी थीक । हूँनि काँ बाल के टारव भागलहुँ । परन्तु ओ कनी लेल लागलाह ! हमर परीक्षा समय पर मुनि गेलाह ।

एहल कठिन स्थितिमे बड़ि बेसहुँ के कोनो उपाय नहि सूझव । हारि काँ एम्बर-भीमहर ताकव जयलहुँ । हे भीलामय ! फेनहुना लाज राखि लियऽ । और लोभामय छरिबहुँ जाव राखि लियऽ । किरक त बेनतर हुनकर लोटा राखल रहैह जाहिपर नाम छोटव रहैह 'बुम्बुन बीमरी' । बस, हम बाजि उठलहुँ — भला, बीमरीनी केँ नहि लिखलहुँ ?

ई मुनि ओ प्रसन्न भऽ गेलाह । हमरा आन्ह पर हाथ रहैत बजलाह — सँह न गटे छलहुँ ! एतेक जखी कोना बिछरि जायव ? ओ जी, अहाँ अम्बवमरक भऽ हमराजें केवल अवधारण गप्प करव लागलहुँ । ते मनमे संदेह भेल के अनिबहार नकी किरक करैत छी ?

हमर छार्ति अवधारण लागल । हे भगवान ! काल हिनका से भेट अछि ते भनवे पर नहि पड़ैत अछि । बरगमने ? अपरा मनुष्यनीमे ? अथवा पदनामे ? कजहुँ बेर मे एहल कोनो बात अछि जाव जाहि से हम बचला जाव । मनमे भाहि-

जाहि करैत, बाहिं बाहिं काँ हुनका से गप्प करव लागलहुँ । बुलबुलेंह — अम्मे रमव जायव ?

ओ बजल ह — एतल त बुम्बुनरपुर । तकरा बाद ओतलि ।

हे बजल ! ओतलि कतव ? हारे ओहि ठाम त नहि ? परन्तु उरे किछु बुझबाक लागल नहि भेल । मने मने ओतलि लागलहुँ । भगवानपुर, बीरल कुम्हरी मुर्ती, मुम्बुनरपुर । एतल एतल स्थान हिनका संग तय करवक अछि । हे बीमराम ! कहूँ पार लयाव ।

खैर । किछु दूर धरि हम तेहन अटकराँ गप्प करैत गेलियेँह के बाह नहि जायव गेलियेँह । 'हूँ ! मसाला गर्मी पड़ैत छैक । एक कछार बर्बा भऽ जखीक ! एह बेर अकालक लक्षण बुझि पड़ैत अछि । घान-पानिक नम आया । बल्लु सबक वाम आकास डेकल जाइत अछि ।' इत्यादि इत्यादि ।

परन्तु ओईक कालक बाद ओ एकाएक बुझि बेसलाह — कहूँ, बीमरी की समाचार ?

बस स्थिति ! हिनकर हात त हल अलिखि नहि छियेँह, हिनकर पोसीक हात कोना कहिजोह ? हे भगवान !

हम लक्ष्मण लगीलाह । "बीमरी कोना छैक ?" एहि प्रश्नमे ओ निष्कर्ष बहरावत अछि ? हिनकर पीसी हुनका ओहि ठाम रहैत छलहुँ । परन्तु हमरा चरमे त केवल भी छै छै । सँह हिनकर पीसी भऽ सकन छलहुँ । स्तब्धता ई श्रीमती थीक पातिल होइलहुँ । अथवा ई सम्बन्धमे हमरा संशय लागलाह ।

एहि प्रकारें तक भयपड़ैत हम कहलियेँह — हूँ, निरक छैक ।

परन्तु एहि बलिदान उत्तरमे हुनका संतोष नहि भेलहुँ । बजलाह — ओ त किछु बुझिना छीजि ?

हम देखल जे ई हमरा बरक बितरिनी हात जखी छै । अतएव एतनेमे जाव नहि छोड़लाह । कहलियेँह हूँ, मन किछु चारी बली रहे छैह । परन्तु कोना के बिमारी नहि छैह । हुनका कल्याणक भीमता छैह ।

ई मुनिनहि ओ कोना बिहारी उठलाह । बजलाह — हूँ ! कल्याणक भीमता छैह ! के कहियेँह ?

हम एहि प्रसंग पर विमर्श कर भक्ति करव बाँटते छलहुँ । परन्तु हुनक आग्रह देखि कहत पड़त—बैतू दू तीन माससँ ।

ई मुनिबहि जेना हुनका बाढ भारि देखलहुँ । आठुर पर किछु खीटव भगवान ।

हम देखत, ई स बिचित्र आदमी छबि । पिपा पुता ककरो बिहारी करव मजरो । ई आठुर पर हिसाब कबीक कोरि रहल छबि ?

किछु काजक उपरान्त ओ हमरा भुँइ दिस ताकि पूछि बैसलाह । एहि बीचमे हुनका कँ गयो भेल अछि ?

ई और रंगराम लागल । हम गरबूए भरल पालन छी । माइ पुनः बादव आ रहल छी । और ई पुछि छबि जे हुनकासँ मर्षी भेल अछि ।

हम देखत जे मुजफ्फरपुर जईत - जईत या त यैह पागल भऽ जैताह अथवा हमरे पागल बना देताह ।

नहि जानि ई ककरा बिचमे पूछि रहल अछि ! हम जी आँधि कऽ चुल्लि-ऐरह अहाँ अपना पीसीएक बिचमे पूछि रहल छी किये ?

ओ कान पर हाथ दैत जखलाह । हमरा पीसी कँ मुदना त कम सँ कम नीच बगैलें ऊपर भऽ बैल हैरह ।

हम हलबुझि होइत चुल्लिएरह - लगन अहाँ ककरा बिचमे पूछि रहल छी ? ओ बजलाह—अहाँक पीसीक बिचमे ।

आज हम अकलकौलहुँ । बाहिरिएरह—हमरे पीसी । हमरा पिता कँ त रहित मैवे नहि बीसबिन्ह । तखन पीसी कहाँन बीतीह ?

ओ बजलाह - अहाँक टीबने जे भुटकुत सा छबि, भावक सम्बन्धे अहाँक भावा हैताह, हम तिनके अभाव विक्रिएरह ।

आज मन पड़ल । भुटकुत बाबाक एक सन्तुष्टाक बेटी छबिन्ह । भास छबिन्ह सँहर आएल छबिन्ह । हे राम ! हम हिनका की सब कहि गेलिएरह ।

ओ बजलाह । हम अहाँ कँ एक बेर नाम पर देखने छी । ताहीसँ बीनिह भेलहुँ । परन्तु अहाँ हमरा नहि बीनिह सकलहुँ । अहाँ एती कास की वृजि गल्य कैलहुँ ?

हम तर्जिमत करि कहने—आज की कहूँ ? हमरा छोटो भेल जे माय मरगेलीक सम्बन्ध ।

ओ हँसत बजलाह । हे सम्बन्ध त टीके । परन्तु अहाँक नाम अहाँक अहाँक सम्बन्ध नहि । अहाँ हमर सरबडा देख ।

हम कहिगेलहुँ—खलस हम अपने कँ अपना करैत छी ।

ओही एकक दऽ नितानि खोइलबिह । बजलाह—सँह त कहैत छलहुँ । हम ले राम में भरीक नाम नहि गेलहुँ लगन हुनका दू तीन माससँ 'कोमा हेरह ?' लैर । आन कोनो बल नहि । हम अहाँक नाम बलि रहल छी । परन्तु मुजफ्फरपुरमे किछु काज अछि ।

जागत मुजफ्फरपुर स्टेशन आबि गेल । ओ उठरि गेलालहुँ ।

हम भगवान् कँ धन्यवाद देलिएरह और मिड़की पर ठाढ़ भऽ कऽ सीको कोनय लगलहुँ । चुम्का हाथेरे छल कि एक पोतर देवता "कहू कुशल ?" कहैत हमरा सीट पर आबि कऽ बैसि गेलाह । —'हैं हैं हैं हैं' बहुत दिन पर भेट भेल । मोची त मूय जान-लाव अछि ।

ई बहैत ओ निमिकार भावसँ बीबीक छोइवा छोइबध लागि गेलाह । आदत-कादत बजलाह—बहुन दिनसँ हमरा नाम नहि भेलहुँ ?

हम मनमे देकलावय लगलहुँ—'ई के भऽ सकै छबि ? टटुआरक बिलिभीत ? वा कीहटीयक मसिभीत ? अहंकारादीक नाम वा सिबदामन भागिन ? बुधनबराक बहिनोय नर मर्षमीयाक ...'

प्रभावयत कहिगेलहुँ—ओ बहै छी 'कुम्भनिए' नहि प्रीत अछि ।

ओ देखि-देखि कऽ जीबी छाडत बजलाह—एकरो दिनक हेतु त अदितहुँ । मामी सट कर्षित रहै छबि ।

माय वा कऽ किछु भाह भेटल । एतवा त सुचित भेल जे ई मातृवक पिताह ।

कहनिगेलहुँ—हम त बन्धेमे जे ओलव गेल रही सँ केर कहियो भीषा नहि भेटल । हम छबि मासक रही । ओ हमरा अपन दुध पिबोने छबि ।

तो बरकर-बरकर हमारे मुँह में भाग्य खलवाह । बजलाह—अहाँ की शोका ने न भूख भड़ि ?

हे राम ! तेरे सैह मकट ! सैह मिकट परीक्षा ! हम धखाइव भजनिऐरह—  
ई, ओख त भवइव मरेह भइ रहल अछि ।

ओ लीलीक दईद्वारा कैकैत बजलाह—हम छिऐइव जहाँक सधुरक भागिन ।  
धर नीव लग । मोनहि रहि न पड़ेग छी । दिगमनमे म अही हमरा दैकअहि  
हैव । मन महि हैव । मागी बराधरि अहाँक चर्चा करैत रहै छथि ।

हम लकोच सँ गढ़ि गेलहुँ । भवबारी एक सँ एक लीला लगबैत रहै छथि ।  
एकर कउहु परिहारा होय ?

+

+

+

सहिषा सँ की रेल का जहानमे कैओ अजाल सम्मधी 'बमलकार' बन्ध गेलैत  
छथि त हम बिगुल राजनीतिक बन्ध आधि सेत छिऐरह । दोतर जपाने की ?





## प्रेसक लीला

ओहिदिन पं० गोपीराम सा के आना देखि हम अचक रहि गेलहुं । वैरू पं० जी छवि के परिधान जाल छोटी पर शमी चारर लिने, बालामे राम गिरीका जेस छलाह । हे आइ फाटल शोरी पर मेल भइल छल भेने छथि । ठोरमे कुकरी पकल छल । ते केस बमेलीक सेतत चपचप करैत छलैत ताहिँ एखन हमरो अदिवा रहल छलै ।

हम पुछलियेह—पं० जी, जेने त बहुतमि आहिवाक डेउडीने रहैत छी कि नै ?

पं० जी बजलाह—रहैत छलैह । परन्तु काम नहि छी ।

हम पुछलियेह—के किछु ?

ओ जाइ डोकैत बसलाह—कय ।

हम कहलियेह—अहाँक त खूब प्यारी छल । बलिओ ओहिनामक कर्मा-हला बिगना छल टा कही छलैह । अकल ई हाथ किछु ?

पं० जी बजलाह—हे छल टा बचलै । बहुमतिन साहिबाक हमरा पर अमीन रुपा रहैत छलैह । तेक दिनत नाथराम बसोत्तर सेहो भेटल छल । हमने धामि का कथेक जोरो जोरा के धृति भेटैत छलैह । परन्तु आज किछु नहि । तहिपति वदा लक्ष्मी बजलुक कलिबल ।

हम पुछलियेह—तो किछु पं० जी ? किछु काय त अवसर भेल हैलैक ।

पं० जी बजलाह—कारण बुझी त किछु नहि, कोर बुझी त बहुत किछु । परन्तु इहिकाम गन कय छी नहि छैत । ओहि घाट पर बल ।

हमरा ओहिनि गंगानीक एकाका घाट पर ऐलहुं । पं० जी अचोछा लं-कल बजल के लारलैह । तबह हमरा अपना नयने सेछा छल कह्य कालाह घाट भेनेक ई के बहुमतिन साहिबा के अपन बंदावली छलैत कह्य कालाह । ते गार इनदे पर पकल । हम अपना भिर अही धरि का बकल खूब बड़ा-बड़ा कल हुनक प्रमोदा लिखल । हुनका छल-कुटने के फलो भल गेलियेह अछि जिनको तबक गण नुवाद छल । गुना देखियेह त बड़ प्रमोदा भेलैह । आवा छल के अन्ध छल

तब पर तबका। पुराना तबका भी देखि जाला तबकि ऊपरक दुनो दिवस पाठ भऽ जायल। परन्तु भेन बन्दै।

हमर उत्पुकरा ओर बडि भेल। पुछलियेह—से कीना ?

पं० जी बजलाह—हम भी लेख जऽ कऽ एकटा प्रेममे छापऽ भेल देखिऐक। जगत खगिनहि छी जे हमरा मोरनि परिन आदमी छी। कम-कौशलक साथ बेसी महि बुझैत छिऐक। ओ कहलक जे एक माममे छापि कऽ पठा देब। (५००) लागल।

एका बरबारसँ भेटने रहल। हम अगाउए नई देखिऐक जे भीक जकाँ छाति देल।

माममे भाएल जे मानत ई छपि अछि ता कनेक बुझावसँ भूमि आनी। भूजनक समय रहैक। भेल जे कनेक रास देखि आनी। परन्तु ओ जी ! तैह काल भऽ भेल।

हम पुछलियेह—ही पं० जी ! श्रेयस ओला देखल ? समय पर महि लगलक ?

पं० जी बजलाह—जहा ! से बात रहिनैक तखन की छल। परन्तु हम या बुझावसँ आनी आनी ता पुस्तक छपि कऽ बरबारमे जाबिरो भेलैक।

हम कहलियेह—तखन कोन चिन्ता ?

पं० जी बजलाह—आहि रो बार ! भूमको करल तखन कि ? हम कहिन। मर्यादा पढ़ावेन छी कि भीतर हवाकोसँ मुन-हटि भेल। एक दिन बहुभाषिन भेसनि रहल, दोमटा दिस हुनकर माय। हुनका गुँह कोधसँ समझाएल। हमरा त ई दृश्य देखितहि प्राण मुखा भेल।

बहुभाषिन कहिक कऽ बजलीह—जहाँ जाही पसलमे लाह छी ताहीमे छेद करैत छी ? एही जागिर बरबारसँ कुति भेटैत छल ?

हम हथ थोडि कहलियेह—सरकार, हमरासँ कोन अपराध भेल अछि ?

ओ कोटि कऽ बजलीह—हमरा सजक विषयमे ओहन-ओहन बात छपल भाएल छी और अन्धा कऽ धुछि रहल छी ?

हम मयभीध होइत पुछलियेह—कोन बात सरकार ?

ओ बजलीह—हमरा मायक पहिने 'बारांगना' शब्द जोड़ैत अहाँ केँ नाम नहि लागल ?

तबय हुनक माय हमरा भूनुभाष्य समझीह की जी ! हमर बाप बहुभाषिन रहल ?

बहुभाषिन तबकि कऽ बजलीह—ओर हमर पिता दुर्गाक भेनी छलाह ? राष्ट्रीय आन्दोलन करैत छलाह ?

मानव नैनेजर साहेब महि जानि कहाँसँ फर्ग ? गङ्गाह की जी ! हम स्टेज केँ लाहेब करैत छिए ? अहाँ पर मोहकता कियेक रहि बलाएल जाय ?

हमर त समझ सिद्धी-मिद्धी दुम्म ? किएक बुझैत कोन बह्मण ?

बहुभाषिन बजलीह—अहाँ एतेक दिन जे एहि बरबारक कोन जौलहुँ से वैर सटिपल वेन अछि ? जाय, आइसँ अहाँ बरबाराह !

नैनेजर बजलाह—ओर ऊपरसँ मानहानिक दावा मेहो अहाँ पर कोन आएल। हर्जियाक नामिध !

हम बहुत कलह-कलपलहुँ। किन्तु किछु सुमवाहि महि भेल। बहुभाषिन तबहिना हमरा आनी पीपी पटक देखिहि देखू त, देखी बऽ अहाँ की निधमे छिएक ? ई के पदस मे की कहल ?

जे बात छपल रहैक से देखि कऽ हमहुँ मिहारि सडलहुँ !

हम पुछलियेह—की बात छपल रहैक ?

पं० जी बजलाह—अरे की कहू ? तैहम इङ्गलैंड छापानासँ छनैक, जे गति धक्किले अमुठ छापि देखैक। 'बारांगना' केँ 'बारांगना', 'बहुभाषिन' केँ 'बहुभाषिन', 'दुर्गा' केँ 'दुर्गा', 'बडी' केँ 'बडी'। हम लिखने रहिऐक 'बेदेक तरकीबी नैनेजर साहेब करैत छधि।' जे 'साहेब' केँ 'साहेब' कऽ देखैक। हुनको प्रसन्न मे लिखने रहिऐह जे 'बैठने मे बुझीक भीषा देखि कऽ लोक भुग्न भऽ जाइत अछि।' से तैहम हँकोषक बात छपा मेमँक से भाव की कहू ? हमर बर्षक बीप।

हम पुछलियेह—तखन की भेयँक ?

पं० जी बजलाह—हम कहलियेह जे हम अपना खर्चसँ मुद्रि-पत्र छपा देन छिएक। परन्तु हुनका सग केँ से मजूर नहि भेलैह। किएक त कतेको साम परम मजलील बात छपि भेल रहैक।

हम पुछलियेह—से की ?

पं० जी बजलाह—सब बात बजला भीष नहि छैक। हम एक ठाम लिखने रहिऐक जे पबित-गुनी केँ 'केरा' भेटैत छैह। जे 'केरा' छपि देखैक। एक ठाम









श्वेत ईश्वर आदीं उम मयक चरन। हृदि निरुद्ध और सदाह हमरा सोमनाथ नर  
भक्त होय लभभाह। मरकतक अवसर कथा भव केन।

जवन गादी दुआवन महेजत गर पहुँचत त वहर राखि कहर कीर्ति बल  
रहेक। हमर साइ सरनत बाहिवाधम बिस दीखत। ओहि ठाम पहुँच छी त पाटक  
भीतरम मरह। हमर छापी जोरत महेजत लभय। ऐन सांगन मयाव मुनय  
कान होइत छेक।

महुष हुला कंधा पर ओतरत एक नेपासी दरवान आएल। हम बहुत  
भनुनय-बिनय केलिएक परबु जो टखन मम नहि भेल। "उम मे काटक नही  
पूजेना। जोमने का हुनम नहीं है। कन बिन मे आएला।"

हम कहलियेक देवी भई, हम शनो देवी के प्रति है। सिर्फ उनसे कह दो  
कि आकर एक मिनट के लिए मुलाकात कर जामे।

परन्तु ओ ओकी किमहु लक पर गाछी गहि बैस देलक। जवन बहुत  
मेहोरा भव क दू टा एववा हममे जरा देलियेक ततन भीतर सल और एक महिला  
के लगे कने आएल।

ओ अतिरिक्त दवारि कइ हमरा पुछलन्हि आप क्या चाहते हैं ?

हम कहलियेन्ह हम गाछी देवी से भेट चाहते हैं।

ओ वसाद से बजलीह सारी देवी इस समय वियोग में है। उनसे अभी  
भेट नहीं हो सकती।

हम कहलियेन्ह— हम गाछी देवी के प्रति हैं।

आप ओ महिला हूँ हम जोकि 'नमस्ते महाशयजी' कंजानि और सहानुभूति  
प्रगति करैत बजलीह आर बोली देर से चुक गए। अब तो वह गयनागार में  
गयी गई।

हमरा मुँहसे 'ओफ्।' बहार भव भेल। बाहि बातक कर से एतेक केतहुँ—  
गात समुद्र बाखई दोड़न ऐलहुँ—के आगिर बिसादये गेल।

देवीजी अलसता करैत बजलीह—वही ओ इत भिष्ट होते हैं कि हम लोग  
उनको गयनागार में रख जाये हैं। अभी अभी मरीजी बरैरह पड़ हैं। अब सो  
जो होना वा सो हो गया। आपको रहते आना चाहिये वा।

हम अनुनय-बिनय करैत कहलियेन्ह—बेसिये, अब एक भी समय 'सब कुछ'  
नहीं हुआ हो। जरा किसी तरह से उनके कान में इशारा पहुँचा दीजिए कि मैं  
आ गया हूँ।

देवीजी किञ्चित् मुमुक्षुकर अवस्था में अब ऐसा होना तो सम्भव नहीं है।  
"एक मरग और न बन्द के और न दोन" जहाँ वही ओ, जहाँ न मरना,  
कल सुबह में निकलंगी सब बात उनसे भिन्न लीजियेगा।

हम मरहियेन कहलहुँ न बल से हा हरा ह—तलिनी गण अवसर  
भव आएल।

हारि-हारि कइ देवीजीके पुछलियेन्ह वियोग कौन की दिनका लगे भेलन्ह  
जहि मेहो त भव।

आप देवीजीक सहस्यनाक हारि छुनि बेलैह। नविस्तर मरग सभाचार  
कहि बेलैह। काराण ई जे 'आइ सामेने' दूख सपारोह छेक। सभाचक सेकड़  
नयी पुष्प गुटन छलाह। जसा देवी से नवनभूषण धर्म सेवा भव 'महरीय' कथायदे  
आदि नेरमम पदाभील भेलैह। वैदिक विधिसे हुनम भेल। इतिवृत्त उनम म  
दसाद मोटल गेल, यस्त म परबु के असीविसुषक म, ल, ग, दू, य, ब, ज, म  
विधिक हेतु एकांत भवमे बठला निमग्नित सगल सोवनि भव-भवन घर गेलह  
आदि आत्मवान के एहि मुसल कथेक आर भेटलैह तनिक नाम सैह भवोव मर-  
नी। प्रधान मंत्री स्वयं बीरोहित कर्म सुगमन करान ई हुनसे पुष्प गुटन  
वलि।

देवीजी त पुनः 'नमस्ते' कम भीतर बलि लेनीह और हम रानि भदि पाटकक  
बाहर आँखा बने बिबरानिक जगरन करैत ठाढ़ रहि बेलहुँ। गीत जे बसा दसाक  
परित भव भेल।

ओर जेने लेखन छी त एक सज्जन विजय-पाल पहिरने बंध मंद मुसुकारन  
बाह्य आँखि रहल छनि। वृत्तना मे भाऊत रहि रहल जे नैह अधोपलभ्य बिलाह।  
मम त भेल जे ऊपरस एक सीता लमबी। परबु ओहि बेलागक सोवे की रहैक ?

हम आश्रयक भीतर वा अल्पता से निवेदन केलियेन्ह जे जसो देवीमें भेट  
करा दिवस। ओहमे कालमे देवी छी ते कैसर-कुकुम ओ पुष्पमानासे बिभूगित,  
नयनालस्यसे रत्ननिरहस्य से भट्टेभ्यवित करैत, तबमकिन भवनी जकी इतमनिन  
भीमसी दसो देवी केनिनकमसे बहारा रहलि छनि। ओ हमरा पर नजरि पड़ेन  
बजलीह नमस्ते महाशयजी।

जी करि गेल। हम नमस्तेक अतरमे सोजे हुनक गहि छैत और मऽ कऽ  
विधा भेलहुँ।

अब मैं भी आदि ही १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था। मैं भी १०५ तक ही आया था।

## महाराज-विजय

[ प्रथम दृश्य ]

(नेपथ्यमें,— भीरविरोमणि जयसर्जों महाराजक जय !)

( रविनाथ जो सोमनाथक प्रवेश )

रविनाथ—हैं हो एसी ! ई कभीक जयघोष कऽ रहल छैक ?

सोमनाथ—बहुन जगह छह ? एतय नहि बुझल छैहूँ ये आह महाराज बहादुर-  
विजय सेन कऽ भावि रहल छनि ।

रविनाथ—ओ ! भूमि परै अछि, एहि बेर कोनो बहना धाव वा सिंह मारल छै  
अछि ।

सोमनाथ—ह, यँह सिपाही भावि रहल छनि । हिनकेँ नभ दा रमा राखि गएल ।

( सिपाहीक प्रवेश )

रविनाथ—जी खी ! बहो त धिकारेतें अवत खी ! कनेक सभय, न कहेन जाऽ ।

सिपाही—महाराज बहादुर एहि बेर कम्पकमत सभक जगल शिक ? सोमनाथ सेन  
छलाह । ओहि ठाम एक बहना दा अरवा महिय भेलैनह ।

दूनु विद्यार्थी—( उत्सुकतापूर्वक )—सखन ? सखन ?

सिपाही—महाराज बहादुर हाथी पर छलाह सभानि कऽ एक बाग जयलनि  
किन्तु ओ महिलक दूनु सिंहक बीच बऽ कऽ होयल निवसि भेलैनह ।

विद्यार्थी—सखन ? सखन ?

सिपाही—सखन ओ जंगली जानवर महाराजक हाथी पर बाजयन कऽ देलैनह ।

विद्यार्थी—जरे बाप

सिपाही—महाराज शेरक बाग प्रवेश पर अहीमहि, परन्तु नाचन महिय सेहन  
जोरतें विजय करैत होइलेहूँ जे महाराज मूर्ख भय होवा परलें सभ  
पक्षमाहूँ ओ प्रभु हाथलें सभ पड़ैनह ।

विद्यार्थी—हरे हरण ! हरेहरण !



मधुरिका—आपकी ! ओह काल अनकर सहायता बिना काय नहि धर्मन सैह ?  
 मधुरिका—मे होशोह त महाराज ओ साधारण लोकमे भेदे की ?  
 मधुरिका—छन्द कही ओहि परिचारिको कय के । ओहने अवस्था मे संकीको नहि  
 होइत छैन्ह ।

मधुरिका—इहो के पुनर्गम कान परी ? नहि महाराज विशेष दुःखी होत त  
 एक दिन ओहि पक्ष पर पहुँचिब जाएत ।

मधुरिका—आज, ई समय हमरा नहि मोहाइत अछि ।

मधुरिका—अहाँ एहन नयमुनी छी तँ बाँदे छथि । जाइ त महाराजक दुष्टि अहाँ  
 पर पड़ैत कथेनह ।

मधुरिका—अहाँ सब स एक दिन हमरे पकी रहल हैब ।

मधुरिका—हमरा लोकनि सब रंगमे रछि पुनल छी । आज केनि-कवनमे जीवाक भयत  
 हरि गेल । ओहि काल तँ अहाँ सब-सब नयनीचनोक साधारण रहैछ ।  
 केन, आज आपा बिमल । महाराजी भ्रष्टाचार-मन्त्रमे जर्जित हुतीह ।

मधुरिका—हमरे करैत छी । आज पूजाक समय लगीआएल जाइत छै ।

( हुनू जाइत छथि )

मधुरिका—अबह, मधुरिका । हमरी लोकनि अनन-अनन कथा पर जा कऽ  
 छथि होइ ।

[ तृतीय दृश्य ]

( रथान — रंगमण्डलक डेढरी डेढरीक पाटक पर उदयन महाराज महाराजक  
 प्रवेश — कायक बाहरसे मोलाहैब यहाँ 'महाराजक कय' घोष करैत छथि—  
 भीतरसे मंगलामुखीगण साजधरनि एवं पुष्पावली करैत छथि । )

महाराज ( पुष्पावलीक जाग्री आवाजक श्रवण—कचुकी । कचुकी ! ( कचुकी  
 आनि कऽ साधारण लोक जतारि भैत छैन्ह । )

महाराज—( अन्तःपुरक नाच देखैत )—महाराज ! ई बाह । एहि द्वारत ।

( एक लूट जकर महाराज केँ अस्तिता कऽ भीतर लप जाइत  
 छथिन्ह । महाराज दुइ मुन्दरीक कागह पर धर देने पजैत छथि । पाछा-  
 पार्श्व कचुकी ओ विदूषक । अन्त्याक पुनर्गम प्रतिहारी द्वार पर रोकि  
 लैत छैन्ह । )

महाराज ( भीतर एतय करैत )—आज कतेक सदा ।

कचुकी—महाराज ! भैर । ओहुर मुन्दरीक दस एक-एकटा बेल-कलस मे  
 टाकि छथि ।

विदूषक—( राजाक कानमे )—नहि । प्रत्येक मुन्दरी तीन-तीन टा बेल-कलस मे  
 टाकि छथि ।

महाराज—तँ कइत बेल छह ।

( महाराज कुचरी सभक बेलकलस पहिना हाथमे लपन करैत आत  
 बजैत छथि । ( मधुरिका पर विशेष वृत्तिवात करैत ) ई के ?

कचुकी—महाराज ! ई नये जाइत छथि । मधुरिका नाम छैन्ह ।

विदूषक—आह ! जेहने नाम तेहने पुन ।

( मधुरिका लमा जाइत छथि । महाराज अपन खनहार महार कय  
 मधुरिकाक मंगल-कलस पर टाकि ईद छथिन्ह और अपन ओठी हुनका  
 आङ्गुरमे पहिरा देत छथिन्ह । तययने हर्षधनि मुन्दरी सब आनि  
 कऽ मधुरिकाक कलस लय हुनका दाह पर राजकीय सीमायक चिह्न  
 लगा देत छथिन्ह—मंगलवाक बजैत अछि )

( पंचसिकरक प्रवेश )

मंगलिका—महाराजक लय हो । महाराजी बाहु-पुननक हेतु मंडप पर बसल छथि ।

महाराज—आज कतेक दिस ?

कचुकी—महाराज ! एहि बाँदे । ( आगाँ आगाँ पक्ष-प्रदर्शन करैत चलैत अछि )

महाराज ( अकुला कय )—ओहुर कवीक कोलाहल भय रहल अछि ?

कचुकी—महाराज ! साधार देगते एक युवती आइत अछि मधुरिका । ओ  
 बनेक पुनन केँ विदय करैत एहि यतमे जाइत अछि । ओ महाराजक  
 ओकरा परास्त कय देतक तकरे अधीन भऽ कऽ ओ रहल । ओकर  
 लमाका देखक हेतु अन्तःपुरक स्त्रीगण अमा भैल छथि ।

महाराज ( लोच पर लय देत ओ लान लोकत )—कचुकी ! कचुकी !

कचुकी—महाराज !

महाराज—हम पुनक वस्त्र पहिरत ।

मंगलिका—महाराज ! अनेक बाहु-पुनन करक हेतु महाराजी बसल छथि ।



महाराज—जीन पहिले ह्य मन्त्रिका के निजय कऽ भेव । तुलत आनी सद्व ।  
विदूषक—महाराज ! अहाँ मन्त्रिकाजीके संहि पुताउ गऽ । सन्धन ह्य ओहि मन्त्रिकाके  
सबैत छी ।

महाराज—फटक महि करह । ह्य ऐसन मन्त्रिकाक दबे-दलन करव । कंचुकी ?  
मन्त्रिका के तुलत एहि छाम हजिर करह ।

कंचुकी—जे आहाँ सरकार । ( आदर अछि—महाराज श्रीधर कुम्हार  
छोड़ैत छथि । )

( कंचुकी संग मन्त्रिकाक प्रवेश । मन्त्रिका मन्त्र हस्तिनी लफे भुम्भैत  
आबि कऽ लागने छडि भऽ जाइत छैह । )

महाराज—( ओकरा बिस प्रशिक्षणक दृष्टिसे तर्कत )—ई के ?

कंचुकी—महाराज ! वेह बिबिह मन्त्रिका ।

महाराज—तौ करारसे सदन चाहैत छह ?

मन्त्रिका—( औत्तवपूर्वक ) अकारमे हमराई बहवाक साहस होइक ।

महाराज—( दक्षिण भुजा सेमवैत )—एहि अभिमानक दह देवाक हेतु ई भुजा पटक  
इल अछि ।

मन्त्रिका ओहि भुवाक पराक्रम महाराजो पर देखिओन्ह गऽ । मन्त्रिका ओ  
भुजसे देखि डेराबचाली रहि ।

महाराज—( श्रीधर ) ऐ ! एतेक रई !

मन्त्रिका—सै अ हाथ भिजोमहि बुझि पवत ।

विदूषक—महाराज ! ह्यरा एहि पौनस्तर्पसे नहवाक आजा भेटौ । एकरासे हारनहु  
बाध, जितनहु लाभ ।

महाराज—( विविधा का ) तौ पुन रहह । एहि मन्त्रिका के ह्य स्वय भान हाथ  
उभे-दलित करव चाहै छी । का कम करिबस्य जानतीपुन्यभरि

विदूषक ( स्वगत )—महाराजक अपने नी चरनग मेलेहु अछि । एहि प राजके  
भोतेक बहुतमान अछि, एकरासे कियेक नहि भिकरैत छथिह ?

मन्त्रिका—महाराज ! ह्य सभ्य सेत तीमार छी । परन्तु तीन अर्ध पर ।

महाराज—कोन-कोन दाले ?

मन्त्रिका—पहिल त ई जे हमरा-महाँक श्रीधर केओ ठेकर महि आबय ।

महाराज—बजूर ।

मन्त्रिका—एकर जे नहि जोधन बाद नजो बिछ नहि जाय ।

महाराज—मजूर ।

मन्त्रिका—तेसर जे ह्य हारन न भोजीवा अहार नानी मनि कऽ रहव । और जे  
जीतय त अजक हकाममुकुट तवारि कऽ नेने जाएब और मुँहमे कारिख-  
पुन लगा देज ।

मन्त्रिका—शामने पापम् । आइ अरि ककरो एह सभ्य बजबक साहस नहि  
भेव छैक ।

कंचुकी—( नेयलसे तर्कारि सीबि कऽ महार करैत )—अब, जबरदार ! एहि  
जीतक छार केवा तर्कारिसे भेटि सकैत अछि ।

महाराज ( कंचुकी के रोकात )—शान्त ! अब मन्त्रिका मन्त्रिका भऽ देज तखत हमरा  
सभ सभ नजूर अछि । ( सर्व से रहित भुजा उठाय ) जे भुजा सहयी  
दुर्लभ मन्त्रिका वहुक गर्व पूर्ण कैदे अछि एकरा एक भवला के परास्त  
करवाने कतेक समय लगतैत ?

मन्त्रिका—महाराज ! रहिबे बचन दिय । जे बिभुज भर्ममुट हैत ।

महाराज एषमस्तु । हमर आज्ञा जे केओ दोसर-तेसर खोचने नहि आदम और न  
केओ एकरा पर हाथ छोड़ैक । तावधान ।

( पाँड कसैत छथि )

मन्त्रिका—महाराज ! मन्त्रिकासे भिकराक बर्ष होइ छैक अंग-अंग । जे बिभारि कऽ  
पाँड कसैत ।

( महाराज जोधपूर्वक छाल छेकि आगा वईत छथि । मन्त्रिका सीधे छानि  
सामना करक हेतु तीमार भऽ जाइत छैह । )

कंचुकी—महाराजक धम हो । एहि छाम नहि । अवाड़ा पर चलत आय ।

( महाराज छाल छेकि सिहनाव करैत अवाड़ा दिस जाइत छथि ।  
मन्त्रिका सर्वसे छाली फुला ओहि दिस बिदा होइत अछि । )

( सभक प्रस्थान )

[ चतुर्थ दृश्य ]

( मन्त्रिका ओ चरित्रिकाक प्रवेश )

मन्त्रिका—मे दाद मे दाद ! केहन जयदेवत गाउनि अछि ! कोश मकुना पट्टा  
जका एहि बाहि कऽ बंध दैत अछि ।



जबकि—एकदम नीचे उठी बिना कस देलकैन्ह ।

जबकि—हाय हाय ! महाराज की पछादि देखो— फोटा थागारि कस ओर से चले छैन्ह ।

जबकि—देखहुन, देखन जोर से छली तब देखीं छैन्ह के महाराज केवन बिबिया नहि रहल छथि, गिल्ले-भीतर ममटा रंग कस रहल छैन्ह !

जबकि—हाय, हाय ! बेबी छोड़ावो नहि देन छैन्ह !

जबकि—छोड़ोनेक फोटा / आने मना कस देने छथिन्ह । बाब भूहमे जानी चुन लगा कस अपन बात पूरा कस लेवेन्ह सतत उठनैन्ह ।

जबकि—हाय हाय ! छोड़ी छरिपों किल मुहमे चोति रहल छैन्ह ।

जबकि—जब हो- छै-ह । आव मेह मुह नऽ कस महाराज की बिह पुजामे जेध ।

जबकि—हाय, हाय ! महाराजक मुह देखल भूत सभ बना देलकैन्ह । बेबारे अनाथ बकी बिल गल छथि ।

जबकि—एहि अपमानसे त मरणे भीक होखैन्ह ।

जबकि—बाबू एक बेर जाहि कस ओकरा पटक किएक नहि दैत छथि ?

जबकि—ते कि ई केलि-मनम बिबोन्ह ?

जबकि—हाय, हाय ! छोड़ी बाबई मुकुट छतरि रहल छैन्ह ।

जबकि—हय ! बेबी कमकार नहि करह । यह देखे होइ छैन्ह त कस ओकरा से बचात कस रहल पऽ ।

जबकि—है ! बरनवमे आव नहि देखल गइत अछि । जबह एहि समयः

( प्रस्थान )

[ पंचम दृश्यः ]

( विष्णुदत्त और बटुकेश्वर सदाक प्रवेश )

विष्णु— की ओ सुमाजी ? कोम्हर जटक जाइत छी ?

बटुक— अरे की कह राजसंगी ! देवराजक ओहि ठाम दीवेंत दीवेंत जलव मऽ गेल । एसनो बगवत आनक हेतु जा रहल छी ।

विष्णु— से की बात छैक ?

बटुक— अरे । ईह, महाराज के बदकल बेनाह के ओहि दिन से छि नहि गकताह अछि ।

विष्णु— सीतापति सुन्दर दयाम ।

बटुक— ओकरा छोरि मुड़ाव मया रहैक । जोर से त बलबलैन्ह से महाराज के उर धन मऽ लेवे-ह ।

विष्णुदत्त— सुमाजीक स निदाम से उर छान ? सीतापति सुन्दर दयाम ।

बटुक— आव राजवंश राजमोक निदाम कय रहल छथिन्ह ।

विष्णुदत्त— सीतापति सुन्दर दयाम ! आव कहल अथवा छैन्ह ?

बटुक— अथवा की रहलैन्ह ? कनेजक हार-जीवर पर जरीक टोहर धरल जइ छैन्ह । बडल पछा एगारि मुटिक कटैत छथि ।

विष्णुदत्त— सीतापति सुन्दर दयाम ! राजवंश की कहल छथिन्ह ?

बटुक— कहैत छथिन्ह से छी भास धरि जौनी स्त्रीक कथा हुनका मन नहि पडक स हो । सकल प्राण बचवाक भासा कंस जा सकैत छैन्ह । अथवा नहि ।

विष्णुदत्त— ओहि स्त्री के की बेसक ?

बटुक— सीतापति सुन्दर दयाम के ओहि स्त्री के तान कय बदला पर बड मगरम चुमावैत जाव । परजव से मेने महाराजक बेइदगजी और दुर धरि प्यारि जइन्ह । दोहर के महाराजक बचन हारवा रहैन्ह । तौ ओकरा के ओ किल नहि बिसरैक । ओ बेस सीनक मुकुट उठा लेलकैन्ह और अपन बड छेलक ।

विष्णुदत्त— सीतापति सुन्दर दयाम ! आव महाराज जीवत फोटा धारण केन छै ?

बटुक— बहिन त नानिदक ओटीक हीरा पाठि आस-हवा करवाव हेत प्र प्र मेनाह । परमान राजवंश मुकुटा बात सुना देखिबैह म प्राण नऽ ।

विष्णुदत्त— से की ?

बटुक— ओ कहलथिन्ह के रक्षापत्रक ओर से मरिक्का पऽ बिजय कर देव । एही प्रमिता पूर्णक हेतु महाराज जीवन धारण केन छथि ।

विष्णुदत्त— सीतापति सुन्दर दयाम ।

बटुक— बेस व जाना दिवऽ । एसन मोत्री-पक्ष साचय जावन छैन्ह ।

( प्रस्थान )

( सीमा दिवस सप्तमदरीक प्रवेश )

विष्णु— की त नमस्त्री गज लोरी की पय चऽ ?

रणमंजरी—की कहूँ ? जो नहीं क्षम महाराजक दुर्दशा दुःख रहित नहीं क्षम जो  
भूक्ति भेजोह मे लीन विम मोन राति धरि भोग्य भक्ति भेजोह । जसल मंड,  
भेजोह, दयापय प्रियकर हाव महाराज ! हाव महाराज ! और कीनी  
नहि । तहिवारी उन्मादनी भकी सक केस कोलने, मलिन बदन पड़िरने  
सोभाय विभूकर रक्षार्थ भाग्य प्रकारक भंड जप करत रहे छवि ।  
शु कारक कोम कथा, अज्ञ-जल पर्यन्त म्वल भंड भेजोह भक्ति ।

विष्णुवत्स—सीतावनि सुन्दर स्वाम ! एतल कथा कथनहुँ भक्ति ?

रणमंजरी—राजपुरोहितक विचारन महाराजी एक महा भूदृग् अनुपाय कय - हय  
छवि । भक्तिहय निरव एक लहल साक्ष्यभोग्य हीनक । भूदृग् के पहिरद्विज  
कहि दर्शन की । हर-जमाइन छा कऽ केस लोहोंग रहू ।

विष्णुवत्स—सीतावनि सुन्दर स्वाम ! भोजने की लभ हीनक ?

रणमंजरी—हनुमा पूरी, लक्ष्मण, मधुर ।

विष्णुवत्स—सीतावनि सुन्दर स्वाम ! भोजन कतेक विम धरि भलनक ?

रणमंजरी—भायव परम महाराज उठि कऽ टाड़ तहि भंड लीताहू ।

विष्णुवत्स—सीतावनि सुन्दर स्वाम ! लक्ष्मण हयहुँ अनुपाय करन जाइ की जे कम भं  
कम जो मात धरि महाराज के उठि तहि होइह ।

रणमंजरी—बाहू रे गेट देवता ! हम बाहू भेजोह महाराजी के कहि देवध ।

विष्णुवत्स—दोहाइ रणमंजरी के । हम हूँसी के भूदृग् भक्ति ।

( द्रुपक प्रस्थान )

[ वृष्ट दृश्य ]

( यू टा कर्मचारीक विगडिबिडा पिटीन प्रवेश । द्रुप उच्च स्वरसे केरावेरी  
बोक्ता करत भक्ति । )

पहिल—विदित हो के ककवती महाराज अहाह भर्ष पर पुनः आरोग्य-लाभ  
केलहुँ भक्ति—

दोसर—एहि भाग्यक उपलक्ष्य महाराजी रंगमहलक फाटक पर रल और  
कूदूधन सुटीतीहू—

पहिल—महाराजक प्रतिभा कतहुँ जे बिभा भवितका के निजय कीने मुकुट धारण  
नहि करन—

रणमंजरी—महाराज मोह कोला उत्तर भवितकाक गल रहि कतने ह

दोसर—अपेक्ष राखहुँक आदमानुसार महाराज एक विपुल कानोवरनी जीवन  
मरिचक प्रेमभा कनवीनहुँ भक्ति ।

पहिल—भीष्ट प्रतिभाके कर्तव्य महाराज मुकुट करवाहू—

( अल और भवितका के परास्त कय अपन बचन पूर्ण करवाहू— )

रणमंजरी—श्री हे विजयक सततमे महाराजक भविष्यक हेतुहू

पहिल—और महाराजी यज्ञमंडपमे हुनक बाहु-पुनन करवाहू

दोसर—महाराजक आरती देलक हेतु सकल महर-तिवाजी के निमंत्रण देव  
जाइत छैहू—

पहिल—आरतीक बाद सभ के अलाव विहरण हूँहू—

दोसर—और वृष्ण भोजन के भोजनोपराय प्रचुर दास दक्षिणा भेजोहू—

पहिल—रंगमहलक फाटक पर रहि-भोजन हूँ—

रणमंजरी—और स्वयंभूत अमरसे प्रथम सुटाओल जाएत ।

( एक दूर विपक्षिबिध विद्रोह देवध विम जाइत भक्ति )

[ सप्तम दृश्य ]

( पहिल प्रवेशांश—भवितकाक भूक्ति दाइ कील भक्ति—आदि टा सुन्दरी महाराज  
के करवाहा बेने बेने अबैत छविहू—महाराज प्रतिभाक कनवीन पदु वि  
नाल डोकि ओकरा चरण से प्रहार करैत छवि—प्रतिभा नीचा खलैत  
भक्ति—महाराज सिंहास कय ऊपरसे यदि बैसैत छवि—बाहू कात से  
'महाराजक दय !' बोदित होमय लभैत भक्ति । भवितका ओकर पानि  
कय महाराज के बहाल करै छविहू । प्रयोगिक बुलासलक कोहोरा  
छोड़ैत छविहू । सम्मानिका ओकर कऽ कऽ देह पोंकैत छविहू ।  
पशुलिका अक्षय नियसैत छविहू । )

( द्वितीय प्रवेशांश—औरविद्रोमणि ककवती महाराजक कय ! )

( एक सुंभ सुन्दरी महाराज के लडा कऽ यज्ञमंडप पर लऽ जाइत छविहू ।  
आदि सभ माना प्रकारक धूल, बाजा, अक्षय, धून, दीप, बल्ल, मेख, सराव,  
पनाय, अर्घी, चंदी, पुष्पकलम, पदज आदि सामग्रीक डेरी लागल भक्ति । महाराजी  
कायस्थ प्रभाव कय महाराजक करन-भूक्ति साधने लागैत छवि । सुन्दर बाहु-पुनन

अरुण होर-प्रति । मन्त्रा २५० पुनः उवाच कः शैल्यः छविः । महामोहि  
 नः । नमः दश गुरुः । नमः श्रीगणेशाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः  
 श्रीगणेशाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।  
 नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।  
 नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

( देवदत्तः श्रीगणेशाय—नमः—नमः )

एतद् वदेत् श्रीगणेशाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

( श्रीगणेशाय नमः—नमः—नमः ) नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः । नमः कर्णाय नमः ।

( पराक्षेपः )

६



## ‘रसमयी’क ग्राहक

धीमान सम्पादक जी,

सावध नगस्कार ।

अम कुशल तमालु । आपो सुखति से अपने भासिक पत्र की सहाय कम  
हमरा हेतु आकलन कैन । ग्राहक वसैपाक हेतु हमरा से से परामम उदास वजन से  
मर्तु धरि दर्शन करु ?

पहिने भासक जेठरैवत बीधरी बीर ओहिठाम पहुँचतहुँ । श्री बीरूभाइने  
जैनत कुसिपार पेड़वैत, सताह । हमरा हृदय से पत्र देवि बनवाह । श्री ! ई कैन  
पोकी विक ? सेम चहटगर तगैत भलि । कतेक दिपड त देणु ।

हम कहलियेहूँ जेण जाबो । एही खातिर त ऐगहुँ भलि । ई मजोन पत्र  
अपना भाषामे बहराएल भलि ।

श्री बजर हकनिहार को एक बेर ओडि कऽ कहलियेहूँ श्री श्री लण की मुनि  
छे ? अपन काज कर । पुनः हमरा पुछलियेहूँ हमरा न बिनु चहै मुजैत नरि  
भलि । एहिसे की तम धार निखल छेक ?

हम कहलियेहूँ बहुत सुन्दर बस्तु तम छेक । एकनै एक बालगर कथा  
रमगर मन्त्र । जेतेक पाठक भेटलाहूँ अलि, तनक हुँहूँ प्रसन्न बहराएल भलि । बरि  
अपनहुँ पाठक नऽ जाइ...

जेठरैवत विविध होइत बनवाह हमहुँ पाठक नऽ जाइ ?

हम कहलियेहूँ हूँ, तमन...

जेठरैवत हम कोना पाठक तऽ सकैत छी ?

हम से कियेक ?

जेठरैवत कष्ट होइत बनवाह—हमर बाप मिलासह बीधरी सताह, तमन  
हम ‘पाठक’ कोना तऽ सकैत छी ? अही ‘जा’ से ‘मिस्तर’ तऽ सकीन छी ?

हम कहलियेहूँ से ‘पाठक’ गहि । हमर अविग्रह अलि जे अही नै ग्राहक  
बनबाक जाही ।

जेठरैवत ग्राहक की ? सोम सोल करिछा कऽ कह ।



१०८/रंगनाला

आज बाबू बाबू दम्दारने भेलहुँ । बेला टकर देरे छी जे बाबू तज्ज  
भजन पर ओकठन, मोनहुँ सबै बेरन अदरन केनैदान भोगन छथि । हुन  
देखितहि बसलहुँ — भन्नाह बेर पर अहाँ पहुँचि भेलहुँ । देखु न ई किस्तीकागत  
गति रहल अछि । यदि ई व्यादा बढि बिदेक त की अछि ?

हम ओहिठाम बैसि गेलहुँ । ओ व्यादा बढैत नृचलैतहुँ जात बहुत दिन  
पर ऊपर भेलहुँ अछि । सम हाल-नाल बढिबी छैक ?

हम हूँ, सरकार । अपनेक बगल मम बढिबै छैक । एकटा बड़ गुन्धर पन  
पठनाहँ बहार बेल अछि । से अपने के ?

बाबू साहेब अपना प्रतिद्वंदीक बजलाह — ओ वालि केरि दिवः । हिनका  
गामे मासि बेलहुँ । ताहिसे चोड़ा कटा बेल । ओ चोड़ा दस दिवः ।

चोड़ा के पृथः अपना कदम पर स्थापित कर बाबू साहेब बजलाह  
ओही । टीप बड़ सरल बीज होएत अछि । अहाँक कहने हम व्यादा बढि देन ।  
आद बादशहक परे उदाम भऽ गेल ।

ई कहि बाबू साहेब अतिरिक्त दृष्टिसे हुनरा बिल सादर भगलाह ।

हम कहलियेह — सरकार । ई बेला जात छोड़ि देन जाओ । वाली कुन  
भेयक ।

मोलाहेब सम समर्थन करैत कहलनि-हूँ । भाव ई लेल किछु नहि छैक ।  
ई पदम दस की करैत छलहुँ ?

बरनू प्रतिद्वंदी नहि छोड़लकहुँ । कहुँकहुँ सेन निरन्तर हँसैक ।  
स मुन बाकी छैक ।

बाबूओ साहेब के जीम आवि गेलहुँ । बजलाह भंग तज्ज जेला तिमः  
हम प्रतिद्वंदी केँ हँसैत कहलियेह ओ 'अह' जारी दिहै छी । बूझ  
पहुँच के पहिले पहिल दरबारमे भेलाइत छी । सेन स बराबरिए पर अछि । बहुत  
हैत त अछी जारी हैत ।

ओ हुनरा बिल सरीब ताकि बगल छठन सभन अही सेला गऽ देखि लियः ।  
हे लिय ई गह ।

हम कहलियेह — सेन, त वेह लबला रहऽ बिध । हम कतेक बाबू साहेब  
गाम कऽ लेत छी ।

बाबू साहेब के दम म भटि गेलहुँ । अछि होएत बजलाह — कह कोन मम  
भजन पर भऽ गेलहुँ ।

हम कहलियेह — अपनाह तन सन सहायकक बज पर हूँ पन बहुर केल पन  
अछि । अपनेक दरबारमे न कऽएक हा बाहक सऽ सकैत अछि ।

बाबू साहेब बजलहुँ हँस हूँ पट्टीदार छी । की अहाँ बेरन भेलाह ? मम  
देवा छी । ते देखन ! सेकानमे पानि त पानि अछि । और अनुक भगवान भऽ ।

बाबू साहेबक नवा पर जात भेल जे ओ अलवार पंजाब मे बैसि कऽ पड़न  
अछि । किछु त एक बँडा समन ओहि मे बिनाबद पड़न छैह । तहिमे बँडार  
जाय कोन दगाह ?

सहायकजी ? यदि ओ अहाँक बाहक बनि बेलहुँ न अहाँक परममे  
निम्नर हुनका ओहिठाम ललितकर दवाक गोरा बढीत रहनीह, तहिमे  
समेह न हूँ ।

बाबू साहेबक मेला पर हम कही सभन बजलहुँ कि हुनक प्रतिद्वंदी हुनरा  
प्रेमक ओ पड़ाएल कही जात छी ? नहूँ न लबल अछि से के गह करैक ?

हम कहलियेह — दुर्जो ! अहो भारी टकैवत छी । बेटी मे पहिले पहिल  
आनन छी की ? ओ ओ बानी पनहुँ । और बाबू साहेब सेकान मे आवि त दोहर  
जाय बूँद कऽ देखैत । ओना नहि लीलाह त पंजाब गर कर्जो कऽ देखैत ।

सम पर दोहरा पट्टीदारक दवाक पर गेलहुँ । मोहिठाम नृ नृचलैत ना  
बिबाद छितन सन ओर बाबू साहेब ओकर दम लेत छलाह । बिबाद विषय भऽ  
के पोड़ा बाद खाइत अछि कि नहि इमथ देखितहि एक गोटा बजलाह । हे नियः  
दो आधि गेलाह । आम पैल करिषा बेलहुँ ।

बेसत गहै बजलाह फरिषा की देनाह ? ममन एतेक दिनक भऽ गेलहुँ  
परन्तु भाइ धरि चोड़ा केँ आद लाइत नहि बेलियेह ।

पहिल व्यक्ति कहलियेह — जसम चोड़ा बाव खाइत अछि जसम बाव किएक  
नहि लायन ? आद बिधु अहुर त हाइते नहि छैक ।

हम कहलियेह त यदि कार्तिर जगडा किएक ? चोड़ाक आदमे बाव  
गामि कऽ देखिओक जे लाइत अछि की नहि ।

बाबू साहेब कहलियेह — देख, अहो हुन गोटा केँ अपना दुष्टक बडे दारा  
रहेन अछि । ई भाग कोनो मोटा केँ पुरन छल ?













१. १०६

मिसरजी—अब कहें ?

हम—वैराग्य ! धारावाहिकी रूप में ।

मिसरजी—मिमिमि कि अमिमिमि ?

हम—ई प्रथमे छेक ।

मिसरजी—अब, त कोनो चिन्ता नहि । अहाँ वैमु ।

मोडक काजमे मिसरजी भीतरमे एर दुहिया लेने बहरीताह और मजताह—

ई निम्न रज-प्रवर्तनी बटी । एहिमें निममित भई गेहूँ । धूल्य सभा दाका ।

है भगवान ! ई ह और भीमा लागल । हम जोरसे विविधा चिचिवा कऽ बोल बोलिनापूर्वक हुनका गुलाबोल । भात दुईत बेरी और मटपड पन क' हाथ पर लऽ मज्जादार कगलाह भित्त कोनो जोहरी आनीक चार उछा कऽ अंदान कऽ रहल हो ।

हम पृथिवीएन्—की ठेकनेवेक छिएक ?

ओ मजताह—भावभरिस बेसी नहि हूँ ।

हम अबाक भऽ हुनक मुँह सभय लागलहुँ ।

मिसरजी मजताह—हमरा रही कागदक काज पड़ेत अछि—दुहिया बन बक हेतु । नी छी आने तेर बी ह भऽ सकैत छी । एकरा मदमामे हम छेड़ आनाक पावक दऽ देल ।

ई अहि वेसजी पन मेने भीतर चल गेलाह । हम मुँह सकैत रहि गेलहुँ ।

ओ सम्पादकजी ! एहि तरहें अहाँक कामे तात घाटक पानि पीवय पड़ल । बाहुक की वगल जे अरने प्रति समोसहुँ मुनल एतवे भेल जे मिसरजीक स्थानमे मित्रराइन भी नहि छलीह । नहि ह 'मातृक'क चर्चा होइत बेरी बोसरे रंग लागि कहत ।

आव हम काम ऐंडेत छी जे पेर एहत काजमे नहि पड़ल । अहाँ क' चाहक-संख्या बढ़ायक हो त अपन दोसर एजेंट बहाल कर । हम कमिशनमें बाज ऐलहुँ । विशेष जगत्कार । इति धूमम् ।

अपनेक —  
अबूदाय खा

[ई कथा 'मिथिला दर्शन' (मह '५६) में सर्वप्रथम छपल आ  
सकल बाद 'जर्नल' ('१०, पे संपूर्ण भेल । हिन्दी (अगस्त) १३ मार्च  
'६०) तथा अंग्रेजी में छहो एकर अनुवाद भेल ।

पंच टा छोट-छोट पत्रक जिनमे बालित वर्षक एक टा सम्पूर्ण  
जीवन काहि तरहें एहि कथामे समेटि लेल गेल अछि, हे. विमल  
लेखकीय सामर्थ्यक परिचायक अछि । दाम्पत्य जीवनक आरम्भिक रस  
कोमल, समथक प्रभावसे सगल, मानर होबल अलग-अलग, शुष्कतामे परिवर्तित  
सऽ जाइछ तथा जीवनक विभिन्न पड़ावर ग्यार्हसे संघर्ष करैत साकक  
सम्मुख कोना स्वाभाविक रूपेँ शनैः शनैः कुरा-विहीन सऽ गेला जाइछ,  
एहि सादर सत्यक कथा बड़ प्रभावकारी आ पंच टा छोट-छोट पत्रक  
माध्यमे बहुत कसामक संघर्ष प्रस्तुत करैत अछि । कष्ट आ तिर्यक पुनः  
दृष्टिसे ई कथा मैथिलीक श्रेष्ठतम कथामेसँ अछि । कथा आरम्भ जे समस्त  
प्रभाव देल छैक से एकटा विमल कथन अवसादक होइत छैक से पाठकक  
सोचकेँ आनी परिधीसँ सऽ जाइत छैक ।]

( १ )

दृष्टिगत

१९६०-६१

प्रियतम,

अहाँक भिन्न-भारि एतौ भारि से बेर पढ़ाई । तथापि तृप्ति गहि भेल ।  
आचार्यक परोक्ष समीप अछि । किन्तु धर्ममे कसिओ भिल गहि नयैत अछि ।  
सखिजन कहिके मोहिनी मूर्ति बलिने सखैर रहै अछि ।

राधा रासी ! मन होइ अछि मे अहाँक नाम पुनःपुनः बलि जाइत आबि  
केवल जना जो हम नाम पुनः बलि जनात काज परि विहाद करैत रहितहुँ ।

परन्तु हमारा जो अहाँक जीवने भारी जइसा छथि अहाँक बाप-पित्तो जे दू मास बाद फेरुवाये हमरा लायक हेतु लिखै छथि । १० वर्ष बूढ़ के की मुझ पढ़तैन्ह जे १०० दिनक भिराई कहत होइ छैक ।

प्राक्खररी, अहाँ एक बात कए । माघी खवायबसथि दुर्मेवजन मने छैक । ताहिमे अपना माहक सय सिमरिया बाट जाइ । हम जोह्रिहाम एहोथि अहाँकेँ जोहि जेब । ई, एक टा पुस्त बाज लिखै छी । अजान स्त्रीगण ग्रहण-काल करय यथि जैनीह, तखन अहाँ कीनो साथ कऽ कऽ नासा पर रहि जाएब । हमर एकटा सगी कोटो ओथिअ जने अछि । तकरा सँ अहाँक कोटो खिचवाएब । देखब, ई बात केँजो बूझय गहि । तहि त अहाँक बाप-पित्तो जेहन छथि से आपने अछि ।

हमिदररी, हम अहाँक फरमाइती दस्तु (पगलहा) कीनि कऽ रखने छी । सिमरियामे भेंट जेला पर बुझाएब दम देब । गुदा केँजो ज्ञानय नहि । हमरा बापकेँ अता मगतीन्ह त बाच बच कऽ जेनाह । ई, एहि पक्षक जबाब फिरीनी बाक सँ देब । ई सिफाफक भीतर सिफाफ पठा रहल छी । पल्लोतर पढ़ेबामे एको दिनक थिलजब नहि करब । हमरा एक-एक सज पहाक सज बीति रहल अछि । अहाँक प्रतीजामे सागुर ।

—अहाँक दुख ।

पुनवच—चिट्ठी कोसरा केँ छोड़क हेतु नहि देखैक । अपने हाथसँ भगाएब । चित्तमे आँचमे मुकोने जाएब और अजान केँजो नहि रहैक त नेटरबसमे अता देखैक ।

( ३ )

हनुमा संस्कृत विद्यालय

१-१-२६

मिने,

बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि आनन्द भेल । अहाँ लिखै छी जे कमकिरबी बाब तुमारी भूजय । से हम एकटा बड़हन्यी भूज जोख पठा देखैक । बगट जान कउन जाइ अछि कि नहि ? अरमाओ त एहि करैत अछि ? अहाँ लिखै छी जे छोटीकी बकबीकेँ दौन छठि भूज छैक से ओकर धराइ बेलतीमे मंगवा कऽ पऽ केँक । अहाँकेँ एहि केर नाम पर बहुत दुर्बल भेलतहुँ । औरकादि पाक बना कऽ केवन कर । बाइकाजामे देख नहि कुटत छ दिग दिन ओर झुलत भेल जाएब । ओहोहठाम भूज जेकोना अछ । कपटी कम पाव भरि मिथ्य विवस करब ।

हम किछु दिनक हेतु अहाँकेँ एहिठाम भेगा चितहुँ । परन्तु एहिठाम सेनाक बड़ छगीकर्म । दोसर जे विद्यालयसँ कुछ मिला साठि टाका आब भेटैत अछि । ताहिमे एहिठाम पाँच गटाक निमहि भूज कठिन । बेसर ई ज ओर भूजी पत्र केँ रहन भेटैत । यह हम विचारि कऽ रहि जाइ थी नहि त अहाँक एतब रहने हमरो नीक होइत । पुन ताँज समय पर तिर भोजन भेटैत । बगटकेँ पड़नाक सुभीता होइतैक । छोटीकीकनकिरबीमे मन देहो बहटैत । मास्तु कौन की जाब ?

बकबी ननकिरबी किछु भीर छटगर भऽ जाय त ओकरा नुकीक परिचर्या मे राखि किछु दिनक हेतु अहाँ एतय आबि सकैत छी । परन्तु एतन त घर छोड़ब अहाँक हेतु सम्भव नहि । हम अगुनाक छट्टीमे गाम ऐबक दसन करब । यदि तहि आबि सकब त मनीआईर द्वारा कयैया पठा देब ।

—अहाँक देखकुछा

( ३ )

हनुमा संस्कृत विद्यालय

१-१-२६

मुमारीबाँह ।

अहाँक चिट्ठी पाबि हम अथाह चिन्तामे पड़ि जेमहुँ । एहि केर जान नहि जेन । तखन वासभरि कोन पलत ? भासक अ जेमे पाँच से कब भेल । तकर सुबि दिन दिन बचल जा रहल अछि । दू मासमंगटक इमतिहान ईतैन्ह । कौन पचासो टाका फीस भयतैन्ह । जो कदाचित् पात कऽ जेलाह त पुस्तकीमे पचास टाक लागि जैमैन्ह । हम ताही विद्यामे पड़ल छी । एहिठाम एक मासक कपाठ परमाहा भऽ जेने छिएक । तवादि ऊपरमे तामे टाका एतय भूजैब भऽ गेब अछि । एहना हासभमे हम १० सालगुजारी हेतु कहां से पठाव ? जो भऽ सकय त हम कू बेचि कम पछिना ककामा खवाय कऽ देखैक । भोमजा जे खेत बटाई कौने अछि ताहिमे एहि जेन केहन पड़ै छैक ? कोठेमे एको बास योग्य बाजर नहि अछि । ताहि पर लिखै छी जे ननकिरबी सागुर सँ दू मासक जानिए जानब आईत अछि । ई जानि हम किकरैअबिद्व भऽ गेल छी जो विद्याबाजर अछि । हुदा जेना छैक । अपने देख अहाँकेँ मुने पान भागल ? जाब छोटीकी बकबी सेहो १० पंचक भेल । तखन ककामाजामक, मिथ्या अछि । अति-भरि त एहि सभ सोचैत रहै छी परन्तु अदन सभ्ये की ? देखा अहाँक ककाम कोन मरहै पार जावै अछि ।

मुमारीबाँह

देखकुछा

गुरुद्वय - ज्ञानरत्न निघटि नेत्र धरति न हृत्तरकरिणः हस्ताक सीमो पङ्कजा सीमः ।  
 इह कित्वा श्रितका हेतु नाम अधिवहन् । किमु गहनं महिमा धिमुक्त नेत्र धरति अक्षय  
 ज्ञानि कः को करवः ?

 $\{ \gamma \}$ 

हनुमान संस्कृत विद्यालय  
१-१-४६

५। नीलदि ।

हम हूँ, माया मैं ब्रह्म और तु त्विम तत्त्वम् । मैं चिह्नी गहि दम सखनहुं ।  
 सदा चिन्ति तू मे बगट वरु के पदका कलकला गेलाम । ते भाव वाहिक धेडा-पुनाडु  
 जेना नायाक हारि लोक सेत नामले अछि । हम हुनका छागिर की की नैं रेल ।  
 कोन तराई ओं ए० पाव करौनिऐन्हू मे हमहो अनीन की । तकर आब प्रसिकन  
 दइ स्थान छुधि । हम न अछि दिन हुनका जाम छ हुन जमिमा ओ हुनका जिवि  
 माथ तरावय मतमाह । माथुक कहुवने पकि मोरमाओक धैया हमरा लोकनि को  
 देखाय गरि दवन्ह । ओ जगतन्हू जे कनिमो अधिनहि एता करनोह त हम कदमरि  
 हनिम भर दिवाहि गहि कएनिऐन्हू । १५००) महा कहु पाव कैल तकर कल  
 जोगि रदइ छी । पानिमे नैं जव पहरिओटा सैं चा नहि रहल । नयापि बेहा  
 बुनि छूँ जे दाहूजी माथैन नद । हे छत्रि । ओ जगत कहूँ छ नहि दैं । और ते  
 पुनहुँ अहूँ कहवने रहनिह । हुनका अधिन छन्हू जे अहूँक मग रहि मायम-सात  
 कनि नैं, तेव-पुनरा कनिनिह । परब ओ अहूँक द्वाडाक विरह यणटक मग  
 मायमि कलकला गेलोह ।

[illegible]

—सुखी भूषण

पुनश्च—यो सर्वत्र सकलिक होत छी कह्यो गीह के अहाँक नाम पर अति  
से भरना छै कह्यो काय अनायास। अहाँक हार के बाणक पड़ल अति से अहिना  
अन्यानक कुरा होलन्ह अहिना छुटने करत।

( 4 )

9-9-88

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः । हमारे भूमिपुत्रः सन्तु । यह कुशल प्रसारण । जगत्  
पुराण के एहि वाक्य हमारे समाप्त । इसी प्रकार । रात्रि-रात्रि भरि बंकि कद  
ठकाई करे छी । आज काशी विश्वनाथ कबिना उठै छी । स महि आनि । संवत्सी  
मेही नहि छुटै अछि । आज हमारा सांस्कृतिक दवाही की ? चौपद जाह्नवी शायं  
सैंवा नाचवणो हरिः । एहिदिस सम्पन्न हमारे बद्ध सेवा करै छथि । अहंका भावको  
बाधन छैने छैनि से आनि न, बृद्ध भाव । परन्तु आस उपवास की ? बृद्धावस्थाक  
बाध । भागवति पुत्र । बृद्धावस्थाक बाधन करै ह्यै छैनि नहि । हम बाध कद  
छैनि छैनि । परन्तु गंगा-उत्सव तीस कागिस टाका दिये धन भद्र जय । दोसर जे  
आज हमारे सांस्कृतिक परम्परा होइ अछि । वन निरुद्ध छी । ओही आस्थाका  
कारण छैनि । परन्तु एहिदिस बृद्धावस्थाक बाधन करै छैनि । अने एहिदिस  
करज यात्रा न छैनि महि । हमारे सेवा की करज ? दोसर जे जखन अहंका भाव  
मन मुदराय छैत मुदराय छैनि । अने घर छैनि । एहिदिस की बाध अछि ? मन जगत्  
न कछोडो स गंगा । ओहिदिस बाध-बाध की वृद्धावस्था छैनि । वि० पी० समक  
अने छैनि । हमारे मन लगन रहे छैनि । परन्तु बाध की ? उपवास छैनि । अने  
हरे न अछि । अनेदिस देखैनि । अहंका पद-बाध । पद-बाध । "नि छै  
न बाध की ? अहंका पद-बाध । अहंका पद-बाध । अहंका पद-बाध ।

[illegible]

इति दैवकुपयम्

पुनश्च यदि श्रमो विगृह्यते किञ्चिद् भक्ष्यं जायमानं तर्हि लोकमिकं ब्रह्मनि-  
र्वाणं देवं कर्तुमर्हत् । जाहि दिन सोभाय होणुम् त हि दिन एक काठी हमरो विषयो  
होनेछ ।

— इति प्रथमः स्कन्धः समाप्तः —



## कन्याक जीवन

[ई कथा 'दमदाता' (१६) में संवृद्धित अति।]

मैयिम नारीक सम्पूर्ण कथ-व्यथाके आदि समग्र कथमें एहि छोट-बड़ा, मै समेटि केन केन अति से विस्तारन केनकीय सावधानीक नीक उदाहरण अछि। कथाक आरम्भ बाढकक समेके भीतर छरि छवि ओकर सोचके आरम्भ कइ ईत छैक। आदि-मानिक सोचमेर सय आकास अतिरिक्त विरोधता अछि। कथाक कथन सभेदना के आरम्भिक नीच प्रभाव ओइसामे समर्थ भेल छैक। तँ एहिमे कथाक अन्तक सम्पूर्ण भूमिका छैक। गद्य दू टा बिल—एक टा आत्मवार्ताक आ एक टा १४ वर्षक आत्म-साक्षात्के तितिर बाबूक सम्पूर्ण जीवन रहि, हुनक सम्पूर्ण अन्तक आकार सऽ सठक अछि। आ तितिर बाबू कोनो एकटा व्यक्ति नाहि, कोनो 'टाइप' नाहि, सम्पूर्ण उदासीन मैयिम नारीक प्रतिनिधित्व करैत अछि। कथन, अन्त, परिणाम, आत्मवार्ता—अन्त दुनोपे ई कथा मैयिमकीक अन्तमेर कथासमेर अछि।]

— हे ओ पाहुन ! देखू पोर हमरा बस पड़ल। जाव जहीक जीटी कटा रेल।

—ए तितिर दाई। अन्त नाहि कछ। जहाँक दू खुदरा पड़ल अछि।

—नहि ? बस पड़ल अछि। एकटा कोनो चित्त छैक से मणि मुनै बाळ ?

—नहि ! दू टा कोनो चित्त छल। जहाँ कलमासँ पुसका देसिएक ताहि एकटा पड़ल बस। एका देहमानी मणि कथ।

—देहमानी क अहाँ करैत छी। हारन मरी छी एहिना कटा करल सवै छी। बाळ, बाबू जहाँ से नहि जेलाएव।

ई पयोसोक आगवा पयिहै कथ कि 'अन्त' नामको एकटा आत्म विमुक्ति आत्म अन्तमेर। तितिर बाबू कोनो छी। और दूमु' स आत्म बस बसक रहै आत्म सूर्य केन नहि दोकिलहुँ स पोर आत्मवार्ताक अन्तमेर की ?

कल ई विषय मे दू टा कोनो कथ मेर आदि आत्म अन्त ना कइ अछि। तितिर

## कन्याक जीवन

७

आदि आत्म की अन्तमेर कइ मुठ्ठी में बने और हम तितिर बाबू मुठ्ठी के अन्त मुठ्ठी के कथने छोड़व केन तँवार नहि।

तितिर बाबू— हे ओ पाहुन ! ई आत्म हम कोनो अन्त। जहाँ हमर मुठ्ठी छोड़ि दिवस, नहि स आत्म हम कोनो कथा के कहि बँस छी।

हउ आ अन्तमेर तितिर बाबू ना तितिर बाबू तमेर आर से बँस कटा लेमनिह आ हम तितिर बाबू और वरक कइ आर छोड़ि देसिएक तितिर बाबू ओ आत्म नव पड़लहुँ।

हम अन्तमेर मइ मेमहुँ। तितिर बाबू मन्त पर बँसनि आर से कुनरि-कुनरि आत्म मइ मन्तमेर। हमर दू आर देसि बसलहुँ—की की पाहुन ! अहाँ आत्म ? एहि विषय निरैत छैक। जहाँ आ तितिर।

हम अन्तमेर—देस, द. २ दिवस। हमर बसल मइ मन्त अछि।

आ अन्तमेर—जहाँ पाहुन छी। हमरा जहाँ से छीनि कइ नहि बँसक बाहे छल। ई अनुचित मेर। आर जहाँ आ तितिर। आर मन्त छैक।

हम अन्तमेर हमरी दोहमहुँ से अनुचित मेर ई कि हमर बाबू अछि। आ अनुचित होइत मन्तमेर। ई जहाँ की कइ छी ? अन्तमेर अन्तमेर छल की अन्तमेर हउ छैक ? ओ की मुनगीहुँ ग हमरा कथक अन्तमेर करलहुँ ? जहाँ के हमरे सन्त अछि, ई आत्म मइ विषय।

हमर हमर मन्तमेर कइ पड़लहुँ पर पड़ल। कहलहुँ—दे' ई मन्त कोना मन्त अछि ?

ओ अन्तमेर— बाळ रे मुठ्ठाइ' अन्तमेर अन्तमेर कोनो देसनिह अछि ओर पुछे मणि कोना अन्तमेर मइ मइ ?

हम तितिर उठलहुँ। कहलहुँ—देस, अन्तमेर के नहि कहलहुँ।

ओ अन्तमेर से अन्तमेर बाळ ! कहलहुँ मे न की ? अन्तमेर देस देसलहुँ।

हम अन्त से अन्तमेर रहि मन्तमेर। अन्तमेर करैत कहलहुँ—तितिर बाळ, जहाँ के हमरे अन्तमेर अछि जहाँ बाहुन आ कोनो के कहलहुँ ए हम बाहुन अपना बाळ पयि बाहुन।

ओ अन्तमेर—अन्तमेर ई आत्म आ तितिर।

अन्तमेर विचारन मइ कइ हमरा सन्त करव पड़ल। परन्तु अन्तमेर एक कोनो अन्तमेर की कि तितिर बाबू अन्तमेर करैत अन्तमेर सठक—आर, जहाँ के अन्तमेर देसलहुँ, हम अन्त के कहलहुँ मे जहाँ बाहुन होइ बाहुन अछि।



सोच रहे सोह । नहो-महो का । दू टा पका कऽ पावा कऽ देव छिओह । हँ री  
बडट, बाड़ीयें हरियर मणिबाइ सोहि भऽ ।

ताका एकटा मनि नवना प्रीत मेहो पोछी से रमान कोने पहुँचलीह । नर में  
मुनसीक पावा, हाथम अमुकनर दण्डन पाठ करीत । संवसक साधर भूति  
पकी । हम बहिन की पुछलियेह—हिनका नहि बिहलियेह ?

को म क प करेन पाठ । चिन्तयहुन कोना ? एहिनाम बनेन रहितह तखन  
मे ' हे हमर परिहार' बाली नमहि बिकीह ।

को हमरा देख रिख पखीह । बहिन कहियेह—ई हमर भय बिकीह ।  
नहि कोतो हव ।

बिधवा हाथम पाठ, नु कीचोर पर रहल बगानीह—अप भाव एतना दिन  
वर बहिन मोर पड़लिये । कोन बिते हिनकर चर्चा नहि होइत छलीह ?

हम देखल को वारा बरनमे हाथपाव देव न लागल छीह । जहि कारन सवस  
ऐनामें सुकीर्य भऽ रहल छीह । की तीसक नुका नेने सोहो पछाईमें बलि मोरीह  
कीर न मऽ कीहिनाम बेसि नुका सुखबन बनयौह । हम बहिन की पुछलियेह—ईहो  
तोरे संग रहैत छयह ?

ओ सोनमे मणिबाइ पुरैत बजलीह—की कहै छह ? बिचि । वर निपति  
हिनका साधुरमें बेकोर बर बुध देत छीह । सो माघ से एहि छयि ।

हम पुछलियेह—हिनका बिया-पुता ?

ओ बजलीह—एकटा बडट छीयह । ओर सोन टा बज्या । एक कथा स मुन  
बय छयिह । दू टा सुधारिण छयिह । व ई बजुबेना बिकीह । ई मरुदेव मुन छयिह ।  
हँ पुन बहिन पोछरिह माठ नाबरे सोनि छीह ।

हम पुछलियेह—हिनका बजानी की को भेलीह ?

ओ बजलीह—बिया त हमर कऽ सेवयिह । पुर्निया बिसासे मीकरी करैत  
रहयिह । कोहीनाम मजेिया सऽ सेवकीह । नाम हिनका दू टा बेटा कऽ बजानी  
कारकाक पाठ-विष बिसासे बुरिय रहै छयि ।

तामर दू टा बालिका कोइकोमें माति देवे पहुँचि गेलियह । बहिन बजलीह  
सोह बजानी कीर नमने आबिह गेलि । हँ तो ! बाहुन एतनाह छति । नरकारी  
नमतेक । ई बजानी ! नार पर कडीमाक नून छीह छे छ रिटा सोकि वे को  
हँ नमनेछी ! ओ छट वऽ बाड़ीयें पदबन बस सोहने नऽ

बाहि कारिका की बेसि हमरा मनमें हकत्त तिसरक रूप बालि छल । हँ

बहिन के पुछलियेह—होदी ! हम विनयमानमे तारा संग आएय रहियोक त एकटा  
एहने छीही रहैक । प्रामः तिसर नाम रहैक । ओकर कतय बिबाह भेलैक ?

बहिनक ठोर पर हँसी बाबि भेलैह । बजलीह—आब तौ ओकरा देख-  
पहीक त बिहलियोक ?

हम कहलियेह—जकर बिहलैक । ओ बतय कात एकटा नाम हमरा देवे  
रहैत से ओहिन बोलै छति

तावत् परिहारपुरवाली सेहो नुका बहिन कऽ भेलीह ओर माटिक महादेव नम-  
नय नमलीह । हमरा बूति पड़न देना हुनका शरीरक सभटा शोणित पानि मनि  
नऽ जोखिक मार्ग से बलि पड़ल होइत केवल अस्मि ओ चर्म टा मेथ रहि  
गेल छीह ।

हम तबबद करो न थोड़त रहि बाय । बहिन पछा होईत तोकैत पूछि  
देसलैह—कीआ ? बिबाह कियेक नहि करैत छह ?

हम बजलीह—मने लायक कथा भेटय नमने ने ?

बहिन बेसी पुछलियेह—केहन कथा बाहेत छह ?

हम कहलियेह—जोही तिसर सभ । ओ ओकर बिबाह नहि भेल होइत...  
बहिन बजलीह—दुर बताह ! तौ एके रंग सभ दिन रहि गेलाह । नैह तिसर  
बाद तोरा सोझामे खंगल छयह से गहि चिन्हन छहुन ?

ई पुन परिहारपुरवाली मया कऽ मुन मणि मेवलि और हमरा न आरच-  
नक गोरा गोरा रहि रहल । एहने दिनमे ई मन्दर । कहीं ओ भगवतकोना ।  
कहीं ई अकालबुद्धा । कहीं ओ स्वच्छन्द बहुलवाली तिसर । कहीं ई बडटक साय ।  
हम अविश्रामक स्वरमे बहिनके पुछलियेह—हँ ! तौ तिसर बाइ बिकीह ?  
हम ई पुन नम नमनाय छी । हम एतन जीवन मे प्रनेसो नहि केलहुँ कीर हिनकर  
पमटा ममान भऽ लेलैत ।

एहि बेर पुन परिचित स्वरक किछु किछु आभास सुनाइ पड़ल...हँ ओ पाहुन ।  
अना अना से नमना जयेत । ममान करैत छी ? अहाँ पुछल छी । और हमरा  
आकल बजने कथा कऽ कऽ नाम सेन छी तखने सभ किछु अवधारि भैत छी ।  
अनि सात तनाम जान नहि रह्य तौ अहाँ से नराबरी करैत रही । हमरा त जे  
अपनाम नम तो मे बिसरि आयल...तौ अना पुछल भऽ कऽ भैत छी ? दुर ।  
तउन मना नमनि कोना छी घरण करैत ? जे हग सभ अपन तोर बहाव  
मना त मनाक मना दना जाय ।





बगानी बाबू इगोकेसे चुड़की देनयिन्ह—हमर कहीं जाने माहारा है ? सोसरा हो-बामे जायो ।

परन्तु नेपाली बाबू की बुझी ' हुनक किमाबारीके' घई-धुईत लगने पहुँचि चल्यो बगानी वरू भयनी होत भयलाह—जो रे बाबा ओतमा सोम के मुझी पर बोधवा की ? हम् एलाय खीनवा है ।

बगानी बाबू धक्का कए मित्रर मित्रकाक हुनु लयन भेलाह ई देखि नेपाली सभ हुँतेत सोसरा कोठमीमे चल गेल ।

आब बगानी बाबू मुकयस भए धर्मस बहार कएलन्हि । हुनक कही पिआला लयने चाह भरि भरि कए बाँटए लयलन्हि । कथा टिकिन-केरिभरसे बिस्कुट बहार कएलयिन्ह । सभलोदे काह-पानिमे बयसाह ।

साबु चाँदी किडन पहुँचि गेल । एक सज्जन हामने 'बामन्द बाजार पत्रिका' लेने कोठकोक माने पहुँचलाह हुनका गछी दुइटा कही उडका परिधानमे छलयिन्ह आर एक टा दस धर्मक बालक ।

हुनका देखि बगानी बाबू गोर कएलयिन्ह—नोताप । एरिमे बाबुन ।

बुद्ध बिदक भीतर हुँते परिवार बुझ-बीनी वकी मुक्ति-मिति कए तेना एककार भऽ गेल जे अनठिआक हेतु फुटकाए कठिन छलक ।

हम अनुमान कएल जे मवायन्तुन अन्ति बगानी सज्जनक कोनो जातीय सम्बन्धी शीरयिन्ह । परन्तु जेन दुनूमा दाताँवप होवए लयलन्हि, जेन पुन जे दिनका हुनके पुर्वमे कहियो भेट नहि सकयिन्ह । मरुतामे जे बातचीठ भेलन्हि ताहिसे हामरी किछु परिचय भेटि गेल ।

हैं जे सज्जन पत्रिके सेत छवि एतिका माम छीहु रआल बनजी सदिया जिला पर छल । मेरठमे ठिकेदारी करै छवि ! दुर्गा पूजामे वेस आयल छलाह । आम पुन काज पर जा रहल छवि । कथा आइ-एक-सी-पढ़ि रहल छयिन्ह ।

लवायन्तुन छवि अनुब बनजी । बर छवि मुनिवावा । जवायपुरमे जानटरी करै छवि । बरका भाइ बन्धक एक मिलसे इंजीनियर छयिन्ह, भरीबी बी-१० न पड़ै छयिन्ह तनिक विनाह हुएयिन्ह । तेँ गाव तथा म्त्रो-पुन केँ सेक कऽ सोलए जा रहल छवि ।

आब बनजी तथा चटर्जी परिवारमे सिप्ताचारक अध्यापन-प्रदान होमऽ लागल । बनजीक पत्नी चटर्जीक भाता तेँ ओपर आदि कऽ प्रगम कएलयिन्ह । चटर्जीक पत्नी बनजीक बिछुकेँ कोरामे सऽ दुवार करऽ जमलयिन्ह । बनजीक कथा

चाह बिस्कुट लऽ कऽ चटर्जीक पत्नीक भाता बका देलयिन्ह । बनजी नहाय चटर्जीक बालककेँ पृच्छयिन्ह—बलो, की पढ़ छऽ ।

चटर्जी लहेव नीची उतरि कऽ पूरी सरकारी लऽ आलाह । चटर्जीक पत्नी पाराय लगयिन्ह । बनजीक पत्नी टिकिन-केरिभरसे खीनमोहन बहार कए ओहिमे भिमा देलयिन्ह । सभ मोटे तेना गहब भावसे लय समयाह जेना एके परिवारक होयि ।

हैं बुझ देखि हमरा अर्ध-आमन्द गेल । मनमे अनेक भावक लहेव छलए लागल । रहि हुनु परिवार केँ कहिय पर्वक भेट नहि । प्रायः एकरा बार पुनः भेट हेलाक सम्भावनी रहि । तयामि एम्मे काल में, आर एतने कालक हेतु, हुनमे कठेक अप-तैसी सऽ गेनेक अछि । एकरा पारलें थिक, छे । हि जानिक सईस अधुन छल । एकर बनजी नहाय जे बोझक बाज पहिने पावरक मूति सेर वैमल छल ह पमि-छामे एकाएक गरमलक सोल कोण फूटि पड़लन्हि ? हैं 'आमन्द' बाजार पत्रिका-क माया थिक । बगभावासे एहेक भावि छल जे हु मिताम अपगिचिन व्यक्तिकेँ लल भरिमे ऐक्य-गुन मे पायिह देलक । यदि कदाचित् बगनाक सायाक हैं प्रताप मैदितिभीमे आदि अर्धक ? परन्तु

छह सभ सोच-सोचत मोरमाणाट आदि बेस । इच्छा से रहए जे हैं अमि-नव हम्—जे अपना बेसमे ऐक्य बुझमे अछि—किछु और दूर भरि देखत चली । परन्तु मोरमाणाट उपरवाक छल ।

□

उहाउसे गंगा पार कए अपना भूमिपर पवर बैसहुँ सिमरिया बाटमे दुँग लागल छल । परन्तु ओहिमे जे नृप देखल से बाह्य घर ओहिमा आबिमे नाच रहल अछि ।

हाममे गंगाजनी लेने एकटा पुढा पढ़ए चाहैत छयि, परन्तु जोक वढ़ए नहि देन छयिन्ह । साहोच भीतर सलह छल सग रहल अछि । पुढाक बैठा बरवाता घोमि सऽ मोनर जगदाक हेतु जगोरल प्रयत्न कए रहल छवि और ओम्हरसे तीन-चारि भात गरदनिवा सऽ कऽ बाहर टेलि रहल छयिन्ह ।

पुढाक हाममे एकटा साथी आओर गंगाजनी छयि । पाछामे पुतहु अपन बुधपा मित्रकेँ लेने छयि छयिन्ह ।

पुढाकेँ अपन लज्जात नयन दुख भरोसा छयिन्ह । तेँ चुपचाप ठाडि छलैह । परन्तु अलन देखलजि जे बगनाक ठ पर चारि मोटे सवार अछि सऽ बिचिआ छल-पा ह सो न बुझल । हम् नहारा करै छी । हमर सरनत पूत छी माससे हुँचलाह छवि । हुनका कऽ विनीह ।





कहि ? बार है ये गृहिणीयक शनिमाने भविष्य कुलवधु सुतीन मे कि बटजीक पत्नीक समान आसन पर बैसावा योय नहि छलौह ? हुनकर बैओ उचित रावा किणक सहि बालकनि ? गारीम तें कतेबे इन्ही छलौह, किणक मे किनका भेलनि ? वनजीक पत्नी जकी आगी सहि प्रेम-पूर्वक अपना सग सऽ बैअनि ? वनजीक किहु जकी हुनको बच्चाके वुमार करएवला केओ किएक मे भेडोह ?

हम जनेक अधिक एहिपर सोचें जो नतेक समस्या जटिल भेल आसन अछि । गारीम प्रति कऽ अपन बेजबानी रहबि ! परन्तु असभ चारि ठा मागा पहुँचि भेलनि कि सभ सुखदम ! किमको सजधाक सादर नहि पड़लैह । टुकर-टुकर माता जी कुलवधुक अपमान देखैत रहि गेलाह । जोनिममे रथमाच सकान किणक तें छलनि ? किणक मे केओ छिजिर छिचकाइ हेतु टाड़ भेलाह ? किणक मे केओ मधुन गहन चरएलाह जे अशक्तुमारक हाथ प्रा भोनर सऽ अविधि और मातु-पुत्रक भारें प्रकस्त सदा कहिनिथिह—सही नोकनि अबे जाउ ।

बात अछि जे बगवानी अपना लोककेँ नाथपर चढ़वैत छथि और हमरा सभ अपना मोथकेँ पएवें छोकरवैत छी ।

घोड़वे दूरक रें अन्तर छिक । तखन बंध ओ मिमिमाक धूमिमे एतेक भिलता किणक ? 'पद्मा ओ 'कमला तें एके छेके, स बंध भिकीर मदन दूक पानिमे एगवा अन्तर किएक ?

## ग्रामसेविका

[हं नया सवेप्रयोग 'बैदेही' (विसम्बर '५५) मे छपल भा माधने 'अचरी' मे संगृहीत भेल । हिन्दी ('प्रमंथुष' ३ फरवरी '५७) तथा गुजराती ('श्री रत्न') मे सेहो एकर अनुवाद भेल अछि ।

एहि कथाक विशिष्टता एहि बातमे अछि जे ई नहि केवल एकटा भाषा एवं अ-पिक कयेँ स्वतन्त्र गारि-शक्तिने प्रतिष्ठित करैत अछि, अपितु नारीक एकटा उन्नत संवेक संवेकमय सृष्टिक स्थापना करैत अछि जे अपन सेवा-भावना आ कर्तव्य-व्यवस्था से परम्परावादी रुढ़िग्रस्त समाजमे बदलाव अनेत अछि । एकरा नव समाजक निर्माण क'त अछि आ अन्न, बुद्धि-पूरतक रूपमे जीवि सभक जातीयवादक पाव धनैत अछि ! यथार्थक धरातलपर कथा एकटा स्वस्थ कथाकार आदर्शवादकेँ जाहि तरहें स्थापित करैत अछि से एक विश्व जस पाठककेँ कल्पना जकी सुन्दर आ मनोहर संगीत छैक, ततहि दोसर दिस बह सतह आ स्वाभाविक सही । यथार्थ आ आदर्शक संज्ञा आ मनोव्यवस्थाक नरक समन्वय कथा करैत अछि । प्रगतिशील मूल्यक स्थापना कऽ कथा समग्र रूपमे बड़ योग्य, सुखद, आशाप्रद व अनेक प्रभाव छाबि जाइत अछि ।]

मधुगोही पोखरि पर मृत्तन मिसर देखकेँ पुँह धोइत देखि काकोनाथ कहल-  
थिह—बैयजी, एकटा नव गण्य सुनमिहैक अछि ?

बैयजी माफा होइत दुधनिधु—की ? ओन बात भेलैक अछि ?

काकोनाथ बजलाह—अपना बुलावामे एक टा ग्रामसेविका आएल अछि ।

बैयजी पुनः चलि 'ग्रामसेविका'क की अर्थ ? कि ओ सगल गायक वर वजाओति ?

पान्ति —ओ सग-वर भमि क' रत्नगणकेँ निहा बेनि

वे ०—की बिज्जा देनि ?



ई कहि पुनही हुनका एक छोटी बोली पर बैसाय हाथ मुँह बोलाक हेतु एक थोड़ा जल देलसिंह और नामन लगलसि थोड़ीमे मात मठिल लगलीह । चौधरी लाबि कहुआ ॥२॥ बाबू मोचा कय लेलसि । एतय अमृतपूर्व पुरुष शक्ति स्वीकण दान तर जीव काइय लगलीह पतिनाशन नामने भूत भ गेसोह । ओ याबाबू पदुआइमे बससय लगलीह । अभिप्राय ई जे - हे श्री पाहुन ! कतिपय त सज्जे बनहिअ अछि परन्तु जहाँ त लगल छी अःशो मा कइ कनेक काय आहर भैछ ॥ एम्हर सस छोय सग जगत पक्षम आनख ई बनही बोला परमान, की रैत की नहि देव तकर कोन ठेकान ?

परन्तु पतिनाशन बखसिते रहि गेलीह । एम्हर कर्मपुरवासी बैस मुख्यस्त भए चौधरीक संग मण्य करैत हुनका भोजन आरक्षण करबसिन्ह । पदुआइमे पतिनाशन छली पीटि बाजय लगलसि थाप रे बाग ई कनियुधरी अम जीवि लेलक । एहि घरक आद भाक काटि लेलक । हमरा सोकनि एना करिहूँ ते सानु विजितसि काटि तर गाड़ि विगिष ।

कोनियी घरमे नून देवादिनी कुनकुसाय जयसीह—कुनवर रानी माय सस देलक । हमरा सभ भारि भारी भात जैलि क' पसिलिमेक । से ई सुधन पाव भारि चारकरक भात देलकसि अछि । बस दे बस । पाहुन घरमे की कहैत हेतैक

देखबुहूँ ऐ श्रीनी । तरकारी जे बाँझि क' रैत छैक ' हुनकरदीके' जे नहि सईल छैक । हे, देखबुहूँ सभटा तरकारी एकै शक्तीमे भरल देखलैक । हमरा लोकि नाम टा बाटी लगलिनिक ।

दुख्खा सँ भठसिम्मरीवासी कुनकुमकीक स्वरमे बाजय लगलसि - हे मंगलाम नैरेख इत्यर्थक हेतु पाव तह ! पड़नैह ? बूत फराक बाटोमे परलसि कहलसि ।

पावतु कर्मपुरवासी मा कनकरा मा दालि-मन्न पर भः देलसिन्ह

आम्हर पदुआइमे पतिनाशन पुतोहुकै बारि देखय लगलीह—ओ सब थो छो । केजो जौयि दिने' से नहि होइत छी । मम उबारन देसव सँ आय कनेक पाहुनके' जाय कड़ीक लगन मे सोहर रमा करैत छिओक ।

कर्मपुरवासी पन्नह मिनटमे पाहुन की' बोला-पिमा कइ विद्या कइ देलसिन्ह ।

पाहुनक बाहर होइतहि भाक स'सु नोहु पर छुटलसि । परन्तु कर्मपुरवासी कोनो बागमे अपन गलनो मानय सेव होइ नहि भेलसिन्ह । सुखन पतिनाशन बिशिषक दीड़ीसँ अपन कपार कोझि लेलसि । देवादिनीसभ हरहि-चर नगावय लगलसिन्ह । बखनू बसय पनमुकास लेलक तकर ठेकान नहि । कनिय

कालेजक पठा सँ भयता स्वामीके' बिट्ठी निखय लगलीह । केनो बखसय प्रहल नहि केलक ।

पं० जी सन्ध्याकाल बाम देलाह । ता पाहुन कमानय दिस गेल छलाह । पं० जी बाइन बाबि दसै छथि त चारुकात मुख पतिनाशन के' सार कय पुछन-मिन्ह—ऐ, की बात छैक ? ई कपार पर दोवर किदेक लगिगे छी ?

पतिनाशन के' कहिते त कठे नहि फुटनैह । पञ्चासु जाँवर सँ मोर पोछैत बजलीह—बामक बाय आठ एहि घरक मयावा नष्ट हैबाक छलैक त नष्ट भऽ गेलैक ।

पं० जी सन्ध्याकाल चित्त सँ बजलाह—से की ?

तनपर पतिनाशन कनैत-कनैत खमटा कथा आधोपाध कहि सुनोयसिन्ह ।

पं० जी किछु काल हरि मुग्ध रहि गेलसि । तबन्तर दीसै बवास छोड़ैत बजलाह—अतका घनहूँ हेसो अपना बतहे कानी । एहि घनही के' नैहर पठा देवक चाही । नहि त समाजमे रहल कठिन भऽ जाएत । कमकिरबुक दोसर विवाह करौनाइ आवश्यक स' गेल ।

तबन्त पाहुन पोछरि दिसते आवि गेल छलाह पं० जी सकुचित होइत हुनका लग जा कहलसिन्ह—चौधरीजी हमरा परासमे त आइ अर्पेक बहुत कष्ट भेल ।

चौधरीजी बजलाह—नहि, कष्ट बिएक हैन ?

पं० जी किछु अप्रतिभ योश कहलसिन्ह—हमरा घरमे एकटा कनियी छथि जे किछु जनकाहि जकाँ छथि । ओहि बतहिसे यदि किछु अनठ-बिनठ भेल हो त से प्रबाज नहि कैस जाय ।

चौधरीजी ताकत पूछावे नोसि जैत मन्नीर भावसँ बजलाह—हमरा त एहि घरमे छथ सँ बेसी सम्मान वैह वृत्ति पर्यय छथि । वृत्ति पक्षय जेना हमर अपने कन्दा होइ । बैह चाही । आइ हमरी आँखि फुलि गेल । यदि प्रत्येक घरमे एतय मेमन्दिनी बटै पाहुन बहरायि त परे 'मियाबाके' लिखिना कै कहि सकैत बाइत ।

पं० जी मुँह बोलै अमाह रहि गेलसि ।





में करव। मास काही त तैयार छविन्ह। परन्तु बाही कह्यन्हि जे बाही के  
अपना भासाई बुझने जानह।

बीकू बाबू संभक्ति होइत पुछलबिन्ह—ओ के चीक ? नी करव आइति थछि ?  
हमरा भाइतसे कोन काज छैक ?

भूटकुन के चुल देखि काहीनाय पुछलबिन्ह— की ही भूटकुन ओकर मास  
छपारे छैक कि ने ?

भूटकुन हं !

काही०—हाथमे दीपो छैक ?

भूट०—हैं।

काही०—तखन निरपय कह दीक।

बीकू बाबू शोध से बताह बखसाह—हरागिनी के और कोनो घर नहि  
भेटलैक ? सब से पहिने हमरे तोपस आगल छछि।

पं० जी, देवजी ओ चौधरी जी आनन्द से मुसकुरा उठगह। बीकू बाबू के  
किछ नहि फुरलैन्ह, बहुत क एक बापक कसि कइ भूटकुनक माथमे लवा देलबिन्ह।

जखन बीकू बाबू आइत पहुँचलाह त अकित भइ उठगह। जकरा ओ भोर  
बाहिर हाइन राखरी, कुण्डल बावि लाना अकारक उपाधि देन आयल छलबिन्ह  
तकरा देखे छथि जे ओकर कमरे, एक हाथमे शंख ओ दोसरामे कलश लने,  
हुनका आइतक मोड़ीलाक करवामे माथल अछि और अपना आइतक गरीब  
घरोल बाइने पछाँ आदि सेल चकर-बचकर लागि रहल छथिन्ह। बीकू बाबू के  
आइतमे पैर बिनहि मोड़िक गध्र लगेन छथिन्ह। मित्य प्राणापात करैत असे  
छलाह। से ओइ कुल कइ साँत ललगिन्ह। ओकरा पर सब दिन कल-फराक  
हेरी हरि कइ जाय पढ़ैत छथिन्ह। आइ देखैत छथिन्ह त एकदम लाइन बलीगर  
कल एकटा कलसु चीक नहि। चीकठ सब एकटा कोइला छल कारी ल उठैत  
टाछन रहैत छथिन्ह से की दिन माथमे ठेक गइत छथिन्ह। आइ देखै छथिन्ह ओ  
लासदेन साक बमकैत एक कानमे धुट्टी से लटकल अछि। हुनका घरमे छी भास  
से जे सोल जमल जगह उकर आइ नामोलिगल नहि। ई कायापलट कोना भइ  
गेलैक ? बीकू बाबू सोचय लगलाह—अहा। एहने संस्कार लानी बलि अपनो घरमे  
रहैत तखन मित्य कि एक गध्रकिञ्चन होइत ?

बीकू बाबू पूजा पत्र बँससाह त बँसला। से देखाइ पढ़ैत छथिन्ह जे ओ लखौ  
पञ्चाङ्गमे अछि अछि। कहलहुन एकटा रोग लठभोले, जाहि पर सुन्दर अक्षरमे

चित्रवा देवी अंकित छैक। एकटा नेबोक पाछने कीड़ा सागत छीक। बाहिमे  
जा कोनो बगइ चारिक भिषकारी बय रहल अछि। बीच-बीचमे शरीरक के किछ  
पूजा रहल अछि।

देखैत देखैत एकटा आइतक बात भय गेल जे बरहइवा वाली सामुक्त देवा-  
देवी छथि त नाक छपने रहैत छथिन्ह से एकएक बिमला देवीक निदेशानुसार  
अनछ अ दायम कटादि लेल छ और बाहीम नया द्वारा अपवित्र बेल मा टके  
काटि कय लकय भयभीह। देखैत-देखैत बाही शोक भय देल।

सोईक काम बाद बिमला देवी साइत लइ कइ हाथ छोमगिन्ह। एक भिनट  
अचानक दुनार छैलबिन्ह। तबपरात पुन हाथ जहि छतके निमनत पय दिश गइ  
देखैत बीकूबाबू माथपुस पय देखैत रहल छ। ई त काहाभिन जगि रहि, गृह-  
कन्या जगो लगेन अछि। जसहि आस तसहि तयरेन बना देल। बलहुँ बेचारीक  
प्रति आनन्द अक्षर कहलैक। बीकूबाबू दुर्गा पाठ करय लगलाह। तबहु  
पुरिन्दर का बँह आल ठाँइकाही खेतवराना बगने आदि बाबूह।

भोजनकाय बीकू बाबू के कह्यन्हि—देखलैक, संगमिम भइकोक लागि।

हरी कहलबिन्ह—ओ संभावित नहि देखैत अछि।

बीकूबाबू कहलबिन्ह—ई हुन लागि नहि मानैत छी। ओ लागि एम्हर  
कही पावै।

अरे कहलबिन्ह—बंगला गुभा देखने नहि बुझिभीक। मैथिलानीएक चीक।  
कथपूर पर छैक।

ई सुनैत बीकूबाबूके सक्क कइ करेन लागि देलकैन्ह। पहिमुक प्रभुजनता  
जिगीर भइ लगेन्ह। सगह होइत मनमे भोजन लगलाह—बाहिमे किवा पञ्चाङ्ग  
रहैत न ई समझा छथिन्ह। परन्तु मैथिल कन्या भइ कइ पुता करैत अछ।  
अनछ छल गल। खजन ललगीह बगइत चाति, अपनो चाति दिसरि बेनीह।  
देखी नुँ रीति-रिवाज बाप। प्रकथमतः बख गह—एकरा माथ-पाव नहि छैर की।  
एखन छत्र कुमारिए किछ अछि।

हरी कहलबिन्ह—अप पुछलैक से बाह। से एह गुरुनरि छह। विवाह  
किन्न मे करैत छह। तखन हुँमय लागल। बाजलि—‘अक्या उप्पन करवानी  
देखने बहुत मोटा छथि। एखन देवा करववानीक कसी छैक। से हम सेह भास  
करवने छी।’ हम कहलैक—‘हे बाह, मोरा एतमे टा मे एके शरीर बुझि कोन  
कइ बलीह।’ तखन केर हँसल लागि देल।





सामूहिक शक्ति केवल होइ छैक । मित्रता दोषक नेतृत्वमे गामक समस्त नेतो पुनर्गठन करिने अवधान द्वारा महिला-मुक्तकाम्यक मेक देवय आ रहल छैक । बुद्ध लोकनिक पुनर्गठन भइ सेमनेह नेम । यथा चरित्तक बादा विद्या वेन नृपति नृपति आत्मनिकके दूध केपेन न आन जलनाइ, विनाइ आ दीन विनाइ के । एहि प्रवाहके दौध के असमय छैक ।

पोखे दिनमे 'महानगर' मेक भइ गेल । जेवन स्वामीमे उदयनाम करवा पाय नाइ छैक से अत्र प्रत्यक्ष ह भव भागव । बुद्धीवादी निरव्यक्तवादि प्रथम भागि गयोह । परिनाइत आ वेदाइत नासपुकारक योजना समाप्त भइ गयोह । भरतृत्वानाजी आ अत्रावृत्त के समावेशन ए उदय कथन न नीक । न त पाली न ग्राह्य मर चहुँप न गयोह । नृपति आ बुद्धीवादी के दौध के ग्राह्य न गयोह ।

दुइए वर्षमे गामक कामकाज भइ गेल । नेतृत्व संस्थाक पहिने आयक न पुनर्गठन बीचरीक भावहु छैक मे भइले करव न गयोह । वेदाइत नेती नलक काज सीधम सगलीह और नविशवाइतक पुनर्गठनके मे आ कइ मावय गगनीह ।

शान्तिविका नारी समाजक उदयि देखि पुनर्गठन भइ उठलीह । एतना काम विनमे एहन करिह । हुनका आसारीत सकलता भेटम छैनहि । जेना ककरो रोपल कथन बुद्धि नयेमे करव भागि आइक, तेने जानवमे उरक हृदय भरि मेकहि । परन्तु आइ जो अपन उद्यानके छोड़ि कइ आ रहल छैक । हुनक सोसर हमाइत मइकी भइ गेल छैक ।

आइ विमला देवी गाममे विद्या भइ रहल छैक । साहि उपनयनमे सभा आयोजित अछि । पुनर्गठन वरी महिलाक समग्र देवतामे उदय अछि । अत्रावृत्त-नृपतिता समक अछिमे और भइत अछि । जना काले वेदी मायुर आ रहि हो । अत्रावृत्त मन्त्रिदरमे प्रतिभाक विमलता भइ रहल हो । नवभुवली सभ विमला देवीके कृपक माता पहिरीनहि । मुमक सोधम मानव देविय । बुद्ध मन्त्रि-दुर्गलत नव आजीवाव वेन गइ । बुद्धागण ओइ छै वेनविमल । सभमे नव बुद्ध छैलीह पवित्रकीक । तसमही । ओ कहलछिह—देवी, सोसर गण हमरा स कनि कहियो नहि बिसरव । ओ न निपट छै । से ओ अ वि कइ सोनि देनह । अत्रावृत्त सोसर कल्याण करबुह ।

विमला देवी अत्यन्त नम्रता ओ शायीनताक उत्तर देनहि—हम अही लोकनिक बेटी बिबहु । सेवा करव हमर भाग्य छैक । हम देवता अपना कार्यक गालम नैलहु अछि । एहिमे हमर बड़ा कोम । सकलताक ओष अही लोकनिके

अछि वे सभ गोटा सिखी कइ हमरा गहयोग वेत मेनहु । अहीलोकनि हमरा जे स्नेह प्रदान कौनहु से हम जीवन भरि स्मरण राखव । एहि अधिकार पर हम एक वस्तु नैत छी । एहि गाममे जे ज्योति जाएल अछि तकरा भिन्नय नहि वेन । ईह हमर सभसे बड़का विवाद छैक ।

लोकक अछि भरि ऐकैक । भगवान् करव पर परमे एहन विमला भइ बेटी होइ । गामक बेटी पुनर्गठन विमलाक आरती बतारव सगलीह । एक सुवर्णी हारमोनिम पर सगलाउमि उठोयहि ।

हाहीकाल समयमे नै उठलह अत्रावृत्त । बीकू बाबूक बड़का भाव, ज आइ छीम वर्ष पर कामकाजमे आबि रहल छैक । स्त्री पुनर्गठन एहन अत्यन्त अत्यन्त गम्भीर देखि ओ क्षुब्ध भइ किछु काल अछि फाड़ि सफत रहलह । एहिठाम गता भइली-वक किरिक मायम अछि । पुनर्गठन अछि-कान टोएनहि जे कतहु घोला त मे भइ रहल अछि । पौर जवन मथ टोकलहि जे कतहु गहव छ ने अछि । सभमे पौष्ट के तौर कौनहि—की हो, बुद्धुत छइ हो ? सोखे गाम बताइ भइ वेन अछि कि हमही बताइ भइ बल छी ।

बुद्धुत पर छैन कहलछिह—ताना एकी एअर बजिपोक बुनि । आमे गाम समस्त मेक अछि ।

## तिरहुताम

(ई कथा 'बैदेही' (जुलाइ, १९६६) में छपल आ तत्समया  
चर्चरी में संयुक्तीत भेल।

अब आनीय संस्कारमे बहुत रास एहन वस्तु अछि, जे  
आधुनिक समयमे अप्रामाणिक आ निरर्थक से भेए गेल अछि,  
हमरा सबक बहुतआयल रहबाक प्रमाणो भगवत आ संकेत अछि।  
ई कथा ओहन निरर्थक होइत परम्परागत प्रवृत्ति पर समझासि  
कह बाँट करैत अछि, आ पाठकके सोचबाक लेल एकटा ठोस  
प्रश्न कहैत अछि। जवन संवेगमे बहुत स्पष्ट आ सघाट होइत  
जावा मनोरंजन विधिति सबसँ साक्षात्कार करबैत जगतमे पाठकक  
सोचके उकसावैत अछि।)

हमरा पुनिदाँ जैबाक छम। परन्तु जे गाड़ी ७ बजे साँझमे कटिहार  
पहुँचबाक रहल से पहुँचल ६ बजे रातिमे। परिणाम ई भेल जे कनेकसभ छति  
भेल। जब भोरमे ५ बजे गाड़ी भेटल। राति भरि एतलि स्थानमे रहल पकल।  
अगला बेडिगसभक जाट भेलहुँ। कुनी म बघर टुक-टिफिन सभक पाछा पस  
जलल।

एतबहिमे एक निजामकाय एवमम हमरा ठिकिया कहलकम सचलाह  
ओ हमर नाम पूछलन्हि और पुनिदाँ जैबाक जात बुझि जवना आदमीके हुकुम  
देसन्हि—रौ भर्तगवा, तर्क की छै? कुसीसे सभटा वस्तु छानि म।

हमरा बकल-बकर मुँह तकैत देखि ओ बकलाह—अपने हमर सामग्री  
बिबहुँ। अत्येक भाग ओ हमर पीछ हुनू साक्षात बहूँ। तखन हमरा कटिहारमे  
बसैत अपने भरि राति बेडिगसभमे सुती, ई कहहु होय।

हम सभ अनुभव-विमल कँस, परन्तु सब टा व्यर्थ भेल। ओ कहल  
भगलाह—हम कटिहारमे ठीकेवारी करै छी। अपना मनाम बनि रहल अछि  
बकल सभसँ अपनेक परावर्तन भेल अछि। अब पत्रिका ओहि स्थानमे पत्रिका  
विधिका।

## तिरहुताम

१२

आ पुनः सविहार पूर्व स्वरमे जवना आदमीके आदेश देसन्हि। आदमीको  
तेहन अवस्थेत छम जे सुरत सभटा वस्तुजात उठा कऽ काँच तर पजिया लेलक

हमरा प्रतिकार करबाक क्षति कूटित भऽ गेल। तथापि जिमस स्पर्  
कहन्हि—हूँ—अ.रागरे पाँच बजे हुँस पकलबाक अछि तँ एहिठाम बेडिगसभमे—

ओ जाड कटैत बकलाह—राम-राम। एहिठाम बेडिगसभमे रहल। ई  
हमरा अछैन नहि भऽ सकीत अछि। पाँच बजेक कोन कदा, हूँ खारिह बजे गाड़ी  
पर जैबा देस।

हम पुछलन्हि—अपने कतबा दूर पर रहे छी।

ओ बकलाह—दूर किछु नहि। एहिठामसँ दू डेग छै। जेहिठाम पापसि  
जिड १२२ भेटल। निदिनास भऽ अपना मनीषासँ सुतथ। और एहिठाम कटिहारमे  
आमि कऽ जला गाड़ी छुट्टि जायत। भाटीक हाथे रोकि लेवेक।

हमरा स्वरमे भेल आदेश-विशेष भनम रहैत जे पुन किछु पूछल उचैत  
सहि कुँस पद ओ आदमीके हुकुम देसन्हि—गाँ आनी यदि कऽ ठीक कर गय  
हम दिनका मेले अबै छिएन्ह।

आ आदमी आनी रहि गेल और हम हुनका पाछा-पाछा चलल गालहुँ।  
अबम एक बड़ साफला करीब चलल भऽ गेल तखन हम विमल पूर्वक कहलन्हि—  
एकटा विश्वास कऽ भेल जाइत म नीक होइत।

आ मनमान आगम पदुँसि भेलहुँ। दूर रहिमेक म हम स्थान पर रिक्का  
मलि कऽ गितहुँ।

जाब हम की जात। अत्येक हुनक पयानुसार कथम सभलहुँ। जखन पूना  
क हुनक पयान सभल ओ आदमीसभ देसल भगलाह—बैत जे जगिनी  
मे भेल अपन भगवत अछि। यद्य  
मे पोरा हुनू।

अभिलोभना हमरा लोकनि एक समूह-समूह गाँमे प्रवेश जैम। ओ  
बकलाह—आह जाबि मेनहुँ। कनेक बचा कऽ चलल जाय।

हम टाँच नमि कऽ हमल स सामने मेम पदुँस छैक। यदि एको डेग आगी  
बाकलहुँ त ओहि साँझमे पसि जेतहुँ।

परभंग बकलाह—बकल एहन बनिवे रहल अछि। दू कोठरी पर एहन  
पेरल छैक हुँ टा पर बीकी छैक, मानस-धरक दोषार जावा नीपार भेल छैक ओह  
एहिठाम पंचायतक मेम भेल भेल छैक।

हम हुनका पाकी-पाकी साधने टपेत, ईद-गुल्लि कीर नर कऽ शायू घूमन  
हेरी नानक, ओहिठाम पहुँचलहुँ जहाँ राज मिस्सी भीड़ ठाढ़ कर्म छल । बँह  
मनान सनानक प्रवेश द्वार छल । हमरा लोकनि योगक तर नाथ निधुरा भीतर  
कोठनीमे गलहुँ जे एसन तैयार होइत छल । तफा पार कय हम मभ एक काठनीमे  
देनहुँ नाहिमे कथे पीटक हेतु रोड़ा-गिट्टी रिछ ओल छलक । एकटा खोली आहुमे  
पावत छलक । ताही पर अल्लाहोन बोलाओन छल । एक कोठम गानटन मखिम  
प्रकाशत जनि रहल छल ।

गुहपति जयना भावनीकेँ सोर कँसमिह—रौ मनगवा, पानि जा ।

मनगवा एक बाटी पानि नऽ कऽ पहुँचल । भीषरीकी कहलबिह—रौ,  
सोटा जाय, जड़िया जाय, भजपोछा जाय, पीर बोलावहुन ।

मनगवा बोड़ि कऽ सोटा भजपोछा लऽ जनक । भीषरीकी कहलबिह—रौ  
अकि या कतय छोक ।

मनगवा कहलकन्ह—अजियामे त पानि चढ़ल छैक ।

भीषरीकी कहलबिह—तखन एकटा पारिष लऽ जाय । ई कुटुम्ब बिकाह ।  
एतही तहि बुझैत छीक ।

हुनकर इबारा बसितहि मनगवा हमरा हाथसँ लोटा झूमि लेलक । ओकरा  
बारी बेलाएक पैह छलक । हेतम सटकासँ हमर एका नर भीषि कऽ उठो छल जे  
हम तलमगलत-तलमगलत लगल लगलहुँ । परन्तु लगमे पाया छलक, ताहिसे  
बोचि गेलहुँ । मनगवा हमर तरबा देवा राखऽ लगल जेना गईस घोंडाकेँ रगवैत  
अछि । हमरा बारीरक तनुलत राखव कठिन भऽ रहल छल । परन्तु ओहि हर-  
कुटकेँ तकर कोन परबहि । ओ बहुत दिनपर भीका पाबि अवय कलाक प्रदर्शन  
कऽ रहल छल ।

प्रायः वसु मिनटमे अखन भीषरीसँ कूटकाग भेटय तखन हम कानपर जनव  
पढ़ा लोटा हाथमे लेल । भीषरीकी बजलहुँ—जैलामा एसन तहि जनक अछि  
ता ओहि पगेबाक हेरी लऽ एकटा टाट ठाढ़ करबा देखिएक अछि । रौ मनगवा  
सोटा लऽ जाहुन ।

मनगवा फेर हमरा हाथसँ लोटा छिनमक ओर हठवरा लऽ हमरा पहुँचा कऽ  
किरि जायल । हम अन्तरमे टोष लऽ कऽ देखनिहैक तँ हुँ टा ईद सैमाओल रहैक ।  
सकरा बीचमे प्रायः केही भूय पाकल कठहर बा कऽ लही किरने रहल । जेहन नू भी-  
बाक भनकैत छल जे नाक बेज कठिन । परन्तु एहनो स्थितिमे मोसर साधे की

छल । लाना रउठाक इधामे अति भेटय, हाथमे रखने रहलहुँ । ता अन्धकारमे  
टाटक नीचन मिष्ट चमकि छटक टोष लऽ कऽ देखन छे त एकटा बुझाएन  
मनुष्यन मुँह बोले उकैत अछि । हम टोष-लोटा जेतहि पढ़ैमहुँ ।

बोम्हर जवाय सामु-लोमिया जेने ठाढ़ छल । सवाबार बुधि भाभल—  
एहिठाम पगेबाक उरीमे सनि एहमम करैत छैक । हुँ क ठरीमे कान्हिए राति बँह  
हाथक कैबूजा बहराएन रहैक ।

जाय सिवाम हट देवताकेँ स्मरण करबाक उपाये की छल ।

हम एही गुम भूमि ओकीपर एहन छलहुँ कि सोभरा कोठरीसँ सब सुनाइ  
पड़ल—

—गाय, दाहि, आनक तरकारी, परीरक भुजिया आर जायक चटनी भेल  
अछि

—अरे एतवा त सब दिन होइत अछि । ई कुटुम्ब देवता ने आवि गेल छल ।

—तखन तिहोरी पेहो छानि दैत छिएन्ह ।

—कम-सँ-कम सात टा तरकारी होमय आहिऐन्ह । बू-सीम प्रकारक तरबो  
कऽ बिजीन्ह

—एसन मोटा, कबीमा बो सिनकोर तरि दैत छिएन्ह । सात टा पुरि  
जैतन्ह ।

एक बाटी मे वस देवैन्ह । एक टा मे बही । एक टा मे खोवा । दाहिज  
बाटी सवा कऽ प्यारह टा पुरि जैतन्ह ।

—एतेक बाटी कहाँ सँ जाओत । घरमे त पारिष टा अछि ।

—सात टा बाटी मेस सँ मँगवा लियऽ ।

—मेस त जाइ वगै लऽ लेल हेतैक ।

तखन मनगवा केँ पठिअके । कीतल ता केँ उठा देलैन्ह । हमर नम  
कहुँन्ह । ओम्हरे हनुमाइक शकानसँ बही मधुर सेहो नेने आओत । पान सेहो  
मेस लियऽ । ओआक हेतु कम भँ कम एक सेर दूध कलहुँ ऊपर करय पड़ल ।

—एतेक राति कऽ भूष कवय भेटल ।

—हुँदुमवाली जाय । एक रातिक हेतु ऐलाह अछि । खोवा नहि दैतन्ह त  
एतने की कहलहुँ । एक घात कऽ । मनगवाकेँ कहलोक जे भोतकी मोदिआइन-  
बाभी भावकेँ बुझि कऽ नेने जाओत । जतने होइक ।

—परन्तु ओ त नरकाहि छैक, नबार नारैक ।

—ये तो हो। ई कुछ होने काम छेदेने। मर्दानक बालन त करहि पड़त। हम बचतहि जा रहन छी।

ई बातें वाप सुनितहि हमरा आकाशक तारा सुनय मान। साहसपूर्वक सोच केनियेह—चौधरी जी, कनेक सुनत बाबो।

चौधरी जी आबि कऽ उचिटी करन लगलाह—आनेक भोजन से किमि चियतम भऽ गेल। कारण से खाइ अवन ताम थिया गेलक। दोसर टाम से प्रथम प्रत्यक्ष भऽ रहन अछि।

हम कहियेह—बूच छोकि देल बाबो। हमरा पचिटी नहि अछि।

जो बजलाह—मला कहत। ई किन्हतु भऽ सकै अछि। अपने एक दिन हेतु संयोग से आबि भेज छी।

हम प्रथम कहियेह—हमरा आमाय उखल छय। दूध अन्नकार बरन।

जो बजलाह—एके रसी खोला मुँह से कऽ देखैक। विधि भऽ जेतैक। ते अपने कहिया भेटैक।

ई कहैत तो तेजी से नहरा गेलाह।

हम मनमे कहक—आइए धमका विधि पूरा किऽ। कनेकी क सरि गिरावू। फेर के जाने कहिया अवसर भेटैक।

पक्षी देखन एगारह बाजि रहल अछि। हम मन मारि कऽ पड़ि रहलहुँ।

अन्त नितमेर सुनन रही तखन चौधरी जी आबि कऽ उठोनहि-उठन जाय भोजन प्रस्तुत अछि।

हम आबि निर्जित छलहुँ। पक्षीक दुनू छूट एक पर रहय। और खोच भेटत न चौधरीजी जगन हाथक लोटा मेले छऽ। हमरा कि हे भयन। हाथे मे कि डारय नहि देखिह। हमरा आसन पर नैसाइ जरेन पक्षा भऽ काटि।

कहियेह—अपनहुँ संग देल बाब।

जो बजलाह—हम पछाँ कऽ भोजन करब।

हम देखल, तेस आदम्बरपूर्वक संचार जावल अछि। एगारह छ माछी मक्का बारमे बेंक छेर जाउरक मास परचल अछि।

हम निवेदन कहियेह—हम एकर चरबाँखो नहि खा सकय। एकटा काज मीठाखोस जाय। हम अपना योग्य राखि बाँकी बाहर कऽ देखैक।

परन्तु जो कबमनि राखी नहि जेनाह। बजलाह—ई त परदेसमे कि

मदि भऽ सकय। भर रहितव त बलबल किछु ओरिजाओम होइत यदि एहमे कपले छोकि देखैक त हमर बाबाय।

एहना रिश्तमे की कैय बाब ? हमरा जनवा सकक सागत छतवा भोजन कय पूर नैकय लगलहुँ। लाभ ओ कसि कऽ हमर हाथ छऽ लेनेह-ई की कबे छियैक अपने। एतत त केवन भेजे टा छोटा भेल अछि। अपने भोजन कहीं केन लऽ सतहा त पड़ले अछि। और भात सुनिषीक। अन्न प्रत्यक्ष छैक। एगारह नहि करिबैक।

जे बात हमरा कहक बाबो ते बेंक कहि देखिह। आब हम की कहै ? हम केक ? न और उठै सन हूँ। आ बजलाह—वही गह छाड़वाक बाबो। उभतर सनिषीक।

हम मन-कोनो सरहे जोतवा वहीके सधाअल। यन्त्र हूँ पानि पिबय भोजनहुँ गवत जो काम जकाँ जपति कऽ जोतवा दही और हमरा आमायि बजलि बजलहुँ।

हमरा आधिक आगाँ अन्हार भऽ गेल। ई छहजमे पिक छोड़यबला कसि नहि छऽ। हम मनमेर स्वरसे कहियेह—बाब ! हूँ परेन अछि। क्षमा कऽ जाइ।

जो सराय—एहना कतहु क्षमा होइ ? दही त पाक होइत अछि।

हम सुनय कहियेह—कनेक भोज भोग दिवऽ।

जो बजलाह—मला कहत, से कि घरमे खीची नहि छैक ? ही खीची दूत।

हम आमाकार मनमेर एक तय खीची दही पर छोड़ि देखिह हमरा मन-क किछ ते पारय जे की करी। पालन जाल ते पिना जैन उपय नैक। एहना तिम समे उठि कऽ पड़ाएन समस नहि। बजला कहियेह वही संग कऽ भाठय लगलहुँ।

चौधरी बजलाह—खोला प्रयुक्त की करै छी ? स्वागत खीचीक।

हम जाम अवधार कऽ कोनहुना छमटा दही उवरस्य कय अहिना उठय बाइ छे त परवैषा खेजिन हमर गह।—आनेक परिश्रमसे खोजा बमल अछि ते अपने बुरबोटा नहि कहियेह।

हमरा प्राण जंठय होमक बाबल। जान हम खोला की बाब ? जोए हमर कऽ बाबल।



परन्तु ओ दस में भल नहि भेलाह । बरलाह—मायाक कहल जनावर जे भल जेन । ई सभटा सभ पबल ।

ई कहि लोकाक बड़ा ओ हमरा बारीमे सलटा देखिह । हमरा मनमे आएल जे आव माकारि कऽ काजी । परन्तु के मुनेये । परबेबाक एतन सभ क्रम जे भेला नहि जाएव त अवबेहती कोरी सग कऽ सभाए जाएत । बाहिर खुदुख छो लि छटा ?

हम भनिदानक बकरा लकी भाष्य भऽ छाया खुदुख देख जवलाह । अरब कोमे बुझि पड़व जे आव माकि भऽ जाएत, आव माकि भऽ जाएत ।

तामत् पुरुषति एक बारी भदुर आनि हमरा आनिमे उलोति देखिह । बबलाह—आब बचुरेव समापयेत ।

‘हम देखलहुं जे आव समापयेत’ क अवे अपभाके ‘समापयेत’ । एकदिना राप सुभरा जगगोलाक काज करत ईत जाठ टा अछि । जाह हमर आरिह एहि नवका मकाममें छल ।

हम भगवानके गोहराहव भयलहुं । ता एकटा बुझि फुरि भेल । हम बबलाह—आब धरमे कोनो पापक हो त ...

एतना सुभितहि तीन गीटा दोड़ि कऽ अरार दिनु गेलाह । तामत् हम सभ टा रसगुला पुनबास बिड़कीक बाहर जेकि देल ।

गुरुपति सधमास्कर भऽ कऽ ऐलाह त मधुरके निखेय देखि सन्तोषक बलाह छोड़लहि । बबलाह—जियत, आव एहि जोरपर बोलेक आम कटहर मेहो भऽ जाय । हो, कहाँ नेभह ?

परन्तु मावत् कोर भदुर सभ कायव-आनय ता हम हाव पैर साहि छठि जेव छलहुं । अस्तु । गुरुपति हमरा नुतनाक प्रबन्ध काय स्वयं सोजन करय गेलाह ।

हमर जी अकमक रहल । बड़ी कातधरि कान्तवक करत रहलहुं । पाहल भूमि बिहल जेबाक बेग भूति पड़व, परन्तु मय-भयमे बहुरेबाक साहस नहि पड़ल । अम पचासक हेतु कोठरीमे एम्बरसे ओम्बर रहलव लगलहुं । हु बारि घेर लबलमास्कर का कऽ पति पिलहुं । ई सभ करत भरेत बड़ाव जाति भेल । तखन आ कऽ जाति आगत । अन्तर एक निद्रा भूति भऽ उठलहुं त देखल छी जे ए ठे बारि जाति रहल अछि ।

केवल जाध पंटा दुनमे बेरी अछि जोर स्टेसन हूर । आव अन्दी बिहा देबाक पाही ।

परन्तु मकाममे ककरो आहुति नहि भूति पड़ल । हम गर्व केल—पौयरीजी । बाबाजी । मरनवा । परन्तु कोनो उत्तर नहि भेटल । हम पाक काठ खीज कऽ देखल । ककरो पला नहि ।

जगला रिक्काक खोजमे बिदा भेलहुं । परन्तु ओहिठाम एकोटा रिक्का, टपटप का कुनो नहि भेटल । खाली रहितहुं त पैदल गटक कऽ पति भेलहुं । परन्तु एतना समाव सऽ कऽ एतेक दूर कोना जाह ?

१. एहि वेद्येवेद्यमे पड़ल छलहुं कि नावाजी देखाह पड़लाह । हमरे कायक नहिया । ओ नावाजी ?

२. बबलाह—मायिक कहलहुं अछि जे बिना चाह पिछोने नहि जाय देखेह ने आम जोड़य आ रहल जे ।

३. कावेर—हमरा हुन पकड़बाक अछि अछि । बन्दी से रिक्का आनि राव ।

४. बबलाह—एतना मगमे सवारी नहि भेटल । हम बबलाह—ममगला कतय अछि । ओकरे कहिपीक पहुँचा देत ।

५. बबलाह—ओ दुन कावऽ मेव अछि । अहीना चाह सातिर ।

हम पुछलहुं—एहिठाम कुनो भेटत ?

६. बबलाह—एकटा एकोटा नहि भेटल, ओ बर जम मधुर अवे अछि । तखन जनेक बाजी ।

७. हम पुछलहुं—मायिक कहाँ छयि ?

८. ओ बबलाह—भहो क सातिर इन्जिनिकर साहेबसे मोटर भेसनी करय जेव छल ।

आब एतना रिक्कामे हम भी कल । नुरभाव ठाढ़ भऽ कऽ पकीक प्रगति देखय गेलहुं । निमटवला मुई कपल ८ पर साहि गेल । आब केवल २० निमट समय अछि । ई गाड़ी लुटि जाएत त फेर १२ बजे घरि कोनो हुन नहि, तखन त आमाक समझ घरि पुनिगी पहुँचिओ नहि सकत ।

मेह सोचैत छलहुं कि मरनवा दूध भऽ कऽ जवत भूतिगोबर भेल । हम पुछलहुं—ओ, स्टेसन पहुँचा देत ।

९. ओ बबलाह—मायिक हवागाड़ी भऽ कऽ जवत हुलाह । वेह स्टेसन पहुँचा देत ।

पीने पीच वने जीवरीजी मोड़ने मेने पहुँचयाह । हमरा कतहुँसे जो मे जी  
जाएल । हम मर्यादाके कह्यो—आवाज साद ।  
जीवरीजी बजलाह—आवाज तेकर रह । एसन १५ मिनट धीरी छैक । १  
मिनटमे पहुँचि जाएल । आवाज जाहूँ जीवरीजी सिध । भाड़ी एकदुआक ओर हमरा  
ओर ।

हमर इच्छा नहिओ रनेह हुनका डरे जल्दी-जल्दी लखे जाय घरेल मगलहुँ  
पामु जो अस्वस्त भव पूजि-पूजि कऽ चुनकी सेटय मगलाह । तखन गिरिवरता-  
पूवक मर्यादाके समान आदक आदेश देलखिह । भाड़ी कोहमरक पर भाड़ी नहि-  
महुँ डेग डेग बजल ।

एहन जीवरीजी देखि मनेमम त बहुत ओम भेल । किन्तु भाजू की ?

जीवरीजी के कह्यो—हम पकी कानमे लैयार छी :

जो बजलाह—एहि ठामसे दू डंग स्टेसन । हम सभ छ दिनमे चारि बेर भऽ  
जबे छी । परमपु अपने दाहि एतय दूरमे जाकि गेलहुँ । तेँ हम जनरोज उठि नऽ  
गाडीक मर्यादाके निकसि गेलहुँ ।

हम कह्यो—कान जाज छीक ? हम रिमका न पयि जइह ।

जो बजलाह—भला कहु त । तखन दोस्तक गाडी रहन कोन फल । आब  
एहिने विशेष बाहुन के भेटल ।

जखन मोटर स्टार्ट भेल त पीच मजबाबे केवल पीच मिनट बीकी गेल ।  
हमर इच्छा देखि जीवरीजी बजलाह—अपने कोनोचिन्ता नहि कऽ ।  
कटिहार स्टेसनमे भाड़ी छूटि जाएल त हम साथ सर्वसे एहिठाम ठीकवारी कियेक  
करैत छी ?

हम पकी दिस भाकन छाडि गेल । जा कटिहार स्टेसन पर मोटर पहुँचल  
पहुँचल ता हुँन एक-एक भुली छोड़ैत पीचकान के दार कए चुनल छल ।

जीवरीजी बजलाह—आह । केवल दू मिनटमे भाड़ी महाराजी छूटि गेलीह ।  
स्टेशन पर प्रविष्टिभेल त देखिनिह त कोना छुने छल ।

आब लखिपुर हम की लोका दिपकी मऽ ? कुली के कह्यो—वेदिकम  
छि पलो ।

जीवरीजी बजलाह—आह त १२ बजेसे पहिने अपने के कोनो दुँस नहि  
भेटल । एतय काल स्टेशन पर वेगि कऽ की करल । पालन बाजी, जीवरीजी  
मनाल कोनन दिशाम कए दारवाजी दुँसरे दिशाम कए आकल ।

पुनः कुली के बटेक कह्यो—पी, समान घेर मोटरमे सर ।

आब हमरा नहि रहि गेल । जीवरीजीक चरण पर चढ़ैत कह्यो—आब  
हमरा सर देवा केन जाओ । हमर आल भक्ति देख जाओ । जबने हमरा हेतु बऽ  
कऽ उठाओल । हम कतहुँसे भाँरत विने गेल छी । आब ओर ओर पड़त त  
विच कऽ मरि जाएल ।

एतय कह्यो—कह्यो हमरा आलिने ओर मरि जाएल । जीवरीजी एक क्षण  
खुँच रहल । पुनः विरक्तिपूर्ण दृष्टि से हमरा दिख लकल बजलाह—वेद, त  
बात । हम सम्बन्धी जानि जाही पर भे अपन अधिकार मूलत से समर्पण केम ।

ई कहि जो विमा मसरकारे मने मोटर पर बँसलाह ओर फुरै पऽ दिवा भऽ  
गेल ।

हम किछु काल किमर्त्यविमूह भऽ वेदिकममे घेसल रहलहुँ । तदुपरान्त  
ई कथा निरुद्ध लखलहुँ ।

एतय एतय वेदिकममे ई कथा समाप्त कए हम सोचि रहल छी भे  
जीवरीजीके हमरा नऽ गेने केन ताम धेयह ? ओर हमरे कोन लाभ भेल ? उभय  
पक्षके निष्पत्ति करत ओ समुद्धा । अन्तमे मुक्तछ सेहो छूटि गेल । एहिसे कतहुँ  
लोक होइत जे रागिभ रसहि वेदिकममे खापी कऽ आरामसे मृगिमहुँ । भोरे  
हुँने एतय १२ बजे धरि पणिमी पहुँचि गेल रहलहुँ । हमरे सुविधा होइत,  
हुँको तरहूँ बहि करय बहिलह । समानजस्य सेहो कयन रहैत । ककरो कष्ट  
छि होइत । सर्वोदयमना विद्यालय चरितार्थ होइत । परमपु 'आचार' मे सति  
जाति गेने 'अत्मचार' सति भेल । साही छार हमरो कानय पड़ल ओर हुँको  
हानहि पड़ल होइत ।

हम पुछ छी, एहन तिरहुतामस कोन कल ?





गणित चित्त में पुछाये—कोनी लोक त तहि लोकसाज भेजिक ?

पूटर०—नहि । लोक नहि सरल । किएक व.

हम एक वड निवास छोड़त । छैर, लोक त बाँचल । चीज-वस्तु आन  
बचनेक त केर मड भेलिक । परन्तु जो मुग्धा... । ई सोचैत देख सिहरि उठत  
पुछाये—की ? ई आनि कीना लगनेक ?

पूटर कका बजलाह—अहाँक नूनककाक गणितसाज 'बिन जे दूध ओठेक  
तेलेक लकड़े आनि...

ई सुनैत हमरा आशिक भागी बन्दार मड गेल । ऐ ! आब नूनकरा के नहि  
देखबैत ? हे भगवान ! हम केहल पापी भेलहुँ ।

हमरा आशिक पोछैत देखि पूटर कका बजलाह—एना केओ बधीर होबए  
अनम-मरण त लोक के लगजे रहैत छैक । एहि संसारके केओ बीचम आयल अछि ।

हम शिखर-शिखरत पुछायेत—हमका की भेल छलैत ?

पूटर०—कोनी लेहन रोग व्याधि त गहि छलैत । अहाँक भीजीक एकोपि  
पाने रहति, तहि बिन पेठमै लेहन पई उठलैत जे...

-हाय ! हाय ! भीजी पहिनुहि बिदा मड भेलैत ! जाब बैगनी पोयक ओ  
गाडी के पहिरत ?

हम कर्कशककिक कड कटव भयलहुँ । पूटर कका बज बजलैत—एना  
केवा भलाह जाम ? ओ मझनी छलीह । जाब भेलैत । जे दिन शिखरति से  
कटल होइत रह ।

हमरा भुँ पर बिस्मयवाचक लिहल देख पूटर कका बजलाह—ओ ग  
ने भिषक के गैर कहिये नै

ओ गी धर ! नै गैर कहिये । हम मुक्की पाहि कारण मजबूर  
बैला जामे दू बिदा मजबूर । ई मुग्धा के के बल बैलैक ? कोना गेल ?

हमरा भुँ पर बिस्मयवाचक लिहल देख पूटर कका बजलाह—ओ ग  
ने भिषक के गैर कहिये नै

हमरा भुँ पर बिस्मयवाचक लिहल देख पूटर कका बजलाह—ओ ग  
ने भिषक के गैर कहिये नै

हमरा भुँ पर बिस्मयवाचक लिहल देख पूटर कका बजलाह—ओ ग  
ने भिषक के गैर कहिये नै

ही देखव ? संसारे उजड़ि गेल । ते ओ राज मे ओ जयिमा । आब के मोटर पावि  
न चल ? हे भाई देखि कड खुली होत ? एकटा पर मोहक अभिमान लगबैक ?

ताकत पायक स्टेमन पहुँचि गेल—समस्तीपुर जंक्शन । हम छापी के बस  
कड बचलहुँ—पूटर कका, हम न आब सोछे हरिहर पयिम । सम्झानी के शैया  
देता में कोन काज ? अहाँ ई मोटरी मड बिदा ओर सम्झाने दूदका जोर गिक  
जिमिल ब्रह्म-भोजन करा देल कबैत ।

पूटर कका पुनः हमरा बिस बझीर बूझि तँ उलझिह जेना किछु मजबूर  
होबि । पुनः बजलाह—हँ छीक, आब उतरह ।

हम अनुप्राप्त करैत सवलिगेह—अहाँ के एकोरसी दया तहि होइत अछि ?  
हमर मर उजड़ि गेल 'सर्वेण मड भेलहुँ' जार अहाँक जेम घन मन । जाउ हमार  
जे जीव-बाघर अछि मे अहाँ जोति कड बागव ।

परन्तु पूटर कका पर एको रसी प्रभाव नहि बजलैत । ओ तमाकूक मिट्टी  
ककैत हमरा हाथ छड नीचा डुवारव बजलाह । हम हाथ मजबूर बजलिगेह देख  
पूटर कका । हम कहि देन छी ! अजरवली गृहि कक । हम अपना होशमे  
नहि छी ।

पूटर कका बजलाह—तो वैंह लोकान्त रहि पैलाह । एअन छरि नैनमनि नहि  
छुटलैत अछि । ताँडर मर-हार लोक-वैद मर ओहिना जामनि छीह । जनन  
नरह ।

हम कहलिऐह—पूटर कका ! परमाक भूमि । आब हम बच्चा नहि छी ।  
पूटर०—तोरा निश्वास नहि होइत छीह त चलि कड देखि सैह ।

हम न मुग्धा जीविने अछि ?

पूटर०—हँ ।

हम—जीव भैग ?

पूटर०—ओही ।

हम—भीजी ?

पूटर०—ओही ।

हम—आ मुक्कका ?

पूटर०—कूब मरत छलैत ।

हम—और मर ?

पूटर०—जैहां बाँचल छैह ।

हम—तब दूदानी नहि जाम ?

घूटर०—महि ।

हम—और बोली ?

घूटर०—बूढ़ हिनहिनाइत सीह ।

हम—तबन अही एतेक बना कऽ किएक कहलहु ?

घूटर०—हाँ बरौनीमे हम देखल जे तोरा हिचकी उठल सीह । ओना बन्द गति होइवीह । तँ हम एतेक काग धरि तेहने तेहने बान करैत ऐपिऔह जाहि सँ खूब आलस भऽ जाओ । ई हिचकीक टोटमा बिकीक । वहाँ छह नहि आब हिचकी कहाँ गेलीह ?

हमरा भक् दऽ प्राण आएल । घूटर कथाक पैर पर बसैत कहनिऐह—घन्या छी महाराज ! हमर प्राण छुटैत छल जार वहाँ टोटमा करैत छलहु । तेहने बिकिरा करय लगलहु जे हमर प्राण आब लागल ? बाप-रे-बाप ! ओतेक अंधुन बान सभ कोना फुरल ? हमरा स एखन धरि देह कापि रहल अछि ।

घूटर०—हाँ करयहुक ? हुनका मोकनिक जापुरा और बदि गेलैह । हिचकी टोटमा गहिना होइत छैक ।

## तीर्थयात्रा

[ ई कथा सर्वप्रथम एही सीपंकसे प्रकाशित संग्रहमे छल जा तदुपरान्त 'चर्चरोमे' संगृहीत भेल । ]

एकटा बल संगठित कऽ देखाटन करबाक अनुभवक भावजसे अपन समाजमे स्वागत कछि सभपर कथा भट्टार करैत अछि । बलक सदस्य चाहे जो जलोपीनाब होब वा मुसाइमासा, गूजर बाबा वा मालकाकी बड़की बाबा वा सहजोपीसी सभ एकटा 'ठाइप' छपि जे कोनो ने कोनो एहन प्रभुतिक प्रतिनिधित्व करैत छनि, माहिपर ओट करल कथान अभिप्रेत छैक । कथाक सभ चरित्र तँ 'द्विचित्र' रूपसे मनोरंजक अछि । हास्य-ध्यापक सग-संग स्थितिक बिडम्बना पर सोच-सकोरंजक संग-संग शिक्षा-कथामे संग-संग चलैत अछि । ]

एकबेर दलकल म जे दुष्य देखल मे अखन अखिमे नाहि रहल अछि । बोटे-चिकन गार्डन मे गेल १२ । 'जलान गटराके' देखि मनमे एक भावना छल । 'ए गटराके' कवन गटरा-प्रसाधा फुटल छैक ! मदिना ई रागद गमाव अछि । परन्तु यदि गति सामान्य बातके ओक समन राखि सकैत ।

हम ई सोचिते रही ता एकटा एहन सुन्दर दृश्य उपस्थित भेल जे अलावधि मृदुपटल पर अंकित अछि ।

सामने भीषममे इन्धिरा घाम २० किछु लोक गोलाकार गति बना कय बैसल छल । आदि लोगमे आब-अवृत्तनिता गभ निधिकार भावमे सम्मिलित छल । म्नी पुष्पक गोले भेद भाव अछि । मभक आगामे पलल ओ पाठिक बहकामे लल गहन छल । २० गुवनी अन्तर्गत चुमकीमे पूड़ी परसैत छनि । एक किछोरी

। फुर्तीमे लफकारी प्रसैत छनि । देखैत-देखैत सभक पल नीन्ने जेबा, पल्ला ओ मधुर मे भरि गेल । सभ केओ एक संग मुक्तिपूजक योगन कैलन्हि ।

बल केप भेला उन्नत किछु अयुधक पलल जो बहका सभ उडा कय कूहाक होरी भेला ऐसाह । मेशम पूर्ववत् साफ भऽ गेल । जेना ओहिठाम किछु भेले नहि

ई सभ सिनमाक चित्र जका भऽ गेल ।





बाकाभावाट एला पर हुनक समझा हल भेलन्हि ।

भाकाभावां गाड़ी भागल और चलि गेल । कारण के तिमरिभावाटमे कारि गोटे पीकी जनीमे छपि मे जाहि बेसीह तखम ने ई काकिया जागी बलन ? जाव माझ छरि खैटकांमे पर बैसल तयस्या कक । बनें बनें चूड़ा सातु ओ सौषक मोटरी सभ कुजव लागल । पुरुष लोकमि ओजन रसायन सेला उतर कुजवमाय चूटनी से हमरा यजम कहनन्हि—हे । कनेह पुरुष पतके ओम्हर टहल जाव काकियां त एकरे जनीमान किछु पाणि पिबै खैतीह ।

हमरा लोकमि ओम्हरामे छरि गेलहुं । न स्तीमन छरि मुँह तामि सोपल मुँहमे ठुफुआ लौटि कऽ देवय लगलौह ।

भूजराबा फराक सतरावी ओछाय पलि रहमाह । १० जी एक झुआ पकर केरा लेलन्हि । केरा खा कऽ छोइया गहिं नहिं फेक रहयिन्ह । हुन उठावय नलमहुं त समा कऽ देलन्हि ।

मन्थाकास भयोपीमाय बड़कीबाबी आदि के नेने पहुँचलाह । अविरहि सभ पर सरसि पढ़नाह—आहाँ लोकमिके कनेको विचार भलि अछि उमर सभके छोड़ि गहि पार बलि चुनहुं । कोम-कोम बैसल बेसीरहुं प्रसि ते उमर जेन ली । पाँचो मोटाकेँ सोमही बंड एकादशी भऽ गेल । माझ पर चूड़ा पहनल जा । १० जी १० मे किम्ह आबहि नहिं बेल छल । ई मन्थाकास १ मंथन र गेला ओ जपम मोटरी सऽ कऽ उतरि गेल रहलवि त हम किऐक एतक पर समय पाँचहु ? ई कलि प्रत्येपोमाय कुजवमाय पर चूटलाह । परन्तु मारकका गलि ललपिन्ह । अन्धविश्व—ते भऽ गेलक मे भऽ गेलक भाव नभय पल्लि अही लोकमि खा-पी कऽ भुजवत होइ जउ ।

किछु कालक उपरासत चाक बुडोक मोघ तरुमुँह कमल लगलन्हि । बड़कीबाबी मरटा मगदुमरा भूँहमे देखलिन त हुनका कंठ मे जा कऽ बैसि गेलन्हि । तेना जउनि गेलन्हि ओ आँख नुलटि गेलन्हि बाहुन आनि गेलन्हि । ओ मन्थाकीमिक शत्रु सभकीर पातकागी पातक छिटाका समय नभयधिर रहलन्हि । हुन पछा हाकय लगलन्हि । कुजवमाय मोर-पोटा पोछय लगलन्हि । अन्ध भोड़क पाणि गिया-ओर गेलन्हि । एक बर माकलीर श्रीह बुड़ी आँखि तकलन्हि ।

ओम्हर भूजराबा पेटकुनियां लेने परम दुःख । हुन लगमे जाऽ कऽ पुछ लिऐन्ह—जी बाबा ! किछु खाए ?

ओ बयसाह—बायब त गहि, हँ, ओ कागसी गेबाक जरूरत पियाधर त मउव कागसी देवा त गहि भेटन । फेरीबनामे एक पियास लगल तऽ भूजरा-बाबाक हाथमे देखिऐन्ह । ओ ओहिना हाथमे नेने रहलाह ।

हम पुछलिऐन्ह—बाबा ! पिबैत जी किऐक गहि ?

ओ बयसाह—हम कि भोग सभ जका खरैरिया छो जे गट्ट-गट्ट फेसि जाए ? पढ़िने हाथ-पीर धोएव कुक करब, उखन ई पीब कि ओहिना ? पढ़िने एक लोटा जल जलह ।

भूतका जल पीन छिएह कि गाडीक धमक सुनाइ पड़ि गेल । गाड़ी आबि गेल । बाबी भाबि गेल । 'बाइकाय इमिमायि उठि गेल । भूजराबा इडकड़ा कऽ उठय नयसाह से लगलला गेलाह । हुनका जलोपीनय सम्हारि लेलपिन्ह । ओम्हर लहजोपीसी ओ जालकाकी बड़कीबाबी केँ भऽ कऽ उठावय लगलीह ।

ग श्री अर्चन यही मुसाइमाया अपन मोटा तय दौडलाह । परन्तु दुधभिवल पल्लितरीक फेकऽ केराक खाइवा पर हुनक पैर पड़ि गलन्हि । ओ मासे गाकन भरे छलि पल्लिह । मोटरी मे लोटा ओम्हरा कऽ कहामे कहा चलि गेलन्ह । यावत् ओ उठयि-उठयि ना मुसाकिर सभ गहन रडा सँक के माचक पाटरी पल्लुदना भऽ गेलन्ह । एस ओही पर छहनि गाड़ी पर चढ़ब लागि गेल ।

बड़कीबाबी ओ भूजराबा केँ आनो-कानो लहै रेनमे चलाओव गेलन्ह । अन्ध गाड़ी जलम नगलेक त बाबी मानकाकी सँ पुछलपिन्ह—की ऐ ? गाड़ी छूटि गेलक ? हमरा लोकमि एलहि रहि गेलहुँ ? मयल लोक मुसीबकनि केँ अहुँ बाइमे बैसल की ?

किउनमे एकटा दोमर काँइ भऽ गेल । मुसाइमायाक डेहल फूटि गेल रहल । दीस-बीचमे कुदरत साइत रहल । किछु गाटाकेँ पाव जेन एलि हुनका मोघ नल्लैत त कनेक पीबि बेड दसिऐक त फर-होइ छैक । छिन्नीम बाहर मय वय रहल । मुँहमे हारय लागलाह कि जीम पाकि गेलन्ह । तेना छिलमिया उठलाह । ओलाक गिलास हाथमे छामहि अलि पढ़िऐन्ह । गर्भ चाय एक मुसाकिरक पैर पर धमलेक और गिलास चूर-चूर भऽ गेलैक । जाव मुसाइमाया अवग्रहमे पड़ि गेलाह । ओ मुसाकिर बुड करक हेतु टीक पकड़ि लेलकन्ह । ओम्हर बायबला 'गामक शम समूय करक हेत फराक कथ पर रुबार ! लायल गाड़ी कूजि गेल । हुनार नाभाकेँ सहवा एकटा मुसि फुरि गेलन्ह, ओ अपन छुल्लहा सौषक मोटरी हुनक पाचमे केँ कि देखिऐन्ह और एउ उकाय हुन पल्लुदने अपन पदर होइलनि । नगाइमायाक इन प्रत्यक्ष-नसनि देखि पड़ित जी बहुल प्रसंसा कैलपिन्ह ।

माया पल्लुत-पल्लुत बड़कीबाबी पिमासे ब्याकुल भऽ गेलीह । ओ कमक नि गहि पिबैत छलीह । भयोपीमाय कोतनमे गंगाजल देवय लगलपिन्ह । किन्तु मेक ओहि बयबला उठलावे जम पिउक हुनका स्वीकार गहि भेलन्ह । बयबलि—आज एके बेर बाबाक धाम पर पहुँचि कऽ जल पिबय ।

जमीडीह छलिरहि वाली-दल पर पंहाक आक्रमण आरंभ भऽ गेल । आस भऽ बड़कीबाबी ओ भूजराबा केँ देखि ओ लोकनि नहिना पहराय लगलन्हि जल पत्र पर गिह महराइन अछि । बाक कोन गिला धर ? कोम परगना ? गाँव जान ?





जनवह साहिबों एक डूटा सोहारी हमहूँ जा बेबीह ।

अलोपीताम प्रेम में मागु धारम लगनाह । हमहूँ अपना हेतु किछु लायक हेतु  
बाजार बिस बिदा भेलहूँ । से देखि मुसाहमामा मम पाति देसनि—देखहूँ, हम  
हु-धारि हा सोहारी में बेसी नहि लैबीह । ने हमरा हेतु चारि-पाव टा सँ बेसी  
नहि लीहूँ। पाँच-सात हा सँ बेसी हमरा नहि आएल हैव ।

हम डू मोटाक हेतु आधा तर समर्थमें पूछी-तरकारी लए अगनहूँ । मुसाह-  
मामा कान पधने सुनय सयाह । हमर आहत पावि कुम्हुरा कऽ उठगह । हम दोसा  
पलन हमका जागमे गति अपना हेतु पाति आनय इनाय पर गेलहूँ । ओहिठाम  
विचर रहै । तँ बहुत गामधारी नं नहुँ नहँ आहुर रोगि कय ओहिपर पाति  
भगवहूँ और कुम्ह-आचमन कय हाथ धीर छो पाटम जल मेने प्रत्यागत भेलहूँ ।

तो देखह छी जे मुसाहमामा ममटा पूछी मि शेष कय पलाय फेंकि गेल छथि ।  
बजलाहूँ—बाह ! बहू बिलखल सोहारी बनीने छल । मो' नीक कैलहूँ जे दोकाने पर  
भोजन कैम बनि गेलह । परन्तु हो जी ' बहू रासे अगने छलह । हमरा 'पलाय'  
प्रयोजन नहि छल ।

ई कहैत मुसाहमामा तृप्तिमूक हेकार कैलहूँ । हमरा त मनमें आयल अ  
कहि दिऐह—ओ मजराज ' हमरा भगत भली' उदरस्थ कऽ जेव । स्वाइन 'हम  
हेकार भऽ रहल अछि । परन्तु संकोचबल नहि कहमा भेल । हम स्वकाय दोनन  
पर जा भोजन काए ऐहहूँ ।

ता दलनाभिनी सबका सुनय प्रत्यागत भेल । हिनका 'लोक'के 'अन' य परे  
हो दर्जन बेरहूँ अछि । कान्हि भोरमे विधिवत् पूजन करै जैतीह ।

जाहि आनाय पर हमरा सबके' हेरा भेटल छल मे अन्धाय धुप छल । मोम-  
बनीक प्रकाशमे देखल त जे मम धर्ममा ओहिमे पहिने छहरल छलाह मे प्रचुर  
परिल ममे अन्तर स्मृति-विज्ञ छलत गल छथि । एक खम्बा का गेटकट में ओ  
तरकुण्ड वनय अछि । हम डीक तम गलह छल पावि आकरा वनयि कऽ माफ  
कैल । एक बागटी पाति में नीक जका धीएल । तखन बड़का सगरजी ओछा कऽ  
ममगोटा कै' कहनिऐह—जबै जाह ।

परन्तु गेमा' केरय पुनःपुनः । स्त्रीएन ओहिमा बीच अगनहूँ । दिन उधनी ।  
तखन हमरा अन्तर सुखनाक बाध भेल । जाहि लखरजी पर गूजर यवा 'वाय'का  
परिग जी प्रमृति अलगाह, ओहि पर बचनीबाबी भगतकाकी प'दनाहन प्रमृति  
कोना भावि सकैत छथि ? जे नारी महली वचनं अपनाके' सूत्र सुन्य बुझैत आयल  
छथि से जाह क हणक हमल भऽ कोना बैसगीह ? और जो एह' दु मातमो कनिह  
ता कि पुनः-पुन कै' मे नरम होइतह ? गूजरबाबाक माफ कऽ जइतह । माय  
कदाक ओछ मुवा जइतह । पण्डितजीक पाव बलि पधितह ।

अस्तु हम गुरम अपना तृटिक परिमार्जन कैव । गूजर बाबाके' सम्बोधन  
करैत कहनिऐह की ? अपनेसभक ओछाआन छति पर कऽ विप ?

ओ बजलाह—नहि नहि । तो नहि । अलोपीताम कऽ देगाह और तोहूँ  
ओहिमा लयल कम्बल ओछा लैह ।

हम हमक मुँह 'तय' दगनिऐह त बजलाह—तो बुझै छल नहि । एखन  
बागहो वर्षक एठ उडीनह अछि । बाबतु कताम नहि कयह या अछोप मुलम रहयह ।  
की ओ पदिनजी ?

पं० जी साथ कोना अनुमोदित कैनिऐह । अगन्ता हम कयाक अपम कम्बल  
आछाओप । स्त्रीएन एक कोनेमे अगह ममगो बेसी अन्धाय रहैत देखि कऽ पदि  
जइत गेलीह ।

भोरे स्वीयण कछन तति अपन निम्नकृत्य करैत गेलीह से हमरा ज्ञान नहि  
भेल । निम्न दृष्टता पर वेर छी जे मम गाटे शिवमङ्गलमे स्वान कय पन्तिर 'नैवाक'  
तेपानी कऽ गल छथि । गूजरबाबाक भुँह किछु भारी देखनिऐह । पुछनिऐह—  
की बाबा, रातिमे निन्न खुब पड़त कि नहि ?

गतबा पुछव छल कि बाबा बुभकार छोड़नहि—तो हमरा सँ चौप करैत  
छल । भरि राति बाहरा पेटमे मुसने दण्ड पेयनक अछि और तो' पुछैत छल जे  
निन्न खुब पड़त ?

हम तविनय हाथ ओरि कहनिऐह—बाबा 'महाँ' त राति अपने कहनिऐक  
जे भोजन नहि करव ।

गूजरबाबा बजलाह—हँ परन्तु मोरा अपना की उचित सयौह ? और किछु  
नहि न अमोटी धोरि कऽ त दऽ जइतह ? तोरा की कहिऔह ? कूडि अलोपीतामके'  
एतबा नहि पुरलैह । आव हम देखै छी जे अमोटी खेतमें प्राण लाएत ।

अलोपीताम अमोटी भोजन उपक्रम करय लगलाह त गूजरबाबा छोटि कऽ  
कहनिऐह हो अघाह 'एतबा नहि प्रजा छीह जे एखन विना बाबा पर जल  
बारमे मुँहमे किछु कोना देव ?

अस्तु सभगाटे एक एक मोटा जल लय बाबाक मन्दिर जाइत गेलह । केवल  
हम हेराह अगोरबाहीमें रति गलहूँ । बैसम-बैसल धर्मजालाक वृष देखल लगलहूँ ।  
हमराओकनि पवित्र स्थानके' कोना अष्ट करै छी से देखबाक हो न कोनो धर्म-  
दानामे जा कऽ देख ।

एकटा बाबाजी बीच आँधमे शानमनि कय ओहिठाम कुम्भी जा निमिया  
फेंकि खबार करैत सयाह । हम दोकनिऐह, तँ बजलाह—'धरम साता' किसी का  
शरीरा हुआ है ?

हम कहनिऐह—नहीं बाबा, धरम साता' तो आपनी का है । जो करना हो



तामस दाम सतरस आनि गेल । मुसाहमास बिचिया उठल—ही ! ई न हमरा नेने जाइत छि ।

आ बजनाह कहि कहि । एहन बेजाहमासी सवारी पर नहि चढ़क जाही । बाधन बिचि देत कही पड जा—न नकर होकान नहि । सवारी त ओकरा कही जे जहाँ कही है ओ रेह ! कि ठाढ़ भऽ जाय ।

तामस दोसर दाम आबि गेल । हम स्त्रीभक्त कहलियेन्ह—चढ़े जाउ, आगी कुर्सी पर बैसि जाउ । परन्तु उड़ियावाली एहिनाइवक मुह तामस लगबीह, पबिताइन ओ कुनकुनमाय नाचकासीक मूँछ नाचत एक मुण्ड बगानिन पाछाँ रीं आबि छटाछट फानि कऽ पहि गेलोहु ओर गरीज मीट के धरत कऽ विचरि ई लोकनि मुट नकीन रक्षणी ।

एहने-एहने स्थान पर अनुभव होइत छैक जे अपने ओ अन्य देशीय महिलाक पाति मे की कनक शई छैन्ह गण चरधि जनिक दक्षिण दिश, गुल कीलकी घारा । पवित्रम बहनि गहकी, उत्तर हिममत बल बिस्तारा—एहि चौहदी मे ओ पाति भेटब दुर्मय छि ।

अन्धन एकएक दाम जनन मायन त कुनकुनमाय जनमना कऽ उड़ियावाली पर आबि गेलीहु ओर दुहुक धबकाने सावकासी दामनि पीसि गेलीहु । मुसाहमासा बजनाह—हम पहिनि के छै छनहुँ जे एहन सवारी पर नहि चढ़ी । ई न रक्ष रहम ओ बजनी बाधी नहि छथि, नहि त एहि धबका जे भवसागर पार भए जैतथि ।

दाम प्रभंतलना पहुँचि गेल । लकके उत्तराय । जाब एहिठामक कासी घाटवरा दाम पर चढ़ब, परन्तु देख छी त जलोपीनाथ पता नहि । आ नेनम रोप भए गेलाह ।

मुसाहमासा बजनाह—हम हुनका जवाम बजिने टहाम पर चढ़ैत देखलियेन्ह, तकरा बाद की की भए गेलाह जे नहि कहि सकैत छी ।

सावकासी बजनीह हुनका एतय मयल ब्रह्म नहि छैन्ह । एतकर सुतिया जैताह । आब सभ सँ पहिने हुनका ओखि कऽ ऊपर करक जाही ।

हे जगन्नाथ ! एहि कलकला गहरीक विज्ञान जनसमुद्रमे जलोपीनाथक पता कहीं जमाओम जात ?

हम एही चिन्तामे निमग्न छनहुँ कि जलोपीनाथ देखाइ पड़लाह । फान पर बगड पड़ौत ओ आगी-आगी शीशन जवैत जलाह और पाछी-पाछी एकटा दाम हुनका पड़ौती जवैत सजील । हम सोचि कऽ हुनका रूप छैने तेम गेलियेन्ह ।

ओ बजनाह—हह ! आइ कटाइत-कटाइत बचलहुँ ! गेल छलहुँ सकेक नपुणता करय ते जननि बेगी, नहि हटत करैत एकटा टंकाइ पहुँचि जाय ।

ही बाबू ! कैहरे देखी तेहरे एकटा गनबीवारि अकी ससरल मल जवैत । हम जेरा देखहुँ । ओर नहिमहुँ त एकटा पाछी सँ ओहारने चल जवै छम से देखे-देवह छि । जाइ एहम स्थानमे नहि रहूक कहि ।

कासी घाटक दाम पर सवार भऽ हम सभ कालीशोक मन्दिर जवैत गेलहुँ । ओहीठाम एक लुब्धा पखा ओ पखाइन हमरा सभक घेरि लखैत । समलोक बाटार मनन कव मन्दिरमे फन फुन प्रसाद पढ़ाब पठन फलक, स्त्रीमय ओरल नुआ एक काव पगरि देलहि ओर मन्दिरक प्रांगणमे दस भयभक्त गोन उठा देलहि—'अथ जगन्निधि विद्युरनिकान्ति भवसागरिणि कुन्जये ।'

जलोपीनाथ बजसहुँ आना गोससँ पैठ नहि भएत हम जहि छी साहि दोकान पर ।

मुसाहमासा कहलियेन्ह—बभू, हमहुँ चरैत छी ।

हुनु एक बासरास जहाँ जाऊत जहाँ सोमाउ करैत सामने समुरक दोकान पर गेलाह । हम चुपचाप ठामहि बैसत बूझ गाटाक माउ-विधिक निरीक्षण करय लगलहुँ । अत्यन्त ममार्थक हुम हुनबामे अवल । हुनु गाटा कुर्मी पर पत्रा मारि बटि गेलाह और तलवारयन पुकी-झिमी पर ह्रास केरय लगलाह ।

आइ मुसाहमासा और जलोपीनाथक किछु संवस मिचवा भऽ गल छलहुँ । तँ एक लग सम्मिलित सय एक देबुल पर बैसलाह ।

जलोपीनाथ विचारलन्हि जे पार पहिने का कऽ छि जायत त हुनका हपरे सँ दाम पाड़त अतएव पहिने हुनके उठऽ देबक पड़ौ । हे विचारि आ जितम जितेबक अत्यन्त मय गति सँ जाँटय लगलाह ।

एहरे मुसाहमासा जवने पटकनाथ गिरकारी, जिनका लोटा मे घारी ! ओ अपने अतिम साहसीके और मय गति सँ जाँटय लागि गेलाह । हुनु दारउमे 'स्वो ईदिल कम्पिटिशन' चलब लगलहुँ ।

अन्तमे मुसाहमासा विजयी भेलाह । जलोपीनाथ उठि कऽ हाथ घोरक हेतु बड़नहमे देलाह । ओहीठाम तानि बुझि कऽ दही कासे करिका करय लगलाह । परन्तु मुसाहमासा अपने एक चमक । जलोपीनाथ चलाकी देखि ओ मुसलन्हि कै हिनकर करिका जेदी सपाज नीयवला नहि छैन्ह । बस, ओ बट दऽ लोटाके पाति जम कापपर जमक बड़ा एक दिन बिबा भऽ गेलाह ।

जलोपीनाथ परास्त भऽ गेलाह । जगत्वा हुनु लोटाक मोयन शव १॥॥॥ हुनका डोर्स बाहर करय पड़लहुँ । ओ मसोति कऽ रहि गेलाह । अन्तमे तस-तस गरि मुसाहमासाके देखियन्ह ।

जबत मुसाहमासा नकली बाह्यभूमिसे प्रयाणत भेलाह त जलोपीनाथ हुनक दृष्ट्या देखि भीतरे-भीतर कुकरि कऽ रहि गेलाह । परन्तु बजनाह की ?





जब वस्त्री एकटा फुल पर बैसके हैं और ठाका मीनय जगलें हैं। एक गोटा पछिराकी सरस माना पहिरा कऽ नथ चम्पक हुनु चम्पकचम्प नगई हैं। एक गोटा बढको बाबोके विविध बह जगलें हैं जो अटका पर कतक चढ़ायेन

एवं प्रकार पद-नदर उत्कार प्राप्त करैत भक्तमल मन्दिरक भीतर पहुँचत हैं।

जै किछु कमरि छलैन्ह से जलैत करवा कान बूति भऽ केलेन्ह। पुहु कातक रेखाक बीचम बढकीबाबो गधीलें बेधम भऽ केलेन्ह। हुमका बंदा जपना कन्ह। पर नइया बहिर भऽ भऽ केन्ह। पानि छटला पर होल भऽ केन्ह।

बढकीबाबो भऽ कऽ बनीस टाका अटका पर चढ़ा ऐलीन्ह। बढकीन्ह - ५६  
जमा कोहिठ म काज वत। और कि किछु सत जाइ छैन्ह।

बढकीबाबो मयिन छलै पंदा सभ जगजगकार कऽ दलकेन्ह।  
नथन भक्तमयी सही बनीस टाका बाहर कलैन्ह। दया-दली होइ जागि  
मेन। कमल पद-नदर बढियाबाबो, कुच-नमः सभ करम-अपन मे टो लायेन  
नामि सेलीन्ह।

तावत एक दूठ देवता सभक पाछे जागि सेलबिन्ह जे बाह्य भोजन कराउ। हुमका मोचनमे कभी लीमे नहि। सभ भूके लहालीट, और ताहि पर मिश्रक वन पछार सवार। एहन दृश्य धर्म-प्राप्त भारतवर्ष छाड़ि और कोन देसमे भेदि लकैत अछि ?

अस्तु। होइत होइत बाह्य-भोजन भेल। तदुपरान्त दक्षिणाक हेतु बढकर उठल। एवं प्रकार बारहवें हू बाजि भेल। तखन लोक धर्मल लाने आबि दे-  
हेनक। ककरो भोग नहि रहैक। अखन पछाभी भरि बढेरा महाप्रसाद जगलैन्ह।  
सबभैं सेना कलसभ भेरीन्ह। पाछा जा कऽ जात भेल जे एहि प्रसादक मूर्त  
केहन होइ छैक। किएक स किछीकल पछाजी मारककास होइत तिसराम एक  
बारि बर लान वसुन कय सेलबिन्ह।

अस्तु। सार्वभौम पछाजी आबि सभकेँ जारती देखावत मन्दिर लऽ सेलबिन्ह।  
और एहि ध्यानसँ पुनः एक बेर लोचक अखर हुनका भेदि सेलैन्ह। जाक सभ  
निमोद मेवाक सिद्धी लान कय नयागि हुनका कुमदास लान नहि केलेन्ह।

दोसरा दिन प्रातःकाल लोक जवन सत्ताकमे स्नान कय जनकपुर  
लोहठाम मिश्रक पलटन हुमराकोक-नकेँ बरि भसक। जतेक प्रसाद लऽ  
सभमे रह्य त सभ बीटि सेलैन्ह, तयामि आम छोटाएव काटन भऽ केन। एक  
देन पर बारि गोटा भूमि जाव और अकरा नहि होइक सेह लमैतकर बकी ज  
सावि जाव। हम भगमे सोबद लयनहुँ जे एकर मुख कारव की ? दरिद्रता ?  
जीन ? कुचता ? बन्दा एहि देसक अन्त बाकलीबता ?

रातिमे भूमि कीरि कऽ धर्मसाता ऐलहुँ त देखैत छी के तीन तिरहुतिवा तेरहु  
पाक चरित-वर्ष भऽ रह्य अछि। दारकका ओ ए० जीमे एतेक भैली रहलें उत्तर  
हुइ गोटाक भूखि कऽक पछरि छैन्ह। सहजोपीठी कराके जवन लिखबि  
उभका रहल छबि। भोलीपीठाव पुनः बेकती गोइत कोहि सिद्धी जो परोक्ष लाना  
बना रहल छबि। सुसारमाया अटकावरक प्रसाद बारि केँ जाक कीनि सेलाइ अछि  
सेह भोग भगा रहल छबि एवं प्रकारेँ सभक भिगमे बयान छैन्ह।

हम रातिमे सुतल-सुतल विचारव लयलहुँ—कि ओ कलकलावसा स्वप्न  
आसिर महिए कलति हेत ? कि ओ एकता जो सज्जये हमरा समाजमे अलंभ  
अछि ? हम कोन उन्मादमे ई दल संयोजन लैल और की कल लेल ? 'विनायक  
प्रकलण' रचमायात वानरम्।' कि एतवा भ्रम ओ व्यर्थ भेल ? आबो प्रयास  
कऽ कऽ देखक बाबो के एहि विशासमे कहा धरि भक्तता भेटैत अछि।

ओरे छडि हम मंडनकेँ सविनय निवेदन कलैएहुँ जे आइ सभ गो-गकेँ हमरा  
विसर्ग निर्वनन अछि। ई सुनि सभकेँ प्रसन्नता भेलैन्ह।

भ० जी बजसाह—बाबू ! बाबू बड्ड उत्तम विचार। ई अहाँ लं हो किछि  
जे ? किछि न ?

बारकका बजसाह—ओ बाबू ! अहाँ लावत नथकुक छी। हम पास पहुँचव  
जनन दम लोकमे अहाँक प्रसन्नता करव।

गुजरबाबा अनुमोदन करैत कहलबिन्ह—ताहिमे कोन संदेह ? हुमक बल  
केहन छैन्ह ? पछाधर मिश्रक सत्ताम।

यावत् भक्तमल मन्दिरमे दर्शन करय नैलाहुँ ता हम मोचनक औरिओमे  
लगलहुँ। लोपीठाव जा भुगवमायाकेँ मेग लऽ लोकल पर सेलहुँ। भोहिठाम  
चौधरावे पूरी, हरकारी, चटनी, रायभा, मधुर, जेवार वही जीमी सभ वस्तु पर्वत  
कऽ मेने जवैत भेलहुँ।

धर्मसाताक दासिमे एकटा छोटाछीम फुलबारी छलैक। ओकरे बीचमे मलमलक  
मलीचा जकाँ हरियर घासक चकल देलऽमे आगत। हम बँध स्थान देखि लेल।  
नथ सामान लऽ कऽ लोहठाम भरबाओल। सुसारमाया जी जलापीठावकेँ पान-  
पानिक भार दलैएन्ह। तावत् बढियाबाबो जे जय-बा दर्शन कय आबि बैसीह।  
हम बढियाबाबोकेँ कहलैन्ह—अहाँ पूरी मधुर परसव। जगद-बाकेँ कहलैएन्ह—  
तो हरकारी वही जीमी परमिहूँ।

एवं प्रकारेँ हम काम बेटे रह्यो ता केव श्रीयण सेहो पहुँचि सेलीह। ह  
पमकेँ गोस पीठीमे नैला सेलैएन्ह। बढकीबाबोकेँ सहि दुईस पदलैन्ह। बजलीह—  
ओ एहिठाम कोनो पूजा हैक ?

जलोपीठाव कहलबिन्ह—हँ, जसली पूजा हैक।



साज-सज्जा की बजायी—तोरा सबके कोत-कोत खेल फुरत रहैत सीह । एहिठाम  
बोका सादर कोना । ने राय , न बहारम, ने एव बहो खेल ।  
हम सबिसे कहिबोह—एहि ठाम परबाने ई सम नहि समैत छैक । कोर ई  
त लेन दिसेक ।  
अनोवीनाय और भूसाइयासी सेहो कालेक लजाइत । जवन पात-पानि क पालीके  
ईमि बैसाइ ।

तलम हम केन पूरके कबकब समैनालाक भीतर बैसहु ।  
मारका पुछलहि—कोमठाम भोजनक प्रबन्ध छैक ?  
हम कहिबोह—उद्यानमे ।  
प० हो भयंकर कहेन पूछलहु—को ? कुनियो देवमक इतिहास छैक ।  
हम कहिबोह—नहि, नीचेमे आसन लगाओम छैक ।  
भूसाइयासी पुछलहि—की मय नीचेबहो ?  
हम कहिबोह—पूरी बरकारी मयुर खेवर बने धौनी ।  
भूसाइयासी कहैत हम । सोम हल बरकारी मयुर नहि । ई कोक बहो-

धीनी छैक मयुरक के देखीत । नमह, एहो भोजन सबिसे मयुर  
लोहू गोटा म । न चित्तमे हमरा पाली भजवार । परन्तु भोजनपान पर कुट्ट  
रहिहिएकाएक ठमकि का सभ केही छव भंड बैसाइ । बैसा बचजर खादि गेल  
होइत । एहोएन रातपर ईसल छवि और इहियावासी नवा जगद्वारा ओवर कमि  
परसि रहल छवि । एहम अनुसूत दृश्य देखि लोहू गोटा स्त भव दृष्टि बैसाइ ।

प० जी बहनाइ हमरा त होइ छम अ स्त्री । नछी क । बैसाइ । दानन कह  
लोकनि पतिन बैसि नीचीह लखन गुंग लोकात्म विमो पद दिऐक कमाओम गेल ?  
मारका बजमाइ—ओहि गोत्रमे घूटा पुइया के ईमल दमेत छिएत । जाकेमे  
बर्गरटा आसन लापी देखेन छिएक । की ? हमरो त कानिके सऽ वा कऽ अहो अही  
बीचमे बैसाइत साहे की ?

भूसाइयासी नित बरगर कपैत बजसाइ—तो एहिठाम भौरी-बक बजबक  
बाहेम छह । एहो खातिर हमरा समरे एहिठाम जऽ जाएत छह ?

हमरा न्हंमे किछु उत्तर नहि बहराएन । अरारही जकी मौन रहलहु । जाव  
जा कऽ बहकावासी ओ सहजोपीसके वस्तुस्थितिक भांड जेलैत । बादी हमरा विव  
भांय नेनने लसैत बजसीह—तो पुछक बोके हमरा सबके बैसा बैसजज करै  
छह ? नमनक जाति पलायन चाहैत छह । सबके अठोरे करक बाहेत छह ।  
के केहो नहि केक ते तो करबह ? त व वम् परि हमरा लोकनि बिबैत की ज  
बरि नहि होयम होइह । एहहु मयुर अपन कवार पर ।  
ई कहि ओ पात सटा कऽ बैसि बैसहि ।

सुखजोपीसी जातिमे भी बगरैत बजसीह—हो वाव ! तो प्रमिक छह त अपना  
बह गेल । अतका बहु-बेटीके कियेक दूरि करैत छहो ? के कहियो नहि देखल से  
बाइ देखि रहल की । हू हू हू । तो त कनिपुनोके कितवह । एक सति साय  
जातिर लोक अपन धर्म तमा देत ।

ई कहि ओ पातके समोहि-बमोहि और बेसी भीरसे दूर केकलहि ।

बंदिताओ बंदिताइमे के कलम करैत कहवायिन्ह—महू जगट्टेठ अनक बाहेव  
छी ? मारि करपीके वृष्ट खोजि देख, नहि त कऽ ।

मारका बजमाइ—कोमठाम भोजनक प्रबन्ध छैक ?  
हम कहिबोह—उद्यानमे ।

प० हो भयंकर कहेन पूछलहु—को ? कुनियो देवमक इतिहास छैक ।  
हम कहिबोह—नहि, नीचेमे आसन लगाओम छैक ।  
भूसाइयासी पुछलहि—की मय नीचेबहो ?  
हम कहिबोह—पूरी बरकारी मयुर खेवर बने धौनी ।  
भूसाइयासी कहैत हम । सोम हल बरकारी मयुर नहि । ई कोक बहो-  
धीनी छैक मयुरक के देखीत । नमह, एहो भोजन सबिसे मयुर  
लोहू गोटा म । न चित्तमे हमरा पाली भजवार । परन्तु भोजनपान पर कुट्ट  
रहिहिएकाएक ठमकि का सभ केही छव भंड बैसाइ । बैसा बचजर खादि गेल  
होइत । एहोएन रातपर ईसल छवि और इहियावासी नवा जगद्वारा ओवर कमि  
परसि रहल छवि । एहम अनुसूत दृश्य देखि लोहू गोटा स्त भव दृष्टि बैसाइ ।

प० जी बहनाइ हमरा त होइ छम अ स्त्री । नछी क । बैसाइ । दानन कह  
लोकनि पतिन बैसि नीचीह लखन गुंग लोकात्म विमो पद दिऐक कमाओम गेल ?  
मारका बजमाइ—ओहि गोत्रमे घूटा पुइया के ईमल दमेत छिएत । जाकेमे  
बर्गरटा आसन लापी देखेन छिएक । की ? हमरो त कानिके सऽ वा कऽ अहो अही  
बीचमे बैसाइत साहे की ?

भूसाइयासी नित बरगर कपैत बजसाइ—तो एहिठाम भौरी-बक बजबक  
बाहेम छह । एहो खातिर हमरा समरे एहिठाम जऽ जाएत छह ?  
हमरा न्हंमे किछु उत्तर नहि बहराएन । अरारही जकी मौन रहलहु । जाव  
जा कऽ बहकावासी ओ सहजोपीसके वस्तुस्थितिक भांड जेलैत । बादी हमरा विव  
भांय नेनने लसैत बजसीह—तो पुछक बोके हमरा सबके बैसा बैसजज करै  
छह ? नमनक जाति पलायन चाहैत छह । सबके अठोरे करक बाहेत छह ।  
के केहो नहि केक ते तो करबह ? त व वम् परि हमरा लोकनि बिबैत की ज  
बरि नहि होयम होइह । एहहु मयुर अपन कवार पर ।  
ई कहि ओ पात सटा कऽ बैसि बैसहि ।

मारका बजमाइ—कोमठाम भोजनक प्रबन्ध छैक ?  
हम कहिबोह—उद्यानमे ।

प० हो भयंकर कहेन पूछलहु—को ? कुनियो देवमक इतिहास छैक ।  
हम कहिबोह—नहि, नीचेमे आसन लगाओम छैक ।  
भूसाइयासी पुछलहि—की मय नीचेबहो ?  
हम कहिबोह—पूरी बरकारी मयुर खेवर बने धौनी ।  
भूसाइयासी कहैत हम । सोम हल बरकारी मयुर नहि । ई कोक बहो-  
धीनी छैक मयुरक के देखीत । नमह, एहो भोजन सबिसे मयुर  
लोहू गोटा म । न चित्तमे हमरा पाली भजवार । परन्तु भोजनपान पर कुट्ट  
रहिहिएकाएक ठमकि का सभ केही छव भंड बैसाइ । बैसा बचजर खादि गेल  
होइत । एहोएन रातपर ईसल छवि और इहियावासी नवा जगद्वारा ओवर कमि  
परसि रहल छवि । एहम अनुसूत दृश्य देखि लोहू गोटा स्त भव दृष्टि बैसाइ ।

## अलंकार-शिक्षा

[ई कथा 'बंदगी' (अर्थात् ५६) में अलंकारक प्रथम पाठ 'सीधे' से प्रकाशित  
केल आत्मुपरागत 'वर्ष' में संगृहीत है। एकर अनुवाद हिन्दी (साम-बन्धु)-  
५६: 'परिहास' (५६) आ गुजराती ('चित्रलेखा-मधु' ५६) में सेही भेल अछि।

'केल-केलमे शिक्षा'क विद्यास्त एहि कथासे बहुत भोज कर्ता अछि। तैसँ  
वाक्य-वाक्यमे व्यवहार आ मध्यमे लोक कतेक बात सिद्धांत प्र-  
वादन-मन्त्रांत कर्ते कऽ ईत अछि, से लक्ष्य करवाक लेल दृष्टि जाही। अकड़ा-  
हान-विशेष कऽ आजीविका-मे काहु बर्कोति आ चमत्कार स्वाभाविक  
कर्ते कृति पड़ैत। परन्तु अमरक एहि पक्षके लोकता व्यावहारिक भाषा  
आ उपयोगिताक वस्तु समझैत एक ठा नऽब बात तँ भेजे कदम सहि देनायो  
बातुतँ नीक लक्ष्य बाहर कऽ शिक्षाक एक ठा दृष्टि सेही ई कथा ईत अछि।

मोक्षबाबा नीति समर्थन रहिय। हमरा बेकि पुस्तक—की ही, मध्यम चत-  
वर्ग अछि ?

हम कहिये—अमरक ओहिठाम किछु अलंकार ज्ञान प्राप्त कार्य जायत छी।

मोक्षबाबा एक क्षण दुष्प्रम भऽ गेलाह। पूना गन्धीरतापूर्वक बजलाह—सत्य  
आहुत बनह।

—हमरा बकबकाने देलि कहिये—एहिठाम दसमपर जलवा मास दिने  
सिलसिल, तमबा आठममे एके घंटा मे सीलि बसह। परन्तु बेजसु अक्षयिहः ५६।

ओ चुपचाप हमरा दुवसा मे भऽ देलाह। ओनय गिरकीक नीतर कीटीक  
बढ़ने हमरा बंसा लेखिह।

मोक्षर स्त्रीगणमे-जलर-ओरी मए रहल सर्वह। बाबा नहुँ नहुँ बजलाह—  
तँ काएज-सिल बाहर करह ओर जम्दी-जम्दी नोट सेने बाह। अलंकारक यही  
भऽ रहल अछि।

एक जनी बेमराके कहिये—ये ओख सन कबकब ओख कियेक कर्ज छी ?

बाबा कहिये—देसह एहिठाम 'ओख' ओ 'बोल' मे अनुप्रास छैक। 'ओख'  
उपमा, 'ओख' उपमेय, 'ओख' वाचक, कबकब' धर्म। ई पूर्णपरा अलंकार भेलैक।

तावत् दोसर जनी बजलीह—अहँ के बात त बिदे क्षण होइ अछि।

## अलंकार-शिक्षा

५७.

बाबा बजलाह—एहिठाम 'विष' उपमा, 'बात' उपमेय, 'ओख' वाचक। धर्म  
सूत्र छै तँ ई सुपरीभा अलंकार भेल।

तैसँ जनी बजलीह—जहन ओ छपि नेहने कही छी, ओर नेहने अही छी  
तेहने ओ छपि।

बाबा बजलाह—देसह, उपमेयक उपमा उपमानर्थ ओर उपपादक उपमा  
उपमेयसँ देस देस छैक। ई उपमेयपमातकार कीक  
त वत् चारम टिप्पणिक—अहँ तन जही छी।

बाबा बजलाह—ई अन्वयपालंकारक उदाहरण भेल।

पुनः केही बजलीह—बाबू दे बाबू। रातदिन गदर्हिकथन। ई पर  
मध्यहृदयमे बहि गेल।

बाबा बजलाह—एहिठाम उपमेय 'वर' मे उपमा 'मछहृद' सँ अधिक  
उपमेय देसभोल भेल छैक। ई व्यतिरेक अलंकार भेलैक।

दोसर जनी बजलीह—ऐ अही लोकनिक मुँहमे लजाम नहि अछि ? जीव  
अछि की चरबी ?

बाबा बजलाह—देसह एहिठाम 'लजाम' क कथान मटि लय लजामे पड़ल  
करक न हो—समय रान निरोधक वस्तु। ओनमे चरबीक समय भेल सदेह लंकार  
भेलैक।

पुनः एक घंटा बजलीह—एहि धरमे कबके के ? लजामे कह छोट से उपमा  
बाबू।

बाबा बजलाह—एहिठाम काहु द्वारा व्यतिरेक नैस भेल अछि के केओ कम्प  
जगजग नहि मरपके के अहँ भारी जगजग छी। लोकोक्तिक प्रयोगसँ एहि  
भावके ओर अधिक सम्पुष्ट भेल गेल छैक।

दोसर बजलीह—बाबू बाबू। नहि बाबू त पेटक जल कोना पचत ?

बाबा बजलाह—'बाबू बाबू' एहि द्विष्टिमे घोषाकार छैक। अन्वयपक्षक  
विलक्षण कारण 'बाबू' कल्पित कर्म भेल अछि। ई विभाषना अलंकार भेलैक।

तैसँ बजलीह—बाबू बाबू मे कर्मणि, तावत् सेसि देसकर्म।

बाबा बजलाह—एहिठाम कारणसँ एहिमे कार्विक उत्पत्ति कर्मण  
अछि। अन्वय अन्वयतिशयोक्ति अलंकार भेलैक।

ओ पुनः बजलीह—इह। मुँह कोना बनोने छपि जेना केनो नामिल  
पोहिकऽ पिया देने होइन्ह ?

बाबा बजलाह—ई उत्प्रेक्षाकार भेल। एहिठाम हेतुप्रेक्षा छैक। बाबा  
सिद्ध छैक तँ सिद्धांतद।

ता तैसँ जनी बजलीह—ई पर नहि, नरक थोक। हमर बाप जाम्ह  
जमह भे पड़ल ठाम क' भेलन्हि। के एहि धरमे एहीह।

बाबा बजलाह—अलंकारक बाकि बाकि भेल। एहिठाम 'वर' उपमेयक  
निबंध कर्म नरक' उपमेयक विधान कर्म भेल छैक। ई मुदावस्तुति अलंकार

भेलक । दोसर बाबबने बाब' उपमेयमे 'बान्धुर' उपमानक निवेद्य रहित आरोप केल  
नेम छैक । तँ एकक अरकार भेलक तेसर बाबबने 'ऐलीह' ओ 'नेलीह'मे परस्पर  
विरोधक प्रतीति भेने विरोधाभास लखकार छैक

पुन तेसर कठसँ धाहर भेल - तँ दिनकर बाब त धरमा भेठ छविह । नैह  
यँ एकना कारकोडा त ऐबे ने करै छैह । जो अविनय सत्तात दुखी पर पैरो  
नहि धरितसि ।

बाबा बजलाह—देखहु, स्वरमणिमाय ई तन्त्रम अहुरैलक ने हिनक भाव सेठ  
मति छविह । अयाम् भरि छविह । एहिठाम काकु द्वारा विनयीमयक अर्थवत्ता  
श्रेय । कोअ'क अर्थ 'कोआ मन नुक्क मन' । एहिठाम बाबक, एमँ लो उपमेय —  
पीनु मुरा संभ । मेँ बाबकभाजमसनुला उपमा लखकार भेलक । गुरीरर पैर  
नहि छविह ई अतिशयोक्त लखकार भेल ।

बाबि कठ सँ वदराभन—अह'स नैह'त एनिक मति । ने मे अछिअसेक  
अद्वयार होइछ ।

बाबा बजलाह—देखहु एहिठाम कति छैक ने अहो नैह'र द्रिष्टि अछि ।  
नैह'रक अतिशय बाब-बाब साम-ना ज आदि ई धुता प्रयोजनवती वदराभनवत्ता  
भेलक अतिशयमे अभाव निरा छैक । तात्पर्य के भूयक प्रभावमे अपने हाथ पानि  
भरि जाइ छवि । ई गुरु प्रयोजनवती लखण भेलक ।

सम्बन्ध केओ प्राप्ति वदराभन—बाबनि दुमनयि सुपके जिनका सहक टा  
छि । अह'क हाथमे ई एवम छवि वद' पडस अछि

बाबा बजलाह—एहिठाम लोकोपिक प्रयोग द्वारा प्रत्युत 'वाचान'क व्याज  
सँ प्रस्तुत वदराभन पर आवेन कल गेल छै-अ + ई अन्वोचित लखकार वद'ह ।  
होमन वद'क लख सिद्धि ई नैह'मे कुराअन-विना पान करै-करैह अह'क हाथमे  
विद' पडस अछि । एह'ठाम गुरु प्रयोजनवती लखण निकैक ।

एमँ कोओ कठसँ वदराभन—हमर बाब करविषा नहि ।

बाबा बजलाह—एहिठाम काकु अतिशयसँ आहो अर्थवत्ता अहुराछ के 'अहो'क  
बाब प्रतीति 'विकाह' ।

अद्वयमे विमर्श—अह' अह' पडस । केओ म' करवैत वद'ह ने हमरा  
नायमे वद'ह वद'ह दिनका अक्षि पर पट्टी बाधल छविह के करवैतक बेटीके  
वद' लखण ।

बाबा बजलाह—कोले 'वदानी' नहि कहि'के हमरा लखमे सिद्धि देस'ह ।  
एना वदानीकराक अविरोध प्राभावम कोल गेल अछि । ई पर्यायवित लखकार  
भेलक ।

एवमहिमे किओ नैह'नह' किछु बिहलविह'त न नुताई नहि पडस । ताहि पर  
होमर अनो जल'त अह' वद'क अतिशयमे ने हमरा एना गजन करबे छवि  
आन दिनके आ कः नम वद' करै छविह ।

ई कहैत ओ वद'र लः कः दुखसा दिस वद'नीह

बाबा बजलाह—बाब पडस । नहि त वद'टा लखकार वद'र म' नैह'ह ।  
बहुल पाठ एवमे छवि रहय ईह ।

## बाबाक संस्कार

[ई कथा २४० रमानाक आठ अहुरोपपर सिद्धि गेल छत  
ये हमरा बाबा संस्कारित 'कथा-संग्रह' (६६) मे प्रकाशित भेल ।

अयम विद्वत्ता, होम, करम—अभक सम्मिश्रित स्वाद  
भेने ई कथा लपन प्रभावमे विशिष्ट अऽ सकल अछि, तकर कारण  
माय ई मे हास्य आ अर्थय मूल संवेचना कारक्यक सहयोगी अऽ  
कऽ व्यापक छैक । कथाक अन्तिम पंक्ति कथाके एक प्रह-  
काक सँ अर्थ-विरताह वद' ईत छैक, प्रभावक प्रसेधन आर आर्मा  
वरि कऽ ईत छैक, आ कथा एकटा वद'तर बाबा'स सऽ ईत छैक ।  
कथा पाठकके अन्तमे एकटा होम-उत्पन्न वद'तर पर ठाढ़  
कऽ ईत छैक अतः सँ ओ एकटा सवेन सेहो पडल करैत अछि  
मे ओकरा 'केमरेसन गै' लखका 'पोलीक संवर्ध के' वद'मे सहजक  
प्रभाव अर्थमे होइत छैक, परन्तु मूल संवेचना कथामे काब्ये छैक  
ये सम्पूर्ण कथामे परतल छैक ।]

अहुरेन बाबा अमर वद' अह' वद'ह त म'ओ वद' अह' वद'ह । एहो  
वद'क लखण अहुरेन बाबा अमर होममे वद'ह, साय'माय अह'वीमाय वद'  
वद'ह पर वद'ह नहि । एह' वद'क एकटा के कहय,  
माल-माय पुन भेलविह ।

अहुरेन बाबा अह' अह' वद'ह । वद' वद'हमे धाम लखण परती छवि  
के लखि-कोहि कऽ भीट वद'ह अनीने रहवि वद'ह-वद'ह अह'क वद'ह पद'  
कऽ कलमबाग लगीने रहवि । वद'ह सव क' जल वद'हरी अह'ह, अह'ह मायवह  
अह'ह । अहुरेन बाबा अह' अह' वद'ह वद'ह सवके लखणी पर वद'हने रहवि ।

बाबा अहुरेनमे मूलवि । अहो वद'ह लोकिके अक्षि लखण । कहिय  
ओ वद' लखी हो के भाव बाब अह'ह अह' अनीने त सवी भावके लखण  
विचार रहैह, परन्तु वद'हके लखि वद'हमे अह' अह'ह एह' वद'हमे सव एकक  
रहवि ।



परन्तु बड़ा कड़-काट सेहन के कहियो मालो महि ब्रह्मचर । बेदासम  
लिमिया कः बाजसि—ई बड़ा कहियो महि भरसाह । जोमस अर्थिक बाधु सः कः  
जाएल छवि । हमरा लोकनिक अंशुकी का सेसाह । दमराजके दिनक वही हेरा  
सेसेह ।

बड़ा गहवर सभटा गुननि और दासि-बासक फोर संग कोटि जासि । बड़ाक  
भोजनकाल पावनसि तेहन तीव्र आलोचना होइन्ह के बड़ा अनेक काल हाव  
कारिक नैसि जासि । परन्तु के जासि कः मनबोन्ह के 'बाधुकी, और सास' ।  
बड़ा अपने दक्षि, अपने बीमसि, एक दिन मन सेलैन्ह के अमीद साह । अमीद त  
एक दिन आभास उपसि सेलैन्ह । डेराइत-डेराइत अजलाह कनेक क्षिप बेस  
पका कः केभी रित । उत्तरमे उपसेल ओटलैन्ह 'ओषध आहूतोतोप बंध मारावयो  
हिर' । लुहनि निनई बड़ा उपासियो नहि करसि के लगने कासी पहुँचा देत ।

बाबाके ई बुरबाधु जाइत महि रहस्यह के हुनक स्वास्थ ओ दीधामुर्त तब  
सकल सः रहल अछि । आस जोबित रहि जो अपराध कः रहल छवि ।

एकदिन बाबा कहतो कासि कः पड़ि रहलाह । एकबेर द्विकी उठलैन्ह ।  
मुपुन लोकनि बाटे लकैत छलसिन्ह । तुरन्त गंगा स, जेबाक आओजम सेलैन्ह  
मरगत तत्परतापूर्वक कंच क्षिप कटबास, जर्षी जनबाध बाब के ओहीपर मुताप,  
साथी पुत्र कान्ह लगाम पोषम घट सः चलसिन्ह । आटथे बाबा जहाँ किछु बजाय  
बाह्य कि रामनाम सत्यके मुमुन निनायमे ओ विलीन भः जाइन्ह ।

बाब सात रक्षि । पछबाक लहरिमे भोज जाके ठिहुरैत रह्य । बाबाके  
भरि छाति बानीमे—यबाक हिलकोरमे बीसा देल गेलैन्ह । बाब बाबाके पछतावा  
होमय जगलैन्ह के कहसि एहि कदमे फंसि गेलहुँ । परस बाब सुरज कठिन छलैन्ह ।  
मुपुन लोकनि बाककादर्थ भाव गोसि बंगालाभ करायव जगलसिन्ह । बड़ा परमर  
काय्य जदसाह । नटे घन वीतम अलमे देह सदै भः गेलैन्ह । पुत्र समके ह व घम,  
घम नेहोरा करय लगलाह—ही लजय ! जाइ होइ अछि । हो विजय ! ऊपर लसे  
थलह । ही लजय ! आगि तारन । ही लजय ! भूख लागल अछि । मुमुन-ऊर्जा  
कायल ओझावह । परन्तु मरटा काल-कालय करण्यरोदन सिद्ध सेलैन्ह । बेबी  
कलपात नहि कलकैन्ह । कारण के ओहिदिन पृथ तसि—माथी पृथिप—समेक ।  
एहन प्रबन्धे मृत्यु । एहिमे बाकि होमाय बड़ा के और भः लकै छैह ? जाइ  
नहि भुवने अवदा पड़ि जैलैन्ह । होनर जे मुपुन सोयनिके एहन रक्षिक सास छैन्ह,  
कृतिधारक उर्षी कटबाक छैन्ह, लम्बाक अरचाव नेचबाक छैन्ह, हाटथे बहव विनबाक  
छैन्ह । अतएव बाब बाबाक मृत्यु सेनाह आवश्यक, महि त बहुत हज हैलैन्ह ।

साथी भाव हुनकमदन भः उलेक दुबहुनिहा देपदिन्ह जे बृद्ध संज्ञायम  
भः मेलाह । यही भाव हाथोहाथ हुनका उठा समजानमे लः गेलसिन्ह । सत मान  
सब हाक बिता पर ओकर बितामह भेकी हुनका मुताओव सेल । अकस्मात् बृद्धक  
देह कनेक सुपुता उठलैन्ह । कृति वदल जेना भः प्रायसे किछु लकैत करैत हाव ।  
ग दास-हि निभजिन लोकनि ऊपर से माटर सिलो राखय समजायन्ह । जेना  
जुहोतनमे खरहक सिकारम वप धरिसे बाछि ठहिमा बृद्धक ऊपर बेरा भागसय  
लगलैन्ह । बाबाक छोले देह तोपा गेलैन्ह । किनस मुँह टा दसाह पड़ैन्ह । मुँह  
दावा तहन कठनीय रहसि के एकेके भेदा पर प्राण नहि गेलैन्ह । ओ भाव, किछु  
बाजक मुँह मुँह लोलसिन्ह त जेह पुत्र आह मे ऊक जगा दसायन्ह और नाम  
मिलि बाबक कष्टु अथ बाबाक कपाल-किछा करय लगलैन्ह ।

विशा प्रवर्तित भः उठल और अग्निकेव सातो जिज्ञा से चतकट काहर  
करय लगलाह । देखैत उच्छन्न बाबाक जरीर दसमायमे भः गेलैन्ह । कथम किछु  
अस्मिन्त टा रहि गेलैन्ह के सातो मुपुन अदापूर्वक वीछि गगाक प्रवाहमे भसा  
देसलैन्ह ।

गाम पर आबि साती भाव आदक भोज केभनिह । सात गाम खयबार । वही  
बड़ा बीती मुडवा । जयजयकार भः गेल । उत्तरी टुटलाक बाध उत्साहिकारी  
स्वच्छन्द भः गेलैन्ह । महाप्राज्ञ लोकनि नेहाल भः गेलैन्ह । कनो बाबक परही  
जलैन्ह, कनो छाता कनो पाव, कनो कदाम । एव प्रकारे बाबाक अस्तित्वक  
समटा केहू मेठा देल गेलैन्ह ।

डावसाक उपरान्त रावप्रथम कार्य ई भेल जे साती भाव भगीरत बाबाक नाम  
कटबाय अपन-अपन नाम सतिमानमे दजे करबोसहि । तेहुने छल्लास आ उर्ध्वगर्भ  
जेना बध बीड़ीक किछु कर्मठ किन्तु उगाहुन बाह्यकर होसि ।





અરિ વેદ અગેરોળ રોટી મેટવ કઠિમ છોકે । તે સરકારકે પાહી જ ચિત્તાવરણ મા  
કિન્નુલસર્ગી પર કહા રોકે સગા બેસા ।

સાધાધ્વજક પદ્મિ માવજક સંવર્ધનમે જોરસે કાલ-ભદ્રિ જલ ।

જાણવું 'નવ ટાલમ' યડ વેર્મક ।

મફેટી ટેકુલપરક ખટી નજા ફેલખિલ । તરણ સમક બાણમે જાવ, કટવેટ  
જની, પાનાથ, વક પુરિય, રત-મજાદ આ બાદવજીમક મજાર રંગ મલતિ ।  
સદસ્ય સાકોત જનસાક જર્મીન કાટસે કરનારે ચિત્ત હોદ્દા બોજનમ રત્નાવરત મડ  
સેલમ્ ।

નવનર્મકે કમ્પાસર્સ જાણવું મોલિ સમ મોટ 'જિલ્લ પામ' પર અવન-અવન  
યાત્રા-મલ ક દિમાવ જોડિ બાકિસક કિરામક જાણમ થમ્સા રંગીવન જકર કુલ  
રાકિ રૂ સહજ ટાકા સેર્મ્સ । સદસ્યગણક સમિપ્ત વિવાર મારેહ જ પૂક વિનમે  
તે મથ મમસ્યાક સમાધાન હેવ અવમ્મવ, મેં પુનઃ જલિમ ચેમકમે મુરુસ્ત મદ  
વિસ્તારપૂર્વક ચિત્તાર કાલ્સ જામ । પત્રરૂ દિનક મોલર વોસર ઊધિ નિર્ધારિત  
કલ્પસ મેલ । સવુવરાન્ત સમ મોટે શુદ્ધ વિવેક અવન-અવન કારમે જા રેમ્મમ્ ।

## ब्रेजुएट पुतोहु

पण्डित बाकाब आठवने आठ वी० ० पास कनिष्ठा अग्र रहल छलन्हि । ई मुनिनहि सोने मातमे कुतूहलक बरि आबि गेल । भक्तगणक घरमे मुदमुदी लागए लगलन्हि पण्डिताइनक नरेज भाखि अबी बापक लगलन्हि । आठ-काठक ए० बी० पण्डिताणी कनिष्ठा अज्ञानमे कृमव रहल । थ० १० बालाकेँ क देखि सकैम ? छ ? बड़की पुतोहुक गृध्रपण्डित आ मुमुक्षुनाथ अदरेजीवासी कनिष्ठाक एहि घरमे लौक लगलन्हि ? हुमका कुझी गर धीमिकेँ अदरकर पडबाक हिस्साक २१७ तग्ह एहि ० म हमरा सभक संग विनवार सोपल पार लगलन्हि ।

मुजीमाबाली मुलकी चौरा पर धीव लेलैत बजलौह—पतवा डर छलाक त अदरेजीवासीक सभसि कानक भयन्हि ? नोगी हमरे लख मन हरही गुरही आठवनिह त भरि दिन छटैत रहितन्हि ।

रातु सभौर होइत बलहयन्हि—आठ मनिष्ठा ! धावी पद यकरा मक्क सलै छैक ? नहि त ओहन धनीक जमीदारक घेटीक छी इ श्रीक पत ओह म स्तरनीक घेटीक पर किण्क कुलि सेजक ? बिनु दामे जान रा हय बिज मेलाह ? नाह कानि छीकीक देखे कोन गुण छैक ? मुदित मिडलम पडैत छल । मारक आल सुान ब अजि—ता तथ ओकरा वेहक गुण की बुझबहीक ?

पुत्रोनाबानी बजलौह—बदलि त जगै गरि छैक । पण्डिताइन बलहयन्हि—बदो म्ब-मुक गहि कर मोहू पड लगलहै । जगत अपन दह । ओहिमे पहुँचि बालैत छीकीक ।

एतयहिमे मोटरक अजब ज सुगाइ पडल । सोन जग दुरखा दिन रोडभाह सलैत-बेसैत गीसे टोलक आठमाइ पछुआइ बाटे अजब जगै सेलौह । सपहयबासी अपना आठममे धाउर छटैत छलन्हि । ओ मूकर कौणकेँ रोडगीह । नाचवहदनी राहोइ उलबैत छलीह ओ बागवि पटकिं रोडगीह इनार पर ललैत बजलौह । र मबली-बाइस एकाटा सजमनिन धातिर आठ । होइत छलन्हि । पो पो मुनैत बेरी हुन मोटे लगका छोटि रोडगीह । सहजो पंगीकेँ नलि नलि होइत छलन्हि । हुनका बुझवयबाइ शम यगकेँ जग अलसनिह । एव पकाइ पण्डिताइनक आठवने मेला बाधि गल ।

तबत मोटर सरवाजा पर पहुँचि गेलन्हि ।

पण्डितान्न आत्माके तबोविय कण कहलबिह—आब सुभ-सुभ धए बली चलथु। पुतोहुके उतारथु।

आत्माके छली भइना लगलन्हि। मोटरमे ओहारे लागल होतैथ। एम बीनमे ननिजा बोब तनन बबबबि मुटकलि बैसल होइतोह। स सु मुह उभारिके लोबके देखला गन्ह। ननिजा लजाके ओध भूति लेतोह। मुने छिएक अहु मुदरि छैन। देखा जाही केहन पुह छैन।

एक मुह स्थिरगण सरोर फाइन ननिजाके उतारन हनु दरबाजा दिव विवा भइत। परबब बिबबिहम तहत अभुतपूर्व गटना अहित भेल से सब आइमन मुह बबोम बाडि रहि गेलीह।

नयन निजा चमकै चमना लगओन तथार माथ मोटरमे उतरलीह आओर व्यापीक स। घड़ी पर खटखट करैत नाथ आइमन पहुँचि गेलीह। आइमन आदि थोहिआ केनन्हि। ननिजा परमालीटी (अकिन्तव) बानी छलीह। सबसँ एक बीस जैब। दशोमा खूब भरल पुरल। माथ तारभुत जेवा रग उधइ करैत। पानिा दोसर। जेना वितरिषा बासनक बीचमे दूधटा स्टेनलेस कतहुसँ आबि गेल हो।

ननिजा अपन रिमोण बगमाम एक घेर बिहम दृष्टि दैग स्वामीने भबलीह—  
भूम न पहि काम किनबो चखैत नहि छलन्हि। दरबब बरा ननिहुँ त नीग होइत।  
मम आइमन अबाद रहि गेलीह। नयनबबबी नयनबबबीके घड़ी काटा लगल गन्ह, मागबहुबसी ननोमाधबीके श्रीमान् अपना मात दिस मबैत क कहलबिह—ई अहिक सामु बिबोह।

ननिजा अपन। वल्लेके वगममे बाबि हुनु हाथसँ अजनि जोड़ि रामुभ चरण काट कालिह। पण्डितान्न लजे कइना गेलीह। नीक जेवा ननके आपि लगलन्हि।

एक पर अग्याय तिननयक धधायोय अधिवादन करैत कहलबिह—अहो लोकनि उठि किएक छी? बैसह जाउ। ई काहू कनिजा आइमन ओछओल जतरजी पर बैसि गेलीह। पुन ननिवि दिस ताकि बजलीह। नहि एक गिलास उठा करबब पिउ उ।

आइमन दैग तर जीक काटए लगलीह। फेर कमज सभ गोटे सभबी पर आबि बैसैत गेलीह।

मुनिजा भीजीके करबब धए बिगबके कहलबिह—अहो लोकनि गुम किएक छी? सुभ सममे गीममार होमक जाही। नयनबबबी उठओलन्हि—

हे आइमन हए मम संकट विमुचन तारिणि ए—गीत त बैस टहकारसँ उठओलन्हि किनु सम्भारमे नहि रहलन्हि। अतरा पर अबैत अबैत बसिआ गेलीह।

बनिजा अरबत पामिआ वल्लोह पहि गीतके। ना लयमे बाबबके पहिभीक आओर अहुरसँ ताल दैत गाबए लगलीह—हे जे ग। उअह। हए सु। ज। वण्ट। सुभुभन। तारिणि। पुन सब मो रिग नाबि बजलीह—हमर डेट ना। न गानि दिअ। हम नतानाव ई एह बाबिमे मुना दैन छलन्हि। एहए ननिजा। तैत ना। समतौ तहि मम छलन्हि। बाइरम ममरम नौ। म। मुह भग गेलन्हि। पण्डित लो एम एक विज्ञाति। उठैत आइमने भोब पहुँचलन्हि। ओ ओर पण्डितान्न पर ररजैत बजलन्हि—पहि मात नाथ भग ररव अरणि गोभय म। रहत बाब? हमरा धरमे ई मम विद्वतन। नहि चलन न। ररि दै। छी। अहो नाबिनिने मम मम हो। न पदयोबजारीमे जा मम नाथ बकन। आओर ई आइमन लोकनि जे जमा भेल छल से। न अपन-अपन घर जाइ जाय।

ई बहेत पण्डित लो ओरसँ छलाम उठखटवैत बाइर गेलीह। सभ केओ भुल रहि गेल। नयन नहजो गी। निमनगण मम करैग बजलीह—बी। ज। उ। हमर सभ अओ धर चयन मरबबसँ मारि ला क। उठब? आओ बिह। मरारमे भाइठ भलि? ननी अहो मोचनि लेल किबुर बैस बैसलि रह। हम चमैत छी।

ई बहि नहजो बी। तराई कण बिब भए गेलीह। हुबबा उठितहि नमून नहजो। ना। ननि गेल म। काह बाइमे मरममरम ममानावतन पुलकडी उठए मरम। मरम। बी। ननि। ननि। छलन्हि—ह। ह। ह। जे समारमे नहि भेल छल से जाइ पण्डित। मरमम मरम मम हम मलार मरक भेलहुँ परम आइ मरि एहम ननिजा बर नहि बजल छलहुँ। नयन मम ना। गीत नलिन्ह।

ई सभ अनदइह मर। वल्लेक। नागवहबबी। नयन। बरम। वल्लेह। वल्लेक। मी। म। जितने अलि। लाज संकोषक एवो रली। छुनि नहि छी। जेना आइम पालन कर गेल होइक। एकदोस केहन? मसुरोह अलसर माथ अपलकी? रमबन। मर। रिपणी। कान। मरम—अहो कमवारि करैत छी। जे अहम मीक लज्जा विनन म त अपमहि महि छल आओर अहोके केवल माथे टा मुमैत अलि। नयनबबबी पुष्ट उठलन्हि—हम म। नाजे मरि गेलहुँ। अथन आधा जाली उपादे रहलैत त लोक आओ गरिहमे करत किएक?

मुममममम। पण्डितान्न करैत बजलिह—अहो आइ बाबि एहम फीगन चललैक अलि। आइमन मम जेना बर ग। नलि छी। जे बोच क। अओर मरम। रामवतीदाइ उठल क। रिप। मम। मरम। मम। फीगन। हमर। नाबिनिने रहि मुआमे मम मम होम?

पिण्डवादाधीन बजलीह—त हमरा लोबनि मासुर अलहुँ न सजो मास धरि केओ उपागियो नहि सुलतक । बीम बर मासुर बसला भेल तमापि ओकरन धरि पलटोक वापमे अनला माझी बजैत सकोष होए अछि । आओर ई न अचिति दिसै दुस-दुस जाणए लागि गेल । जेना श्रीकान्त बोकर उठर्यो होइन्हि ।

गुणक लावा टिपनिन्ह—अध्याया त छविहो हुहु गोटे बलकतामे छड़िह-गुण बी० ए० पास कएने छनि, एक्के कालिजरी ।

तमदहवाली बजलीह—ते न श्रीकान्तके विछु गुदनेत नहि छन्हि । एकपिठिया जेरी लवैत छन्हि ।

नलीया श्री संशोधन नरैत नहलनिह—एकपिठिया नहि पित्तिय इन नहु । श्रीकान्त ओकरा थागा छुछन तजैत छन्हिह । यदि ओ कसि नए एक थापड़ लगवन्हि त श्रीकान्तके छठि कए पानि पीबान होइ नहि रहनन्हि ।

महजो पीमो ममधन करैत नहलनिह—धुर जो । एहन मासुर छ कतहु माझी मिलए ! कीठ केहन बाकर सगी छलै जेना सुखेव पहलमान हो ।

गुणकलाप इ पक्ष नर ग्रहण करैत बजलीह—अहं जे नहिओष । परन्तु हमरा त होइ छल जे देहमे रहैएक । जोहग सुधर गठन सह सिनमे टमे देखैत छिऐक !

महदहवालीके छत्र वण लगलन्हि । समक यत नहलनिह ई अहा की बजैत छी । 'हम गम एवमा न सुधर अछि' पिलखीवाली कि ओकराई कम्म गोरि छी ? 'हम ई कहु जे ओ मेम जेकी फेरन धनधोमे रहैत अछि ।

गुणकलाप दल प्रतिवाच नरैत बजलीह—कवल भोज भेल नहि होइत छी । ओकर ग्रहण जे पानि रैन मे पिलखी छी एहि जन्ममे होइन्हि ? पीअर मुह गुड दल गमोला न नटवत । त । आओर ओकरा देखओक अगूर जेकाँ छलजैत अछि ।

तामदहवालीके ममि बेलनिह—ध्याय करैत नहलनिह आओर अहा कि सुखा क' मोनकना भए गेलहुँ अछि ?

गुणकलाप प्रत्युत्तर दैत बजलीह—मे साव जहाँ कसकपा वए जे कह परन्तु हम बात नहल मनै । अहाँ लीजनि केहने प्याथय जनिह छी । आपनन' उतेक दवा का निवा न' निहुका नए रहैत छी जे छिठछी बनि जाइ छी । पिण्डवासीके लिख । बीजमे कम्ममे प्रतिकट मिमकी बनि गेल छनि । आओर ओहि कनिआके बेपिओक । वारग बीजमे नम नहि होएत परन्तु उभाय न लताम धनम अछि ।

आव गमवलीवाइके नहि रहि भेलन्हि । बजलीह—हे राम ! बहुम सुदलओक । हमरा लोकनिक बढी पुतोहु ओना उतना आन त' छपकय न छपकय देखै ?

हमर कनिआ जे ओना लीय लग देखि कनिआम लागत त छोट लगकए छहु रूप कीहु कीचि लेबैक । हमरा त होइत अछि जे ई अजाति धीक ।

पिण्डवासीवाली नहुँ नहुँ बजलीह—आ वद । बूझ न हमरो धर्ममे हाह बाह आन छल । किन्तु उते नहि बलनहुँ । जे ई पुनन्या रहैत त नाए मिमओम नहि रहैत ?

गुणकलापार गफ इ देन नहलनिह—एकर माग कनमे बाज करैत छी । ओहो वराचरी बोडिममे रहैत आनि । ते' मायाकिक व्यवहार नहि बुझल छीक ।

महजो पीमो उमेकिक होइत बजलीह—तखन एकर माइयो देलाएल हनेक । कहन अमिया बह-का कए छहन बेटी जलमओलक से नहि कहि ।

तामदहवाली बजलीह—पिण्डवासे जे ई एवा अतिओ कुटलो अछि ए' मोहलनिह वराचरी जिनोष वरैत नहलनिह । 'म' न बिब हम केमनि न दिगमममे । ई न धृष्ट जे श्रीकान्तक छिद' ।

पिण्डवादाधीन बजलीह—वेटाके' रोवसनिह दिअक मे ? तमदहवाली कनिआम—आन न एकर बेटा बजैत रहैत छी ? अओर छोट भाइक मुइमे श्रीकान्त वृत्तआ न' लेलाह । जे धमिल जीके बूझि पछलन्हि जे अना एना बियाएत न श्रीकान्तके' कम्मनि कम्मला राखि नहि पवनिनिह ।

महजो पीमो अद्याय समाप्प करैत बजलीह जे दह' रजैत अछि तहरा एहिना हो । छैन उंग वराचरी नहल बुनैत नहलनिह । आन भिनु । तेहन कपाइ पर परवन्त छी जे लल पोधी बतवा पोसीह परतन्हि । हए लोननि, हमर बात बीरह रहि छैत । नहि ई 'म' क दिन पवइतमेव मरि पर नहि लचान' हमरा मम एवटा पुबुर पानि नह ।

राम भोजन बाल पण्डित जी स्त्रीके' कहलनिह—देख । अपना पुतोहुके' समार नहि न हमरा पान छोड़ गइत । पण्डितइत पक्षा हींरैत पुछलनिह जे दिअक ? मिमजी आ जे भारे उठै सकक पर टहला जाइत छनि ते देखि सोमे गम होइ । अ'र । पण्डितइत ओ कहैत छनि जे ओरो टहलमाक हिस्सक छन्हि । एहिसे मम कय वनेत छीक ।

पण्डित जी हमर नाक धर रहल अछि आओर ओ अपन स्वास्थ्य बगबैत छथ । आन हुनका द्वारे हमरा माछ भूमिओक माट बर भए आइत अछि ।

पण्डितइत देवाइत वराचरी—महदहवासे 'म' कहुँ ? कनेक अछि, मुनि लेख ।

पण्डित जी उंग दिअक मम बजलीह की बजलहुँ । हग बाबि मुनि लिख । आओर ओ अमिया पहिर कए छीमे गाम बुलस चुरपु ।



पण्डितजी वही परसत कहलथिन्ह—ओ कहत छथि जे सोम रात नहि बहरण  
जो ओना" लगत अछि । एही ठाम मुनीमानासी न हमरो मोरनिर्म भार पुन नहि  
बजैत छथि आओर नवरी कनिऊ; कान्हि स्कूनव भास्तरसँ गप्प कएलथि आब ।

पण्डित जी धारी पटकोन बजसाह—आब देग मन्हु पढ़ा जाय । भय मास्तरसँ  
हुनका कोन काज छलन्हि ?

पण्डितजी—भास्तरसँ हुनकासँ किछु बुझबाय मय रह । जखन श्रीमान्त कुन  
नाहि खेलन्हि त कनिजा बूमा खेलथिन्ह । ए० जी बजसाह—ओकाय हुनका सिक्क  
पर बड़ा रम छथिन्ह । जखन टीक धरनथिन्ह त कुन मयनथिन्ह । ए' ओम्हर की भा  
रहुन अ'छि ?

पण्डितजी—अहाँक पुतोहु इसराज बजा रहल छथि ।

पण्डित जी—आह इसराज बजा रहल छथि । कहिन्ह नवनीह—हाहिले बक कनि  
ओह जे एके धेर । पण्डितजी ओ सुनिबाके' सखा रहल छथिन्ह ।

पण्डित जी—ओ ओर रो दूर न रहल छथिन्ह ।

पण्डितजी नवनीह—आ, कि करबक ? जे होइ छैक जे होमए दिओक । अहाँ  
खाउ थोडे आओर वही लिअ । पण्डितजी ए थोटी छुहिनगर दही आगमि वैत  
पुननथिन्ह—आ ! एकरा खाने कह ? तामस त न होत ?

पण्डित जी—की ?

पण्डितजी मेहिवा मेहिवा कए कहए लगलथिन्ह पुनोहुके' रहि ठाम छापी बैसन  
नहि मन लगैत छथि । ओ आग पढ़ा चाहैत छथि । पढ़ना धरबासत पढ़ा केने छथिन्ह  
है छथि जे जुगाइमे नाम लिखाएव । ओना होमएमे रहलहुन वहीत छलन्हि जे  
बाबूजीके' रहलहुन जे एक छय टाका मास बेस बरताह ।

पण्डित जीक आग धरहार भए गेलथि । बजसाह—धरमे ओरी होएत ?

पण्डितजी—ते बिष्क ?

पण्डित जी—आब हम फाँसी तथा न मरि जाय । पुन बजसाह—फाँसी त  
गरमे ओही दिन खागि गेल अहिआ हमर कुलबोरन आहम ठाम भविष्य सेलए । एहो  
छमो हजार दिन रहलन्हि । अकोरमे सात हजार दिन रहलन्हि । लगभग आठ हजार दिन  
रहलन्हि । ते सभटा छोड़ि एहि इफासाबनीक फेरमे पड़ि गेलथि । की० ए० ओ कए कि  
लोक चाटत ? एकरा मनुकीके' उठा सलएह । आब छय दका मास दिनका

रा देव करिओह । ओकाय ओपर ठान बिबाह कनिथि त हमर सोस हल्लुक होइत  
जाइ अंबेत से अहाँक सोस हल्लुक करैत । आओर ई एकरा सोस गरदानमे  
बिबाह केने अएलाह अछि । धनकित त पढ़ि कए अएलाह हुनक थहु एम० ए० पास  
नए की करथिन्ह ?

पण्डितजी नवनीह—ते नहि बुझन ओही समीचीन ते' पढ़बा लेल एके  
छथि । रहै छथी जे जे बाबूजी छव नहि देलाह त हम अपना रहमा बेचि नए  
मयन ।

पण्डित जी गानम दही चीनी छोड़ि न बजसाह—ओ श्रिग हमर पाय खनबोले  
नहि रहली । हुनका जे मनमे अयान्ते मयन । हम हरबासत राट भरैत छी । आब  
थिना रामप्रसे हमरा दोसर उपाय नहि । यदि एहि ठाम रहब त फाँसी लगब' पड़त ।  
ई एहो पण्डित जी तमाजि मा हाथ छोड़' हेतु थिना भेलाह । परन्तु आहमसे  
बहर होइतहि किदमसे नटपटा ए० मय पड़लाह ओनहिमे थिनालाह अए  
हमरा फाँसी लागि गेल । पण्डितजी लापटेन नए दोइलीह । ए० जी अपना स्कूल  
नहि आबसें छोड़बैत बजसाह—ई रस्सा के ठाने अछि ?

पण्डितजी मयभोल होइत बजसाह—मिथ्या एकरा लेल केलाह छथि ? निरन  
रहैत छैक—बजसाह नवनीह—आब लगभग छथि ?

पण्डित जी 'बिषा' न' बजसाह—आओर गानम ओही रम सेहो केला  
जाओन ? बारिटा खुबना मकग । एहि जाओनमे जमा होएत छार हमर पुतोहु सभ  
भीतमे कृपनीह ? ई ए० हम नहि होमए वेव । लाउ एखमे सलाह करार कए रहि  
जाओन नवनीह । पण्डितजी नवनीह—आ पुन बयल केनीक त अही  
किएक नहीलाह छी ? सलू, बलान पर हम हरानि खुन लगा दैत छी ।

आधारातिक समस पण्डित जी, दलान पर कुतल रहथि । परन्तु निम नहि  
गवान । कछुमछु रहैत बजसाहके' गोहराव ललएह—हे मधुसूदन कोना ई अयान  
ओप परमे जगरत ? हे चकपासी, कोनहुका एहि जालके' काहू ।

पण्डितजी नवनीह—आओर पण्डितजी दोइला अएलथिन्ह । ए० जीक देह अगारि का जावत लगल  
आओर गहु, उठु ! अमर्ष भए गेल । पण्डित जी—ते की ?

पण्डितजी—धरमे कुतल छथीह । ऊपर बारमे जाय जसि पड़लथि । ओरमे  
हवाक नेन छनि ।

ए० जी—कोना बुलबुलके' ?



पश्चिमाङ्ग श्रौ० ज्ञ अपना अंगिमं देख्यपिचर , जोर गण्ड गृहमन लक्ष्मी ।

पर्वत नी हलचल गा उठे। पर्वत नी हलचल गा उठे। पर्वत नी हलचल गा उठे।  
 सविः सुहृद गात्रि चनि रहन छानि ।

भरि राति साउफुक भेल । अनेको हातर बैस आमाह । स्वास पछलिह ।  
परमु बसि जाके आसि नहि कुछ कहिह । ओ भेलन नमान नमोह माहिम बोरुन  
असम्भव । गुण नमोह देवादी दुख जे हनो पीछा लखनिह । अडोमिन पडो  
मिन बओता पमायनिह । स्वामी जे मास पर जात एग मुअन नेवाह गी गुमे नम  
गेलनिह । पछिन जी लोक अपके मज्जोभग मा नमोहिन आउ मनः की माह  
छह ? अर्थो उठाबह ।

श्रीकृष्ण कनिष्ठाक राजा पुस्तक, १ वंशान्त कापी और सेवक नामकी मन्तरी  
 वस्तु चिता पर सुजा दहनित । बैलै-दण्ड आश्रम मध्य उद्यम आश्रम कीकला  
 अथवा राजा राजास्य तत् पण्डित जीक अथ सुवचन हृदयगुणी का वचना ।

अभ्येष्ट शिक्षक अनामर पाण्डित जी घर अथवा त वही स्थिति में पाण्डिताइन शिक्षक रहाने स्थिति ।

परिचित थी इनका सखा हाए नहूँ नहूँ कहलसिन्हा—जहाँ बनी थी किरक के  
खीरानके दस हजार म कए दोसर भवना करत देखिनि । तेहेन कतिजा जानि गय  
जे अहाँक तरबा दसवैत रहत । ई न भूझ जे गारक नेस टरि गय । प्रगलान के रुई  
सधि से नीकेव हेत ।

पाण्डवानां कर्तव्य-कर्मैत इत्यभिहितम्—ओ कृष्णकृष्णसि एहि धरतः योऽहं भवि सखि ।  
 भवुभाक् सेतमे यत्तु केसर भगवत्क भवि । भगवान्मे भगवत्पदं वसवसि ।  
 उवाच मेरुभिन्द ।





अथ ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् ।  
 ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् ।  
 ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् ।  
 ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् । तत्र ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् ।

अथ ३५३ तत्र धर्मोपनिषत् ।









## सासुरक चिह्न

जोहि दिन सन्ध्याकाल पोखरिक घटपर सालघातीक जलघट खोल रहय। मामक नचयकचुन जतिक विवाह एहि शूद्रमे भेल छैन्ह, सासुरसँ दिसा भऽ कऽ अगल छथि। तसिक मित्रक गोष्ठी, नव जन्म, एकान्त स्थान, सन्ध्याक समय—एहन ठाम रसक सम्भ गति हो त हो कतय? जोहि मंडलीने तम केओ गढ़पचेरीक भितरे छलाह। अतएव गुप्तसँ गुप्त विषयक आलोचना निर्दोष भऽ कऽ बसि रहल छल।

शोकान्त वज्रहा - ही यार। जोना त सासुरमे सबक मानि-दानि डोड़तहि छैक परन्तु हमरा जेहन सोइत एत तेहन किन्तको नहि भए होइन्ह। जोडाजानपर सुतने रैन छलै कि भोरि दुधामरी बादाम किसिमिअ पहुँचि गइल छल। हम कतत हुरिगए एखन न भूल नहि छामन्ह छथि। पान्नु केँ मानेय? माय (सन्तु) तेहन छँहरि छथिन्ह जे भोजि पेट बूझ न जइमए घड़ोत रैन छलैन्ह। जंगल पिरकिय, फँखल अनारग, फँखल छजूर, बौखल पूआ, अपन माय कहियो एना कथी लप करतह? ओहि दम दिवसे दू बेर कऽ ओछओन बदलल जइल छल।

रतिकान्त कहलथिन्ह - पुनरिजोड़। येसी जगौड़ा बुनि करह। तोर धनिक सासुर भेल गेल ओहि ते एहि पने छलै बदलल जइल छलैन्ह। परन्तु हमरा मर्यादा सासुरमे जे अछि भएन से बहुत गोटोकेँ तिहने रहनेन्ह। हमर पिथिकरी आपने हायते दानि कऽ हमरा भुँहमे खोजा दैत छलीह। वैह त्याग करबैत छलीह। अपना जोगरसँ माय पोछि दैत छलीह।

कामेश्वर पुनर्जायन - केँ पिथिकरी उठुन की खस?

रतिकान्त गदगदक आर दनघन हमर मँछमरि। यय जइलहम

कनक गोटाक भुँहपर इया ओ गन्नाक लगेर दगह गनेन्ह।

कामेश्वर पुनर्जायन - दियोपुता भेल छैन्ह।

रतिकान्त अभिमानपुइक करनछिन। दुर छी। एहन चिमपुलाक कोन गप्प। एकदम चटलंगल छल। मुझर त हमरा हुनकर कान भद नहि रैन छल। अभेद जगल छल। जग बलदाक काय जे समझाउनि गवैत गवैत हुनकर ओंखिसँ नीर ब्राह्म तगलैन्ह। तसिन्हँ कागार बोखरि कऽ मात्रपर द्यरि गेलैन्ह। हम चदर लऽ कऽ पोछि गेलैन्ह। ते दसह, एखन धरि हाग लागल अछि।

ओ कालक दास राजनी हुसी पनि रेल शोषकानाके नहि रहि भेलनि। चाहे झपटि कउ छातीमे सहा लेलनि। रसिकता होय। (नायक) जहाँ भूत-दुग्ध लालन। ई देखि कामेश्वर बजलाह एतक गन्ध मने। हमरो मरमोजे कम दूनअ नहि छथि। एहन विनम्रिणी ओ चंचल जे की कहिओह। कहुकेत रहत उचीह। दान-धाममे राम परिराम। कहुओ हमरा जेनय नहि देलनि। जहाँ हाथमे पुस्तक देखिये कि ईने कउ पौके छथि। कहुकेत जेनदेम मित्रा छथि। कहुओ बाइक घना नहि कउ देखि। कहुओ घनमे भाइक दूकनी दउ कउ। कहुओ घोषा घोष कउ दउ माथीस। भविष्यत कोन न कोन कोनानी फलिने मरिषि। जेन एतविधिहा लयि। परन्तु ही बार। ई राम लखय नीक। जय मुन लखय अछि। जेनका कउन कहिनिहेन जे अपन किनु स्मरक दिख छ पापर पीक कउ देखिनि। ओ सूरकोसमे रखल अछि।

एहि पर लेहन पिहकारी पड़त जे सीसे पोछारि गूँजि उठल।

जखन हेरौक नहि कम मन न सीमनाशरण बजलाह। हमरा न सारि लखनिक मुख नहि भेल। म-भूम सामुन अलने जे किछ छथि से कम। परन्तु की कहिओह। एतय छोट अस्थाये एहन लखन नीक नहि देखन। एखन सोइहमे बदनर अछि। परन्तु हमने मुँहक कम करै छथि। हमरा करिय न जानउ जे सुन। से जाँने मजिसे। हमर तमटा परितोष करय लागि गेथिह। जिना अजना अजामे हमर पर पाछि ईत लखिह। जेनय लखन धरम से किनहु छेइहोह नहि छलैह। हम कहिनिहेन। किनहु एतक अजना होइत छी। त बजलैह। आज न पर चरण भाग। मरमोजे। जखन सेवा नहि करय न इ जम कोन माथक हेत। ही बार की कोन नहि। सीता लखिह। अछि परितोषक उपखान पदि हमरा लखन जय भउ जेनय अछि जे एखनमे हमरा 'प्राननाय' कहय लागि गेल छथि। एहन आज्ञाकारीणी स्त्री एहि युगमे भेटब कठिन। यतकाकास एक ठमल देलनि अछि जाहिमे 'बालमेषिका दासी' कउ कउ अपन नाम काढ़ने छथि।

दीर्घनायक सौभाग्यपर ककरो विशेष इयाँ नहि भेलक। केवल एक गेष्मक गेष्मे फकत दउ विगास धुलैन्ह। ई छलाह वाइध। हुनक निजदार मन मन कज हुनके बिस साकार भेल।

शोषकाना कहलछिन्ह - बाह बार। तौ न अपन हाथ किनु कहये नहि कीलह। तम मेओ समस्त बात कउ अछि अछि। नहि अछि सिवा कउ अपन छ। समु खाप नहि दैत छलहुन की? पहिनुहोरी बेसी ललनिछी भउ गेल छल।

सिक्कन दलनह - ई आज्ञाका ध्याने मन छथि। दुपय लख दम। भयंकर होइत अछि। ई जेहन केने देलाह तेहन केओ नहि केने हैत।

कामेश्वर - हिनक विषयक तौ नेपथ्य तराइमे भेल छैन्ह। तेहन-तेहन जयल्ल पहडी मरुति ओहिदाम होइत अछि जे एक-एक टा नोप बूझल। हिनका एक धक्का मारि देन्ह छ उछि कउ पनिओ पीयाक शेष नहि रहैन्ह।

दीपनायक - कहल बार, तौ सासुरी कोन धिक लखल छल?

परन्तु सहदेवक संभारता मन नहि भेलैन्ह। ओ जेना किनु कजारी शपथ छैने हथि। आज समस्त भंडनी हुनकापर लागि पड़ैन्ह। जखन बात कालमे लोक मोपप लखैन्ह त सहदेव बजलाह - पेश, कहैन्ह छिओह। परन्तु ई न लखल। एक न जाय संगेदंगे नहि करैत जाह। दोसर जे ई गम कतहु बलिहउ जनि।

तयपुवक लोकनिक हृदयमे मुदमुदी लखल लखैन्ह। बजलाह - ताहर शपथ दउ छिओह जे कतहु जाओ। परन्तु रुमटा घन होनि कउ कहय पड़ैन्ह। एको रसो छपैलह ते दूडा जल।

सहदेव पछल ओकर ताकि कहय लगलछिन्ह - हमरा तौ जेन भन मन कजारी नहि भेल हैतक। ओ बात कहय योग्य तौ नहि छैक, परन्तु जखन नहि मानैत छल तौ नहि दैत छिओह। हम तौ तेहन फाँये पड़ैन्ह जे जाने जाय समस्त। परन्तु मुझ तौ अपने करीने।

शोषकाना इवाह रीति हुनय लखलाह। सहदेव कहय लगलछिन्ह - हम प्रथम रात्रिमे हुनका स्वीधर्यक उपदेश देबक हेतु एक स्त्रीस (भामन) तैयार कउ कउ लउ गेल छी। भावाय ई जे अयलकै सबला धनक राखी, आहिने कोओ बलाकार नहि कम सकय। जेन-धाम रायय देवाक घाडी। जामोक रात्री लखैन्ह। जेन परलक। जेनमे एह जाहिसे आक्रमणकारक दप दूने भउ जाइह, इयादि।

आख्यान पहिनुहोरी रलन छल। अलख एक दुरमे कहि गेलैन्ह। जखन हुनका मर। सुनल कउ नैन्ह। न मुसुनिया कउ बजलैह - एतय रलन अछि कि और किनु।

जे बार। ई सुनिहोरी हमरा ऊपर बी मन नहि अछि जेन एक रात्रि मे रलन छैक। हम देखल जे ई पहिले पाता जमटा जा रहल जाइ। जे प्रथम रात्रिमे मुदमुदी मन न परि जय पड़ैन्ह। जेन छल। तौ छपटि कउ कालमे रलन गेलैन्ह। जेन ई मर। मर। हम अपन अलखसे कहैन्ह अछि।

ओ नहि कउ मुदमुदी अलख देखल - अलख अपन अनुभव किनु नाइ जाइ। काल पथिक यत रहने छी।

बात त पथिक, किनु ओकरासे हारि कोन मानैतहु? हम अपना पीछे लखैन्ह। कसिओक - अछि लोकनि जेन तेह छी। मुख्य जे शास्य से कम सकैत अछि।

हम पत्ने विचार। जे दमपक जीवनक आदिमे हम बरल्ल कउ जाय। जे जाइ कउ ई स्त्री हमरा की गोदाननि? ऐखन एकज तैब कउ साधक वाडी जे घरद्वार गति धीन रहय। जेनका दम। जेन तमटा बजलैह। अलख परल। अलख मर। जेन। एतय जे जाइ। तौ अलख हम लख सकैत छी। जेन मर। हम परल। जेन। अलख अपनको वरा सकैत छी।

परन्तु अलख तेहन अछिछिन। तुरन्त छटि गेल। भागति - अछि दुरे हमर किछु नहि भउ सकैत अछि। कउ कउ देखि लिपल।

लोक मर। जेन अलख सुनिहोरी हमर समस्त पीछे लखै उठल। जेन कसिओक - बेध तौ तैयार भउ जाइ। हम देखि छी जे अलख ओत उठल छी।



ओहो अहि देख। घबराति - बेड़ा, तँ सेही परीक्षा भइए जाय

इ कहि ओ तनि कऽ दाद भऽ गेलि

इम अन्तिम बेगावनी दैत कहलिक - देख, हम कोनो दशा धौकी कहि  
नयन

आम ओवर कसेन दाजलि - सखन हमई किछु छज नहि पछम, से कहि दैत  
ओ पाटी कऽ हमरा दोष नहि देब।

तँ ओ, एहन शनगति स्वीत हमरा भेट नहि छल। हम कि जनेन छनहुँ जे ओ  
तरिवाँ अछाड़ा रोपि दैत परन्तु आय जखन एन भऽ कऽ बराबरी भऽ गेल तखन हम  
पाटी हरे छी केन।

हम लज्जि कऽ आयँ दड़लहुँ। पान्नु ओ चट ललटेने मित्रा देखक। आय अन्तरमे  
पेटय भाँखल। हम देखल जे ई गेलहुँ अहि। पहिल धाम छक दलक। एहि चतुर्थास  
पार पण्ड कठिन। परंय आय हरि कऽ मैसि गयी सेहो तँ उचिन नहि। जखन रग ठनि  
देनहुँ त अपन पुरुषार्थक प्रभा गहव जखी अहि।

हम धाक काल दो-दो कऽ ओकरा तलक सगलहुँ। परन्तु जाकत एक कोनमे गड  
तवन दोसर छानाँ छिनछिनल। धुँआँकाल धरि पैर चरिवाँ भइल। धौन रहल।  
ओ हमरा गेल छेल कऽ बेदम कऽ देखक। अन्तमे वडीकाल धरि मुदया कलम होइन  
होइन जे अगिठि छलैक। हम गरीब कऽ बौलि कऽ गेल। पान्नु आ चिन्नी जकाँ  
अपन बौलि छोड़ा कऽ घट कऽ हमर दुनु गड पकड़ि लगल।

से पार को कहिओन स्वीय हाथ जाइन सखत भऽ सकीन छैक से अनुभव  
हमरा गेल छल। तखन भाग्य बदलक कऽ देखक जे हमर दुनु हाथ सकसज भऽ गेल।  
आय हाथ कजिअ करि ओ हाथ धुएये नने करि ओ। ओ ओ हमसे मस होमवानी  
नहि।

मम बहन जोर लगाओल। पान्नु हमर गारा गड ओकर तखन नदीमे तला कऽ  
कल गेल तला केँ ओ लोडक हथकड़ी पहिरि देने हो। हम जोर प्रदल करय लगलहुँ।  
परन्तु एत छिनहुँ घमने नहि होय। हम एक बर जोर लगावी त ओ मया भऽ जोर  
नला कऽ दूधि दीअय।

आय को हय? अपन पुनतापर गेलताब होमरा लगल। जहाँके एहि गेलानेन  
होकोलें पिनलहुँ। ओहो भयन एल कठमन देह। एत एत मंगल लाहिरि दाँड कऽ  
हयरा मुडक दैत। हम ज ई जामन भुअ नहि जुआल लखी सीक - अधरये दमी  
बनगि हल। परन्तु पहिने त ई बिचारल नहि, ओहि भुनि कऽ तल टोकि देल। आज  
खन जे अपन दयनीक तला दलअय लनि गेल तखन एकर छिनछिन दूध धरमय  
लैल।

गहव सांगलें दैमी मीर गेल छैक तँ इष्टदेवता स्वरय होइत छनिह। हमई  
मलाजोर मारीहें ओकरा कप लगलएल। हे बरमवनी। आय समरा प्रतिय अहाँक  
हाथम अहि। ओकरा धरम-माराद। एहि विषय। यदि आद रति एकगरी हरि गेलहुँ

तँ हरि जन्म हागने रहय। त साँरमोचन। कानहवा एहि मङ्गलें जचि विषय। यदि  
एहि पाहोरी केनाक एत नाहिरा छोड़ा दलई तँ कानि अहाँकेँ रोड-तडु घड़ाएय

परन्तु आज कलानेनार कऽ मनि पनल। ओ पूवयन हमर दुह पहुँचा पकड़ने  
कहि रहल। अन्तरमे मुह तँ नहि सुख परन्तु दुहि पड़य जेना ओ हमर बिबशतापर  
बिबुसि रहल हो। 'आय तहाँ दलदल पिल थड जखन उहाँ हागल नर दलदल'।  
आय ओ पुण्डक को दल मय हो तँ हमरा कहीमें अपन हाथ छड निगऽ

से पार हम त लजे मय लगलहुँ। इ न वह परि भल त कर्मयोग भापुकेँ नहि  
छडय। हमरा विश्वास भऽ गेल जे आद भार रति हमर दुनु हाथ पारेन ध-हजी तल  
जल ओर सखन घटलपर दिहिकने दह एहि बोगाँकलें बरमवक हेतु गलामें  
निजि खलकल कऽ सकन दलदल लगलिन नहने आ कऽ हमर 'पानी बूटन'। पान्नु  
एतदा खलकने हमरा दशा ओ गलन

हम हाथ छलैक अन्तिम नय करि पान्नु ओ ननेक। एत कानि देखक त हम  
दिहिया छलहुँ। ई भुनि ओ बरमवक दल मय हाथ ओर दलदल ओर सखनक स्वागे  
लानि।

तँ को हम तँ कहि कऽ एहि तँ गह। ओ पूवो कहि जाइत तँ मीर मया जैमहुँ  
अय कल मीरम। मयार जल लोडक। परन्तु कर्मवैष प्रथम होइ छैक। तँ गलदलप  
लनि कऽ किछु न कलम एन। परंय एकर तँ ओर दुदश सिखन गल तँ कल  
वृद्धि भऽ गेल

हम हेर जकाँ पुन। लइक हेतु गल टोकि देल। ओर दलि रति उल्ल। हम  
भाकि कऽ ओर दल हाथ वदलक कि आ कऽ विजिनी जहाँ गलन चर हाग  
गलन लगलक जे कल हलकल दल अलिअ ओर कलम भऽ गेल।  
खपर-बाप। ओ घोट एहन धरि नहि चिमेल अहि

परन्तु ओकर कने दोष। ओ त अपन सतीत्व-नशा कल कऽ दखनेन अहि। तल  
मिमम। मीरम

हम कऽ पुन। हाथ धरिअिक कि एह कऽ मेल मुक्का पीठपर लगल जे हम  
अमहि बैलि गेलहुँ।

मूला स्त्री! एनेक जोरसे मुक्का लोडक कोन प्रयोजन छलिक? हम कि लमिण  
मलाकार करक घलैत छलिक? परन्तु ओ युलक मकली मडल जकाँ छलमन हरि  
भावयवली नहि। हमई दूत बरमवक कऽ छलने

हम दलन जे लो। लल लल दलन रहल तहाँ काल हमही दूरीमे रहल। एक  
दो तँ मलम भामन तँ लो दिहिक। तँ लोभन। ओर पल्लम पास भऽ गेलहुँ। आय  
दल चामलें दलक। पल्लम गल। ओर ओ धलदल कलन कल। अहाँ पानि विष कऽ  
छलिक, एहिमे हमरा रममन लदेह लो रहल।

परन्तु मुहसे एनेक बरमवक ललस नहि धेल। पुरुष भऽ कऽ स्वोत रसजय कलन  
स्वीकार करिहुँ - सेहो अपन स्त्री।







विशेषी तम कलकलत दुःख धम न आहत मन अधि कः, हसत सभके उर  
किष्क नहि द हृत्।

ज्योतिषीने अथन कलकलत चक्रवर्तु हसत धर्मो वीरन केन वन। अथन वान  
येन हाथ धरेन सकथा भारि ईतक।

पं जी पुनरुचिन्त - अथन अथिक् लामने सभके धम्पु हो कः नः नम और  
असकै एव नहि कः भेन

अथिक् लामने कलकलत अथिक् लामने को कः ही अथि कल नम नम नम  
नमि नम । एव वर कः नहि कः नम । इ सार कः नम नम नम नम नम नम

इ कलकलत अथिक् लामने कलकलत अथिक् लामने नम नम नम

प जी एकटा धर्मिण अथिक् लामने - मुनिजी । हसत अथिक् लामने नम नम  
अ नमन सभके असकै रहि। हुनका अपन अधिपति किं वेशी दाकी रहि।  
कलकलत - 'मामा' मुनिजी की अथिक् लामने नम नम नम नम नम नम

वने वर नहि लगेत अथिक् लामने । आब हम आबि येनहं । देख, कोन धोर धकड़न हो

मुनिजी एकटा धर्मिण अथिक् लामने अथिक् लामने नम नम नम नम नम नम  
हसत सिद्ध रहि । मोड़, मुंठा और साठी । हुनका एतलें सोकके धुन भर भनक।

हो कलकलत अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

विशेषी जी मंगलर ताव हन कलकलत - वल, हम धिक् लामने नम नम नम नम नम नम

नमन धर्मिण अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

पं जी कलकलत सभ गट खूब गवगव रहत । अथन न हो न सभकि न  
अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने

अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने अथिक् लामने













## दरोगाजीक मोह

[illegible][illegible][illegible][illegible]

परन्तु अङ्गनम एति तद्वत् रंग-रूपस्य दोग्धेयत्वं प्राप्तं तत्र एवमेव यत् इमं  
निगम्यते तद्वत् इति चेत्, इत्युक्तम् ।

यह सनमान भूतक डेरा। संज्ञा ऐसी है कि ज्ञान प्रकाश दाता हो नक्त  
दिने। अथवा यह एक कदा वृत्त्युप शिखरीय धैर्य औरना कागद पदधना एव  
काल, गहन गतिनं दसगात्री अधिका त्वन्म से नृसक दक्षमं जातीय ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पंचमा कृत्वा शिख - शान्तिं नहि व्रजेयन्, त इत्यर्थे मर्त्ये देव दिव्ये-२

दशमगुंजी फेर सज्जामाह - १०

परन्तु इनके मनमें रहित भइ गेलौन । जकार एहिने कोनो रहस्य हैलौ । विवशवति  
पुष्पम्य भाग्य ईको न जानाति कृतो मतलब ।

अंग्रेज दिवसों में और विशेष रूप से मातंगान गढ़ में गणनायक नृसिंह प्रसाद  
गोहिलजी महाराज की स्मृति में एक दिन का दिन मनाया जायेगा

एक गति संज्ञा अस्ति सम्मिश्रित अर्थात् १५३ गति गतेन अस्ति कला कियेन  
अस्ति तेन गतिः

द्वितीय गोर फौज ब्रह्मचर्य - पैर गोंड त गोरफौजक शान छेउ : ई गाली  
 दिन ब्यापत जाहि दिन हमर क्रमुसी फौज कट जायत

परन्तु नीचगोत्र नरको राक्षस यऽ योषीक-एकः  
 ॥ इत्युक्तं किञ्च भण्डः ॥

रामायणक मन्त्रे लन्देहक भूत जाय गौतम । तदि दिनते श्री जीत गोकस अ  
 नन्द आय विह जम्भी गायगा कय दामि । इ त्यत पञ्चम ६ न नहने रहत अति  
 की कर्न अति

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई  
महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई

२. निम्नलिखित सिद्धांतों में से एक को चुनकर अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करें।  
 (a) अज्ञान ही दुख का कारण है।  
 (b) अज्ञान ही दुख का कारण है।  
 (c) अज्ञान ही दुख का कारण है।

अन्तर ५००० मी. पर्यंत वृद्धि होईल असे अंदाजित केले आहे. या क्षेत्रात अनेक प्रकारचे वनस्पती आहेत. या क्षेत्रात अनेक प्रकारचे वनस्पती आहेत. या क्षेत्रात अनेक प्रकारचे वनस्पती आहेत.

महाराष्ट्र सरकार  
मुंबई

१९५३

१. गौरीगढ़ बस स्टैंड, गौरीगढ़, जिला गौरीगढ़, जिला गौरीगढ़, जिला गौरीगढ़

... ..  
... ..  
... ..

7. The following are the names of the persons who have been appointed as members of the committee to investigate the charges against the President of the United States:

(a) Mr. J. Edgar Hoover, Director of the Federal Bureau of Investigation

(b) Mr. Clegg, Chief of the Bureau of Investigation

(c) Mr. Glavin, Chief of the Bureau of Investigation

(d) Mr. Ladd, Chief of the Bureau of Investigation

(e) Mr. Nichols, Chief of the Bureau of Investigation

(f) Mr. Rosen, Chief of the Bureau of Investigation

(g) Mr. Tracy, Chief of the Bureau of Investigation

(h) Mr. Egan, Chief of the Bureau of Investigation

(i) Mr. Gurnea, Chief of the Bureau of Investigation

(j) Mr. Harbo, Chief of the Bureau of Investigation

(k) Mr. Hendon, Chief of the Bureau of Investigation

(l) Mr. Pennington, Chief of the Bureau of Investigation

(m) Mr. Quinn Tamm, Chief Justice of the Supreme Court

(n) Mr. Nease, Chief of the Bureau of Investigation

(o) Mr. Winterrowd, Chief of the Bureau of Investigation

(p) Mr. Mohr, Chief of the Bureau of Investigation

(q) Mr. Casper, Chief of the Bureau of Investigation

(r) Mr. Callahan, Chief of the Bureau of Investigation

(s) Mr. Conrad, Chief of the Bureau of Investigation

(t) Mr. Felt, Chief of the Bureau of Investigation

(u) Mr. Gale, Chief of the Bureau of Investigation

(v) Mr. Rosen, Chief of the Bureau of Investigation

(w) Mr. Sullivan, Chief of the Bureau of Investigation

(x) Mr. Tavel, Chief of the Bureau of Investigation

(y) Mr. Trotter, Chief of the Bureau of Investigation

(z) Mr. Tele. Rm., Chief of the Bureau of Investigation

(aa) Mr. Holmes, Chief of the Bureau of Investigation

(ab) Mr. Gandy, Chief of the Bureau of Investigation

प्र. १०. यदि  $\vec{a}, \vec{b}, \vec{c}$  एक-परस्पर लंब वेक्टर हों, तो  $\vec{a} \times \vec{b}$  का दिशा  $\vec{c}$  के समान है।















## विकट पाहुन

भायक राति। रौंदेसैं जे झपसी लधरक से कापस बढिते गेल। जखन  
रात बने गइली भिन्ना गेलैक त सम्पत्त होइतल अन्तार धूप भऽ गेल। घण्टा कात  
निसल्य। केवल फूरी झहरबाक स्वर एक तालसैं गीनवता भग चरैत छल। हमरौं  
पुरुषक कैं सीरम मे राखि निशदेवीक आवाहन करत लगनहुँ।

वधैक झहर-झहर शब्द सुनैत कछन अछि मुन बेल से पता नहि। एना एत  
तल धरि स्वप्नरज्य मे विचरण कैने हैब कि नीच कंधा पर खड़े एक शक्ति नींद  
तूटि गेल।

बगल बजे राति कऽ के एना केवाड़ पंढि रहल अछि? जी अक्कल भऽ गेल।  
नीच उल्लाह बऽ देखैत छी जे दरवान ठाढ़ अछि। पुतलिक - क्या है जी?

ओ कहलक - चार दो ताबू आये हूँ है। नाम नहीं बतलाने है। लांका जलते  
है कि तुम से बहुत जरूरी काम है इतनी बात मुनावन चाहिए।

हम किछु छष्ट जकौं भऽ कहलियेक - कहा क्यों नहीं कि सोने हुए हैं?

दरवान बगल - बहुत कहा कि सुपरेंटेंडेंट साहब सो गये, कल भाग में  
अकर मित्रपण। लेकिन बिगड़ने लगे कि अभी कौरव जग मे, नहीं तो बहुत  
नुकसान होगा और पीछे साहब तुम्ही पर गारा हो जायेंगे।

हम सोचने लगलहुँ, ई के व्यक्ति एहि जे एहन दिक्कत रातिमे, एहि मुन साधारण  
धर्मक नाम एना ऐबाक कष्ट उठौने छथि? हमरास जे एहन जग मे कार्य छैक  
के नाम, एतना कोनो अनिष्ट संवाद लागल अछि।

एक बेर अज्ञान आशंकासैं देह सिहरि उठल। कहलियेक - अच्छा, जाओ  
ले आओ।

मुन मन के बुझबय लगलहुँ कोनो विद्यार्थीक गजियन होइकिह। तैतने  
भाहर दरवाजा त हैतैक तखन त एहि दरवाजे मिजैत-नितैत बारह बजे राति कऽ  
आइतल हूँ।

छी सक-विनक मे छलहुँ कि जोरमें गजैत भेल। सम्पूर्ण होइतल हठक  
आवाज प्रकाशने देखैत छी जे धरि ए जेम सत-सत व्यक्ति आये रहल  
एकर एक गेटा आगौं बाँडे पड़ल ह। जी! अपनहि पापेद्वार धरि  
आइतल हूँ कि ने? नम-भुक्ता गभ निकै लेक? हे हे हे हे

एतना बगल कुण्डित भऽ गेल। ई के महामुभाव धिक्कत जे एहन भगवत



निशीथने अवाधित कृपा कय एतेक प्रार्थना करी रहल छथि। धुनो मन पाइलैन। ध्यानमे नहि आएल जे एतिसँ पूर्व जीवनमे कतिको हिनका देखल होइन्ह। जमना एतना बुझबाने भाइल नहि रहल जे ई केओ असाधारण व्यक्तित्व लोक कृपा करि आब हमरा और 'परमेश्वर' मे केवल शीन स्थिति अन्तर रहि गेल अछि।

हमरा असमर्थतामे एतल देखि ओ स्वयं उत्तरमे कहै - हे-हे-हे-हे। अपन जे किने से हमरा नहि चिन्हल हैद। चीन्हा कोना? कहियो देखने रही लगल नै। हम अपनेक गहिराईमे जे किने से साहूक दासओ भाइ होइन्ह। हे-हे-हे-हे। हमर लोकनि पिंड देवक हेतु गया ज रहल छ। काहू भागो गइल भेटत पत लगल। अपने बाँकेपरमे शुनरुट छी। लगल कि भेट केने कोना जइहु? हेरक पत लगल। लगल। एतेक राति भऽ गेल हे-हे-हे-हे। ई हमर वैभवाय भय छथि। ओ ओ हमर सरबेटा धिकाह। ईहो लोकनि अपनेक दर्शन करक हेतु हमरा संग चलैलाह। और ई हमर बालक धिकाह। हौ, प्रणम करहुन।

हुनक सुखेय पुत्र अन्तरमे हमरा विशि दख तथ्य। जिनका प्रणम करक हेतु निहडलाह कि हुनका अन्तरमे भेदहीन दितरिया लहर बहर भय डलल। हमर पैरपर खसि पडल। चोटसँ जे लोछि गेल। भौटा धुनल गेल। एहन विकट प्रणामक आवाज कौ दितिन्ह? सिमिया कऽ रहि गेलहु।

हमर लोकार सुनि हुनक पिता बजनाह की आने केँ घेरी दोट त ने लागल। पुन अपना बालक केँ फलति करि कलकियन्ह - तो बड़ दूडि छ। मोटरियो रखवाक सुरि नहि छीह। जहिने मोटरी राखि लिहल लगल प्रणाम करि रहल। ई कहि ओ भीजल छना और मोटरी देखलक ऊपर रखि देलन्ह। पुन अपन भीजल दोलीक लोकी गइल अमना दल दिसि राखि बजलाह की हौ। तो सभ त नम्र जकाँ भीजि गेलाह? हे-हे-हे-हे। हमहुँ भीजि गेलहु। अब पहिचय की? मोटरियो सभ त भिजिए गेलीह।

ई कहि ओ बलहँसी हँसय लागलाह। ताबत दरबार सालटेन सोरि कऽ नेने आयल। प्रवेशमे चारु अभ्यंगक भीमकाय भूषि देखल।

सभक देह लघयथ। घेनासँ घनि धुवैत। देखलपर मजरी पडल न देखित छी जे भीजल छातक जलसँ सनसल शुष्क फइल भइ भऽ गेल अछि और मोटाक भारत दायात उनटि कऽ फल्ललसरिता बहा रहल अछि।

ताबत पातुन हमर उपकाराथ अन्तर सभक नामधली कहि सुनीलन्हि - स्वामी भीमेन्द्रनाथ, वैभात्रेय गजेन्द्रनाथ, बालक गजेन्द्रनाथ (ओ गजेन्द्रनाथ क एतिसँ उच्चारण कैलन्हि जे हमरा अधिक सुखान दुहना गेल), ओ सरबेटा दिगम्बरनाथ।

आब ई चारु नाथ पहिचान की? एकटा फल्लि धोती रहल से भीमेन्द्रनाथ केँ देखिन्ह। गजेन्द्रनाथ हगदहल लुपी लपेटि लेलन्हि। गजेन्द्रनाथ केँ एक पुरान ए

हमर कय देखलन्हि जे हुनका घुटनी मे एक बोन छारे रहि गेलन्हि। हुनका देखिन्ह। यह गलाह। अन्तरमे कहलन्हि मोटरी मोटरी हुनका पशोक इनि पाग। आब ई लोकनि महादेवक शरीरमे दल गेलाह।

हमरा दरबार ओछाओन सँ रहल एतेक न पातुन अन्तरमे - अन्तरमे त हे-हे-हे-हे। हमर सभ सभे आसहुँ अछि। एकरा पारल दरि मे मोटरी बाजल छैक। की भौक? की हैनकी? एके रातिक त बान! फल्लु पंड रहि जाय। हे-हे-हे-हे।

दरबार कानन सभ रा बड़का मनजी अनि विचय होलमे ओछा देलन्हि। हमर लोकार सुनि हुनका प्रणम कला ओ अपन काज पर चल गेल, और हमहुँ ऊपर दल गेल।

हुनक लोकी चलल हैथ कि पाडासँ पहुन पडै छथि की अपने भोजन त हुनक नै केने हैद?

क वने रहि जे। एहन असभ्य प्रश्न सुने हम अचक रहि गेलहु। परन्तु हुनक अन्तरमे तथ्यमे भइल नहि रहल। पुन गेलन्हि की अहाँ लोकनि बिनु भोजन छ।

रात्रि पर पातुन जे उत्तर दैत भेलाह से सुन - हे-हे-हे-हे। एखन कोन अन्तरमे दल गेल। हुनक ई नीनु मोटरी। किछु जलपल कऽ लेलाह। हे-हे-हे-हे। हमरा त भौक भौक अछि। एके ओ जे हैनक से छा लेव। हे-हे-हे-हे। ओ धिकाह। ई मोटरी बाल केक? की छी गजद! हम कदनिओह नै जे ई बिना आग्रह केने नहि भइल, बइल। एह ठान कोन सज्जन नहि। तकर त धर छीह जतए करि जाह हे-हे-हे-हे।

आब एति हे-हे पर हम सुनय कोन जाय? तबतस अपना कोटरीमे निसभेर जल रहल। तकरा जा कऽ जाओल और छात्रा हँसल दऽ कऽ बाजार पटौलियेक। मोन पण्योर जहिने देह दले रहि कऽ कोन अभंगल शोकल खोसि कऽ बैसल। केने? आब प्रशोक बल ओ छप-छप करैत, खाली बाय घोषित, फिरल आएल।

अब कोन उत्तर हो? एक नाथ कहल नहि जाय। धरि-धरि या नाथ! ताहिमे जेहनाकनय किछु गज चतुष्टयम्।

भल्लि केँ उल्लि कहि ओ अन्तर मेहिअ अछि कऽ कडलक जे सरबार, य नै कहल। एखन जे कोहला पजारवाऽ त भोरे भऽ जैतन्ह।

अब कहियो। अब हम करि छी को? पातुन न सँ केयो कनेओ औघाव दल। एकरा एतल गेल त कन्हु पारदय अछि कऽ सुनि नहि रहल।

अब जलल सभ पातुन अन्तरमे देव लगल - कोनो दिना नहि। एकरा सभ किछु खिवा-पिडलक वस्तु अछि की छी गजेन्द्र? बाहर करह। एकरा सभ दू छारे पक अन्तरमे अन्तरमे हे-हे-हे-हे।



एक त त्रिकोण प्रदान। तत्पश्चात् उदीपन समग्री। अग्न्या  
लालटेन सय मंडारधर गेह, एतत् वस्तु यत्नान्ते आपत - एकटा अधपक्व कटहल  
एक कटहल केरा एक बोलल कुत

परन्तु फिर कऽ देखेन छ। त चार पट्टन ठाह। हम रामदहल के पुछनिरेक  
देखनी तऽ ई कटहर खैलक बाय भेलक अछि।

ओ लज्जाले करेन छल कि पाहुन ओकरा हाथसँ कटहर उचड़ि क  
कहलथिन्ह त की बुझयबिब? एकर ला बाह। खुब समझेन छै। एगो  
खजक को चहरीतक। की तौ गजेन्द्र।

ओगनापर चमक झटक अर्धत रहैक। तै भदने घरमे एक थिरे आसन-पा  
धरवा देखिएन्ह, चारु गोटे इधर पड़ी के हंगोपन रैलैत गेलाह। बीचने कटहर गति  
देत गेलैन्ह। जाबत रामदहल धारी-वादी मोजि कऽ खनय-अनय नावत कमरी लगे  
सभटा थोआ साफ। केवल, ओड़ी और मेड़ा मात्र शेष रति गेलैन्ह। भीनेन्द्रना  
सरवेदा दिसि ताकि बजलह - आब की छैनह! केन?

दिगम्बरनाथ कहलथिन्ह- हँ पिउसा, केरा त पाचके हैत।

किन्तु धारि-धारि छामसँ को हो? ऊँटक मुँह मे तीरक फोरन। सरवेदा  
दिशि ताकय लगलथिन्ह, दिग्गम पुछलथिन्ह - को? कखयक मन होइत छीह?

ओ बाबा हाथे डारि-डारि दोड़न हाथे पुतक आरवादन करय लगलह। घटै  
घटैत चारु गोटे सभटा घुल घट कऽ गेलाह।

हम देखल जे पाहुन लोकनि धुआएले बैसन छथि, केओ उठयक नाम नहि  
लेत छथि। उदरकुडक जटगमि-जटगना पुतक आगुनसँ और कुछ भय भेला सात  
जिह्वा शफतपाय मोगि रहल छैन - हँदेष डेह, रमिय दैत।

आब हम और हविषा कतयसँ आनू? दबाक आगमारी मे एक हिक्क  
'माल्टेड मिक्क' रहय रोहो धेरि कऽ चारु गोटे केँ दऽ देखिएन्ह। किन्तु ओ  
चरणोदक सँ की हो?

तायत ब्राह्मणदेवताक भाग्य देखिऔन्ह जे भेसक एक हलुआइ नमकीन धन  
कऽ बेधैत रहय से एक पलेरी शान्तेर बना कऽ रखने रहय। ई पता लगैत भरल  
धार ओकरा आतय सँ भडका लेल गेल, एक धरिका अमैट पाहुनक मोटरीमे रहिन्ह  
चारु गोटा अमैट घोरि, ओहिमे दलमोट गनि-सनि टुनिपूदक कीर बाय लगलह।

जखन सम्पूर्ण परान साफ भऽ गेलैन्ह तखन भीनेन्द्रनाथ हनर तोपसँ बजल  
- हे-हे-हे-हे! ई जलपान की भेल जे जल भोजने भय गेल। की तौ गजेन्द्र! अब  
तोरो लोकनि केँ ततोक भूख नहिइ कैतीह?

ई कहि ओ पुन हे-हे-हे-हे करय लगलह। अन्तमे हारे पराजय स्वीकार  
करय पड़ल। कजालेन्ह - त देश, आब अपने लोकनि अघाअन जय। दू सँ ऊपर  
भेल। हमरो अज्जा भेटय।

हमरा सवेर ई एकटा रिपोर्ट लिखलक रहय तै ऊपर जा सुनयक उपक्रम  
करय लगलहुं। गजेन्द्र तथा तथयक लग क्रमशः बढिने गेलैक। सुनैत पड़य जे आइ सीसो  
पटना दसा देत, अजइ बजे गनि कऽ जे पुन बिछामेनपर देखुं त बहोरा भऽ  
पड़लहुं। किन्तु भुक्तिमगँ आध घटा दीनत हैत कि ककरो बज सन कडार हथक  
समरा नई उचरि गेल। हम अचचक कऽ छहपम लगलहुं कि 'ओ परफेक्टर बाबू!  
हम थिकहुं' ई कहि पाहुन हे-हे-हे-हे करय लगलह।

हनर त देख जेरे गेल। तथपि सभ्यताक रक्षा करैत पुछलैन्ह - की थीक?  
पाहुन बजलह - हे-हे-हे-हे। नीचा लालटेन मिझा रेलैक। और हमर सरवेदा  
दिगम्बरनाथ जे किन से मदी दिश लेतह। एहि ठाम त किछु गमल-बुझल छैन्ह नहि।  
त्रिकस फोन्डर छैक?

हम कनेक औंठावले जखँ उतर देखिएन्ह - नीचा मंडारधरसँ लटले पैछाना  
छैक। ताहि मे बाध कहिऔन्ह।

ई कहि हम पुन ओहि मूनि मूनि रहलहुं। किन्तु दरो भिमतक बाद नीचा फेर  
गद पड़ल - ओ परफेक्टर बाबू! पानि नहि भेलैत अछि। बानरी कशाय - पानिमे  
मटि नहि भेटैत छैन। हाथ कोन मटिऔताह?

आब की करै? पुन नीचा उतरय पड़ल। पानि ओहिना त रहैक।  
रामदहल अजना ओटरीमे जे कऽ खनय रहय। पुन ओकरापर शान्तेर कसय  
उचैत गये बुझि पड़ल। हम स्वयं टाच गऽ कऽ मटि देखा देखिएन्ह और ओ  
बानरी उदधने बाधरय गेलह। ओहिमे जहिना पैर दैत छथि कि फच्छ दऽ किछु  
मथि गेलाह। टाचय प्रकाशमे देखल उतर स्पष्ट भऽ गेल जे ई दिगम्बरनाथक प्रसाद  
लिख दिक्कैन्ह। ओ स्नानगारे केँ शौचागार बुझि अपन कोन शुद्ध तथा कमर  
प्रकट-शुद्धि कऽ देने छथि।

हम ऊपर गेलहुं कि पाहुन पुन गर्द कैलैन्ह - ओ परफेक्टर बाबू! कनेक  
हमरो लोकनि बाढ़-भूमि दिशे जाएव। घरमे बैसयक अभ्यास नहि अछि। बाहर  
मैदानक रात देखी दियऽ, दिगम्बरनाथ केँ खूब खुतासा नहि भेलैन्ह। फेर जैताह।

आब देखू तमगा। अन्धकारमे हाथ केँ हाथ नहि सुझैत, पानि झरोत, टनका  
टनकैत। और ई लोकनि बाहर जैताह।

अन्तत नहिइ कबैत गेलह। चारु गोटे कान पर जनउ चका बिदा भऽ  
गेलह, रादर फाटक धा रहैक। अतएव पशुआइक रातसँ दिनका लोकनि केँ हाता  
पार करा देखिएन्ह ओ 'टाय' हाथ मे दय देखिएन्ह।

प्रतीक्षामे बैसल-देसल साके तीन धाजि गेल। परन्तु पाहुन लोकनिक एत नहि।  
थंडक बायक उपरान्त दूर सँ आशेनद सुनक मे आइस ओ परफेक्टर बाबू!  
हमरा लोकनि भुतिवा गेलहुं। अन्तारमे तारबला कौटमे ओझराएल छी। ई भुक्भुक्की  
हमरा सभ कुन नहि बौह अछि। कोन बाटे आउ?

अस्तु कोनो कोनो तरहें गजेन्द्र मोक्ष कैयल गेल :

छात्र बने जे मुनहुं स पूरे साज कहे गोर दूजन । मन से कहलहुं पावन  
गिराही गाल सँ चाँडे पुनपुन पहुँचि रेल हैराज । नीके भेजे जे निहदासक यज्ञ  
पिड धूँट गेल । नाह सँ चलय करत फेर हँ हँ करय तस्मिन्धि त अयिक-मिनकीमे  
एटा लखि अकुत ।

इ विधारेत जठिना नीचा उतरेत छि कि देखै छी जे भन्ने प्रमाथ गजेन्द्रनाथ  
 ज्ञानेन्द्रनाथ जे दिगम्बरनाथ धारु गटे म्हाएत नाथ सोन्हएन भगवान्-दास के  
 कसुकु प्रतापमे तैयार बैसल छथि।

दलक सरदार हमरा देखत बजलसक-हे-हे-हे हे। हमरा लोकनि त गोरे कि भड जैतहुं। परन्तु बिनु अपनेसँ भेट कैने हे-हे हे हे सूनयमे कोन पढायेतु आब त उद्य भड गोरेक। पृथक्सि दिन कसिना भूत जाएब कोना? की हो गलस गनेदन्त कजलसिह - हँ अइ अइ त गया जैबा भे बिकलस गइ ग अस्तु। भन्सीया के बला पनीसिहक। हम अपने पछाहार करैत रही। अइ ओ पुष्टक - तिनका राभक हलु की दन्तैक।

हम शकत किम्, उतर दीपक शकत हम नरक लगाना - हमरा ती  
गोटाक त जे किने से घरे थिक। किन्तु हमर सरदेठा दिगम्बरनाथ हैं जे न ह कि  
सौजने भाव कोना खैताह? तिनका लेन अनुअ सोहरी, अमोन नरक से घना देदेन  
मधुरक संग का लेताह। हमरा सोचानिक न ह ह-ह-ह परे थिक। भाजन मे ज किने  
से भाव, धाने, नरकारी, घृत, दही, धोनी। बस, और की? हैं, हमरा संगमे एकटा  
जमीरि नेवीं आँठ से दुरि भेन जाइत आछे तै थोड़ेक गछे मज्जा लेंच। और देख  
दियस कबक कान काज? हमरा लागनि कि पाहुन ही? और ई कि धर थिक  
लायत तिनका सोचाने के किम् जल-श्रद्धा आनि देदेन त आनि दिओन। की तै बअन  
अलेखनय सजाइत कहलथिह गहि, जेगो लेहन अग्रथक नाह। दह  
मिथक बादो अथै त कोनो हज नहि।

पुष्क एदि संकाशरित्तपर रिमणी कनैत जिना वज्जर नें हें हें हे।  
हमर बाबू ज धावे शे जे किने से बड लक्कोटर छति। एखन नेने बुद्धि अन्ह। दा  
मोछ भेने की कैनेह? हो तोहर त ई अपन घर छीज। यत्नि कउ खेयव चाहियैत  
और दिनका कि भगदातीक प्रसाद तौ कसुक कम्मी दैह? की ओ परणयर वा  
दासहा कतेक भेतन अछे? किमु वादियाँ प्राप्ति न जे किने से असरये भव जइह  
होएत। ह-हं ह-हे।

तादात्म्य स्वप्नवद्वत्ता पहुँचि गेऊ । जहिन एक भोनी देवद्व हेतु धार नीचाँ छिप्य  
कि पाकूम पूज कैं कथलयेनक -- देखउ, एहिद्वि तउ एहिउहि तैं ने एहस भोग्य एद  
देये छह' इ ननु कतय भेरिलोह? एहिमें दिगम तर रहैत छैऊ । तौ की द्युसवक

इ कवि ओ धर के अपना सुदृढ़ अर्गमें धुस्का कऽ लय गेलाह। सुयोग  
 धर सिद्धिद्वार भादसँ राबटा माथनज गोली मिश्रक गोला समेत हँसाथि कऽ उठा  
 गेलन्ह और पिलक अक्का के परम धर्म धनि अपन दिमाग नर करय लगलाह।

हमारा आग्रहपूर्ण कार्य सभ रह्य। तैं इतपट तैयार भय दस वजे कलेश  
घल गेलहैं।

अब एकर जड़ुन लोकनि भनबीकसँ घनिष्ठता स्थापित करय लगलन्ह -  
 'जो नाम अछि? कतय घर? की मूल? कुलिनवार अछि? काहूँ मीक लोक छी। कतेक  
 पत्नी? एह ठाम काज करैत छी? अह क शुभराह साहेब हमर खास सगेकारी छथि।  
 जम जाय छद्द-पद्द कैल किन्तु आइ किन्तहु जाय कहाँ देखि? यक्षतकि जे भला  
 जाइत? रो काना हैत? जखन अही लोकनि जे किने से दिग्यमन्त्रक भोजन नहि कय  
 जय नाद। आएव कोना? देखब, एक्की रनी सकौछ मरि करव। जे-जे खेदाक छो से  
 भनबीकसँ कहैन्ह। दही दूध दुनू खाएव। घृत पण्डित कऽ देख्य कहैन्ह। जौ कोचो  
 शत्रुन दुनि रहैन्ह त ह्या दिना 'अभिमाना' कोने नहि छऽहैन्ह। फी हो बजेन्द्र। तोरो  
 पक्षु मनेव छद्दह- कहि गेल छथि दिनका अह माछ अवश्य भेल तकैव। की औ  
 बधु एहि ठाम न पाएव बहिनो रोनु भेटैत हैक? यन्त्रेक दूर हैक? परफेश्वर बाबू  
 न आवै चार बनेसँ अहिने नहिप औतह। बेचारे अगुताइमे केवल समतोलै खा कऽ  
 बच गेलह। पक्ष हमरा लोकनि केँ कोने अगुताइ अछि? बारह बाजौ, एक बाजौ,  
 की दूजौ। अपन घर अछि। जखन हैत तखन खाएव। की ही गजेन्द्र सावत पहिने  
 दिग्यमन्त्रक हेतु छनूआ छानि दिऔन्ह।

एक प्रकार भनरीया के तेना पट्टी पहिलेथेन्हे जे सौंसे घर गभागभ छनछन होमय लागल।

अपन-अपन कर्म होइ। एक हम् त पथ्य खा कऽ अपना कार्य पर गेलहुं  
जोग ई स्था बड़ले कइली सँ गरम-गरम कछोड़ी और भाएल हनुआपर हाथ फेरय  
लियलहु। भोजन करैत-करैत हिमका लोकनि सँ द घनि गेलैलहु।

अथ चारि बने हम कान्हेसर ऐलहुं त देखित छी जे चारु भोजन-मस्त  
 धारां तरवार भेल मेकनाद-कुम्भकरी जकां बाजी लगा फेक काटि रहल छथि।  
 सम्पूर्ण घर छल भिल अतस्यामे देखि पडल। हृदयस्थममे पैल नृभा पसरल, अगम  
 कर्णर गजेन्द्रनाथक काटल गयी गुवाइत। लिखा-पडीबला टेबुलपर ब्रजेन्द्रनाथक  
 लिखा गता। टाइपराइटर पर भीगेन्द्रनाथक पगहो। आलमारीक सभ पुस्तक उकटल  
 एक छति पडल। उपरो मेनहुं त पैह दक्ष। वस्तु-मन्त्र गजपट भेल। कमोड पर्यन्त  
 चित्त अन्तिमे देखित छी त थोड़ेक अटमिट्टी रखल अछि।

उज्ज्वल कारणों किन्तु देशी तथा ब्रह्म पंडित एल, तै हम सुप्रथाप एहि  
 जोड़क फाल पर नीचा अवस्थ न बहुत देकरे बजराह - ईह। अह  
 भोवन भलेक। हें-हें-हें-हें। एना त साधुता मे नहि छीने एलहुं मछ त अपुने



बगल छल। ब्रजेन्द्रनाथ के किछु बेसी खैना। गैलैन्ड से अवसरक छथि।

ई कहि पाहुन पुन देखार कय परतत हाथ फेरत मत्र पडय लगलछ। आनापी भाँसलो येन बातपी घ महाबल। समुद्र शायितो येन स मेऽगस्त्य प्रसीदतु। हँ ऊपर अपनेक हेतु थोड़क परतमिट्टी राखि देलहुँ अछि। कहलहुँ जे खाने हथ परफेशवर बाबूक ओहिठाम कोना जावद? ई खटमिट्टी ब्रजेन्द्रक माथ अपनायि हावसँ बनौने छथि।

तावत ब्रजेन्द्रनाथ कइय ऐलियेन्ड जे ब्रजेन्द्र के रद्द भऽ रहलैन्ह अछि।

नीचा कोठरी मे कऽ देखैत छी त ब्रजेन्द्रनाथ सफरीपर बैसल अखधारक फाड़लपर बेकरि रहल छथि। ई देखि ब्रजेन्द्रनाथ हुनक पीट सगारक हेतु बैसय लगलथिन्ह, किन्तु हुनक भार पड़ैत देरी साफरी चर दऽ बीच से फाटि गेल और दुहुँ पिंसी-भाँसल पृथ्वीपर अछि गेलाह। तावत दिगम्बरनाथ एन्डर-ओन्डर ताकि हमरा देनिसदला रैकेट खतरि लेलन्हि और वननयुक्त कागज ओहि पर उठा कऽ बाहर सीढ़ी पर फेंकि ऐलाह।

हम देखल जे सम्पूर्ण मकान और सामान पर पाहुन लोकनिक तेहन स्वयंसेवक अधिकार जमि गेल छैन्ह जे प्रतिपादक चेष्टा करब व्यर्थ थिय। अगत्या चुपचाप लौन दिशि दहसय विदा भऽ गेलहुँ।

एक-डेढ़ घंटाक उपरान्त जखन फिरलहुँ त पाहुन बजलाह — ब्रजेन्द्रक देह किछु रंग लगैत छैन्ह। हिमका 'थर्मोमीटर' मडा दिअैन्ह।

ब्रजेन्द्रनाथ के थर्मोमीटर लगाए हेतु देत गैलैन्ह। किन्तु ओ तत्केल जोरसँ फाँव दबौलन्हि जे सीता फूटि कऽ पारा छिटकि गेलैक। पाहुन बजलाह — परफेशवर बाबू, थर्मोमीटर त फूटि गेल। ई कच्चा शीशा छल की?

होस्टलक बाँह्या थर्मोमीटर। हम की बज्ज? तावत पाहुन कइय लगलाह — नजर नहि छैन्ह। कनेक हरारति छैन्ह। राति मे दूध साबुजदाना खैलाह। हम त जे भानस हैतैक लछीमे भोजन करब, केवल दिगम्बरनाथ फेर राखिओ मे छुनुए छैलाह। और ब्रजेन्द्र के वमन भेल छलैन्ह, एखन किछु फले-फलाहार कऽ लेथि से हमरा विचार। की हो ब्रजेन्द्र?

ई कहि पाहुन बाँइराँ चाकू बाहर केनैन्ह और टेबुलपर जे शोभाक हेतु माटिक रंगीन रोय राखल छलैक स उठा ब्रजेन्द्रनाथ के कतरक हेतु दऽ देलथिन्ह। जा हम मना कारेऐन्ह-कारेऐन्ह ता ब्रजेन्द्रनाथ ओकरा दू भाक कऽ देलन्हि।

पाहुन बजलाह — ई त नक्ली रवौ अछि। हे-हे-हे-हे! असली रवौ बजारसँ मंगा दिअैन्ह, और ब्रजेन्द्रक हेतु साबुजदाना धाँइऐन्ह, की हो ब्रजेन्द्र। तीन पाव साबुजदानामे त भऽ जैतौह?

रातिमे पुन हिनका लोकनिक भोजन-पथ्यादिक व्यवस्था करैत-करैत वारह बजि गेल। जखन हम सुतय गेलहुँ तखन पाहुन कहलन्हि — हमरा लोकनि रातगो

विद भऽ जाएथ, परन्तु ओहि काल त अन्धकार रहलैक और फाटक रोडो धरे रहलैक। हँ हमरा लोकनिक जैबाक बन्दोबस्त होएबाक चाहीं।

हम कहलियेन्ह — अहाँ लोकनि पाहुआरक रास्ता दबै धल जाएथ। लाजदेन और भलाइ लय लिहऽ। ओहि समय लेसि कऽ कज रत्ताएथ। और रामटहन के उठा देखैक जे फेर भीतरसँ फेवाड़ बंद कऽ लेत।

ई कहि हम हुनका लाजदेन और गन्नाइ देखा देलियेन्ह। परन्तु तयारी ओ टाढ़े रहलाह। हम कहलियेन्ह — और किछु धाँसी की?

पाहुन विचित्र प्रकारक भावमूर्त दखयैत मोड़िआइत बजलाह — हे-हे-हे-हे! हमरा लोकनि केँ हे-हे रूपैया-बैंचा किछु घटेन अछि। दिगम्बरनाथ केँ हम कहलियेन्ह जे हो, जखन परफेश्वरे बबूक ओहि ठाम धरै छह त रूपैया-बैंचा ओ भला पटय देधुन्ह? हे-हे-हे-हे!

हमरा किछु तारतम्यमे पड़ल देखि ओ बजलाह — हे-हे! अपने दिगम्बर बाबू केँ नहि बिहैत छियेन्ह। ई जे किने से अपना गामक जेठरैदत थिक्का। साल मे नखे टाका लट दायिल करैत छथि। अस्सामी सभ हरे धोकी मे लपी करैत छैन्ह, गाम जा कऽ जग्ग्यारी करताह त रात मग चूड़ा-नछी लगौन्ह। एहि बेर सेत्रक मेलामे हाथी कीनय औताह। तखन अपनेक टाका अवश्य नैने औताह।

हम किछु सशयित होइत पूछलियेन्ह — की? कतवा घटैत छैन्ह?

पाहुन उत्तर देलन्हि — हे-हे-हे-हे! पिण्डदानमे त खयैक कोनो संख्ये नहि। जग्ग्या लगा गकी। तखन पचास टा टाका एखन दय देल जाउन्ह जे तत्काल कार्य चलैतैन्ह। ओनाथ गेला उत्तर बृहत्त जैतैक। यदि पंडाक पैरफुजाइ मे किछु घटौन्ह त ओहिठाम मुसिक सकेदसँ देया देबैन्ह। एक सै, दू सै, अरोक धाड़ताह। ओ अपन सराकारी व्यक्ति छथे। जे कहैन्ह, से देखलि पड़ैतैन्ह। ई कि कोनो बात छैक? हे-हे-हे-हे!

हम बाँच टा दराटकसी नोट बाहर कय हुनका हाथमे देलियेन्ह। पाहुन हाँडमे खोसैत बजलाह — ई टाका अपने केँ फाँसकी पूर्णिमा धरि अवश्य भेटि जायत। जखन ई हाथी लेबाक हेतु सोनपुर औताह त पहिने बाँकेपुर जखि अपनेक रुपैया दऽ जैताह। की ओ दिगम्बर बाबू! पहिने हिनके टाका दऽ देबैन्ह। अवश्य, अवश्य। पाछे कऽ हाथी मे कतेक लागल तकल कोन ठेकाना? हे-हे-हे-हे! बेश, त अपने आप सुतू। गप्पगीराँ कीरब त अपनेसँ भेट करैत जाएथ। आब कि हमरा लोकनि अपने केँ छेड़ब? हँ, एक बेर हमरो ओहिठाम जे किने से अपने केँ कृपा करय पड़त। ब्रजेन्द्रक माथ शरथ दऽ कऽ कहने छथि। यदि अग्रहणमे ऐबाक कष्ट करी त हम अपनेक नामे फनकजीरक नदका चूड़ा कुटवा कऽ रखने रही। हमरा लोकनि त गरीब छी। की सेवा करब? परन्तु गरीबी केँ त देखहि बृहत्त बेश, आब अपने सुतूपाऽ।

एच प्रकार उचिती-मिनती कैलाक अनन्तर पाहुन लोकनि नीचाँ गेलाह।

भोर भेलापर जखन नींद टूटल त पशुआनक केवड ओहिना फूमल देखलियेक। नीच्यं जा कऽ देखैत छी त पाहुन लोकनि अपन चोरिया-बधना तथा बडका शतरजी रहित, दक्षिणा मे लल्लटेन और सलाइ नेने, प्रस्थान कऽ गेल छथि। कामनरूमक बडका शतरंजोक दाम हमरा अपन दिशि सँ दक्षित करय पडल।

पाछी कऽ मनसियासँ लल मेल जे पाहुन ओकरोसँ पाँच टाका ई कहि कऽ पैत तऽ लेखिन्ह जे भुपरखट बाबू हमर खुदक छथि गधाजीसँ अवैत छी त हुनका सँ वसूल करय अहाँ कै दय देव।

आइ सात वर्षसँ ऊपर भेल। तहिया सँ पुन कहियो ओहि पाहुन लोकनिक दर्शन नहि भेल केवल एकमत्र स्मारक हुनका लोकनिक रहि गेल अछि जे घोख्वास हमरे ओहिद्वान छुटि गेलैन्ह। ओ धिकैन्ह भीमेन्द्रनाथक धिपी लागल पनही। भरतजीक छद्म नकाँ देह भाव आरवासन हमरा हेतु छैन्ह गेल छथि।

तहियाँ सँ जे कोनो पाहुन देवताक नाम सुनैत छियेन्ह त पहिने मनहिमन ई स्तोत्र पढ़ि प्रणाम कऽ सैत छियेन्ह --

अनिवार्य! अनाहूत! अधिकित्वा! अनिश्चित!

अव्ययोऽपि महामाग मन्योऽसि विकटातिथिः॥



## आदर्श कुटुम्ब

एक दोरे लहेगियायरायन कपडाक दोकान पर जे दृश्य देखल से एखनो धरि सिनेगाक दृश्य जखन अँछिने लागै रहल अछि।

हम कु गेक लपडा ऐन गी। लपट देखैत छी जे तीन व्यक्ति उच्च स्तरसँ वजन, दोकानक मोटा आवि, धन्यमक होइत राव सऽ गेलाह।

पहिल तीन वक्ता हुनिया सुने लियऽ। एक व्यक्ति जोलइउ धोती पर मोरिया दालावने पहिरन, पैरमे चमराट मही हाथ मे बटुआ नेने। अवस्था पचासक लगभग दोसर गेते तारक गाठ भाग्य न्या नग-घड़न, कान्धपर एक मैल अँगपोडा, लगन सन लाठी नेने तनक सुनबैत अवस्था करब दैनीस। तेसर व्यक्ति कुंठाघोर गुलाबी रंगी सँटि कय पहिरन, माथपर ओड़हुलक फूल सन लाल पाग, कूलदर रेशमी चादरि ओढ़ने। अवस्था करीब बीस।

लाल पागधारी जमाय दिक्कड़, ई कुठ्या मे त कोनो भौंटे नहि। कनेक काल मे हुनो दुहना गेल जे बटुआधारी दृष्ट रासुर थिकथिन्ह और लट्ठधारी युवक हुनक भतिज आगय बिदा छोड़िन्ह तँ अपने पसिन्दसँ कपड़ा कीनक हेतु संग लागल आरल छथिन्ह।

आब आगौक गप्प सुनू।

जमाय कै धडधड़ाएल दोकान त्रिनि बहैत देखि ससुर महोदय भाविज कै कहलथिन्ह है ओकर अपने मने हनहनाइत कइँ बडल जाइत छथिन्ह? अनिका जेबा नहि से अगिले मथि। ओहन पैघ दोकानमे किनकाक हमर सामर्थ्य नहि अछि। कहूँ, आगौ कोनो छोट-छीन दोकानमे जे सबक लागल रो कीने दैथिन्ह।

ई कहि ससुर महाशय आगौ बहनाक उपक्रम कैलन्हि। किन्तु जमायो जोड़म-जोड़ रहथिन्ह ओ अडि गेलथिन्ह जे दस, हन कपडा पसिन्द करैथिन्ह त एही दोकानमे नहि तँ एही राग सँ धरि जेथिन्ह। जो कीनक सबक नहि छलैन्ह त हमरा चारि कोश पैदल हरान किएक कैलन्हि?

ससुर जमायने भुँहदानी नहि छनैन्ह। तँ दुनू भेरा मध्यस्थ व्यक्ति प्रज्व लाय) कै सचोचन करय अपन अपन उद्गार प्रकट करय लगलाह।

ससुर कहलथिन्ह -- हम किएक हरान करैथिन्ह? अपने दौड़ल ऐलाह! परन्तु एन की? जतना पैदाक सैत छैथिन्ह। धरि बट्टा भरना ताँछि कऽ छिनका एक मास

खोजाओल अछि। जाय आठ कट्ठा फेवला कऽ कऽ दिनका सेल 'फोराक' बनविऔन्ह त हमर बीया-पुता कतय जायत?

एहि पर जगज रहिया कऽ रदेशन दिशि दिश जेलाह जे देश, तखन अपन कन्या के राखधु। हम पैठ बिदा भेलिऐन्ह।

अब सभ केओ अपन-अपन काज छोड़ि पैठ तमाशा देखय लागल।

सग-धड़ग मार राम बहिनोयक पाछाँ दीइलाह और हुनकासँ पछड़ा-पछड़ी करैत कोनो तरहेँ छिक्का-तिरैत सऽ ऐलथिन्ह।

अन्त मे जमायेक जिय रहलैन्ह।

सगुर कहलथिन्ह जखन ऊखरि मे मय देल त भूसरक छोट रझियारहे पड़त। मुदाक देह पर जेहने नी मन तेहने एक मन और। कछून, कोन कपड़ा पसन्द करैत छथिन्ह? सेठजी, एक टा कम दामक गजी बहार कऽ दिऔन्ह। हम गरीय आदमी छी।

ता जमाय घट दऽ कहि उठलथिन्ह - सबसे वेशी दाम की गजी निकालिये - रेशनी, जालीदार।

सेठजीक व्यापारिक बुद्धि ओहू काल संग नहि छोटलकैन्ह। ओ जमायक पस प्रकण करैत बजलाह आइये, बाबू सहाय, एक-से-एक बकियो जालीदार दिखजँ फैन्सी, मू डिजाइन, सिल्क, मरसिराइज्ड।

अंग्रेजीमे गिटटि सुनि लुट्टी झा के बुझना गेलैन्ह जे ई माइवाड़ी हमरा जमाय सँ भिलि हमरा नीक जकाँ मूडऽ छोड़ैत अछि। बजलाह - सेठ जी, रुदिया-कैचा हमरे संग अछि और तिराये सँ उछि। और बहु मे वस्तु गुदड़ी बाजारमे फँसल अछि, छिनके बिदा करक खातिर। हम देहाती आदमी छी, वेशी लफलाज नहि जनैत छी गजी जेहन सभ पहिरैत अछि, तेहने एकटा मामूली रान बहार कऽ दिथैन्ह जे सभसँ कम दामक हो।

सेठजी यणिक बुद्धिक परिचय दैत कहलथिन्ह - कम दाम की गजी हमारे यहाँ नहि मिली। देखिये, यह सब चीज हमारे पास है।

ई कहि सेठजी रग-विरगक बेशकीमती गजी जमायक आँगमे पसारि देलथिन्ह। जमाय केँ ओहिमे सभसँ वेशी चटकदार जे बुझि पड़लैन्ह सो उठा लेलथिन्ह।

सगुर भडोदय जान अवधारी कऽ पुछलथिन्ह - सेठ जी, एकर दाम कतेक? सेठजी कहलथिन्ह - कुछ नहीं। अभी और कपड़े तो इनको पसन्द करने दीजिए। पीछे एक दफा कुल जोड़ देंगे। कमीज का कपड़ा दिखलाऊँ, बाबू शम्भू?

जमाय त फुलि कऽ कुप्पा भऽ गेलाह। ओम्हर सगुरक प्राण कण्ठगत होमय लगलैन्ह जे जेहन भारी गंकरमे आवि कऽ फँसि गेलहुँ।

ताबत सेठ जी जमाय केँ कहय लगलथिन्ह - देखिये, बाबू गहवाँ क्रेप, ह्यूड चौपलिन, चैथ, सोलूना। पसन्द कीजिये।

ई कहे हुनका आगेँ दस बारह तरहक डिजाइन पसरि दलकैन्ह। आव जमाय अवग्रहमे पड़ि गेलाह। कोन सिमऽ, कोन मूँट? ओ सब केँ उठा-उठा गजवीन करय लगलाह। कोनो नासदे नहि छलन्ह।

ई देखि सेठजी कहलथिन्ह - बाबू सहाय, कहिये तो सब मे से एक-एक कमीज का कपड़ा पाइ दे।

ई मुनैत सगुरक देखमे आनि लागि गेलैन्ह। सेठ केँ डोंरि कऽ कहलथिन्ह - सेठ जी, अहाँ वेशी लुल्लुच नहि कर। अहाँ छडबैत छिएन्ह से हम बुझैत छी दाम दम्य पड़ग हमरा। तखन आग्रह करऽ थल अहाँ केँ? कनेक अपना दिसासँ दनबा दीअन्ह तखन ने बुझैतहुँ। और-और लोक केँ जेहन मामूली कपड़ा देखबैत छिएक नेहने छिनकेँ कियेक ने देखबैत छिएन्ह? ओ सभ सादे। जेहन हमर बालाबजे अछि तेहन कपड़ा बहार कर।

ई सुनलहि जमाय छितिया कऽ आगँपला कपड़ा सभ केँ ममोड़ि-धमोड़ि कऽ फेवला लागलाह।

ई दाखि सेठजी बजलाह - ही-हाँ, ए महाराज! यह क्या करते हो? कपड़ा हमारा है। सगुर-दामद मे झगड़ा है। हमारा माल क्यों नुकसान करते हो?

पुन सगुर दिशि सरोप दृष्टि सँ ताकि कहलथिन्ह - हमारे यहाँ घट्टपा गल नहीं मिलेगा। मोटिया लेना हो तो किसी गुलाहे क यहाँ जाइये।

सगुर त चौंकेने रहथि। घट उठि दिश भेलह। परन्तु जमाय भारी-भरकम बनि मुँह फुलीने बसल रहलथिन्ह सार केँ कहलथिन्ह - एना बेइज्जति करबाक छलैन्ह त हमरा अनुलन्ति कियेक?

अन्धलाल छियिया कऽ मँद कैलथिन्ह - हे काका, ई नहि, मनबुझ। एही दोकान मे लेधुन।

लुट्टी झा सभ टा क्रोध हुनके पर उबारैत जवाब देलथिन्ह - तो त गदहा छड पतिन्ति कहलथिओ जे हाग अपने नहेरियारायसँ किनने-येगाहने आपब, त नहि। पैर बीचय लगलज जे ओहो चलतह, ओहो चलताह। आव धुनह।

अन्धलाल अपना पर दोषारोपण होइना देखि बजलाह - हम कि अपना मन स कहने गइ? पैठ उकछा कऽ जान पारि देलथि जे हमहूँ चरब, अपने पसन्दरो वस्त्र अपना हमरा की कहे छी?

लुट्टी झा कहलथिन्ह - देश, मेने ऐतहुन त। आव तोही किना दहुन। हम न जान छी।

ई कहि लुट्टी झा लग्ग सन-सन छेग दैत गुदड़ी बाजार दिशि बड़लह। पुन भातज राम हुनका पछाँ छुटलाह और तपकि कऽ कोनो तरहेँ हुनका भरि पाँज दैने देखलापर नेने देलथिन्ह।

आब सगुर महाशय मीन धारण कैलथिन्ह। दोकानक एक काल मे मम मारने



सांझक पुरुष जहाँ केवल द्रष्टा बनल देखैत रहलाह।

जमाय देखलन्हि जे पैह लेला अछि समुरक एहि उदासन तत लेख नहि  
पुनः नहि न किछु नाह। अतएव अट दऽ जमायक कपड़ा फाँटल कलकलैन्हि। अब  
कोट का बकिया कपड़ा दिखलाह।

पिनी-मामा ने अछि आखिर इशारा भेल। भातेज अछि न कहलन्हि  
आब कोन उपाय करवह, हौ काका?

निता उतराएवक भूत बनीजन्हि। एहन मन कल ने जे कोट छेक न जेव  
शरीर। हमरा कोनो हथे विषय नहि। ओ गलत अ-मन योग जहाँ 'लघानामो  
जमानवी' दुहुमे एक समान अविचलित रहलाह मुदा बनीजन्हि।

सबन एकर सार्ज फलानेन पक्षीक, कारीगर आदिक पदार्थ लपि गेल।  
कोन चड़ियाँ, कोन घंटिया, इ दिवेरना करवा मे जमाय असमर्थ भऽ गेलह। अतएव  
सेटजी के कहलन्हि। हमने सचरो जवना दाम का जो रा दे दीजिये।

ससुर महोदय ओही तरहें जान भरोव कल बेसल रहलाह जेना लोक धाय  
चिरायव काल बैसैत अछि।

सेट पुछलन्हि - किस स्टूल का कोट दोगे? जेना कहिये दर्जी से उपदा दे।  
जमाता महोदय के जीवन मे कोट बनवैलाह इ प्रथमे अकार सनैन्ह अतएव  
ओ तारतम्य मे पड़ि गेलाह जे की कहियेक।

दोकासदार पुन पुछलन्हि - जड़िये न इगलिया कोट दोगे या गारली?  
आब ससुरजी के नहि रहल भेलैन्ह। ओ मैन मंग धरैत बुनकाय छोड़लन्हि  
अब दिनु बाजल नहि रहल जाइत अछि। हिनका कुलधुतो केओ दोसर कोटयो  
इगलिया कोट बनवैलाह अछि कि यह आइ फल्ले धरैत बनवैलाह? बप भोजन  
मिजद पाहो छथिन्ह और हे फारसी का सिधैलाह वाफर गर धीका, पूतक गर  
रुद्राक्ष' पडल सिखल साढ़े बाइस, कोट धरि भेल धाव्य अडोजीए। रामेधन कोट  
पत्रिरे कऽ ग्रामम महारा घरौनहऽ। अपना गामसँ आबल एलाह से कोन कोट  
पत्रिरे कऽ धन दगम' जे दोहरी अर'। एहन जे लले लाल छथि से ककर देल?

एतवा सुनैत देरी जमाय विठनी जका काचय लगलाह। ओ लल पग चढ़ैत  
लाल घोषयो छथि कऽ फेकवाक हुं उद्यत भऽ गेलह और माकि कऽ पुन स्टेशन  
विशि विदा भेलाह।

पुन अजबलाल हुनका पावो छुलाह। समुर महोदय चिक्कि कऽ बाजय  
लगाह - जाय दहुन, पडाय दहुन। हम सन्तोष कैल। इ न धमकटटीरक दिनसँ  
पहल छथि। आब हम कहाँ धरि डेरउ? जेखन एहन जमाय कैलहुं जेखन न कर  
फुटि गेल जे एहन विमलपत्रा छथि न से दोसर फेरि देने रहैन्ह। नखन हम जा कऽ  
लऽ अमरिन्हि। तकर ई अब भयमानकय चुप रहल छथि। कोन पयम एहन लट  
कुटुम्ब भेल से नहि जान। इ बड़ लेख न ओ मूढीस लड' सङ्कल भेल, हरमुनि

मय जमायकोन लेख सङ्कल ससुरमे आबि कय पुगेलाह। जना सिगकर पुरुषक  
हम जेव धारो रहैन्ह जहिवा ई विदा भऽ कऽ जमाय ललिया बुद्धय 'भारी  
रह टेरल'।

नाखन अजबलाल बरिनोय के घेने पहुँचलाह। यजनाह - बक्य, अहाँ किछु  
मुने दाजु। हिनका जेहन मन अवेन्ह तेहने कपड़ा दर्जी से लपटा दिओन्ह।

आब दर्जी कोल लऽ कऽ पहुँचल। पुछलन्हि - कही तक नीचे रहण?

ससुर सँ पुन नहि रहि भेलैन्ह। बजलन्हि - इत' हमारो लोकार्जनक विवाह दाम  
भेल रहल। लेकिन कहाँ एतक लष्टम-खष्टम भेल? तर मे गयी तहाँ पर सँ कय अ  
लख' ऊपर सँ कोट' इ तीन-तीन टा पत्रिरे कऽ लललाह से खीत नहि पुजलैन्ह?  
हमरा त देखिए कऽ खीत फूकि दैत अछि।

जमाय दर्जी के धकमकाइत देखि फइलायन्ह - जहा तक नीचे जा सकै जमे दो।

ससुर दर्जीक हाथ सँ फीता लऽ कऽ कहलन्हि - से भाँडे हैनैन्ह। गजी  
अपना परसँ सँ लेगलैन्ह। कर्माजो कोट मे हमर पुन नाँइ चलल। अब नाज मे पैड  
अपन एक रखलाह से कोन हैनैन्ह? एको टा धातु छपर रहल। जहि मे कम कपड़ा  
लैन्ह गेना कऽ मपि दहुन। हम बहुत सङ्कलैन्ह, आब नहि सहैन्ह। ई घाहलाह  
ए पुनटी भरि सङ्कल रहैन्ह से कोन हैनैन्ह? बोल धरि नापि लहुन।

दर्जी जाहना जमायक डोंड धैलन्हि कि ओ ओकर फीता छीने कऽ ससुरक  
ज्वार पर फेकलैन्ह। समुरक भौंभे लगलैन्ह। अछि कलेके से थोथि गेलैन्ह।

आब सभ केओ जमाय के दुर-छी करय लगलैन्ह। ओ भीजल विलइ जकाँ  
मल्लि गेलह। इ सुवाँ देखि ससुर नी दर्जी के डेटेन कहलन्हि - तके छह की?  
डोंड धरि नापि लहुन।

आब पुनः जमाय के आपति करवाक सङ्कल नाँइ भेलैन्ह।

कपड़ा फइला' उत्तर ससुर महोदय जी-जन् अतधारे कऽ दोकासदार के  
कहलन्हि - रोवजी, आब अटपट अपन दाम जोड़ू।

दुख महोदय अपना मन मे हिसाब केने रहथि - एक टका गजी, दू टका  
माम, कोट बहुत त धरि टका, तहि मे एक टका मारवाडी नफा कार। सभ मिला  
कऽ एक टका लल। इ सोचि ओ एक दसटकड़ी नोट दोकासदारक हाथ मे दैत  
फइलैन्ह - लियऽ अपन दाम काटि कऽ फीता दियऽ।

परन्तु लुट्टीला पर एकएक बज्जल भऽ गेलैन्ह जखन सेट कहलन्हि -  
पेदास रुपया और साइरो। दर्जदो लैन रुपया गजी, कर्माज क कपड़ा नी रुपया, कोट  
म कपड़ा अडलालेस। कुल जोड़ राठ जाना है, अरके शमय सालव ने छुद परसद  
म जारहा कटवाय है। अब नापन नही हो सकत। निकलिये टेट से रुपया।

आब ससुर अपन करेज पिटल चीन्कार प्रारम्भ केलन्ह - हकूवा री हकूवा!  
हाका रैस री! हम नहि बुझल जे तो फाँसी देदे री!

ससुर महोदय कहल गछ जकाँ तलनला कऽ छति पड़ल। अरिआ उभटि गेलैन्ह। दौरी लगि गेलैन्ह।

अब दोसरे लख लागल। अजबलात भोकाइ पडि कऽ कानय लगल। हौ काका! हौ काका! कतय छति गेलह हौ काका?

शोकल पर भीड़ लागि गेल। सेठ राम विचारलन्हि जे कदाचित् ई बूढ़ा मरि गेल त मारी बखेड़ा मे फौरो जायव। एखने पुनः अरि कऽ धेरि लेत अतरव ओ अपना लाभक आशा पलित्य कय अजबलात कै कलखिन्ह — अच्छा, दुखल से भीड़ हटइये। इनको फौरन यहाँ से उठकर ले जाइये और मैदान मे गया खिलाइये।

पुनः जमाव कै गजन करैत बजलैन्ह छि छि। मंड मे राम नहीं, बॉकीपुर की सैर। चले थे रूढ़ बनबाने। शाग नहीं आती। तुमको ले चुल्लू-भर पानी मे डूब मरना चाहिए। कपड़ा कटवाकर नुकसान कर दिया।

जमावक फज्जति सुनि जखन ससुर कै विश्वास भऽ गेलैन्ह जे आव सेठ लोकसान सहाय लेल तैयार भऽ गेल अछि तखन ओ कनछिया कऽ ओखि तकलन्हि।

अजबलात हुनका भरसाइऽ दऽ कऽ पैसीलायैन्ह। जमाव गुँठ बिधुआ कऽ बैसले रहलाह।

आब इगरो नहि रहि गेल। जमाव कै पुछलैन्ह — अहाँक की राब फरमाइश अछि?

जमाव रटाओल सुगम जकाँ एके तार मे गुना गेलाह — छोटे, कमीज, रंगी। जूता, पैदाया, गाटर। छड़ी, छाल, टाच। औरी, घड़ी, फाउन्टेनपेन। साइकिल, हारमोनियम।

तदनन्तर ससुर महोदय पुछलैन्ह — अहाँ हिनका की राब करार कैने छिएन्ह? ससुर कलपि कऽ बजल। ओ बानू, हम किछु करार नहि कैने छिएन्ह। बजार देखावक सौख्य भेलैन्ह, तँ सग लगल गेलाह। हमहुँ विचारल जे येश, अजना परे चलताह, हमरा की लागत?

हम पुनः प्रश्न कैलैन्ह — अहाँक सामे कनेक रुपया अछि?

एहि प्रश्न सँ बूढ़ महोदय किछु अगमजस मे पडि गेलाह। पुनः बजलाह ओ धनैत पुछैत छी तँ चालिम टाका लऽ कऽ हम चललहुँ जे एहि मे जे भऽ सकलैन्ह से कीनि देखैन्ह।

ई कहि ओ धोनीक अठ कऽ चरि तँ दस्तकली मोट बाहर कऽ देखैलन्हि।

जमाव चट्ट दऽ कहि उठलैन्ह — ई फौस घेत छथि। और नाँव बटुआ मे चोरा कऽ रखने छथि। नहि त फेलि कऽ देखावधु।

बूढ़ महोदय हमरा हाथ मे बटुआ दैत बजलाह — देखि लियऽ ओ बाबू! अहाँ तेहल्ला छी। देखू जे एहि मे सरील, सुपारी अथ चुनैटी-तमाकू छेड़ि और किछु अछि? झाड़ि कऽ देखा दिओन्ह।

रुपय जमाव कहि उठलैन्ह — नमस्र बाबा! राखि दऽ रखने हेतल।

एहि पर लुटरी आ विगिया कऽ डोंड सँ १० पसतकल मोट बाबू कऽ करार कलैन्ह। लियऽ, इहो बेला लियऽ। ई हम फराक कऽ लाएल छलहुँ जे बूढ़-जुड़े मे घुस ग कय आओल। सेहो हिनका ओखि मे गडि गेलैन्ह। एहि सँ बटुआ जौ एको पैदा हमरा लग मे ह त देह नहि काय अवध।

दफ्तालत जमाव कलखिन्ह — तखन ई पैतालीस टाका हमरा दऽ देधु और बटुआ दस्तक दाम जोड़ि कऽ हंडमेट बना देधु।

परन्तु आव राब लेक विचार भेलैन्ह। कहलैन्ह — नहि, से नहि भऽ सकै। अहाँ पैतालीस टाका मे जे लेवाक छे से पसन्द करत। एहि मे हारमोनियम लियऽ अथवा साइकिल लियऽ अथवा कपड़ा बनवाउ।

जमाव असमजस मे पडि गेलाह। किछु काल घरि सोचि कऽ बजलाह — बेग, त साइकिलो कीनि देधु।

ई कहि ओ उठय लगलाह जे इनहनिका सेठ दैलक हुनक गट्टा कहलकैन्ह। एकर कहाँ छले मन्हाजरी छोटे का कपड़ा जो कटवाया है सो सेते जाइये।

ई कहि ओ पैतालीस टाका लऽ लेलकैन्ह और बाकी तीग टाकाक हेतु जमाव कै कहिया कऽ बैलकैन्ह।

आब जमाव कठिनता मे पडि गलाह। गुस्त रूप सँ दू टा टाका धोलीक गुँठ मे बकल रहैन्ह। से दऽ कोनहुना पड दळलैन्ह और हारल जगरो जकाँ सरसक सग विदा भेलैन्ह। बीच मे अजबलात तमाकू धुनवैत फोटक कयला कौख तर दवौने बिदा भेलैन्ह।

हम फराके सँ ओहि मडली कै प्रणाम करैत प्रार्थना कैल जे एहन ससुर और एहन जमाव सँ भगवान धरीने रक्षाये। विष्णु त —

असाध्यः भुद्रजानता असध्यः श्वसुरः शठः।

उभयोर्विदः संयोगः दर्शकाना पराम्भः॥









इस एक दश-वाक्य दशमं पञ्चक दीप्त-तै न अ' कः हमनं तस्मिन्  
आमि मे दः भः मेव । अथ वी' वी' नः? तम नः? तै न एक दश वाक्य पञ्च  
सामान्य दीप्ती नै दः नः ।

धर्मराज और सूर्य बालक का प्रेम ॥ ३६ ॥ - जात, २४१ ॥ पुनः  
कीर्ति कः ॥ ३७ ॥

वास्तव में आपका देश भारत है, मैं नहीं हूँ। स्वामीजी का नाम है  
भारत - वह है। इस देश के लोग कहें कि मैं हूँ?

हमारा जीवन ही रात में काल अड़ा देनेवाले से का ज्यादा देन है। बिना धन के  
हल एक नम्रपत्र प्रार्थना करनेवाले किछु नहीं देना।

हमारे साक्षरों ने आ मरी के केंद्रों में नए

पुन स्त्री-पंड वारंगल भेल - अत्र काठिउं आ निर्दय दही अनीत मखानम  
पल तउ कउ गेह जेउ देवेन।

एकदशम भयभीत भव जाग भूय लज्जते। तत्र कहतिहेतु - ल  
कव? यद् भव्य तद् भावेभ्यः।

आय करारो तवय स शब्द मुने पडल देव र देवा दसट मांहेय लड कड  
पनि पियवय गेल्लि उरल्ले। अग्य रत्न अचन हेंवैक। दगुडया दलने मे वेसल टैक।  
अथ ज्ञान नयय हेंवैक कांणे गोटा दंडि कड जह कांणे दही मड मे पडुअडक बटे  
अरुथ। बंधन कही दीड जाड। बाउ मे।

साधन देते छी जे एक सप्ताह वर्षक छीहा मातृ पर चलल गीत गदेन आवे रहल भैंस, पुन हमरा लोकन के साथ टिकल गेल। मुत्तक कयों रहै-  
छी? पुन हमरा राम के अभ्यास धूने बाजल - जउ, जगू बरा दियउ मउ  
चत्वेथं भैंस छायै।

तदनन्तर मोडेप के झुहरा मे थानि अफन गेल। अब अफन मे दोतरे लल  
पलल।

प्रोफेसर्नो बगद पर ललकेत कइतदिन्ह र कटिया, तो सभ जातेव पैली  
 पैह घेर नहीत चरावक छन्हक? दरवाजा पर थपुडार पैरात छोक आ, तेज-बूड लग  
 पैत छियौक सोनक पन्त फइरि ले।

तावन बृहत्क कोनो दोसर समाज गच्छी स एक जनपदी वीर पञ्चन आन  
नी आवन मे जल्यन्त। धाड्य काज मे मचल कोनकर दुनमा सै पञ्चन आम  
भटलैक, गुनमा के कावे छैक। भोज्यक आम धाट छैन लेखेछै। ही वाम  
ओकर आम दट दडक हाँ-हाँ फण्डा-धडडी जूनि करे कह। वाड। इ की गच्छरी  
ओकरा बेलन ने हँवैक। हगर छैक, तै? जल्यं दियली के क्का देलधन

भाव भद्रन मे नेताक भयकर प्रारम्भ भेल। प्राय कता देवादिनी अपन  
नाक हाथ सँ जाम छैनि कऽ फाँक देलाहन्त और लगान्दन्त अकरा उन्हायथ।

नगरों द्वारा देमदानी अपना देता है। जोड़ि कद प्रहनायेन। तदु अंग पत्र के  
जाइया। किन्तु यत्क राक्षसिया आयक लेभ रावरा नाह का सकल। उम नेने  
पदात्त। तदुपरात्त बागमूद होइत-होइत मुशलयुद प्रारम्भ भऽ गेल। कश्त एतबे जे  
हमरा लोकनि निशान्मक बाहर रही तन्नापि भूसरक साग एक बेर टाट फण्डि कऽ  
कनेक बाहरहण गेल।

हम दूरकगज रां कहलियेन अग्य पूणापुनि भऽ गेर । घानू । जन बाँधन  
न करि दोषरा खेय आवे कऽ राकार करवा लेव ।

तायत एक दोसरे काँध उठल ओ वालक जे जड़ाएल से ओकरा हाँड़ सँ  
तीन छसि पड़लैक। से रुपैया कोनो दवादिनीक छेदा लुट्टि लेलकैक एहि पर मे  
तुम पड़ मचल तकर टेकल नहि।

एक जन्ती गीत स्थले पुढर्ताथिक - ई सरीया तौ हगारा हय मे किरिके मे देली?  
प्राय तोरा बान्ति कऽ विदिअक?

घालक खान्त - ई त हमरा मयूर आप जेब देखक अछि ।

दोहरा जमीन कोल कार्लरिन्ड अल सेना के कि मधुर खेदक में है कि जे  
भेदतेका?

ओम्हरसे दोसर जनी कहलथिन्ह - है दाह ओ पाहुन धाय हमार अछि।  
 सगट घर ऐलैन्ह अछि। एहि धे किनको हिस्सा-रनी नहि हैवैन्ह, लायह, ओ हथिया  
 हमार भेल।

तावत् भार्गव सा ग्गान कैने आश्चर्यं बुद्ध्यात् । स्त्रीणां कै सुखलक्षित -  
कै? पादनाभं धोयन् तैयार छैन्ह?

इ सुनेत धारकाल सँ तम केओ चूडा के सुअभय लगैन्ह । एक जग  
 धर भूजी भौग गाँह चूडा लेवाह चूडा धर भूजी नफर ने रखने छाये  
 धर मे घडा कटि कऽ रखने रहैन्ह । दूजैत लज्जे ने होइत छैन्ह ।

दोस्तानी वक्तव्य किन्तु निमित्त भावने नीरा, माँद परावृत्ति हीरा  
 तथा रमण्ड लेत होइ छैन हथोड़ीवली कै और कुकुम चक्रवर्त धेर दनकटहो  
 पानी पर।

सावत तेसर दललीड धुहा त हम्हीं एक परोसी कुटने रही से समक पेट  
म चल गेलैक। एग्रन कि केओ गाल लागऽ देत? खाय कास सभ केओ, कूटय काल  
रुको नहि।

भागीरथ ज्ञा मृत्यु स्वरे एक जनी के मुहलधिन - की, घर मे थोड़बो दही  
 हैन? एखन प्रतिष्ठक धात भलि।

इ प्रश्न सुनव छल कि ओ तहातइ अपन कपार पीटय लम्बीह - ई बूढ़  
दूरि करैत छथि। हम कुन्डी की चोरनी जे अपना तेल दही जोगा कऽ राखथ  
गने देल। ई एक लाख भूत सवा लाख भाती छैन्ह। राम छानिए छैनहार एख



मिसिया डण्डी में सर में बाँधती है - चैन है - तब पर दवाक खोज करे धी।

ई कति ओ करण राग में थेओना पतागरेन्ह। गुरुपति सुध भव करलधेन्ह - अच्छा, हम हाथ जोड़ें जी। अतः लोकनि सुन रहूँ। हम बहूना खोधा हवेक।

भगीरथ झा ठकरो नें अनीक दुखारी करय गेलह। उत्तर भेटलैन्ह - एक धरिका चढ़ेरा गनैक, एक धरिका सोनैरा भौक आब एक धरिका दधनैक अछि रो बरतवड़ा लैक। एहि में पापुन कि बहूनाक बापो के नहि भऽ सकैत छैन्ह।

किछु कासक दण्ड आठन में छूड कुटवाक धमाधम शब्द होमय लागल। प्रत्येक घोट हमरा लोकनिक करेण पर करम लागल।

धमाधम सुनै सुनै हमरा सम के छूट लागे गेल। करीब नील दले भगीरथ झा अन्धे हमरा लोकनि के उठा देलन्ह। दजलन्ह आब चालर आबो, भोजन कैल जाओ।

हमरा लोकनि के पैर उठैनाक सहम त नहि मोहन छल किन्तु गुरुपतिक दसनीय दसा देखि हुनका और अधिक दुख पहुँचाएब उचित नहि चुट्ट पड़ल। अन्धेब हुनका तोषार्प उदहि पड़ल।

गुरुपति दू टा छड़ाम हमरा लोकनिक आगों में रखि देलन्हि। परन्तु एहू एक्के पैरक, और खुटी हिल्लैल करैत। हन धतकगन के आग्रह कैलेन्ह त बजलन्ह -- भला कहुँ ! ई कोना भऽ सकैत अछि? अहाँ पसिह।

अगत्या हमरे परिवर गहन एक दहका टा दुरुक दने भगीरथ झा हमरा लोकनि के भीतर लय चललन्ह। दसे डेग चलल हैव कि छड़ामक खुटी पैर सँ पराक भऽ गेल।

भगीरथ झा किछु अप्रतिभ भय घजलन्ह - कोनो हर्न नहि। एही ठाम छोड़ि दिओक।

ओसारा पर गोरीक कठनी पर पैर धोवाक हेतु पीछी-पानि रखल छल। हम घटकराज के करलिऐन्ह -- अहाँ बहल जाओ।

परन्तु ओहि ठाम तेहन रिच्छर छल जे पैर रोपव कठिन घटकराज अहिना पीछी पर एक पैर रखलन्हि कि पीछी समरि कऽ ऐंटर में घलि गेलैन्ह। घटकराज ओही संग लागल नीचा जसि पड़लन्ह।

हम हाथ धऽ कऽ ऊपर गीरे लेलैन्ह।

भगीरथ झा लोटा में दानि लय पैर धोअनि पुछलन्हि -- ओ? किछु अतिपात स नहि भेल?

सोभमनि चौपरी दजलन्ह नहि केवल छल लागि गेल अछि। कनेक और जल पड़ाएल जाओ।

भगीरथ झा गोर पालन्हि -- दूना बाबू! एक कलशी जल नेने आउ। सूना बाबू! कतय गेसहुँ? औ गुना बाबू! गुना बाबू!

जालन जाले उत्तर नहि भेलैन्ह त गुरुपति स्वयं दैलरानी दिस विदा भेलन्ह। पाद-प्रणम्य अनन्तर भगीरथ झा हारा लोकनि के धरक भीतर लऽ गेलन्ह। समूह पर अनन्तर कृप। चारु कल सँ निमुन्न। बुद्धि पवन जेना हाथीक पेट में दोम लऽ रहऽ। हम धरि-धरि कऽ अन्धकार पर चलत लागलहुँ। तथै एक ठाम मरुआक डेरी पर पैर पड़िए गेल।

भगीरथ झा दजलन्ह एकर अन्धकार जाले। एहि दिस पीछी-पानि अछि।

पीछी पर पैसल ऊपर घरक दृश्य देखल। सोझ में चाउरक कोठी लकरा लय में अतल्ल मूय बिगरे कैने। और कइएक मासक बहारन सोझान जमा कैल, जाहि में सोझक लोझा कोश। दोरारा दिस मचान पर दूरल-फूटल पेटी और वायसक ऊपर मकड़क घलि तमाकू और पड़ुआक कवाग डेरी कैल रखल। कतारु सँ मरल गुराक दुर्गन्ध जचि गहन छल। एक न अन्धकारपूर्ण घर अहिना भ्रमकैत छल, ताहि पर होव तेहन तड़ल गोधर सँ कैल छल जे नाक देव फटैन।

आब भोज्य पदार्थक कानन सुनू।

आगों में खाली चरी, सूप में धनडा चूड़ा। एक चूड़ा में मूँठडी कटल आन। पन पर मोग मिरयाइ, करैलक जँचार, और खोरनाट सन करी गुड।

एही समझी पर भगीरथ झा उचिताओ करय लगलन्ह -- अपने लोकनि के अह बहुत कष्ट भेल। भोजन में अतिकल भऽ गेल। स्त्रीगण अहूँ एक ब्रत कैने छथि न किछु विश्रम और आउनेनो नहि भऽ सकन। केवल नोन-चूड़ा मात्र अछि।

ई कति ओ दू-दू लप चूड़ा हमरा हुनू भोज्य धारी में राखि देलन्हि। दजलन्ह -- आव चूड़ा भिजाएल जाओ कना स्वदेव नाहे कैल जाय। ई, दही त पर में एहन सटल छैक। धोरेक दूध छैक से मेने अवैत छी।

ई कति भगीरथ झा दोहरा घर में गेलन्ह। ओकर किछु फुगुर-फुमुर होयव लगलैन्ह। ध्वनि सँ बुझना गेल जे दूध देवाय प्रतव पर विवाद छिड़ल अछि और विरोधी पक्षक प्रबलता अछि। किशक त निम्नालिखित प्रश्नोत्तरी स्पष्ट सुनवा में आएल --

-- ई दूध कैह हुनू कोठिया ठकरोति सेत त राति चहुटावालीक नेना की पिउनेन्ह, हठोर?

-- देख, नेनाक सेल थोड़ेक रात्रि लिपऽ, और हम दऽ अवैत छिएक।

-- दस वन, गहऽ दिपऽ। एहि में सँ एको मिसिया नहि भेटि सकैत अछि। बगट पर ऐलैन्ह अछि त बन्कटकीवाली छाली थाअयधुन गऽ। ई महिष चहुटावालीक नेहारक छैन्ह। ओ अपन दूध केहन देखिन्ह?

- ऐ! छुछ चूड़ा खा कऽ जाएत -- मन में की कहत? बगट केँ लैये नहि जेतैन्ह।

- अझा हा! दंगट केँ जे रूपैया देनैन्ह से हिनकेँ त जेना थोटे कऽ दऽ दैतैन्ह।

हम, ओ पूछ लूँ, त हम लम्बा लगा कऽ देखा देव से कति दैत छी।

एकटा मुनिय उत्तर दूधक प्रतीक्षा करव पृथक् होइत। उत हमरा लोकनि आवा परचाग कय बुरा मित्रावय मयनहु। किन्तु सोनमनि चौधरी के पाँते करक कज नहि परलन्हि। किन्तु त एक दु-अडि बंधक नेना कोठरी सँ भवि, दाड़ि-दाड़ि हुनका घरी घर लैनि कऽ देलकैन्ह। ओ ओ हुम हुम कसैत बाटधि ता चुड़क ऊपर जलघाय भइए गेलैन्ह।

ठिठक गम्पक सँ हमरो धारी झुरि भऽ गेल। तावन बालक अँई दाम देखि कय 'लखी पुरा थुडिमती न परधात' करय सागत।

भोजनक आवा पर पानि फिरे गेल। तावन गृधपनि अघि बसलन्हि - ए! अपने लोकनि एखन धरि मैथिली नहि देल अछि। हाथ दिख धारन छीर ई ई नेना एतय कोना जगति गेल? राम-राम! ई की कऽ देलक?

ई कहि भगीरथ झा ओकर दुनू बँनि पकड़ि, अपना सँ एक हाथ फरके कऽ उठोने, वाहर लऽ गेलकैन्ह। हम अवरा बोंछ उठि विदा भेलहुँ। धतकराजो छड़बड़ा कऽ अलस। किन्तु हाक रक्ताट धाक टोक ऊपर सीक मे अँकार लटकल रहैन्ह। हाँक सँ जे उलसल से माथ और नाभन दुनू एके बर भइ दऽ फुटल माथ सँ पानिल फुटल अथवा पानिल सँ माथ फुटल, ई न नैयमिकक विषय धिखैन्ह। पाननु धतकराज केँ चोट धरि अवश्य लगलैन्ह।

हम कहलैन्ह - भोजन-दसिना त भेटि गेल। अथ चलू, घरघोषक आघव से बाइसाह निकाले चलू। नहि त गृधही भाइक दाम बसल केने थिना नहि छड़लैन्ह।

हमरा लोकनि जान छोड़ा कऽ भगलहुँ। ओगारा पर आत, चकड़ी, रेखा, ऊपरि भादें नून 'बाल-बाया पाव करैव' दुखल मे लटकल लालटेन सँ टकराइत हुनक ने कानल अस्सगीक फंदा सँ परदनि छोड़ैत, कोनहुना बाहर ऊँचि फक दऽ निसास छोड़लहुँ।

ओम्हर आइन मे भगीरथ झा कोधोन्मत्त भय चीकार कैलन्हि - ई छोड़ा की करव अछि घर मे गेल छल? अब हम घेत दया कऽ मरि देबैक। एतुन राम विनु छिगडि उठि गेल। हमरा की कहत?

हमरा लोकनि दान पर ऐलहुँ। ओम्हर आइन मे भीषण मझाभरत मचि गेल। नेनाक माय नेना केँ दाड़ि सँ झटप लगलकैन्ह - कोड़ेया केँ अपना घर मे पेट नहि भरलैक। नै लछाब्राइल अँहि कोठरी मे पात बाटय गेल छल। एदि सँ मरिए जाइ सैह नीक।

पाँद पर बगुछु होइत-होइत परिणाम ई गेल जे नेनाक माय थप्पाक टोंड धिने ओकरा समेत हमर मे बसबाक हेतु विदा भेलैन्ह।

हमरा लोकनि जहि दाम बैसल गही तहि सँ सहले एक कोलकपी मे इनार छलीक। अतएव सभटा शब्द स्पष्ट रूप कणोभर होइत छल और भीतरक समटा

अनुम न रं नहि। होइ। ओइ छल। हम सोनमान छोटाग ई अँहि गेल छतकान अथ अनुम भ ७६२ अथ दु गृता प्रसवद कोष अ ७६२ अछि। ७६२ अथ हमर प्रती पर ७६२, ७६२ धारणीक नऽ। नहि त ओ एहिना धुर्कामा पावन दानन नेनाक रक्ताट न दोबरे फल मे बसबादेव। नहि ७६२।

तयन इन र मे सभा शब्द भेजे। हम सोनमनि चौधरी ई कऽ गेल - चलू, पड़ाइ एहि दाम सँ। नहि त अब सभटा पहुनाइ बाहर छैत।

तावन भीतर कोलाकल मचल - जाइ! वीगपुरवाली इनार मे खसल पडल। ए! खास पदरई देव-देव। आद कन उपाय छैत? नहि वीगपुरवाली त भोट। तहि छधि, चट्टावाला लग दखे खास पदरईक। नहि-नहि, दच्छा न दैत टैक तनिकवालाक अँर मे। इनारज कोनी रुटि कऽ खास पदरईक अछि। ७६२। भयसम्भारवना का कऽ भय पँज पा लेनादेह नहि त भाइ अनुम होइत।

ई झुनि हमर भोजन केँ कहल सँ प्राग अपन।

वाहर गृधपनि नून, धरि नून पडलैन्ह। ओ युद्धन छलास मे आभयनादिक ग्यात वन्यार लोभन केँ कहल ता बिदल नहि छैन्ह। नै रोगमोने लोभनी केँ लजलकैन्ह। अन्धक भयम् दखल संन गुहेत छधि और प्रानुगेव करैत छधि त नेना एतेक दिन सँ कहियो कृपा कियेक नहि करैत छलाह।

हमरा लोकनि दाड़ भय अर्थक उठि। उतर देन कडिगिरेन्ह। येश त अथ आजा देल जाओ।

गृधवासी दखल भना, कहू त? ई कतह भऽ सकैल अछि? एखन अपने लोकनिक लीजव ७६२ नून जैल अछि। तनि मेल भोजन कय, अलन मे घेत पानि इस पावेर कऽ देल जाओ तयन काले जैवाक विचार कैल जखत। एहि एख, पीछिओ-पानि त देखि लेव।

भगीरथ झाक ई अगीय सैव देखि हम छवि राठि गेलहुँ। सोनमनि चौधरी कहलैन्ह - एही पानि त दखले देखल अछि। तिनका बड़द जरूरी काज छैत तै अइ छेहि देल जातन्ह।

भगीरथ झा कहलैन्ह - येश त कम-सँ-कम बावको केँ त देखि लिओन्ह।

हम लोकनि केँ दून बैसि जाय पडल। कगीव आधा घटा मे बालक ननि रने कम बाहर ऐलन्ह, एखन हुनकर दोसरे सज देखब मे आएल। धकरल टोक, पोछल मुँछ, लल टोच, गर मे सोनक घेर।

भगीरथ झा वजबड पैद धिखै हमर भविज देवदश्वर दावू। तिनका सँ किछु पुछिओन्ह।

सोनमनि चौधरी पुछलकैन्ह - किं पड्यो?

बाबक हुनकेँ कऽ उत्तर देलकैन्ह - ब्याहकरणम्।

गृधपनि प्रानन होइत दजलन्ह। दखू, कतन दनयि कऽ उत्तर देलन्ह। हम

त पतिनहि बहलावुं जे दायक सम्बन्धी छथि की? किछु और पुठवेन?

४४ बहलवेन — नहि, एनकरि सँ बुझना गेल आव और किछु एख्यक साज गहि।

भरीरथ झा बजलाह — तखन परिचय-पात लिखि लिओन्ह।

ई कहि ओ भितरसँ दबात, फलम, फलज लाय गेलाह। आसन मे पुन खड़भइ प्रारम्भ भेल।

— कागज त कनेयों काकीक पेटी मे छलैन्ह। दयन कौ भेलैक? चक्का पर राखल छथैक। कूटि गेलैक के फोड़लक? पकड़ त भोलबा केँ योनि अछि? उहू! अच्छा त ललका रंग घटी मे घाँटे लिपि। फलम की भऽ गेलैक? कागज दुनमा लऽ फऽ छैलाइत छल। कहाँ गेल दुनगा? इत्यदि।

करीव आधा घण्टा बाद गृहपति लाल रंग और काटी नेने पहुँचलाह। दहलैन्ह — एखन मोरो कसम त नहि भटैत अछि। एही सँ लिखि लेल जओ।

भरीरथ झा घटकराज केँ धरक परिचय लिखबए लगलथिन्ह। 'बालक दुधवारे मल्लि'। मातृक दरिहई राजनपुरा, राधुआ पौजि। मल्लिमातृक हरिअम्बे बलिरजपुर, कछुआ पौजि। पितृमातृक दिपवे सन्नहपुर, शंभुपुर डेरा, फेटकटाइ पौजि।

घटकराज कहलथिन्ह — धेश, आव गाम गेला उत्तर जे विचार होएत से अपने काँ सूचित करब।

भरीरथ झा बजलाह — देश से त हैवे करतैक किन्तु अहाँ हमर साक्षात मरिओत आवि गेल छी त दू-चारि दिन रहि कऽ अम्ब खाइ। एहि बेर 'लाटकम्पू' खूब करल अछि।

बहुत करिदनाता सँ हमरा लोचनि वृद्ध महोदय सँ पिंड छोडाओत।

जखन ओहि घर सँ विदा भय किछु दूर ऐलहुँ त भगवान सँ प्रार्थना कैलैन्ह जे रे भगवान्! एहि आश्रमक रक्षा अहाँक हाथ मे अछि। नहि त एहन-एहन सल्लो टा भरीरथ भिले कय प्रयत्न करतअ तथापि एहि घरक उद्धार नहि भऽ सकैत अछि।

पुन ओहि गृहस्थाश्रम केँ ई पलोक एहि कऽ प्रणम कैल —

सर्वदा कलहाग्रस्त, कोलाहलसमकुलम्।

अहर्निशं कुरुमेतं, धन्देसम्पित्ताश्रमम्॥



## घरजमाय

बबुआनीजी मोसमातिह एकमात्र कथा छलाथेन्ह। नेहन दुलरआ बेटी जे बारह वर्ष पर खचयक कान्हे पर चलायन्ह दूध मे छल्ला कम घूँसि नैन्ह त भरलो दूध उमटा देथिन्ह।

चौदहम वर्ष पर धरित-करित बबुआनीजी तेहन विशाल भऽ गेलैन्ह जे शरीरक पर सम्हारक बटिन भऽ गेलैन्ह। तखन मोसमाति केँ एकटा तमाक प्रयोजन दूझि पड़लैन्ह। एहन दुलरआ बेटी केँ आँखि ओझर कोना होमय दिथि? अतएव तेहन तमाक ततारा होमय लागल जे बबुआनीजीक दबाव तर रहि सकथि।

दू टा वस्तु चोरेवा मे दोष नहि होइत छैक — शातग्राम और पंजीवद घर। अतएव मोसमाति घुन्हाइ झा केँ घोस्या मडोलैन्ह। ओ नकरू झा पंजि छलाह। सम्पत्तिक नाम पर घर मे केवल धानन-घन्टीटा छलैन्ह। मुखपाय चाकरन पडैत छलन्ह, किन्तु लापनक अभाव सँ परीक्षा नहि दय सकैत छलाह। मोसमाति केँ अज्ञकारी घरजमाय भेटि गेलथिन्ह।

एक मास धरि त जयसक खुब आदर-सत्कार भेलैन्ह। विखजी मे गुलाबगामुनो देन जाइन्ह त रोडि कऽ जे कतहु अज्ञाक कट मे नहि गइन्ह भोरि आँख मे कजूर कऽ दल जाइन्ह जे ओझ केँ नजरि-गुजरि नहि लगैन्ह, पनवड़ा सदियन रागे छलैन्ह। गेखाना मे लोटाक संगे पक्रे घऽ देल जाइन्ह।

परन्तु तदनन्तर कृष्णपञ्चम चद्रमा जे छुन्हाइ झरक सम्भल मे बढय लगलैन्ह से घटैत-घटैत अमावस्या पर पहुँचि गेलैन्ह।

अब छी मास धरक दृष्टान्त सुनू। जे ओझा घादामक हातुआ खा कऽ दूध गोयेत छलन्ह से अब बदामक फुटला खा कऽ पानि पीयय लगलाह। जनिक्का भोजन नैन काल गेल होइ छलैन्ह तनिका नटिओ करैत काल गजन होमय लगलैन्ह। जे एहिने 'मान्य जन' छलाह से शनै शनै केवल 'जन' मात्र रहि गेलाह।

घुन्हाइ झा अन्यान्य नौकर-चाकरक देखादेखी सासुर केँ 'डिउडो', मोसमाति केँ 'मलकीनीजी' और अपना स्त्री केँ 'बबुआनीजी' कहैत छलाह।

'मलकीनीजी'क दरबार मे 'दमाद साहेब'क दिन-दिन तरकिए भेल गेलैन्ह। फाँके छेल-पधार जाय लगलाह। तदनन्तर जन-चनिहारक छापयो अठपोछा मे बान्हि कऽ लऽ जाय लगलथिन्ह। अन्त मे अज्ञानी बोझो बान्हय लगि गेलाह।

घुन्हाइ झाक जगह-जमीन सरना पड़ल छलैन्ह। तकरा छोड़ावक हेतु बबुआनीजी





ई कहि मांजी येओना पसरलन्हि।

अथ ओझाजी ओझाक भोजन में बिदा भेलाह। डेड कोस पर जा कऽ एक दुसाध भगता भेटलन्हि। ओकरा बहुत लघु पैर जेहि कऽ खाना तगरे गली केन धिन्हि ओ वधुआनीनी के देखि अपन जगहर पसरलक बूझा चाही, असत धरौ। ओवहुन के फूल मडाउ। छमा के कान नखाउ। हम होलाद करब सब अपवैत।

आव सब वस्तु सुदधैत-जुधैत ओझाजी के प्रत्य भऽ गेलन्हि। कुछ खोजैत-पोजैत कनेक हम्म कोर गडलन्हि। खरग कानक वडला में अपन कान कऽ लललन्हि।

तबत भगता कहलकन्हि जे 'वधुआनीनी के ऊपर गारा चडल अधिन।'

ई सुनैत देरी मांजी जमइक गुइजे गइक सगो पुरुषाक उदार करम लगलधिन।

अथ वधुआनीजी सकल लगलन्हि - हमरा पूरा के मोन चटा देलक। भेडा बना कऽ रखने अछि घर नहि अथय देन अछि हम सहर कऽ देखैक। बुझि के छोरि कऽ डालैक। इत्यादि।

मांजी कनैत वजलन्हि - वाप-रे-दग। हमरा घेटी के छुट्टी की कऽ देलक से नहि जानि। सौख में देखिबोन्ह। हमरा थोर-थोरि कऽ डालीहो तौने धिया कऽ दागि देखैन्ह।

छवागिन कहलकन्हि मांजी, गारी न दिओ। औरो उछन्नर करत। छेला रंगत, ईटा भरसएत। छार-गोर गिराएत।

आव मांजी अपन छोट जमाय पर उतारय लगलीह - छाप रे हमर कनी पैड पदलक्षण वर वचइक लेल थधएल धलधिन। जानैतहुँ जे डिनकर माय एहम हॉकले डाइन छैन्ह जे मुइले पर हमरा यम के छेन नहि लेख्य दति त डिनका अपन पुरुषाक भीतर नहि टपय दितिरैक।

सावत भगता अपन देगन जमावय लागल। सौसे देन देन जको दर-थर कँपवैत गरजि कऽ बाजल - दोहाइ गौरा पर्वती के जय काशी कामाक्षवाली जय काशी कलकत्तावाली। जल बानी पल बानी, बानी रहन काया तीन भुवन पृथ्वी बानी सतगुरु के दाया। दोहाइ दितर गौरा महादेव पर्वती। सिद्धार तोरा लुखैतरी देखी। तो लोक छह कि भूत छह कि मेह छह कि योगिनी?

भूत बाजल - हम केओ छी नाहि सँ तोरा मतलब? जान लऽ कऽ भग नहि त भूडी बिदा जेवीक। तोरा सन-सन भगत के हम जग तर छेववैत छी।

भगता बजल - धन एल बड़ी ऐरिहे खोलवय बानी। अच्छा, हम तोहर दयाइ करैत छी।

ई कहि ओ वधुआनीजीक नाक लग निरचाइक धूनी लऽ गेलन्हि। दौक सँ भूत के अपन भविष्य सुनाय लगलक। कनेक सन्निभ कऽ बाजल - तो हमर जदि किरैक सा। ई? एखन भगइयो देखि कि फेर अवेन हमरा देग लखौ? बहुत दिक करै

त हम एकरा छोड़ि कऽ तोरे पर कोहि जेवीक।

भगता जेध भू के पल्लवय बानी तो जे वदे एह? त पाउ सब मे नहि। (अथ) लखत के तग केन कि तग नहि।

भूत बाजल - किछु नहि लेब। हम काली एकरे लेवैक।

मांजी कानय लगलीह।

भगता बजल - कहर ई के 'इ' इज्जत अछि एकर तग लडि दवैत, तग सिद्धर-पटोर भऽ इन छैओइ।

आव प्रनोदारी प्रारम्भ भेल।

भगता - तो काउ रहे छह?

भूत - हम इछिनखरिआ इमली पर रहैत छी।

मांजी बजल - वाप रे वाप! कऽ हउ इमली पर त कऽ देव। चाही।

भूत उच्चरैत - बुझि, तो बरा क-वक नहि कर। नाह। (अथ) नाह दनि का। मति जगक।

दूती घर-घर काँपय लगलीह।

भगता बजल - अथ हम हाथ जोधेन छलैह। हम नात एहा देखी। तो अपन पर आह।

भगता अब अपन हाटक पसरलक। मांजी के कद-कैत - एक नारी भगी नारत। एक योगिन बाल पसार। महिमा गोर।

अथ जगता के पून रात गम बीड़य रहोन्ह। तम वस्तु साइ छीत धिन अथ राति सँ दुपहर भऽ गेलन्ह।

एहउ भगता जौक भोज कोलक जेहु हुह गाइ दी के अपन प्रणव्य लेखैत। तबत छुलाइ इः भूय गपस, रोट लहलह मांजी पदवतह डिनका दमवति भगता देन दुमवे। पुछलकन्हि - दोल, तो एहना दरी कछा लगेगी बान। न धरौ काट। एके छी मे काट।

ओझाजी दूधत आइ वधुगभि के कहलकन्हि - हमरा पारी कऽ न नाहि अपन अछि। नाहि म एह छी मे हमरा कुन कोन है।

ई सुने सासु गजन करय लगलधिन। डिनका कयुक लुर नहि छैन्ह। तबत भूय के बजा लखलन्ह।

भगता भाली बोनर दस चढाय, लख लख अछि करय बाजल - अच्छा का। तग। हम अपने कहय।

भगता छारी काटि कऽ मुंड अपना हाथ मे लेलक। घड धमाक के दार का। ई गने धन हमरा प्रणव्य पर।

दोहाइ छुलाइ जे छारी के उठा कऽ भगता वर पर नन गेलधिन। एहम तगलन्हि जो आव पूग छलिय पोर सन्दू प्रीय पम हो रूपव नन आ।



एक बड़ा मंसक जोर पियत देरी बबुआनीजी के  
ओझाजी के...  
वेचर ओझाजी के...  
दैन्यक न सदासे सारे...  
लक्ष कनका मंसक...  
रति ओझाजी के...  
इष्टि पड़े...  
होना कनका में...  
मन माँजी के...

अन्य...  
करीब धीरे रोज़ से...  
मे उपस्थित भेताह।

ओझाजी के...  
वेचर के...

एक बड़ा मंसक जोर पियत देरी बबुआनीजी के  
ओझाजी के...  
वेचर ओझाजी के...  
दैन्यक न सदासे सारे...  
लक्ष कनका मंसक...  
रति ओझाजी के...  
इष्टि पड़े...  
होना कनका में...  
मन माँजी के...

रति ओझाजी के...  
इष्टि पड़े...  
होना कनका में...  
मन माँजी के...

धुलाइ झा के...  
हलैल भय है भयभय...  
हलैल कहलन्हि।

बबुआनीजी के...  
मीचा...

बबुआनीजी के...  
एहन मैका करे नह भय...  
यकनय...  
रहल जाउ स...  
घहेल छी...

बबुआनीजी के...  
मे पड़ेत योगक...  
बजलहै...

गुलाही...  
म...  
कड देयुह।

इ गुनीत चुलाह झाक बोलती बन्द भऽ गेलैन्ह। जहि दिन में पुन कसिय सूरि  
पदेशक...  
देख तो...  
रहत कर।

नानक भलनुसार सुपुत्री जैयन स्वामी के देखिथि कि गंदे कागध - माँजी,  
कहाँ गी?

देवयोग में बबुआनीजी के गंधे रहि गेलैन्ह इ सुसवाद नचिचि भाँगी एक  
घटेर गडद पीर पर सडाय गेताह। मिय सोकर लेमय लगल। एक मय पूंछि  
दजरी...  
लविचलन जाइह तेना-तेना ओझाजी के...

पूरी समय भेल पर बबुआनीजी के प्रसव बंदना उठलैन्ह ओझाजी चमैनिक  
पर लोड़ाओल गेलाह। अन्धा राति कऽ बबुआनीजी प्रसव केलैन्ह। माँजी दम्भ  
रति छान चमैन में पुछलथिन्ह - बेरा कि बेरी?

धमैन कहलैन्ह - बेरी।  
अन्ध ओहन में कुडराम मयि गेल। सदा छार भार जम्हक ऊपर पड़लैन्ह।  
हुनका दस हजार फन्दा के...  
नहि भेलैन्ह।

सदागवश बेटीक रंग भेलैन्ह इयाम वर्ण। आब माँजी और माध-कपार पीय  
लगीन्ह। हमार बेटी स गोर अछि तखन हिनके देम में सन्तान कारी भेल। एकर  
विगत बात हैतैक? इ हमरा घरा के चौपट कऽ दगलैन्ह।

मय धुलाइ झा के मुँह देखैकक सदास नहि हइन्ह बबुआनीजी के दूध नहि  
जालैन्ह। अतएव बबुआ के दकरीक दूध में पिहूआ भिया कऽ चटाओल जाइक। सेहो  
धुलाइ झा पर पड़लैन्ह। जेखन काल औरो परिवधा हुनके करावय पड़ैन्ह।

एक राति बबुआनीजी नेनक सग पल पर सूतल रहिथि। करीब ते फेरलैन्ह  
में सग भिया गेलैन्ह। बबुआनीजी करज पर सग देलथिन्ह स धक दऽ करेज उड़ि  
नाक पर हाथ देलथिन्ह न लस नदारव। आ धूमधप भना के बादर ओझा,  
मय हजम में जा, सूतल स्वामी के हथ पऽ उठलैन्ह। धुलाइ झा ओझि  
सग सग में अपना अछि पर विश्वास नहि भेलैन्ह। बुझि पड़लैन्ह जे स्वयन थिक।  
मुँड झंझि कऽ सूने रहलैन्ह। बबुआनीजी कडलथिन्ह - उदू, हमही छी।







बादली जो धन भरी भूला हूँ ओहि घर न गरी बरनाइ, ओर न धड़काएत  
चलि जाइत छह! पड़िने खखसि लैह, तखन भीतर जाइ।

बुढ़ाइ झा खल्ला करवाय देखा कैलन्हि, परन्तु मुँह सँ शब्द नहि बाहर  
भैरैन्ह। लखन भीतर गोर सँ सुन कऽ कहलन्हिन्ह — 'गे कीआ, बचाती पान उऽ कऽ  
जाइ छीक।

बुढ़ाइ झा खल्ला लऽ कऽ भीतर गेलन्हि और जमाय बाधू अपन कल्ला में  
पान भरि लेलन्हि। किन्तु रग चीन देरी जमाय बाधू धू धू करैत दुकड़य लगलाइ,  
गवासी देरी नहि करैत दे। कहिन्ह — 'सक्कन' फाँ का। एक मुट्ठी घूना दे  
दिय। घू दिजयें टु बी दीज। नार खाने के लखन कान दिख है।

जँभ कौन करवाय जमाय बाधू सी-सी करय लगलाइ और बधुआनीजी  
अपना आँख सँ हुनकर मुँह पोछय लगलन्हिन्ह।

एहो दाइ भवानी इहो और गौरी हम दोहरी दुखार पर ऐलन्ह और चचाजी  
दे राने पुत्राय 'प्रदर' करय लगलन्हिन्ह। गाना इहो अह उऽ एक बजल मधू भागर  
पडा छलन्हि। बधुआनीजी आबु मे गधू लऽ लऽ कऽ जमाय बाधू केँ चटावय  
लगलन्हिन्ह। बुढ़ाइ झा पिल्लन-दल्लूक भेल छह रहलाइ। चरस कान सँ हुनका पर  
घिकारक वषो होय लगलन्हिन्ह।

गौरी कल्ला लऽ जमाय — जमाजी आदगी कहिगो नाक लोकक दीघ में रहय  
तखन ने नीक लोकक कैदा बात मुझय।

रानीदाइ कहलन्हिन्ह — आव जमाय बधू राति मे कोना छैलाइ? जँभ  
छनछनाइत हैलैन्ह।

भयानी दाइ दल्लूक — एहन 'बूक' त लगले 'दिस'बित' कऽ देखक चहरी।  
बधुआनीजी बुढ़ाइ झा पर शान छलैत कहलन्हिन्ह — 'गदल आदगी' आब  
गात रगर पर हम दोगर अदनी राखि लेव। लोरा सँ हमरा फाज मँह करत।

एहो दिन रहैत रहैत बुढ़ाइ झाक आत्म-सम्मान-सरी आत्म भिक्षा कऽ  
गाज भऽ गेल। जेहि छठर में सँ आइ एकाएक चिलगरी प्रकट भऽ गेलैन्ह।

ओ बजलाह — देश, तखन हम घस जाइत छी।

मौरी और बधुआनीजी दिमाय और लय सँ सुध रहि गेलैन्ह। बुढ़ाइ झाक  
ई बुझल। मँरी सँ कऽ कललन्हिन्ह — 'हो बचाजी' लोहर एत गेट दपे जे जखन  
गम देलैन्ह तखन बिदा भऽ गेलैन्ह? और फाँ जे एहि जोरक धरने छहैत से क  
अदाय करलैक?

बधुआनीजी माहक पर लेन गजलैन्ह — जँ अमान बाधक देखा हो त एहन  
देवाक कऽ देओ, नहि त टीक पकड़ि कऽ दसूल कऽ लेवैक।

भयानी मौरी सँ एहन 'चैतन' सुनि बुढ़ाइ झाक ब्रह्मभोज धधकै ललैन्ह  
एकरक बधुआनीजी केँ भरि पोज मरिया कऽ उठा लेलन्हिन्ह।

एहन कल्पनालीन इधर देखि रहल लोक अटक, 'हे गेल'। बधुआनीजी पिरो  
बुढ़ाइ झम देत नायय लगलन्हिन्ह। अदमानक ज्वाला सँ हुनका छानी गोर गोर सँ  
आधक लगलैन्ह किन्तु मधुनी बुढ़ाइ झा हुनका नाक छल्ललैन्ह।

मौरी निचलेलैन्ह — बाध-ने-बाध बाध जललैन्ह गेल। हमरा बरी केँ पेचने अछि।  
भयानी दाइ चिचिया उटलीह — 'रेप! रेप!' (बमबाकार)।

हमरा सुनि बसू बाध सँ लोक जमा भऽ गेल। बुढ़ाइ झा पर तन मारे पड़ल  
त ओ देदम भऽ कऽ बधुआनीजी केँ नेने-दने मुँह भर खसि पड़लाइ। बधुआनीजी  
गन मे किस्काय लगलीह और ओझाजीक पीठ पर लाठी वजय लगल।

जखन बुढ़ाइ झा बंहाश गऽ गेलैन्ह तखन बधुआनीजी तर सँ छान-कानो  
तहँ खसि कय बाहर चैत गेलीह। हुनका आडी चिरी-चेरी भऽ गेल छलैन्ह और  
छोटी परक छोटा कऽ गेल, छल्लैत गेल छलैन्ह। बेरीक एहन देइजलैन्ह देखि मौरी  
क्रोध सँ बलाहि भऽ गेलैन्ह।

तखत नदीन जमाय पुत्रायक आदमी केँ नेने ऐलन्ह। ओ बुढ़ाइ झा केँ पकड़ि  
कऽ थोना लऽ जव लगलैन्ह। गमन बुढ़ाइ झा राधक आँग मे असली रहय प्रकट  
कैलन्हिन्ह। बधुआनीजीक भँडा फूटि गेलैन्ह।

भेर खुमिनहि मौरी केँ चाउन्हि आवि गेलैन्ह और बधुआनीजी केँ भुन लागे  
गेलैन्ह। राना-भवानी मँरीक उपचार मे लगलीह और नवीन जमाय बधुआनीजीक  
मथ पर संगजलक फोहरा देखय लगलन्हिन्ह।

एहो बुढ़ाइ झा अपन मुखधोष बाकजम समेटि भजना छत्क वाट धौलैन्ह।

देउडी पहुँचल उत्तर मौरी कहलैन्ह बेरि बुढ़ाइ झा केँ चनैवाक हेतु अदमी  
पनैलन्हिन्ह। परन्तु बुढ़ाइ झा पुन ओहि दृगमराचिक मे नहि पतलैन्ह।

बधुआनीजी जिसेपा कऽ हुनका पर नाजिरा बापर केँ छलैन्ह और मौरी  
अपना मुपुकी केँ प्रोत्साहन दैत छलैन्ह जे जँ ओहि वामनक डीह-हावर परत गेलवान  
नहि करैलैन्ह त तौ असल बाधक बेटी नहि।

एकर बुढ़ाइ झा शयनग्राम छोड़ि, शयनग्रामक पूजा करैत छलैन्ह और विरधगक  
थान मे शिपधगक सेवा मे चित्त लगलैन्ह अछि।

सब दिन पढ़न्हि हुनका मुगदाय भऽ गेल छैन्ह। किएक त हुनका छलैत  
कान आ निच जप करैत छलैन्ह जे

वीर्य देखि, बल देखि पीठक स्वाकलामनम्।

न देखि शयनगारे, स्त्रीमुखपेक्षिजीवनम्॥

## धर्मशास्त्राचार्य

मदमनाम्नः ५ दत्तः २ धर्मशास्त्रः कुरु यत्नः १ धर्मः १  
मम के ये त्वांति अनुसर करि छगह। धर्मशास्त्रः कुरु यत्नः १ धर्मः १  
धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १  
धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १  
धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १ धर्मः १

शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हम शप नई देन छीहै। ई ब्रह्मदेवते पुराक  
दहन छैक - भूमी श्रेष्ठ च गरुडाय धुई जन्मान्तरे लभेत्। श्रेष्ठ की भूमिपर र जने  
जन्मान्तर मे कुष्ठ-व्याधि सँ पीडित छै।

मदधर कानय लगलह।  
शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हम शप नई देन छीहै। ई ब्रह्मदेवते पुराक  
दहन छैक - भूमी श्रेष्ठ च गरुडाय धुई जन्मान्तरे लभेत्। श्रेष्ठ की भूमिपर र जने  
जन्मान्तर मे कुष्ठ-व्याधि सँ पीडित छै।

एक मदधर नानक शिष्यी रहलथिन्ह। पर. क. ११। हम मे वैराग्यनिन्ह।  
शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हम! ई वैराग्य अनुद भनई। २२५, २

प्रतिबन्धनुवाहो य नासीत गुठण सन्ध - मनु  
एकमे जे दगान यहेत छैक से नासि दिहै सँ हमरा दिशि अपि रहन अछि अनय  
आडि ठाम सँ उठि जाह।

मदधर उठि कऽ भूमी दिशि जाय लगलह। ई शस्त्रीजी पर रहलथिन्ह -  
हम। इहो अशुद्ध किएक त -

देवतानां गुरोरात्रः स्नातकध्याव्योस्तथा।  
मन्त्रान्तं कस्तस्याय वज्रमर्दय वरद ॥१॥ मनु  
गुरुक छाया नीचि कऽ चलमा मे दोष होइत छैक।

मदधर कहल कऽ कऽ एक काम जे देवनाथ कि शस्त्रीजी पर रहलथिन्ह -  
हम इहो अशुद्ध भेलथिन्ह। क. ११। जे तँ अपन अनुमान र शस्त्रीजी मे जाय गेलथिन्ह  
अथ। हमर बरात तोरा दिशि जेतौ। तँ जोहु ठाम सँ उठि जाह।

ताप। एक दिनअदि दू नौटाक बगल दऽ कऽ तँ जाय।

शस्त्रीजी कहलथिन्ह - चर, अथ एक भयानक भयानक भा. गेनौत।

किएक त -

पशुमण्डुकमार्जारवसपनकुलाशुभिः।

अन्नरागमने विद्यादन्ध्यामनहनिशम् ॥ - मनु

यदि गुरु शिष्यक रीति २५ कऽ 'वेला' दे ता बगल अथ अनु निकारी जाय त ओहि दिन  
अप्यमन यजिह। अतएव ग्रन्थ धंद करह।

मदधर के चौवास दंतक भूमी अपि गेलथिन्ह किन्तु सरहि मन एउटा बगल  
ताहि गेलथिन्ह। शस्त्रीजी कहलथिन्ह - 'दला' दे ता' देत म दकि गेल छलथिन्ह। अ. १२  
तोह स्नात करय पड़लथिन्ह। किएक त लिखैत छैक जे -

अमोन्धसुमिकषण्डमार्जाराशुशकुलाम्।

संभुतः शुभ्यति स्नातदुदका ग्रामशूकरौ ॥ - मनु

दिलथिन्ह, मूस अदिक एउटा भेन गन्तौ स्नात कैंत भूई भे।

मदधर पोखरी स स्नात कऽ कऽ ऐलथिन्ह त गुरु पूज्यार बैसल रहलथिन्ह। श्रेष्ठ  
भीर लादक डेलु कलथिन्ह। मदधर शय अथि व, अपन ने राखि दलथिन्ह।

प जी हँ तो बरैत बलथिन्ह - हुम्। तो भाव आग्रिम नम दे काडा छैथिन्ह।  
मदधर कानय लगलथिन्ह।

शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हम शप नई देन छीहै। ई ब्रह्मदेवते पुराक  
दहन छैक - भूमी श्रेष्ठ च गरुडाय धुई जन्मान्तरे लभेत्। श्रेष्ठ की भूमिपर र जने  
जन्मान्तर मे कुष्ठ-व्याधि सँ पीडित छै।

मदधर भयभीत भऽ श्रेष्ठ उठा माथपर राखि लेलथिन्ह।  
शस्त्रीजी कहलथिन्ह - ओकरा पीछे पर राखल और दीप लेयि कऽ लगलथिन्ह।  
मदधर दीप लेसि कऽ ऐलथिन्ह और एक धतत मे राखि देलथिन्ह।

शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हुम्। हुम्। तो जाय साय जन्म छरि आन्तर होएथिन्ह।  
किएक त लिखैत छैक जे -

भूमी दीप दोऽप्यति सोऽप्यः सप्तसु जन्मसु। - ब्रह्मवैवर्त

भूमी पर दीप रखने सप्त जन्म आन्तर छै। दीप तर एकटा अथ राख दिन्हैक त  
नीच जेतथिन्ह।

मदधर फक दऽ दीप कै मिडीलथिन्ह।  
शस्त्रीजी कहलथिन्ह - हम हुम्। हुम्। ई की कैयक अथ तोरा सत जन्म  
छर भयानक निनि मे जन्म लेयप पड़लथिन्ह किन्तु लिखैत छैक जे -

कुष्माण्डव्येदिका मारी, दीपनिर्वापक पुमान्।

यथाष्टोदमवाप्नोति खद्योतः सप्तजन्मसु ॥ - स्मृतिसंग्रह

१. छत्तर कटय त कुलक नाश करय और पुरुष दीप मिहय त सान जन्म  
भयानकनी छै।



६०/प्रणम्य देवता

गदाधर के एतने ध्यान में गन्धर्व नन्दक दिग्गन्धर्व लगे गेलेन भय में धर धर काँस्य लंगलङ।

तापन शर्मा जी हुनक पाठ्य होर में कनेक भी लगन देखलखिन मुठ धिक्क - ई घृत घृतप से सैलन?

विद्यार्थी डेगड़न-डेगड़न उत्तर देलखिन - ज्योत दुधी में तैं।

शास्त्रीजी कहलखिन - हुम्! अब तोरा सेनैय भड कड जन्म है। किएक त लिखित छैक जे -

धन्य हन्दा भज्जन्तु कस्मिं हभो जल पय

मधु देशः पय काको रस रवा नकुतो घृतम्॥ -मनु

दूध चोरैने कीअ, रस चोरैने कुशुर और घृत चोरैने सेनैयक कोठि में जन्म होइक।

विद्यार्थी गुस्सक पैर धर कलखिन - आब हमर उत्तर कैल जाओ।

शास्त्रीजी तुरा हुम्! करैने कहलखिन - इसी अशुद्ध भोजन। विदेह में लिखलखि भण्ड -

व्यवस्तपाणिना मुन्यदुपसंग्रहणं गुरो।

सर्वेन सव्यं सप्रदया दशनेन च दक्षिण॥ - मनुस्मृति

गुस्सक घम घरण के घम हस्त और दक्षिण घरण के दक्षिण हस्त से स्पर्श करक छोड़ी।

गदाधर शास्त्रीक पदति से गुस्सक घरणसंग कैलखि शास्त्रीजीक दुनु हाथ में पूजाक फूल रखै। आरव माथक मन्त्र से अर्घ्य देन कहलखिन - शुभ गृणात्। समस्त शास्त्रक वचन मन पढ़ि गेलैक -

पुष्पहस्तः पयोदस्तस्तेलाभ्यङ्गे जने तथा।

आर्यीकर्त्ता नमस्कृता भवेता पापनाशिनी॥ -स्मृतिसंग्रह

हाथ में फूल उठैत जे प्रणाम वा अर्घ्य दे करथि स पापभासी होथि। बस, लगले शास्त्रीजीक मुठ दबलि गेलैक। विद्यार्थी के पुरोत कहलखिन - ठौ भुसबोल! जयन हमरा ताथ में फूल छल लगन प्रणम किएक कैलन? तौरा अर्घ्य देन आव हमरो माथपर पय लठि गेल। हो अपनी गेनाह और सो-सग हमरो लेनह।

समस्त गदाधर के हँक गेलैक। शास्त्रीजी कहलखिन - हुम्! हुम्! दहिन कान छुयड। किएक त -

भुते पतितसंभवे दक्षिणश्रवणं स्पृशेत्। -शाततपस्मृति

विद्या भेल उत्तर तुरत दक्षिण कान स्पृश करक छोड़ी।

गदाधर अपन कान धैलखिन तथार्थ शास्त्रीजी नहि पाइलखिन। विद्व - नकै छर छर छोटी देवलै कड अकम्पन करल गड। विद्व त गुरा-शानन कहैत छथ -

सुखा निर्भीक्य दास तु पारिधायासमेतु सुखः।

कुर्वाणधमनं स्पर्श गोपुष्करपादं दत्तम्

गदाधर त ई सन करल गेलैक। ओकर शास्त्रीजी भोजन कथ्य धैरलाह। गुलबार्ताक कानो एक मुठ। मदीनन भन ओ कनेक साना मड खैलन।

गो जी के मस्तिग रखै। विद्व (देखी) बुझक मड रहलै उत्तर तत्परागन तौह रहलखिन। जयन गदाधर भोजन कर देललाह न पं जी दक्षार्थक न जयन में न पय छानक भन, गदाधर रति कलखक तत्परागी और मग्गड़क अन्तर इ देखितह पं जी के फूल दलखैत विद्यार्थीक रहन छुटन।

पं जी हुनका रति कड सोझ करल लगलह - हुम्! हुम्! मनुजी विद्वेश शब्द हीनानवगम्येय स्थानदेव गुरुमन्त्रिणी। विद्वार्थी के मगडा गुरु में न्यून भानन करक छाडी। हमरा जोकरने छुट भन खा जड फलिका पडन रही। मर लगन त दानक जल से कण्ड सिन कय ली और लगारी ग भोजनन म कयक जीभ दगवा लेन होइत छैक। पन्तु 'हमका न देखीलै। सात-बस में तरकारी और ऊपर से अँचारी। हेनका के एक्क परात देखैक अँठ' जखि से ई हमरा अधरणा में कैल कड भोजन कैल करथु।

गदाधर के गरा दबीर लगल गेलैक। गुस्सक कीर में दंडित दमेन ने उगलैत अहाँ ओ परसन लिखि लहो बेचार के सानवा भन छोड़ि कड छिटे जाय गइलैक। ओही रति गदाधर अपन वस्ता समेटि घसकलाह।

एव प्रकरे जे विद्यार्थी आर्य से धाड़ये दिन में अरना दारक वाट धरथि परन्तु पवित्राइन कनय जायु ? पं जीअ सापुग घनशरकत भार मुनये मतिपारक पडै। छलैक। माइ नवे के अनाना न कल्ल रोम के सोधलगा। परसू एकजोड़ उपवास त चारिम दिन होइसक पायन। एत प्रकार तीसो दिन बरसो मरल, विद्व ने किछु टंट-वंट लगलै रहैत छलैक।

काँडे पर भस्मभस्मक विचार त ओर जान मगैत हार, पांडन के कुम्हार नदि, विद्व के पथोर नाड। तृणवा बोट में मुड़ नहि। पचमा के बेल नहि। इत्यादि।

एत दिगाय केलन में लहो कानो गड़दड़ भेलैक कि मचय महभारत।

एत दिन पडितइन अपन मन से छोर पूरि दलैलखिन। जखन पं जीक धारी म गइलैक त खडन खडन छुललखिन - बह! बेश खदिय भन अँठ। कोन देवक निमित्त बनौने छलहुँ?

पंडितइन उत्तर देलखिन - ओहिना अपने रत्न तेल बनल छैक।

१. प्रतिपत्तु य क्षुणाण्डमभस्यमर्धनाशनम्।  
द्विनेममां परोक्षं श्रुवृद्धिकरं परम्।  
तृतीयायां क्षुर्वाण्यमूलकं धमनाशनम्॥  
कलङ्कधारणार्थं च अर्धमां वित्यभक्षणम्॥



एक दोर मात्र पास होकरा जमाय रहलखन कनेकाईक जमाय के सामुह मे  
जंघर मुख भरीन गेन स भुक्तभरीन जने । होला जमाया मारा के पर-पर पर  
दिपति होनय लगलैक ।

रति मे संचार लगलैक और गीन होमय लगलैक । जमाय के डाल मे घुल  
लाग दिगार गेलैक । पाछे दू एक वीर होला पर मर पलैक ।

शुभोपदेश भरी समय मे शयन मरदय भोजन मे निवेदन करय हेतु परोच  
गेलैक । ऐत मे घुल गेन दरी प जीक कानि भरीक उर भैक । जमाया हुन  
फेकयु फेकयु । अवेष्ट मे घुल खाएव गोमास-भक्षण नुन्य ।

तम्रपत्र पय पामुच्छिष्टे धुनभोजन ।

दुग्ध तम्रसाधैव राघो गोमासभक्षण । - ब्रह्मदेव

अब जमाय काय खेनाई धर अस्तम भऽ पने पाय नालक । ई  
देखाई मे जी पुन टोकलैक - हुन हुन नष्ट कैल । अब राम राम सँ बोलैक  
भऽ गेलहु । कारण जे -

उत्थाय कामहस्तेन तोय पिबति यो नरः ।

सुरासौ स च विज्ञेयः सर्वधर्मवहिकृतः ॥ - ब्रह्मदेव

वाम हाथ सँ उठा कऽ जल पिउनह मध पिउनह छैक ।

जमाय तुन गेलास हुन सँ पराक का नीला रखलैक । तमा प जीक  
दृष्टि संसार पर गेलैक तमक संग मे भौंवर प्रसन्न रहैक गति मे सँ थोडक  
छोटे कऽ जमाय गेने रहलैक । ई देखि प जी ओधन्य भऽ गेलहु । वज्रलह - हुन  
हुन हुन अपने सँ वीर मुँह मे डेल अछि से पिबे देन अछि । अब प्रमत्त  
भोजन तम्रपत्र पय पामुच्छिष्टे धुनभोजन च कामन ।

भोजन तम्रपत्रपु मलपात्र च कामन ।

प्राग्ग्रे शरीर मन् भुङ्क्ते तम्रपत्र सुरासाम् ॥ - ब्रह्मदेव

तम्र पात्र सँ भोजन कैने प्रलेक प्रात मे मलभक्षण फल हो । अब अपनेक पुन  
पञ्चपर्वत संस्कार हैत तखन ब्राह्मण बनय । कारण जे मनु ई कहै छथि -

अस्नानात् प्राशय विष्णुं सुरासत्पष्टमेव च ।

पुन संस्कारमहन्ति त्रयो वर्णा द्विजस्य ॥

अज्ञानकृत गल-भक्षण कैने पुन उपनयन आवश्यक । बाका अपन शुद्ध कति मे रहय  
प जी अपने सँ टाउ भऽ कऽ राग संचार पछुआर मे फेकलैक ।

पच्छम्या के वज कय कहलैक । देखल । ओझा के दायल पुन संस्कार नई  
होइत तागत पयंत लोग लखनि दिनक सँ ओनो प्रकारक सम्पक नहि रहैत जाइ

अब ओझा रति मे भौंवर होला सुनताह ? प जीक आदेशानुसार बहरपरा  
मे ओझाओग कऽ देल गेलैक । ओझा हुँह विपुओने सूतय गेलैक लिह किने  
पडलैक ? हुनका कछमच्छ कौन देखि अहत्या दंड मेलाइ । पुटलैक का  
ओझा, कानो बालक कष्ट न बाडे अछि ?

ओझा एक टा मच्छर भरैत दजनाह । इतिहास २६ अटैत छै ।

अहत्या अग्न्य पिब्य सँ इ सम्चार कय गेलैक । पुटलैक - अज्ञान मे  
अवस्था कैसा जातैक ?

प जी के दुष्टि पडलैक प्रायश्चित्त व्यवस्था कहलैक - मच्छर मे  
मरलैक अछि न एक शुद्धयक प्रायश्चित्त करा जुनगऽ । मच्छर मे मनुजक पलन  
हैक - पूषेयानम्यनस्थां तु शुद्धयन्मृतं धरेत् । मच्छर के पडी गति होइत छै ।  
जेवत शुद्धयक दण्ड लगलैक ।

प जी स्वयं जमायक व्यवस्था कयलैक हेतु चलाइ । जमाय पूव दू गूतन  
रहलैक । ई देखि प जी कहलैक - हुन हुन अपने ओग सूतत छै । छोट के  
दक्षिण सीर कऽ लेल जाओ । किनेक न - स्वयं प्रायश्चित्त कराइ । जमाय  
दक्षिण शिरा । अपना घर मे पूव नुँह सूत, किन्तु सरसुर मे आँध कऽ दक्षिण छि  
सूतवक चाछी ।

जमाय मने-मन कुपरेत खाट पुनवय लगलाह । ता द्रौपदी आँध कऽ दजनाह  
- ओझाजी के सोनक आँटी छलैक से आइ डेरा गेलैक ।

प जी कान पर हाथ धरैत बजलाह - शीत जपन् आव जतय भनि सन  
छलैक ततवा और अपना दिशि सँ दण करय पडलैक किनेक त

प्रमदतस्तु यन्मष्टं तावन्मात्रं नियोजयेत् । - द्रौपदी परिशिष्ट

कुन्ती दुभ दऽ बजि उठलैक - और सोन छेले कटौ जे दान करलैक ।  
प जी बजलाह - तखन सोन घोरियाक दण्ड लगलैक । किनेक त किनेक  
छैक जे -

अन्यथा स्तौयमाणी त्याजेन्मरने विनाशिन । - द्रौपदी परिशिष्ट

नहि दान करय त घोर बुझल जाय ।

मन्दोदरी पुछलैक - सोन घोरियाक दण्ड की छैक ?

प जी बजलाह - सोन घोरियाक असल दण्ड त छैक मुरारक मरि ।

गुडीका मुरार राजा सकृदन्वात्तु न स्वप् । - मनु

राजा अपने हाथ सँ मुरार लऽ कऽ छोट सहियरी कऽ लगावय, किन्तु होना  
धुकाका बचन देखि दैत छिएत ।

ब्राह्मण स्वर्गहारी तु रुद्रजामी जले स्थितः - यज्ञवल्क्य

ई जन मे टाउ भय शतरुदीक जप करधुगऽ तखन जा कऽ शुद्ध होलाह  
ई अवस्था दय प जी सूतय गेलाह ।

अखन एक घर रति धौकी रहैक तखन प जी जमाय के शतरुदी  
मे गेलैक । जमाय गेलाह । किन्तु जमाय त दुपहरि रति कऽ अन्धपुर प्रवेश कऽ  
गेलैक ।

प जी के पंचकन्याक बड्यत्र बुझा गेलैक । दौडल अछि गेलैक । रती के



पुच्छलधिन्ध - हुनका के भीतर सऽ गैलेन्ध?

जिह्वाइन त डरै ऊवाक।

प ज वजलाह - जवन अवश्ये तूँक तऽ धन है एतल हुनका मनकाही  
उप सरकत नम्य छैक से से स अथ हुनका संगी में कन्या हुनका भ  
गैले हैत। आहत्या द्रौपदी कतय अछि?

पायनइन उच्छलधिन्ध - एखने त ओह घर में तऽ गैले छैन्ध।

प नो कुल भय वजलाह - तवन जेकरा सब के एत एत मन्त्र लमि  
गैलेक। फिरक न परतुप के दऽ पऽ छै, जेवा में त आगपर भइय गेल गैलेक।  
अहुँ हमरा में छल बैलहु। अथ सभ गेटा के प्रायश्चित्त करय पडत। और अइ तौ  
ओझा हमरे सब गुतनाह।

इ कहि प जी नो मूक खोज में दहरीलाह। जमाय ज मे दग संधने  
छलधिन्ध - सरकर जैलेहि भीका भेटि गैलेन्ध। अन्तार में चुपचाप धोर जवा धर सौ  
वाहर भय छल-पहरा तोड़ि पडैलाह।

एव प्रकारें प जीक जेहिठाम जे सर कुटुम्ब अदेल छलधिन्ध लनका दडाइत  
याद नहि गुलैत छलैन्ध।

देवजोयस प जी के एकटा पट्टा धर भेटि गेलधिक। सत्यदेव न जी  
हुनका सदाचार-विश्व देवय सलधिन्ध आहिक कृत्य सँ प्रारम्भ भैलेन्ध। सत्यदेव  
सत्यदेव जोन तऽ छै, दासभूमि दिशि गेलैन्ध। किन्तु कतहु वेग्य धोर भूम नहि  
भेटलैन्ध। किएक त पुण्यसंगक विधि में पडने छलाह -

न देवायतने वृक्षभूले न च जले नृदे  
न नदीकुसुमाग्रेषु न दारु लोष्ठमसन्तु  
न चित्ताग्निशमशानेषु नोषरे न द्विजान्य  
नाम्नः समीपे न पुण्ड्रे नाकश न च शादले  
न शस्यसेधे न खले पुष्पोत्पाने न चावरे  
न फालकृष्टकोदारे न सिष्टश्च फदायन  
न गोव्रजे नदीतीरे नित्यस्थाने न गोमये  
द्विजो व देहच्छायायां शम्भूम्रविस्मर्जनम्  
कुपाङ्ग यज्ञेष्टकाकूटे न च शप्राणिस्तके। - पञ्चोत्तरखण्ड

एहि वचनमालिक अनुसार सत्यदेव ने ऊहार भूमि में दैस सजैत छलाह, ने  
जोतल में न खेत में, ने फलम में, ने गछ तर, ने नैदान में, न डीह-काथर में, ने  
खाइ थल में, ने पोखरी दिशि, ने नदी दिशि। तखन देवाय कनय? फेरल-फिरल  
गुरुक आश्रममें आवि। कर्कसविमूक भऽ टाड़ रहि गेलाह। एहन अवस्था दिख्य नहि  
गुरु कृतकृत्य भऽ उठलाह।

देवाग दिन दन्तधावनक प्रकरण पढ़ीधैन्ध। सत्यदेव भी उठि कऽने वापस

गेलैन्ध। अन्तर्वा दैपरी दातमनि करी। रहि न दऽ पुनर्गति अर्था हुन  
संशक स्वामी परदेश छथि। तखन दातमनि किएक करीत छी?

गते देशान्तरे पत्नी गन्धगात्र्यञ्जनाम्नि च।

दन्तकाष्ठं च ताम्बूलं यजयेद्वर्णिता गौरी॥ - स्मृतिरत्नाकर  
न दिदेश में रहैत जवन दन्तकाष्ठ नाथे करक छथी

इ सुनिहै हुन पुनर्गति दिशिया उठलाह। सत्यदेव शुभ्य ईश्वर बजलह -  
तऽ एहि वधन में सत्य हो त दीनर प्रणम लिखऽ

भ्रात्रे यज्ञे च नियमे तथा प्रोषितभर्तृका।

रजस्वला सूतिका च यजयेद्देवस्थापनम्॥ - नित्यकृत्याणव

गुन्गाछने गूँठ धाई। सत्यदेव। कलधिन्ध - हो सत्यदेव। तो त दुइए दिन  
में पडैत भऽ गेलाह।

सत्यदेव वजलाह - ठी, ठी। एखन वजने दोय हैत। किएक त -

पुरीधे मीधुने होमे प्राश्राधे दध्मधावने।

स्नानभोजनजघ्नेषु सदा मौनं समाधरेत्॥ - अत्रिगृणि  
स्नान, दातमनि, भोजन जदि काल में मौन रहक छथी।

गन्धत सूयक दिन्य प्रकट भऽ गैलेन्ध। सत्यदेव वजलाह - जेहू, जेहू। सभ  
गोट दातमनि जेवैत जात। तऽ त गोमास-भक्षणक प्रयासधन लगि जाइत। कारण  
जे लिखित छैक -

उदिते च यदा सूर्ये दन्तकाष्ठं करोति यः

सविता यक्षितस्तेन सधो गोमासभक्षणम्॥ - स्मृतिसंग्रह

सूर्योदय भऽ गेलाक अनन्तर जे दातमनि करय से सय गो.....

तखन गुरु सोह पालवित। सत्यदेव दौडल गेलैन्ध। गुरु पुछलधिन्ध -  
पडन में कथिक शान्यार्थ होइत छलैन्ध? सत्यदेव सभ वृत्तन कटि सुनीलधिन्ध।

गुरु पुछलधिन्ध - तो अपने कखन दातमनि कैसह?

सत्यदेव कहलधिन्ध - सूर्योदय सँ आद्य पहर पहिनिहि।

गुरु कनेक काल विचारि कथ वजलाह - तखन सोह आदरिवसी भेलैन्ध।  
किएक न पट्टी भिनि में दातमनि कैलैन्ध अछि। से परम निषिद्ध। कारण जे देवी  
भागवत में लिखित छैक -

प्रतिपदार्शं पट्टीं नवम्येकादशी रवौ।

दन्तानां काष्ठसंयोगो दहेदासप्तमं कुलग्॥

एतल भाव रत्ना पट्टी, नवमी, एकादशी रवि, एहि दिन में दांत के काष्ठ सँ संयोग  
में कुल दग्ध भऽ जाय।

अथवा एहि दिन दन्तधावनक प्रायश्चित्त में सभ गेटा केँ बालु-गोवर  
करीत।

एव प्रकार स्नान स्मृति आदि सनत प्रकरण पंडित कथ सत्यदेव आचार-शास्त्र  
न ज्ञान भंड गेलाह ऊ साक्षान् धर्मराज बुद्धिभेदर वनि गेलाह। परन्तु स्त्रीगण के  
प्रणम्य भेलैन्ह। कियेक त उ डन मे जहाँ किछु होइक कि सत्यदेव जा कऽ गुरुदेवक  
सेवा मे निवेदन कऽ देखि और लगले पंचकन्या अदेश सभ गोटा के भेटि गइन्ह।

पंचकन्या बाजहि — कहीं सँ इ कुदसीनगीना आवि गेल जे सभ बात बाबूजीक  
कान मे पहुँचा देत छैन्ह। एकरा द्वारे बिछु करब कटिन। कोना एकरा सँ पिंड छुटव?

एक दिन पंचकन्या पोछरि मे न्हा कऽ ऊपर भेलौह त देखि छवि जे सत्यदेव  
भीड़ पर आँखि पुनने सन्ध्यादन्दन कय रहल छवि। सत्यदेव एक पैर पर २ उ भम  
सूर्योपस्थान मंत्र पढ़य लगलाह। पंचकन्या जा कऽ तारु कात सँ घेरि लेलथिन्ह।  
सत्यदेव आँखि फोलेलन्ह त अयज। क्षितिजा कऽ पुटलथिन्ह — तौ सभ एहिठाम  
कियेक ठाहि छह? वेदमंत्र त मे कान मे पड़लौह?

मन्दोदरी कहलथिन्ह — पड़ल त! कहीं छलड़ी ओम्. ..

सत्यदेव हँसलथिन्ह — चुप! तोरा सभ के प्रणम्य उच्चारण करबक अधिकार  
नहि छीक।

कुत्ती बजलीह — हमरा त गायत्रीओ मंत्र अबैत अछि तुन्ह — भूभूय स्वः  
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्र

सत्यदेव कान पर हाथ दैत कहलथिन्ह — चुप, चुप, तोरा सभ के आह की  
भऽ गेलौह अछि जे एना करैत छै? हम जाइ छियेन्ह गुरुजी के कहि देबय।

तारा दाइ अनछा कऽ बजलीह — सभ बात मे जाइ छियेन्ह गुरुजी के कहि  
देबय। कनेक हँसिओ लोक करैत छैह त एना दिगड़ि कियेक जाइत छह?

सत्यदेव कहलथिन्ह — अह, एकादशी के हँसी कियेक करबह?

अनन्यात् च ताम्बूलं धैर्युन केशवार्जुनम्।

युतकीडानृतं हस्तमेकादश्यां दिव्यदेवम्॥ — स्मृतितत्त्व

एकादशी के अन्न, जल, पान .... ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐ. एकटा और कार्य, केश  
धरकर, जूआ छेलाएब, फूसि बाजव, हँसी करब, ई सभटा यजित छैक।

एहि पर पंचकन्या धिलखिला उठलौह।

द्वौपदी साड़ी कोचियवैत बजलीह — हो, पतड़ा देखि कऽ हँसौ नहि कैल  
जाइत छैक।

अहल्या केश भड़ैत बजलीह — ई सासुरो जेतह त पतड़े आगो मे राखि कऽ  
सभ कार्य करताह।

तारा नुआ करैत बजलीह — ऐ ऐ ऐ क की कहलछीक से नहि बुझलियेक।  
कनेक फरिछ कऽ कहौक।

सत्यदेव कुटितबुद्धि भऽ गेलाह। तागत अहल्याक अंचल छसकि  
गेलैन्ह। सत्यदेव आँखि मूनि लेलन्हि। ओहि दिन हुनका सम्पूर्ण दिन उपवास करय

पड़लैन्ह। कियेक त एकल छलैन्ह —

नमो परस्मिन् वृष्ट्वा दिनमेकं व्रती भवेत्॥ — शंखस्मृति

ओहि राति प्रकृतिक कोनो अगत रहस्यक कारणे सत्यदेवक जीवन मे एक  
नवीन घटना घटित भेलैन्ह जे स्थानावस्था मे ब्रह्मचर्यक नियम भंग भऽ गेलैन्ह। निंद  
टुटैत देरी भवभाति होइन, गुरुक सेवा मे उपरिधत भेलाह।

गुरु पठिने त दस हजार भजन कैलथिन्ह तखन शास्त्रक ध्येयस्था देखिन्ह—

स्वने सिक्त्या ब्रह्मचारी दिजः शुक्रमकानतः।

स्नात्वाकर्मर्चायित्वा त्रि पुनर्मन्त्रेण जपेत्॥ — मनुस्मृति

ऐखन जा कऽ सचैत स्नान कय आवह, तखन सूर्योपसना कैलाक अनन्तर मंत्र  
जपय पड़लौह।

सत्यदेव धललाह कि गुरु टोकलथिन्ह — सुनह। एकटा और विधान छैक।  
याज्ञवल्क्यक मत छैन्ह —

यन्नेऽप्यरेत इत्याभ्यां स्कन् रेतोऽभिघ्नयेत्।

स्तनान्तरं भुवोमेध्यं तेनात्मिकया स्पृशेत्॥

'यन्नेऽप्यरेत' मंत्र पडि नि सूत पातु के अनामिका जाडुर सँ लग, हँस्य र कपडा  
मे टोप करय पड़लौह।

धेनारे सत्यदेव के की-की ने करय पड़लैन्ह? ओहि दिन कोनो दण्ड बाकी  
नहि रहलैन्ह।

गुरु कहलथिन्ह — देखह आव सँ जँ एना करबह त अयकीणीक प्रचक्षित  
सगतौह। कियेक त वांछिक मत छैन्ह — एतदेव रेतस प्रयत्नेनामे दिवा स्वने च।  
तकर की विधान छैक से जनेत छह?

अयकीणी तु काणेन रासमेन चतुष्पथा।

चक्यहविधानेन कलेत निज्जनि निशि॥ — याज्ञवल्क्यस्मृति

राति मे बाँच चौका पर जाय, कनाह गदहा के लऽ कऽ पाकयज करय पड़लौह।  
तखन निज्जति देवता सन्तुष्ट होइथुन्ह।

पुन एकन्त मे दुस्रयैत कहलथिन्ह — देखह, आव तौ युवत्यधमोन्न भऽ  
गेलह। आइ सँ अपना गुरुआइन के फराके सँ प्रणाम कैल करिहनु। कारण जे  
मनुजी लिखैत छथि —

गुरुर्न तु युवतिनामिथ्येह पादयोः।

गुरुविशोधयेण गुणदोषविक्रानता।

तदनन्तर पंचकन्या के बजा कय डाँटे देखिन्ह जे सत्यदेव के केओ दिक  
नहि करैन्ह।

गहि दिन सँ सत्यदेवक ई व्यवस्था भेलैन्ह जे राति मे कोपीन पहिरि, भूमिपर  
छानुरक पटिय चिन्नाय, माथतर ईट रखि सूतल करथि।



विष्णु भिन्नक उपमत्ता महामहोपाध्याय हैं अपने चरित्र का प्रकाश देकर भोजन माने हैं भोजन जो एक दिन तुम्हारा घर पर गिराई करे पड़नेक। ज़रा भय, लज्जा सब है वज्र कय कृतकचिन्ह - जाव अमर अन्तर्गत रामाय आये गेल।  
 कियेक त - पादयोर्नयने जल्यो गूदे गूदे नु मुक्ता। चरण पर पत्नीप्रभु मृदुल गूदा शिख नखन हनन। पूज त अदि नहि जे केदधिकित श्राव करत तहि सँ उत्तम है जे हम स्वयं अपन श्रद्ध कय आवी।

इ नदरि, धर्मशास्त्रवादी सत्यदेव के संग लग विभारियण्ट पहुँचलह। रत्ननादि दृष्टक अन्तर भोजनक समझा उठल। सत्यदेव कहलथिन्ह - एहिठाम हनुआइक दोकान मे पड़ी मिठाइ छैक।

पं जी वज्रलह - ओ ऐन प्रशिक्षित लग्य। कियेक त मन्त्री लिखैत छथि - माहान् शूद्रस्य पञ्चान विद्वान्श्राउने हिज। शूद्रक यन्त्रांश पकमान पंडित ब्राह्मणक हेतु अभस्य थिक। ओ ऐना जय त एकसन व्रत करऽ पढ़म

दिवाणी बजलह - दोकान मे चूड़ी छैक।

गुरु कहलथिन्ह - अओ अभस्य। कियेक त शस्त्रधार लाये छथि - अभस्य ब्राह्मणा च शूद्रभष्ट चिपीउकम्। - ब्रह्मदेवने

शूद्र सँ सुआइल धूडा ब्राह्मणक हेतु अभस्य थिक।

सत्यदेव पुछलथिन्ह - तखन केवल दक्षिण का कऽ रहै जाएय?

पं जी वज्रलह - सेहो अभस्य। कियेक त लिखैत छैक -

अमस्यं महिषीणां च दुग्धं दधि घृतं तथा। - ब्रह्मदेवतं

महिषक दूध, दही, मी ब्राह्मण के नहि खैदक चाहै।

सत्यदेव पुछलथिन्ह - और यदि गाइक दूध या दही दोकान मे छोटे जाय?

पं जी कहलथिन्ह - सेहो अशुद्ध। कियेक त अंगिराक वचन छैन्ह जे - शूद्रवैश्वमनि विप्रेण शीरं वा यदि वा दधि।

निवृत्तेन न भोक्तव्यं शूद्रान्नं तदपि स्मृतम्॥

शूद्रक घर मे यदिओ दूध भोजन करव शूद्रान्नक तुल्य थिक, केवल फल मेटव त खा सकैत छी।

संयोगवश एक सुरतिन ओहिठाम केरा बेच्य हेतु पहुँचि गेलि।

पं जी पुछलथिन्ह - कोना दैत छठी?

सुरतिन बजलि - पैसा मे अहाइ गो।

इ सुनिवहि पं जी कान पर हाथ दैत वज्रलह - हुमां हुमां शान्तं पापम् सभ केरा धूरि भऽ गेल। ई 'गो' कहि देख्य। गो क अर्थ गोवधवैदिकवर्धन ई विशेषण लगने केरा वामदुष्ट भऽ गेल। आज पहन केरा क खाएल। सम्झत लऽ जय कहैक।

सुरतिन अपन केरा समदैत ओहिठाम सँ पड़ाइलि।

अब गुरु शिष्य की खैनाह? अन्तर्गत स्वयंसेवक विचार भेल। सत्यदेव जखन पंचव्रतपूर्वक रोडर सँ दाग भय जखन केँ रातक कल, नवीन मृदुभाण्ड मे भोजन में एक करव लगलह। प्रहल एहि दिनेकोनो भोजन सम्भल भैलह। पं-जी एकटा वज्रवा रह्य तखन ने? जहिने पण्डितक समझा। हुन

सत्यदेव बजलह - जाइ छी, दोकान सँ दू टा थारी माडि लाबय।

पं जी वज्रलह - हुमां आकरा दाग मे छैने प्रशिक्षित लग्य। लिखैत छैक -

शूद्राणां भाजने भुक्त्वा, भुक्त्वा वा भिन्नभाण्डके।

अहोरात्रोपिनो भूक्त्वा पञ्चगव्येन शुद्धयति॥ - संवत्तस्मृति  
 एक वारन मे भोजन कैना तन्हीं एक अहोरात्र उपवास तब पञ्चगव्य लेबय पड़ैक।

सत्यदेव दोकान सँ पुरैनिज पात लऽ ऐलाह ई देखि पं जी कहलथिन्ह - गाँठ पर ले भोजन कऽ सकैत छह कियेक त ब्रह्मचारी छत। किन्तु हमरा भोजन कैने प्रवर्धित सामि जाएत। कारण जे लिखैत छैक -

पलाशपद्मपत्रेषु गृही भुक्त्वैतदय चरेत्। - स्मृतिमग्रह

प्राणिन पात पर यदि गुडस्थ भोजन करव त ऐतव नामक प्रवर्धित तहि लऽक।

दिवाणी कहलथिन्ह - तखन अपन कधी मे खाएव? कड़ी त हम साथे कऽ ले जाइ।

गुरु कहलथिन्ह - सेहो अशुद्ध। इरीत कहैत छथि -

हरतदत्तभोजनेऽब्राह्मणानीये भोजने, दुष्टपत्तिभोजने।

प्रायश्चित्तभोजनम्॥

यस्य म डेल भोजन कैने, ब्राह्मणोपवर्षक निकट भोजन कैने अथवा दुष्टपत्ति पत्ति मे दैसि कय भोजन कैने, तीन रात्रिक उपवास करैव्य।

पं जी कहलथिन्ह - गुरु, तखन अपने भाडे मे भोजन कैल जाओ, हम अपना तेल पातपर बाहर कय लैत छी।

अन्तर्गत कोनो कोनो तरहें ई समस्या हल भेल। किन्तु गुरु-शिष्यक भगव मे भोजन रहैत तखन ने?

गुरु निवेद्य काठि, पंचगव्य बाहर कय, मज्जपूजक उत्सव करैत, एक कौर मुँह मे लऽलह। विचार्यो पैर धो अथवा धोली ओड़ने, अन्तर्गत आसन पर ऐलाह। ई देखि पं जी तेकब्याक हेतु सुगुणाय लगलथिन्ह। परन्तु भोजन कल दाजव कोना? सत्यदेवक आसन छोट रहैत। पत्थरी लगावय योग्य नहि अतएव चुकीमाली बैसि गेलाह।

पं जी 'हुम' कैलन्हि, गुदा चिखरी केँ आश्रय नहि दूटि पड़लह।

पं जी वज्र देरी तय्यत रहैक अतएव सत्यदेव पूरि-पूरि कऽ खाय लगलह।

पं जी सत्यदेव मुँह मे देखि तै चेर गुरु हुम कऽ रहलह। अन्त महा कहित।

गुरु-शिष्य दुनू त नीचे रहथि। आराम प्रकट हो त कोन?

सत्यदेव के अभिप्राय नहिण बुझे पड़लैन्ह। ओ पृथक् भोजन करैत रहलाह।

आब गुरु के नहि रहि भजेन्ह। धूर लेत दमलाह - हुम् हुम् हुम् तो पठिण भऽ गेलाह। क्रतुक यधन छैन्ह -

आरुनाखण्डो वा तस्मात् प्रावृत्तौपि वा।

मुखेन धर्मित भुज्या कृच्छ्र सान्त्वनं धरेत्॥

आसन पर पैर रोथि कऽ वा अन्ना धोनी ओठे कऽ अथवा मुँह सँ कूकि कऽ भोजन केने जाय प्रायश्चित्त हो। लीं तीनू एके सग कैलाह। आब दिना 'कृच्छ्र सान्त्वन' केने उरय नाह छौह।

सत्यदेव पुछलथिन्ह - ताहि मे की करय पड़त?

पं जी कहलथिन्ह -

गामूत्र गोमय क्षीर दधि रसः कुशोदकम्।

एकत्रोपेक्षासंयुक्तं सान्त्वनं स्मृतम्॥ -मन्

गोन, गोबर, दुध, दही, घृत और कुशक जल सँ पारण तथा एक रात्रिक उपवास सत्यदेवक लेनाइ गेलैन्ह।

पं जी अचरित बजलाह - तो अपना संग-संग हमरो भोजन नष्ट कैलाह कियेक त दिन दहन भुजितह नहि। ओर हम धूर नहि लिहलुँ त दजितलुँ कोना? एहि तरहे भोज भजन दुहु गोटा के उपवास करय पड़लैन्ह। आब शपनक प्रश्न भऽ। तत्पश्चात् लोकान मे एकटा छोटी छाली रहैक। सत्यदेव कहलथिन्ह - गुरु

अनक ओछओछ एही पर कय दैत छी, हम झूठा पटिया पर सूति रहब।

ई कहि सत्यदेव चौकी के झाड़य लगलाह। ओठिपर एन्ना पेयजल रहैक सत्यदेव ओकरा उठा कऽ नीचा धरय लगलाह।

पं जी पुछलथिन्ह - की धिकैक?

विद्याधी पेयजल देखबैत कहलथिन्ह - देखल जाओ। यैह 'पेआउजु' तरकारी मे दऽ दऽ कऽ लोकक जाति प्रष्ट करैत अछि।

पं जी नक मूनि हुम् हुम् करैत बजलाह - फेकह, फेकह। आब तोहूँ भ्रष्ट भऽ गेलाह।

सत्यदेव ओकरा फेकैत बजलाह - गुरुजी, हम कि एकर भक्षण कैल अछि जे दोषी होएब?

प्रहामयोगध्याना कृत् शोइत कहलथिन्ह - ले शास्त्राध करैत छह। तखन लेह देखह। दृढस्थितिक यधन छैन्ह -

सुरापलापुलशुनस्पर्श कामकृते विभे।

प्राद पिबेत् कुशजलं रात्रित्री य जपेत्तथा॥

नो जनि बुझि कऽ पलापुल स्पर्श कैलाह अछि। आब तीन दिन धरि केवल कुशक

पोंथि कऽ रहय पड़तीह। तदुपरान्त रात्रित्री जपलाक उत्तर शुद्ध कैलाह।

ई कहि पं जी लघुभाका दिशि गेलाह।

परन्तु एहन समय जे पठिनेजी के प्रायश्चित्त लागिण गेलैन्ह। कियेक त सत्यदेव अन्तारमे पेयाज थार केकने रहथि ताही पर हुनक पैर पड़ि गेलैन्ह।

पं जी बजलाह - आब हमहुँ अशुद्ध भऽ गेलहुँ।

विद्याधी कहलथिन्ह - अपने त जानि कऽ स्पर्श नाहि कैल अछि। केवल पैर धो लेल जाओ।

पं जी उत्तर बेलथिन्ह - नहि। आब हमरो देखन स्नान करय पड़त। कियेक न चायलस कहै छथि जे - पलापुलशुनस्पर्श स्नात्वा नक्त समाचरेत्। धोखो सँ पेआउजु खा तहसुनक स्पर्श भऽ गेने स्नान-पुरसार नक्तव्रत कर्त्तव्य थिक।

अथवा गुरु-शिष्य दुहु गोटा घाट पर गेलाह।

पं जी कहलथिन्ह - पापप्रसादनक निमित्त पठिने नीक जकाँ कदम लेपन करक चाही। गंगाजीक कादो लेपने शरीरक सभ टा भल धोआ जाइत छैक।

विद्याधी हन्तारे मे टोइया टप्पा देवय लगलाह।

एक टाम बेस चिकन तरगर भाटि धूझि पड़लैन्ह। थोड़ेक गुरु के देलैन्ह, थोड़ेक अपने लेलैन्ह। दुहु नैष्टिक आचारी हाथ-पैर आनि पगस अययब मे लेप करैत ई मंत्र एकर लगलाह -

त्वत्कदमैरविस्मिधैः सर्वपापप्रणाशनैः।

मया सलियते मात्र मातमे हर पातकम्॥

लेप करैत-करैत गुरु के किछु गन्ध धूझि पड़लैन्ह। ओ हाथ के नाक लग लऽ गेलैन्ह कि ओ 'ने' कऽ वन्ति होमय लगलैन्ह। ओकर विद्याधीओ समन करय लगलाह।

आब गुरु-शिष्य के कोनो संदेह नहि रहलैन्ह। दुहु गोटे हास्यकार करय लगलाह।

गुरु विसाप करैत कहलथिन्ह - हमर दुनु हाथ भ्रष्ट भऽ गेल। आब हवन-पूजन कधी सँ करय?

शिष्य बजलाह - हमर सम्पूर्ण त्वचा दूषित भऽ गेल। आब ई शरीर रखि कऽ की करब?

गुरु-शिष्य आकंठ जल मे पैरलाह। शिष्य कहलथिन्ह - गुरो! आब आहा हो न एहि देह के गमाजी मे विजर्तन कऽ दी।

गुरु कहलथिन्ह - हुम् ताहू मे प्रायश्चित्त छैक। अहमपाती के गति नहि - अन्ना रक्षितो यमः -

एआवा कहैत पं जीक पैर उखड़ि गेलैन्ह। धार तेज रहैक। पं जी आर्त्तनाद करैत शिष्याय लगलाह। सत्यदेव कहि कऽ गुरुक चरण गति लेलैन्ह जे दिनके 'म' देरणी पार उतरि जाएथ





७६/प्रणम्य देवता

शेष स्त्री के नहि लगेत छैन्हि।

आगन्तुक कलधिन - परन्तु हिनका गभो रजि गेल छैन्हि।

पं. जी बजलाह - सकरो वचन छैक -

असयणस्तु वो गर्भः स्त्रीणां योनीं निषेच्यते।

अशुद्धा सा भवेन्मारी यावद्गर्भं न मुञ्चति॥

विमुक्ते तु ततः शल्ये रजश्चापि प्रवृश्चते।

तदा सा शुद्धपते नारी विमल काञ्चन यथा॥ - अत्रिस्मृति

इं बाबते धरि गर्भदती छवि ताबते धरि अशुद्ध। पुन जहाँ पुष्पवती होइतीह कि निमेल स्वर्ण धनि जैतीह।

परदेशी - तखन हिनक शुद्धि कोन प्रकारे होइत?

पं. जी - मासिक धर्म होइतहि स्वतः शुद्ध भऽ जैतीह। और कोनो वस्तुक अपेक्षा नहि। देखू, स्मृतिकार कहैत छथि - रजसा शुद्धपते नारी। और वचन तिरऽ -

शौच शुष्पनारीणां, याधुसूयैन्दुरक्षिभिः। - आयस्तम्ब

स्त्री सोन धिक्कीह। वायु तथा सूर्य-चन्द्रमाक प्रकाश लगितहि हुनक देह शुद्ध भऽ जाइत छैन्हि।

परदेशी - त हिनका सँ आब कोन प्रकारक व्यवहार करक चाही?

पं. जी - व्यवहार कोन प्रकारक करक चाही? ऋतुकाल ऐलपर सेवन करक चाही। शास्त्रकारक मत छैन्हि -

न स्पर्शमा धृषिता नारी, न कामोऽस्या विधीयते।

ऋतुकाल उपासीत, पुष्पकालेन शुद्धयति॥ - अत्रिस्मृति

परदेशी पुछलधिन - अपने हिनक पुइत जल प्रियेन्हि?

पं. जी कहलधिन - कियेक नहि?

युवती किछु संकुचित होइत एत गिलास जल आगों बड़ा देलधिन। पं. जी यह-यह कऽ पीबि गेलाह।

सत्यदेव फराके सँ सभटा देखैत-सुनैत छलाह। ह्मणिक गेलापर गुरु कहलन्हि - आब हमरो जैबाक आज्ञा भेटौ। अपनेक संग एके दिन रहि गेलहुं त जसया धर्मशास्त्र सात वर्ष मे पढ़लहुं अछि से सभटा एके दिन मे ध्यस्त भऽ जाइत।

पं. जी मुसकुराइत कहलधिन - धर्मशास्त्रक की तत्व छैक से बुझिने छौक? केवल श्लोक रटने धर्मशास्त्रक ज्ञान नहि होइत छैक।

विद्याधी भुक् होइत बजलाह - अपने जे व्यवस्था ओकरा देखिऐक अछि तहि सँ सामाजिक पर्यादा रहि सकैत अछि? यदि सभ केओ ओही सिद्धान्त पर चलत लाग्य ...

पं. जी - एहन कोनो सिद्धान्त नहि छैक जे सभक हेतु सभ अवस्था मे लागू होइक। धर्मशास्त्र अनन्त समुद्र छैक। एहि मे नाना प्रकारक विधान भरल छैक। देश-

हल, पात्र विचारि जखन जेहन वचन समाजक कल्याण हेतु उपयुक्त बुझना जाय तखन तेहन व्यवस्था देखक चाही। ओहि स्त्रांक हेतु यदि हम ओहि प्रकारक व्यवस्था नहि देखिऐक त ओकर स्वामी ओकरा त्याग कऽ देखिऐक और ओ पुन विधमिणी बनि जाइत। तखन ओकर सन्तति दिन-दिन विधमिक संख्या-वृद्धि करैत जाइतैक। तँ धर्मराजी कहैत छथि -

देशकालनिमित्तानां भेदधर्मो विधिद्यते।

अन्यो धर्मः समस्यस्य विमस्यस्य चापरः॥

न हि सर्वत्रितः कश्चिद्विचारः सम्प्रयत्तैः।

तस्मादन्यः प्रभवति सोऽपरं बाधते पुनः॥

आध्यात्मिकानैकाग्र्यं तस्मात् सर्वत्र दृश्यते।

नदीकैकन्तिको धर्मः धर्मसदावस्थितः स्मृतिः॥ - महाभारत (शांतिपर्व)

धर्म आधेनिक वस्तु दिकैक। एक व्यक्तिक हेतु एक धर्म होइत छैक, दोसर व्यक्तिक हेतु दोसर धर्म होइत छैक। एक अवस्था मे जे धर्म धिक रहै दोसर अवस्था मे अधर्म भऽ सकैछ। जहि ठाम जेहन देशाधार, तहि ठाम लेहने धर्म।

देवु स्थानेभ्यु यच्छीच धर्माधारश्च यादृशः।

तत्र तन्नायमन्वेत, धर्मस्तत्रैव तादृशः॥

धर्मशास्त्रक अर्थ ई नहि जे अँखि मूनि कय एके ताडी सँ सभ केँ हँकि देल जाय। हम दातक बुद्धिपूर्वक विवेचना कय करैव्यक्त निरूपण करक चाही।

सत्यदेव कुण्ठितबुद्धि भऽ बजलाह - गुरु, अपने हमरा ततेक रंगक वस्त्र लहि दैत छी जे बुद्धि भँवरजाल मे पड़ि जाइत अछि। कोनो एक टा सिद्धान्त कहल गओ जहि सँ मुक्ति लिन्न रह्य।

पं. जी - वेश, त तुनइ वचनक अनन्त जगत मे कहाँ धरि बैसाइत रहबऽ? से वचनक एक वचन कहि दैत छिओह से मूलमन्त्र बूझ -

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।

परोपकारं पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

जहि सँ लोकक उपकार होइक, से धर्म, और जहि सँ कष्ट पहुँचैक से अधर्म धिक।

सत्यदेव कुण्ठित भय बजलाह - जखन एतवे बात दिकैक तखन त व्यर्थे एतेक दिन धर्मशास्त्र पढ़लहुं। सभ स्मृतिग्रन्थ केँ गंगाजी मे भरिसा देबक चाही।

गाम पहुँचला उत्तर सत्यदेव घोल कऽ देखिन्हि जे गुरु अजातिक हाथ सँ जल छि छिटि गेलाह।

जखन पं. जी ई बात स्वीकार कऽ लेलधिन त सौंसे गामक लोक हुमका बारी देलकैन्ह।

पंडितान् यत्कथितं । अहो की जान भेल? राधा एमे कर्मक लिखल  
उहि मेर, तम किछु नीम केन नः। तब पर त भवत हमार। अहो प्रादुर्भाव  
कथित। और ओ भेटा देवन नन्दानक प्रकाशे तवने भः भः केन। अकरा भः  
अहो अपन जाति' गलीकहूँ। परन्तु हमरा लोकमे अहोय सम्भवी छैन  
प्रादुर्भावी नहि भः सकल हो। अहो धर्मशस्त्र के उदा दिवः, परन्तु हमरा जोमान  
त मनिने रहव।

प जी वज्रह - हम न अरन भः कः आगन छी। अहो जीवन्मुक्त भः  
गेलहूँ। लिखे-निर्देशक बन्धन रभुनपुनः जगतक भः छैव हमन आन सुख  
अनुभव भः गेल।

मन्दबोधोत्तरार्थं धर्मशस्त्र विनिर्मातृ।

लोकप्रवर्धनं पणं हि, परधनं सुविधं स्वयम्॥

गहैया तैं प जी समाज और घर तैं वृत्तिभूत भय बहरवर म रहय लगलह।  
पंडित जी गामक लोक पर हँसैत छथिन्ह। गामक लोक पंडितजी पर हँसैत छैन्ह।

## ज्योतिषाचार्य

ग. मे दू हा ज्योतिषी रहल। एक सियाह हा दोसर छहर हा। दू हा ज्योतिषी  
आपस परपर। परन्तु दू हा म अन्धकार छल। एक हा घाट, त दोसर  
झर घाट। एक जे बाजधि तकरा दोसर धिनु कटने नहि रहथि।

विशेषतः जिनका और छठे मे दू दिग्गजक भिन्न भिन्न धोय होय एक  
एक दिन न दोसर पर-दैन पन्द्रह दिन पूरा छ स दिवस सुनैत-सुनैत लोकक कान  
भेद भः नइक। तथै किछु निशानि नहि बहराय। पण म इ जे आधा गम खरणा  
भः। अहो गम परगा। बुदिनाक प्रसाधन प्रगाद भर नाक दुनु दिन छल और  
शस्त्रार्थ देखय से मुक्त।

दू ज्योतिषी मे कोन अर-नौग कौनह तकर दुयान लिखः।

गामक जर्मदार भोल बधू जे माकदमाक नरोख मे दरभंग बैबाक छैन्ह।  
गोबड़ हा के दिन गुनक होय दवा पटौलछिन्ह। फावड़ हा पण्डा खेति दजगड़  
अ-रुद्धयतेपूर्वम्। सोम दिन न पूत गुंड दिवसूल हेल तैं एक दिन पूव रविद के  
विदा भः जाउ से हमर विचार।

खहर हा इ सुनलकि त कहथिन्ह - गधि दिन जे जो दवा करय बहेत  
उदे भ - 'अर्क कोकधनधवज्जय भवन, ' भग मे कहेने हो और कयै लिखि  
नहि छ' और सोम दिन जे दिवसूल गद देखवैत छथि तकर शनिवो त छैक -  
विधारे दन भुक्ता सोमदरे पयस्थ। सोम दिन दिवसूल शक्ति दुग्धपान से भः  
गइत छैक।

इ मुनि भोन बधू पुन कोकड़ हा के कजा पटौलछिन्ह फावड़ हा अरन बान  
कइत छथि अणि बधूला भः उदत। व गद - कोन भूख अहो के दूध पावि  
कः पावा करवाक विचार देखक अछि?

अहो क्षीरं च एखाडं क्षीरं सप्तदिनं रतिम्।

यज्यं यात्रादिनात् पूर्वम् .....

अहो तैं दू हा तैं दू हा धनिक अछि। और धरि ओही दिन लोक दूध पीवि  
बजा करय तखन त व्याधिग्रस्त भः फिरय। विशेषत -

अदुग्धमुदरीरं भयमासाशनं तथा।

भुक्त्वा यं यत्नगौ गोद्वन् लाहि। न निवर्त्तते।



अहाँ रविवर दिन दड़िभंग विहा भऽ जाउ। एक त दिवस भेटत, दोसर सम्मुख चन्द्रमा पड़त। हरति सकलदोष धन्दा मा सम्मुखतय। त्रयोदशी रवि कै सिद्धियोग। तखन कार्यसिद्धि मे कोन सन्देह? देख तम विचार कऽ त हन रविक दिन बनौने छी।

एहि पर पुन खट्टर झा बजाओल गेलाह। ओ दुपचाय नक्षत्र कै चारि सँ गुना कम पौष सँ भाग देलन्हि, शेष शून्य भेलन्हि। प्रसन्न होइत बजलाह - देखिओन्ह। फोचाइ झाक बनाओल दिन मे यात्रा कैने मृत्यु हो, कारण जे -

पीड़ा स्याद् प्रथमे शून्ये, मध्यशून्ये मङ्गलभयम्।

अन्त्यशून्ये तु मरणम्.....

ते नक्षत्र भाग मे शून्य शेष होइत अछि। अत यात्राक फल मृत्यु हो।

ई सुनैत फोचाइ झा पोधी-पतड़ा पसारि भोल वायूक टीपनि मङ्गलोलन्हि। हुनका जन्म-नक्षत्र सँ दोन दिनक नक्षत्र धरि गनि, नौ सँ भाग देलन्हि, शेष चारि बचलन्हि। घर, ललकारैत बजलाह - जौ हमरा यात्रा मे मृत्यु हो त हिनको यात्रा मे मृत्यु हो। देखू -

रातमे अर्चनाशय्य धनलाभश्च पोटके।

लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये हि मेघे च मरणं ध्रुवम्॥

ते धरि शेष रहने मरण ध्रुव - की नाम जे - निश्चित थीक।

परिणाम ई भेल जे भोल वायूक मन भटकि गेलन्हि। ओ प्राणभय सँ ने रवि दिन प्रस्थान कैलन्हि, ने सोन दिन। अंतम मुहड़ पाटी कै एकतरफा डिग्री भेटि गेलैक।

एक बेर और तमाशा लागल। गाम मे खड्डू वायूक बालक पर दू ठामक बर्तुहार ऐलथिन्ह। बड्डू बाधू कहलथिन्ह - हमरा रुपैयाक लोभ नहि। भगवान अपने बहुत देने छथि। तखन दुहु कन्या मे गिलकर कुण्डली उत्तम हैतन्ह तिनके सँ कटीरक दिवाइ करैन्ह।

बस, दुहु ज्योनिपीजी बजाओल गेलाह। आव भेल जुझीअलि। फोचाइ झा पुषारि गामवासी कन्याक पक्ष ग्रहण कैलन्हि, खट्टर झा पठवारि गमवासी कन्याक।

फोचाइ झा बजलाह - जौ पठवारि कन्या कै एहि बालक सँ विवाह हैतन्ह त किन्हु नहि वाँचि सकैत छथि। कारण जे कन्या छथि सर्फ-योनि, और घर छथि नकुल अर्थात् सपनीर योनि। अतएव घर कन्या कै छा जैथिन्ह।

आब चलल सुमुख शास्त्रार्थ। खट्टर झा उतेजित होइत बजलाह - एहि पठवारि कन्या नहि बचतीह त पुषारियो कन्या नहि बचतीह। किरैक त घर-कन्या दुहुक अन्ध नाड़ी होइ छैन्ह। पृष्ठनाईविद्या कन्या प्रियते नात्र सशय। अतएव कन्याक मृत्यु मे कोनो टा संदेह नहि।

आब घनघोर मंचल। फोचाइ झा धीरासन लगा बजलाह - तखन गन्य विचार कस। अहाँक कन्या छथि राक्षसगण, घर मनुष्यगण। मृत्युमानवरक्षणम् अतएव कन्या घर कै छा जैथिन्ह।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

खट्टर झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

फोचाइ झा बजलाह - तखन अहाँक कन्या घर कै छीथे टा क-... विचार - पूनी बनेनी विद्या विन... कन्या। त-... लन मे सूर्य... के... विचार क-...।

पापघोरान्तरे सन्ने चन्द्र वा यदि कन्यका।

जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः सुतम्॥

आज दुहु जन्मक दोष गुनाक जे विवेचन होमय जयति से कहय सुनका योग्य नहि।

फौचाइ झा हाथ पटकै बजलाह - जौ अहाँक कन्या बम्ब्या, विधवा ओ दुराचारिणी नहि बरारय त हम जगउ तहि कऽ फेंके दी।

खट्टर झा किटकिटा कऽ उत्तर देलथिन्ह - जी अहाँक कन्या कुलदा, एनि धनिनी ओ कुलदासिनी नहि बरारय त हम समारक पानि पीवे भटे नइ।

एहन-एहन बिकट प्रसिद्धा सुनि बड़दू बाढ़ दुहु कथा अस्वीकार कऽ देल। कुशल एतदे मे ओहठान कम्मगत होइ नइ रहथिन्ह नहि त दुहु ज्योतिषचर्य के देखिनी भेटि जइनेन्ह।

तबत बड़दू बाढ़क हथेली से पुछरी भेलैन्ह जे अड़न मे नवकी कन्या के जे मेला भेलैन्ह आठ तकरा कोन छली लग ओल जाइक।

आज पुन मजलपुछ प्रारम्भ भेल। फौचाइ झा गणना कय कहलथिन्ह - फनेपोक बाम स्तन प्रशस्त छैन्ह।

खट्टर झा कहलथिन्ह - नहि, कन्याक दक्षिण स्तन उत्तम छैन्ह।

आज दुनु स्तन पर हलैक जोर-जोर से छापन मगडन होमय लगल जे अड़न धरि पहुँचि गेल नवकी कन्या त लाजे कटुआ गेलैन्ह।

एक बेर एहन समय जे दुहु ज्योतिषीनी एक घरियान मे सम्मिलित भेलस। फौचाइ झाक विद्याधी अदिचनाथ, खट्टर झाक विद्याधी मातंगडनाथ। दुहु प्रचण्ड। युद्ध करवा मे मेघ, विषय दुइय मे पृथ विद्या-दुखि मे दुहु जगता-उपरी रहथि। दुहु सिद्धान्त रहैन्ह - श्लोकाना नित्यमादृति बोधदधि गरियसी।

आठ बरिवाल मे एकटा देशवे जड़न रहय, ओकरा देखि मातंगडनाथ पुछलथिन्ह - ई के थिक?

अदिचनाथ कहलथिन्ह - ई गणिका थिक।

एहि पर दुहु विद्याधी के यात्राक श्लोक मन पडि गेलैन्ह -

अद्वैतु सतन्ता शृंगान्तुरा दक्षिणावतं दहि

दिव्यरत्नो दूलेकुम्भो दिग्द्वारगणिका दुष्पमात्रा एतका।

मत्स्यो मारा दूत वा दधि मधु रत्नत वरुणश्च शुक्लवर्णम्

दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलनिह तभत मानदो रनुकुम्भः।

गणिकाक स्पर्श कैने यात्रा धनि जाय। ताहि मे एके लग रत्न वरुण, शुक्ल दुष्पमाला सभक स्पर्श भऽ जायत।

ई दिव्यारि दुहु मेधावी छात्र वैश्वदेव सम्मुख पहुँचि, अगुन्त श्लोक

शेष अङ्गस्यो करवाह है। हाथ बड़ीवान्। नाम भग अदिचनाथ, दक्षिण भाग मातंगडनाथ।

वेधत त भौतका तावत इ लोकनि ओकरा बन्दतर पर हाथ राखि देलथिन्ह, ओ चीत्कार कय उठसि। तकर बात से लोक जना भ गेल, जखन दुहु देखि अपना बालदेक परिचय देलथिन्ह तखन गभ कओ दृष्टि गेलैन्ह जे ई एक जोड़ा नगूना थिक। गणिकाक युद्धि पर गणिका ईसि देलथिन्ह।

दुहु विद्याधी छै एतय धरि फल अवश्य प्राप्त भेलैन्ह जे सम्पूर्ण बरिवाल मे प्रज्वाल भऽ उठलाह।

तखन बरिवाल निदंष्ट स्थान पर पहुँचल त गोक विवादार्थ तरह-तरहक प्रश्न कय लगलैन्ह और दुहु विद्याधी अपन प्रकाण्ड ज्योतिषीया से गुरुक नाम उचल कय लगलाह।

बरिवाल मे एकटा बालटी जेग गेल रहैक, अदिचनाथ कहलथिन्ह - प्रश्न कय हम उधरि दैत छी।

तदनन्तर ओ मिथि, बार नक्षत्र जोडि तीन गिला पाँचसँ भाग देलथि, शेष गीत बचलैन्ह। कहलथिन्ह - बालटी आवाश मे नरकल अछे।

एहि पर सभ केओ भभा कऽ होसि पड़ल। अदिचनाथ नमस्ते कऽ बजलाह - हमरा त गुरु एहिना पढ़ीने छथि -

नियि वारं च नमस तन्न वनिर्विग्नश्राम्।

पंचभिरसु हरेदभग शेषं नम विनिदिरेन्।

पृथिव्या तु स्थिरं जेदमसु ज्येष्ठा न लभ्यते॥

जे ई बालटी भेटययला नहि अछि।

तबत एहन समय जे ओ बालटी भेटि गेल। पणनपुछय अपरी पाइय लगलथिन्ह।

एहि पर अदिचनाथ लख भऽ उठलाह। लोक केँ कहलथिन्ह - अच्छा, देश। किन्तु सिधु पुछिओन्ह तऽ।

मातंगडनाथ शान से बजलाह - जे पुछवाक हो से पुछ।

ओहि समय कन्याक पिता आधि पहुँचलाह। पुछलथिन्ह - अच्छा, दुहु त मज मे की अछि?

मातंगडनाथ आबुर पर गणना करैत कहलथिन्ह - अहाँक मन मे गभक ओछ।

ई मुनिरहि लोक अवाक रहि गेल। कन्याक पिता ओहठान सँ लगले लगल।

मातंगडनाथ बजलाह - हमरा त गुरु एहिना पढ़ीने छथि -

मेधे च द्विपदा चिन्ता दूधे चिन्ता वस्तुष्वपाम्।

मिथुने गर्भचिन्ता च अयसायस्य कंकटे॥

रो एखन मिथुन लग्न विनैत अटि। एखन जे प्रश्न करत तकर चेह उतर डैकैक

एहि पर अदित्यनाथ टीका करय लगलखिन्ह। मातंगडनाथ द्विपदा कऽ  
वज्रलाह - देश, अहाँ बड़ सुयोग छी त दुसू त हमरा मुट्ठी मे की अटि?

अदित्यनाथ गणना करैत कहलखिन्ह - अहाँ मुट्ठी मे नील रंगक वस्तु  
अटि। किएक त - मेधे रक्त दूधे पीत मिथुने नीलवर्णकम्।

मातंगडनाथ छट मुट्ठी प्रोनि कौड़ी देखदैन वज्रलाह - पुरियाया कहौं कै  
आब पैह कौड़ी तोरा नक मे बाँटि दिपौड़?

अदित्यनाथ सिधु अज्जिम होइत वज्रलाह - मुष्टि प्रश्न मे उज्ज्वल रंगक  
उल्लेखे नहि छैक त हम की कम्? इ ग्रन्थ-कण्ठक दोष धिकैन्ह।

एहि पर मातंगडनाथ धपरी फड़ि गैगय लगलखिन्ह।

अदित्यनाथ कचकचा कऽ वज्रलाह - मोहर गुरुए कहि राकै छथुन्ह जे मुट्ठी  
मे की अटि?

वस, आब भेल टीका टिप्पणी। अदित्यक टीका मातंगडक ग्रन्थ मे, मातंगडक  
टीका अदित्यक हाथ मे। केजे छोड़य बला नहि। मातंगड बेसी जोरपर रहथि, किन्तु  
एहन सयोग जे हुनक बान अँछि कइतय लगलैन्ह। बिधरलखि जे आब त दुख मे  
छाँटि जाएब किएक त - नेत्ररक्षादः स्फुरणमसकृत् रागरे भंगहेतु। अथर्व थक दऽ  
अदित्यक टीका छोड़ि देलखिन्ह। अदित्य हुनका पर चाँड़ि बैसलखिन्ह। ता दशक सभ  
बाँच मे पाँड़ि दुहू कै छोड़ा देलखिन्ह।

जखन ई समाचार गुरुद्वय कै ज्ञात भेलन्हि त ओहो अपना मे मुहायकरी बन्द  
कऽ लेलन्हि।

किन्तु थोड़े कालक उपरान्त हुनको दुनू गोटा मे दर्जारेये गेलैन्ह। किएक त  
विवाहक मुकुरत लऽ कऽ भारी विवाद उठि गेल। एक गोटाक मत बेआलिस दण्ड  
छप्पन पल। दोसर गोटाक मत चौआलिस दण्ड सत्रह पल। दुहू ज्योतिषी अपना-अपना  
शिखान्त पर अड़ि गेलाह।

फौचाइ झा कहलखिन्ह - जौ हमर बात नहि रहत त हम ऐखन चरियात सँ  
विदा भऽ जाएब।

खट्टर झा कहलखिन्ह - जौ हिनके धाल रहतैन्ह त हम यह विदा भेइहुँ,  
वरक बाप महा विपत्ति मे। किन्तु बात राखल जाय?

खट्टर झा कहलखिन्ह - ज कोदो दऽ कऽ पड़ने छैत तैह चौआलीस दण्ड  
सत्रह पल कहन।

फौचाइ झा वज्रलाह - जकरा मगत मे भुत्ता भरल तैहक तैह वैअलिर  
दण्ड छप्पन पल कहत।

खट्टर झा खुद भय वज्रलाह - ओ फौचाइ झा! अहाँ बेसी फर-फर नहि  
कर। अहाँ छी प फ ब म म मूधिक वर्ण, हम छी क ख द घ गाजोर वर्ण। हमरा  
सँ बाँचल रहू।

फौचाइ झा वज्रलाह - अहाँ गाजोर वर्ण छी न हम सिह वर्ण छी। रश्मिक नाम  
वर्ण पर अटि। और हमरा जन्मलग्नक रिधु स्थान मे मगत छथि। हमरा सँ जे शत्रुता  
करताह से ममा कै प्राण छैताह। तै हमरा सँ जुनि लागू।

आब दुनू गोटा मे तेहन कटाउछि चलत जे अन्त मे छाला-छलीअलि भऽ गेल।  
परन्तु दुहू ज्योतिषीक छाता पुराने रहैन्ह। मुत्तक आदिप मे टूटि गेलैन्ह। ताबत लोक  
सभ छौं-छौं करैत रोकि लेलकैन्ह।

अब दुहू ज्योतिषी अपना-अपना शत्रुताक उपाय शोधय लगलाह। ओहि  
दिन अष्टमी बुध रहैक। फौचाइ झा गणना कैलन्हि -

सैक निश्चिन्तारुता कृतमया शोभे गुणोन्ने भुवि वहिवासः।

सौख्यय होमे शरितुगम शोभे प्राणाधेनारौ दिवि भूतले च॥

अष्टमी मे एक जोड़ने नी, बुध दिनक चरि, योग भेल तेरह। चरि सँ भाग देने एक  
बाँचत, जकर फल प्राणमश अथ आइ जे होम करताह सो जैताह।

शत्रुताक एहन सरल पुक्ति देखि ओ वरक बाप सँ एकान्त मे कहलावैन्ह -  
आइ खट्टर झा सँ अवश्य हवन करा लिमऽ।

ताबत खट्टर झा दोसरे गणना कैलन्हि -

तिष्ठि च विरुणीकृत्य वाणैः संयोजयेत् ततः।

रास्त्रमिश्र इरेद्भागं शिदवासं समुदिशेत्॥

श्मशाने सप्तमे चैव शिदवास इतीरितः।

श्मशाने मरणं ज्ञेय फलमेव विचारयेत्॥

अइ अष्टमीक आठ दूना तोलाह, तोलाह पाँच एकास - राहि मे सात सँ भाग देने  
शून्य शेष। अतः आइ महादेवक पूजा कैने मृत्युफल छै।

वरक बाप सँ जा कऽ कहलखिन्ह - आइ फौचाइ झा सँ महादेवक पूजा  
करबा लिमऽ।

यजमानक आदेशानुसार खट्टर झा होम करय लगलाह, फौचाइ झा महादेवक  
रूना। दुनू कै एक दोमराक घड़य-न दिशि ध्यान नहि गेलैन्ह। दुनू अपना-अपना मन  
मे प्रसन्न जे प्रतिद्वन्द्वी पर मारण प्रयोग भऽ रहल अछि।



किन्तु आकाश में होम-पूजा के लिये उत्तर दुनू में किनको मूल्य नाहे भवित। प्रत्युत दुनू ज्ञानकी देश वर दिवह मेने गङ्गुशाल पर पड़वैत गेनाह।

एक दिन छहुर झा तेल लगीत रहथि कि मातंगनाथ अगि कऽ एक मुड़ी माटि तेलक माली से घऽ देलथिन्ह। गुरुक तड़न दण्ड उठन, किन्तु शास्त्रक अंग हुनकर शस्त्र व्यर्थ भऽ गेलैन्ह। मातंगनाथ कहलथिन्ह - गुरु! अइ गंगल के तेल लगने अपनैक मृत्यु भऽ जाइत। किएक जे - तैनाथहुने रवी लग्न सेमे शोभ चुने मृति, तै दोष परिहाराथ हम एहि मे माटि मित्रा देलथिन्ह। कारण जे अपनहि एढ़ने छी -

रवी पुष्प गुरी दुषी भूमि भूमिजवासरे।

गोमय शुक्लवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषकृत्॥

ई भस्मसुर वला प्रयोग दृष्टि गुरु मातंगनाथक वाप कै बजा पड़ैतथिन्ह। ओ अकब्रद देहर्षी आथ कऽ कहलथिन्ह - महाराज! जौ अहाँक शास्त्र सत्य तखन त हनर बालक उचिने केनक अछि उपराय किएक दैत छी? और जौ अहाँक शास्त्रे ने फूसि लिखल अछि त से पढ़ैलथिन्ह किएक?

ज्योतिषीजी अपक थीस घेरा पर उत्तरलथिन्ह। मातंगनाथ कै पुरैत कहलथिन्ह - तो एतेक दा भऽ गेनाह बिबाही विरागमन भऽ गेलैन्ह। तथपि किछु बोध नहि भेलैन्ह अछि। चुनेचेल अविदनीर मे लटकल छह। अत तोहर कुडली देखि लेबोह, तखन आगौं पढ़ैबीह।

मातंग ज कऽ अपन कुंडली लऽ ऐलाह। गुरु मीन-मेघ करैत कहलथिन्ह - तोरा विद्या नहि भऽ सकैत छैह कारण जे मकर राशिमे तोहर जन्म छैह। मृत्युलक्ष मकरे घटे चतुरता मीनत्वधारा गति। तै तोरा पढ़ैथा मे अथ हम व्यर्थ परिश्रम नहि करव।

मातंगनाथ फोवाह झाक पाठशाला मे पहुँचलह।

फोवाह झा गम्मा करैत कहलथिन्ह - मकर राशि मे तोहर जन्म भइए नहि सकै। छैह। किएक त एहि टीपनिग अनुसार तोरा छटम स्थान मे बुध छथुन्ह और से बालक चारि वर्ष सँ बेशी जिविए नहि सकैत अछि।

षष्ठोऽष्टमस्तपामूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः।

चतुर्थदशे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकर॥

यदि तोहर जन्म ठीक अछि लग्न मे भेल रहिनीह त सत्सत् मरुदेवो तोरा नहि बचा सकैतथुन्ह। अतएव ई टीपनेर अग्रुत छैह।

ओहि दिन सँ मातंगनाथ हुनके पाठशाला मे पढ़व लगलाह। आदित्यनाथ ओ मातंग मे बड़ा-बड़ी छलय लगलैन्ह।

एक बेर आदित्यनाथ इलाक में अन्हरीछे खान देखलथिन्ह। प्रसन्न भय

वज्रलाह - हो पारा! हमरा आब सुन्दरी स्त्री भेटन। किएक त उषार दिशा मे खज्ज देखलहुँ अछि। वायव्या दर्यास्त्रमर्गाविभावा दिव्याङ्गना चोत्तरे, तौह दक्षिण लेह।

किन्तु मातंग जलत देखक हेतु धुमनाह ना चिह्न इशान कोण मे अछि गेल मातंग अपन केनर घँटय लगनाह किएक। - एशान्य मरण धुव निगदित दिग्मक्षण खनन। दुर्जा होइत दक्षिण - तोरा त सुन्दरी गेटोह और हमरा मृत्युक फल भेटत।

आदित्यनाथ कहलथिन्ह - हम भागवत छी, तौ अलच्छ छह।

तखन मातंगनाथक माथ पर चार सँ एक गिरगिट छमि पड़लैन्ह। मातंग खुशी सँ मूर्छा उठला जे राजा बनि जाएव। शीघ्रे तर्कश्रेय प्रसिद्ध। वज्रलाह - आव कह। के भागवत और के अलच्छ? हमरा त अच राज्ये भेटि जाएत तखन सुन्दरीक कोन कमी?

आदित्यनाथ कहलथिन्ह - वेशी ठकह नाहे उगि शिरास कटे पृथभागे त मृत्यु। माथ पर गिरगिट छसाने मृत्यु हो।

दुनू विद्यार्थी शास्त्रार्थ करैत गुरुक समीप पहुँचलाह। ओ रत्नगणस्था मे विविआइत छलाह। मातंगनाथ देह घऽ कऽ जगा देलथिन्ह।

गुरु छिनिसाइन कहलथिन्ह - किएक जगा देलह? आब भिसरवी गति कऽ निद्र त नाहेर पडन। दुखन देखलहुँ अछि सँ फलित भऽ जाइत।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तक्षणं यदि बोधिनः।

बदेत् कश्चपण्योवाय यदि निद्रां न करयेत्॥

जह, कोनो काश्यप गोत्रबला कै यन लवङ्गेह, ओकरा कहि देने दुखनक फल कटित भऽ जाएत।

क्रमशः दुनू शिष्यजी ज्योतिषिक बहुत राते विषय सीधि गेनाह। कोन लग्न मे जान रोयों? कोन मुहूर्त मे काटी? कहिया किराहाल मे नेह नइकी? कोन दिन दखनि करी? कोन नक्षत्र मे ओहीनी करी? कहिया कोटी मे भरी? कोन तोघे मे छुम्नि गइकी? कोन लग्न मे नववधू भानरा करिह? इत्यादि कंठस्थ भऽ गेलैन्ह।

एतय नहि। बहूक ग्वाधन करवाक मुहूर्त, सौरी वैवाक मुहूर्त, दवाइ छैवाक मुहूर्त, दूध पिऐवाक मुहूर्त, चहरेदक मुहूर्त, रत्नन करवाक मुहूर्त, नूआ पहिरवाक मुहूर्त, नैना कै छाट पर राखवाक मुहूर्त, कान छेदेवाक मुहूर्त, कोना विषम बाँकी नहि रहलैन्ह। स्वप्न-विचार, शकुन-विचार, शिखा-विचार, हस्त-विचार, हकता यंत्र

१ प्रायः वेदना करत वंशी बैराग्य होइत देखि ज्योतिषी दखन मे किछु अन्न निधि कऽ मुक्तिपूज मे उठा दैत छथिन्ह। ज्योतिषी लोकनिक विश्वास छैह जे ओ दखिनि नहिणी कै प्रसव भऽ जाइत छैह।



आदि सगस्त विषय में पारंगत भऽ गेलाह।

एक तर ज्योतिषी पोंचाई झा हाथ में इतरगत धनले तर ज्योतिषी प्रज्ञा को प्रभाव वर्णन करत कहलथिन्ह -

शुचिसितदिनकरकारे करमूले बहूपुलिकमूलस्य।

नागारेरिव नागा प्रवन्ति किल दूरतस्वस्य॥

आधाई शुक्लपक्ष में रवि दिन इतरगत वन्हने सौंर ज्योतिषी दूर प्रभाव देना गरुड़ के दक्षिण को नौगे लोकनि अगिला रवि के दक्षिण गेहऽ। किंकि त - अतुल्या पुस्तकैवर्णन प्रायश्चित्तनीयते नर।

अग्रिम रवि के दुहु दिवस के नय लोक लख गकि इतरगत उम्हाइक हेतु धौर विरि लदा भेलाह। अहीरक बीच में धौर जगना चोरीजी इतरगतक जड़ि लग पहुँचला कि छी हथक जुआणल अधार पैर में लगल गेहऽ।

ज्योतिषी कहलथिन्ह - गुरुजा, अपनेक हाथ में १ इतरगत वन्हने अछि। छोड़ा लेल जाओ।

साव। सौंर जाँव पर बहने गेहऽ। गुरु जहिना इतरगत वन्ह हाथ दक्षिणति वि सौंर पुस्तकर छोट ओड़ी लहनुआ के हथक लेलथिन्ह। गुरु सगस्त सँ धीनार कम उदलाह।

अद्विचनय फराके सँ कहलथिन्ह - गुरु आध? समदवला प्रभाव की केन? गुरु कनेत-कनेत कहलथिन्ह - री अभयना पछा रास्त्राद जहिन्ह एखन लऽ चल झडवायम लेल।

नागपुडनाथ कहलथिन्ह - गुरु, आध कोनो झाड़-पूज काज नहि देत। कारण जे आइ विराया नखन में सौंर कहलक अछि। और ओने खन पड़ैने छी -

य कृत्स्निकमूलभाषाविशेषासाधनकद्रुमु भुजगदष्ट।

रा देवनेयेन सुरास्त्रेपरि प्रजापते मृत्योर्देदन मनुष्य॥

रो अय साश्वत गरुड़ो आधि अपनेक प्राणरस नहि कर सकै छथि। अतएव हम अपनेक अलेशि क्रियाक प्रवन्ध करय जाइत छी।

ई कहि ओ गुरुआइन के संवाद देयाक हेतु चललाह।

आइ अद्विचनय गुरुक समाय पहुँचलाह। दाढ़ सगस्त करत काल आद्विचनय के गुरुक औंटा में मक्क दिह देखवा में ऐलेह। आद्विचनय के समुद्रका पड़ल रहैह। प्रसन्न होइत बजलाह - गुरु, आध पट्टी दंडयाक कोनो प्रवेजन नहि। किंकि त अपनहि पड़ैने छी जे -

अह्नुष्टोदरमध्ये तु ययो यस्य विराजित।

उन्नेत भोजनं सस्य शतं जीवति मानय॥

गुरु भग में यय रहैने मक शायु हो। नखन सगस्त कनेत कोनो हम अर्धेष्ट क्रियाक प्रवन्ध रोकवाय जाइत छी।

आइ दक्षिण सँ दिश भेलाह गुरुआइन ओकर जहि मातृपडनाथ गुरुक टीनरि देखय लगलाह। आद्विचनय गुरु आइनक जगनुपदरक गणना करय लगलाह दुहु विवाही में घोर शास्त्रार्थ छिड़ि गेलैह।

जगनुपदर कहलथिन्ह - गुरु के भारी मातृपडनाथ नागल छैह धौरन कदिन छैह।

आद्विचनय कहलथिन्ह - गुरुआइन के वैद्यक प्रेन नखने नहि छैह। तखन गुरु परताह कोना?

गुरुआइन जैत कहलथिन्ह - एखन ई शास्त्रार्थ रहय दैह हुनक दवाइ विरि करे जाइह।

इह दवाइ क्रियाधीन न होइत - यदि गुरुक ग्रह प्रतिकूल होइत न - ग्रहनु जेनकूल नानुकूल डि भयनम। कोनो दवाइ के न लहे करैह। और यदि ग्रह अनुकूल होइत तखन दवाइक प्रयोजने की?

ता ज्योतिषी झार-पूज करिने एर पड़ेनलाह। अद्विचि गुरु विवाही के गुरुक बाक प्रयश्चित्त छिड़ि देलथिन्ह। दुनु दिवस ग्लानि सँ अ मज्जा करय पर तैयार भऽ गेलाह ताबत दिनाह सँ अनुग्रह नख भऽ गेल रहैह। दुनु देवाधी देखलथि जे अइ अनुराधा रवि के मृत्युयोग अछि -

सज रविमनुष्ये वैश्वदेवे च सोमम्।

रविभुलमपि हस्तो मृत्युयोग भवति॥

अतएव इनार-प्राधरि में जा कऽ दुवयक कोन काज? एही योग में थका कऽ दी, अनाथाके मृत्यु भऽ जयन। ई विचारि अतएव कयक उदेश्य सँ दुनु विवाही ओड़ी का पत्रा कऽ देलथि किन्तु दुनु में गिनको अभीष्ट मिल नहि भेलैह। अर्थात् दुनु जीविते रहि गेलाह।

मतापडनाथ गम जा कऽ खेरी करय लगलाह। किन्तु आद्विचनय एक प्रसिद्ध भतर में किछु दिन में सिद्धजी बनि बैसलाह। ओतय सात हथक साइन बोड बनलथिन्ह -

## आश्चर्य ज्योतिष कार्यालय

यदि कश्चित् ज्योतिष का धमकार देखना हो तो यहाँ आइये और श्री १०८ विशालाक्षी मन्दिर से अपना अपाष्ट मिट्ट करवाइये। यहाँ ज्य, पूजा, अनुष्ठान और दूरदर्शन के द्वारा यशस्वत कर कर्तन यहाँ का इलाज किया जाता है और यंत्र मंत्र, तंत्र के द्वारा सभी मनोरथ सिद्ध किये जाते हैं।

तदनन्तर निम्नलिखित विज्ञापन छपवीलकि -

### अद्भुत आविष्कार

१ शक्ति वचन - जिसका दर्शन मिलेगा उसे सबों प्रहो से सम्मोहित करके एक एरो का क। अविष्कार किया है कि इसका मात्र स काव। मिल हो जाता है। मूल्य - ६१ रु।

२ गंध वचन - इसके प्रयोग से नपुंसक स्त्री भी गन्ध धारण कर पुत्र प्रसव करती है। मूल्य - १४ रु।

३ परीक्षा वचन - इसके धारण से मनुष्य परीक्षाओं में पास कर जाता है। मूल्य - ३२ रु।

४ सौन्दर्य वचन - इसके प्रयोग से अच्छी नौकरी मिलती है। जिसने अर्धक पावर का सिवा जदग उससे दूना वेतन मिलेगा जैसे ५० रु का वच लेने से १०० रु की नौकरी मिलेगी। मूल्य २५ रु. से लेकर ५०० रु तक।

५ विजय यंत्र - इसके प्रयोग से आपके का दुष्ट पर ऐसा प्रभाव पड़ जाता है कि लिखा हुआ फैसला भी बदल जाता है।

६ व्यापार तंत्र - इसके प्रयोग से दर्जी-पटो पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता है कि व्यापारी को मनचाहा लाभ होता है।

७ मृत्युञ्जय मंत्र - इसके प्रभाव से मृत्यु के दुःख में पड़ा हुआ रोगी भी बचा लिया जाता है। दक्षिणा - १०१ रु।

एक दिन सधोयवत मार्तण्डनाथ धुनैत-पिरीत ओले शहर मे आवि पहुंचाग। उपनृत साइनबोर्ड और विज्ञापन देखि धाकेन राहे गेलाह। ताबत दंदेल छधि जे दाढ़ी बाड़ीने एकरंग पहिरने, लाल टोप कैने, आदिबनाथ छडगापर चलल अदैत छधि।

मार्तण्डनाथ एतेक दिन पर असन बजसगी के पथि भरि पौज धरय लेल बढलाह और पुतलबिन्द - अदित्य, तौ एतय ई वष वनैने की करैत छह?

अदित्यनाथ पाछो हटैत कहलथिन्ह - धुन चुप! हम एहि ठाम सिद्ध जी मजबैत छी। एखन कायालय मे वीस कऽ तमाशा दखह। पाछो राति मे राभ हाल कइबैह।

मार्तण्डनाथ ज्योतिष कार्यालयक डार-वाट दक्षि दग्ग रहि गेलाह। एक पैरजी अपना स्त्रीक हेतु गर्भकवच लेयव आएल छधि। एक चरिमन्ता विद्यापी परीक्षा कवच लेयव हेतु देसत छधि, एक सेठजी मर्दी-तेजी दूधत हेतु व्याप छधि। एक मोखतार साहेब उनैस वषक कुमारी कन्या के गकला दीपनिक जोर सँ चौदह वर्षक बनावय चाहैत छधि।

एव प्रकार केओ बीमारीक मारल, केओ मेकदमाक हारल, केओ नौकरीक

उमेदवार, केओ सगुन कर्मिन्ना कनेक आएन बनेक गेल। सिद्धजी कहल यंत्र देलथिन्ह, कवचो बचल, ककरो हाथ मे भानक पुटिया कयग पुन एखन मे आवय कहलथिन्ह।

राते एगारह बजे धरि पाठना लेखक तौना सगल गहनैत बाइठ बने राति कऽ जखन पुन बजसगी आ-पी कऽ निश्चिन्त भलाह त सिद्धजी कहलथिन्ह - देखलत तमाशा? कोन मर्दिय इहारेन ऐक? स्नैह सँ एखन धरि वीगरी कयग पढ़न अछि। जेत्येक गुरुजी केँ सात मासमे पाठशास्त्रा सँ भेटसैन्ह।

मार्तण्डनाथ कहलथिन्ह - हो सगी! एतेक टक बिहा जेना सीधि गेलह एहन भारी दाटक पसारने छह से लोक बुझैत छौड नहि?

सिद्धजी - हो हमरा ओडिठाम तेहने-तेहन लोक पहुंचैत अछि जे अपना गरने आन्तर भेल रहैत अछि। - - - कार्य रिख भऽ जाइ ऐक से दुईत अछि जे हमरे प्रयादास भेलैक। नकग - - - हाथ ऐक से अपना अर्धक केँ दोष दैत घर जाइत अछि।

सिद्धजी अविमानपूर्वक एक वकला पोथ मार्तण्डनाथक अगाँ पढ़वैत कहलथिन्ह - देखह, केहन-केहन रागकिकेट (प्रसास-पत्र) ऐक। ई कलकर सखेक ई कमिशनर साहेबक ई जैन सखेबक, ई सदरआला सखेबक। कसो धरि देखबह? जखन ई राभ छपकैत तखन बुझथक।

मार्तण्डनाथ मुग्ध होइत पृच्छथिन्ह - हो सगी! एखन-एहन लोक केँ जेना परतारि लेलहक?

सिद्धजी अगसाइत-अगसाइत कहय लगलथिन्ह - हो, बातो बनेबाक गुरि होइत छैक। हम तेहन ओटकर सँ फल बजैत छिएक जे प्रायश दरा मे जाँच छै, बिनिए जाइत छैक। देखह कलित हलुअइया लोकमा जेहि गेल त एक परगन मधुर दऽ गेल। परसू रिनेमाक मैनेजर केँ देल। भेलैक, त मुक्त टिकट पठा देलक। एहि ठामक यकील-मोखतार सब हमरा बजसने अछि। बड़का-बड़का आदर्शक टीक हाथ मे रखने छी। होकनदार सब चले अछि। जाहि वस्तुक काज पडैय अछिसे मजनीए मछा लैत छी। ओहरे चलेत छी तेन्तर चढीना धरैत अछि। हमरा कि किछु अपना दिशि सँ खय लैत अछि?

मार्तण्डनाथ कहलथिन्ह - हो सगी, हम गोलाधारे मे लटकल रहि गेलहुँ और तौ त्रिकालदर्शी ननि गेलाह। ज्योतिषक फल अनका भेटैक वा नहि, तौरा धरि त धुबे फलित भेलैक।

सिद्धजी समथैत कहलथिन्ह - यदि तौह एडिठाम रहि जाह त हम प्रसिद्ध करा दऽ सकैत छिऔह। एहि ठाम निच दरा-धीन ब्रजग केँ पुरयचरण देवा दैत छिएक। गभ हौ छी जे - - - आ-पूरी उडैत अछि और हमर जयजयकार मनबैत अछि। तौरो महापुरुषम मरक अनुष्ठान देआ देखौह। प्रतिदिन सब टका दक्षिणा भेटल

तर्जनी। गंगा पर से खेती की बटेवतगड लडि सँ एलिगम वैराल धिमल लड्डु गाडड। यदि कसैक आइमर करम सबीह त इम तारा लडिबकनी कांडे कड प्रसिद्ध कड देवीह।

मन्त्राङ्गण कडलधेन - वेश, ई सभ न जाइने रहतैक। अत अपना घर परक हाल-घणन कहड।

शिखरी कडलधेन - हो! तोरा सँ कोन पदा? घरक हाल की कहिनी? परिवारिक दुख सँ काँ काँ रहैत छी। एकटा देवदी भगडा घलि रहल अछि, जमीन लड कड लगे म हगारा रूपैय भुक्कुर भड घेन। आदिम मोकदमे हरि गेलहु। अत वागदाम देवप पडल। छोट भाइ के एकटा कपडक दोफान छेलि देने छलिनेह से गडरा पुंगि, बुधा देवनि। भोजन के अग्रेपी स्कूल मे नाम लिखा देने छिनेह, पल्लु चीन सल सँ फेने केने जडन छथि, स्त्री छथि से सभ दिन दुखिते रहैत छथि। अत देह लड कड झडैत रहैत छथि, शाखा-रान्ति की हैरैह?

अत एक कनि कडलधेन जहाँ आवि कड कहनकैह - शिखरी शिखरी भारि अन्ध भड गेल। आइ एगारह दिन सँ जकर पुरवचरण भड रहल छैक तकरा घरमे एखन कल्ल होइत भड रहतैक अछि। कूझि रहैत अछि जे भडि बचलैक।

शिखरी कडलधेन - तो छह भारी बूडि। इम कहने रहओह मे सभटा दक्षिण पहिनेह हथिया रहि। आव कि एको बौड़ी देतौह?

मन्त्राङ्गण कडलधेन - गुम रहि बजलड - हो सगी हमरा जण देह। ई छन-बिदा हमरा घुने पार नहि लगल। एकेक कृषि फलका कड कड जे दाका उपार्जन करब ताहिसँ अपना घर परक गुहस्थीय नीक।

- शिखरी कडलधेन - तो रहि मेलाह सोसे देहानी बूडि हो। कृषि सँ केओ दाँचन अछि? ई ससारे कृषि धिक। जनम त मृथ होइत अछि। हम नहि ठकसैक त आन केओ दाँके लेतैक। चतुर सबज सँ मूख के ठकैत आएत अछि। फलिनज जे एतेक महाजाल रहल गेल छैक से कि निष्कल छैक? हमरा लोकनिक दुर्निमित्त पुनर्न नवशक लेइन फीस बन्त गेल छथि जे जन्म सँ मरण पर्यन्त लोक के नधने रहैत अछि। इम ब्रह्म नाम पर ग्रहण करैत छी बज्रमन्त्र मन मे शान्ति अथि जाइत छैक दुनू के एक दोसर सँ लाभ छैक। हम नहि रही त ओकर अदृष्ट के देखतैक? और जो नहि रहय त इमर अदृष्ट केना बनत? ई व्यवस्था कि उदयदल छैक? ओ हमरा धान्यक दक्षिण दैत अछि। हम ओकरा सँ अज्ञानाध कर लेत छिऐक। एहि मे अन्दाध कोन? वैद्य फीस लड कड शरीर मे शान्ति दैत छथिह, हम फीस लड कड आहार मे शान्ति पहुँचवैत छिऐक। अछि दिन ई बिदा समार सँ लुप्त भड अथि लगे दिन एक बडका सडारा लोकर उठि जौक। काव्य और संगीत सँ शक्ति आनद भेटैत छैक, किन्तु अदृष्ट शस्त्र सँ आजीवन सन्तपना भेटैत रहैत

छैक। फलित ज्योतिष अपुन वस्तु धिक।

मन्त्राङ्गण कडलधेन - माता स्वर्णि कैनहि।

होगरा दिन शिखरीक आनद ज्योतिष कडलधेन मे एक दान। ज्योतिष इष्टिगोचर भैत -

## तान्त्रिकाचार्य

### भौनी बाबा श्रीमार्तण्डनाथ स्वामी

आप द्वारक बंधे तक विमानद की कन्दरा में तपस्या करने के अनन्तर भगवन्-विचारियों के सौभाग्य से धई पढो हुए हैं। आप हस्त-रत्न और भुक्कुरि देखकर ही संकल द्वारा पूर्व-जन्म और पर-जन्म का वृत्तान्त बतला देने हैं। जिन तन्त्रियों की अपना भूत-भविष्य जन्म की इच्छा हो, वे महामार्ग के दर्शन से लाभ उठावे।





## पंडित जी

जब प जी के निमंत्रण-पर भेटलीक त अरुन पे पंडिताइन के कहलथिन्ह - एडि भगतक अर्थ दुजालेक? एकर अर्थ एक कहुनिच जाना, देइमेरा भुजवा पंडिताइन गुँह ताकम दगलथिन्ह।

पंडित जी बजलन - नदुवन डेरल मे एतवन एक कुमरन सँ रतिम एतल पंडित लक्ष्मीक होरा रहनिन्ह चार दिन लखनक गधुर अओत। विद्याधी-धवस जोडि कऽ अपान भेटत। ओ रास कथ; मे कऽ आनव? बरवा पेटी अजवाक।

पंडिताइन विनित होइत बजलन - बड़वा पेटी त बड़ नहि अछि, कल भइल छैक।

प जी कहलथिन्ह - कोनो चिन्ता नाइ। पाइ लऽ कऽ बलि दिअँक। लज-कुंजी हमरा ठाँक सँ लगबहु नाँइ अथैत अछि। खुलल रहत त अपने हाथ सँ धरव-उत्तराव। ओना नला फौक हेतु चारचार विद्याधीक काज पड़ैत।

पुन स्त्रीक पेओन लागल सारा देखि बजलन - आज ई साड़ी पानभरनी केँ दऽ देवैक विदाइ मे एक धन मलमल भेटव करत। नाहि मे सँ चादर हम अम्मा तल काँडि दौँक अहाँ केँ दऽ देव। आव अहाँक भास सँ ओहि मे जै टा साड़ी बहराय।

पंडिताइन प्रसन्न होइत पुछलथिन्ह - कहिया जैयैक?

प जी बजलन - आध दिन फराँ छैक? परसू कुनरा। कालि सन्ध्याकाल धरि ओहिठाम पहुँचि जैयैक छाई। अनुके उधा मे यात्रा करक छैत।

पंडिताइन पुछलथिन्ह - विद्याधी लवारा मे ककरा नने जयदेक?

प जी कहलथिन्ह - विद्याधी मे छकौडीलन बेश होइचार अछि। ओकरा टिकटो कटावथ अथैत छैक। लालटेनो लेराव जैत अछि। और लवारा मे ठिठरा केँ बजा पड़ैत छैक। ओ रहत त भारंगर पेटी उठा रकन। केवल एके टा आनति भोकरा भ छैक जे छाधुर बेसी अछि। किन्तु ओहिठाम कि कोनो हमरा अपन दिशि सँ डाँड लागत?

नादन छकौडीवाल लोकन सँ फिगल ऐलाह कहलथिन्ह - गुरुजी, धीनी त उधार नाँइ देलक। पछिला बँचा पड़ैत अछि।

प जी कहलथिन्ह - मार राखी अपन घाँसी ओही लऽ कऽ अपन तेरहाक

बहाव करी। आव त पधुरक म्हातर मे जा नग छी। भे एह छुटकी घीनी लेल वऽ पुडिया मे वीत। और ओहिठाम त ओनुक ओनुक घीनी.....

छकौडीवालक जी लटपटाय लगलन्ह छुटकीक - काहु मे नओत आएल छैक की?

प जी कहलथिन्ह - तँ म्हातरा स्थान से नाइ। लजवाड़ा से कोन भोज खैरत? जाइ, ठिठरा केँ बजा लवहौक।

छकौडीवाल नचैत विदा भेलाह।

प जी अरुन स्त्री केँ बजलन - एतन से जीन-वस्तु गरिबाय तनी जाइ। नहि त हड़बड़ी मे कोनो वस्तु छुटि जइत।

पंडिताइन क्रमशः सब वस्तु मुटावा लगावीह। पाग छोटा चपकन, दूआ फूलक झोरी, आसन खडाम लाल-बोरी अरु समस्त ज्योतनीय वस्तु एकत्र बैला उत्तर प जी केँ पुछलथिन्ह - देखिबौ त किछु छुटलक न नहि?

प जी रास वस्तु नवीज करैत बजलन - अरुने वस्तु छुटि गेल। नोसि कलय अछि?

पंडिताइन वैडि कऽ कसिदानी लऽ ऐलीह।

प जी एक छुटकी नोस नाकक गुहा मे देग बजलन - देख त शस्त्राय मे देख राखल। हँ, एउटा और वस्तु छुटि गेल। शम सँ मुख्य वस्तु धुनु न की?

पंडिताइन कहलथिन्ह - हमरा ध्यान मे त नहि अथैत अछि।

प जी - अहाँक ध्यान मे अओत कोना? भवि जन्म त पदुआक झोर-भा म्हाड़ा-छाड़त दिन बीतल। जीवन मे काँइया मिष्टान्न त इच्छापूर्ण भोजन भेल रहैत तखन नै जाइ, कंतोर मे सँ भोजन-भस्म धूरी नेने अछ।

हेउडी पहुँचना उत्तर प जीक डेर। पुरनका फौकलना मे पड़लन्ह। ओही मे तन टा नडैत और रखि। वैदिकजी, भीमासक्की और नैयाविककी

जब प जी पहुँचल तखन भीमासक् आ नैयाविक मे शास्त्राय छिड़ल गेलन्ह। गानसकक पस रहैन्ह जे कमक फल स्तन भेटैत छैक। नैयाविकक कथ रहैन्ह जे न्हि कमक फलदाता ईश्वर दिक्क। एहिपर भेर विवाद चले रहन छल।

शास्त्रायक मन्थ तयैत देरी प जी अँकड़म जा पहुँचलन्ह। ई पहुँचलन्हि अपन दोस्तक पान-विवादन कार्य लगलन्ह - रावे मिथ्य (सभ किछु मिथ्य थिज)।

नैयाविक (के कोन कहलथिन्ह - रास किछु मिथ्य थिज त अँहू मिथ्य, अहाँ कहैत छी तेने मिथ्य)

पंडिताइन बजलन - हम अहाँ दुनू गोटा मिथ्य। जे किछु कम हमरा लोकनि जेन सँ रास मिथ्य थिज।



इ सुनिश्चित सामान्यतः का हाथ भऽ पड़े। प्रणम्य - जयन सभ काम  
मिथ्या थिक तखन धम और अयम मे भेद का रहल?

पं जी वीरगता लग्न प्रणम्य - (न-प्रणम्य देवता कथन एक सभा तैय  
पारमार्थिक दृष्टि से बसल ब्रह्मचर्य सत्य विचार प्रथम सत्यम् सर्वमिच्छा सम्पूर्ण  
तसार प्रपन्न थिक।

आय सगन्ता की मेद दक ओ मानसक दुहु पीरा से दलरि गेनेह।

नानाक दुष्टधन का नाम जयन सभ त्वाकधनिक सत्ता क्यारा  
कहेत धियेक)?

नैराधिक धृष्टि विसलधन - ब्रह्मणः । तम् (ब्रह्मक लक्षण की)?

एकीकृतता के नय होम्य सगनेह जे आय कदाचित अपन मुकुओं परस्त  
नहि भऽ जायि।

वेदन्ती पढ़िने अपन नाकक दुहु पीरा से भौंरकान की नोसि कोकनिक।  
तदुपगत प्रमद ऊपर करवाक हेतु खजरी नऽ सल्लस भेदा तखन कान्तिक  
तान गद्य साकार रूप मे प्रकट भैलह जे सत्ता मधुर तजनाक हेतु आद गेल।  
सागरा लोचन विद्याधी अर्धे धिदि मयकस भय गल्लह। आय निसकार ब्रह्मक सगा  
के के इशेन अहिरे सत्य-मिथ्या लऽ कऽ ज ससनाथ उठल छल से मधुग  
समापमेतु भऽ गेल।

पं जी विद्याधी ओ जवात के जन जायक हेतु इना पर पठौललह और  
अपने कोठरी मे आवि चौराक ऊपर में भित डलेकेह। हृदय मदन भऽ रहलह।  
एक प्रकारक मधुर आंगनी बालकरी, लज्जक, लज्जकमून और मेरीदानक  
लहू। प्रत्येक पंच-पांच टा। तकरा बाधा लैन गेल सागरा, तर मे भल्लू भौला सीम  
और ओलक औंछार। एक यासन मे दही। एक यासन मे चीनी।

पं जी पेटी फोकि कऽ सभ हा मधुर औंछार ओ चामो ओंछि मे भऽ  
रखलन्हि। तखन ओकरा पाछे से नीक जवो बान्हि गेलधन केवल साहरी तथा  
दहीक वारस आमा मे लऽ कऽ बैललह। ताकत विद्याधी-खवास जल लऽ कऽ  
पहुँचि गेलन्हि।

पं जी अगग जेव गोम्य गोल कम-भोलायन सोदारी वीछि कऽ फात पर  
डेलन्हि और ऊपर से छिहियर दही काछे कऽ लऽ लेलन्हि। शय विद्याधी खवासक  
हेतु छेड़ि देलन्हि।

इच्छा भैलह जे कोने मधुरा निलवुं त मीक होइत। परन्तु मन के रोक्लन्हि  
- नहि यदि अपने लेय तखन सभ के देवक पड़त। नहि से वरु चलेल लऽ ना  
परन्तु सही जी नहि सकलन्हि। एहाठाम खा लेय त गम पर की लेने जखन और  
ओछि ठाम त दिनु केन देन नहि।

अन्त्य - नऽ आग दहीपर नैतर कल्लन्हि। दु-चरि जय देत पर जीम

चटपटाव लगलन्हि जे कोनो अंधार छैतहुं परन्तु कोन अंधार बाहर बैल जाय? सभ  
। लेवे जेवा योग्य अछि। कोने दुर्ग होम्य घना गेहे लृप्य भैलन्हि जे कोन  
संगबला बाखी। परन्तु सदगद्दिवाँवनी बुद्धि परामर्श देलन्हि - विद्याधी के एखन पेटी  
कोनय कछिऐक से उचित नाह। और सीमक अंधार हम अपने छाएव त छेड़ि-लैल  
देनाह। भिटरो खए\*। सभटा एहेछाप्र सति जाए\*। तखन मन की साएन?

परन्तु किछु सटकारे न भन लगय नहि त चेटाए कोना? पं जी टिठग  
जे कहलन्हि - 'जे भहारपर से नोन मायाइ नहुने आ देप्रिहे, लैन नऽ हरिपर  
नरचाइ लेने अविहे। विद्याधी के मधुर-औंछार देवल रहैक। किन्तु मधक  
गाहम नहि भैलन्हि।

ओहो पैर धो कऽ धुपचाप दही-सोहारी सानय लगलह।

जखन टिठरा परचइ लऽ कऽ पहुँचल तखन पं जी वज्जलह - बाहो दहाक  
मन हरिपर नरचाइक योग्य भऽ जय लखन और की धकी? हे गाँहू अपन हिररा १५  
जे। गम पर रहिते त मरुआक रोटी खनै। एहन मोमदार सोहारी कतय भैलन्हि को  
आइ लेंहू भरि पेट धिबही सोहारी खा कऽ जन्म सार्थक कऽ ले।

पं जी सृति कय विद्याधी से धकनी दूर करवाय लगलह परन्तु दुइए  
जहि चोट मे लोछाछे उठलह। एकोडाल के डैरैत कहलन्हि - तौ मुझा लग्ये।  
हम कि मुझा? हरमूट जकी चोट लगा देलह। आइ अधिक कोह सधैत छह?

एकछि मे भोजनक हेतु एक योग्य उपति भडारवर स पहुँचि गेलन्हि। पं जी  
हवाइ कऽ उठलह। एकीकृतता के कहलन्हि - नाल्लन तेज काइ।

पुन विद्याधी के अछेठाम से लावक हेतु बजलह - जह, टिठरा के लऽ  
जा कऽ भंडार घर से घेनेक कहक लेल देवा दही भऽ जे शक्ति मे मांलिश करत।

विद्यार्थी-खवासक गेल पर पं जी एखन मे प्रेज पदार्थक निरीक्षण करय  
लगलह। ओकरा दू वर्ग मे विभक्त कैलन्हि - शशनीय ओ भक्षणीय। प्रथम पक्षिक  
यन्तु अदोरी, कौरी, लिहोरी चण्डर, बृल मसाला पेटीक नयन रक्षण पौलक। द्वितीय  
कोरेक यन्तु वाउर, दल्लि नोन रोत आलू, भौला चढेरा मे रहल।

परन्तु भरी कानकजीक दाग देखि पं जी ल जी कचटा लगलन्हि - एहन  
जड़न लपकेआ वाउर गम पर कडो भैलह? हे खैर खैर योग्य अछि।

हे निचरि पं जी ओकरो पेटि मे राखि लेलन्हि।

ताकत विद्याधी-खवास पहुँचि गेलन्हि।

पं जी वज्जलह - ही सीधा दऽ गेल अछि किन्तु एखन त भानस करवाक  
प्रयत्नमे नहि। की रौ टिठरा? मूख त महिय हैलिक?

पान्जु टिठरा रोच मे पदबला व्यक्ति नहि छल। कहलन्हि - मलिक! मूख  
12 रक्त रक्त? रानि बडकी टा होइत छैक। चरि टा पुलकी से हमरा सभ के की  
है\* ओ त तखन ने पेट मे थिला गेल।



प जी तब १०१ में हपटलधिन्ह से एकौर्षमल के दुन, पण्ड तथा अंधार भोगवास साहस नहि पड़लैन्ह।

प जी कै रचक पने एत नहि भेलैन्ह। गति भरी पेट मे हर तैत रतनैन्ह - कोन प्रकारे ओ मधुर मोरवा सभ हाथ लगन? यदि ओ सभ वातु नम नहि तऽ जा सक्तहु त एतय एक और पेटो अनयाक पने की? आय कोन मुक्ति लगओल जय?

एही भावना मे प जी कै निंद नहि पड़लैन्ह। मोने विवाधी कै कहलैन्ह - जाह, भंडारी कै कही गऽ जे आइ एकसी फलपदने करताह टिठरा के नेने जाहीक। जे जे फलपदनेक सामग्री होइक से सभ ता एतय आबड। देखैन्ह ५. कोनो परतु छुटैन्ह नहि। मोनन और विजयी, दुहू नेने अविहऽ यन्कि लोहू दुनू गेटा अपना आनैर फलपदनेक समझी नेने आवैन्ह।

छकोडीलल कै एहि अफसिक परिवर्तनक सदस्य नहि चुनि पड़लैन्ह। ओ टिठरा कै संग सय बिदा भेलैन्ह।

एकर प जी आवासेत भय पून पर वैशि गेलैन्ह भक्तिपूर्वक निष्पु सङ्ग्राम पाठ करय लगलाह। किन्तु सगहिरंग पधुरे सभक नम मन में आचय लगलैन्ह - कलाकन्द एक, नरसीक वसी दू, परोक मिट्टा तीन, रसमयुनी चार।

धोइक काल मे सभ पंडिताक हेतु टिठराक मोहरी-मधुर पधुरि गेलैन्ह। परन्तु अपना पावेनजीक ओगटेगार नहि ऐलैन्ह। प जी भविष्यक मधुर फलपदना हें आनन्दित भऽ उठलैन्ह - विद्यावीक पटीनइ कान बैलैक। नै रथसधारण वन घंगेरा नहि आएल अहि। विरेश वस्तु सभ पटैया मे स समय लगवे करतैक। जतेक अधिक विलंब हो, तमेक अधिक लाम।

ई विचार प जी पुन पाठ मे मन लगौलैन्ह। अन्तत सहस्रो नमन गनल भऽ गेलैन्ह। तथापि नामक फल-प्रति नहि भेलैन्ह। देखैत-देखैत एगारह सँ चारह, और बारह सँ एक बाजि गेल।

अमश पं. जीक उद्देग घड़य लगलैन्ह। ओ चित्तवृत्तिक निरोध करवाक हेतु योगयगिष्ठ तऽ कऽ वैशि गेलैन्ह। किन्तु कतबो फल कैला उत्तर मन कै एकाग्र नहि कय सकलाह। चयल चित्त कौखन मलाइक मालपुआ पर दैडि आइन्ह, कौखन केसरिया रावड़ी पर। आखेर नहि रहि भेलैन्ह। प जी योगयगिष्ठ केँ बढ कय उदियन चित्त सँ खड़ा पर रहलय लगलैन्ह।

तबत विवाधी ओ खबर अवैत दृष्टिगोचर भेलैन्ह। टिठराक मध पर घंगेरा, हाथ मे पधिया। विवाधीक दुनू हाथ मे एक-एक टा कोह।

आय पं. जीक लक्षणाकर लामल - 'पधियाक अर्थ मेवा ओ फल। चंगेराक अर्थ मधुर ओ मोरवा। एक लोहाक आध गरीक खीन। एक कोहक अर्थ केसरिया रावड़ी। तीनू गेटाक अर्थ वस्त्र मे नहि अटलेक। सँ कोह मे भरि दन्तकैक भंडारी

होशियार अछि। आय दैदिकजी वृद्धय बढ़ै गजिन छलन्ह। अच हुनका सँ तीन घर हमरा आवि गेल।'

प जी अश्वस्त भय पुन गृहा पर भवि वैल्लैन्ह और अखि मुनि जप करय लगलैन्ह। एहन रान क्रम जे 'हमरा बोनो अपेक्षा नाहै छय। यनी, सऽ ऐलैन्ह त एक कय राखल।'

विवाधी ओ खबर कनेक काल प्रवृत्त कय जनि लायक हेतु खलि गेलैन्ह। तबत पं. जी इष्टदेवता कै प्रणम कय अखि फोललैन्ह।

अखि फोललैन्ह उतर प जीक जे दशा भेलैन्ह तकर वर्णन नहि भऽ सकैत अछि। जधिया पं. केरा! दैदरा मे कुम्हडा एक कोहा मे दही, एक कोहा मे घीनी। समस्त न्यायशास्त्रक अनुमान खण्डित भऽ गेलैन्ह।

तबत छकोडीलल पानि नेने पड़लैन्ह। दसराह - गुरुजी।

प जी दुमकर छोटैत कहलैन्ह - आ दूर पूदि। गुरुजी! गुरुजी! करय ऐलैन्ह अछि।

विवाधी - कनेक सुनि लेल जाओ।

पं. जी - कपूर सुनि लेल जाओ। गड्ढा नहिहम। एक भितर गेलैन्ह से नेने-नेने देर दवा देलैन्ह। अंतय जा कऽ भंडारीक नाइडि मे सटल छलाह। और नेने की ऐलाह त काँच कुम्हडा। कपार पर रखल।

प जी कथाय भय तनेक जोर सँ कुम्हडा केँ उठा कऽ पटकलैन्ह जे ओ फल्य दऽ फूटि गेल। छकोडीलल मुँह दीने टाह रहलाह। प जी हुनका फज्दतिक तर करैत कहलैन्ह - मुँह ने देखिगौन्ह छुहार सन! ई दुहू गेटा बुधवार दिन कऽ गेल छलाह। सैलाक की, त कोरा! छुत्तुनर कहौ की! जेहने ई वेदयुक्त, तेहने टिठरो गड्ढा। दुनू नकदुब्बा।

टिठरा अपन विशेषण सुनि कराके सँ घसकि गेल।

प जी आय भंडारी पर लगलैन्ह - देखू त भंडारीक पजियन। दिन भरि सहा कऽ जान लेलक और एखन पठवै उठि की त काँच कुम्हडा! खजाचीक सार बनल अछि। जग, पिरता कऽ अवलैक गऽ। ओ की बुझैत अछि? हम एहि ठाम कुम्हडा खाय ऐलहुँ अछि? चलह, ऐखन एहिठाम सँ बिदा होअ! हमर ई अपमान।

ई कहि पं. जी घर-घर कैंपैत बिदा भेलाह। हुनका शप मे शक्ति रहितैन्ह त भंडारी कै लक्षण भस्म कऽ दितथि।

तबत भंडारी कै ज्ञात भेलैन्ह जे वेदान्तीजी रुष्ट भऽ कऽ पड़लस जा रहल छथि। ओ भंडार बढ कय पं. जी कै मनैयक हेतु ऐलाह। पुत्रधिन - की? अपने भोजन कैरै?

पं. जी कहलैन्ह - दुरजी! भोजन की करन, कुम्हडा?

भंडारी - किसेक? और फलपदारी परतु त पटौने छलहुँ।



प. जी - घास पटौने छलहुँ, ऐदिकजीक छानिए, न तरहक फलाझरी  
मधुर ओ मीठ्या और हल्ला मीठ्या के नुस्खे, तह छलहुँ न माना में  
इत्ताय करय।

प्रहारी - कृष्ण मुनि तेले जागो। कर्णिल एकादश तैय। ते खाव फड  
पल्लवारी गधुर मरुछा सज्ज करीत येत तलेक, पल्लवारी जोरुनि रा जे उग्रवैक हो  
राविए कुडम्य-आत्मा धें पठा होल मेल्ले आइ पलाहाक कोटा दनिजाम नाड।  
सखल हम की पठविनहें।

पं. जी - ओ यनागरी हल्लुअइया कहां गेल?

गदाति - जो तब भी मैं तोलना छूने में। १२ वेग पर लोहारी मयूर  
मेलेक में १२ गण - १२ लोहारी में १२ लोहारी जो कदु मयूर कदु एतल।

७ जी। उक्तोऽङ्गत्वात् पृथिग् अङ्गत्वेन भद्रं मे लक्ष्मिं वदन्तु - इति भवति  
उप। छी जौडी व नदय, एका कीर्डी मे भद्रय छति मोरे मे भद्रय त नेने मेने  
प्रवर धारे.

भगवती कृपा प्रसन्न रहि मे किन्कि दास नहि छैन्ह । हम सावनी मधुर वचना  
मे वादना सहे । "को एकज भावक" अ गति भेल जे किन्कि "द" कउ बिदा सविभक्त  
और दही को छुडि कउ छे की ललितैक ? जखन सात वरक उर कनेक  
परायण भेल । अहम फलप्राप्ति कपुत्र छैन मे मन्त्र । कपुत्र दानगी हनुमद जे  
गोरक्षा अंगी । एत तर्क मे एकटा कुतूहल सवाल । कौन छैनक से एउ कउ  
दोषभक्त और कल्लिभक्त जे "दान हनुमद" से न फुरावने नहि छै । चीनी नेने जग,  
गोरक्षा दान लेव । भाव कल्ल जग । हमर कोन दास दोष जखे ?

[illegible]

मोहरी तोकानी द्वायक महर, अथवा दरी चौरी। पद्यांत १११ पं।

पं. श्रीकृष्ण कृष्ण पारा भक्त किं न नीचा उतारे ऐतैः ।

ठिठरा के कहलखिन्ना - आख उह जफाँ तके सँ थी? हाम कर।

नामन पुरान मगोम ज भनर राजमाताक कान म ई ख्यात पवुँच गेल्ल । ओ  
एक वस्त्रा थो मे लभ हा जल्लामी भधुर मोरवा रोटि कऽ पं जी कै पढा  
देसिन्ह । पं- जी गदगद भऽ गेला ।

इसका प्रयत्न जो कठिन प्रयत्न है। कटु राग में से लाया। राजन् जी नहीं  
मिले। यथाशक्ति लाभ के लक्षण लाभ प्राप्त हो सकें। पर भाव्य तै वेरी  
आवश्यक पेटो भरण हलैं। से करीब तीन मील भी गेहूं।

ए जी भोजन बाल एन्या उदात्ता अथ अवश्य स्थितिनि ते मन्त्राः सर्वक  
मा गौतमी परस्मैपद आत्मा देवभक्त और मन्त्राः स्वयं मे वरा

मणि मे डेहलीक भीतर भोजन रहैक प जी दिहली-खुवाक के जिम्मा  
नवचिन + आइ जनेक ने खैचक से रो खाइ जेत। पछा क ई मणि कतिबड जे  
मध्य में अछी नहि भेल। भुखन पर खेद जोर नादे करी। भुखन में पेट भरी।

भक्ति रहित मनुष्य और मनुष्य व्यवहार भयंकर है। राधा मुद्राक्ष सोम ५९  
द९। पंचनकार में धोड़के कसरि रहि गेल।

४ जीक उपरिशा व्यर्थ नहि गेलैन्ह किंकि त छिटम कें डर पर अवेन-अवेन छनत हामय लगतैक और छकौरीनान के पेट छुनि गैन्ह ७ जो के भोजन-भस्म चुनैक फकी लेला उत्तर रह-दरत पारी भइ गैन्ह। भरि हलि काम पर जमउ बकते रहलैन्ह।

भीर होना-होना पर यह गेज जे दोहनन्ती के रेखा पर लेलै। सुंदक सुंद  
लानि प जीक जिहसा करक से परधिय लकड़। बंद-बंद गेज पर श्लोक  
पढ़ि-पढ़ि लोक के शरीरक नि-सारता ब्याप्य लगरथिन्ह -

आतस्य हि प्रतो मृत्युर्भूय जन्म मृतस्य च

X X X

पलासूनगलासूश्च नानुशोधन्ति पंडिताः ।।

X X X

देहिनी प्रस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा

तथा देहास्तरप्राप्तिर्धीरस्तात्र न भुङ्क्षते ।

X X , X

वास्तसि जीर्णानि यथ विहाय नयानि भूषयन्ति नरोत्तमनि ।

तथा शरीराणि विहय नृणां न्ययानि संयति नयनि देही ।

પરંતુ વેદાન્તીઓ કૈં મનઃક્રિયાન ચિન્તો કોમય તગલેન્ન જે કદાચિત્ત પરિદામ  
લિધુ ખડ ગ્લ ત પેટી ગમ પર કોના પહુંચના?

लोष्टक गेला पर दुहरै-दुहरैत दिहायी के कहलयेन - हो छयोडीलाल,  
गइ हमरा दुखित जानिकऽ कतहु विस्वसो नहि छोटि देयग। जाह, अपने राँ भंडार  
जा कऽ चंगेरा लेऔने आवथ।

चिन्तायी कहललदेव - गुरुजी, एखन अपने के छोड़े कऽ ५२ केना आ सकैत छी?

पं. जी खिरिया कऽ बजलर - देश, राष्ट्रन हय भौन ही। तौ बखलर।

इ कहि पं जी पेट फूला ऊढैरथास छेइय लगलह। पयै ईलाकफु सम द

सक-पंजा विरारि मेलेन । मज्झिमा - सेश, इय पाइ छी ।



अँधि पूजि गेलैन्ह। पकमानक गन्ध अर्धकपूर सँ देशी काज ई छैन्ह। किऐक त ओहु हालतमें उठि बैसलाह। कहलथिन्ह - पेटी पुरुजा कऽ एकर लावह।

ओइये कान्हक बाद उपनयन प्राप्त भेलैन्ह। निर्वाचन व्यक्ति सभ मंडप पर गेलन्ह। पं जी कुहूँत-कुहूँत बजलाह - तौ छकोईलाल, आव गेटा चटैदाक बेरे भऽ गेल छैक। जाह, हमर अबा लऽ आयह।

एक घंटा पर विद्यापी मंडबा पर सँ भिरलन्ह। पं जी कुहूँत-कुहूँत पुछलथिन्ह - गनह त, कै गली सुपारी छौह?

विद्यापी गनि कऽ कहलथिन्ह - नी गली मे एकटा गौर अछि।

पं जी रुइ मय कहलथिन्ह - टीक सँ गनह। कम मोह छैलैन्ह।

विद्यापी पुन गनि कम बजलाह - दू बीस, चार टा होइत अछि।

पं जी प्रश्न भय कहलथिन्ह - हँ, आव टीक भेलौह। लावह त देखिबौह,

केहन सुपारी छौह?

पं जी पाँच-सात टा सुपारी छँटि कऽ कहलथिन्ह - तोरा बुद्धिक जनि कऽ टकि लेलकौह, ई धरि टा राइल दऽ देलकौह। सोन टा खखरी छौह। तौ अँधि भूनि कऽ उठीने ऐलाह। जाह ई सभ बदलि लखह। नौक-नीक कतरा गोम्य सुपारी लखऽ।

जैबाक दिन धरि पं. जीक पेटी नीक लकाँ उपराय कऽ भरि गेलैन्ह। विद्याक घोनी पर्यंत नहि उलैन्ह। बहुत करमस कऽ कोमहुना अटैलन्हि। तथापि पेटीक मूह किछु अलगले रहि गेलैन्ह। तखन धरि-पाँच भत्ता एहि लऽ कऽ ओकरा बन्हलन्हि। खूब किस कऽ गिरह देखलन्हि।

थाना विठरपुर स्टेशन पहुँचल उत्तर पं जी देखैत छथि जे कीडू मे केओ टीक ओती आकार-प्रकारक पेटी नेने पार भऽ रहल अछि बजलाह - दीडह छकोईलाल! पेटी नेने जाइ छौह।

विद्यापी कहलथिन्ह - नहि, गुरुजी! पेटी ओकरै छैक।

पं जी तमस कऽ बजलाह - छी दूदा पडि लऽ कऽ बान्हल नहि सुदैत छौह? ओ चोर छैक। दीडि, दऽ पकडह। ओ गदहवा (टिटारा) कहाँ गेल?

टिटारा आगँ बनि कऽ बडलकैन्ह - पैह त छी सरकार! पेटी त हमरा माथ पर अछि।

पं जी अपन पेटी देखलन्हि तखन विश्वास गेलैन्ह। तथापि मनक खटखटुटी नहि छुटलैन्ह। ओहि परीयलक लग जा परिचय पुछलथिन्ह जात भेलैन्ह जे ई तैय धिकाह। वार, आव की थीक? पं जी धुँडीसोहार भिन्नता जेहव शुरू कैलन्हि। कहलथिन्ह - हमरा राति सँ दुआइन केकर दऽ रहल अछि। कोनो पाथक हो, त बहार करु।

वैद्यराज मिर्जक जेही सँ अजीज-नशाक बरी बाहर गेलन्हि

पं जी बजलाह - वाह! खूब चटकार अछि, यात्रा नीक छल जे अहाँक संग भऽ गेल।

वैद्यराज - अहोभाग्य हमर जे अपनेक दर्शन भेल। अपने कतय जैयैक?

पं. जी - हम बेगूसराय उत्तरब। अहाँ?

वैद्य. - हम बलसिंहसराय उत्तरब।

पं जी - वाह! तखन तँ सराय लऽ कऽ दुनू गोटा मे बादरयण सम्मन्य भऽ गेल। किछु काल धरि त संग रहत।

वैद्य - किछु काल त्रिएक? अपने वू बजे रति कऽ बेगूसराय पहुँचथ। ताबत धरि संग रहब।

जखन ट्रेन ऐलैन्ह - १२ गोटा एके टाम बैसलाह। वैद्यराज कहलथिन्ह - अनेक शक्ति सँ लाभ प्राप्त भऽ गेल। किछु वेदान्तक घयो बैस जाओ।

कोठरीक औरा यात्री सभ बलि उठलाह - हँ, हँ किछु ज्ञानक घात होए। हमहूँ सभ सुनय।

वेदान्तजीक उपदेश बसल गेलैन्ह -

बुद्धिमान कै दाही जे विषय मे आसक्त नहि होथि। पैह विषय सभ दुयक मूल कारण छि।

ये हि संपर्शजा भोगाः दुःखयोनय एव ते।

आवन्तबन्तः कौन्तेय! न तेषु रमते दुःखः॥

मन कै रोकि कऽ अपन पश मे करक बाही।

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमभिराम्।

ततस्ततो नियन्त्रेयमायान्येत यश नयेत्॥

जहि विषय धर चित दौडय, तहि दिशि सँ ओकरा मोड़ि कऽ अपना अधीन राखक चञ्ची।

हामी के छि?

न ग्रह्येत प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम्।

रिधरदुस्त्रिरांगुलं ब्रह्मिद् ब्रह्मणि स्थितः॥

जे ने प्रिय वस्तु पवि हर्षित हो, ने ओकरा अभाव मे उद्विग्न हो, ईह ज्ञानी छि।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।

शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सन्विद्यते॥

सुखनिन्दस्तुतिमौनी सन्नुष्टो येन केनचित्।

अन्येभ्यः स्थिरमतिर्भक्तिपान् न मे प्रियो नरः॥

शत्रु मे, मित्र मे, अपमान मे, जाह मे, गर्मी मे, राख मे, दुख मे, निन्दा मे, मे, सम मे एक समान रही।

दुःखेनमुद्रितमनाः सुखेषु विगतस्थः।

धीराणां धर्ममयः स्थितिर्धर्ममुनेरुच्यते।।

चक्रा दुःख न उदेग नहि तडक, दुःख न आकाश नहि होइय, ले भय, क्रोध और हठता के निचले हाथ सब धर्म बानी टिक। धीर होइ, धीर होइ, धिरेन्द्रिय होइ।

इत्यादि, इत्यादि।

धोनाक नंदनी में अधिकांश व्यक्ति उपदेशमय जान करत-करत अधिकांश लागि गेलाह। तथापि देवान्तराज धारवाह बसिते रहलैन्ह।

देवान्तराज 'उपदेश' और 'संन्यास'। किन्तु, तबन येगुमराय रेशन अवि गेल प जी एकर एक अध्यात्मिक सं आधिभौतिक जगत् में आब गेलाह। रई केनहि छकोईलाह! टिटरा! रेशन अवि गेलीह। उगरी जा।

छकोईलाह निगधेर सुतन छलाह और टिटरा करु पारंग छल। प जीक भक्त गद केला पर छकोईलाह दुगुनेवाह और अँखि मिहिस, टिटरा के देह धऽ उठावय लगलयेन्ह।

तबन एक झुग दरंगन ओहि कोठरी में घावा कऽ देलक। भदुआक गिरोह, बननेवाक रत्न, वल्लभ-वज्रलाह जमान। सब भेदियाधसान कऽ ऐलक। लोकक लोका लागे गेल। प जी दो उतरवाक बाट बंद भऽ गेलैन्ह। तबत गाड़ी कुजबाक घटी पाडे गेलैक। प जी आनन्द केलैन्ह - छकोईलाह!

परन्तु ओहन भीड़-भडका में के सुनैत अछि? कोठरी में रोशनी नदारद। अन्धार में अंगार अनसमर्थक बाँध छकोईलाह ओ टिटराक जग लगव असभव। लाका बाड़ी चल्य लागि गेल।

प जी हाथुल भऽ गेलाह। गीतावला स्थायीक लसक चिरि गेलैन्ह।

ताबत विद्यापी नीचा सँ रई कैलथिन्ह - गुल्लो। उतरल।

प जी प्रश्न कैलथिन्ह - पेटी?

विद्यापी वज्रलाह - हँ। उतरि गेल। पैर, टिटराक माथ पर अछि।

प जी चिथिया कऽ वज्रलाह - कोना कऽ हेत होउ?

देवजी कहलथिन्ह - अपने हड़बड़ाउ नहि। हम छिड़की जाई अपने के ससारी कऽ उतरि दैत छी।

कोनो-कोनो तरहें प जी रटका कऽ उतारल गेलाह। टिटराक माथ पर पेटी के सही-शलामत अँखि फूट दऽ निकस छोड़लन्हि। वज्रलाह - हमरा त भरोस नहि छल जे तोरा लोकनि पेटी लऽ कऽ उतरि सकवह। अस्तु। एखन टट्टही इजोरिया छैन्ह। देखन बिदा भऽ गेने रतिगरे भाम पहुँचि जाएब चले धन्य।

भुक्तवा उगैत-उगैत प जी घर पहुँचि गेलाह। जाइत देरी गद कैलथिन्ह - कहीं छी ऐ? केवाह फोस।

पंडिताइन धड़का कऽ, उठलैन्ह और केवाह फोसैत वज्रलाह - धनोक राति

कऽ लजलैन्ह न एतेक दानकन पहुँचि गेलैन्ह?

प जी कहलथिन्ह - दिन में अदितक न सभ एहि सनबोज करैत अदित। लकी सँ रातिर मे चल ऐलहु।

पंडिताइन पुछलथिन्ह - से ओहि मे की छैक?

प जी - से न तबन फोसैक तबन ने बुझलैन्ह ओ गम धरतु एह जन्म मे देखलहु नहि देख। रटार हाथ भुह धो कऽ तैवार गऽ जऽ।

छकोईलाह टिटराक माथ पर सँ पेटी उतरि कऽ नीचा दैलन्हि।

प जी कहलथिन्ह - ई धानुपुत्रक देवारी थीक। देखु ने कोन-कान लसक पदध एहि म सँ बहराइन अछि। अछि फोसि कऽ देखु ता हम जलशय सँ भने अवैत छी।

ई कहि प जी कहलथिन्ह लस फोसि दिशि गेलाह।

जबत प जी दुनद आनन फैलाक उतरल आइन ऐलाह त देखेन एहि न फोसलहुन दिगुधर। दैम-दैमि। पुछलथिन्ह - अहाँ एना गुम-गुम कियैक भेल छी?

पंडिताइन वज्रलाह - अहाँक मन जे राम गाउ?

प जी वज्रलाह - अहाँ आइ हगड़ा ठनैत छी? पर-धिरंगक मिथान सब आपस अछि से देखब कि कसाफुत्ती करव?

पंडिताइन मुँह मुलाय कय कहलथिन्ह - बेरा, रहऽ दियऽ। हम ओहन छुड़ुआपल नाई छी जे नथुगक हेतु 'बी रटल रहल' गरीबक बेरा भेलहुँ त दूरि गेलहुँ।

प जी वज्रलाह - अहाँ री बाप! ई की? अहाँ भावन्हि हगड़ा बेराहि लेलहुँ? लाउ, पेटी कहीं अछि?

पेटीक उपरका पड़ा अनगदित दस प जी अवक रहि गेलाह हे गगना! ई कोन इन्द्रजाल भेल? भीसे पेटी मे भार कऽ हरे, यहड़ा जो उगलवासा! चोपचीनी ओ विदारीक!

प जी हाहि मारय लगलाह - ई निश्चय वैददला पेटी थिक। टिटरा राग डाका दैलक। गदहवा गेल कहीं?

टिटरा फाँके सँ बाजल - हमरा त जे विद्यापी बड़ मध्य पर धऽ दैलन्हि से उठौने ऐलहुँ। हम कि फोसि कय देखब लगलियैक?

प जी छकोईलाह के रइय लगलथिन्ह - ई बुद्धि ने। अपन पेटी रेल मे छोड़ि दैलन्हि। घेददला नेने ऐलक। बुद्धिधरक नाइडि धनैत छथि। मुँह मे देखिओन्ह चुकरीभइ सन।

छकोईलाह गिटटिट्टाइन वज्रलाह - हम न पाके लऽ कऽ चकल देखायैक।

प जी जत भय वज्रलाह - छी बुद्धि ओ लाल पाड़ि सँ बान्हव रहैक। ई नीमर पड़ि छैक सँ नहि सुनैत छैक? अँखि पर मकड़जाला लागि गेल छलैन्ह?

एकही - शत्रुन अन्तर मे कि रू सुखेन हनेको? पेन २० २४०  
 देलैक जे पेटैक देकले नहि रहल एगटा देकल मर गे खोले लऽ वर २० २४०  
 तखन हम खिड़कीक बाटे टिटारक, माथ पर ४० देलैक इति त २० २४०  
 लैक अछि।

पंडित जी टिटार पर झूठ होइत बजलाह - ई नइरा किहू इसे रा  
 वास्त? एकरा त गेबे भैरैक जे कम भारी होय पड़ैक

ई कहि पं. जी लोटा लम ओकरा पर झुटलाह। टिटार ओहिठाम पं. जी  
 छकीहीलाल रंग पुरंग देखि फसकि गेलाह।

पं. जी अपन मध्य करार पिटैत बजलाह - हमरो सँ दुखेन मर गे जे  
 सुबिधा कऽ ओकरे लग बसल गेलहुँ। सटीर कैलक फल भेटल जे अन्तर मेक  
 सभटा संघेत वस्तु पार भऽ गेल। बैदा पूजेनमक शत्रु छल। सर्वदलन मर गेल

पंडिताइन तोष-भरोर दैत कहलथिन्ह - आव संघ केने कम मर गेल  
 अंश मे छलैक तकरा भेटलैक।

परन्तु पं. जी कै रहि-रहि कऽ जेभारि अवय लागैक। इम-इम मोरवा  
 सभ घबराये नहि कैलहुँ। नारंगीक दसी आबिना ओख मे नइक मर गेल  
 परोरक मधुर छोटि कऽ मर उठौने ऐलहुँ। हे नारायण! ओकर मर गेल मर गेल  
 छलहुँ। से दलरिहसगय चल गेल और पर आबल घोरनीक देल लैक। मर गेल  
 और हम विदाईक। बैदाइन कै संभ-अंगु हाथ लागैक ओकर मर गेल  
 हे कमक बल।

सत्री कहलथिन्ह - आव की करदेक? जे होएक छलैक मर गेल  
 अगलताओ कोनो काज मे आविद जैक

पं. जी बजलाह - आव बाथ पर नैक चुकी नहि छै। देल गेल  
 भाष त थिररि गेल। सेहन बैदांनी गम मे फँसा देलक जे ओही मे मर गेल  
 बायल सोहे नहि रहल। आव कि ओकर एता लागल? दबाराक मर गेल

पंडितजी बैधराज कै धुनि-धुनि कम विशेषण देय लागल

पंडिताइन कहलथिन्ह - आव मुँह-हाथ पोड। अन्तर मे मर गेल  
 मन स्थिर छै।

पंडितजी बजलाह - छाड की? हम आइ असन मुर्खक इच्छा कर  
 पंडितजी कोटरीक केवल बल कर मुँह झोपि पडि रहलक। बैदाइन दिन  
 भरि मुखले रहि बैसीह।

राविशेष मे पंडितजी केवल छोलि कऽ बाहर ऐल। पंडिताइन कै मर गेल  
 कहलथिन्ह - ऐं हमरा आव दिव्यज्ञान भऽ गेल बास्तव मे ई मर गेल  
 थिक। लोक भुगमरीककल पाछाँ दीडि रहल अछि। विवाही कऽ रहल मर गेल  
 बाबूशाही और बहेड़ा मे भेदे की? हमरा अन्तर यथाथ बैरागक उग्र मर गेल अछि

पंडिताइन कै ठंसी लागि गेलैक।

बैदांनीजी कब भऽ पुछलथिन्ह - अहाँ होमलहुँ किहूक?

पंडिताइन कहलथिन्ह - अहाँक बैरागक हाल हमरा दुखल अछि।

पं. जी बजलाह - पछितुका यात सभ दिसनि जाड। एते धर हमरा दहशान  
 भऽ गेल अछि। आव ई विषय-वैराग्य कथनपि नहि छिटि सकैत अछि। इन्द्रियक सुख  
 कानो वस्तु नहि थिक। बाँटी सर गेने माटी। आव ओहि पेटैक खातिर हमरा एको रसी  
 हय विषय नहि अछि। केवल अनारगति ओ तिनेस।

राविशेष मे छकीहीलाल कहैत ऐलथिन्ह - मुकुगी, बलागदसराय सँ एक  
 आदमी पिटी आ पेटि नेने आएल अछि।

पं. जीक 'वितिका' मुँडे मे रहलैक। बजलाह - ऐं अपन पेटि आवि गेल?  
 कहाँ अछि?

ई कहैत पं. जी धडपड़ा कऽ उठय लगलाह। लदत ऐन आदम पछि गेलैक।

पं. जी दियारी कै कहलथिन्ह - जाह, आदमी कै बाहर बैरागक मऽ।

पंडिताइन कै कहलथिन्ह - होसू लाड, पाकि कादू।

देरी कुजैत देरी गमगम करय लागल। पं. जी देखलथिन्ह - सभ विषु  
 अनानति राखल अछि।

पंडिताइन कै कहलथिन्ह - आव बडक चोरो आनू।

पं. जी एक दिशि सँ गनि-गनि कऽ मधुर मोरवा बाहर करय लगलाह और  
 पंडिताइन कै चिन्ह चिन्हा कऽ बैरा मे राखय लगलाह।

लायत छकीहीलाल आवि कऽ कहलथिन्ह - बैदांनीक पेटि कहाँ छैन्ह? ओ  
 आदमी देखन चल जाएत।

पं. जी विगडि कऽ कहलथिन्ह - ओहिठाम मोरी लग हरे बहेड़ा पेंकल छैक।  
 जाह पीछि कऽ भऽ अवहेक मऽ।

दियारीक रैला पर पं. जी सत्री कै कहलथिन्ह - भँसार सँ किल्ला त लगेने  
 आड। नहि त फेर केओ पहुँचि जाइत।

पंडिताइन फिल्ली लगा ऐलीह। पुछलथिन्ह - आव की कहैत छी?

पं. जी कहलथिन्ह - आव पैर पो कऽ दैसू। हम सभ मे सँ एक-एक टा  
 रेने जाइत छी। अहाँ घण्टि-घण्टि कऽ खाद कहने जाड।

पंडिताइन कहलथिन्ह - गल। ई कोन भऽ सकैत अछि? अहाँ दू सँझक  
 उपासल छी। तम जाह छी भानस घटचम।

पं. जी कहलथिन्ह - बलाहि, आव वस्तु मानस भोरे! एहने अछि त हमरो  
 एक-एक टा गम मे सँ परसि दियऽ।

पंडिताइन एगरी कऽ जाय लगलैक कि पं. जी बोले थऽ कऽ खोचि लेलथिन्ह  
 आइ से नहि छै। मग देवय पडल



पंडिताइन के पुन हंती लागि गेलैन्ह ।

वदन्तीजी पुछलथिन्ह - अहाँ हंसलु किरेक?

पंडिताइन कहलथिन्ह - अहाँक बिषय देखाव कतय गेल?

वदन्तीजी कनक काल गुप्त गंद यज्जाल - हं ई त वेर मन पारै दलहुँ  
परन्तु प्रवृत्ति ओ निदुअ कि लेख केँ आन मय ऐक? जे भावाक खेल गधने गध  
सैह सम के नचा रहल छथि। एक क्षण पलिते मनन वेगमय अस्तर चह। दैन छलाह,  
आन पुन गमक रग भार गहन छथे। हय अपने त कन गी नहि। तयस हमर काम  
छोप? ई सभर। अहं लीन थिन्ह। ई कहै। वेदन्तीजी एउटा रसमाधुरी पंडिताइनक  
गुह मे घड देलथिन्ह।



## कविजी

कविजी मे तीन टा मिलसय गुण छलैन्ह। ओ उत्तम भावुक छलाह। एतेक  
भावुक, जे कतिपय नायिकक कथा तँ ओख मे नो भर अरैन छलैन्ह। दातर, न  
ओ नख सँ शिख परान लीनवय उपमय छलाह। रहन बसिक, जे अपन उपमान  
अनल रखने छलाह तेसर, जे ओ प्रगतिशैल छलाह। अधोच महिला एय मजदूरक  
स्वतंत्रता पर मान्यपूर्ण कविता लिखै छलाह।

काव्यक दली सुन्दरी छलथिन्ह। हुनक देह 'गिनी' भेल जकाँ चमकै  
छलैन्ह प्रत्येक अंग दप। जकाँ दल्लैत छलैन्ह नाम त छलैन्ह 'कामिनी' किन्तु  
कविजी दुसर सँ 'शोभा' कहैत छलथिन्ह।

कविजी केँ अखन कविताक प्रण होइत छलैन्ह तखन शोभा केँ सामने देसा  
लैत छलथिन्ह। एक दिन विधायिनी पर निजद्वारा रचित छलथिन्ह - 'शोभा'  
एतेउगा आधि कऽ वैसु। कनेक कऽ छि। तिय, मुँह मयन कऽ कऽ वैसि जाउ।

गृहिणी छानर कहैत उतर देलथिन्ह - और मनस मे जे अथे मऽ गएत।  
'अचल' जी कान पर हाथ रखैत बजल - 'हय' हाय! कहां कल्पनाक  
गन्दर दल मे बिचरन करैत छलहुँ से अहाँ एकाएक धूलि मे पटाके देलहुँ। एखन  
विरक्तिणीक मुद्रा बना कऽ हमरा सामने वैसु।

'शोभा' उवाच मन सँ वैसि गेलैन्ह। कविजी हुनका मुँह तकने जाधिन्ह और  
ओहि सँ जे प्रेरणा भेटैन्ह से पंक्तिपत्र केँ जाधि।

देवता-देवि आधा कविता तैवार मऽ गेलैन्ह। कविजी हुनका अंगि पर अंगि  
गड कऽ उगा सेवय लगलाह।

शोभा अगा कऽ पुछलथिन्ह - आन और कती काल वैसय पड़त? आनर  
अधन दुःख रहल अछि।

'अखन केँ ध्यान भाग मऽ गेलैन्ह थलतल - ओष' रस-भस कऽ देलहुँ  
एखन अखन केँ लोका मय। तय, पलिते बिचरपूर्ण मेघ केँ वैसल छलहुँ नहिना केँ  
बस लय, और जोर-जोर मे उछलवार लेख लगू।

एउटा दिन देवता वैचार मऽ गेलैन्ह त शोभा केँ छुट्टी दैन कहलथिन्ह। आन  
मे तयन न न स्वयंदक भजन से अहं हयकार बनल, एहन रससाक



निरिस्तम्भ मे निवास कय ओझो धन्य भऽ जाएत।

शोक-विषम होइत धन्योद - एखन जगन त छैहै नहि, भाग्य जरी सँ हितैक  
आय कविजी परा सँ गय पर आवे गेलार। केवल स्वर्णाक रूप शोभा पान  
कैने त पेट नहि भरल। उदरदरी कै भयक भटु सिद्ध तण्डुल चाही और तकर  
आवश्यक साधन - दुःख-घाघक अभाव अछि।

दोहरी सोच्य जगनाइ - अमास! अभास! अहा! की सुन्दर घरसु यिक  
अभाव अदृश्य! अजेय! निमित्त! निराकार! एहि पर सुख सँ सुख भादक कविता कैल  
जा सकैत अछि।

परन्तु कविपत्नी व्यावहारिक धरातल पर छलाह। कर्णाल - पाड़ेने दू आनक  
गोहटा मछा दिवऽ। तखन 'अमय' पर कथित लिखब।

कविजी कर्णाल - एखन हमरा रही कर्णाल फाइन सँ काज चल  
लिमऽ। कलहु सँ रुपैया अचि जएत तखन गोहटा के कड़े केसर कानूरी मंगया देय  
तखन बाहर छफिउन सेर कैलकैह 'नवदुर्ग' कापोलय सँ गनिआडेर  
मृपन पर लिखल - अहाँक कृष्ण कन्या पर पचरा टाका पुरस्कार जा रहल अछि  
अग्रिम अंक हेतु 'मजदूर' पर कविता पठाउ।

कवि गृहिणीक आँसु मे नोट फेकैत दजलल - अय केसर और गुनचल  
१५ कऽ दानक हलुअ बनऽ भाइ मत्तसुणी विधवा पर लेखनी उदैचक अछि।

नगावटे पीला उतर कविनीक प्रतिष्ठा मे भाव-जंग उदय सगलैक ओ  
मसनहि पर ओटहि कय चित्तन करय सगलल। अखि मे अश्रुक बिन्दु अचि गेलैक।

पत्नी पुष्टयिन्ह - ई की? कनैत छी कियेक।

कविजी कलसूरी सँ सुललित समाल सऽ कऽ अपन अखि पोछैत वजलल -  
मजदूरक दशा सँचि कऽ हृदय द्रवित भऽ रहल अछि। हाय-हाय!

हे श्रमिक! कष्ट लखि कय अहाँक,  
भय हृदय जाइत अछि फौक-फौक।  
भायक भोरे उटि दिनु रजाइ,  
पहली मे तामक हेतु जाव।  
जेठक दुपहरमे हर जोती,  
बुझैत तम घामक मोती।  
रोदो बसात छवि जाइत छारि,  
चूझी न अहाँ जगदु यिहारि।

परन्तु तकर फल अहाँ कै की भेटैत अछि?

नित अहाँ छटै छी दियल-रैन,  
निधिनत करै छथि धनिक बैन।

ई अहिं बदीलति यिक मजूर!  
जे पैघ कटावथि 'जी हनूर'।  
छथि अत्रिक बदीलति मोट सेठ,  
जे गरी सँ नहि होथि नेट।  
हूची अहाँ समुद्र जा जा,  
मोतीक मुकुट पहिरथि राजा!  
सुखी ओ शून अहाँ तानी,  
पंचमठला पर सुत्थि तानी।  
गलवैत मटि मे अहाँ हाइ,  
दोरर फरवै अछि जमींदार!

एतवे नहि।

नित सुखल रोटी अहाँ खाइ  
अनक दित थप खोआ-मलाइ!  
धनिकक मुकुर ठतुआ घटैत,  
वध्या अहाँक अछि मुँठ तबैत।  
तररीत हाथ दू दिनक सल्ल,  
भरि पेट अन्न बिनु क्लिटि रहल  
म्वर लगलौ उत्तर दूध बिना,  
रकटैत रहै अछि रहैत दिना,  
औषध बेमेक खेलैत धूनि,  
जग सँ खलि देग अछि आँधि मूनि।

काथ जी पत्नीक मुँठ दिशि ताकि कपलल - शोमा! अहाँक नेत्र सँ मोती नहि  
घरी। अछि? त कियेक? नारीक हृदय त स्नेहक माखन धिक जे करुणाक आँच पयैत  
दरी पिबलि उदैत अछि। देख, ठन कोना वर्णन कैने छी -

अयि! अनन्त कोमल करुणे!  
विगलित स्नेहक रस धारा,  
दिव्य तोक सँ उतरलि प्रीतिक  
परिधनी सुखसार।  
अक्षर सँ मधु धार दैत  
पोथक शीलकलाकारी,  
पृथ्वी मे अयतीन भेल छी,  
नाम अहिं अछि नारी।

अपनी नोर बहीने ओकर कोन उपकार भऽ जैतक?

किंतु दुःख बाँटि लिएक तखन ने।

कविजी भाषादेश मे आगि बाजलस लगलाह - ओ केवल दयाक पात्र नहि,  
अपेक्षु श्रद्धाक पात्र थिक। अहा!

हे हे मजूर! हे हे मजूर!  
छी अहाँ तपस्वी कमेश्वर  
वैभव दिलास सौ परम दूर,  
अदिराम श्रान्ति सौ घूर-घूर।  
हे जन! श्रमजीवी! मुनि समान।  
छी अलि सठिण्णु कर्मठ मजान,  
सन्तुष्ट, जितेन्द्रिय, धैर्यवान,  
ह्लासी, उपकारी, गुणनिधान।  
उपजाबी शस्य, अन्नदाता।  
जे अहाँ सक्ता लोकक नाता।  
निःसीम कष्ट सहि करी काज,  
ताही सौ जीवित अछि समाज।  
के अहाँ सदृश छथि वीर अन्द!  
हे बोगिराज! छी धन्य-धन्य।

पुन पत्नी कै अविचलित देखि बजलाह - शोभा! अहाँ एखन धरि पूर्णतः  
प्रभावित नहि भेलहुं। महि त अन्तिम पक्षि सुनैत देरी दुनु हाथ जोड़ा जाइत।

पत्नी रांकुधित होइन कठलधिन - ओ वास्तव मे महुआ थिक, प्रणाम करवा  
योग्य। किन्तु और लोक बुझक तखन ने?

कविजी उन्मत्त होइत बजलाह - आब पूँजीपतिक अत्याचार बेसी दिन धरि  
नहि छलन्हि। क्रान्तिक विरफोट हेब अवश्यभावी अछि।

हे वीर! हलायुध! धल खड्ग,  
शोभित, उरपीड़ित श्रमिक कर्म।  
जागू जागू हुंकार भर,  
मददगसदेश प्रचार कर,  
थिक विजय शस्त्र हाँसू अहाँक,  
प्रतिपूर्ति हथौड़ी थिक नदक।  
क्रान्तिक बनि जाऊ अपद्रुत,  
छी अहाँ वीर राष्ट्रक सपूत।  
जागू मजूर! किंतु कर बोध,  
अन्यायी सौ ठानू विरोध

आर्थिक दैन्यक अन्त कर,  
जनता मे साम्यक भाव भर।  
पूँजीपति जे शोषण करैछ,  
स्वस्य अहाँ सभ कै हारैछ,  
तकरा विरुद्ध रण ठानि दिवस,  
निज न्यायेचित अधिकार लियस।  
हे श्रमिक! आब हुंकार भर,  
अत्याचारक प्रतिकार कर,  
वास्तव शृंखला तोड़ि दिवस,  
रवायी यगेक संहार कर।

कविजी एही प्रवाह मे बसैत छलाह कि इत्याह अन्वि कऽ गर्द चैतन्यक  
मलिक पनविदाइ छाड़ी।

कविजी विचारा कऽ बजलाह - ई कर्म सँ अथि कऽ सुआर जकाँ चिदिमाय  
लागल। राभ प्रवाहे नष्ट कऽ देखक 'नाउ किंतु दऽ कऽ जन्मी एकरा हटाउ।

किंतु कलाक उपरान्त पत्नी प्रत्यागत भेलथिन। कठलधिन - एए मुठ्ठी मक्खन  
दैत छलियेक से नहि लेलक।

कविजी बजलाह - तखन की लेत? मेवा? रड़पनी करैत अछि?

पत्नी - एक बजे हर जोति कऽ आएल अछि, पिधारे लकलोट छल। किंतु  
छा कऽ पानि पीयक हेनु मज्जक। किन्तु घर मे और किंतु त छल नहि जे दितियेक।

कवि - नीक चैलहुं। एकटा ल' कै जतेक बेसी जादर करदिय, ततेक माय  
पर चढ़ल जाय।

पत्नी - परन्तु ओकर सुझाएल मुँह देखि कऽ हमरा दया लागि गेल। मेयक  
हलुआ जे छलैक से ओकरा दऽ देखियेक।

कवि - अहाँ पागत त ने भऽ गेलहुं? बनर कि जानय गेल आदक स्वाद।  
ओ एगार हलुआ की वृक्षता? ओ त केवल रेर-परेगि बुलैत अछि। फेनफानि कऽ भरि  
पेट दूरत ताक्य। ओहि श्रद्धा कै मेवा खैयक मुँह छैक?

पत्नी - ओकरा एखन रुपयेक काज छैक। पाँच टा मडैल अछि। घर मे घेरा  
दुखित छैक। कडैल अछि जे दू-चादि दिन काज करय नहि आएय।

कवि - देखू त पार्श्वक डल। ताक पर ऐसी नहि करत और पछिला रुपैया  
लऽ लेत। शूटमूठ लाय कऽ कऽ टकय चाहैत अछि। देखय, बरमाश कै एको  
छोड़ी नहि देब।

पत्नी - परन्तु हमरा त लाय जकाँ नहि भुँसि पड़ल। पाँच टा रुपैया ओकरा  
दऽ देखियेक। केन ठेकान यदि वास्तव मे भेना दुखित होइक तखन केन उपाय

करते? और ओकर जे कमाएत पैस से पाऊव त उचिने पैस।

कवि - आज हम की कहूँ? एहने दुारे अरु रहत लगन अहाँक जे धरत पाओं से दोसर ठिक कऽ लऽ जाएत खैर, भव दिवऽ ओ कविन अइ पठा देवाक अछि। हैं, सुनू त केउन लगैत अछि।

हे हे मजूर! हे हे मजूर  
जीवन अहाँक अछि घूर-घूर।  
थिक होक समाजक केउन धूर?  
अन्यायी, सोभी, स्वाधेश्वर!  
जोतैत अहाँ छी घूर-घूर,  
ओ तदपि कहै अछि दूर-घूर।  
लखि दुःख उठै अछि हृदय धूर।  
भव नयन जाइत अछि अश्रुधूर।

राति मे 'अंचल' जी कविता रामदास कद पर मे तूलत रहकि कि, बाहर सँ केलाइ पर टक् टक् शब्द बूझि पड़लैन्ह। पत्नी केँ उठवैत धजलन्ह - शोभा! घोर आवि गेल। आज उठू। साहस देखाउ।

शोभा अँखि मिडित कहलथिन्ह - हमरा की करव करैत छी?

कवि - अहाँ वीर महिला! अहाँ केलाइ जेलि कऽ जाए और घेर घेर हाकू जे हो सकत उछा छोड़ैने आउ।

सायत पुन टक् टक् होवय लागल। कविजीक छाती धड़कय लगलैन्ह। पत्नी केँ प्रोत्साहित करैत बजलन्ह - देखू अहाँक धहिन अहलपकड़, दुगोबड़, सस्त्रीबाइ इत्यादि केउन वीराइना भऽ गेलि छथि, हुनकर सभक चारित्र्य स्मरण करू।

पुन पत्नी केँ धकमकाइत देखि धजलन्ह - शोभा! अहाँ कुटित कियेक भेल छी? नारी त शक्तिरूपा होइत छथि। अहाँ अति धारिणी दुनो जहाँ आ कऽ महिलासुर मर्दन करू। लावत हम अहाँक विजयक प्रार्थना करैत छी। हमर धंडी-स्तवन मन धड़ि लिपऽ -

अयि! प्रचंड छहिके!  
कराल छद्म धारिणी,  
असंख्य सैन्य भदिनी,  
विपक्ष नाश कारिणी,  
अपार शक्ति संयुता  
भदान्ध दर्प धारिणी

भयंकर दण्ड दाविनी,  
अदम्य दुष्ट धारिणी!

लावत दरवाजा पर और जोर सँ धक्का देलकैन्ह। कातर स्वर मे बजलन्ह - शोभा! शत्रु दुनो पर आवि गेल। आज आन्तरिक कण्ठक सम्म नहि अछि। अहाँ बहू। ऐं! एखन घरे अहाँक बाहु नहि फड़कैत अछि। मुख्यमन्त्र मे अहाँक तातो नहि आएल अछि। बेश, त हम झोलीक रानीवत कविला सुन देत छी -

घोडा पर फामि चढ़ि गेली, तानि छानी, केश  
राशे केँ लपेटि औ समेटि निज राइती ओ।  
एक हाथ कप्री तीक्ष्ण, दोसर मे तरुआरि,  
दाँत सौ लयाप धैने बैलनहि सवारी ओ।  
बाहु बल भेदि भेदि, हण्ड मुण्ड छेदि छेदि,  
बल्लही बहैत शक्तिरूपा अकाली ओ।  
एक बाण भाल बीच, दुइ बाण छाती बीच,  
शोभित अछा हाँ छली शन्य वीर नारी ओ।

अई केसरिया रंगक लट्ठी पहिरि शत्रुक शोषि। सँ भाल मे बिंदी लगौने आउ।

कामिनी उठि लिज भोलीह। किन्तु दुइए एक हेम चन्नाक बाद फिर ऐलीह - नहि ऐं! हमरा डर होइत अछि। केउन टोकन की कऽ देख्य!

अवि - शोभा! अहाँ दिवदिनी भऽ कऽ आउ, सायन अहाँक स्मारक मे वीराइना विजय नम्रक अमर काव्य-रचना कऽ देख।

शोभा - परन्तु यदि कदचित ओकरे विजय भऽ गेलैक तखन की करव? अहाँ पुरुष छी। अपने बियेक नहि जगता छी?

कविनी आकाश पर सँ खगैत बजलन्ह - ऐं! अहाँ केँ हमरा प्राणक मोह नहि अछि। तखन अहाँ मे नारी हृदय नहि अछि। देखू, एक स्त्री राखित्री एहन छलीह जे यमराजक मुँह सँ पति केँ खीसि कऽ लऽ ऐलीह। और एक स्त्री अहाँ छी जे जानि झुझि कऽ हमरा यमराजक मुँह मे पठा रहल छी। देश, त हम जाइ छी मृत्युक आसिगल करय। किन्तु पाओं कऽ हमरा दोष नहि देख।

ई कहि कविनी केलाइ लग गेलन्ह कि ओ जोर सँ भाइभइ उठल। कविजी उनटे पैर बापरा आवि पत्नी केँ कहलथिन्ह - देखू एकटा बात कहय छुटि गेल, तै फिर आएल छी। अहाँक वैधव्य दोषक कमज दृश्य हमरा नेत्र मे नहि उठल अछि ओ देखवाक हेतु हम कोर त आएव नहि। अमरव अहाँ ऐखन घुड़ी-सिद्धर हटा कऽ एक झलक देखा दियऽ। हैं, एक बात और। पुन हमरा अहाँक मिलन त हैत नहि, अतएव अन्तिम विदा-गान सुनि लिपऽ -

प्रिये! हम चाहत छी अछि घर।  
जतय जय केओ पुरि नै अछि अछि कहियो कहि किनार।  
हमू अगब अपराध हमर सभ, अछि सुदैत संसार।  
पुनि नहि मित्रन छैत एहि तन मे नहि पुनि ई व्यथार।  
अन्तिम दुवन दिव हृदयेश्वारे अन्तिम स्नेहक घर

सावत दरवाना पुन जेर सँ बकबक उठल। पत्नी कहलथिन्ह - देवा, त  
अहाँ रह। हमही अज्ञ छी। अहाँ कै दादी मोउ नहिए अछि। तँ जहाँ केश रखनहि  
छी। हमरबला साड़ी चुड़ी पहिने लिपट, केओ पुरुष नहि वृद्धत। लाउ, अपन  
बला धेपी दिअऽ।

कविजी बगलाह - आज हा ई केहन सुन्दर कटास भेल अछि। समय रहैत  
त पुरस्कार दिअई, परन्तु शोभा! यदि ओ अहाँ कै नेने-देने चलि गेल तखन हम की  
करब? सभ लोक कहल जे 'अचल जी अचल तर नुका रहल' और अछिछि सोझ  
अचलक धन सूरि कऽ सऽ गेलैन्ह।

पत्नी कहलथिन्ह - तखन अझी जाउ

कविजी विचारि कऽ बगलाह - प्रिये हमरा नेने अहाँ विधवा भऽ जाएव और  
अहाँक नेने हम अनाथ भऽ जायव। अतएव एक घण काल जे दुनू गेटा संगे  
मिलि कऽ चलू।

सभ पावनि संग मिलि कर कैतहुँ,  
सुख-दुख भोगल संगे।  
अन्तिम शवनि मरणक आएल,  
किए करब प्रतमी?

अचल जी नेओतल छामर जहाँ पत्नीक पाछो-पाछो चलताह। कविनी सहस्र  
कर केपाउ फोतनहि केबाह फुलैत देरी एक बिलाड़ि छड़िपि कऽ पड़ल।

'अचल' जी चेहरा रहिये। पत्नी कहलथिन्ह - ओहि फेसू, डाकू नहि अछि।  
दिसाइ छल।

'अचल' जीक योगता आज प्रकट भेल। बगलाह - ई अहाँ की कहै छी? हाकू  
जगर आएल छल। किन्तु वीर राक ओजखी कहि सनि कऽ पड़ गेल। अफसोस।  
अहाँक रक्षक छानिअ आइ श्रेष्ठतक धार एहिदाम बहि जाइत। किन्तु कापर शत्रु  
शब्दे सुनि कऽ एक्के सँ भागि गेल।

दोसर दिन सम्बन्धकाल 'अचल' जी कै जाग्रत महिला मंडल सँ एक पत्र  
भेटलैन्ह। 'नव-नारी' क सम्पादिका लिखने छलथिन्ह - आधुनिक नारी सर्वथा  
बन्धनमुक्त भऽ कऽ रहब चाहैत अछि। ओ भवन सर्वाधिकार केनो एक पुरुषक हाथे

धेँचे देव व्यक्तित्वक अपमान वृद्धैत अछि। पैत स्थानान्तरण आदरी स्वाभाविक तथा  
वांछनीय थिक एहि सिद्धान्तक प्रावधान करब हेतु हमरा लोकनि एक क्रांतिकारी  
कार्य प्रकाशित करब चाहैत छी। ई अहाँ सन प्रगतिशील कविछि लेखनी सँ भऽ  
सकैछ। युवती मात्रक हृदय मे जे प्रगुप्त अस्वाभाविक रहैत छैक, स्वाभाविक उद्घाटन पवि  
ओ जेना जगजित भऽ उदैत छैक और उद्घाटन वागमयक स्वाभाविक प्रवाह अछि तखे  
कृत्रिम नियन्त्रणक शृङ्खला कै तोड़ि कऽ भ्रमरा दैत छैक, तकर सफल चित्राकन  
होयक चाही। प्रकृतिरूपा नारी जीवनक घंचल जग मे जे किछु करैत अछि और  
रहस्यक आदरण मे निहित रहने रहैत अछि तकर स्पष्ट एवं सजीव चित्रण करैत  
सुखात्मक मनोभावक विश्लेषण करब अहाँ सन प्रतिभायान साथ सिद्धमस्त कलाकारक  
कार्य थिक। हमरा लोकनि आशा करैत छी जे 'महिला-मंडल' कै अहाँक सहयोग प्राप्त  
हैतैक। महत्तम आभार श्रीमती प्रमदा देवी एहि रचनाक निधिन एक हजार टाका धरि  
पुरस्कार देबक हेतु तैयार छथि।

पत्र पढ़ैत 'अचल' जी छलि उठल। हुनक कल्पना समुद्र मे लहरि अबि  
गेलैन्ह। पेंसिल कागज सय पुनपुन लगलाह -

हे प्रगतिशील महिला समज!  
जग मे स्वतंत्र भय करू राज।  
प्राचीन रुढ़ि कै तोड़ि आज,  
कय दूर धाय, संकोच, राज,  
आधुनिक युगक सय सज-पाज,  
सीखू पुरुषोचित सकल काज।  
ठाँकू मोटर, सार्द्धित बलाउ,  
एरोप्लेनक धक्का घुमाउ,  
घुड़ी कंठक कर सँ उतारि,  
बंदूक हाथ मे लियऽ नारि।

थिक पुरुष प्रसिद्धिन्दी अहाँक  
उर ओकर विद्याल फेक-फेक।  
शत्रुक हल मे निर्भय विचल,  
निश्चक रेल मे सफर कल।  
होटल मे जा एकसरि ठहरू,  
एकसरि प्रदर्शनी सैर कल।  
देखबैत घलू उन्मुक्त रूप,  
भृंगार, घेरा, फैशन, अंगूष,  
वैद्यन-शोभा प्रकटयू खुब,



तो सकल शत्रुदल ऊबड़ूव,  
परि जाय पुरुष पापी सिद्धाय,  
छटपटा उठय कहि हाम ह्राय।  
गर्वित, उन्नत अंचल संचरि,  
तोउ विश्वविजयिनी अहाँ नरारे!

पुरुषक आगौ नहि होउ बीन,  
दासी न बनू कंकरो अपीन,  
वैदाहिक बंधन धिक फलक,  
विचारक घाडी जग में अशक।  
घेतन जग में स्वच्छन्द कृति।  
धिक एक मात्र जीवनक भित्ति।  
सभ जीव जन्तु विहरय स्वातंत्र,  
धिक आनन्दक मूलमंत्र।  
धिक विश्वव्यापी दिवस यह  
व्यभिचार कड़ावय फलतु सैह।  
दास्य धोर धिक पतिव्रत्य,  
सभ मनमग्नता बंधन असत्य।  
आदर्श स्त्रीत्वक धिक कल्पित,  
स्वाधी बंधक पुरुषक निर्मित,  
जीवन-विज्ञानक अति विरुद्ध,  
धौवन-प्रवाह कय दैठ रुद्ध।  
ठानू एकरा सँ घोर मुद्ध,  
बनि जाउ अबाधित प्रकृति शुद्ध।  
अपवाद धीक दान्पत्य धर्म,  
झूठी सक्ते व्यभिचार कर्म।

सभ कृत्रिम बंधन दूर करू,  
स्वाधीक गर्व केँ दूर करू।

सभ कुसंस्कार केँ धोड़ि धाड़ि  
सामाजिक बन्धन तोड़ि ताड़ि,  
रुढ़िक पुरान धट फोड़ि फाड़ि,  
कल्पिक झंझा फहराउ नारि।

हे प्रगतिशील महिला समाज!  
गतिहीन पुरुष पर कस रहल!

कामिनी दपी आधि कय पुठलरोल - ती? फेर कोनो अद्विग दनि रहल ऐक  
की? कविजी भयभीत भऽ बजलल - अहाँ सुनैत त नहि छलहुँ?  
कामिनी सुनैत ने छलहुँ त की?

सभ कृत्रिम बंधन दूर करू  
स्वाधीक गर्व केँ दूर करू

कनेक दियऽ त, देखिऔक।

कार्देर कावना नृकथेन कहनधिर - अरे अरे! अहाँ कोन नेदय्य मे ठाडि  
भऽ कऽ सुनैत छलहुँ? हे कावना अहाँक दयाया दोग्य नहि अछि।

तखन कामिनी जागे इधरि कऽ पड़ा गेलीन्ह कहिनी कुनधा पाछे घुरलन्ह  
- 'शेभा शाभा' ओ कापी लऽ, ओहि मे बहुत धान निखल छैक जे अहाँक एड़  
योग्य नहि अछि। शोभा -

परन्तु शोभा जे लव तऽ कऽ पड़ैलीन्ह से फेर कियेक धराइ देधिन्ह?

पूर्णमास रात्रि 'शेभा' स्नान कय अपन शृंगार करैत छलीन्ह। 'अंचल जी  
दुपचाप टाँड भय एकटक निहारय लगलीन्ह। अनायास मुँड सँ बिटाननिक पद  
बहरा गेलैन्ह -

बदन चरघु पचोपर रे, मृम गल मुलाहार

भरम भरल जनु शकर रे, सुरसरि जलधारा।

शेभा चेहा कऽ लप्य लगलीन्ह। फूल केँ केशव विरु लट आगौ मे अछि  
गेलैन्ह। लपल जी कहनधिर - अहाँ! एखन अहाँक शेभा केहन लगीत अछि?  
महाकविक शब्द मे -

कुचपुग परसि छिचुर फुज पसारल,

तैं अरुझारल शारा।

जनि सुमेरु ऊपर मिलि जगल

धौद विस्तिन सभ तारा।

शेभा संकुचित भय ओँचर सम्हारैत पुछलधिन्ह - अहाँक अभिप्राय की  
अछि, से कहू।

अंचल जी कहलधिन्ह - एखन दूधक बच्चा भऽ रहल अछि। फुलवारी मे  
झू। ओहिठाम अहाँ केँ बैसा कय चन्द्रमा सँ मिलान करय।

ठंडाठंडा इजोरिया मे एखना घूलाहारा पर बैसि कविजी फूल सँ पत्तीक शृंगार  
करय लगलन्ह। ओषाक बाँध फूलाव छौंसि दलधिन्ह। फल मे लकड़वरक कली। घाँसी  
पर बेलाक गजरा। सखन गुनगुनाय लगलन्ह -

जनम अवाधि हम रूप निहारल, नयन न निरपित भेल।

हाथ हाथ! अग्रे के जे घेर देखैत छी तै घेर नवीन सौन्दर्य देखय मे अवैत अछि।  
प्रतिफल जूनीन प्रेमक उदय होइत अछि।

सेहो प्रीति अनुराग बाञ्छनिध, तिल-तिल नूतन होय।

एहि रूप पर के ने बिका जाएत? लाखो छून एहि पर मरक भऽ सकैत।

अचल जी कानिनीक दुलार करैत कहलथिन्ह - देखू, हम एक एतन  
मङ्गलाय निश्चय चाहैत छी जे साहित्य-संसार मे अमर कीर्ति हो। ओ अनुपम वस्तु  
भऽ सकैत अछि यदि अहाँ हृदय खोलि कऽ हमर सहायता करी। ओहि खातिर एक  
हजार पुरस्कार भेटि रहल अछि। परन्तु तकर प्रदिर् अहाँक हृदय मे अछि।

कानिनी लज्जत कहलथिन्ह - हम कभी प्रेम्ह छी जे अहाँक सहायता करव?

अचल जी उत्सुक दैत कहलथिन्ह - अहाँ एहि विषय मे जेन्त सहायता  
कऽ सकैत छी ततेक दोसर केओ नहि। देखू, अहाँक पुत सन स्वयंसेवक पर जातख्य  
अनर लुब्ध भेल छैत। अहाँ अपन सभ दा पुत रहस्य हमरा कहि दिअ। ओही आधार  
पर हम 'रमणी-रहस्य' नामक काव्य प्रस्तुत करव।

कानिनी मुसकुराइत बजलीड - अपन सभटा पुत रहस्य कहि देय त अहाँ  
केर एतेक मानव?

अचल जी उत्सहित भव बजलाड - एहू सँ वेशी मानव। देखू, आयुनिक  
पति-पत्नी मे मित्रताक भाव रहैत छैक। हम जे-जे कैने छी ते अहाँ के कहि दी। अहाँ  
जे सभ कैने होइ से हमरा कहि दी।

कानिनी कहलथिन्ह - तखन एहिने अहाँ शुरू करत।

अचल जी - बेल, त सुनू। हम प्रत्येक राणी के प्रेमिका रूप मे देखैत छी।  
ई संसार एक विशाल समुद्र छि, जहाँ - 'मधुर सुखति जन सग, मधुर-मधुर रस रा।'

कानिनी टोबैत कहलथिन्ह - किन्तु अहाँ अपन 'मातृदत्त' कविता मे त  
नारीमात्र के 'माता' कहि कऽ सम्बोधन कैने छिरेक?

कवि - हैं। किन्तु ओ त अनका दुईदाक हेतु छैक। यथार्थत तीन प्रकारक  
भाव स्त्री के देखि कऽ उदित होइत छैक। बूढ़ा मे मातृभाव, बालिका मे कन्या भाव,  
और युवती मे पत्नी-भाव। पैह स्वाभाविक दियैक।

पत्नी - अनकर युवती स्त्री के देखि कऽ दृष्टिक माय कियेक नहि  
उत्पन्न होइत अछि?

कवि - संसार मे सभक सार बनक हेतु हम जन्य नहि नेने छी। ताहि सँ  
कह अहाँ सभ सँ दृष्टिक जोड़ जे सभ सुन्दरी हमर एगि भऽ जायि। अथवा पुरुष  
सभ सँ भाइक सम्बन्ध राखू त सभक स्त्री के हम सरहोजि रूप मे देखैत।

पत्नी - और यदि आनो पुरुष एहिना विचारय, तखन त हमरू सभक  
तरहेंजि बनि जैवैक। ओहना स्थिति मे सभ केओ हमर नदोस भऽ जायत।

कविजी दुलार सँ पत्नीक मन तिरैत बजलाड - अहाँ वेश धनुरा छी। धुना  
फेरा कऽ हमर एगि पड़ा देखु। वेश ई सभ त हरा-परिहास भेल। अब  
कामेक गप होए।

कानिनी गंभीर भऽ कऽ कहलथिन्ह - की पुछाक अछि, से पूछू।

कविजी पत्नीक कमल हाथ अपना हाथ मे लेन बलाड - देखू, निम्न कोटिक  
स्त्री-पुरुष लज्जा वा भद्र सँ अपन-अपन पुत रहस्य एक दोसरा पर प्रकट नहि करैत  
अछि। आजीवन छपेने रहि जाइत अछि। परन्तु जहाँ आग्रह दिशाय नहि तहाँ  
प्रेम की? सम्बन्ध सम्बन्ध त अकेरा करी जहाँ अन्त करण एक हो। पति-पत्नीक  
हृदय मे भेदे की?

ई कवि अचल जी अपना पत्नी के छापी मे सटा लेलथिन्ह। कानिनीक हृदयक  
स्पन्दन हुनका नीक जहाँ अनुभव होमय लगलथिन्ह। बजलाड - जहिना दुनू हृदयक  
बाह्यस्व मिलि कय एकाकार भऽ गेल अछि तहिना आभ्यन्तरिको एक भऽ जैयक  
थाही अहाँ अपन सम्पूर्ण हृदय हमरा हृदय मे उझेलि दिअ।

कानिनी सरलताक अभिनय करैत कहलथिन्ह - केन तरहे उझेलि दिअ?  
महाँ अपने भीतर पैसि कऽ काहि लिअ।

कवि - वेश, त हम कहैत छी। अहाँ किछु छपाय त नहि?

कानिनी - अपना जनैत त नहि छपाय।

अचल जी कानिनी के कोठ मे बैसा हुनक अनचल रूपक शोभा देखैत  
बजलाड - देखू मधुर रसाल फल देखि भाँति-भाँतिक पत्ती ओहि पर पहुँचि जाइत  
छैक। मधुर मकरंद पान करक हेतु रसालोभी मधुप त सभ टाप मड़राइते रहैत अछि।  
कोनो फूल एहन नहि जकरा भौरा नहि सुँघने हो। अहाँ के देखि कऽ कतेक सोभाएल  
हैत। दीप-शिखा पर अमल पतांग आवि कऽ जाँरि मरैत अछि।

कानिनी अपना प्रशंसा पर मुसकुराइत बजलीड - त एहि मे दीपक केन  
अपराध? यदि हमरा देखि कऽ केओ मरऽ लाग्य त हमर कोन दोष?

कवि - दोष पैह जे अहाँ मे एतेक गुण कियेक भेल? और यदि भेल त याचक  
केँ दान कियेक नहि कैल?

कानिनी - यदि पछिनिह सँ दान करय लगितहुँ त अहाँक हेतु सखित  
कोन रहैत?

कवि - तखन आइ धरि अहाँ कहियो सदावर्तक पुण्य नहि लुटलहुँ।

कानिनी - नहि।

कविजीक उत्साह मंद पडि गेलथिन्ह। बजलाड - अहाँ केँ एखन धरि हमरा  
ऊपर पूर्ण विश्वास नहि भेल अछि। हम धरि युगक पुरुष नहि छी जे अपना स्त्रीक

मूल चरित्र जान कोय वा इच्छा करव आधुनिक स्वामी तेहन उदात्त होइन अछि जे स्वयं प्रत्येक स्वच्छन्दता आनन्द स्वयं प्रणीत होइन छैक अहाँ कोना बातक भय त समोच नाइ करि जखनक अवगणन हए फइ अपन सभ ता सुत युक्त कहि दियइ।

कागिनी कहलथिन्ह - हयग अहाँ जहाँ ओनेक भूमिका दहि कइ बजव नहि अवैत अछि। सेल-रोड बात पूछ और जवाब लियइ।

कवि - वेश त लोभे पड़ैत छी। अहाँक शरीर कै परापूर्वक स्पर्श भेल अछि कि नहि?

कागिनी - स्मरण त नहि भइ रहल अछि।

कवि - एहन हम मानिए जे स्मरण छी। कहियो ने कहियो अवश्य भेल हैत। जूब मन पाछि कइ देखि लियइ।

कागिनी मन पादय लगनीह और 'अंचल' जीक हृदय धड़कव लगलैह। सजाइत बजलीह - हैं, एकटा त मन बँडैत अछि।

कविजी निषन्द भइ उठलाह तथहि उलाह बहवैत कहलथिन्ह - देखू एको रती छपाएव नहि अहाँ हमर प्रण छी। सभ ता कहि दियइ।

इ कहैत कविजी कविनीक अनुचित केश सोडरावय लगलथिन्ह। मनहि मन सोचय लगलाह - एहन सौन्दर्य मे विष भरल! हाय रे नागिनी!

कागिनी बजलीह - ओ हमरा बह मानैत छल। प्राणो सँ बहि कइ।

कविजी उठनि उठलाह - ऐ हमरो सँ वशी? ओ निश्चय नभइ छल। धूर्त, बंधक!

कविनी चुप भइ रहलीह बजलीह अहाँ कै एसाधे मे लेसि देलक। आव आगौ नहि कइव।

'अंचल' जी विडम्बित होइ लगलाह - प्राण हमरा कहने जाइ। आव हमरा एको रती क्षेम नहि हैत। हैं, तयन की भेलैक?

कविनी - ओ हमरा छानिद बहुतो वस्तु अनेन छल। कइवा, गादुन तेल.....

कविजी उगेजिन होइ लगलाह - हम बूझि गेलहुँ। ओ समद! अहाँ कै रिझायक हेतु तबै छल। सुच्या, पाजी, बयमाया!

कविनी बजलीह - अहाँ कै तुरन्त क्रोध भइ जाइत अछि। आव नहि कइव।

कविजी पुन पोलावय लगलथिन्ह - ब्राम्हिणी! हमरो शपथ अछि। सभ ता कहने जाइ। ओ अहाँ कै की सभ दैत छल? सेल लवैत छल त अहाँ केँरि किनेक नहि दैत छलियेक?

कविनी - ओ साधने नहि छल। अपने हाथ सँ लगाइयो दैत छल।

कविजी जी पचास कइ गेने गेलस रनेबाह आ अहाँ छानिद विडम्बितो लवैत छल होइत।

कागिनी - अहाँक अनुभव ठीक भइ। ओ मुँह क अँधाराओ दैत छल।

कविजी मुँह धिपण भइ गेलैह। केतु घबड़ाइत बजलाह - तखन ओ निश्चय अहाँक पुंवो केने हैत।

कविनी दाह तजा गेलैह।

कविजी कहलथिन्ह - बाजू बाजू सजाव नहि।

कविनी उत्तर दलथिन्ह - जखन अहाँ बुझए गेलहुँ त कहूँ की?

कविजी उपरक मन सँ प्रसन्न होइत बजलाह - भावता! एहन साहस घड़ी।

अहाँ अइशे पत्नी छी एहिना राभट कबैत जाइ ओ कोन टाम चुनन लैत छल?

कविनी किनु संयुचन हाइत बजलीह - ओना त कनको टाम। केनु अधिकतर गल पर और डोर मे।

कविजी कविनीक मधुमय अंधार देखि रोवय लगलाह - एहन सुन्दर अमृताक प्यासी मे हालाइल विष भरल! हाय रे मायाविनी!

पुन जी जति कइ पुछलथिन्ह - अहाँ न ओकरा स्नेहक प्रीतिन दिने छल हैवैक?

कविनी विहुरि उठलीह। दलाकटा सँ धिजली चम्कि उठलीह। दजलैह - ओ सभ बात की आव मन अछि? हैं, एक बेर हम ओकरा गल म दौत कहि नेने रहियेक से बहुत दिन धरि चिह्न बनल रहलैक।

कविजीक मर्मस्थान मे 'दोस' मरि दललैह। ओ एक सूक्ष्म व्यथक अनुभव करय लगलाह।

कविनी हुनकर प्रणेभव चुझि पुछलथिन्ह - की सोवैत छी। यदि ई सभ सुनि कय दुख होइत हो त हम नहि कही।

'अंचल' जी अपना कै सम्भारैत बजलाह - येह सभ त हम सुनय चाहैत छलहुँ और येह सभ ता घटना त जीवक रस छैक। हमहुँ अपन अनुभव सुनावय लागय त पोछ तैयार भइ जाएन। किनु संधारण स्त्री-पुरुष कै एतवा साइस कहाँ होइत छैक से पाछे तरहे हृदय फोला। अहाँ सभ स्पष्टहृदया स्त्री साख मे गेटेक बहराय त बहराय। शोभा! अहाँ कय छी।

परन्तु भीतरे-भीतर एक नवीन दिना 'अंचल' जी कै सावय लगलैह। ओकरा नैक दवायक दल करथि तनेक बड़ले जाइत। अन्त मे नहि रहि भेलैह ओ अपन



उच्छ्वासपूर्ण हृदय के एक हाथ से दाहिने पुच्छलधन्व - शोभा! एक दाहिने पुच्छल धी, रो छपाएथ नहीं। देखू, इ प्रश्न करैत किन्तु संकोच होइत अछि। किन्तु हमरा अहाँ मे भेदे की? अहाँक आँहि भाव पर देताक गजरा छुनि रहल अछि रो त ओकरा हृदय मे नहि पड़ल हैतैक?

कामिनी दह धुप रहि गेलीह।

कविजी गजरा हाथ मे लैत दहलाह - देखू उपाउ नहि, नहि त हमर हृदय दू धरम भऽ जरत।

कामिनी - अहाँ सँ हम किछु टा नहि छपय। ओ अवश्य देह-हाथ धऽ कऽ दुतार करैत छल। हमहूँ कहियो रोकि नहि छलियेक।

'अच्छल' जी एहन निंदय आवाज नहि सहन कर सकलाह। ओ वच्चा जकाँ कामिनीक दह स्थल मे सन्निधा कऽ रिसकय लगलाह। पत्नी कोमल आँधुर सँ हुनका अशान्त मरलक पर हाथ फेरय लगलधिन। परन्तु शोभाक आँधुर हुनका बिछू जकाँ हँक मारय लगलैन्ह। देलाक गजरा साँप जकाँ डँसय लगलैन्ह। जे वस्तु पहिने अमृतवक्त्र जकाँ शीतलता प्रदान करैत छलैन्ह से विनकुम्भ जकाँ दाह उत्पन्न करय लगलैन्ह।

आब कविजीक मानस मे एक अन्तिम सन्देह दिक्कल रूप धारण कऽ उठलैन्ह। हुनका मस्तिष्क मे ज्वालामुखी भभकय लगलैन्ह ओ फुलवारी मे टहलय लगलाह। किन्तु शान्ति नहि भेटलैन्ह। माथ मे जतेक अधिक शीतल सुगन्ध समीर लागैन्ह ततेक अधिक ओ धीपल तावा बनल जाइन्ह।

आँधुर 'अच्छल' जी घर मे गेलह और कोनो वस्तु धोती तार नुकीने ऐलाह। पत्नी पूर्ववत् निर्विकार बैसल छलधिन।

'अच्छल' जी अपना छाती पर पायर राखि अन्तिम प्रश्न पुछबाक हेतु तैयार भेलाह। समस्त साहस बढोरि कऽ पुछलधिन - सत्य सत्य कहूँ। अहाँ ओकरा अंक मे कहियो ... शयन ... त नहि ... कैने हैतैक?

कामिनी दह असीम साहस और धैर्यपूर्वक उत्तर देलधिन - भूखि जोना कहूँ अनेको बेर ओकरा कोढ़ मे सुतल हैयेक।

'अच्छल' जी कै जेना किजलीक 'करेट' मारि देलकैन्ह। मस्तिष्क शून्य भऽ गेलैन्ह और दास कात अन्धकार नाचय लगलैन्ह। थोड़ेक कालक हेतु हृदय-यन्त्र धक् दऽ बंद भऽ गेलैन्ह। ओ घुरा बाहर करैत बजलाह - जमैत छी, ई की छैक?

कामिनी कहलधिन - हम पहिनि छी धूँ मे गेल छलहुँ जे अहाँ घुरा लाघय गेल छी।

'अच्छल' जी कामिनीक छाती मे घुराक नोक अहाँ कऽ बजलाह - धरदार जै हमरा सँ एको दास छपैतहुँ। अहाँ के सम टा दास कहय गइल।

इ कहि कविजी घुराक नोक और जोर सँ गड़ा कऽ उत्तरक प्रतीक्षा करय लगलाह।

कामिनी कनेको विचलित नहि भेलीह। शान्त भाव सँ उत्तर देलधिन - अहाँक घुराक हमरा भय नहि अछि। जे सत्य दास छैक से कहय। अहाँ सुनबैत चाई छै त सुनू। ओकरा सँ हमरा कोनो दर्दा नहि छल। हमर कोनो अंग एहन नहि जे ओ नहि देखने हो। ओ राति-दिन हमर पाछे ब्रह्म रहैत छल। और हमहूँ ओकरा पर जान दैत छलियेक। ओकरा बिना एको घड़ी मन नहि लगैत छल। और जहाँ ओ लग मे पहुँचल कि तब दुख विरगि जाइत छल। ओकरा देखिगछि इच्छा होइत छल जे भरी पाँज धऽ कऽ लपटि जाइ। ओहि तरहक प्रेम आँध पछि जोवन मे ककरो सँ नहि भऽ सकैत अछि। ..... अहाँ कै जे करबाक छै से कहूँ।

'अच्छल' जी कै जे सुनबाक छलैन्ह से सुनि चुकलाह। पत्नीक अतीश-गाथा सँ हुनका गुँह पर कलिया पोता गेलैन्ह। समस्त कथित विलाप भऽ गेलैन्ह और प्रकट भऽ उठलैन्ह। ओ उन्मत्त भऽ कऽ कामिनीक टोट वऽ लेलधिन और ओर सँ दबदबा कहलधिन - पापिनी! आब तँ मरऽ लेल तैयार भऽ जो।

इ कहि कामिनी हुनक गरदन रेतक हेतु घुरा बाहर केलैन्ह।

कामिनी मूर्तिवत् अघल रहलीह।

कविजी पुछलधिन - कलकामिनी! मृत्यु सँ पूर्व एक प्रश्नक उत्तर देने जो। ओ के छल?

कामिनी अविचलित रूप सँ बजलीह - ओकर नाम छलीक प्रदन।

कविजी उत्तेजित होइत बजलाह - म द न। ओक। तँ ने? अच्छा, एक बात और। शयन ओ तोरा ओना करैत छलीक त एको रती लग्गाक उदय कियेक नहि होइत छलीक?

कामिनी सहज शान्त स्वर मे बजलीह - ओहि समय लग्गाक उदय छैथ असम्भव छल कियेक त हम पाँचै वर्षक छलहुँ। और मदन खबस अस्सी वर्षक भूइ छल।

कविजीक मुँह सँ बहार भेलैन्ह - ऐ।

कामिनी बजलीह - हँ, ओ हमरा बहू मानैत छल। और हमहूँ दिन-राति ओकरे मे रितिआइल रहैत छलियेक। पैह खोअवैत छल, पियवैत छल, खेतवैत छल,



रानी धल। कहीत धलहुँ त मनवैत धल, कहीत धलहुँ त दुग करीत धल। आर  
मेहरा जहाँ के मनवैत?

कविनी ल-वा न अउक गरी मेवात हुनक धुग धल साथ नीचा सगार  
एकैत। दुगैत धल वगैत - नउत एतक धूग धिरे धलहुँ?

कविनी कहलैत धल - हम एक दान अउ दे धुग नहि कहलहुँ अउ।  
देखाउ जे धन दान कुरी धेक? अउ धुग धनवै। की कहेन अउ?

कविनी कहलैत धल - शोभा ल-वा नहि धनवैत। अहाँ  
एना एकीतहुँ किरक?

कविनी उत्तर देलैत धल - अउक प्रेमक दरीभा जे कइत धल। अहाँ के  
रमणी-धरिबक रहस्य भेटो था नहि किन्तु हमरा न पुराण धरिबक रहस्य भेटे गेल



## भदेशक नमूना

सरस्वती दाइ अचान्त सांस्कारिणी ओ जमत्कारिणी छलीह। दुग ओ रीला पट  
करलैत। वज्रवक्त्र धरिबक लेहन जे अरिबध के 'अरिबधन' करैत छलीह, और  
भोराबही के 'धरिबधन'।

रामनु भगवानो त विधिधर्म धरिबकी छथि। हुनक विवाह भेलैत भदेशक मौजे  
लाल हा सँ जे निहाइ दधिनाइ गृहस्थ छलीह। ताल पर धंध मै नन अलहा  
अजैत। जहाँ सरस्वती दाइ छवि कऽ सजगनि के 'राजधेनि' कहैत छलीह  
जहाँ मौजेनाइ झा 'कदुआ' बजैत छलीह। विवाह कक्ष सहजो प्रयत्न करैत ऊपर हुनका  
गुठ सँ सहजरीषी मन्त्र नहि बहरा सकलैत।

प्रथमे रात्रि सँ सरस्वती दाइ अपना स्वामी के धूसर लगलीह पुछलैत  
की? अहाँ मिथिला भाषा बलि सकैत छी? हमरा सँ गप करत त।

रामनु दीयरक कान रहववाला मौजेनाइ झा पचक्रोशक कन्ना सँ की बलिबिदे?  
हुये रहलीह।

जखन सरस्वती दाइ बहुत दिग धरिबकी त बजलीह - हमरा के जियने कोले  
आएत बैरने न बोलब! हीन एछन्नर बड़े करइ छथ।

सरस्वती दाइ नम्रा कऽ रहि गेलीह। माथ पर बंध दऽ कऽ धरिब रहलीह  
अउ मौजेनाइ धरिब कऽ पृथलैत। पुछलैत - अउ चुप बड़े हो गेलन?  
एना धर रो कटफट करैत रहलन। अउ बोलती काहे धर हो कैतइन?

अहाँ रात्रि सरस्वती दाइ संकल्प कैतलैत जे अजन्म ब्रह्मधारिणी रहथ बरु  
कहुँ किन्तु एहन गम्भार सँ अपना शरीरक स्पर्श नहि होमब देव।

ओ नीचों मे कुशासन बिका कऽ सूति रहलीह।

मौजेनाइ झा पुराइ धरिबकी - ले बलैया! दिन चटइया पर बड़े चल गेलन?  
भदेशक न ओतना सकलीक करे के कौना काम है?

इ कहैत मौजेनाइ झा पहुँचि गेलधरिब। सरस्वती दाइ ओहि मुनि कऽ सूति  
रहलीह।

मौजेनाइ झा पुछलैत - ऊ गोर के अडुरीने की हो गेल है? कैसे कऽ छूटन?

सरस्वती दाइ ओहि धरिबकी कहलैत - रामानुज धन अछि। नीमक तेल  
है।

इ कति सरस्वती दाइ सृनि रहलन्हि परन्तु मीजेलास झा कै छिट नहि पड़लन्हि। ओ आन सोमराक अणक दुध्या द्वारा पुनि करक कहलन्हि। चुपचाप भागसाव य जा मोन नन मनी कऽ मुहो म नन एकर ओर मूलन फलाक दिन पर ओसि देलन्हि। सरस्वती दाइ उल्लासका उठलन्हि, वजलीह - अहाँ हमर कमगुरेयो आइर रपश करवा देने नहि छी। फराक रहू।

मीजेलास झा अग्रिमि मेटत वजलीह - क्यू धन्दा, अपनहीं घेतलन जे नीमक तेल लीला से दूतल। अब हमरा जे उल्लुलु करै छथ। 'नीमक तेल' ऐसन न होइत है, तब जैसन होइत है?

तहिवा सँ मीजेलास झा नाना उपाय कऽ कऽ करि गेलन्हि, किन्तु सरस्वती दाइ रालुलु नाडे भेलन्हि।

साथुरी भेला उमर सरस्वती दाइ अपन टेक नहि छोड़लन्हि। मीजेलास झा कै पृथक् शय्य विधान त पालन नहि छलन्हि, परन्तु एहेना फलाक समीप जैवाक सावत नहि छलन्हि। अभिमानिनी। भाषाक ठो छुपी करवा मे आराम छलन्हि। अनाव लज्जित और पराधीन जहाँ रहने छलन्हि।

तहिवा एक राति मीजेलास झा किछु साहस केलन्हि। पुछलन्हि - अब एकरा केतना रोज चलत। हमरा के की हुकुम मिलैत है?

पावैता फनी उचार देलन्हि - अहाँ पहिने हमरा सँ गप्प करवा योग्य होउ। भविष्य भाषा सीखू।

मीजेलास झा वजलीह - हमरा के जौना वधम पुरसात सँयऽ जे सीखव। एतकरा आ अगदी ठहरल। दिन भर खेती-धारी क धन्दा है, माल-माल है। पोर गट-वाजार है, मापका मोकदमा है। तब थुलो काम चलत।

सरस्वती रघुनंदक कहलन्हि - अहाँ नित्य रति मे दू घंटा कऽ हमरा सँ पढ़त कर।

तहिवा सँ मीजेलास झा अपना पत्नीक विधायी बनि गेलन्हि।

सरस्वती दाइ कहलन्हि - पहिने अहाँ शय्यक शुद्ध उपचारण हमरा सँ सीखू। हमर नाम बाबू त।

मीजेलास झा वजलीह - सरोसती।

सरस्वती दाइ वजलीह - छि। 'सरस्वती' कहू।

मीजेलास झा लाओ प्रयत्न कैला उमर 'सरस्वती' जीके कहे सकलन्हि।

पत्नी भगना करैत कहलन्हि - अहाँ कालेदास बला परि करैत छी। मन मे अबे उठि जे किन्तु की कहूँ जखन एतदा घऽ जएत तखन हम आर्य पढ़ाएव।

सरस्वती देवी सृनि कऽ उपन्यास पढ़य लगलन्हि और मीजेलास झा भरि रति लगेसती 'सरोसती' रहने रहलन्हि।

सरस्वती खिरिआ कऽ वजलीह - 'क्यादास क लेखक के मन की कतिओर? हुनका 'बुद्धिदाइ' त सुझलन्हि, किन्तु एहन एहन भूख मूडराज सभ गहि सुझैत छथि। हमरा त उगट करार पर पड़ल। एहि पा विधायकता केओ नहि।

दोसरा दिन मीजेलास झा वधान गय लगलन्हि त पत्नी कहलन्हि - देखू, आई आइक पावलि हैकैक। पयोस धूध चाही।

मीजेलास झा वजलीह - दूध के कीना क्यो है? अगर आइरा के पाना के हात केडत कऽ दुहा गेल? अच्छा, त सँकरात कौना रोज है?

सरस्वती पचाग देखैत वजलीह - 'सक्रान्ति' कहिओक।

मी - लगलँचो त अब लगवाएले होएत?

सरस्वती कान पुनेत वजलीह - ओह! कत ने जेना गेली दांगे देलहुँ।

'नागपंचमी' बाबू।

मी. - तब आइ अरदरा के पयनी मे की करे के होइत?

रा - खीर-पूरी बनतैक। ब्राह्मण भोजन होयतैक।

मी. - तब केकरा केकरा के मेओसा देये के होइत?

रा - जे विद्वान होयि, गायत्री जपैत होयि।

मी. - विद्वान त एह जयदर मे एगे जगरनाथ ओझ छथ। मगर सरस्वती जध के हाल ...

रा. - राम! राम! शब्द सभ कै एना लहू नहि मारिओक।

मी. - जगरनाथ, हरिचन्द्र, सतलरामन

सरस्वती शुद्ध करैत वजलीह - जगन्नाथ, सरोजचन्द्र, सत्यनारायण।

मी. - छे, एह तीनू के लिग देवइ। मंदिरा मे से बडका-गडका छीय। कठारा निकाल लेव। और धर मे त सब रूठ मीनूदे हवे। घाँउ, रहती के दात

स 'पूत', 'राष्ट्रिक दलि' कहैओक। नरकारी कधीक हैकैक?

मी. - छपर पर कदुआ करत है। यदी मे से अदुआ उखाड़ लेव।

सरस्वती दाइ शुद्ध करैत वजलीह - 'साजयैनि', 'आहु'।

मी. - छे, जेहे। हमरा के एतना जीम ऐंट कऽ योले न अदैए। अब वधानो जाए के बजत हो गेल।

सरस्वती दाइ माथ पर हाथ घऽ कऽ इगय लगलीह - हाथ-हाथ! केहन भारी गमक हाथ मे कम पड़ि गेलहुँ? एहि मूखमडली मे हमर गुण के बूझत?

रति मे सरस्वती देवी अपना स्वामी के खूब गंजन केलन्हि। मीजेलास झा कै लिप्ट गमार, वज्र वनिहार, प्रथंड भट्टियार, निडर गहिषवार आदि नाना उपाय से विभूषित करैत कहलन्हि - अहाँ के हमरा सँ विदाह करवाक कोन अधिकार छल?

मी. - गमक हरही-मुरता सभ अहाँ सँ नीक बजैत अछि। अहाँ के संस्कृतिक लेशपात्र नय नहि छति। साहेब ओ कता सँ कोनो सम्पर्क नहि। भोनु भाव न जामय, पेट

भरान से काम। एको रत्नी लज्जा नहि होइत अछि? साहित्यसंगीत कलाविहीन साक्षर पशु: पुच्छविषाणहीन। इत्यादि, इत्यादि।

शोध और शैक्षणिक क्षेत्रों परस्परती दाइक नेत्र हैं हरद्वार अनुप्रात ओमय लगेलेख।

जखन मौजेलाल झा के सागाटा सुनल भऽ गेलैख त पत्नी के आदरसन देन बजलैख - अच तोर बुझल से कोन कैदा? हीवा खाउ, पीउ, मौज कर। घर चार गो भैस है दही दूध घाउ खुद टेल कऽ खाउ। एमरी छैनी बिकाएत लव निम्नन सारी महनार से लेले आएव। अगर ऊख के घलगी हो गेल तब गहनो बनवा देव दोलू कोन कोन चीजके खानेइ होइभऽ? बाजू, चिन्तैछ, हँसुले, कमरकरत।

सरस्वती दाइ अधिक नहि सुनि सकलैख। कहलैख - हाय हाय कान में चली कियेक भौकैत छी? हमरा एहि सभ बातक कष्ट नहि अछि।

मौजेलाल झा बजलैख - तब कोन बात के रनिश हो? असलीयत में देखू त कुछ बात न हे और अगरचे इहाँ आसनी लक्ष्मीक दुःख त नैहरा खत भेज दिऔन के कुछ रोज के बास्ते रोपसदी करा करके ले जैतग।

स. - अहाँ हमरा हृदयक भाव नहि बूझि सकैत छी।

मौ. - अगर...

स. - फेर अगर! 'यदि' बजैत की होइत अछि?

मौ. - मगर

स. - मगर नहि, 'किन्तु'।

मौ. - उहाँ त हमर जुवाने पकड़ लइ छी, तब हम दोलू केबल कऽ? विधान अडुतिया में...

स. - अडुतिया नहि, 'प्रातःकाल'।

मौ. - अछा, भाइ, सेठे रडो। मगर दालो त सून लिउ। दहे के मतलब ई है जे...

स. - 'कथाक सातपर्य' कहू।

मौ. - बाप रे बापा! अहाँ के नैहरा में एतना 'संस्कीरित' की पढ़ा देलक जे हमरा जान के आफत कैलक।

स. - हे भगवता! अहाँक जिहवा कोन धातु सँ चलल अछि? संस्कृतक ओना सस्वार नहि करिऔक।

मौ. - अच्छा तब मोहनसर में बात ई है जे हमरा के कचहरी में लाट दखिअ करे के है। विधान मुजफ्फरपुर जाए के पड़ल। अगर फाई चीज के जरूरत होय त बोलू जे लेले आएव।

स. - हमरा एक टा गीता छाही। और की कहू? यदि भेटि जाय त एकटा 'भलमानुस' नेने आएव।

मौ. - गीत के चित्र त जौन-जौन रंग के मिलत से हम लेले आएव। गजल, दुमरी, कतरी, लामनी, बरहमास मगर भने आदमी अहाँ के बास्ते हम कहां कहां खोजने भेल कीरय? और जौन बात कहू मगर ई बात - जे हे से - हमरा के बरदायत न हो सकैथऽ।

स. - 'दियाँ बुझलैखि पेयाइजु' 'भलमानुस' उपन्यासक नाम छैक। और गीता में इतरेक छैक गीत नहि। यदि गीते अन्याय हो न दियापत्तिक पदावली नेने आएव।

मौ. - की बोलजी? बिह-पदावली? हमरा के एतना नाँव इयाद रहनाइ मोसकिल है। एकटो पुजी में लिख कऽ हमरा अद्यवाँडी के जेथी में रख दीउ। देखब, कैथी हरफ में लिखब।

मौजेलाल झा मुजफ्फरपुर गेलख त उद्येय मामिला में ओझरा गेलख। दू एक किता मानिआ दावर करवाक रहैख, एक मामिला में पैरवी करवाक रहैख। ताहि सभ में पन्द्रह दिन लागि गेलैख।

सरस्वती दाइ उपासभपूरा पत्र लिखि पड़लैखि साराश ई भे - 'अहाँ कलिदासक अभिरुचित यश जकाँ प्रवासी जाने गेलहुँ। ओ त भला मेत के दूत बन कऽ अपना विरहिणी नायिकाक ओतय पठैलक। किन्तु अहाँ एक टा पत्रो पठाएब आवश्यक नहि बुझैत छी, प्रेमिकपत्तिका गलतकाय व्यथा अहाँ के अनुभव करक छाही। हम एकान्तवासिनी ऐमिमी जकाँ जीवन व्यतीत कय रहल छी। यदि ऐया में विलम्ब हो त कुर्या दू अक्षर लिखियो कऽ पठाउ जे दिगोमनल से दग्ध हृदय के शान्ति भेटय' इत्यादि।

जखन पत्नीक अलंकृत भाषामय पत्र मौजेलाल झा के भेटलैख त ओ घरवा गेलाइ। कियेक त जहाँ सरस्वती, दाइ काव्य रचना करैत छलीइ तहाँ मौजेलाल झा केवल हट्टा धरि पढ़ने छलैख। अतएव ओ दोहस कचहरी में मुन्शीजी से राय-मंशदिरा करय गेलाइ। मुन्शीजी के केवल कचहरीर उद्गु में मोड़ पकल रहैख। प्रेमपत्र पढ़बा वा लिखयक कहियो काज नहि पड़त रहैख। अतएव अहाँ मुश्किल में पड़ि गेलैख। परन्तु फेर त ओ मुन्शीजी रहथि। मजमूनक अन्दाज लगा, जवाबक बालासा मोसबिदा तैयार कऽ देलखिख जकर नकल नीचा देल जाइत अछि -

मनके मौजेलाल झा, बन्द कुंजीलाल झा नेतफा, साकिन मौजे भैसबाड़ा, धाना बरियारपुर प्रगना दिआरा की तरफ से मोतम्मात सरोसती देवी को मुनासिब सलाम भेदनी पहुँचे। छल गुजरिश यह है कि बंद जरूरियात की वजह से मनमुकीर वक्त मुकरीर पर छजिर नहीं हो सका, जिसके लिये फिदवी को निहायत रंज हो अफसोस है।

मुश्फि दोएम के इजलास में तमस्सुक वाला मामला पेश है। तमदी वाला मुकदमा अदमपैरवी से खारिज हो गया और सदरआला साहब के यहाँ सानी तजवीज होने में अभी देर है। इन सब मुतफरकाती कारवाइयो के लिये हम और एक हफ्ते



को मोहना के बिना अपना इस्तमारा करते हैं जो आपके कबूले मजूर करने से शर्माएंगे। समुचित कितरित तीन अक्षर किताबें तीन रूपों में आना में जिसका निम्न एक रूप। धीरे-धीरे आना होता है, आपके दाँते खरीद हुए हैं, जिनकी रक्षा आने पर पेश की जायेगी। और मुकुट में मुकुट का रसमा होना कायदे की बात है। हमारा भी आपके धर्म बहुत नुकसान पड़ रहा है जो इस तहरीर में बर्णन नहीं हो सकता।

आपका शौहर

मौजेसल झा बाक्लम खात।

अधन ई पोटबोर्ड सरस्वती दाइ के पहुँचलैक त हुनका पुन दोसर प्रेमपत्र लिखयक सहरस नहि भेलैक।

मौजेसल झा राम ऐलाह त सरस्वती दाइ अभिरोध करैत कहलथिन्ह - स्त्री के ओहिना छिट्टी लिपिन जाइत छैक? अहाँ मे एको रसी रस नहि अछि। रस-बकरा कहैत छैक से बुझितो छियेक?

मौ - दुन्दरी के भला? रस के मतलब कल्ला न बुझएत? आम के रस, कटहर के रस, ऊख के रस ....

र - दस, धत, रस दियाऽ। अहाँ सोझोझ मोदका अर्थ जनैत छी। लक्षण बजना से कोन सम्पर्क नहि। व्यंग्यक आशय बुझैत छियेक?

मौ - आव अई हमरा से दिलगी कर लगली भला थैक के न खिन्त। लड़करी मे कोसना बेइ काचुस के मार देले होएब।

र - हय राम कोना बुझएत? अहाँ साहित्य पढ़ू। आइ तँ अहाँ के विद्यापतिक पदावली पढ़ाओल करब।

रति मे अधन भोजनादि से निश्चिन्त भय दम्पति शयनगार में ऐलाह त सरस्वती देवी पदावली खोलि कऽ बैसलीह। पद मे मन्त्रशिख-वर्णन छलैक।

अउक कथा पुछतु जनु।

मदन जोड़ल कजर धनु।।

सरस्वती दाइ बुझय लगलथिन्ह - देखू, एहि मे सुन्दरीक भीरक वर्णन छैक। दूनु भीर केहन लगैत छैक त जेना कामदेव दूटा काजरक धनुष जोड़ि कऽ राखि देने होथि। अहाँ की सुन्दर उत्प्रेक्षा छैक। कवि उपमा देवय मे हट कऽ देने छथि।

मौजेसल झा के अधिक धमत्कार पर दृष्टि गेलैक बा नहि से त वैह जानथि, किन्तु पत्नीक भीर के ओ गौर से त कलन्ति। सरस्वती दाइ आगौ बहलीह -

मुख मनोहर अधर रंगि।

फूललि मधुरी कमल संगे।।

एहि मे सुन्दरीक मुखमण्डलक वर्णन छैक। मुखक शोभा कमल समान मनोहर। तकरा धीरे मे दोरक लाल रंग मधुरीक फूल जकर। कवि उत्प्रेक्षा करैत छथि

ने कमलक संग-संग जेना मधुरीक फूल फुलएल हो। कवि बुझलथिन्ह।

मौजेसल झा अधधिकारक दोर के रहकी नहि रा। व ज करम ल...

आगौक पद और कठिनाह छलैक -

पीन मनोहर दुरि गता।

मेरु उपजल कमल सता।।

सरस्वती दाइ धमकाय लगलथिन्ह तावत मौजेसल झा निदर्शक भय मे पृष्टि बैसलथिन्ह पीन मान न बुझली त पीनी तमाखू म... ई पदोप कौन कोन के नाम है?

सरस्वती दाइ कठिन संकट मे पड़ि गेलीह। कहलथिन्ह - अध कोना कऽ अहाँ के बुझएत? ई त साधारण शब्द छैक। दूखू, पीन माने पुष्ट और 'मनोहर' मेधी के कहैत छैक, किन्तु एहिद्वारा से अध नहि छैक।

मौ - तब जौन अध होय से खुलासा समझ कर कहू, हमरा जे फुरमान न हवे। एक ठो दस्तावेजो खोजकर अभी निकाले के है।

सरस्वती दाइ दबलीह - वह भुक्ति कोना अहाँ के बुझएत? अध जेने उसमे बुझा दैत छी। देखू, गेर नजरे दूवारी पावरी रंग के रोगक लज स जेना दैत गेल छैक दूवारी आँठ, तँ जता, घमकीत अछि, से राम। तेहन लता मे दूना फल उत्पन्न भेल छैक। से दुनु फल तेहन विशाल वृक्ष पड़ैत अछि जेना एक मोड़ पवन राखल हो। आब बुझलथिन्ह?

मौ - थाप रे थाप! अहाँ त दुन्दरीक बुझएत लगली। सोना के लकी मे फल कौन कऽ फरत? ई अजगुन बात। कोइना-कऽना कहली त भला पनिआइओ जयती। जौन ई बात लिखलक है से भारी मुझा है।

र - ई 'अलंकार' कहवैत छैक।

मौ - अलंकार-फलकार हम न जानी। जे अगलियत बात होय से साफ-साफ खोलकर बतलाउ।

सरस्वती दाइ आँखे जिहुर कऽ अपना दिशि ताकय तपलीह। शिक्षाधीनक ध्यान ओन्दरे आकृष्ट भेलैक।

एकएक मौजेसल झा के पदक अर्थ लागि गेलैक। बजलह - ओहो। आव बुझली। ई बात एतना रोज से काँधे न कहैत रहली?

सरस्वतीक छाती धड़कय लगलैक जे ई समार अपना मन मे की बुझलक से नहि जानि।

तावत मौजेसल झा आगौ बहलथिन्ह।

सरस्वती दाइ पाछाँ हटैत बजलीह - आब आगौक पद बुझू।

मौजेसल झा बजलह - आगू के पद रहे दीउ। हम त भूख की। जारती बात बनवे न अबैयऽ। काम से मतलब।



सरस्वती दाइ अपना कै छोड़वैर चिचिया उल्टीह - छोड़ू। हमरा बिरोक धेने छी? मूख, पशु, गभार!

मौजेलाह हा बजलाह - आय धाड़े कुच्छे कइ। मगर बेंच न राखैर हनी। कतने पकल रहू, लोकन हनी न आखिर मेहरारूप, त कत मे हमरा से न जीन सकैत हनी। हम आहों के देखे बुखक अनी लोकन एहि मौजे मे हक पाइ के मिलकीपत त हमरे है। एक बार जैन वान हमरा दिल मे पैठ गेल से फेन हट न सकैयऽ। अहों के नैहरा के गरभ (गर्भ) है त हमरो के गरभ करे अवैयऽ।

'भकार' क एहन प्रयोग एहि सरस्वती दाइ शिकरि उल्टीह। बजलीह - गरभ नहि, गर्व।

मौजेलाह हा बजलाह - 'गरभ' 'गर्व' राय एके बीज है। अग्य हमरा के जास्ती न सिखाउ।

सरस्वती दाइक सभटा चमकार व्यर्थ गेलैन्ह। ओ आब 'गर्दिनी' नहि रहि सकलीह।

ओही दिन मौजेलाह झाक सत्त्व-रिक्ता समाप्त भऽ गेलैन्ह।



## बीमाक एजेंट

ससार मे दू बस्तु सँ दयबाक उपाय नहि। एक यमदूत सँ दोसर बीमा कम्पनीक एजेंट सँ यमदूत न जीवन मे एके घेर दर्शन देत छथिन्ह, किन्तु बीमाक भूत जहाँ एक घेर प्रदेश कैलन्हि तहाँ जेठ जहाँ सटि जाइत छथि। हुनका जनेक झाड़क कोशिश करू ततेक और भीतर पैसल जैतह।

एक घेर हमरो पर एक भूत लागि गेलह - धुवनन्दन प्रसाद। राहुआ सम्भार बान्हि कऽ हमरा पाछों लागि गेलह। नित्य नियम सध्याकाल पहुँचि जाधि, बैराधि, गभ करधि और अन्त मे वैह प्रस्तव जे 'जिन्दगी क बीमा' करा लिपऽ। एहि मे फायदे-फायदा अछि। कम-से-कम पाँचो हजार क 'पॉलिसी' लऽ लिपऽ।

हम लाख कछलिदेन्ह जे 'औ नहराजा' हमरा एखन बीमा करैबाक नहि अछि। परन्तु के गुनैत अछि। ओ जबाब पैलो उत्तर बैसले रहि जाधि। बीच-बीच मे कतेको लोक आदय, कतेको लोक जय। किन्तु बाबू धुवनन्दन प्रसाद धुव जकी अपना स्थान पर अवल हमरा खास लेल बजाबऽ आबू तोषण उदबाक नाम नहि। भोजनोत्तर पुन' गय लाधि देधि। मद्रलोक के कोना कठल जय जे आय कृपा करू। अगत्या हुनका खातिर दू घंटा और पैसऽ पडय। जखन ११ बजेक बाद हमरा औघाएल सन क्रम देखधि त अपन कागज-पत्र समेटैत जाधि - बेरा, एखन चलै छी। काखि सकेरे पुन' सेया मे हाजिर भऽ जायब।

नित्यप्रति वैह क्रम चलै लागल। हम महा संकट मे एहि गेलहुँ। कोनो कार्य करव से कठिन। हुनका सँ जान छोड़ैबाक बहुत धेष्टा कैलहुँ, किन्तु सब व्यर्थ।

अन्त मे एक उपाय कैलहुँ। हुनका ऐवाक घेर सँ पठिन्हि कोठरी मे तला बंद कऽ हरिकीर्तन मे धल गेलहुँ। जखन जेठ पहर राति बीति गेलैक और हमरा विश्वास भऽ गेल जे बाबू धुवनन्दन प्रसाद अगि कऽ फिरि गेल हैगह तखन डेरा ऐलहुँ। परन्तु फाटक लग अदिलहि देखैत छी जे ओ खंभा जकीं टाढ़ भेल छथि। बजलाह - हम दू घंटा सँ एहिदाम टाढ़ भेल बाट ताकि रहल छी।

हम चाहलहुँ जे टाढ़े-टाढ़ गय कऽ कऽ हुनका बिदा कऽ थी। किन्तु ओ त

सबका जैय छलल नहि, हमरा फाटी एगल भवन चल देला और ओहि राति १२ बजे धरि बैसल रहलाह।

ओकरा लट जेना-जेना हम अपन दिनेचरी बदलैत गेलहुं तहिना ओहो अपना निविदा मे परिवर्तन करैत गेलाह। हम डारि-डारि त ओ पाल-पाल खाइत-पिबैत, सुनि-उठैत जखन देखी, बाबू धुवनन्दन प्रसाद आदि कऽ पाय पर सवार।

आइ हम कुन्हा में जान छोड़ैक हेतु एक कोशिस रहलहुं। कालेज सँ अविलम्बे भवन सँ कोटरी बंद कऽ देलहु और बाहर सँ ताला बंद करवा देल्लेक। नौकर के सिखा देल्लेक - देख, जौ ओ बाबू अचानक त ई नहि कहिअहुन जे हम भीतर मे छी। ताला बंद देखि कऽ अपने छिपि जैयुन तखन छिड़कैक बाद हमरा कहि दिहै।

हम बन्द घर मे अपन लिखा-पढ़ीक काल मे लगलहुं थोड़ेवे कालक बाद बाबू धुवनन्दन प्रसादक आहुरि दृष्टि पड़ल। ओ रोजाह और ताला बन्द देखि धमकि गेलाह। परन्तु ओ साधारण व्यक्ति त छलाह नहि जे लगले छिपि जैतथि। ओ पाछेने ताला के छिचि कऽ देखलथिन्ह। नहि पुल्लैन्ह। तखन किछु काल बरामदा पर टाढ़ रहि, अछल-पछला कय दिरा भेलाह, हमरा जान मे जान आएल।

जखन दृष्टि पहल जे ओ चल गेलाह तखन एक दऽ निसारा छोड़लहुं। तबत राखी मे छिड़कौक झिलमेली उडल। हम विनु देखनहि पुछल्लेक - की गै ठगना! ओ गेलथुन्ह?

परन्तु उत्तर सुनैत ह्वाक्य भऽ गेल ठगनाक स्थान मे खम बाबू धुवनन्दन प्रसाद टाढ़ छलाह! बजलाह - की! लिखा-पढ़ी भऽ रहल छैक? छहरा तैखन सन्देश भेल जे भितरे मे त नहि छथि। तै एखुआऽ सँ आदि कऽ देखल। बाहर ताला किरैक बंद छैक?

हम ठगना पर अपन क्रोध उतारैत कहल्लेक - येबकूफ धोखा सँ बंद कऽ कऽ कतहु छल गेल अछि। आय आओत तखन ने?

एजेत महोदय बजलाह - कोनो चिन्ता नहि। हमरा फुजीक भाव मे 'मस्टर की' अछि। लग कऽ देखैत छिऐक

दू मिनटक भीतर एजेत महोदय केबाड़ फोलि भीतर प्रविष्ट भऽ गेलाह।

ईहो चलकी व्यर्थ गेल। आइ कोन युक्ति रहल जाओ? दोसरा दिन रवि रहैक। हम कछनी कछि कऽ पढ़ि रहलहुं। ठगना के सिखा देल्लेक - देख, अबधुन त कछि दिअहुन जे मासिक दुष्टि छथि।

परन्तु ओहि दिन ठगरा और सजाय भऽ गेल। बाबू धुवनन्दन प्रसाद अपना फन्कीक डाक्टर के बजा कऽ लऽ गेलाह। और भरी दिन हमरा लग मे बैसि लेबवार

दैत रहलाह जे जिदगीक कोनो टेकान नहि, लब्दी खास कर लेबाक चाही।

हम गने-घन कदलहु - जी महाराज! पहिने अहाँ सँ जिदगी बाँचि जय तखन ने एकर बीमा करावी।

दू-चारि दिनक बाद पूजाक छुट्टी मे ब्यालेज बन्द भऽ गेल। हम एजेट महोदय सँ जान छोड़ैत हजारबायक टिकट कटौलहुं।

हजारीबान पहुँचि कऽ एक मकान किराया लेन और शान्तिपुरक रहम लगलहुं। एजेट महोदयक कृप सँ शरीरक न शोणित सुखा गेल छल से क्रमशः भरम लागि गेल।

एक दिन शीतक कण पुन पर बैसल कमलक शोभा देखैत रही कि एक अप-टु-डेट नवयुवती अर्थात् दम्पिगेवर भेलीह। पातर छहरा शरीर मे शान्तिपुरी साइक ऊपर लाल कोट। सौम्य मूर्ति। पृथ्वी पर अन्दाज सँ तीखि-तीखि कऽ चरण दैत। ओ हमरा दिशि विनु तकनैत, शालीनतापूर्वक अपन वाट धैने, लक्ष्यक खुशदू छोड़ैत, आगी बढ़ि गेलीह।

दोसरा दिन हम पुस्तकालय मे बैसल रही कि वैठ रमणी आदि पहुँचलीह। एहन संयोग जे हमरे लिखल एक पुस्तक ओ भाडि बैसलथिन्ह। हमरा मुँह पर एक आनन्दमिश्रित युतूलक भाव आबि गेल जे तीक्ष्णदृष्टि रमणी केँ लक्षित भऽ गेलीन्ह। पुस्तक उन्दवैत-पन्दवैत एक घेर हमरा दिरा तीव्र दृष्टि सँ तकलन्हि।

'लाइब्रेरियन' हमर परिचय दैत कहलथिन्ह - पैर पुस्तकक श्रेयक धिकाह। देखीजु दुनू हाथ जोड़ि कय अभिवादन कैलन्हि और अगना स्मृति पर दल दैत बजलीह - अहाँ केँ श्राव्य हम कतहु देखने छी।

हम - काल्हि सन्ध्याकाल झीलक किनार मे बैसल रही।

ओ - हँ, समा करब। हम ओहि समय चीन्हा नहि। एहि ठाम कतोक दिन रहब?

हम - भारि छुट्टी एताहि रहबाक दिचार अछि।

ओ - डेरा कतय अछि?

हम अपन पता कहल्लेन्हि।

रमणी बजलीह - हम एकटा कष्ट देबक चाइत छी। हमरा किछु पत्रबाक अछि। यदि डेरा पर आबी त किछु समय दऽ सकैत छी?

हम जा किछु सोची-सोची ता मुँह सँ बहरा गेल - 'अवश्य'। रमणी वन्यबाद दैत विदा भेलीह।

दोसरा दिन हम अपन बरामदा पर बैसल अखवार पढ़ैत रही कि वैठ

पुनः शिवाय मुँह से एतन बोधारेषण सुनि हम स्तम्भित रहि गेलहुँ।

ओ बजलीह - काननबाला अहाँ कै केहन लगैत छति?

हम उत्तर देलियेन्ह - हुनका कट मे प्रपूज पावुं एन्ह। जन्म कस्यनक रखर मे।

ई सुनि मंजुला देवी कै ईश्याय मय मन मे आशि गेलैन्ह जे हमरा प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर भेल।

माथ 'कल्पना' ओ पुरुषार्थवती दुनू संगे संग पहुँचि गेलीह।

मंजुला हँरीत-हँरीत स्वागत बोलिथिन्ह - अरे! जाउ, काननबाला और दुगो कोरे! अहाँ लोकनि कै वैह 'दाहदिल' भेटल अछि।

कल्पना देवी प्राय हमरा लोकनिक दार्शनिक वादर सँ सुनेत छलीह। विहंगित उत्तर देलियेन्ह - ई, परन्तु देखियारानी धनदात सीमान्य त अहाँ कै प्राय अछि।

मंजुलाक आभापूर्ण मुख पर सज्जाक सल्लिमा दीड़ि गेलैन्ह।

ओहि राति सुन्दरी सभक अनुरोध सँ हमरो शिनेमा जाव पड़ल।

एवं प्रकार किछु दिन मे मंजुला बहुत समीप आवि गेलीह। एक दिन बजलीह - अडोक् बाइक' त एतय छथि नहि। खेवा-पिउज' मे बहुत स्तब्धीक होइत हैत।

• हम कहलियेन्ह - नहि। टगना अछि से पूरा बना दैत अछि। मात खेवाक मन होइत अछि त अपने बना लैत छी।

मंजुला बजलीह - ओह हमरा अछैत अहाँ कष्ट कऽ रहल छी! एखन की बनवैत अछि?

हम कहलियेन्ह - माथ तरी रहल अछि।

ओ बजलीह - माथक हाल ओ की जानय गेल? हम अपने जा रहल छी।

ई कहि ओ चट्टी पर घटर-घटर करैत भानराधर मे पहुँचि गेलीह। ओहिठाम तलक कोट खुड़ी पर टाछि, स्टूल पर बैसि गेलीह।

हमरा मन मे एक अपूर्व भाव उदित होमय लागल।

थोड़ेक काल मे मंजुला एक 'प्लेट' मे तरल माथ ओ भात नेने ऐलीह। हम कहलियेन्ह - ओह! अहाँ आइ बहुत कष्ट कैलहुँ।

ओ बजलीह - कष्ट कोन? ई त हमर काजे अछि। जाय सँ हम सभ दिन अपने हाथे बना कऽ छोआएल करब। ई, लखन होइ मे।

हम कहलियेन्ह - ई कोना मऽ सकैत अछि? अहूँ छाउ।

ओ लज्जित बजलीह - देश, हमहूँ पाछे कऽ छावय। पहिने अहाँ त छा लियऽ।

अन्त मे विशेष आग्रह कैला उत्तर ओतो हमरा संग बीम गेलीह। टगना मुँह बनवैत ओहिठाम सँ चल गेल।

पुड़ी पुरफा मे इइए दिन चोकी रहि गेल। मंजुला कै बहुत किछु पड़बक शेष रहि गेलैन्ह। आब कोना पूर्ति होतैन्ह? हम धिन्ता मे पड़ि गेलहुँ। सोवैत-सावैत माथ भरी मऽ गेल।

राति मे ओछाओन पर पड़ल एही भावना मे मन रही कि मंजुला आवि पहुँचलीह। हमरा ज्ञात लग कुरी घँचि कऽ धेसि गेलीह। हमर हाथ अपना हाथ मे लय बजलीह - ज्वर त नहि अछि। माथ मे दद होइत अछि की?

ओ हमर कपार टोएलनि और फुरै वऽ उठलीह। दस मिनट मे कहलहुँ सँ 'यू-डी-खोलोन' नेने ऐलीह। लगवैत बजलीह - की, आब किछु 'रिलीफ' (शान्ति) दूहि एहँत अछि?

हम मुग्ध होइत कहलियेन्ह - मंजुले! अहाँ धन्य छी आपन देवी! अहाँक उपकार हम अजन्म नहि बिसरब। एहि क्षण सँ हम कोना उन्नत भऽ सकैत छी?

मंजुला बजलीह - हम कि पुरस्कार पावक हेतु अहाँक सेवा कैलहुँ अछि? ई त हमर कस्यो थिक। किन्तु यदि अहाँ हमरा पर प्रसन्ने छी त एकटा गलाबता कऽ सकैत छी।

ई कहि मंजुला देवी एकटा 'फार्म' वाहर कैलनि। बजलीह - हम एक 'इन्फोर्मेस' (थीमा) कम्पनीक 'एजेंसी' नेने छी। यदि अहाँ एकटा 'पालेकी' मऽ ली त हमर किछु उपकार भऽ जाय।

हम मन मे बहलहुँ - हे माँवान्! धन्य अहाँक गाथा। एहू ठाम कीमाक चक्र लगले आएल।

हम यंत्रगत फार्म कै भरय लगलहुँ।

सुन्दरीक प्रस्ताव कोना अस्वीकार कैत जाय! ओ हमरा हाथ मे फार्म धरा देलनि और कोटक भीतर सँ 'फाउन्टेनपेन' बहार कय बजलीह - एकटा भर त।

ओ सभटा पड़ि कऽ बजलीह - और राम त ठीक अछि। केवल ५०००) जे अहाँ लिखने छी से ठीक नहि। एहि मे हम एक अंक अपना दिस सँ जोड़ि दैत छी। इहो एकटा स्मारक रहत।

ई कहि ओ ५ सँ पूर्व १ जोड़ि, १५०००) कऽ देलनि।

हम मंजुलाक माथ मे सिंदूरक सूक्ष्म बिंदु देखि पुनःलिऐन्ह - अहाँक स्वामी कस्य छथि? की करैत छथि?



मंजुला बजली - हुनकर कोनो सविमल त नहि छैन्ह। दिग्गजेय करित छथि  
किन्तु हम हुनका पर 'वरेन' (भार) भऽ कऽ नहि रहय चाहैत छैन्ह। वनिक हुनकी  
अपना 'अभिष्ट' (कमाइ) रौ हुनका 'हेल्प' (महापाप) कऽ दैत छैन्ह। एहि  
'चालिगी' मे हमरा ६००० कमीशन भेटत। तहि रौ हुनकर बहुत काज बनि गैन्ह।

ई कहि मंजुला देवी पल्लवविक अवन सभटा काज-पत्र समेटि, अटैली केस  
मे पैतान्ते और कृपाकत सूचक स्वर मे बजलीह - एहि कृपाक तेनु हम ठदिक  
पन्थवाद दैत छी।

हम जा किछु उत्तर दिएन्ह-दिएन्ह त बाहर सँ वक्ता आवाज आएल -  
प्रोफेसर साहब।

स्वर चिन्हैत देरी नहि भेल। यह धुननन्दन प्रसाद। ई आधिर एहूठाम धरि  
छेकारने ऐलाह। जी अकच्छ भऽ गेल। दाहि भात मे मूरच्छन्द। ई एखन फर्क सँ  
आबि गेलाह।

हम छोटछि कऽ जवाब देलिऐन्ह - हमरा एखन पुरस्ति नहि अछि। कालि  
दिन मे आएय। एखन एकटा मद्र महिला एहिठाम छथि।

बाबू धुननन्दन प्रसाद भीनर अवेन बजलाह - प्रोफेसर साहब। अपने प्रश्न  
धोखा मे छी। ई हमरे 'बन्धक' धिक्कीह।

मंजुला देवी शरास्व भरल मुखन सँ हमरा दिशि तकि बजलीह - यह छथि  
हमर 'हसबैंड' (स्वामी) मिस्टर डी एन. प्रसाद। देश, त आब एखन अग्रा भेटी।  
नगरते।



## अंगरेजिया बाबू

मंजुला बाबू जखन कालेज मे नाम निश्चयक त शैव धर्मक जे सुट  
वनयथी। जखन मूट बनयोनिह त शैव धर्मक जे ई परिचर क, सासुर जाइ।

आए प्युआ सँ चारि दिन पहिने जखन एखन एक फूलशर लिफाफ  
इवाजिज्ज मध्य मे देलकैन्ह देखन ओ पुष्पनिह जे जखन सुट पर इरती बडादक  
अचर अछि गेल। ओ कोटरी बन्द कम, इष्टवनाक स्मरण करी। लिफाफ फोलाह  
और उखन हृदय सँ पढ़य लगलाह। ररा भरल दोह-दोह मे मानव जे तत्त  
वहाराएत रौ ई जे एहि फाफा मे अवश्य आ। मंजुला देवी अचर गेल छथि। यदि  
अहाँ नहि आएय त रंग मे मंग भऽ जाएत।

मधुकान्त बाबू ओह पत्रक कइएक आवृत्ति पठ कय गेल। तखन 'सुनोटेडेट'क  
नाम सँ एक दस्तावेज लिखलक जे हमर माय मरणकसँ छथि अलग रात  
छोरल सँ गिरहजिर रहय पड़त।

तदनन्तर अन्य सन नूँह वग शशिकान्तक काटरी मे गेलाह कहलकैन्ह -  
हो सगा। हम पर माय बहुत जोर दुखित छथि। जखन, मधुकान्त, देवना, ई सब  
सऽ जैवाक अछि। बीस टाका पैच दैत।

रूपय एख मधुकान्त बाबू सँ 'मधु मजेट' गेल। ओनाय स्तो, श्रीम, पोनेड  
अदि जखन जे इकराण आवश्यक वृद्धि पड़लैन्ह ते नऽ ऐल। मधुआक हेतु अदीर,  
गुलाकजल, कुमकुम, ओ पिछकारिओ नहि विसरलाह।

सखन मन पड़लैन्ह जे बाबू त बाँकिय राखे गेल। दौलत 'कैसी स्टोर' गेल।  
ओनाय मन्दी और 'दरारी' तयुवकुकी पसन्द कैल। राम भनेन्ह पैचदिस टाका।  
आब ई टाका कतय सँ आयय?

मधुकान्त बाबू होराह अछि कऽ मधुकान्त दायक कोटरी मे गेलाह।  
अन, एखन मे मधुआ सुट वग कहलकैन्ह - दासना, एकरा दह जरूरी काज  
पड़त छी।

दस्तावेज मेनजर छलाह। फोन 'वोटेडेट' सँ कमेक रूपय दाबल भेल छैक  
अन, एखन मे मधुआ सुट वग कहलकैन्ह - दासना, एकरा दह जरूरी काज  
पड़त छी।

मधुकान्त बाबू ओह पत्रक कइएक आवृत्ति पठ कय गेल। तखन 'सुनोटेडेट'क  
नाम सँ एक दस्तावेज लिखलक जे हमर माय मरणकसँ छथि अलग रात  
छोरल सँ गिरहजिर रहय पड़त।



मे छेऊनाम सयम 'अन्ध' अन्ध करव अरुती छैक रूपमा उनीन छथि स  
काहि पधुन। गहन मयक सयम मे से दऽ कऽ हमर काज चला दिवऽ कऽ  
मनेऊहरी आओ त पछिला बकैया तगेत जेहि कऽ लऽ लेव।

मधुकान्त विधु विनि। होइन बकैया - मेथ रेत पँतर' भेज होइय रन  
छैक। और भोती के नेहन तररी अउर स यमका लऽ जाउ, लखन बकैया मेथ क  
'एकालन्त' (सिसाय) देमक कऽ देख पड़त।

मधुकान्त बाबू सयम सय अपना 'देवक' पर तय पेरै, सीध 'दीन  
स्टोर'क बट पैतलि और एसन्द कैल वस्तु लऽ ऐलाह।

अखन सम यन् सुटकेस मे लडिया कऽ राख्य लगलाह त मन मे ऐलैन्ह -  
ई सासुर यन् 'सुटकेस' नेने जाएव से दीक नहि हैत। नगदेश्वर छै 'सेधर' दना  
'सुटकेस' छैक रीउ लऽ अरु।

मधुकान्त बाबू यमडाक सुटकेस नहि कऽ लऽ ऐलाह। किन्तु ओहि मे एक  
बानक गधपड भऽ गेलैन्ह। ऊपर मे पुष्ट अक्षर से लिखल रहिक एन झा, मधुकान्त  
बाबू अपना मन मे लयाधन कैलन्हि - एम और एन मे कनेके भेट होइ छैक। कओ  
पुछत न काहि देखै के एम केर अन्तिम रेख मेला नेने एन अजा बूझि पड़ैत अछि।

तयनर अपन रिहवाय पर ध्यान गेलैन्ह। ईहो स सयसुरेक देल छीक। तखन  
एकरो जिएक मे वदलि लेल जाए? सभ से बहिया 'डिजइन'क घड़ी सुरेश के छैक।  
दू-चार दिनक हेतु कि अदला-बदली नहि करत?

मधुकान्त बाबूक इहो अभीष्ट सिद्ध भऽ गेलैन्ह।

तखन एकटा और सिहनाग गेलैन्ह। यदि बकरी से ग्रामोफोन भेटे जइत त  
सासुर नेने जेतहुं हाव-हाय। यदि फुआउ अवसर पर ग्रामोफोन नहि लऽ गेबाहुं  
त किछु नहि।

मधुकान्त बाबू चौडल वृन्दावन विहारीक कोठरी मे गेलाह। कहलधिन -  
हमरा गम पर काहि भतिनक उपनयन अछि। दू दिनक हेतु अपन ग्रामोफोन दिवऽ।  
हम खूब हिफाजत से नेने आएब।

वृन्दावन तहलधिन - लऽ जाउ। किन्तु अपने 'बाजी' मे राख्य। रेकाड सभ  
जे पसन्द छे से छोटि सिय।

अन्ध। चाइय दुनू अछि। मधुकान्त बाबू चुनि-चुनि कऽ एक से ए  
लहरदार रेकाड बहार कऽ लेलन्हि।

आब मधुकान्त बाबूक ठाठ पूर्ण भऽ गेलैन्ह। प्रसन्न भय रोचय लगलाह  
'एहि ग्रामोफोन के चारु फात से घेरि कऽ सासुरक रीहवा स्त्रीमय दैसइ जेतहुं  
मुदनी जेठमदि, सरस-महोँज विनारिनी विधेकरी। राध न हयरे मे लपट  
रहलैन्ह। तखन नहुआरयता लग के बैसलैन्ह।

'है, और की सभ लऽ चली जे सासुर मे रंग जमि जाय। ओतय स

नहुआर सय एकटा सासुर और सेन एकाद सय दश लऽ सलक घाड़ी। जखन  
दवागन सयमे लऽ कऽ अउरते १४४४ छोटे कऽ कबवेर - यू सिसी गले  
गमार लइकी। कूची लाओ।

'है, संदेश मे की नेने जाइ? हय नहुआरयता जकाँ देखाती छी नहि जे एक  
छिद्रा सौच-विधुविद्या नेने जैवैन्ह, ओ 'दो' कऽ कऽ 'ओ न सभक एत जगदीधर  
नहुआर सय नेने जैवैन्ह नहुआर सय 'ओ न सभक एत जगदीधर' सही। छि' केहन कहन  
इतना तक दुनियाँ मे होइत अछि? एत तयम स तहन-तहन अयेजी मिठाइ नेने चली  
जे अनेछिदाम केओ देखनहुं नहि होइ। 'जैन' जे ॥, 'मामलेट', 'चाकलेट' ।

'और एडिशन छुन-अटा से बचगेल सय छी से भातुआ लोक कोन युद्धन?  
एकटा नेने चला। विधेकरा पुनराह 'आइ' ई की 'थेके'। तखन कसौत - ई  
'थेके' कडवैत छैक। एहि मे मकखन गिला कऽ सहेय सय 'छोटा हर्न' करैत  
अछि। एना छुन सँ काहि कऽ एना काटा मे देल जाइक छैक। ई दाव्य बकित  
विधेकरीक नेत्र और मात काना कनकि उठलैन्ह?

एहि तरहक आनन्दसय कऽ करै। मधुकान्त बाबू नागा प्रकारक दस्तु  
लऽ ऐलाह।

शक्ति मे जोडरी बन्द कय सभ वस्तु पसरलन्हि। रंग-विरंगक शीशी और  
रिब्या से घर चनके उठलैन्ह मनोहर धुआँ स मन मस्त भऽ गेलैन्ह। ओ  
धिन-धिन आकार-प्रकारक कडुई सभ तय मे लय उमटा-पमटा कऽ देख्य  
लगलाह। गुलाबी, अंगूरी, नारंगी, बैंगनी। काना सँपक रेचुभा जकाँ पातर झलझल  
करैत कोनो केराक वीर जकाँ कोमल, छलछल करैत प्रत्येक सपरिध अया जकाँ दू-दू  
उम अलगल।

मधुकान्त बाबूक कल्पना मे रस आदि गेलैन्ह नलदीवना 'चमेली', पूगदीवना  
'रानी', पुष्टदीवना 'अनारकली', उगदीवना 'मालदहवाती'। सभक विच ओहि मे  
नचि उठलैन्ह।

एहि मे कोन दिनका अटलैन्ह? मधुकान्त बाबू के अँठकर लीक मे अपूर्व  
मापुय नेहन लगलैन्ह ओ एहि रंग स निम्न छलन कि बाहर केबाइ पर टक-टक  
शब्द गेलैन्ह। ओ झरझर करु घेसरीक अउर 'वेधरी' दिवसारी' रथि केबाइ  
फोललन्हि।

सुरसँदेर पुडलधिन - तोर मदर इत शिंशसली इत? हवाइ इत शी  
सजोरि कऽ? (अन्धक माय वशी दुख। दाये की होइत छैन्ह?)

मधु - प्रीत एपाइय इहेस गर। हुनका अँठकीक भँतर घाव भऽ गेल छैन्ह।

तय दन यू आर लखन बाइ ४ मनेइ ट्रेन? तखन अहाँ भिनसक  
साडी से जख चाहेत छी।

मधु. - यस सर (जी हौ)।

गुणगुणय गंगा उत्तर मधुकांत वरु दुन केवाड वंड कर वलपुआ सभ  
रामु लोहपुनसका कऽ पुनका मे मोंदुय २ २२ २०६ आगे भुषा दिवाग दिवाग  
नेलेह। सत्तायक माग राति नाग दू कोर सों दई नाह छ। भेलैक सभ उछ रामपुन  
भल पर आध रातक २ लखआन पर मेवाय परनु निर कांछ पावैक। राति  
ओह शाति निरे पछि नहुनेक न ओलेक राम तिनायक किछ किछ देखलैक।

अ सोंवेलमय काननाय वरग मे प्रवर्तित होमय लगलैक -

'अउधिकमित धनक कनी राम कोंदय दर्ता। बलकनयक पुन गन मधु  
जेडसरी। प्रयुतेन पुनव तर प्रकृत सरसरी। शनदन कमल सनन दिव सन  
विपकरी। जुआएल सुयमुलीन पुन राम सननी गलदहवली सगुर की थीक?  
एक मनोहर उपयन। एक विराज अमलदह। जहि मे सपेयक कमल सनपुन रवेन  
अछि। कोनो छोट, कोनो धै। जे जी मे अदय रे लंडि लिगऽ। अधय सुंघि कऽ  
छेई दिवऽ।'

सगुर तिरेमा हारम क रीन कान मे पड़लैक। मधुकान बाबू कसम मे  
रगिन पोंछि लागि गेलैक।

हमहुँ ओतय पहुँचि कय एहिना ज्ञानेकोन बजाएब। छात्कात सँ चयन  
तरुणी सभ घेरि कय बैसइ जैतीह। सभ जीवनक ज्योति सँ जगमग करैत कथा  
कोमल आदुर सँ सुड करार कनात। केओ वृद्धी खनान्दवैत छापी धुनीनात। केओ  
अपना आँवर सँ रंगड पाछि कऽ कमल छाप मे बने जैताइ और हम ओतय गाना  
वज्रवय लगव सुवर्तगग धजनीह - हमरा लोचनि ३ किछु वृत्रये नदि करैत  
छिएक। देगी गित छहिविथीक गखन हम राम सँ कयवैक जे हमरा सभ हिन्दुतना  
गाना नहि समद करैत छी। 'वाँल हालत' (मिमक नाच) मे 'पिचलो' कोना चलैत छैक  
ते मुनू धिप-दोघेयक त्वर लल गुनि सुवर्तगग मे दिनेदक बाड़ि आबि जैतैक  
कतेक छल-पंगेहग चलन।

'जखन रंग-रभरा डोहल-डोहल बहुत राति बीने जैतैक त नवहधवली दुनडा  
सँ किछु फरकै टाड़ि भय बेटी सभ के कहतीह - 'रे गो' तो राम भरी राति भयने  
रहथि कि आमा के खायो कयहुन? सुनी तर सभ के देखले मे त दट  
नहि भरतैक।

'विधिवरी चाड अगन गेय गुरगर लोहे आ' शरदनी घुड़ी के कनेक जयर  
खरसो, धमकयले हाथ सँ राम कय बैसतीह। जखन हम बडवैक - 'एकर कान  
काय' हमरा लोचनि त कुरी दमुल पर दोस कय खायवला छी। एही ठाम पलम लग  
'रदूल' घऽ दिवैक।

'समयकी भनायकरी इयन लऽ कऽ पड़ैत। हम कहवैक - पकिर एकरा  
और बेगी मधु वन निओक जखन हम दिगु आ कहतीह - 'र वन' नदन हम  
शिराज किछर हुनका फाट मे लगे देखैक ओ दौरेन हरिणी जहाँ भवर्धन भ

कहतीह - छोड़े दिवऽ। नक देखल १ वी कहल? हम कहवैक - चारिपक  
रतपान मे स बेगी जगनद छैक। अहा ओहि समय कनेक रस भेटत।

'धनलीक धन्य जकां धनलि रेशमी दाइ तरुनी मे मलपुआ लऽ कऽ  
औनीह। मधुवन्दर देली मालदहवली बदी मे मलपु नेने पड़ैत। हम कनेक  
मलपुआ छोटे कऽ कहवैक ओ आब भुषा लोहे अछि। सखन रेशमी दाइ हमसभ  
करैत कहति - 'दाइ रे दाइ' मे कोना तैत? एना लजाइ छी किछेक?

'ओ अघदस्ती हमर हाथ घऽ म'सुआ पर लय जैतीह। हम एक रती रुधि  
कय पुन लख धारे लैवैक। सखन रोलधमान मधुकनस सँ तरावेन अंचल के  
सम्भारैत, माददहवली आगे बडतीह। रस सँ छनवैत छालीक पाला आगे करैत  
कहतीह - 'वाह! एखन मलाइ त बाँकिए अछि।

'ई छहि ओ छलछल कऽ भरलो पाला छाली मालपुआ पर उड़ीलि देखि  
और रामलड गनि सानि शरजरी हमरा खोआवय लगतीह। अहा माधुवेक लहरी  
आबि जाएत! रस सँ ऊनपुन भऽ जाएत।

मधुकान बाबू उजेजित भऽ मधुअक रगिन दृश्य देखय लगल। 'जखन  
बंधला मुर्तगग फगुआ छलाय औनीह त रंग सँ नहा देखैक। रामपुने रेशमी के  
फोहरासँ शरथोर कय देखैक। गहपय सँ अरुणापत अनार के कुमकुमक पथी सँ  
लल कऽ देखैक। मन श्रितनी जकां मजदुरक भार सँ धलधल करैत मालदहवली  
आगे औनीह तनिका तिकाय पिचकारी छेड़वैक। तखन कतेक रसक झेत रुटि  
पड़ल? धड़-धड़ भऽ जाएत।

मधुकान बाबू ओहि मूनि कऽ छोड़े रसक तरंग मे ऊबड़व होवय लगल।  
नाला प्रकाय रगिन चित्र मन मे आवय लगलैक। कुल धारि राति रहवक  
अछि। एहि मे सभ किछु भऽ जेबक घाडी, कोन वरगुक उपयोग कोन ठाम, कोन  
समय मे कयक घाडी, वैह पैन (कार्यक्रम) दखैत राति बीते गेलैक।

तखन मधुकान बाबू मुँह-हाथ धो 'शेव' कैलनि (डाडी बनौलनि) और 'सूट'  
पाडेरक हेतु ऐनक सामने टाक भेल। 'डिट' लगा कऽ देखलनि।

'जखन ई टोप सासुर पहुँचत त धिक्पुना देखितहि पहाएत। वृद्ध स्त्रीगण  
मिरियत भय पुछथि - 'ई, ई कोन साहेब धिकैक?

'जखन तरुणीयग से उत्तर भेटतैक - 'ई त फूल बाबूक जमाय धिकथिन।  
मारी दर्जा मे पहुँचि गेल छथि त टोप सगौने छथि।

'नहुआरबला पाग पकिर कऽ जाणह। ओहि घेचारे के के पुछतैक?'  
मधुकान बाबू सारेथ गनि सभ सम्मान सँ तैस भय स्टेशन जैवाक हेतु रिया  
पर बडल। 'वाडे सवेन्ट के कहलथि - 'जाओ, एक चक्का पानी भरकर ले जाओ।

मेसक 'कूक' के आडर देलथि - 'एक छोछ दही लाकर दिखला दीजिए।  
ई सभ सगुन कय मधुकान बाबू नवीन उमरा सँ शासुरक धामा कैलनि। अग

टांका घाली आगों जा कऽ केहन फल भेटैत छैन्ह।

मधुकान्त बाबू एगारह बजे रोगरहीङ्ग स्टेशन उत्तराट न एकटा देहानी एका भेटलैन्ह। एकमान कहलकैन्ह जे दू बजे तक पहुँचा देव।

ई सुनि मधुकान्त बाबू केँ छुपी नहि भेलैन। किन्तु त गतिव्यक्ति प्रथम सुनल सँ पहिने भासुर पहुँचक नहि चहेर छोट। रात्रिक समय जनकर मे भने 'ड्रामाटिक एपेक्ट' (नाटकीय प्रभाव) पड़ैत छैन्ह। 'देनक शुभक यक्षमय समय मे ओ रोगरहीङ्ग' दगर बात जे 'साहब' ईन मे ओहन टिकाटकरी एक' पर धड़ल लोक देखत त की कहत? राति मे त ककरो बूझि नहि पड़ैतक।

ई विचारि मधुकान्त बाबू एकमान केँ नाश्तखानी और इगामक लोभ दय, दिन भरि मेहनत रहलक और सोझ कऽ एका पर सवार भेलाह जे टांका 'रोगरहीङ्ग'क समय सासुर पहुँचि जाइ।

अब एकका हलत गुन। ओ 'एक' नाम संधक करैत छल। अर्थात् एक टा कोना वस्तु छद्म। एकमान ग्रामोफोन लाइव त सुटकेस नहि अटैक। सुटकेस लाइव त देखाक जगह नहि भेटैक। अस्तु, कोना-कोना तरहेँ समावेश भेलैक।

आजन्त साहब बहादुर वैसे गेलाह त छौ पटाक नगरपाल बेटा अपन करामत देखावय लगलैन्ह। एकमानक तीन देर टिटकारी देला पर ओ एक डंग बढ़य। और दू डंग अगो बढ़ला उत्तर पुन चारि डंग पाछाँ हटि जाय। बाबूक लज्जा पर जति दिशि खर्च देखात ताही दिशि कऽ गुँह करव। एहि छानि सँ काम भरी जाइत-जाइत पहर राति बीति गेलैन्ह।

मधुकान्त बाबू वैरागिक लगा कऽ देखलन्हि जे यदि पैत गति रहल त 'सासुर बाड़ी' पहुँचेत-पहुँचेत 'ठाकुरवाही'क भोरका घड़ी-घंट बाजि जाएत। तखन त सब 'रोगरहीङ्ग' बाटे मे समाप्त भऽ जाएत।

एकक मंदर गति देखि मधुकान्त बाबूक धैर्य नष्ट होमय लगलैन्ह। एतनु बोझा केँ कोन सासुर पहुँचवाक अगुआई रहैक? ओ एक चोगल पर ना कऽ जे अडल से की समधी बिदाइक हेतु अडताल!

साहब बहादुर कहलथिन्ह - लगे कसि कऽ चारि सटका।

सटका लगला पर बोझा और वैसी दुलही झड्य लगल। अब साहब बहादुर केँ नहि रहि भेलैन्ह। ओ किसिया कऽ एक 'घूट' लागलथिन्ह।

टांका जयैत देरी बोझा तेहन अलस उटोवक जे एका टाम्हि उनटि गेल और साहब बहादुर आकाश सँ पृथ्वी पर आबि गेलन्ह। बोझा अपन धाम-धमक तोड़ि कऽ जे पड़ल से सरसट भागल छल गेल। एतह त मे साहब बहादुर, ऊपर सँ रेखांकक शब्दा, तहि पर एकमान गकरा ऊपर एका। पैत नक्शा करीब दू मिनट धरि बनल रहल।

साहब बहादुर पर अनन्ध दडपल भेलैन्ह। शरीर करागल गूट मटि मे मिति

रहल। शरीर केँ गाटे मे भिन्न दजबैन्ह। रंगरंग सभ घूर घूर भऽ गेलन मनोरथ केँ घूर-घूर कय देसबैन्ह।

दू मिनटक बाद एकमान ससरी कऽ निकसल और साहब बहादुर केँ एकक बार सँ बाहर केलकैन्ह। घमंडक नुटकेस हलत मे औइटा गेल छलैन्ह। आकरा एगले कय टांग सँ देखलकैन्ह त सफ़ेद बहादुरक रहल। सफल देव नष्ट भऽ गेलैन्ह। अवीर और मुलबजल मिलि कय सभ कयवा पर होरी खना देन छलैन्ह। शरीर साडी पर लपटनृतक शरीर छाटा टपारे कऽ अगलाफ कल सँ सँ एकाकार भऽ रहल छलैन्ह। सोआल घाली पर शैम्पू और सोतागंधीक रस परस्पर सवेल कऽ रहल छल। 'सेट'क शीशी घुटि कऽ 'ब्रेसरी' केँ तर कऽ देने छल।

साहब बहादुर जी मसमि कऽ रहै गेलाह। ओ जहि वस्तु सभक उपयोग अरुण हाथ सँ कारगंध से स्वा भगवान कऽ देखलैन्ह। अपन सोचल 'प्रोग्राम' श्वशुराध धरि नहि पहुँचि सकलैन्ह।

इधेनी स्नुहु अपन घुटल एका तजर्बान करैत यागल - 'एका त देवार भऽ गेल। एकटा पत्रिमे टूटि गेलैन्ह। आय ई आगों नहि बड़ि सकैत अछि।' ई कति ओ बोझाक सलाह मे कल।

अब साहब बहादुर केँ आकलक ताता सुख लगलैन्ह। ओ निरुपाय मय एकमानक गल। छलन्हि और अपन सभ कांध जोकने पर उतारय लगलथिन्ह - 'इंजिन (वेल्कफ)' उभर कलौ जाता है? हमारा पाँच सी रुपए का नुकसान किया। अभी पकड़कर धना ले चलते हैं। तुम पर 'डेमंड गूट' लगला, धार करीगे। जानता नहीं कि हम कौन हैं?

साहब बहादुर ओकरा खिचैत तिरैत लय चललथिन्ह। एकमान कहलकैन्ह - 'बहा, लऽ धलू जहाँ लऽ चलब। हम की लाइन बूझि कऽ एका। उनटोभुँ अछि? अही त जूताक पैड़ा मारलियेक। हमर पूँजिए चौपट भऽ गेल।

साहब बहादुर लऽ त चललथिन्ह, किन्तु मन मे विचारलन्हि जे एहिठाम ग्रामोफोन और सुटकेस केँ अगोरात पकमान केँ कहलथिन्ह - सब चीज उठाकर ले चलना होगा।

अब एकमानो अछि गेलैन्ह - हम कुली नहि छी जे सामान बोख।

साहब बहादुर ओकरा 'हैम-फूल' कहैत एक घूट लगलथिन्ह। अब एकमानो केँ लपटक नशा जोर केलकैन्ह। ओ लपटि कऽ नेकटाइ समेत गरदनि पकड़ि लकैन्ह। साहब बहादुर देखलन्हि जे एकमान दुम्पार अछि और एहि ठाम लग मे गाम-धर नहि छैक जे विचिएला पर लोक जमा भऽ जाएत। अतएव एका सँ लागव डीक नहि छैत।

ताकत नशा सँ वृत्त भेल एकमान साहब बहादुर केँ ततेक जोर सँ धक्केल दबकैन्ह जे ओ चित्ते खसि पडलाह। टोन् चढाओ मडनीक घड़ी चक्रवाचुर



भः गलेन्द्र ।

एकमीन अपन एका गुडकदेत 'वैह से वैह से' पार भऽ गेल ।

सातेव बहादुर के होय भैलेन्द्र त होइ भऽ चुनार सगलस आद की त भऽ नऽ सागुर भैलेन्द्र त कवन करय नऽ करय खय भऽ गलेन्द्र । सासुरक मीन पर आवि नेका आसुर प्रयोग भैलेन्द्र जे सभटा भूषण भय भूषणरहा जकाँ चुचि गेलैन्द्र । जहाँ लगन रंगरिहा होइवैन्द्र नईं अपनप धुनि छोड़ि भऽ कऽ रहि गेलैन्द्र । जे कपार मेई । से लाग होइवैन्द्र से गेल से नऽ भऽ गलेन्द्र । जे गरमि चमेली दइक कोमल बाहुपश से भैलेन्द्र से हाथी गऽ कऽ कऽ राइश नऽ गऽ गेलैन्द्र ।

कवन एके बातस सनय मन मे भैलेन्द्र ज इ दुइय केओ देखनक नहि । यदि एहन फटका अदरथा मे कऽ सासुरक लोक देखि लैन त कोन मुँह देखवितहुँ ? ताहि लज्जा से त मरणे नीक ।

एहें आशय से सातेव बहादुर गेदरि उठलाह । तावन किछु दूर पर कठस्वर गुगइ पऽ गेलैन्द्र । अकनि कऽ भुतबन नऽ केर गुन भऽ गेलैन्द्र । ई त नहुआर बला आवि रहल छथि ।

मधुकान्त बाबू केँ आवि किछु सोचन-विचारबाक अवसर नहि रहलैन । इट दऽ धकुचल होय हाथ मे उठा, नइहाइन-नइहाइन रात्रिक धत मे जा मुकलैन्द्र ।

एखन नहुआरबला ओहिदाम पऽ चलल त निर्जन सड़कपर अयोधौन देखि घबकि गेलाह । भरिया केँ कहलथि - री ! देखीक त, एहिदाम लोक-येव केओ नहि, ई वस्तु सभ ककर ऐक ? हाक पाहती त ।

भरिया दू-धारि हाक पाहलक किन्तु कोनो उत्तर नहि ।

नहुआरबला अगऽ थकि फलधिन - री, एकटा सूरोकेस देखैत छिऐक । प्राय मानिक नदी दिश गेल हैलेक । छोड़ैक कल देखि लेवक चाही ।

गरस्तु केओ कतहु नहि । भरिया थरथर कँपल बाजल - साकर आब हमरा हर होइत अछि । एहि दाघ मे कोय भरि कोनो गम घर मकि । सामने जे गाड़ी देखैत छिऐक से भुतही गाड़ी ऐक । ओही भूचक ई कारवाइ अछि आब हमरा लोकनिक जान घाँचब फटिन ।

नहुआरबला डोन्टे कऽ कहलथि - री ! भूत-भूत किछु नहि । कोनो एका एहि घटे भैलेक अछि । चिड़ देखि लऽलक । प्रायश ओही पर से ई सभ खसलैक अछि । देखी नी, कोन डडरयल ऐक । गऽ आवय तेल छसाह । कतहु हुनके वस्तु त ने छैन्ह ?

ई वरि ओ सुनकेस लग गेलाह । मधुकान्त बाबूक छापी धक्कय लगलैन्द्र । नहुआरबला बल्लाह - नहि बाबूक नहि छैन्ह - एहि पर एन जा लिखल छैक । हुनकर नाम त मधुकान्त छैन्ह । ई कोनो दोसर ब्यक्तिक थिकैक ।

मधुकान्त बाबूक जी आशयस भैलेन्द्र नहुआरबला सुटकेस केँ तजवीज करैत

बाबूक - री, ई सुनल छैक । ई निश्चय कोनो दोरक कल थिक । हमरा मोकनिक अहट पाये भागे गेल हैन । कतहु एहि रात्रि मे त न मुकलैन्द्र छैक ।

मधुकान्त बाबू और बेसी झोझक बीच से जा चुका रहलाह ।

नहुआर बला सुटकेस खलि कऽ देखलैन्द्र त रोत कऽ धुआर से मोलस तर भऽ गेलैन्द्र । कतहु कतहु रोक । ओय इ माल लऽ गेलाह । एहिदाम पडन रहलैक त केओ ने कऽ उठा कऽ लइक जैलेक । नाहि से हमही कऽ नऽ नऽ धना ? थोरक धन छियारे छय ।

ई वरि ओ पुन एक बेर उल्ल स्वर से गऽ कैगलि - ली बाबू ! जकर होइक से आदि कऽ अपन वस्तु लय गऽ । नाहे त हम वैह मेने जाइत छियौह ।

भरिया केँ कहलथि - दखि उचार । पकमानक चोरा तर सूकेस लऽ ले और दकोयल मटक पर अमानेन राख जखन अनायसे धमराय छयि पकल अछि त छोड़ि दिऐक ।

भरिया सभटा वस्तु नऽ लेलक और मधुकान्त बाबूक छापी पर कोनो दनैत दुलकी लगलैक । सहज बहादुर चुपचाप देखैत रहि गेलाह और बाबूक ओतक पल से सवेल भ्रमण निभा लुटा गेलैन्द्र । नाह शय से ओ सागुर मे विजय प्राप्त करैलथि से अगका हाथ मे पडि गेलैन्द्र । रोही के त असली प्रतिद्वंदी !

मधुकान्त बाबू सन्तापक ज्वाला मे दग होमय लागलाह ।

एखन निजम भऽ गेलैक त मधुकान्त बाबू रात्रि से दहीलैक और रातगनि पुन स्टेशन पहुँचलैक । औनय चोर जकाँ वाटग सम्म मे चुका रहलैन्द्र । अन्धार मे छाती घेच पर ओटोटे भयनाक तरंग मे भरियाय लगलाह - हाय हाय की सोचने छलहुँ और की भऽ गेल !

'आइ राति सासुर मे कीकरी नहि भैल ? एखन एकान्त शयनागार मे एतन पर ओटडल रहितहुँ गुनगुन लोक पर मतइ सन चिन्न चादर रहै । खीट ड्रीम (मधुर स्वप्न) बला सकय पर मध्य मेने मधुमयी घमेली देखीक जर्जला करैत रहितहुँ । एकएक मूडल पानेक प्रकार सुनि पडैत । हम नि शब्द भऽ मुँह झाँपि पडि रहितहुँ । ओ नहुँ-नहुँ आये कऽ हमरा मुँह पर से चादर हटावेतथि । हम ब्याज निद्रा मे पडल रहितहुँ तखन ओ फलबल कनरा देह पर निहुरे कऽ वैदि जैतथि । फुलाइत चमेलीक मधुमय सीरम से सम्पूर्ण शय्य गगगा कऽ उठैत । जवाबदुस से सोचन नागिन हमरा ऊपर लहराय लरैत । नथपि हम ओछि मुननछे रहितहुँ तखन ओ अपन रसागुल तान मुँह हमरा मुँह पर अनितथि । वस, हम छट दऽ ।'

सादत जोय मे उडीस काट लऽ गेलैन्द्र । सातेव बहादुर छिलमिल उठलैन्द्र । कल्याणक गगन तार टूटि गेलैन्द्र । जाव दस्तुनिकति पर ध्यान गेलैन्द्र - यँत मे उडीस भल अछि । कोटरी मे पच्छड भनभना रहल अछि । छिड़क से तऽ पुरवाक सहरी आवि रहल अछि ।



मधुकान्त बाबू जड़ हैं टिड्डाय लगलाह। भूखे अँधी। कुलकुलाने लगलैन्ह। नदी में हाथ डेराने न पकड़ो वहरैलैन्ह। छि छि। कहीं आ रोमी दाढ़क मधुर मातृपुआ। नानदमदामक सारस मलाह। और कहीं ई सुझाव पारोमी।

मधुकान्त बाबू ओकरा छिड़कीक बाहर फेंकलैन्ह। पुन प्रकानस्य मेन उत्तर पञ्चावय लगलैन्ह - जय एहिदाम की बाएद? मोपरडीहाक धुवनी।

सारेख बहुरा के नहुआरबलाक मीज दिश ध्यान गेलैन्ह। ओ एखन साराक मालपुआ पर हाथ पेंनैन्ह हैन्ह। भलाइक रस सैत हेमाह, और इन एहिदाम वैसल भलाइक मरीत छी। ओ कांदरक अलन सैत हैलाह और इन एहि हवालत में पड़ल छी। हमर ऊँच कचाँक गदत अछि रो कओ ससारक बला नहि। ओकर नहुआरबला के मासिब छोड़त हैन्ह।

साक्षर सौभाग्य सोचि-सोचि मधुकान्त बाबू कूही होमय लगलैन्ह। ओकर अधिक सोचिये तोक अधिक जल्ता बहल जाइन्ह।

तावत बबड़ रें फगुआ सुनइ पड़लैन्ह। देहाती लभ डंप-दमल पर धमार उड़ौने छल -

कन्त हमर नहि ऐला सखी! ककरा सग जेधू अवीर।

मधुकान्त बाबूक वोज पर डको सँ बेशी घोट पड़य लगलैन्ह ओ बाहर जेतकाम पर आवि टहलव लगलाह।

तावत लखन दियारक एटी पड़लैक रामुरिया सँ गाड़ी छोड़लक। निरीधकजोग नीरब स्तेशन किमु भणक हेतु मुखरित भऽ उठल।

मधुकान्त बाबू पुन कौना गग गेलैन्ह? इम्तिआनक नाम पर कोन तरह घर तँ ठपैया झिड़कैन्ह? और होस्टल पहुँचना उत्तर जीवछकाल दास तथा वृन्दावन बिहारी सँ कोन तरह करिगेलैन्ह? ई सभ धुरान्त लिखब एहि कथाक उद्देश्य नहि।

नौ माराक बाद मधुकान्त बाबू के पुन सारा जैवाक मौका भेटलैन्ह। किएक त बाप लिखलथिन्ह जे अग्रहण शुदि पक्षमी के तिरागमनक दिन होइत छी। हम दुखित छी। एहिदाम सँ और केओ नहि जा सकलीह। तँ अपने जा कऽ दिवागरी करौने अथिहऽ। विधि व्यवहारक हेतु 'मनिआर्डर' जाइत छी। किहिरिस्तक मोदीक वस्तु सभ कीनि कऽ नेने जैअऽलैन्ह।

जे रोगी क भाइय से वैदा फरमाइय। मधुकान्त बाबू राठी लडटीक देहाती किहिरिस्त के फाडि रईक टोकरा में फेकलैन्ह और अपना घन सँ लिस्ट दियार करय लगलाह - 'लेडीज बाच' 'हड्डाई' 'ध' 'पूटी घाँस' (जनानी हाथक धड़ी), ऊँच एंडीक जनानी जूता, शूगर-मज्जा) इत्यादि।

एहि धर एक संगी सँ फोटोक 'कैपस' और दोरारा सँ बन्दूक मँगनी फैललैन्ह। तखन शिकारी सूट पहिरे, हाथ में चाबुक धुगवैत शान सँ सारा पहुँचलैन्ह।

सारा एहिसे नदर दूर दूर कर दिव छी जेहन अन्धक जमोने गहलक। फेर बर्णन एहि लैखनीक सामर्थ्य सँ बाहर अछि।

परन्तु भाग्या न जना वस्तु। धरैक नहि न माछ गेलैला उत्तर छकरी छुनक। किएक नहि जाइत छैय। जखन सारा पुन पर ते किएक पुडुछि जाइत छैक?

तैक अग्रध मधुकान्त बाबू के सारा सुँचलैले और एकपरी शयन करा पर ताम फैललैन्ह। पुनरान्धक पक्षी दाग पर बटालक मोहर लागि गेलैन्ह।

तीन राति धरि ओ हवाकतक आनन्द लेत रहलाह। साननिध निमग्न एक ओ शक्ति हेतु भेटो नहि भऽ गेलैन्ह। और चारिम राति जहिया भेट होलैन्ह तहिय दिनगरी दिवागरी भऽ गेलैन्ह। मधुकान्त बाबूक सकल सोचत मनोरथ धाखलक गेलै जका बन्द भल स्टेशन पहुँचलैन्ह। आब एके धर ट्रेन में वाप फुटलैन्ह।

देतिग रुम' में मधुकान्त बाबू 'हुनका' सुना कम अपना छोटका सार के कहलथिन्ह - देखू तेल में अदरक जतिन के अगटुहेट होडी (सुसकृत मासेला) जका वैसय पड़लैन्ह। केओ चिन्हाय रहलैन्ह नहि। 'फस्ट क्लास' में हमरा संग बैसलीह। कनेको छदैवाक काज नहि।

मधुकान्त बाबूक मन में एके भयना नृत्य करय लगलैन्ह जे - हे भगवान! कहुना 'फस्ट क्लास' खाजो अन्नय। नखन 'बाइक' के कलेज गले बला कैशन बना कऽ फोटो खिचलैन्ह। गाप पर एहन मौका कहीं भेटत? यदि ई नहि भेत त एखन यन्त्राक आनन्दे की?

दारु बजे राति कऽ जखन ट्रेन आएल त मधुकान्त बाबू एवरिन, भरीया तथा छोटका सार के सब सामान सहित दोरार हवा में चडा देलथिन्ह और अपना हाथ में बन्दूक लय, 'बाइक' हाथ में 'कैमरा' धरा, 'फस्ट क्लास' में आवि कऽ बैसलैन्ह।

भयभयशा हवा एकदम खाली रहलैन्ह। मधुकान्त बाबू के पूर्ण स्वराज्य भेटि गेलैन्ह। अथ कोन परबहि? इहए स्टेशन न जैवाक अछि। निगली, रहिया। और एहि बीच में दोसर के फस्ट क्लास में अदित अछि।

धोषाडीहा स्टेशन छुटैत देरी मधुकान्त बाबू नवदधूक पोथ हटा कऽ फेकलैन्ह और कहलथिन्ह - आब ई गज बाज उलाख और दोसर 'सेट' जे हम देत छी से पहिर। तखन अहाँक फोटो हैन, केवल एक घंटा 'टाइम' अछि। एहि बीच में सभटा भऽ जैवाक बाडी।

मुघा नवधू के लगलैत देखि मधुकान्त बाबू स्वय अपना हाथ सँ मडरीका बहार कऽ देलथिन्ह। तखन पहुँची उत्तरैत कहलथिन्ह - ई छी छी टा लहरी जे अछि से बहार कऽ फेकू और 'रिस्वाय' लग दिवऽ। लख हम पंहरा देत छी। मधुकान्त कहलथिन्ह - आब ई झालर गेट'बला 'बनाउज' बाहर कल और हम जे देत छी से पहिर।

बोडशी चमेली जलजल उत्तरवाकनाम सुनि कदम पुनवत बटकिता भऽ उठलैन्ह।

कहने से तुम्हारा ध्यान अर्थात् मंडित कलत्रादि - यदि आप के देखते अति?

अन्तर्गत अनेक गोष्टी आहेत. त्यांचे निराकरण करणे गरजेचे आहे. त्यासाठी सरकारने प्रयत्न करावे. त्यासाठी कोर्टाच्या मदतीची आवश्यकता आहे. त्यासाठी सरकारने प्रयत्न करावे.

चाना नई अत्र देना कि कनी नई छम्हा। ओं छिने तः चान भः गेने  
 एवैतः। मनुकः वनु हुनक आचार्यन अभुयः दक्ष बाँके राँदे गम्हा। किन्तु  
 गम्हासत एक भरी कटिगल एहि गेनेह। किन्तु त एहेनुह अम्हा तौ कीनस  
 नुहुनुकी अचान नुहः गम्हासत भेजेह।  
 कः नुहः गम्हासत भेजेह।

अब यह कहना चाहिये कि एक देशी विमानक वल प्रयोग एयर फोर्स  
असमर्थ भवन, गवर्नर अदालत अनुरासक समा के अन्तर्गत कय अपना स्वाधीनताक  
हम सबक दृष्टि रक्ते।

अब मधुकान्ता बाबू साहं सँ कुछ ठगलन। समाप्त - मध्य-मध्य ई की  
 देवानी नकां कथा लटकीन थी और ओकर मे धानक मोली बनल थी। जि। ई पोंपर  
 मधु खोले कऽ मधु विदऽ और मधु जे 'अंडर वॉटर' दैत छऽ सँ गेलि। ई अहि  
 मधुकान्ता बाबू एक मिलनिल पारदर्शी माया बाहर बैलनि।  
 अंगलजी कटास करीत रहलनि।

श्रीपद्मजी कदास करीत कदाचधन - आय आतां नीक जयकी हमरा वेपरी  
जन्म पाईत ही मे नहि हैत। ने धेय मे भेल।  
यधुमन्य वासुदेवजी -

गुड मॉरिंग नॉरे कर। आधा राति कड एहन अन्हार में बाक्ता में ककरा सुन्नैक? हे  
 लिवर! हाग लिवर दो (लेवरी), मित्र देत छिदेक। अथ न भय?

कौतुक से कहते हैं कि, 'मित्र' देन दिए एक। अथ न भेन?

एलेक्सी दूई मुन्गी भाषा में बेर बेने छलीक कि मधुकाना बाबू 'स्विच' लकीलेन। बिप्लवक प्रकाश में अलमय्य खैत्य में मादकताक किरण छूटि पड़ल। एहि बेर में 'बाइफ' सेवन 'स्मार्ट' (कटरि) लगैत छल। मधुकाना बाबू खाना पान कर छलैत शोमय लगैतल।

मधुकान्त वाष्पक ध्यान भग्न नैनैह । ओ ऐय-हास क-

जैसे साँड़ों से कि नकलें रह्य?  
 रगक साँगी बहार देलाने और सिद्धावय लगल दिक - एकत दजला 'सखल' सँ  
 दिके हों हों अना नहि। दौहिक नर दऽ कऽ आय विपिक। नया प्रेक्षण मे दक्षिना  
 दिके इतर रहेन छि। आब पुनिय दैर छी। आँचाक पून पिट पर फहरइन रहत।  
 हँ अग दिक भन।  
 एय प्रयसर मधुकान्त वायु फलपूण हग मे पत्नी के सार्द पंखीरलन्हि।

[illegible]

ननु कान्त वातु श्रुतं यच्छतः यद्वा केनान्तं तत्र तत्र। तैः वाच्यम् न तत्र  
भाष्ये। अतएव तान् शेषं धत्ते, तावत्तु, त्रिभिः (रक्तं, गन्धं, रसं) यदि भुज्या  
तन्मन्त्रकं भुज्या लाये तत्र।

मधुकान्त बाबू पन्नांक नेत्रनिर्मितेन मुञ्चनहृत पर 'स्मो' सागवय सागलाह।  
नरिन्ना मनःयोगेन जेन कोनो पूजक देवाक प्रतिमा पर चन्दनक अनुलेप करैत हो।  
ओ देवीवर्तक आश्विनारक, पेन पोछय हेतु नैगवा उदौनह छय कि, एकएक  
गाड़ी रुकै गेल।

मदुखान्त थाकू पानी-पूजा मे मेहनत तालीम कुतान मे समयक गति विधि धन  
नके धनिक। दोन कोना 'होम सिमल' पार कय निमन्त्रक जेठपान पर पदुधन से  
हुनका विविध नति भेलैन्ह। दोसर, हुनका विषयक एगिन्ह ने भयटिपडी सँ एकर  
केओ 'फाटै दलार' मे नतिर आओल, अतएव ओ 'निश्चित भव पुन पानीक  
प्रसाधन मे लगल।

परन्तु एजान्तक सुख विधासः सन्ति देव्यन केनैह । ज्ञो दरवाज पर धन  
मालकैत आकरिन्क बांदा पढि मधुकान्त वयु स्थान नन्ति गीतह । इ के अरुण  
वेर पर अवि रंग मे भंग कैलक सभटा रक्की योजने मनुष्यह दलक ।

तब उन पुन दरवाजा भट्टभट्टाएल। मयूकान् धादु जल्दी जल्दी खीं धीं बूझाव  
सगलाह - देखू, मुँह पोछे कऽ पाउडर लगा लेह। ई गाल रंगवाक 'देन्ट ऑडि। ई  
'लिंगरदक' अछि ठोर रंगयवला। ई 'मेल कलिंग' अछि मछा रंगयवला। देखू, एकी  
टा कियो छूटव नहि। आव हम जाइ छी। अहाँ भितर मे अपन रामछ कऽ धऽ कऽ  
वहराएव। त्यम टा वूडि लेलहुं ने? और हँ, डक ने जेनो 'जेटवमिन' (भट्टवमिन)  
अरुपि रहल अछि। तँ दहरीता पर इंगलिश 'देपर' (भट्टवार) उठा कऽ पडव लगव  
जाहि सँ अहाँ के 'एजुकेटेड गर्ल' (शिक्षिता लडकी) दुख्य।

इ कति मधुकान्त बाबू भट्ट दऽ बाघरुमक फोवाड बहर सँ बन्द फऽ घुरर पजारलन्हि । ता ओम्हर दरबार कुमल अ खुलीक पाछाँ एह राजजन भीतर ऐतह आगन्तुक कँ देखितन्हि मधुकान्त बाबू जेव 'मिगार' भूट्रा मे दखि लेलन्हि । ओ पछलखिन्ह - की छै मधुकान्त । तौ कतय सँ?

ई मधुकान्त यवक पिप्पली मधेश बद्ध उलथिन्त । मातृकान्त ब्राह्म जिह्व संकुचिन्त  
होत सनक पैर एष्वि कहन्तधेन्त - विरागमन्त करीन्त ज्ये शिरसि ।

महेरा - की नीक जकां होदा देखीइ कि न? वतनय कतय छयुन?  
जगानी गड़ी में?

मधुकान्त दावूक मुँह सँ अनायास यात्रर भइ गेलन्हि - जी हँ। अपने कतय

जा रहल छिऐ?

महेश - हमहुँ गये जा रहल छी एतय निम्न मे एक मोलेश्वरक ओनि  
दाम किछु रुपया बौकी छल से धमाल करम आएल छलहुँ।

ताबत गाड़ी चलम लागि गेल। महेश बाबू मुनया लग बंधूक देखि पुछलथिन्ह -  
- ई बन्धुको ओतहि देखलौह अछि?

मधुकान्त बाबू शिरमण होइत कहलथिन्ह - जी हँ। अपने राति मे एतक  
तकलीक कऽ कऽ कियेक बिधा भेलहुँ? भिनससक ट्रेन सँ एने बेसी आराम होइत।

महेश बाबू हँसि कय कहलथिन्ह - सहन-तगएक काराबार मे आराम नहि  
देखल जाइ छैक। फालि भोरे एक खुदका केँ नान दऽ देयक अछि। यदि अपन  
आराम साकय लागै त गरीबक काज कोना चलैक?

ई काहे महेश बाबू काज पर जनउ छल? बधिरा दिश दिख भेलन्ह।

मधुकान्त बाबू समझल भय कहलथिन्ह - ओह मे एकटा 'लेडी' गेल छथि।

महेश बाबू पुन अपना सीट पर बैगै। पुछलथिन्ह - केहन 'लेडी' छथि?

मधुकान्त बाबू अन्तर्जन्म वनेत कहलथिन्ह - वहि मे के छथि। प्राय कोनो  
धर्मालिन लेडी छथि। वेर 'कन्चर्ड' (गुरुकुला दुखि पहुँच छथि।

ई गय होइतहि छल कि 'बाधक' पुछल। 'श्रीमती' 'केशन' केँ दहरेलीक।  
हुनक चेहराक रंग देखि मधुकान्त बाबूक रंग उठि गेलन्ह। हे भगवान! ई की  
श्रीमतीजी सभटा चौपट बैलन्हि। नक पर 'सो' लगल। कनपड़ीपर 'पाउडर' छेलल।  
गालपर 'लिपिस्टिक' डेउरल। दोर पर 'नेल पॉलिश' चमकल। हाथ हाथ बहुरूपिक  
वेप बना लेलन्हि।

मधुकान्त बाबू ऊरे दोसर दिशि ताकय लगलन्ह। कनेयो दाढ़ दुहू हाथ सँ 'ब्यूटी  
वीक्स' मेने करल जूता मे फटपवक लौलि-लौलि कऽ रंग देल आगो चढलन्ह। किन्तु  
ओहन ऊँच एँडी पर 'मैलेस' (संतुलन) ठीक नहि रहि सकलन्ह। पैर लडगडगुत देमि  
ओ तचैन-तचैन 'ब्यूटी वीक्स' मेने-देने महेश बाबूक आगो जा खसलन्ह। हडबडा  
कऽ उठय लगलन्ह कि ओनाक बिन्यासपूर्वक लडगल चिकन 'जरजेट' राँपक केपुआ  
जका सररि कऽ फराक भऽ गेलन्ह। आय मधुकान्त बाबू केँ दूअ पहलैन्ह जे पुरुषक  
हाथ सँ बान्हल साडीक गेंटे बेसी काल नहि टिकि सकैत अछि।

ककाजी एक बेर कनछिया कऽ श्रीमतीजी दिशि तकलथिन्ह और मुसकुरा कऽ  
अपन कागज देखय लगलन्ह। मधुकान्त बाबू पर नौ मन पानि पड़ि गेलन्ह। हे  
भगवान! सभटा बैल-बैल व्यर्थ भऽ गेल।

दु मिनट बाद मधुकान्त बाबू किछु आश्चर्य भेलन्ह। किसेक त श्रीमतीजी आय  
अपना सीट पर आ चुपचाप अखबार लऽ कऽ बैठ गेली। मधुकान्त बाबू केँ सन्तप  
भेलन्ह जे खैर, अजय भगवती देपरक अह भ सभ ता दाब छरि गेलन्ह।

एतनु हे भगवान इ की? श्रीमतीजी, इन्ट गजलट हाथ मे लय पडय

लगलन्ह। कोना संकेत बैल जाइन्ह जे सुन्टा स्विच। ककाजी पुन एक बेर  
मुसकुरा देखलन्ह। मधुकान्त बाबू पछि कऽ रहि गेलन्ह अतहु ककाजी केँ तब्य त  
नहि भऽ गेलन्ह?

महेश बाबू अन्ते री केँ अन्य भय-भयधेनी जनि मधुकान्त बाबू केँ  
पुछलथिन्ह - ई कतय गेलीन्ह?

मधुकान्त बाबू अँटा कऽ कहलथिन्ह - पता नहि कतय गेलीन्ह। प्राय  
भपटियाही उत्तरधि से संभव।

कहयक त कहि गेलथिन्ह, किन्तु मधुकान्त बाबूक करेज धर-धर खोंद  
लगलन्ह। ककाजी त संगे छलैत छथि। तखन आय कोन उपाय हैत?

अना-जना रहिया स्टेशन लागलन्ह तय नेना-तेना मधुकान्त बाबूक छाती  
घड़कल जइन्ह। अन्तत रहिया स्टेशन पछिछि गेल।

महेश बाबू लेटफाने पर महान लागन देखि कहलथिन्ह - देखह, कनेयो केँ  
सबरी त पण्डल छैन्ह। ते जा पठेन हुनका जनाना गड़ी सँ उबारि लहनु गऽ।  
तखन चटपर कटार मग सँ लगान जगदइन्ह। तीन मिनट गाड़ी टहरै छैक ताबत  
हमहुँ अपन बिस्तार सारियैत छी।

मधुकान्त बाबू बहुरे मेने फूली सँ दोसर हाथ मे गेलन्ह और मरिया,  
खवासिन तथा सार केँ उगारलन्ह। राम दहा उगार गेलन्ह।

ओकर महेश बाबू अपना डकाक सामने लेटफाने पर टाढ़ छलन्ह। कनेयो  
केँ नहि देखि पुछलथिन्ह - कनेयो केँ किये नहि उतरैत छमुन्ह?

मधुकान्त बाबू जनानी गड़ीक सागाप जा घबरावल सन मुन दना कऽ  
बजलन्ह - जाहँ ककाजी! एक टा भारी गडदइ भऽ गेल।

महेश बाबू पुछलथिन्ह - से की?

मधुकान्त बाबू धमकाह - जनानी गड़ी मे करहु देखिते नहि छिरेक।  
घोहरडीहा मे सब केओ सागाप चढायल लागि गेल। ओ प्राय भडके मे रहि गेलैक।

महेश बाबू क्षुब्ध भय बखलन्ह - ऐ, गेरा लोकनि ओनेक गोटे छलाह और  
कनेयो अतहि छुटि गेलथुन्ह। वाह र वाह! इ त श्रीमतीजीक घरना भऽ गेल। अच्छा  
चलाह, घोहरडीहा गार दबौक।

मधुकान्त बाबू धौंकेक दूर धरि मुँह कनेते पिरोक पाछो चलाकाह। ताबत  
छठी पड़ि गेलैक।

मधुकान्त बाबू एकाएक हडबडा कऽ कहलथिन्ह - जाह! ककाजी। हमर  
'कैमरा' त गड़िए मे छुटि गेल।

ई कहि ओ दौडलाह और चलेन गड़ी मे छडि कय छडि गेलाह। ककाजी मुँह  
बधि कऽ तफिते राखि गेलन्ह। अजय भगवती देपरक अह भ सभ ता दाब छरि गेलन्ह।

अनुभवी ककाजी केँ आय त देयक भोजन नहि छुडी चढैन्ह। कतय



सभ के बहल-बिहल घर-कनेयों अपटिपार्की नैलथुन। आब तौहू सभ भरि सति आराम करे जे।

गामक खबरा चानल - घर पर बुका मलिक दड़ जोर प्रसिद्धि। सूर्योदय सँ पडिगलि कनेयों के गृह-प्रवेश करवाक मयूस छलैन्ह। ताकी सँ राताराती कहार-महफा लऽ कऽ ऐँजियेनि। आब हमरा सभ पातकान बैसि कऽ की करे जाउ?

सावन स्टेशन मारटर टिऊट चले करक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह। भरिया खवासिन तथा सार, सभक टिकट मधुकान्तो बाबूक संग रहैन्ह। राय केओ जह-थक भय चुभाओनक डाला लग ठाढ़ भेल कन्हकी पड़ल रहलाह।

भिक्षा चवू भुख होइत गजलाह - देख, आदकान्हक अइरोजिया छैऽ। सभ बेडन अवारा बहराइत अछि? हमरा सभक दिवाह-दिरगमन भेल मुदा कहियो एना कैतहु? ई त सभक नाक कटलक। हमरो सँ गुण्डइ कैतक कालेज मे पडि कऽ बेट सभ लखेरपनी रिप्रेत अछि? भला कहू त! एहि लूथपनी सँ कान लाभ? हं, एखन युवमस्याक तरंग छैन्ह। जे ने कयैन्ह। जखन गदहपचीती छुटतैन्ह तखन लोक हैलाह।

ओम्हर रहरिया और अपटिपार्की बीच मे की सभ घटना घटित भेल से पादक-पाटिकाक कल्पना पर छोड़ि देल जाइत छैन्ह।





## समर्पण

जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक द्वारा बहा दैत छथि;  
जनिक प्रयाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र,  
सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बालमे अद्भुत  
रस ओ चमत्कारक वाशनी घोरि दैत छथि;  
जे मर्मस्पर्शी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्सल  
मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि;  
तेहन चिर आनन्दमूर्ति,  
परहास-प्रिय  
खट्खट कका कै—  
खदीयं वस्तु पितृव्य ! तुभ्यमेव समर्पितम्

## खट्टर ककाक परिचय

खट्टर कका छथि मरत जीव। सर्वदा आनन्दमूर्ति। हुनका छंछ धरि भेल चाहेठ और कथु नै प्रयोजन नहि। जखन नजरि आबि जाइत छथि तमन के हुनकर बागमर कऽ सकैत अछि? तौहन यिनोदक धर्मा कथु नै छथि जे आनन्दक धाँढ़े अछि। और जहाँ कनक बीचमे टोकारा दिखैत कि फेर द्यु जे सजन लुकीक फूलाझड़ी छल तौन अछि।

आमि दिन दान्द ही तऽ खट्टर कका पलक्ष लगौने कृतिधारक रसम दूध कोट रहल छथि। हमरा देखिमाहि बजलाह आथत आचह। असनी बेर पर कुम्भे गेलाह।

हम कदमिन्त खट्टर कका हम एक काज सँ आएल छी।

खट्टर कका बजलाह तनर ओहिठाम केँ काज सँ नाह अवेत अछि।  
हँ, गम करवाक छी त आथह।

हम कहौलाह तौ तोमे त आएल छी। हम दान्द छी जे अपनक गम सथ पुस्तकाकार छथि।

खट्टर कका हम अपनार्थक बुझौने गिरेन बजलाह। हो केहन कोन छह?  
बलहुँ अपनी गारि सुनबह, हमरो सुनबह।

हम पुछलिऐन्ह—से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका तौने गमय कल मिलैत बजलाह। हो हम ही मरकी, तौगमे कलम की बजा नाह। आछ नकर सँन देखन? एक त जाहिना बजल छथि। केँ हो नासिमा बजैत अछि? केँ हो दान्दक? माथो छथि कऽ और किऐक दुर्गम करैव? हँ म पीवह।

हम बजलिऐन्ह—खट्टर कका तौ त बजकि—मेमे भेटैत अछि। मेहन रस, जे की उपन्यास नाटकमे भेलस?

खट्टर कका बजलाह—आब तौ काज काज लागि गेलाह। हो एनेक प्रश्नमे जे करि छल ताहि सँ बस एक सँझ ते सन दऽ कऽ थो अझ देह।

हम कहौलाह तौ तोमे त आएल छथि। हम दान्द छथि जे आनन्दक धाँढ़े अछि।

खट्टर कका तौने कोस गोरन बजलाह—हो, जीवनमे और कैह की?

असर खन सगरे इधमेलवतुछवम

मिष्टान्न मिष्टान्न न मिष्टान्न मिष्टान्न

हम कार्यालय बंद करके, प्रत्येक 11.45 बजे 15 मिनट का ब्रेक लेंगे।  
आपें। यहाँ (हरे रामजी) रंगीत भवन में सुनने में आना है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 परमं हि त्वत्कृतं लोकाय नमो ।  
 त्वत्कृतं लोकाय नमो ।  
 त्वत्कृतं लोकाय नमो ।

1947-48 का 1785 दिनांक 22 हमरा आगौने नका देखि। पुरखानि-देवत  
भेनेक अर्पण

हम कहलिंगेक अपूर्ण भन अछि परन्तु अहिक नगर छी जायत न एह  
नं देखि अनुप होन

राज्य के विकास के लिए हमें एक ही दिशा में चलना चाहिए।

राम कहसियेन्ह—खट्खट कक्का, ताही सैं त ओ और घेंशी चटकार होइत अछि ।

[illegible]

२३) न सोम भूमिकामे इ ए न सम कश्चित् श्लोकः ।

मृष्ट कला जगत्, अखन की है भाव / 'संज्ञा' के मध्य भगवत्पाद से भाव  
 प्रसन्न। और संज्ञा वा विज्ञा में ही हमारा । यदि मध्य भक्ति बंधु अर्थात् मध्य  
 भाव प्रकाश में है तो भी अंग गण उपारसीक रूप न हवा अस्मिता नाम मध्य  
 भाव व्यापक है और दल विज्ञा।

हम कल [redacted] हर कका, हमरा न हर होइ अछि जे ताक घ [redacted] म?

सूची १ : पंचायत समिति क्षेत्रों में १. लोक जन सेवा (जि. ३ सीडी)  
सूची २ : पंचायत समिति क्षेत्रों में २. लोक जन सेवा (जि. ३ सीडी)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गड़ कका हो हमर मुँह अपन सक्क नहि अछि। एही छारे स रुभा  
संसाइटीय नहि नाइ। की जाने, कतय छी बजना जाय ? हम छी इनकल  
लोक। झोकमे कश्चन बान दिस बहि जाएब तकर कना टेकान ? माँही न न  
द्वारे झीक दैल छैल ।

84. 'सूत्र' के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

विद्युत कक्षा-एकी द्वारे से कक्षगत से धरेत रहि अछि । सभ से जगड़ा छान  
रह्य अछि ।

रम्-पर-तु, अर्थात् गण्य भूतन गोचक इदं च अर्थात् जे इगण्डो कर्त्तव्यार कर्त्त  
रम् भैरव छिन्न तखन अर्थात् गण्य इगण्ड त गार्ह अर्थात् इन्तिहार रत्तिने चोरा कः  
पदुने करवाह ।

खुश होकर—वेरा। जी हमरा गण से लोक की किछु रस भेटि जाइक न  
छुपयह।

खट्टर केका पुत्र चक्रमाह की भाग्यी पुत्रकट लाल जाट है जन्मे बर्ष  
करे है। तैं लौह-पटौह वाल लोक की कहि हैत स्थिर। रंभव जे किछु गोदा  
के दम नीन्द्र धोख लगेन परन्तु किछु गोदा की तेहन झंसिभर लगैलन जे ऊर्ध्व  
नाह सैं पानि बहय लगैलन तैं गभारा गभ्य जुनि छपावह। जे वक्रत रकट  
हाइक से यात छपीनहि मुशान।

हम कहलिये—बंश, त हम चुनि चुनि कः, खदगधुर गम दैत छिंक।

सम कर्मलिप्तेन वैश, तत्रान आशीर्वादं दियः ।

खट्टर ऊका हँसल बजल ह. आशीर्वाद यैत दैत छिओत जे महापंडित लोकनिक फराही सँ कभार बौचल रहि जाओ।

और सैड खूब कफ़ाक तरंग आपनैक हाथमे अछि ।

## खट्टर कका सँ भेट

खट्टर कका इनामक मज्जा पर बैसल कूड़ा करीब करीब। हम कहलें-त खट्टर कका! अहाँक नाम सऽ दूर दूर धरि पहुँचल भ, तब

खट्टर कका यऽ लाह-ई, सुकिये नाम कि कुकिये नाम! तो मज्जा मज्जा मज्जा छपल तब चारु कलत परिर गेल। संपूर्ण मिथिलागो

दम-केवल मिथिलो कियेक कहेन छिउक? आता आज मायामे अहाँक अनुबन्ध छपि रहल अछि। हिन्दी बहला गुजराती परल

खट्टर कका मज्जाक से हम छी भयेंगे। खट्टर की बाज जग व लकर कोनो टक्का रहल भाउ? तब हम के कऽ एक महत्त्व देन जोड़क।

हम कहलियेन-खट्टर कका, 'मज्जा थक' 'धम धम' बसबस जग व बहुत गोर छथि। परन्तु अहाँ सन कहययता एकटा अही माय छी ज एकरा माय अहाँक सुनि लेत अछि से दोसर जोड़ने भेल छियैत अछि। तब हम न अहाँक गप छपल अछि, तसिया सँ लोक लालायित अछि जे खट्टर ककाक ओर ओर नय कहिये दसराएन।

खट्टर कका वज्जल-भाव दे। तो मज्जा न भेन विरल उठल भ छी मज्जा धरि चलेन रहल। आब फर बवंदुर रीवाक इच्छा होइ छीह?

हम कहलियेन-खट्टर कका पाछन नाकनि ज मज्जा तब छथि तबकर अहाँ छीक उनन कहेर छिउक। त ओ लोकनि चारु मज्जा सँ तबकन छथि

खट्टर कका वज्जल छी, क वने छह। हम अपना मज्जावे सँ बचल छी, जे वान बहुत गोरक मज्जा सँ मुनेत छिउक से बिनु कउन हयन। तब नोके भाइत अछि।

हम कहलियेन-खट्टर कका किछु मोटे कहेन छथि जे अहाँ अपन तरामे एहि देशक संस्कृति के भूमिया देन छिउक

खट्टर कका हँसी मज्जाक से बचल। एहि देशक संस्कृति की बताशा छीक जे हमरा माछक लोटाके पड़ेत देरी गलि तबक न मज्जाक सँ कतहु पछाड़ छहनेक अछि?

\* मिथिला मज्जा - खट्टर कका के लऽ कऽ कदाएक मज्जा धरि मज्जाक विषय धरि रहल। (१९५४, पृष्ठ १० बचल धरि)



हम कमलिऐन्ह-खहर कक्षा, किछु गोदाक आश। छै-न ते अहाँ पर पाइल नय  
रंग रङ्ग न भईतु ।

१. २५ २. ३० ३. ३५ ४. ४० ५. ४५ ६. ५० ७. ५५ ८. ६० ९. ६५ १०. ७० ११. ७५ १२. ८० १३. ८५ १४. ९० १५. ९५ १६. १०० १७. १०५ १८. ११० १९. ११५ २०. १२० २१. १२५ २२. १३० २३. १३५ २४. १४० २५. १४५ २६. १५० २७. १५५ २८. १६० २९. १६५ ३०. १७० ३१. १७५ ३२. १८० ३३. १८५ ३४. १९० ३५. १९५ ३६. २०० ३७. २०५ ३८. २१० ३९. २१५ ४०. २२० ४१. २२५ ४२. २३० ४३. २३५ ४४. २४० ४५. २४५ ४६. २५० ४७. २५५ ४८. २६० ४९. २६५ ५०. २७० ५१. २७५ ५२. २८० ५३. २८५ ५४. २९० ५५. २९५ ५६. ३०० ५७. ३०५ ५८. ३१० ५९. ३१५ ६०. ३२० ६१. ३२५ ६२. ३३० ६३. ३३५ ६४. ३४० ६५. ३४५ ६६. ३५० ६७. ३५५ ६८. ३६० ६९. ३६५ ७०. ३७० ७१. ३७५ ७२. ३८० ७३. ३८५ ७४. ३९० ७५. ३९५ ७६. ४०० ७७. ४०५ ७८. ४१० ७९. ४१५ ८०. ४२० ८१. ४२५ ८२. ४३० ८३. ४३५ ८४. ४४० ८५. ४४५ ८६. ४५० ८७. ४५५ ८८. ४६० ८९. ४६५ ९०. ४७० ९१. ४७५ ९२. ४८० ९३. ४८५ ९४. ४९० ९५. ४९५ ९६. ५०० ९७. ५०५ ९८. ५१० ९९. ५१५ १००. ५२० १०१. ५२५ १०२. ५३० १०३. ५३५ १०४. ५४० १०५. ५४५ १०६. ५५० १०७. ५५५ १०८. ५६० १०९. ५६५ ११०. ५७० १११. ५७५ ११२. ५८० ११३. ५८५ ११४. ५९० ११५. ५९५ ११६. ६०० ११७. ६०५ ११८. ६१० ११९. ६१५ १२०. ६२० १२१. ६२५ १२२. ६३० १२३. ६३५ १२४. ६४० १२५. ६४५ १२६. ६५० १२७. ६५५ १२८. ६६० १२९. ६६५ १३०. ६७० १३१. ६७५ १३२. ६८० १३३. ६८५ १३४. ६९० १३५. ६९५ १३६. ७०० १३७. ७०५ १३८. ७१० १३९. ७१५ १४०. ७२० १४१. ७२५ १४२. ७३० १४३. ७३५ १४४. ७४० १४५. ७४५ १४६. ७५० १४७. ७५५ १४८. ७६० १४९. ७६५ १५०. ७७० १५१. ७७५ १५२. ७८० १५३. ७८५ १५४. ७९० १५५. ७९५ १५६. ८०० १५७. ८०५ १५८. ८१० १५९. ८१५ १६०. ८२० १६१. ८२५ १६२. ८३० १६३. ८३५ १६४. ८४० १६५. ८४५ १६६. ८५० १६७. ८५५ १६८. ८६० १६९. ८६५ १७०. ८७० १७१. ८७५ १७२. ८८० १७३. ८८५ १७४. ८९० १७५. ८९५ १७६. ९०० १७७. ९०५ १७८. ९१० १७९. ९१५ १८०. ९२० १८१. ९२५ १८२. ९३० १८३. ९३५ १८४. ९४० १८५. ९४५ १८६. ९५० १८७. ९५५ १८८. ९६० १८९. ९६५ १९०. ९७० १९१. ९७५ १९२. ९८० १९३. ९८५ १९४. ९९० १९५. ९९५ १९६. १००० १९७. १००५ १९८. १०१० १९९. १०१५ २००. १०२० २०१. १०२५ २०२. १०३० २०३. १०३५ २०४. १०४० २०५. १०४५ २०६. १०५० २०७. १०५५ २०८. १०६० २०९. १०६५ २१०. १०७० २११. १०७५ २१२. १०८० २१३. १०८५ २१४. १०९० २१५. १०९५ २१६. ११०० २१७. ११०५ २१८. १११० २१९. १११५ २२०. ११२० २२१. ११२५ २२२. ११३० २२३. ११३५ २२४. ११४० २२५. ११४५ २२६. ११५० २२७. ११५५ २२८. ११६० २२९. ११६५ २३०. ११७० २३१. ११७५ २३२. ११८० २३३. ११८५ २३४. ११९० २३५. ११९५ २३६. १२०० २३७. १२०५ २३८. १२१० २३९. १२१५ २४०. १२२० २४१. १२२५ २४२. १२३० २४३. १२३५ २४४. १२४० २४५. १२४५ २४६. १२५० २४७. १२५५ २४८. १२६० २४९. १२६५ २५०. १२७० २५१. १२७५ २५२. १२८० २५३. १२८५ २५४. १२९० २५५. १२९५ २५६. १३०० २५७. १३०५ २५८. १३१० २५९. १३१५ २६०. १३२० २६१. १३२५ २६२. १३३० २६३. १३३५ २६४. १३४० २६५. १३४५ २६६. १३५० २६७. १३५५ २६८. १३६० २६९. १३६५ २७०. १३७० २७१. १३७५ २७२. १३८० २७३. १३८५ २७४. १३९० २७५. १३९५ २७६. १४०० २७७. १४०५ २७८. १४१०

खट्टर कका सान्त्वनाक बनग खइव वज्रजल अउ नौं हमर सभदा भेद  
एकते दिनमें नुई सज्ज? ही भगवान् ज जे नुं आ दूक वंशज छी। एहि  
बन के दिऐक बिमरि जाइव अउर न न नम विमरि धार देवद न न न  
आमक वाइजाद यानदह न प्रमन मोह बिना नुमेरक बनग को

हम पुनरा माजदम तीन कलोनएन नखन अउर विध, जे हम दोसर भाग  
छनावी परान् मरि वर हउ अहाँक परान् नम राम खोलन देव

खट्टर कका वज्रजल-अर नखन कान करवो जौन करिह, एहि न गाना  
नहीं जाएव। धर्म जनका चुन भाव अहि न दूक विमरि अउर न न न न न न न  
कको के पून कलन अउर न न न न न न न न न न न न न न न न

हम कलनिक नम, न न न न न न न न न न न न न न न न

खट्टर कका वान  
न न

हम कलनिक इ त शाप भन भाव नखन न न न न न न

खट्टर कका सारिभोक वद न  
हमर दोगर मूर वद न

हम कलनिक-खट्टर कका, न  
न न

खट्टर कका मुसदुगन व न  
न न

हम कलनिक-नाहिने त देरी लागत। तावत

खट्टर कका वज्रजल-वनी! छपी! किछ नन चान त रोय एहिना  
विमरिपत सखे। बिना नम परिहासक जीवन को

## नवीन संस्करणक भूमिका

### निवेदन

खट्टर कका विनोदी व्यक्ति छथि। हुनकर प्रत्येक बात विनोदपूर्ण नइ किं  
वार्त्तिक संपूर्ण जीवने विनोदमय छल।

खट्टर कका के लोक अभिनव चर्चक कने छल। कारण जे हुनको सिद्धान्त  
छेक नवजीवेन गूढ़ जेवत। मूर नई छेक त स्वर्ग नरक अ न पणक  
पुनर्जन्म-माद धम अधर्म, राज के भोगक तरगमे दना देन छथि। वद भूराग  
भगशस्त्र तंत्र-मंत्र, जन्मिप आधुर्वेद-सभक शस्त्रो उड़ा दैत छथि। भवानी  
सँ परिहास करवामे नहि भुई छथि। पाखंडक खंडनमे नमया गग न न न न न न  
जे सामाजिक छुट्टि क अधविश्वास पर प्रहार करवाक इत गदा गग न न न न न न  
है छथि। तर्कक दायवेष लगा कऽ ओ प्रतिपक्षी के लिन कऽ देन छथि और  
बिनु 'इरदि चुन' वज्रवीने नहि छोड़े छथि।

किन्तु खट्टर कका शुष्क नार्कके न न न छथि। मरत सामान्यको छथि।  
हुनकर वान-वानमे तेहन श्लेष, वगक, कलंकित अर्द्धक तमकार भरल रहे छैह  
जे श्रोता मुग्ध गऽ जाइ छथि। कोनो काम स्वयं न लेहन छोड़ छैह जे-

प्रथम विमरिपत विमरिपत कलन

मभनदमनि परहृदयधुक्वध

नार्द्धनवायत इयातिनरां निगूढ़

नो गुर्जरिलन इवातिनरां प्रकाश

खट्टर ककामे तीक्ष्ण नक ओ मृदुल परिहासक सभिभण देखि संस्कृत कविक  
इ गर्वोचित स्तारण भऽ जाइत।

येगां योमलकाव्यकोशकलना लीलावती धा न

तेगां कर्कशकवप्रवचनः नार्द्धपि न न न

दे कलनकचनन करुहा सभनगारणिना

ते कि मत्तकरीनकुभशिरपर नारोपणीया धरा।

जे जेहन रमइ, निनका खट्टर ककाम ननेक अधिक रस भेटैह

खट्टर कका स्वच्छंद चिन्तन ओ यलिविलासक प्रवीक थिकार। सामान्यत  
जाहि वान के लोक छेक कऽ कऽ वज्रम अछि, खट्टर विनोदमय चुट्टि सँ कटि,  
ओकर उनटा मित्र करवामे और अऽ मून बात कहि श्रोता के चकित करवामे,  
हुनका बहु मन लगेन छैह। यह ककाम ओ जेहन प्रवीण छथि जे चुट्टी वज्रिन  
उनटे गंगा नहा दैत छथि। नैग हसीमे जेहन न न न न न न न न न न न न न न न न

स्वच्छता और स्वस्थता के लिए हमें अपने आसपास की पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिए।  
स्वच्छता और स्वस्थता के लिए हमें अपने आसपास की पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिए।

सङ्हर ककामे एक गुण क्त्वा भ्रवगुणं दिल्ले । ओ स्पन्दनं दुर्ध्रुवः शाय  
संकोच ता लङ् लप्ताइ न्हि रर्ये रर्ये । ते किउ गाद हाका गर शान्तता वा  
अङ्गीलताक दोषादीगण करित दुर्दान्त । परत येह वृत्ताङ्गना न्हि करे । य  
सङ्हर ककामे 'सङ्हरत्य' लैल्ल । मदि भिन्न भिन्न प्रसंग में ओहम ओहम अंश हद  
द्वय अङ्गुष्ठ, लङ् इन्द्रियेनैत जेना आनक चतुर्ती रैल्लि नृनि कउ पावय । यथाह  
ओ आदक खड धहार कउ दल जेय । जन्तुस सम सङ्हर कको के यथायत साद  
इने छिरेल्ल । आय हुनक मय मुन कीर सम सङ्ग

[illegible]

नय नय तरंग, यथा 'परात्मनः सत्त्वता', 'विधिनाटक संस्कृत' ७७, १५५५  
राहस्य केर आ विविक्त, पद्मिनीको ररग मधमे तत्के परमित्रनन को १५५५ १५५५  
गेन नैक ३ ओहो सभ रर मर्गि पाठक के १५५५ १५५५

खट्टर वकील कलेक्टर प्राय: खैर दुःख भड गेलेक। येक भूपाय सेहा आधुनिकता आवि गेब छन्ह। खट्टर ककर के एनि अकस्मिक रूपमे प्रत्यक्ष कार्य क श्रेय 'भारती भवन'क उत्साही संचालक श्री मोहन चन्दर खान क लेल हम समस्त मैथिली-साहित्य-प्रेमी समुदायक दिस से हुना धन्यवाद प्रदान करि छिएक। एहि प्रकाशन के खट्टर वनीचामे 'सामन प्रिंटिंग प्रेस क कर्माई मन्त्रालय श्री निशीथ कुमार खैर, मिर्जापुर अयोध्यानाथ सिंह चन्द्र नन्दा प्रिन्टर जी के सचि नेने छथि, तदर्थ हम आभारी छिएक।

आशा अति, खूबर ककाक ई नवीन, परियुक्त ओ परिकल्पित तरगावणे पाठक लोकनि कें और अधिक आनन्द प्रदान करतल

—लेखक

रानीघाट पटना  
१८-९ १९६७

## सूची

- १ इरी चूड़ा सानी २१
- २ गणेशायक जन्म भूमि २२
- ३ भास्कर महत्त्व ३०
- ४ आयुर्वेद ३५
- ५ रामायण ४३
- ६ दर्गापाठ ५०
- ७ ब्रह्मसामान्य ५६
- ८ सत्यदेवक कथा ६०
- ९ ज्योतिष ६९
- १० महाभारत ७६
- ११ देवतायक चरित्र ८१
- १२ ब्रह्मसूत्र ८८
- १३ शास्त्रिक वेधन ९६
- १४ प्राचीन आदर्श १०२
- १५ भूतक मंत्र ११०
- १६ धर्मग्रन्थ ११६
- १७ नैतिक गण १२३
- १८ मीमांसक धर्म १३१
- १९ मोक्षक विचार १३८
- २० भगवानक चर्चा १४६
- २१ धर्मक तन्त्र १५३
- २२ पुरातन सभ्यता १६२
- २३ मिथिलायक संस्कृति १७०
- २४ वाङ्मयक रस १७७
- २५ पुराणक चाक्षणी १८९
- २६ दर्शनशास्त्रक रहस्य २००
- २७ वेदक भेद २०९
- २८ खड्ग कथाक रचना २१५

## दही चूड़ा चीनी

खट्टा कक दहीन पर देगल भक्त घोलि लवणह । हमर अंग्रेज देश  
दहीनाह रीस । भोकर भरचोड़ गपल होक धुनि केर हउर ।

हम कहति लूत लड़क कका अउ जयधारी लीज छैक सेन सुनित करा  
आन ली ।

खट्टा कका फुलकि १००० दहीनाह-वाक वाह । तयन गोइल तयि आवह  
हु एकटा धईये कसैक व फी हैक ? .....है, भोग्य तेक की सभ ?

हम-दही चूड़ा चीनी ।

भइर बस बस, बान ग्राह मे सभ सैं उत्कृष्ट पदार्थ पैस होक । गोरसने  
सभ सैं भाग्यिक बस । दही अन्नमे सभक चूड़नाणि चूड़ा-मधुरमे सभक  
मूल चीनी । एहि तीनक मध्य वृद्ध सैं त्रिवेणी-संगम होक । हमरा त  
त्रिमोक्षक आनन्द एतिमे वशि पड़ैत अछि । चूड़ा चूनाक ! दही भूवर्षिक ! चीनी  
स्वर्णिक !

हम दहीन जे खट्टा कका एहन तरंग मे रहि । मभटा अइनुते दहीनाह ।  
अ' व काल अछिना हमर मृत्याक नाभ देखि गेलहुं ।

खट्टा कका दहीनाह हम । दही ली जे एही भाजन सें सांख्य दर्शनक  
उपनिषात भान अछि ।

हम चरित्त होइत प्रत्यक्ष (१) दही चूड़ा चीनी सैं सांख्य दर्शन । से  
कोना ?

खट्टा कका दहीनाह । एहन काले हठवड़ी न से लीस ? लखन बैल जाह ।  
हमर विश्वास अछि जे कविन नुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभव पर लीन गुणक  
वपन कऽ मूल ग्रन्थ । दही सत्त्वगुण । चूड़ा रजोगुण । चीनी रजोगुण ।

हम कहतिअछि । खट्टा कका, अर्थात् स सामन्य कथा अइनुते होइत अछि ।  
इ हम काल नहि मुक्त होइत ।

खट्टा कका दहीनाह । हमर कोन वाक एहन होइ अछि जे तो आनछाम  
सुनि सकवह ?



हम खट्टर कका त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कौना चकार केनिदक ।

खट्टर कका देखत, असन सत्त्व दहिऐने रहैत ऐक, से एकर नाम सत्त्व चीनी गदा होइछ, तैं रज । चूड़ा रक्षतम होइछ, तैं तम । देखे छत तैंस, अपना दधम एवम धरि 'तमका' चूड़ा शब्द प्रसन्न अछि ।

हम-आश्चर्य ! एहि दिस हमर ध्यान नहि गेल छल ।

खट्टर कका व्याख्या करैत वज्रनाह-देखत तत्त्वक अर्थ तैंस अन्धकार तैं चूड़ा चूड़ा घात पर रहने आधिक्य आर 'जका' भा 'जड़' ऐक जखन रज्जर वही ओहि पर पड़ि जड़ ऐक तखन प्रकाशक उदय होइ तैंस ते सत्त्वगुण के प्रकाशक कहल गेलैक अछि । 'सत्त्व तपु प्रकाशकगणम्' ते दही लघुपात्री तथा मध की इष्ट (प्रियगर) होइत अछि । चूड़ा कोक के कानि दैत ऐक । तैं तम के अवस्थाक कहल गेल ऐक । और बिना रजामुषी व कियक प्रकाश हो नहि । तैं चीनीक योग देखेक या तैं चूड़ा दही नहि पोंटा सकैत ऐक । आय चूड़ानमक ?

हम कहलऐक धन्य छी खट्टर कका । अहाँ ने सिद्ध कऽ हो !

खट्टर कका वज्रनाह-देखत, सांख्यिक मन से प्रथम विचार होइ ऐक महन् या बुद्धि । दही चूड़ा चीनी छेला उधार पेटने छान कय पसरैत ऐक । दैत महन् अवस्था धिकैक । एहि अवस्थाम गण खय फूटैत ऐक । तैं महन् कहु वा कुट्टि दान एक्के धिकैक । परन्तु एकरा हेतु सत्त्वगुणक अधिक्य ह भव वाही अर्थात् उनी यशी सोमज चाही ।

हम-अहा ! सांख्य दशनक महन् चरम द मर के कति मर्कत अछि ।

खट्टर कका वज्रनाह-होइ तैंस तिसस्य दैत रहत व क्रमज सन दशलक सत्त्व वृद्ध दहीस । त्रिगुणान्तिका प्रकृति द्रव्य पृथक् के रज्जवैत छथि । एकर अर्थ तैं त्रिगुणान्तिका भा 'तम' भा 'रज' पुरुष के गचवैत छथि । तैं-तृत्यान्ति गचवैत छथि ।

हम कहलऐक-परन्तु खट्टर कका ! पछिमाहा सम तैं दही चूड़ा चीनी । हसैत छथि ।

खट्टर कका अज्जोछ तैं भाइ छनैत वज्रनाह-हो, सातु लिट्टी खेनिहार दंड विपयान्तक गगन की वृक्षनाह । 'पाश्चमक जहन मर्ति प्रज्जर तेकने अन्न यजरा तेकने लोक धन सन' अपना देखत हूँस गरम भोजन गरम, लोको मरस ! चूड़ा पृथ्वी तत्त्व । दही जल तत्त्व । चीनी अग्नि तत्त्व । तैं कफ पित्त वायु-तीन् शीत के शमन करवाक साधर्थ एहिसे ऐक । देखत, अनादि काल

तैं दही चूड़ा चीनीक सत्त्व व रज्ज करैत हमरा लार्कनिक शाणित टंडा भऽ गेल बाध । तैं त्रिगुणान्तिका भाइ धरि कविनी सुद्ध करैत जगन्मरक आछ ।

हम खट्टर कका कका म कका शब्द सत्त्व होइत । दही चूड़ा मे तैसन मर्किक अर्थ के दैत छिछर ज ।

हम खट्टर कका नाह यक्षक कहैत छि भौह देखत भोजने से प्रकृति नयन छि नयन मान या कऽ भाइ पर रहैत अछि । साँप वमान पौष्टि कऽ कनकन आछ । नाहक-हम सत्त्व गनी आ कऽ फूलन रहैत अछि । मुर्दा खेनिहार मुर्गा जकां तड़ैत आछ । और हम सत्त्व नाम भौह या कऽ राग भाग भेल छी । हमरा लोक-हम (घातक प्रकृति) धिकैत तैं एक दासता में विगत भेल छ । ताह पर को त द्दिन (दास)क योग भने ताकय । तखन एक दल भऽ कऽ क्षात्रा रह सकल छी ।

हम-अहा ! कऽ अन्धकारक छथि ।

खट्टर कका कंचन अन्धकारे नहि, विज्ञानी ऐक । कोनो गामिक स्वभाव दऽ जक हो त देखी जे ओकर सग मै प्रिय भोजन की धिकैक ? देखत, धंगानी ओ पच्छिमिक स्वभावमे की जन्तु ऐक ? ..... जैक भेद रसगुल्ता ओ लड्डूमे ऐक । रसगुल्ता सरस आ कंगाल होइछ, लड्डू शुष्क आ कटंग । रसगुल्ता तयस प्रकाश थीक । लड्डू तयस न । हम देखत छि ओह जे ऊपर जा छथि ऊपर जावक न । ऊपर प्रकाश मार जका ।

हम-खट्टर कका, अपना सभक प्रधान मधुर की थीक ?

खट्टर कका अपना सभक प्रधान मधुर थीक खाज । देहातमे मिठाइ कहने बाध बाध दऽ छथि । याजा मे रसगुल्ता जकां स्तिथ होइछ, जे लड्डू जकां छथि । तैं हमरा लार्कनिक ने संमानावला स्नेह आछ, न पंजाबवला वृद्ध ।

खट्टर कका प्रकृति परत कयक-कयक रहैत ऐक, से अपना सभमे रहितहि अछि ।

हम-चाह ! ई त धमन्कारक गण कहल ! भौतिक

खट्टर कका-हो वा धार्मिक दान हम वज्रनाह न छी ।

हम-सांख्यमे खट्टर कका ! अहाँ दीक जई छे । गम गाममे मोनैरी, घर-घर मे पड़ीदारी झगडा कचहरीमे पागे पाग देखाइत आछ । से कियेक ?

खट्टर कका एकर कका तैं हमरा लार्कनिक आगिल मरचाइ वेसी खइत छी । तखन चूड़ा भेल ताकय । नानाम कऽ रहि नहि । नीम भर्त्ता करैत, लड्डूक झाट । हो, जेन गुण दायगा तत्त्वक मैह ने कर्कस प्रकृति होइक ।

कटुता, अस्वत्ता ओ तिव्रता हमरा नोकनोक जग दनि गेल अछि। स्वास्त हम सब अपनाये एतेक कटाउअ करैत छी।

हम सगनु दगा मे राखने एतेक प्रेम किऐक ?

खट्टर कक्का भाइमे एक आँखुर चीनी निलबैत बजलाह—ओ सभ प्रत्येक वस्तुमे मधुरक योग देन छथि। दानिओ मीठ, तरकारीओ मीठ, माछे मीठ, चटनिओ मीठ। तखन कौना ने मायुर्द रहैक ? अपना आनिमे एहिना मोटक व्यवहार होमऽ लागय तखन ने। नै हम कहै छिओह ने अपना आनिमे जौ संगठन करवाक हो त मधुरक बेसी प्रचार कराक कवन सभा केने की हेतौ ?

भोज ने भात ने, हरहर गीत।" गाम में दुगेना दूर करवाक हो त 'दही चूड़ा चीनी लवण कटली लाहु यरफी क भोज कराक।

ई कहि खट्टर कक्का भाइक लोना उगीलकि और सू-धारि बुंद शिवजीक नाम पर छीटि चटपट कय समेटा पीबि गेलाह।

## चाणक्यक जन्म-भूमि

खट्टर कक्का की अंगि दिन भाड घोटैत घोटैत पुरातत्त्वक रानक सवार भऽ गेलैक। दूर-दूरक बान फुरय लगलैक। हमरा देखिनाई सोर कैमलि हो, कहाँ जाइ छह ? एकर आचर।

हम कहलियेक—खट्टर कक्का, एकटा जरूरी काज अछि।

खट्टर कक्का—जरूरी काज पाछो कऽ हैतैक। एहन एकटा रटका आविष्कार कैल अछि से सुनने जा

हमरा बिसला उत्तर खट्टर कक्का बजलाह—हमर अनुमान अछि जे चाणक्य मैथिल रहथि।

हम—एहि अनुमानक आधार की ?

खट्टर कक्का भाड घोरित बजलाह—सभ सँ पहिल आधार हुनक जीवनी। देखल बियाह करय जाइत रहथि, पैरमे कुश गढ़ि गेलैक। आन रहैत त दोसर वटे जा कऽ बियाह कऽ अवैत। परन्तु ई तिल-कुश गंगाजल लऽ कऽ राखल्य कैलकि जे आध कुशक अस्तित्वे निर्मूल कऽ बैव। बियाह त गेल कोठी-काष्ठ पर। ई कुशक आँइ उखाड़ि उखाड़ि गदग पटावय लगलक। और अन्तमे जड़िमूल सँ ओकरा साफे कऽ देलकि हो हम पुछैत छिओह जे एहन रगड़ियल, मैथिल छोड़ि कऽ और के भऽ सकैत अछि ? राजाक भोजमे अपमान भेलैक। आव 'जायत मन्दवंशक विनाश नहि करय तावत टीक नहि बान्कब। ई प्रतिज्ञा कनि रहल अछि जे हुनक जन्म निरंकुशमे भेल छनैक। और एहि ठामक प्रधान गुण जे धिकेक कूटनीति, तकरा दले ओ मन्दवंश के 'नेपथ्याभ्युत्थानं स्वाम्' कऽ देलकि। हो, एहन ब्रह्मतेज दोसर कोन आनिमे भेटनैह ?

हम—परन्तु बहुत गौटाक मत छैक जे चाणक्य काश्मीरी ब्राह्मण छलाह।

खट्टर कक्का धिगड़ि कऽ बजलाह—कथमयि नहि। काश्मीरी गोर होइन अछि और चाणक्य करी छलाह। दोसर, जे काश्मीरमे सौधक बेसी उपद्रव नहि। यदि चाणक्यक घर आनि देशमे रहलैक त 'सप्तै च गृहे वासो मृत्युरय न संशयः' ई नहि लिखलथि।

हम—परन्तु.....



नथपि तो और प्रमाण जोड़ते रह ! की एतका लक्षण मैथिलता सिद्ध करवाक हेतु पर्याप्त नहि ?

हम-धन्य ही खड्डर कका ! धीन-धीन हमन उह कका के न सिद्धिक जे

खड्डर कका-हमर शह घोड़क हाइन यदि ताहिमे कत नहि देल जाय !  
हं, की कहैत छीतओर ?

हम-यैह जे पहादेव वीर ।

खड्डर कका-हं हमरा न मूँछ पड़ैत उह जे मथारैय डा रौन हुनके नाम पर चलत छैत । खड्डर कका जेना न हुनके कानन उल्लेख भौंछे हम से काना ?

खड्डर कका-महादेवक द्वार ८८ लाखक अकारन भाग रहैत ताहि सँ हुनक घास भूमि 'द्वारभंग' वा दंडिभंग' नहि मल श्रीकृष्ण दंडि प्राय 'एकौ टा घर एहि जिलामे नहि भेटतौ' जगन जगौ वा पाछौ भाइक गाछ नहि गइक ।

हम परन्तु खड्डर कका ! यदि हमरा लोकनि सरिपहुँ महादेवक वंशज छी त हुनकरवाला गुण हमरा सभमे किएक नै अछि ?

खड्डर कका लोटा भरि भाउ रह-गष्ट पीवि गेलाल नखन बजलाह-गुण त अछिऐ । देखह ! महादेव त्रिलोचन छलाह हमरो लोकनि त्रिलोचन छी । तेसर अछि सँ कयल अनकर छिद्र टा सुझैत अछि । महादेव लोककपट रहति । हमरो लोकनिक कंठमे कंधन छिद्र रहैत अछि २२ टा गोटाक विवाद भेला पर प्रत्यक्ष देखि लेत । महादेवक छाती पर सँभ कोटाइन रहैक । हमरा लोकनि के स्वर्णनयक अभ्युदय दाँख छाती पर साय लोहाय लगीत अछि । महादेव त्रिभुजधारी रहति हमरो लोकनि के अरुना ५ टावन्धुक उल्लेख देखि मस्तकझुल हठयशून आ उदरशून ई नीन प्रकाशक शून उल्लेख भऽ जाइत अछि । महादेव सभ सँ एकीर भऽ कऽ रहैत छलाह । हमरो लोकनि फुट भऽ कऽ रहैत छी महादेवक कपारमे अखनन्द छुनक । हमरा लोकनिक कपारमे जतय जाउ अर्द्धधन्ने लिखल रहैत अछि ।

हम-अह ! की अलंकारक छटा ! अह ! त खड्डर कका ! रुपक यान्त्रिक दैत छिएक ! परन्तु वास्तवमे हमरा लोकनिक स्वभाव रहैत किएक अछि ?

खड्डर कका ई सौभाग्यक साग शिक्रेन्द्र

रण भीता मूँछे शूरा परस्परविरोधि ।

कुलाग्निमानिनो यूयं मिथिल्यायां भविष्यथ ॥

हमरा लोकनिक भयस्त दीरता अपनमे सङ्घर्षक हेतु होइत अछि । हमरा सभ केँ समर्पित करव तनिना अराधन लेना तीन टा अङ्गुल शत्रुमे केँ एक पानीवे देखाएल ।

हम-खलन ककर उपनय ?

खड्डर कका-उपनय पैह जे हम कऽ रहल छी ।

हम-उपनय ?

खड्डर कका-भरत भाइक सेवन ।

हम अहाँ केँ त सभ वागमे होसिए रहैत अछि ।

खड्डर कका हँसौ नहि करैत छिथौह । सरिपहुँ कहैत छिथौह । देखह सीता-पीक इष्ट रामचन्द्र । रामचन्द्रक इष्ट महादेव । महादेवक इष्ट भाइ । सँ दिनक सेवन केँला सन्तो अहं शय स उद्धार भऽ सकैत अछि । यदि सभ इन्धनमे भाइ पाँइ जाय त आइए मेन भऽ जाय हमरा लोकनि देखी बुद्धिमान सँ तेँ ओ सभमे लड़ैत छी । हौ, कनेनो अनटेकनगर वात त ने यहराएल अछि । तालु सुखा रहैत अछि ।

हम खड्डर कका दू टा वाइक दुस्सी नेने आउ ?

खड्डर कका हौ, 'ब' नहि, 'भ' । 'ब' अक्षर बुद्धिक होइत अछि-बूढ़, वनाह, बकलल, बहीर, बाकल..... । 'भ' भागवन्त होइ अछि-भोज-भात, भार दार भोग राग और धैर...

ई कहैत खड्डर कका अवशिष्ट भाइ उठा कऽ पीवि गेलाल ।



## माछक महत्त्व

ओहि दिन माछ पर शास्त्रार्थ बजरी गेल। बात भेलैक जे खट्टर कका पोखरि सँ स्नान केने चल अवैत रहथि। हम पुछलियेक-की खट्टर कका, माछ खाइ ?

खट्टर कका बजलाह-अवश्य, अवश्य। कोन माछ छौह ? नेचो छौह कि बाझी सँ नेने चलू ?

हम कहलियेक-केवल सिद्धान्तक दृष्टिपर पूछल अछि।

खट्टर कका बजलाह-तखन महा अनर्थ कीन अछि। भोजन काल ककरो पुछियेक जे की, दही खाइ ? और पाछाँ कहियेक जे केवल सिद्धान्तक दृष्टिपर पूछल अछि। ई कोनो नीक बात थीक ? जौ माछक गण्य करवाक हो त सिद्धान्तक दृष्टिपर करक चाही।

हम-एकटा वैष्णवजी आएल छथि से राब लोक केँ कंठी धाकल कहैत छथिन्ह।

खट्टर कका पहिने हुनक इष्टदेवता रामचन्द्र कहियो कंठी बन्धलथिन्ह ? देखल बियाहमे-

‘मीन पीन पाठीन पुराने, भरि-भरि भार कछरन आने’

महाराज रामचन्द्र केँ त मृगयो सँ प्रेम छलैक। सत्रिय भऽ कऽ शिकार नहि करितथि भांस नहि खेवाथि त कि बकरीक दूध पीति कऽ रहितथि ?

अन्नशाक-प्रियः भूयो वैश्यो दुग्धदर्शिप्रियः।

मत्स्यभांस-प्रियः क्षत्री ब्राह्मणो मधुरसंप्रियः॥”

और सीताजी त आजम्ब रौभाग्यवती रहलीह। माछ किएक छोड़ितथि ?

हम-वैष्णवजीक सिद्धान्त छैन्ह जे माछ ककरो नहि खेवाक चाही।

खट्टर कका-तखन की खेवाक चाही ? काँट ?

हम-जो माछ केँ अखाय दुईत छथि।

खट्टर कका-सँ किएक ?

हम-ओहिमे जीव छैक सँ।

खट्टर कका-जीव त वनस्पतिओमे होइत छैक। तखन माछि खाधु।

हम-अन्न और फलक दोसर बात होइत छैक।

खट्टर कका दागर बात की होइ छैक ?

हम-ओकर चैतन्य प्रस्फुटित नहि रहैत छैक।

खट्टर कका-सँ त अंडोमे नहि रहैत छैक।

हम-वैष्णवजीक कथा छैक जे मनुष्य स्वभावतः निर्गमिषभोजी थीक।

माछक कक अर्थात् नहि। यदि मनुष्य स्वभावतः निर्गमिषभोजी रहैत त माछ केँ इशानहि मानल जक सँघि कऽ छोड़ि देत। खेवाक चाही कि नहि, ई प्रश्न नहि उठैत।

हम-मनुष्य अपनक को चिन्ता ?

खट्टर कका-विचार करै जे हमरा लोकान भेड़ बकरीक थपी मे नहि छी।

हम-अथांत मांसाहारी छी, शाकाहारी नाह ?

खट्टर कका नार्थ अर्थक तर्जन करय बजलाह-एक ठम पहुनाइमे गेलहुँ त पुछलक जे दही खाएक कि दूध ? हम उत्तर देलियेक ‘दही दूधमे परपर चिरायक सम्बन्ध न छैक नहि, सो त दूध आनि सकैत छी।’ नहिना भांस और अण्डमे त कानो शिरोध छैक नहि। हमरा लोकनि उपयभोजी प्राणी छिकहुँ। दूध माछ दुनु मे कोनो बाँतर नहि। झिंगो बैस, झिंगुनिओ बैस।

हम-दशमवती दौनक रचना में सिद्ध करैत छथि जे मनुष्य वानर जहाँ भूट फलछाही जीव थीक। मांस खेवा दोन हमरा लोकनि केँ अछिए नाह।

खट्टर कका-अछिरे नहि, तखन खाइ छी कोमा ? हम जे माछ खाइ छी से कि चिन्ताछिक दौर पिच लऽ कऽ ? जहाँ बरि दौनक प्रश्न छैक, वैष्णवजी केँ चिन्ता करवाक काना प्रोजन नहि हैं यद्यपि भऽ गेना उत्तर त लोक वदोनो धनिए जाइत अछि।

हम परन्तु शास्त्रक दृष्टिपर त मांसाहार

खट्टर कका-परम बोधन। ‘वज्राक्षरं पशवः सृज्यते कीन स्मृतिप्रमाण नाहि छैन्ह ? मनु अक्षयक अदि त खेवा गेय माछक नामो गना गेल छथि।

हम-भूतिक काल जाय दिवऽ जीव-दशक दृष्टि सँ विचार करै।

खट्टर कका-हम जौ माछ पर दवे करदेक ताहि सँ की ? कगुला त दवा नाह करदेक। चिन्ताछि न नहि छोड़नेक ओकरा खावयना बहुत जन्तु छैक। हमरा भूत सँ भूट कऽ सोस-परिवारक मुँहमे जाएत। एह सँ माछक की उपकार होइक ?

हम-ओकर उपकार होउक वा नहि, किन्तु हमर अपन उपकार त रहैत।

खट्टर कका-हमर उपकार की रहैत ?

हम-माछ-भांस उत्तमक पदार्थ होइत अछि। ओ खेना सँ मनमे नाना प्रकारक विकार उत्पन्न होइत छैक। ताहि रोग सँ बचैव।

खट्टर कका-तखन त सुन्दरी धुधनी सँ विवाह नदि कय लोक जम्सी थर्यक कुरुपा वृद्धा सँ विवाह करय जकरा देखि कऽ मनमे काँनो विकार नहि उठैक।

हम-वैष्णवजीक आशय छैक जे माछ तामस भोजन थीक-हानिकारक।

खट्टर कका-आब तौ आयुर्वेद पर ऐलाह। तखन भिघंदु उठ्य कऽ देखह जे रोदु, कतारा, माछुर आदि मत्स्यक की गुण छैक।

हम-किन्तु खाइ-मरवाइ आदि पढ़वाक कारण माछ गुरुपाकी भोजन भऽ जाइत अछि।

खट्टर कका-तखन त सभ सँ लघुपाकी वस्तु होइत अछि सागुजवान। सैह उसीनि कऽ दूनु सौंझ खेवाक चाही ?

हम-वैष्णवजी एकटा और युक्ति दैत छथि। माछक उत्कट गंधे सिद्ध करैछ जे ओ मनुष्यक स्वाभाविक खाद्य नहि। लोक जर्वदस्ती तेल-मसालाक योग दय ओकरा खेवा योग्य बना लैत अछि। पाछमे यथार्थ स्वाद रहितक त लोक ओहिना किएक ने खाइत ?

खट्टर कका-तखन वैष्णवजी ओहिना काँच ओलक टोंटी किएक नहि चिखवैत छथि ? एतेक चिन्तार कऽ कऽ जे छलुआ-पूड़ी बनयैत छथि से सोझे गहूम किएक ने फाँकि जाइत छथि ? तेल-मसाला केथल माछे मे पड़ैत छैक कि तरकारी मात्रमे ? तखन सभ पित्त माछे पर किएक ?

हम-वैष्णवजीक कथ्य छैक जे माछ अपवित्र स्थानमे रहैत अछि, अपवित्र यस्तु खाइत अछि, सँ अखाद्य थीक।

खट्टर कका-तखन वैष्णवजी मधु किएक खाइ छथि ? मधुमक्षि कहाँ-कहाँ जाइत अछि, कथी कथीपर बैसैत अछि, तकरा देह सँ निघोड़ि कऽ जे मधु बहराइत अछि, से जखन हविष्य, त माछ त भन्ना जलक जीव थीक।

हम-तखन अहिंसामे अहाँ केँ विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कका-कोना रही ? सगरमे यैह देखबामे अवैत अछि जे 'जीवो जीवस्य भक्षणम्'। प्रकृतिक नियमे छैक जे छोटाका जीव केँ बड़का जीव खा जाइत छैक। इधना केँ पोटा, पोटा केँ सीरा, सीरा केँ वोआर वोआर केँ तिभि, तिभि केँ तिमिगल ... यैह 'मत्स्य न्याय' सत्य दृष्टिगोचर होइत अछि। सृष्टिक चक्रे हिंसा पर चरैत छैक। यदि भक्षक अपना भक्ष्य सँ प्रीति करत त खाएत की ?

हम-परन्तु एहि देशमे त 'अहिंसा परमो धर्म'।

खट्टर कका-यैह 'धर्म' त हमरा लोकनि केँ चीपट कय देलक ! पृथ्वी पर यैह जानि जीवित रहि सकैत अछि जकरामे भक्षण करवाक सामर्थ्य छैक।

यदि अहिमाक उर्थ होइक भक्ष्य धनि कऽ रहब, त सभ सँ बड़का अहिंसक थिक जनरक गाछ जे ककरो किछु नहि विगडैत छैक जकरा मनमे अवेक छाँपि लेओ। हो बाबू, हम त एहन जनर धन'क हेतु तैयार नहि छी।

हम-वैष्णवजीक तात्पर्य छैक जे कोनो जीव केँ निरर्थक वनेश नहि पहुँचावक चाही।

खट्टर कका-हम कहाँ क्लेश देबऽ जाइत छिएक ? परन्तु जखन क्षीर धनि कऽ आगमे आबि जाइत अछि तखन ओकरा छोड़ने की लाभ ? ओकरा कममे त जे क्लेश सहवाक से भइए गेनैक तखन अपनी आत्मा केँ क्लेश पहुँचावी, एहिमे कोन बुद्धिमानी ?

हम परन्तु अपना दक्षक जनघाय, संस्कृति ओ परम्परा केँ देखैत

खट्टर कका-माछ खाएब परमावश्यक खास कऽ मिथिला ओ बंगालक आर्य भूमिमे। एही द्वार मिथिल ओ बंगाली कुशाग्रबुद्धि होइत छथि। कटी बन्दन बुद्धि क्षुण्णित भऽ जाइत छैक। मै अधिकांश १९११ नम्बरकन्ना संत्री सन भेल रहैत छथि यदि सभ ओहने भऽ जाय त बड़का बड़का पोलरिक् अधमन्ना रोदु की रहैत ? पार ओ चौर सममे जे एतेक माछ होइत अछि से व्यर्थ भऽ जाएत। देश केँ केहन भारी आर्थिक क्षति पहुँचत ! लाखो गोटाक जीविका बन्द भऽ जैतैक। पञ्चाय कथी पर चौघर उठीनाह ? ननाहिन कथी पर पूजाक मान्य पहिरतौह ? काँच लोकनि की खा कऽ रस भरल पदावलीक रचना करतौह ? माछ गरीबक आहार ओ अपीरक भृंगार थाक। ई धृति गेने अनेको सनातनी प्रथा टूटि जाएत। दुई माछक भार बंद भऽ जाएत। पितृ-कर्ममे माछ-माछक भोज उठि जाएत। लोक की दृष्टि कऽ यात्रा करत ? स्वीमण जिनियाने मछु भाक रोगी कथी तंग खेनीह / तखन सवका ओ विधवामे भेद की रहत ? लोक वादीम जमीरी सेवो किएक रोपन ? सरिमा भामिन नऽ कऽ की करन ? माछ तरवा काल जे दिव्य सुगन्ध वायुमण्डलमे उड़ि रङ्गसियाक जो मिहयैत अछि से शीरग कनय भरत ? समाज केँ नदन भारी धक्का लगतैक जे मैथिल संस्कृतिक आधारशिला धूर्ण भऽ जाएत। वडिमंगल बोधगयामे परिणत भऽ जाएत और हमरा लोकनि युद्ध (बुद्धदेवक अनुयायी) धनि जीवन यापन करय तखन भगवतीक पूजा के करतैक ? भगवान ने कछु जे मिथिला के एहन दिन देखय पड़ैक।

खट्टर कका हाथ जोड़ि कऽ प्रार्थना करय लगलाह-हे भगवती ! भगत लोकनि रामचन्द्रजीक प्रिय निपाद केँ विपादक सिन्धुमे डुवावय चाहित छथिन्ह। हुनका लोकनि केँ सुबुद्धि दिओन्ह।

पूत शपरा दिस ताकि कऽ वजनाह हम छी दुख झक । बरन्या ग  
भीनावनारक उपासक । हमर पिती गहर कका कका गहर गहर रहियि बि  
किछु पद गुना दैत छिओह

हरि हरि ! जनम किओक नव  
रोहु माछक नूडा । रखन नेट मरि भेल  
मेरिनाक पल्लु तरन सिम पर मे !  
धूल मरक भुजग कचई कठमे न गेल  
नाल नाल छिया नङ्गा दोग र न देन  
माझक झा स दसपागन न गेल  
माछक अहा नव जी नव नोह दन  
नाछ जवन छाडि देव, छाएव की मकलेल

गोगेपात खियेबाक छल त जन्म किए नेन । हरि हरि

हम-धन्य छी खहर कका । एकादशी केँ ताँड़न छिओक नि नव

खहर कका-हो मनर शास्त्र भवथ न एकादशक कोन कथा, एकादश  
पर्यन्त केँ नहि छोडी । हमरा पनवाने न दुहा' ग निथि अछि । जाह दिन  
भटल से पूर्णिमा, जाहि दिन नाह भरल मे अगावस्या

हम अगवत' जाह से न भर्षा मन

खहर कका परनु की जी हम कबल शास्त्र नाह छ । छोड़क काङ्क  
परलमे छी पञ्चमून नव, काल अगव । भगवतीक प्रसाद केन शास्त्र  
शिराक कूटी धर धीव

ई कति खहर कका वृत्तक इत नाम नव । ११५ गज

## आयुर्वेद

खहर कका-भाउ धोहन रहियि । हमरा संग एक व्यर्थन की दधि  
पुछलियन ई केँ दिकल ?

हम कर्मानेह ई दिकल घेछी ।

खहर कका हुमका हथम एक दुलक देखि पुछलियन-ई कोन पोछी  
धीक ?

वेद्यनी-भावप्रकाश ।

खहर कका-अह, की सुन्दर काव्य धीक-भावप्रकाश ।

वेद्यनी विस्मित होइत वजनाह-भावप्रकाश आयुर्वेदक प्रामाणिक ग्रन्थ  
धिकैक । तकरा अपने काव्य कहैत छिऐक ?

हम पुछलियेह-खहर कका, जहाँ केँ भाउ त मे लागल अछि ?

खहर कका-माझक मति पसवैत वजनाह भाउ त हमरा मदियन लागल  
रैन अछि । नाह न गानुशाक गिन वधान किएक रहै ? हमरा न आयुर्वेदो  
काव्य चुनना जाइत अछि ।

हम-मे कोन ?

खहर कका (वेद्यनी)-कहू त, ज्वरक उत्पत्ति ?

वेद्यनी-दक्ष-पमानसंक्रुद्ध स्त्रनि श्याससंभव । अर्घति जखन दक्ष प्रजापतिक  
अछि ठाम मशदेवजीक अपमान भेलैत तखन जे ओ खियेबाकऽ फुफकार  
छोड़लकि, ताहि फुफकार सँ जे रोग उभन भेल सैह ज्वर थीक ।

खहर कका (हमरा सँ)-आब कहह कोनो डाक्टरक मगज मे एहन बात  
आब सकैत छैह ? एही द्वारे हम आयुर्वेद केँ काव्य कहैत छिऐक

वेद्यनी-परनु आयुर्वेदमे जे एतेक रास द्रव्य-गुणक विवेचना भरल छैक ?

खहर कका-तखुमे सैह अलंकार । कहू त, पारा की थीक ?

वेद्यनी-शिवराज प्रद्युत रेत पतिन धरणीसले । शिवजीक धातु पृथ्वी पर  
खसि पडलैक, सैह पारा थीक ।

खहर कका-सँ उज्जर । सँ चिक्कन ! सँ रसराज । और गन्धक की थीक ?

वैद्य- 'श्वेतद्वीपे पुरा देव्या' क्रीडन्त्या, रजसासुप्तम्  
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नाताया क्षीरनीरयो  
प्रसुप्तं तद्रजस्तस्माद् गन्धकं सन्तुष्टीरिति ।

अर्थात् एक समय श्वेतद्वीपने क्रीड़ा करीत-करैत देवी स्वप्नित भऽ गन्धक ।  
तखन जाकऽ क्षीर समुद्रमे स्नात कैलन्हि । अहिमे नृप मं योखारि जऽ मे  
रज खसलेन्ह, सैह गन्धक थीक ।

खट्टर कका-तैं ललीन ! तैं गन्धयुक्त ! तैं ओकरे टा मे परद के शोधक  
सामर्थ्य । कौ औ वैद्यजी ! (हमरा दिस लाकि) कहह, एहन सरस कल्पना कौनी  
साईस (विज्ञान) मे भेटि सकैत छैह ?

हम-यारनधमे खट्टर कका ! आब ३ हमरो यूँ पड़ेत अछि । आयुर्वेदमे  
एहि तरहक यात कोना ऐनैक ?

खट्टर कका-हौ एहि देशक जनसाधारक कण कणमे रसिकता सन्धियामूल  
छैक । जहाँ विज्ञान कनेक माय उल्लेख कि तुरन्त काव्यता-कानिनी अछि कऽ  
छाती पर सत्ता भऽ जाइत छथिन्ह । ब्रह्म म अपना दशक विज्ञान केँ छा  
गेल काव्य । 'काव्येन गिनितं शास्त्रम् । आयुर्वेद केँ काव्य सेना भऽ जऽ, प्रसिद्ध  
कैने छैक जे भावप्रकाश ओ भाषिनी विज्ञानमे विशार अनार जर्म । एही द्वार  
हम वैद्य लीकनि केँ कवि कहैत छिएन्ह । कवियोंमे साधारण कवि नाँ,   
कविराज ।

हम-वाह ! खट्टर कका ! ई त नवीने कहल । वैद्य केँ काविराज किछक  
कही से कारण हमरा नहि भेटैत छल ।

खट्टर कका-हमरा सैं त समझ नवीने सुनवह । महादेव केँ वैद्यनाथ किछक  
बतल जाइ छैन्ह से अनैत छल ?

हम-नाहि ।

खट्टर कका-तखन सुनह । महादेवक श्वास सैं ज्वर बसलएल अहि सैं  
वैद्य लोकनि केँ जीविका चलीन छैन्ह । हुनकेँ धातु सैं पारा बहराएल जाहि सैं  
वैद्य लोकनि मकरध्वज बनबैत छथि । हुनकेँ चूरी (भाङ) सैं वैद्य लोकनि  
मदनानन्द मोदक बना रूपयामे तीन अटनी बनवैत छथि । तखन महादेव औ  
वैद्यनाथ नहि कहावथि, त को वैद्यनाथ कहावय ?

हम-धन्य छी, खट्टर कका ।

खट्टर कका-हौ धृतर त वैद्यो एक प्रकारक महादेव होइ छथि । हुनकेँ  
जको मस्मक प्रेमी । बूटीक पाछो बैसल । हुनका कंठमे विर छैन्ह दिनका

पुष्प । विष रहैत छैन्ह । दूध, हर वा संहारकर्ता । ओ भस्मासुरक संहार  
कैलन्हि, इहो मस्मक रोगक संहार करैत छथि । ओ विपुल अन्न कैलन्हि ।  
ई कतक पुरक भन्त कर छय, सँ महि जान ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।  
हम-ए ! आयुर्वेद मे भूत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-ए ! आयुर्वेद मे भूत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

हम-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।

खट्टर कका-यारन मं ३ ३ भूँत रस ।





... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

[illegible]

...  
...  
...

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

वृत्त-पञ्चमः पञ्चमो-पञ्चमो द्व्यचारः तः छिप्यं, जातिर्मे नक्षत्रकः दन्तः नक्षत्रः

[illegible][illegible][illegible][illegible]

सह सका योरासे ५ पाठा लप। पाठ कान वचनाह-य नहि रोहनीक  
५ भा. बर्द्धक प्रामाणिक ग्रन्थमे कनह एहन-एहन श्लोक पात्रान जइन :

कुमार, २५ वर्ष, मराठी भाषी  
२०२० मध्ये १००% उत्तीर्ण

[illegible]

वर्तमान का भारत योनी मन्त्रित्व वंशज-जन देशम विधिक-सक इकाय  
वेदान्तिक प्रणाली पर भल छै। परन्तु एहि देशम न सभ बात गुपचुप रहि  
ह होइ छै। जे कैओ शास्त्रक परीक्षा करब चाहैं अछि, तकरा नाशिक  
सक क विचार करब। जे...  
शास्त्रक...  
आदि...  
नारिकर...

$\frac{1}{2} \left( \frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$

















खट्टर कका डैरेत दमन न-निह न मुक्त की 'आह दुर्गा नक्षत्र' भा सरस्वती  
 ककर' पास रीह मानैत छीयक । अइसे पन थुन क' क' अथवा नान जलन  
 लोभ देखा क' , कओ हुनका नहि राखि मयेत छैक । न तकर हाइन छिन्न  
 न हुनका ननु सभ से ओकर नगरवा करय दुर्गा लवनी मरखनी, लीन पश्चिम  
 गयीह । जे हजार वर्ष सँ अनवरत मरखनी नीन अछि तकरा ओहि ओ घर  
 काना हनीह ? ककरो ओरि वा तकरा प्रलापन इला नर आ हारा दिय  
 नाहि तकि छुधि । किन नयनाह ? । घनवार पर नै दिनक जनमल यव के वरुभ  
 दिन ककरा बनिह साधना समाध भऽ जाइत अछि निह अज्ञात पर पराक्रम  
 मेनेदाम जनिक वीरता ति अछि । न तकरा नोकरा दुर्गा अथवा ककर ?  
 हम ककरा-ककी खट्टर कका ! तकरा अथवा विन न दुर्गा ? न ओकर  
 जका ?

खट्टर कका वज्रनाह दुर्गा पृथु हमरा गोपनि करिते बडो छिएक ? पूजा  
 करि छैक युगो अछि ककरा हमरा नरनि । खट्टर की नाच तातका सँ चित  
 ककरा छी ।

हम परम्परा संगहि संग जाहो न करेन छिएक अहाँ अकरा खेच दुर्गा न  
 छिएक की ?

खट्टर कका-हम दान न करेन आह धरि थुन न तकि अकरा न अथवा  
 दुर्गापठ नाक करेन अछि ककरा ? अथवा अकरा अहाँ कथा नहि दनिह  
 थुन । परन्तु इतिहास न अकरा वरु नहि छैक अकरा वरु नहि छैक  
 लि वरु न दुर्गा एता भविष्यक अथवा अकरा, चामन के निमन के अकरा  
 अथवा निमन के माधन के अकरा अथवा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा  
 । ओहि पर मनन करु ओर नोकरा अकरा करु परन नहि दियो ।  
 सुनइतवा ओ मनु कथन अकरा से ल' क' , अकरा अकरा अकरा  
 माधन अकरा मनु । अथवा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा  
 केने की नाम अकरा से हमरा थुन नहि अनेन अकरा

हम ककरा-खट्टर कका ! धर्म मे तकि नहि चलैत छैक । धर्मग्रन्थ के  
 अथवा ग्रन्थ के अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा  
 आधन अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा

खट्टर कका वज्रनाह घम, अथवा तकि अकरा अकरा अकरा अकरा  
 जेत अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा

हम ककरा-हम ककरा ?

खट्टर कका नशा सँ धर हाइन वज्रनाह

आ देवा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा

नमः अकरा नमः अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा

हम ककरा-हम अकरा अकरा, आह विजयादशमी छैक ।

खट्टर कका वज्रनाह धर्म विजयादशमी अकरा अथवा हमरा लोकनिक हेतु भऽ  
 अकरा अकरा । अकरा न अकरा हमरा लोकनिक प्राप्त क' अकरा छी से देवे जेत  
 छैक । अकरा विजयादशमी अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा  
 अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा

हम ककरा-अहाँ न खट्टर कका पिउमहि छी । आओर वैशी लागि  
 जाय ।

खट्टर कका वज्रनाह ओ दोनो कर्मनिक न अथवा भऽ अकरा अकरा ।  
 अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा अकरा  
 नमः अकरा

## ब्राह्मणभोजन

खट्टर कका पाछ घोटैत रहथि कि हम आ कऽ कहलियेन्ह खट्टर कका, तिसरवा ईन छी ।

खट्टर कका अत्यन्त प्रसन्न होइत बजलाह—अमा हा ! आवत बेमर ! जेई कोनो नोक लोकक मुँह देखि उठल छलहुँ । कथीक उपलक्ष्यमे आप्रदह ।

हम कहलियेन्ह—आइ हमरा ओहि ठाम ब्राह्मणभोजन अछि ।

खट्टर कका बजलाह—बाह, अत्यन्त सुन्दर ! एहि देशक मर्चादा छेक से जनै छ ?

हमरा पूछ तकरे देखि खट्टर कका बजलाह—एहि देशक मर्चादा छेक ब्राह्मणभोजनमे पृथक् पर आन कोनो देशमे ई दार रहै । एही पुण्यक प्रसादात् भगवानक सभटा अवतार एही भूमि पर भेल छैन्ह ।

हम परन्तु ब्राह्मण केँ भोजन करवाक विधान कियेक ?

खट्टर कका कियेक त 'ब्राह्मणस्य मुखमाँन' । हमरा लोकनि ब्राह्मण मुँह शिकहुँ । मुख केँ त भोजन से प्रयोजन । जे सभ हाथ पैर छथि से सभ काज काय । हमरा लोकनि मुख्य से काज धर्मक भोजन और भक्षण सह टा करवाक हेतु उपन्य भेल छी । तखन अतिपुरुष ब्रह्म चरित आ मुँह दोनो प्रकार भेनाह तखन हमरा लोकनि हुनक सम्मान मेँ अपना बस क लेक कोना छोड़ि राखैत छी ? तेँ ब्राह्मण लोकनि लीवाक हेतु सनत मुँह दोनो से छथि ।

हम परन्तु जेँ हमरा लोकनि मांसो व्रथाक गृह से बहरा पुँह छी त ओ तेँज कहीं अछि ।

खट्टर कका—तेँज अछि उदरकुटुम्ब । आहमे तिरनार ग्रहमेन धधकैत रहैत अछि । वेशी ज्वाला भेला उत्तर जिल्लाक बाटें बहराइत अछि । तेँ हमरा लोकनिक वातमे सुर्ताक असर रहैत अछि । जिनकेँ पर लगैत छियेन्ह तिनका भस्म कऽ कऽ छोड़ि देत छियेन्ह ।

हम—परंतु ताहि दिनक ब्राह्मणमे विशेष सामर्थ्य रहैन्ह ।

खट्टर कका—औखन क्षीरसमुद्र केँ सोखयवला क्रतुस्य हमरे लोकनिमे विद्यमान छथि तेँ जाही धनु सेँ 'व्रत' बगल धरि नही सेँ 'ब्राह्मणो' बनल छथि । तेँ 'ब्रह्माष्ट' ओ 'ब्रह्मादर' दुनू केँ महोदरे ब्रह्मक चाहेँ । दुनू विशद दुनू पृथुल, दुनू गोलाकार, दुनूक पार पायब असंभव ।

हम—परन्तु ताहि दिनक ब्राह्मणमे वरदानो देवाक शक्ति रहैन्ह ।

## ब्राह्मणभोजन

५७

खट्टर कका—औखन घर ठीक करवाक भार ब्राह्मण पर रहैत छैन । पूर्वक ब्राह्मण सिद्धान्तक परिष्कार करैत भ्रमरह अखक ब्राह्मण सिद्धान्तक परिष्कार करैत अछि । ओ लोकनि अग्निहोत्री एवाह, इहो नाहमे दुनू गृह अग्निहोत्र करिगहि छथि । अन्तर एतये न पृथक् लोकन चाहा बसबैत छुनाथन, वंशज सभ 'बायाजी' ! एक अक्षर दूँआर भवेन ।

हम—खट्टर कका, अहाँ त व्यर्थ करैत छी । परन्तु वास्तवमे ब्राह्मण जातिक एहन दुर्रशा कियेक भेलैक ?

खट्टर कका—वेसी तेजक कारण ।

हम—से कोना ?

खट्टर कका—दम्बर, एक ब्राह्मण भित्तिवा कऽ लक्ष्मीक म्यामी केँ एक चण्डाल देवाहित करि दियो त लक्ष्मी ब्राह्मण सेँ हठाँक भेगीह और हमरा मातक कथा पर जेँ हरिद्रा मटि गेनीह सेँ मल्लो छथि । इ म धन्य सरस्वती जेँ हमरा लोकराक पुरुष लक्ष्मीवाहन सभ सेँ किछु किछु झिटैत एलाह अछि ।

हम परन्तु मास्त धर्मशास्त्रक निर्माण न ब्राह्मण द्वारा भेल अछि ।

खट्टर कका—धर्मशास्त्र नाँह कहल अछिशास्त्र । आन आन अर्थ करवाक मेँ कऽ छती करैत छी । ब्राह्मण केवल वांछाक खामी करैत एलाह । यजमान केँ बड़द मैँ काज चलेत छलैक । ब्राह्मण केँ यजमान सेँ काज चालि जाइत छलैन्ह तखन ओ बड़द कियेक पोसथु ?

व्रमजीवी भवेच्छुद्रः धनजीवी कृषी वर्णिक ।

वनजीवी भवेच्छत्री, बुद्धिजीवी हि ब्राह्मण ।

एही बुद्धिक प्रसादात् हमरा लोकनिक पुरुषा भोजनक समस्त केँ जेना हल कैलैन्ह—सोही बिना हमक सहायता मेँ तेँ आइ छरि केँ ओ कथ सकन अछि ?

हम पुछलियेन्ह—ई बात कोना भेलैक खट्टर कका ?

खट्टर कका भासक लोका विद्वान्येन दजलाह—हो ताहि दिनक लोक बुद्धिक रहथ । भूदय जेना कऽ लोकाँवक ठीक लोकाँव आइ भवना निमित्त आ आ । कालक भितर तिगित आ आ । शुभ होउ न आ आ । अशुभ होउ न आ आ । पुण्य कर, ताहिमे आ आ । पाप कर ताहिमे आ आ । केओ जनपी, ताहिमे आ आ । यरी ताहिमे आ आ । अगहनमे नथ धान हाँक । दड़ा खोआ । वेशाखमे रक्की तैयार होउक, त पूड़ी-बेड़ी हो आ । माघमे गरमागरम चीन्नीचढ़ि खोआ । अर्द्ध नक्षत्रमे आम खोआ । उपजावी केओ, परन्तु भोग लगावय छाल अछि अछि विद्वान्य । हो एहन 'परमूड फणाहार' करवाक बुद्धि और ककरोमे छैक ?

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका वारस गास त थिछु ने किछु लगने रहैत छैन ।

खट्टर कका—जीनी मारिग बजलाह—ही, वारसो गास की छीक जे ब्राह्मणक वारस टा गास मिलकीयत) ब्रह्म । अविद्यक कृपापद्मे पितृपक्ष । शुक्लपक्षमे

देवीपक्ष। दृष्ट पक्ष लक्ष्मि। कासिकोमे अन्नकूट है। अमावस्यामे लक्ष्मीपूजा पूर्णिमागे सत्यदेवक पूजा। एकादशी है विष्णुक नाम पर। धनुर्दशी है महादेवक नाम पर। चौठ की धन्वमाक नाम पर। पण्डी है सूर्यक नाम पर। हो, एक-दू टा रहय लखन ने। कमा धरि गनाओल जाय। सभट पक्ष त भगदने करक हेतु बनत अछि।

हम-तखन एतदा रास जे ब्रतक विधान कैल गेल छैक सकर आशय की ?

खहर कका भाइभे धीनी भिनदैन वज्रलाह। वृत्तानि सुन्दरभोजनम् अनेन हति प्रतप्तम्। हम स देख अर्थ बुझैत छी। छटिक अर्थ टकु भा। चौठ धन्वक अर्थ भिडाकिया। पिलासक्रान्तिक अर्थ भूङ्गाहु। हाँलकाक अर्थ पूजा। धाजक अर्थ सेट। सत्यदेवक अर्थ शीतलप्रसाद। दुर्गाक अर्थ महाप्रसाद।

हम-तखन एतेक उपचासक जे नियम छैक....

खहर कका-सो पहिने सँ लोक उदर-दरी केँ सोन्हा कऽ रखैत अछि।

विशेषभोजनलोभात् सामान्यभोजनधिरह उपवास।

दोसर ई, जे पक्षैतिय सभ कलहु पाँतेन ऊपनाहि नहि भाग लगा लेथि सँ ब्राह्मण देवता कटोर सँ कटोर नियम बना देसथिन्ह अछि।

अन्नाधारात् शुकरी स्यात् फलभक्षे तु मर्कटी

जलपाने जलीकाः स्थात् पयःपाने भुजंगिनी ॥

अर्थान नी ब्रत काल अन्न खा लेथि त मृगरनी भऽ कऽ अन्न नैन्ह, फल खाथि त धनरनी भऽ कऽ। पाने पिबथि त जलीका होथि, दूध पीयथि त मीपन कोनो पवनीतिनक दर्प छैकि जे हर जलीका ब्रतमे एको धाँट पाने पिबलैक ? और एहन-एहन धधन पर हरनाल फेरऽ कला केँ ओ नहि। पक्षैतिय सभ तीज-तीन दिन सकि कऽ हरियार करथु और खेनाक धर एहिमे ब्राह्मण देवता पर धो कऽ तैयार। एही द्वारे खरना-परनाक एतेक जाल रचल गेल अछि। ही जखन सोमवारीमे भूषङ्क भूषङ्क जाल पीयर स्त्रीपण केँ १०८ बेर पीपरक धाक कान घुमैत देखै छिएन्ह त डीमीक दुश्च मन पड़ि जाइत अछि। एहि सँ संज्ञा किछक नहि कलष जे 'दे। ओतेक धुआँ कऽ नाक सूँधाक कान प्रयाजन ? परन्तु सोझ ओझरे रा धी वहराय नाह। त 'मध्य भाग वज्रनागिनी भोर म्यान करथु और गर्मी मे निर्जना एकादशी' ब्राह्मण देवता मना कऽ सजने छथिन्ह जे धी 'सरकस' बला अपना जानवर केँ साधस ?

हम-परन्तु ज्योतिषी-पुरोहितक बिना लोकक काजो त नहि चलि सकैत छैक, खहर कका।

खहर कका मोटामे भाइ धीन वज्रलाह ओ कर उगाहय छोटि और काजो कौन करैत छथिन्ह ? यजमानक घरमे प्रसावो नहि भलेक कि पहिनाहि सँ हकना लऽ कऽ तैयार। अम्ब होइत देरी बर्हा-खाना लऽ कऽ तैयार। नी टा रह की

रास जो गी बला भेनेन्ह छिष्ट नाक नाम पर दे किष्ट कतुक नाम पर दे अनिक नाम पर सँकेत। मलयक नाम पर मसुरा दे। अर्ध गीह धनुक व्यग्रना रहनेक से भिन्न भिन्न ग्रहक नाम पर उगाहि लेताह। जेना सभ ग्रहक धीकेदार येन करिय येन नययह। ज्योतिष शास्त्रक बाँधन नययही पड़ैत छैक। अन्य ब्रह्मणे जे मन्त्रक कालमे ब्रह्मणे पड़ैत छैन्ह। यदि यजमानक सोरही संस्कार नहि जाइत त पुण्यवत्क। नीक सोरही अगर कधी पर चलेन त मुँहना सड़ छैक। यजमानक नेना केँ और मुँह नाह छथि स्वयं यजमान। दशकर्म करैत-करैत काल सभ कर्म भऽ जाइ छैन्ह। ब्राह्मण देवता नेना मे नथने छथिन्ह जे वात-वानम कर ओसुलैत छथिन्ह। जन्म पर कर। मृत्यु पर कर। विवाह पर कर। गिरागमन पर कर। जन्माना जे कहियो उरास नहि। जन्मे सँ जे श्रृणपत्र पर मे नहि जाइ छैक से ब्राह्मण पर्वना नहि उतरैत छैक। थिन् ब्राह्मणे उत्तर नहि।

हम-परन्तु ब्राह्मण केँ दान देवामे फलो कतेक छैक, खहर कका।

मध्य कका-है, से त अवश्य। ब्राह्मणक पेट 'लेटरयक्स' छैन्ह। हुनका लहू खाओ छिओन्ह और मोझे पिरक केँ पेट भऽ जाएत। ब्राह्मण केँ कहिया की दान करी सको सोसविदा त ब्राह्मणक बनाशाल छैन्ह। जाइकाया सँ तुराह दान काँत ग्रीक। गर्मी मे एखा दान करीओक परस। मे छाना दान करिओक। सोन भेटि जाय त ब्राह्मण केँ दान करस, सोन हेराय तैयो ब्राह्मण केँ दान करल। गाय विनाश त पहिल दूध ब्राह्मण केँ दयऽ। अगर करय त प्रथम फल ब्राह्मण केँ दियऽ। सो जा ई लोकनि भारी धनक छलाह। सरकार एतेक सिपाही बन्दक रखल्यो उत्तर ओनाक मामगुजारी नहि दसुल कब सकैत अछि। ब्राह्मण देवता न बँधल एक शापक बल पर अराख्यो कर बसूल करैत आवि रहलाह अछि। तै कहलकैक अछि त-

धिव्यने क्षत्रियधने, ब्रह्मतेजो बल बलम्।

हम देखल जे ब्रह्म कका सँ गुर नहुन भल। एखन ब्राह्मण पर लागल अछि कहलैन्ह-खहर कका, एतेक शास्त्र पुराण त ब्राह्मणक बनाओल छैन्ह।

खहर कका बज्रलाह त नोहम केवल दग्धनवाधार केँने छथि। ब्राह्मण केँ अमक दान दान करी त कबधेय यज्ञक फल हा, अमक दान दान करी त सँकेत वेदक प्राप्ति। गनु राजबलक, सभमे त दैह भरल अछि। कतहु एकद्वारक ब्रह्मणा केँनहु हावशीक माहात्म्य। परन्तु सभ सीध-बलक उद्देश्य एकटा-ब्राह्मण केँ दान। अन्नदान, वस्त्रदान, शय्यादान, गोदान, स्पर्शदान, धौनदान, धूम्रदान, फलदान, कन्यादान। ब्राह्मण केँ चारु वर्षक कन्यामे अधिकार। त हयो करिय त ज्योतिष नहि पड़िय। अपने हाथमे कलम रहैक। जे जे कानून मन्त्रमे पलीक, दान जे नहि। पुराणमे त कदन अने 'श्रीपरांछा' भरल छैन्ह। राजा हरिश्चन्द्र स्वर्णाने ब्राह्मण केँ समस्त राज्य दान कऽ छैन्हकि



त ओही सत्त्व पर दृढ़ रहि गेलाह । सत्त्व न भ्रम-प्रलय के भय कैव-रूप प्राप्त कर  
सोमधिन्ह त हजारी धर्म धर्मि हुनारमे गिनायत भऽ कऽ, रक्षा-रक्षक । सभ  
पुराणमे न एहन एहन कथा भरि दन पाँदल

हम कहलियेक-परन्तु खड्डर कका, समस्त धर्मधर्मिक विचक्षण न ब्राह्मण  
कैने छथि ।

धृति क्षमा दयाऽन्येन औचित्येनैवैवैव ।

धीर्यसा सत्यनयः । दण्डके धमनवर्णम

खड्डर कका हमरा इहेन बजलाह-तौ एखन तेना छह । धर्मक रहस्य की  
बुझवहीक ? ई सभ स्त्री, शूद्र और यजमान की परतारक हेतु छैक

खड्डर ककाक भाइ देवार भऽ गेल छैन्ह । या दु चारि बृन्द शिवजिक नाम  
पर छीटि गृहगृह सीस लोटा पीचि गेलाह । गमन-गमन-गमन गाकास हाइल  
बजलाह-देखह, ई दशौ धर्म ओकरा हनु तेना जेन छैक जकरा में अपन नेचा  
लेबाक रहय । जेना ब्राह्मण ओकरा से काज लैत रहयि । आब ओकरा  
ई उपदेश दथ जकरा छैनज न ताँ सीस (धृति) राख, जेना न-दू शोक न-सि  
छाय पड़ीक तथापि सलोच कर । हम मारिदाँ आब रक्षक कर । मरम विचार  
नहि आन । अर्थात् क्षोभ की दमन कर । हमरा धर्ममे कतको मोह नैक वस्तु देखवै  
से चोराचर जुनि कियेक न चोरी करवै । पाप नगरीक मरिज रहय न नाहर  
भरल पानि कोना पीबि छैन ? तँ सफाह (शौच) राख । ना बाहर-भात-नम राम  
जाइ छै, तँ इन्द्रिय-निग्रह राख । एकदम बुद्धिक भऽ कऽ मन गवा कर्तव्य न  
नहि उजियैतौक । तँ किछु मुक्ति (न) मन राख । अपन धर्म (अर्थात् ब्राह्मणक  
सेवा) बुझबाक हेतु थोड़क ज्ञान (परा) मेला राख । और कृपि बाजय लगय  
तखन त हमरा शरीक बेर टकवै, मानि करवै, तँ मन्त्र पात्र और हम नाक्यो  
करिबीक त तो क्रोध नहि कर ।' हौ, 'देह दशौ धर्मक तात्पर्य छैक । जेद धाम  
शूद्रक हेतु नाम छैक, तेन स्त्री भाक हनु गैह तत्त्वनाक हनु

हम कहलियेक-खड्डर कका परन्तु ब्राह्मण जेना न एहि सभ धर्मक पालन  
करैत रहथि ।

खड्डर ककाक अखि लाख भऽ गेनैक । बजलाह-फूटि बात । जे सामर्थ्यवान  
अछि नकरा तेन धर्म की ? ई सभ उपदेश कका हनु गइल छैक । की ब्राह्मण  
क्रोध की त्याग कऽ कऽ बुझवथि त किछु भगवान के लान मरिन्धन । भगु,  
दुर्धारा परशुराम राभ न ब्राह्मण जेनाह । जी ब्राह्मण क धर्म गिरिधर न लगवै  
लिख-कृष्ण गंगाजल लऽ कऽ शाप देवऽ पर उचल भऽ गेलाह । जी ब्राह्मण  
क्षमाक पाठ पढ़ै रहितथि त नन्दवंश क जेना समूत न-दू शोक न-सि  
की आवश्यक बुझवथि त 'अविद्या' या राधियो या ब्राह्मण मामकी हनु । एहन  
वचन बनवितथि ! और यदि ब्राह्मण मन्त्र पर कायम रहितथि न मनाइक ई

दुर्धारा हाइल ? जहिना सँ ब्राह्मण लोभमे पड़ि गेलाह रहिये सँ छल, खुदता, स्वाध  
वाक्यक, मुक्ति ब्राह्मण नाक्य । हौ, जखन माथेमे मनाद भारि जैतैक त शरीरक  
का दशा हैतैक ?

हम कहलियेक-तखन अहाँ असली ब्राह्मण ककरा वृक्षत छियैक, खड्डर  
कका ।

खड्डर कका बजलाह-असली ब्राह्मण आब-कान्हि यूरोप-अमेरिकामे छथि ।

हम कहलियेक-अहाँ कै त हीन छ रहित अछि, खड्डर कका ।

खड्डर कका बजलाह-हँसी नाह करि 'देवोह' ब्राह्मण वृत्तिक अर्थ छैक  
ज्ञान-धर्म अपन जीवन लगा देव । से सेकड़ो हजारो वर्षक अनवरत तपस्या  
में ज जन्म विघ्न प्राप्त कर रल नार दिजा-नी आदि वस्तु संसार की दैनिक अछि  
गैह यद्यर्थमे ब्राह्मण आति धीक । हम तौ त केवल 'उदरभरि' ब्राह्मण शब्द  
कै सार्थक कर छी

हम कहलियेक-खड्डर कका, एहन एहन बात लोक सुनत त ब्राह्मणभोजनो  
उठा दे ।

खड्डर कका बजलाह-हौ, हम एहने बताह छी जे अनका आगाँ एहन बात  
ब्रह्मदेक । और एगोतक ब्रह्मदेक की ? मेहन कऽ पक्का बीच गाइक छैक जे  
एह दश में ब्राह्मणभोजन नहि अछि भईत अछि । 'चार्याक' चिचिया कऽ रहि  
गेलाह । 'कम्पुनिस्टो' चिचिया कऽ रहि जैलाह । हँ, खोपेयक कखन ?

हम-अपन मनान पूजा कैल जाऊ । हम भवेरे विशी कर वय पड़ीय जाव ।

खड्डर कका बजलाह-पूजा त बात पर हँक । तखन गन्ना-मोटा कऽ तैयार  
अनकर रहतैक । परन्तु विशी किछु देखिये सँ करविहऽ । कारण जे भोजमे हम  
नान मोक्षक तिसाद-किताय सेवाक कैने अवैत छी । एक साँझ पहिने उपसर्ग  
रूपमे एक साँझ बाद प्रत्यय रूपमे । कियेक । परान्न दुर्लभ लोक शरीर तु पुन  
पुन ।

ई कहि खड्डर कका कान पर जमऽ चट्टीनिक और लोटा लऽ कऽ बाध  
दिस विदा भेलाह ।



## सत्यदेवक कथा

खट्टर कका भाडक हनु मीक मरीच दिऐ। मरिषि सा कही भेद खट्टर कका। जका केकर दन जाइ छी।

खट्टर कका-कधीक पूजा।

हम-आइ हमरा अहि ठाम सत्यदेवक पूजा कैक

खट्टर कका-सते?

हम-सत्य नहि त कसि?

हमरा मूढ़ तर्क देखि खट्टर कका कजलाह परन्तु, श्री जी, हमरा त संदेह होइ अछि जे सत्यक नान पर कन्हि अमत्य

हम घाल करैत कहलियेक-खट्टर कका, सत्यनारायण भगवानक विषयमे ऐसियो सँ एहन बात नहि बाजक कही, नहि न

खट्टर कका-नहि त ओ रुष्ट भऽ कऽ अनिष्ट कऽ देताह। जेना भगवान के वन्दना देनयिन्ह। सैह ने? यदि ओ सरिपों एहन दुष्ट होथि त फेर नर और नारायणमे जनार की?

हम परन्तु जे हुनक पूजा करैत कैक तकरा कला न दैत छियन्ह।

खट्टर कका-नखन इ कमल ने ओ भूषामयी मांशे। जे हुनक दन्धार करैत नकर उपकार करियन्ह। ने नहि करैत। अकरा कृपा छेड़ा दऽ लगैयन्ह एहन भगवान और चहुधानमे भेद की?

हम-खट्टर कका, भगवानक प्रभुता अवल छैक।

खट्टर कका-परन्तु ई सत्यनारायणक कथा प्रमाण त हुनक हृदय अत्यन्त सौकीर्ण छैक। वचन सनान के पूजा करब विमरि गेलैक त फेरि घोरिक मोहमति लाग कऽ गिपाही सँ धरबा देल्यन्ह। और एहन प्रपच करगयना के तो कहत छैक 'सत्यनारायण'।

हम-खट्टर कका, हमरी कसि छियेक कि मरार करैत छैक

खट्टर कका-सँ त संसारे के हम बनाक कऽ कऽ बुझैत छियेक। हो हम पड़ैत छिओत जे नारायण अपने उषा बेपये छल कन्य गेनयिन्ह से त असत्य नहि भेल और वेधारा महाजन कनक वाजना त नयम कलापआदि छैक त से असत्य भऽ गेल। ई कोन न्याय?

हम-खट्टर कका, हरि अनन्त हनि कथा अनन्ता।

खट्टर कका-हो ई अनन्त सँ मे महाजन के वन्दनाइया देनयिन्ह। और एहन ओकर बेटी पूजा घटौलकन्ह त फेर ओइलाइ-देनयिन्ह ई भगवान की भगवान अभीदार भेलाह।

हम खट्टर कका, ओ भगवान के मनुष्य से कियेक चला बरैत छियेक।

खट्टर कका-मोहक काटी फेरन वजलाह हो कन्हि सति भरि जामक आइनमे छिनक पूजा देखित रहि गेल स त जिनका बड़ पांमर पड़ैतन्ह परन्तु एक बेर वेधारी के इइवड़ीमे प्रसाद खाएब छुटि गेलैक त ई पावक छिये के हुना दनयिन्ह ओ छेड़ा प्रसाद से के भगवान घात सति दोड़ैत त जिनका एक श्राव कियेक भेनेक। ओक काट न मनुष्य रियास नाह चरन के।

हम खट्टर कका, भगवान के मनुष्य से कियेक चला बरैत छियेक।

खट्टर कका-हो मनुष्य सन गेह गेह तयान त नय कनयिन्ह। ई न निक्की ओ भलमानुषक कन कटलकि। 'हमर पूजा कर त मनुष्य संनान सँ भगवान सभय प्रतीक नहि त नान का, देवीक जे ओर वन न कन कटल रांष्ट छिये। ने हुन दही ने थिगइत देरी। कनेको धिर्ध नहि। कन भगवान कनहु लोक सोय?

हम-खट्टर कका, अही एना कियेक कन। छियेक?

खट्टर कका-काना ने कति ओन। गहिने न किछि नयिन्ह के जामता समेत नक्या दल्यिन्ह और जयन कलाय छि कला सँ वशीभूत भऽ गेताह त उनटे चन्करनूप पर विगाई गेल्यिन्ह। सन देल्यिन्ह-भोर दूनु सगुर जमाव के छोड़ि दहीक पक्षष्ट विडाइया कलीक। नहि त राज-बार साह कऽ देवीक। वप्रक साह कऽ देवीक आव सँ तार पर लाग जवक। अना दुसखोर दगेण डारैत छि। दे, नहि त एना देवीक जर कऽ कऽ छोड़ि देवीक। सुदेवा लवीक। ने छाना चढ़ौनक नकर से खन माफ। जे नहि चढ़ौनक से फाँसी पड़ी। और एहन चरित्र के न कहे छत सत्यनारायणक कथा! नारायण! नारायण!

हम कान मुनि कहलियेक-खट्टर कका, भगवानक पूजा निन्दा नहि करक चली।

खट्टर कका-माइ घातैत यजलाह-हो, हम भगवानक निन्दा पाड़ैत करैत छियेक? जे इ कथा गदि कऽ हुना नाम पर घरीने छैक। ओर अनीयन कथे छियेक। एहि कथामे आदि सँ अन्त धरि भगवानक कलमुद्रता ओ स्वाधरता दल ओन गेल छैक। सुनना उत्तर पैह ओन छि। अना नारायण एक नन्दक नाभी दुन ओ इंप्याल रहथि। एहन कथा सँ नकन भजि की हेनेक? अने भजिन्त भऽ जाइत छैक।

हम खट्टर कका कथा सुनने नय की हृदयमे मय होइत छैक।

खट्टर कका-एही छार न कथा नकन गेल छैक। सत्यनारायणक पूजा करहुने, नहि त इश्वर नकन पाछा पड़ि जैथुन। बारह वर्ष धरि छिचिड़। नहि जवक।

हुनका प्रसाद खोअवहुन, नहि न राहू जकाँ टप्प दऽ गिदि जेधुन । जेना बनि न  
कै धऽ लेलथिन, तहिना सोरो धऽ लेधुन । नारायण की बेलाह बुझ्या भेलाह ।  
एहन भगवान सँ लोक की की प्रेम हैतिक ?

हम-खड्डर कका, कहत ऐक 'विनु भय होहि न प्रीति ।

खड्डर कका-ई प्रीति नहि भीति । हमर एक पिउसा छलाह-तुड़ी झा नेहन  
खिसियाइ जे लोक 'खटीरा झा' कहैत छलैक । जहाँ कनेक जन्मखदमे देगि होइत  
कि हइकथ उठा देखि । एक दिन पीसोक नाक छेवा पर उद्यम भऽ गेलथिन ।  
और जहाँ आगौं में दही छूझा घीनी कोरा पड़लैक कि शान्त पीसो की घुटलथिन  
जे, 'कहू की भरिअ नफमुन्नी चाही ?' तँ जखन हम सत्यदेवक कथा सुनेत छिथि-  
त तुड़ी झा मन पड़ि जाइत छथि । एहन देवता की डेवव बड्ड कठिन ।

हम-परंच ओहि कथाम इहाँ त देखाओल गेल छिंक जे एहि पूजा सँ की  
सभ लाभ होइत छिंक ।

खड्डर कका भाडक गोला बनवैत बजलाह-हँ, कथा की विषय कीमा  
कम्पनीक विज्ञापन थीक !

दुःखशोकादिभमने सर्वत्र विजयप्रदम् ।

धनधान्यसन्ततिकरं सर्वयामीषितप्रदम् ॥

एक लकड़िहारा पूजा कैलक त बिक्रीमे दुन्ना नफा भेलैक । एक ब्राह्मण दरिद्र  
सँ धनिक भऽ गेलाह । एक महाजन की बेटी भेलैक । एक राजा की बेटी भेलैक ।  
यैह ने चारु कथाक सारांश छैक ? हो ई सभ बात न राति दिन संसारमे होइतहि  
रहैत छैक । चाहे लोक पूजा करी या नहि करी । एही ठाम अवदुल्ला मियाँ कथिया  
कथा बीचबीचक जे होजक होज बेटी-बेटी छैक । और जकरा नहि हैशक रहैत  
छैक तकरा कतको शंख फुकने नहि होइत छैक । एही ठाम नुमाइ झा मत्सेमास  
पूजा करैत छलाह । परन्तु स्त्रीक पेट सँ एकटा मुसरिया नहि बहार भेलैक । हो,  
मासिक पूजा सँ कतहु मासिक धर्म बन्द होइ ? नेनपनि झा भरि जन्म पूजा करैत  
मरि गेलाह तथापि कहियो चार पर खपड़ा नहि बढलैक और दमड़ी साहू लकड़ीक  
रोजगार सँ दुइए वर्षीय पत्रका एकान उठा लैक । लकड़िहारा की रान्यनारायणक  
कृपा सँ दुगुन्ना नफा भेलैक । दमड़ी साहू की थोरनारायणक कृपा सँ दसगुन्ना  
नफा भेलैक । आप तौड़ी कहह-कोन बेसी तेज ?

हम-खड्डर कका, केवल लैकिके लाभ नहि पूजा सँ पारलौकिको लाभ छैक ।

खड्डर कका-हँ, से त छैह । दलाल पधका छथि । कहै छथि-

धनधान्यसुतारोग्यदाता मोक्षप्रदस्तथा ।

न किंचिद्विधते लोके यन् स्यात्सत्यपूजनात् ॥

सपैया रँचा सँ लऽ कऽ मोक्ष पर्यन्त एहन कोनो यस्तु नहि जे एहि पूजा सँ  
उपलब्ध नहि हो । लकड़िहारा पूजा कैलक और सोझे वैकुण्ठ चलि गेल ।

इह लोके शुद्ध भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं गयी ।

लोक एक बेरि सत्यदेव कथा सुनि लब्ध और सभ प्रकारक दुःख सँ मुक्त भऽ  
जाय ।

यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ।

हो, यदि मोक्षक प्राप्ति एतेक सुगम रहैक त नामक गाम एखन धरि जेधमुक्त  
भऽ गेल रहैत । कतहु दुःख देखहिमे नहि अवेत ।

हम-न कि अहाँक विचार ई कथा बनीतिहार फूसि निखलक अछि ?

खड्डर कका-हमरा त यह देखयामे अवैत अछि जे आदि सँ अन्त धरि केवल  
फूसिए छैक-यजमान की पीसावक हेतु । जेना हमरा लोकनि नेना की परतारैत  
छैक- 'गे बाउ कान छेदा से त गुह्र भेटलैक मिरारी भेटलैक, किछिमिश  
भेटलैक " तहिना ओहू मे लोभ दैत छिंक " तै बाउ । ई पूजा कर त येदा  
भेटलैक, घन भेटलैक, स्वर्ग भेटलैक ।" बस, सोभीशरोयणि लोकनि भक्तपराज  
बनि जाइत छथि । परन्तु हम ने ओहन लोभी छी मे बच्चावला बुद्धि रखैत छी ।

हम-खड्डर कका तखन अहाँक जनैत जे पूजा करैत अछि से बच्चावला  
बुद्धि रखैत अछि ?

खड्डर कका भाड गोला चिकनवैत बजलाह से कोना कल्लिजौह ? एक धर  
क्षयक मेलामे गेलहुँ । ओहि ठाम रंग विरगक खेलौना देखैत रह्य । 'सरता वाला  
आ गद' जम्पाम लल्ल आ गद' हाथी से लो दस पैसा, घोड़ा से लो दस पैसा,  
मोटर से लो दस पैसा, छएक मास दस पैसा' चारु कात सँ लोकक झुड दूटि  
पड़ल । हमरा संगमे एक टा नेना रहय । जे जा कऽ एकटा घड़ी लऽ  
आएल- 'थयू ककाजी, दस पाइमे घड़ी ।' परन्तु जाहना माझमे पहिरय मागल  
कि त्वरक जीना दूटि गेलैक और गोल कऽ काटल कागत नीचाँ खसि पड़लैक  
हम कहलैक- 'देखत ! दस पाइमे घड़ी एहने होइत छैक नकली मालक फेरमे  
नहि पड़ी । तहिना दू धरि पानिज करा गुड़ कोरि कऽ जे ओकरा बदलामे स्वर्ग  
चा मोक्ष पैयाक जाड़ा रहैत छथि, तनिक और ओहि बच्चाक बुद्धिमे हमरा विशेष  
अन्तर नहि बुझि पड़ैत अछि ।

हम-खड्डर कका, जी सत्यनारायणक कथामे किछु तत्त्व नहि छैक त लोकमे  
एतेक प्रचार कियेक छैक ?

खड्डर कका-कियेक त अधिकांश लोक लोभी और मूर्ख होइत अछि । लोक  
चाहै अछि जे कम्पे खान, कम्पे रागधमे कम्पे प्रचारमे सभ किछु भऽ जाय ।

स्वल्पक्षमैरल्पवितैरल्पकालीश्व सत्तम ।

यथा भवेन्महापुण्यं तथा कथय सूत नः ॥





गुलाबजामुन सन नगदिवर की पवित्रावक हेतु पुरोहित की अपना सोच में लाने कय जनड गोठयवैत देखइ छिएन्ह, त हुनका सम्भक बुद्धि पर दया आगि गइ। आइ। परन्तु बड़का-बड़का पंडित की ई नहि कृपि पड़े छैन्ह जे इ मया कयन स्वयं मात्र भय रहल अछि।

खट्टर कका अउपोष ५ भइ पारय लगलाह। पुनर्वसु-खट्टर कका, अपना दशक पंडित भक्तनि एहि पर चक्रम किएक नाँव करैत छल।

खट्टर कका भइ योगी। यजुज्ज-एकर कारण छैक त अपना दशम संस्कृत विद्यापीठ लघुकीमुदी सँ प्रारंभ करैत छथि 'नव्या सरस्वती मुदी' में संस्कृत। एहि छैक आदि ए सँ जे 'अहं अद्वैतगजभद्राचर्य' स्वरूप लागि त हुनका सन संस्कार आत्मस बनल रहि जाइत छैन्ह। एही छारे ओ पंडितो भेला उत्तर अपना बुद्धि सँ गोथि नहि सकैत छथि। परन्तु हो जी। ई बात खनिह छै। नहि न दशम तहन तहन महाविद्यालय छथि जे समय कगारे भाइ देत।

हम कहतिछैन्ह खट्टर कका, भक्ति यान नुति ए सब मोइन छै।

खट्टर कका यजुज्ज-तै न हमरा ककरो सँ नहि पडैत आइ। तै, सम्भक्तन घृत क्षीरं गोघृतस्य च घृणकम्' से सब सामान परसि छौह कि न? 'अभावे शालिचूर्णम्' त से करवत?

हम-नहि खट्टर कका। मालभांग करक शीतलप्रसद यजुज्ज।

खट्टर कका-अहा! तथान त हम अवश्य आएस। कका न जान? ऊँह शंख वज्र नगनीह त पंडितो गेथीह। हम कवन प्रसन्नक गोभ सँ पूजाग जइत छी। से हम अपन बड़का कलगहयो मोरा नेने ऐथीह।

खट्टर कका भाइ तेकर कका तू बुद्ध हाजिरकाक नाम पर छितैत यजुज्ज-यम आइ। राधादेव सामान भइ गेल। त हा, ई दुहा अ परचारक स छन धारि बुद्धिमान, ताँको भएह नहि।

ई कहि खट्टर कका भरल मोटा भाइ चक्र मोलाह।

## ज्योतिष

ओहि दिन ज्योतिषी मुसाइ झा हमरा अहिताम पनइ देखैत रहगि कि खट्टर कका भइछोटला नन पंडितो गेलाह। हुनका देखिसनि मुसाइ झा अपन पोथी-पाइ समेटय लगलाह। परन्तु खट्टर कका पुछिए गैरलब्धिक की ओ मुसाइ झा की होइ छैक?

मुसाइ झा सिरपट्टाहन यजुज्ज-दिन नाकि रहल छी।

खट्टर कका-एक। की अइ? दिन त एखन छै। चारु काल सूर्यक प्रकाश पसरल छैन्ह। त जहाँ की नहि सुझैत अछि की?

ज्योतिषी-से नहि। हिनका आज्ञा सँ एखन नैहर छथिन्ह। ओ कहिया औधिन्ह सैह...

खट्टर कका-जहिवा मन हैतैन्ह तहिवा आगि औधिन्ह। ओहि खानिर अहाँ किएक व्यग्र भइ रहल छी?

ज्योतिषी-परन्तु औधिन्ह त नीके दिनमे?

खट्टर कका-है, जहि दिन बदरी विकल नहि रहनैक ताहि दिन आगि जाइत। मेघाच्छन्न हि दुर्दिनम्'। से दुर्दिनमे न नहि चलीत।

ज्योतिषी परन्तु एहि मासमे त एको टा दिन नहि हैतैन्ह।

खट्टर कका एहि मासमे नीस टा दिन हैतैन्ह। जहिवा सुविधा हैतैन्ह, आगि औधिन्ह

ज्योतिषी-परन्तु काल जे एखन पूव छथिन्ह?

खट्टर कका ओ मुसाइ झा हमरा जुन ठकू काल कि अहाँक चितकपरी घोड़ी छथि जे एखन पुनरिवा हलामे चरय गेल छथि? काल कोन धड़ी कोन क्षम नहि रहै छथि से त कहू।

ज्योतिषी-अहाँ त शास्त्र मानितहि नहि छी। एखन सूर्य दक्षिणायन छथि।

खट्टर कका-आइकालामे त सूर्य दक्षिणायन रहबे करैत छथि। गर्ममे अपने उत्तरायण भइ जैलाह। एहिमे हिनकर दूनु गोटाक कोन अपराध छैन्ह, जे बिदागरी रोकवा रहल छिएन्ह?

ज्योतिषी-हम की करिऔन्ह? एखन तीन मास दिन नहि बनैत छैन्ह।

खट्टर कका-से किएक?

ज्योतिषी-देखू, पूरागे न बिदागरी हो नहि।





ज्योतिषी बजलाह-परन्तु मुहूर्तचिन्तामणि...

खट्टर कक्का डेटत ककलधिन-मुहूर्तचिन्तामणि नहि, धूर्तचिन्तामणि।

ज्योतिषी गोडियाइन बजलाह-तखन ग्रह-नक्षत्रक जे एतवा विचार कैल गेल अछि से जाल पीक ?

खट्टर कक्का-जाल नहि महाजाल। जाहिमे बड़का सँ बड़का महाजन फँसय। नक्षत्रक अइमे ज्योतिषी अपन नक्षत्र धनवेत छथि।

ज्योतिषीजी विपण होइत बजलाह-तखन भृगु पराशर आदि जे एतवा राखे लिखि गेलाह अछि से सबटा फुसि दीक ?

खट्टर कक्का फेर डेटलधिन-वैर राम बचि कऽ त अहाँ सभ हजारो वर्ष सँ ई ठक विद्या घला रहल छी। जे अपना मनमे आवय से श्लोक गढ़ि कऽ जोड़ि दिओक और टोकि दिओक पराशरक माथ पर। औ, हमहूँ भृगुसंहिता, पाराशर होरासार देखने छी तेहन-तेहन वचन ओहिमे भरल छैक जेना यजमान कँ जानि बृद्धि कऽ बूढ़ि बनाओल गेल होइक।

ज्योतिषी अधिश्वासक भाव सँ पृच्छधिन-अपने प्रमाण दऽ सकैत छी ?

खट्टर कक्का कहलधिन-एक दू नहि, जनेको।

ताबत भाइ तैयार भऽ चुकल छल। हम खट्टर कक्काक आगी लोटा बढबैत कहलिऐन्ह-पहिने ई भऽ जाय तखन

खट्टर कक्का एकके छकमे लोटा खाली कऽ गेलाह। तत्पश्चात् ज्योतिषी कँ कहय लगलधिन-आब सुनू। घु घे घो ला ओ गोलाध्याममे लटकल धूर्तराज सभ केहन ठोंग रहने छथि।

उपपदे बुधकेलुभ्यां योगसम्बन्धके द्विज।

स्वलांगी गृहिणी तस्य जायते भात्र संशयः॥

यजमानक पत्नी मोटाहल होइथिन्ह सेहो ज्योतिषी कुंडली देखि कऽ बृद्धि जाइत छथिन्ह। एतवे नहि, यजमानिनीक स्तन कहन छैन्ह सेहो पर्यन्त पन्ड्रा सँ ज्ञात भऽ जाइत छैन्ह

कठिनोर्ध्वं कुजाचार्यं श्रेष्ठस्थूलोत्तमस्तना।

यजमानक टीपनि देखला सँ हुनका पता लागि जाइ छैन्ह जे यजमानक स्त्री अनकरा सँ फँसलि छथिन्ह।

जामिने मंदभीमस्ये तदीशे मंदभूमिजे।

वेश्या वा जारिणी वापि तस्य भार्या न संशयः॥

मेनाक टीपनि देखि कऽ ओ जानि जाइत छथिन्ह जे ओ वापक जनमल नहि थीक।

भग्नपादशंसयोगाद् द्वितीया ह्यादशी यदि।

सप्तमी चार्कमंदारे जायते जारजो ध्रुवम्॥

ततवे टा नहि। देवरक वीर्य सँ ओकर उत्पत्ति भेल छैक सेहो गन्ध हुनका लागि जाइ छैन्ह।

ग्रहराजे स्थिते लग्ने चतुर्थे सिद्धिकामुने।

स्वदेवरात् सुतोत्पत्तिर्जाता तस्याः न संशयः॥

ही, ई सभ लंछ नहि त और की थीक ? और एहन-एहन पाखंडी कँ एहि देशमे उपाधि की देन जाइत छैन्ह-ज्योतिर्विद्यार्णव। छि एहन मूर्ख देश पृथ्वी पर और कतहु भेटतौक ?

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कक्का जी ज्योतिष सत्य नहि त ग्रहणक हाल ई लोकनि पहिनहि कोना जानि जाइ छथि ?

खट्टर कक्का बजलाह-हौ, समुद्रक कात जे मत्स्य रहैत अछि से न्यार-भाटाक हाल पहिनहि कहि देलौह। परन्तु तकर अर्थ ई नहि ज तोरा काकीक जौधमे कोन ठाम लिप्या छैन्ह सेहो ओ कहि देन। जे आकाशक निरीक्षण करैत अछि से पहिनहि कहि देलौह जे आइ राति भुरकवा बंछन उगत। परन्तु ओकरा सँ जी हम पुष्टि गऽ जे भुरकुरवा वाली कँ मेना कहिया हैतैक त ई केहन भारी मूर्खता हैन। मेर मूर्खता एहि देशक लोक कऽ रहल अछि। और धूर्तराज सभ एहि मूर्खता सँ साथ उठा रहल छथि। ग्रहणक हाल कहैत-कहैत पाणिग्रहणक हाल सेहो कहय लागि जाइत छथिन्ह। एही विश्वास पर यजमान-यजमानिनी पूँइल जाइ छथि।

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कक्का अहाँ जे सभ वचन कहलिऐक अछि से सभ कि वास्तवमे ज्योतिषक ग्रन्थमे लिखल छैक ?

खट्टर कक्का बजलाह-नहि न कि हम अपना दिस सँ गढ़ि कऽ कहलिऔह अछि ? ज्योतिषक आधार त एहि ठाम बैसने छथिन्ह। पूछि लहुन्ह जे ई सभ श्लोक ग्रन्थमे छैन्ह कि नहि। सेहो ग्रन्थ केहन त 'पाराशर होरासार' !

ज्योतिषीजी माथ कूड़ियवैत बजलाह-हँ, वचन त अवश्ये ग्रन्थमे छैक। परन्तु ओकर राखता पर अहाँकँ विश्वास किएक नहि होइत अछि ? जातकविचार कँ अहाँ मिथ्या भुलैत छिएक ?

खट्टर कक्का लाल-लाल आँखि कर बजलाह-मिथ्ये नहि, लंछनी। तेहन-तेहन अश्लील गारि ओहिमे भरल छैक जेहन आइ-कारि बरियातोमे नहि होइ छैक

मुसाइ झा पुण्डलधिन-अपने दृष्ट्या दऽ सकै छी ?

खट्टर कक्काक स्मिरित और तंज भऽ गेलैन्ह बजलाह-तखन सुनू-

धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगमिक।

जाया तस्य भवेद्वेश्या माताऽपि व्यभिचारिणी॥

की डहकनमे एहि सँ वेशी गारि होइत छैक ?

मु मु नाने ॥ १० ॥ खट्टर कयाक वरंग एतावतमे वृष भंड गवाह ॥ खु,  
नाने वरंग ॥ ११ ॥ की कने पुर ॥

खट्टर कयाक वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

औ, एहन हरी-गसखरी त आब सारी-बहिनीहमे नहि होइत छैक।

हम कलमिऐक-खट्टर कयाक, ज्योतिषमे एहनो-एहनो बात सभ कहैक स  
हमरा नहि होइत छैक।

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

परन्तु राज भैयाक कोन कथा ते तट लवक हेतु एकरा राज पयल नहि भैते  
अछि।

मुगाइ झा पुछलथि-नखन अहाँ केँ आपनिमे विश्वास नहि भनि ?

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग  
वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

खट्टर कयाक वरंग वरंग ॥ ज्योतिष वरंग वरंग वरंग वरंग वरंग

ज्योतिषीजी कि-धवाइत अपन कुंडली बस्तामे सँ बाहर कऽ खट्टर कयाक  
हाथमे दत्तधन।

खट्टर कयाक कुंडली देखि कऽ कहलथि-की ओ ज्योतिषी ! हम फल कहू ?  
अहाँ पछएव त नहि ?

ज्योतिषी-पछएव कोन ?

खट्टर कयाक-वैश त सुनू। पाराशर होरासाक वचन छैक-

भीमांशकगते शुके भीमक्षेत्रगतेऽपि च।

भीमयुक्ते च वृष्टे च भगयुष्मन्भाग भवेत् ॥

ई जन्म छैक कि नहि ? अब अपन कुंडलीक स्थान देखू। ई योग अहाँमे लगैत  
अछि की नहि ? आज यदि अहाँ कहीं त हम भाइ टीका कय सभ केँ अर्थ बुझ  
दीक।

ई सुनैत देरी मुगाइ झा अपन पोथी पत्रा समेटैत बिदा भऽ गेलाह। खट्टर  
कयाक वरंग वरंग रहि गेलथि- औ ज्योतिषीजी ! औ ज्योतिषीजी !  
पुछलथि नऽ छैक।

परन्तु केँ पूर्य



## महाभारत

क्रम प्रातःकालक श्लोक राम पढ़ैत रहल अवैत रही-

'पुण्यश्लोकी नलो राजा पुण्यश्लोकी युधिष्ठिर.'

आकि घाटेमे भेटनाह खहर कका वज्रका-की भार भेरे भगती गभाक राम लैत छह।

हम कहलियेन्ह-खहर कका, धर्मराज...

खहर कका दोरी 'नज्जल-धर्मराज नहि, युधिराज। एतन युधि आइ धीर संगारामे केओ भेल अछि जे मुआक पाणी अपन राजपाट ओ स्त्री पर्यन्त हरि धने वन छिड़िआएल फिरय ? हुनकर जोड़ा एकटा छिड़िन्ह-रामा नल। अहो तेरने छन्दस। तुआक पाणी अपन सर्वस्व गमा जंगलमे मरलन कान्ह गेलाह और ओह ठाम स्त्री की सुन्ने छिड़ि कऽ पड़िआह। तहन युधिष्ठिर अथाह तहने नल नकड़िआ। दू एके भुआमे जातय योग्य। तै जे ई श्लोक वनीलक अछि से खूब जोड़ा लगीलक अछि।

हम-खहर कका, ई लोकनि महाभारतक आदर्श महापुरुष थिकाह जिनक जीवनी सँ लोक असंख्य शिक्षा ग्रहण कऽ सकैत अछि।

खहर कका-हँ युधिष्ठिरक जौवन मे तीन बानक शिक्षा घेबैत भाँछ प्रथम त ई जे जुआ नाँव सेलाह। दोगर, जो बड़भानीक नूर नहि छी त और नहि खेलाह। तेसर जो खेनदे करी त स्त्री केँ दाव पर नाँव चढ़ना एकरा अतिरिक्त औरी कहणक या उपदेश भेटैत अछि। जेना संसारमे फूसि सँ केओ नाँव नाँवल अछि। जे धर्मराज कहवैत छथि तिनको 'अश्वत्थामा हत' कहिक, उन करप पड़लक। संगाराम कहना युद्ध अक्रियक विश्वास नहि करक वाली राम सँ यहुका त ई शिक्षा भेटैत भाँछ जे कुन्हे एकटा युधि उत्पन्न भेल सभ्यता देश केँ संरक्ष कऽ दैत छैक। यदि युधिष्ठिर जुआरी नाँव यहुँ जाय त महाभारतक युद्ध किएक होइत ?

हम-खहर कका अहाँक त सभटा अदभुत बात होइत अछि। सभ लोक कहैत अछि जे धर्मराज अन्याय सँ महाभारतक युद्ध भेल और अहाँ उनटे युधिष्ठिर केँ दोष दैत छियेन्ह।

खहर कका तो अपने विचारि कऽ देखाह। यदि युधिष्ठिर महाराज जुआ खेलाय नहि जैतथि त एतक होइत किएक ? और हारि गेलाह एहिमे अन्याय कौन दोष ? तत्काल पर वास्तव भजत गेजत हो युधियक केँ त लोक नज्जल

देवे करैत छैक। एहिमे दूधोधन और अक्रियक कौन दोष ? और अखन हरिण मे सह नखन अपना दान पर रहिनाथ। ई की ते हरियो नाएव अ राज्या शासक ?

हम-खहर कका, द्रौपदीक अपेक्ष अपमान कैलकैन्ह, चौरहरण कैलकैन्ह और अहाँ कहि छी।

खहर कका-तो द्रौपदी रहय तेरने करथि। हुनका कर्मियो पैगुलक विचार रहलैन्ह ? मरल वनघोने रहथि। दूधोधन देख्य एलादिन्ह। संगाराम तेहन झनकैत छैक जे देख्य एतन हुनका सदह भेलैन्ह जे ई जन थोक कि स्थल थोक। एहिमे हँसबाय कान दात रहैक ? परन्तु द्रौपदी ऊपर सँ छिनाखिना उल्लाह। जानये नहि सुना कऽ कहलाहैन्ह 'आकरक बेठा आकर होइ छैक' कहू ते, ई कहैत मममयी वाक्य भेलैन्ह। युद्ध ससुर धृतराष्ट्रक प्राँन हुनका एतन बात पात्रय उचित छलैन्ह ? और कौरव राम त पाण्डव सन भुसकौल छल नहि जे अपमान धोटि कऽ पीबि जइलैन्ह। ओ राम अगिया पै गल छल। द्रौपदी अपनदि विद्वनीक छत्ता खोधारय गयीह नखन ओ सभ जे कैलकैन्ह से टाके कैलकैन्ह। वृज्रह त महाभारतक जड़ि द्रौपदीक थिकैन्ह।

हम-खहर कका अहाँ पाण्डव राम केँ भूखल किएक कहैत छियेन्ह ?

खहर कका भुमकील न रहबै करथि। मरल सभामे द्रौपदीक देह सँ साड़ी खींचि कऽ तन कऽ दलकन्ह और गंधो पाण्डव गूड़ी गाड़न बैसल रहि गेलाह। ओहि काल भीमक गदा और अर्जुनक गांडीय कहाँ गेलैन्ह ?

हम-खहर कका ओहि ठाम मौफा नहि रहैन्ह।

खहर कका की भाय आँह सँ वझी मोका कहेन सय छैक ? वृज्रह न पाण्डव नाम ली गेथार छलाह

हम-परन्तु अर्जुन भीम कहैत रहथि ?

खहर कका तो अर्जुन पुरुष रहिगथि त मोह दन्डी मुझा साड़ी पहिरि, स्त्री बनि कऽ राजकुमार केँ नाम मिळायत पर रहिगथि ? गरि स वर धोड़ाक सइसी करिगथि त स नीक। अपना जौवनमे द्रौपदी केँ अनजान महलमे राँह जेहोयक क जे कहैत दोग्ग जिमका कौर धोटल जइन्ह से पाण्डव धन्य छलाह। भीम त मोझे भनकीय छलन्ह। भोज भाव न जने पेट भरन सो काम। खली भोज भेने की हैतैन्ह ?

हम-खहर कका, ओ नार्कल अज्ञान-वारागे छलाह।

खहर कका-सञ्जान ठाम करबाक छलैन्ह न तेहन ठाम जैतथि जतय केओ मुँह नहि ठगलैन्ह। हो, ई लोकनि दासदाम सँ देखबाय योग्य नहि छलाह।

हम-खहर कका अर्जुन सभ धीर केँ अहाँ एना कहैत छियेन्ह ?

खहर कका हो माछे छिड़ पर निश न लगोने लोक कौर कहावय त मल्लो राम धीर थोक। यदि अर्जुन संधायन वीर रहिगथि तखन गोआर गोड़ि राम स्त्री-





है गर्भधान भऽ गेलैन्ह। देखयानी ओ क्षमिष्ठा तेहन एकठोसि छलीह जे कच और ययानि के संग नग कय छोड़लथिन्ह। भत्यपर्वमे त एक एहन कुमारिक कथा आगम छैन्ह जे यौवन धरि गेलाक बाद स्वच्छरा सँ अपन विवाह कैलनि। हो, ताहि दिनमे थोना पदार्क बन्धन त रहैक नहि। कुमारि कन्या सभ स्थच्छन्द भऽ कऽ धूमध्वज सुभद्रा रैवतक पर्यंत पर मेला देखय गेलि रहथि, ओही ठाम हरण भेलैन्ह। एक बेर हीपदी केश फोलने बाहर टाढ़ि रहथि, ओही काल जयद्रथ हरण करय लगलैन्ह। चोरी त ओ लोकनि पत्रिचे नहि कराथि। स्वाइत दिनदहाड़े हरण कऽ लऽ जइन्ह। और एक धात कहिअतः कुमारि सभ के अपनो प्राय सीढ़ नीक लगैन्ह। सुभद्राक हरण भेलैन्ह से अपने इच्छा सँ। रुक्मिणी ओक हरण तहिना भेलैन्ह। भाद रोकाऽ गेलथिन्ह त हुनका रथेक पहिचामे बन्नुबा देखलैन्ह। बृम्हा त ताहि दिन कन्या लोकनि विवाहक हेतु खेखनियी कइत छलीह। अनुशासन-पर्वमे त साके लिखलकैक अछि...

हम-खट्टर कका, अहाँ जौ कतहु व्यासगद्दी लग कऽ महाभारत बाँधी त अनर्थ हो।

खट्टर कका-हो, व्यासक नाम नहि लेह। ओ खुशामदी छलाह। आदि सँ अन्त धरि पाण्डवक पक्षपात केने छथि।

हम-एकर कारण की?

खट्टर कका हमरा कोन लग आवि गर्ह-गर्ह बजलाह-कारण यैह जे व्यास अपनो धर्ममंकर छलाह। व्यासो मत्स्योदरीय तखन जारज पाण्डव सभक पक्ष कोना ने लेथुन्ह?

हम-खट्टर कका, अहीक त सभ बाते अद्भुत होइत अछि।

खट्टर कका-परन्तु कहे छिओह यथार्थ। सोरो महाभारत देखने यैह वृद्धि पड़ेइ जे कृतक्षेत्रमे धर्मयुद्ध रहि गेल। पाण्डव लोकनि अन्याय ओ छल कपट सँ काज नैने छथि। कण श्रेष्ठा भीष्म, जयद्रथ-राभक वध त अधर्म सँ कैल भेलैन्ह। और ताहि पर व्यास कहैत छथि-यती धर्मस्ततो जय। हो, हमरा त महाभारत देखला उत्तर यैह वृद्धि पड़ेत अछि जे-यती धर्मस्ततो जय।

खट्टर कका धोड़ेक बान धुप रहि पुन बजलाह-परन्तु ओसेक अन्याय जे धरय से अन्तमे गलये करय। स्वाइत ई लोकनि हिमालयमे गति गेलाह। बुधिष्ठिरक संग राख-पाट त गेलैन्ह नहि, एकटा कुकुर भाग्य संग गेलैन्ह। भ्रातृ-विरोध केने की फल भेलैन्ह? परन्तु तैयो त हमरा लोकनिक आँखि नहि फुजैत अछि।

## देवताक चरित्र

खट्टर कका भाउ पिउने बुल रहथि हमरा हाथमे मोटा देखि पुछलनि-आइ भोरे-भोर कहाँ चललाह अछि?

हम-आइ शिवरात्रि थिकैक। महादेव पर जल दारय जाइत छिएन्ह।

खट्टर कका-ई आइ माग। कनकन करैत। ताहिमे तौ भोरे-भोर पानि दारय जाइत छहुन। से महादेव तोहर की सिगाइलथुन्ह अछि?

हम-खट्टर कका, अहाँ केँ त सभ बान्मे रसिप रहैत अछि।

खट्टर कका-हँसी नहि करैत छिओह। शिवजी त अपने शीतवीर्य थिकारह। हुनका पर जल दारवाक कोन प्रयोजन? ताहि सँ चर एक लोटा पानि हमरा नेबो क गाछमे पटा देल करितह त फलो बहराइत।

हम कहलियेन्ह-खट्टर कका, अहाँ केँ देवतामे भक्ति नहि अछि?

खट्टर कका-बजलाह-कोन देवतामे भक्ति राखय कहै छह?

हम-सभ देवता त पूज्ये छथि।

खट्टर कका-कोन बात लऽ क?

हम-धर्म लऽ कऽ।

खट्टर कका तखन कोन देवता अधर्म सँ बचैत छथुन्ह? हम त सभक उत्तेजित जैत छिएन्ह। जिनकर बखिया कहह, उचारि कऽ राखि दिओह। धनिक बृम्हा त देवता सँ दैत्यक चरित्र उत्तम।

हम-खट्टर कका, अहाँ धन्य छी। सभ ठाम उनटे गंगा बहा दैत छिरेक।

खट्टर कका-तखन देवासुर-संग्राम पढ़ह। दैत्य सभ दीर छल और वीर जहाँ लड़ि कऽ मरैत छल। देवता लोकनि केवल छल सँ जितैत छलाह। ई लोकनि अन्यायी तहन छलाह जे रामुद्ध-मथन सँ जे अमृत बहराएल से अपने सभ भिषैत गेलाह और विष बहराएल से ओकरा सभक आगो पामि दलथिन्ह। भीरु रुद्र सँ बेसी जहाँ असुर सभ बढ़ाइ करैन्ह कि लगले ब्रह्म-ब्रह्मि कऽ दौड़ाथि ब्रह्माक ओतय सँ विष्णुक ओतय, विष्णुक ओतय सँ महेशक ओतय। स्वर्गी एक नम्बरक। अपने गरजें आनकर। एतथा बियेक रूढ़ जे ककरा सँ कोन धनु माझी, बधीचि मुनि सँ पीटक हड्डी माझि लेलथिन्ह। स्वाइत ओ वज्र धनि गेल। एहन ठाम त चर खसि पड़य।

हम-खट्टर कका, अहाँ एकतरफा फैसला करैत छी। देवता लोकनि केहन केहन काज केने छथि से नै देखिओन्ह।





वृन्दावनविहारी यवन रहलाह और कान निकसि गोला पर सोझे मधुराक माट फेर किएक लकी वैर घुरि कऽ पुछारी करदिन्ह जे राधा या गंगिता कोना छथि । जे यशोदा ओनेक माखन-मिसरो खाएलाक निम्न कोन यश देलाक ? बूझी न ई ककरो दास्य नहि । अपन मतनयक यार । अपन काज साधक हेतु माछ, काछ, बराह-कोन काज रूप मे धारण कैलन्हि अछि । एहन बहुरूपिया के हेत ? ने नरासिंह रूप धारण करैत देगे । ने बड़बड़ वनेन । राम बनि धनुष तोड़िन्ह छथि, परशुराम बनि फरसा भजैत छथि । कहियो स्त्री के घाम छोड़ि बनेक वाट नहि । एहने एहन अद्वयज्ञान काज करैत त भौं जेन छैन्ह । एक अवतारमे पादक घेत छथि छथि दोसरमे नामक पटाके कऽ भरिन्ह छथि । अपन कायक अवतार सऽ कऽ नहि जानि की करैत ।

हम-खड्डर कका, ई सभ त भगवानक सीला थिकैन्ह ।

खड्डर कका-हैं भगवान खेलाहुन ते छथि । असलमे केओ 'जन्मियन' त ऊपरमे छैन्ह नहि । जेना-जेना मनमे आवै छैन्ह से करै छथि । ई नेनमति कि कहियो छुटयवला छैन्ह । भरि जन्म वृद्ध त नायासग रहैत । एही द्वारे राग वा कृष्णक मूर्तिमे कतहु दाढ़ी-मोछ देखलहुन अछि ?

हम-खड्डर कका, ई त येश कटगर गप्प कहल । परन्तु विश्व केँ पालन करवाक धार त हुनकेँ ऊपर छैन्ह ?

खड्डर कका-पालन की करताह ? 'देवन भारी भानस्यावलास' जे सदा क्षीर सागरशयन ! सद्विखन सासुरमे पड़ल ! देवता सभ बहुत गोहारि करैथन्ह त एक बेर गरुड़ पर सइलाह और जा कऽ सुदर्शन चक्र मेँ काज कऽ आलाह तकरा घाद फेरि वैह लक्ष्मी-मूलकगले-मधुकर । राति दिन सासुरमे पड़ल पड़ल लोक सींगिन्ह गऽ जाइत अछि । हो जकरा पर संसार मरिह हिमान कि एव करवाक भार होइक से कतहु एहन अहदी भेल रह्य ? परन्तु हिनका जीती के ? कहियो भृगु सन ब्राह्मण री पला रहि जाइत छैन्ह तखन बूझैत छथि । अमनमे तै ई ब्राह्मण से हड़कलौ रहैत छथि । जो हिनकामे कनेक ब्राह्मणक भक्ति रहितन्ह त हमरा कपार पर दरिद्रा किएक रहितथि ?

हम-तखन त आव एकेटा बाँकी रहलाह-महेश ।

खड्डर ककाक अखि और लाल मऽ गेलैन्ह । बजनाह-महेश त सहजे अलपराहे छथि-आक-धधूर विद्वान, वेभत भन । हुनका ने जति-गति-क टेकान ने धृआ-इति-विधार । भूल प्रेय वैतन्यक संग सोझमे धाम लाने ताउ मुंड तऽ कऽ श्मशानमे झीझ करैत । लोक एना करय त अहरी कदावय एही द्वारे महादेवक प्रसाद केओ खाइत छैन्ह ।

हम-बास्तवमे महादेवक प्रसाद लोक नाहि खाइत छैन्ह । परन्तु हमरा ई कारण नहि ज्ञास छल ।

खड्डर कका-कारण वैह जे महादेव नास्तिक छलाह । ई ने कहियो टीक रखलन्हि ने जनउ । माथ पर जटा गरमे साँप ही बड़द पर केओ चढ़ैत अछि ? ई त सभटा धर्म-कर्म हुवा देखनि । वृद्ध त हिनका सन नास्तिक आइ धरि केओ नहि भेल । त्याइत सभ मिलि कऽ हिपका जहर दऽ देलकैन्ह ।

हम-खड्डर कका, महादेवजी निर्विकार छथि ।

खड्डर कका-सोझे निर्विकार नहि बुझहुन । ससुर नेओल नहि देलकैन्ह त गर्दिने छेपि लेलथिन्ह । एकर ससुरक त ई हाल और ओकर ससुरक बेटी केँ सद्विखन माथे पर चढ़ौने ! ई त कलियुगो केँ जितलन्हि ।

हम-परन्तु महादेवजी आशुतोष छथि । हुनका प्रसन्नो होइत ने देरी ।

खड्डर कका-हैं, जहाँ केओ दू टा बेलपात चढ़ा देलकैन्ह कि लगले-यर बूहि । घर देमय काल औदर दान । तैं की भेलैन्ह जे भस्मासुर अपने माथ पर हाथ देमय लगलैन्ह । सभ दैत्य बूझी त हिनके सनकाओण अछि । देवतामे एहन भोलानाथ दोसर भेटवे कोन करिन्ह ? आखन धरि 'धनिकक बुद्धियक क्षिय अवतार' कहवैत छथि । ही, हम त अपना भरि देष्टा कैल जे यमभोला सँ किछु झीटी परन्तु कहाँ एहन धरि हाथ लगलाह अछि ? एहन भयङ्कर कोन भरोस ?

हम-खड्डर कका, तखन सभ देवतामे श्रेष्ठ अहाँ किनका बुझैत छिऐन्ह ?

खड्डर कका-कोना कहिओह ? खय देवता लोकनि एकर मीमांसा नहि कय सकलाह अछि । महादेव विष्णु केँ पैघ मानैत छथिन्ह । विष्णु महादेव केँ पैघ मानैत छथिन्ह । रामजी रामेश्वर महादेव बना कऽ पूजैत छथि । महादेव राम नाम केँ गुरुमंत्र बूझि जप करैत छथि । सीताजी गौरीक पूजन करैत छथि । गिरिजा सीताजीक ध्यान धरैत छथि । पार्वती महादेवक आराधना करैत छथि । महादेव दुर्गाक स्तुति करैत छथि । सोहन गङ्गद्वाराध्याय छैक जे देवता लोकनि केँ नहि बूझि पड़ैत छैन्ह जे के छोट केँ पैघ । नहि त महादेवक विवाहमे कतहु गणेशक पूजन हो ! बापक विवाहमे बेटाक पूजा ! देवताक वाते सभ उदपटांग होइत छैन्ह ।

हम-ई देवता लोकनिक सीजन्य थिकैन्ह । जे जेहन पैघ से ततेक चिनथी ।

खड्डर कका-साँ 'देवता मित्र' थिकल । हो, देवता सन झगड़ाहु केँ भेटतीह ? ई लोकनि अपनामे तेना लड़ैत गेलाह अछि जे की बटेर लड़न ! पहिने त "अहाँ हमर पूज्य त अहाँ हमर पूज्य ।" और जहाँ केओ कनेक सनका देखक कि लगले भिड़न्तो होइत देरी नहि । इन्द्र और कृष्णमे, कृष्ण और महादेवमे महादेव और गणेशमे, कोना कोना उदपटक भेल छैन्ह से बुझवाक हो त पुराण देखल । और अन्तमे फेर वैह स्तुति । अहाँ पैघ त अहाँ पैघ । हो, ई लोकनि असाध्य छलाह ।



हम खट्टर कका, सभ देवता के त अहाँ अकार्यक बुझैत छिऐन, तखन सृष्टिक काज कोना चलीत छैक ?

खट्टर कका भड्घाटना हाथगे नैत बजलाह—असनमे बुझाह त एक्के टा देवता तैज छथि । और ओ छथि कामदेव । ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन हुनका सँ हारल छथि जखन थइकेक ई हान त कुत्र गयल गणेश । हिनका पछाडयवना आइ धरि केओ नहि जन्म लेलक । तँ हिनका हम सभ सँ प्रबल देवता मानैत छिऐन, जायत पर्यन्त सृष्टिक प्रवाह चलीत छैक ताबत पबन कामदेवक सत्ता के अस्वीकार कय राकेत आछि ? ई पंचभूतमय शरीर हिनके पंचशरक प्रसाद थीक । और जाहि दिन ई देवता अपन बाण तरकामे राखि प्रस्थान करताह ताहि दिन प्रलय बूझह । सृष्टिक तोपे केँ त प्रलय कहैत छैक ।

हम—तखन कामदेवनक जे उपाख्यान छैक ?

खट्टर कका—तकर उनदे अर्ध पौराणिक लोकनि बुझैत छथि । कामदेवनमे तृतीया तत्सुरूप छैक—कामेन दहनम् । पौराणिक लोग योनि हिनका अग्नि सँ दग्ध होइत अछि । देखह हिनक जतेक नाम छैक सभ सँ पैह तन सूचित होइ अछि । सभ कामना सँ पञ्चल-सँ कामदेव, लोक केँ मत्त कैनिहार—तँ मदन । मन केँ मयि कऽ छोड़ि देत छथिन्ह—तँ मन्मथ । चिरहिणीक जान मारैत छथिन्ह—तँ मार । आनन्दक स्वामी थिकाह—तँ रतिपति ।

हम—तखन महादेवजी हुनका नहि जितने छथिन्ह ?

खट्टर कका—महादेव हुनका की जितथिन्ह ? वैह महादेव केँ जितने छथिन्ह । आहि सँ एखन धरि महादेवजी अर्द्धनारीश्वर कहबैत छथि । पौराणिक बुझै छथि जे शिवजी मदन केँ भस्म कऽ देलथिन्ह । हम बुझैत छी जे मदन हुनका भस्ममय बनौने छथिन्ह । नहि त स्त्रीक वियोगमे दोसर केँओ किएक नै भस्म सम्यैत अछि ? ही, यदि ओ वास्तवमे मदन-विजय केने रहितथि त गणेशक श्रीगणेश कोना छोड़ैत ?

हमरा निरुत्तर देखि खट्टर कका पुनः अपना तरंगमे बहय लगलाह । बजलाह—ही असनमे बुझाह त कगादेव महन्देव, सभ एक्के थिकाह । जैह हर, सैह मार जैह अनंग, सैह दिगम्बर । मनमे उत्पन्न होइ छथि नै मनोभव । हिनके सँ सृष्टि उत्पन्न होइ अछि नै भव । बुझाह त जसल सृष्टिकर्ता तैम थिकाह । ब्रह्मा, विष्णु, महेश—सभ हिनके भिन्न-भिन्न स्वरूप थिकाथिन्ह । अपने सँ उत्पन्न भऽ जाइत छथि नै स्वयम् । देखऽमे नहि अबै छथि तै तिराकार । सभ काम व्याप्त छथि तै सर्वव्यापी । अन्त नहि छैन्ह तै अनन्त । भग सँ संयुक्त, तँ भगवान । एखन शिवलिंग पर जे जल छारऽ नैत जाइ छहुन से हिनके पूजा होइ छैन्ह कि अगकर ?

हम—खट्टर कका, जहाँक त सभ टा बात अद्भुत होइ अछि

खट्टर कका—टीक कहैत छिऔह । असली देवता थिकाह कामदेव । पैह सृष्टिक मूलकर्ता छथि । तै सर्वदा सँ हुनके पूजा होइत अगएत छैन्ह । केओ एक अगक पूजा करैत अछि फओ दोसर अगक । परन्तु विचारि कऽ देखन तत्त्व एक्के चाह शैवमे देखन या शक्तमे । लिंगपूजाक भर्म बुझवाक हो न लिंगपुराण देखह

लिन्देदी शिवदेदी लिंग साक्षान्तहेश्वर ।

नयो रामचन्द्रादय देवी देवदेव पूजिनी ॥

पुनरात्त मेह थिकैक । आब लाक ओकरा हुनछाद कही या अद्वैतवाद अघका विवादादेत । तहि सँ हमरा झगडा नहि

हमरा मूँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह—तँ भातिज थिकाह । बेसी खोलि कऽ कोन काँह भौह ? एखन शिवान्तमे जा कऽ ध्यान सँ देखह गऽ त शिवलिंग ओ जलछरी—हुहुक रहस्य बुझवाये आवि जैतीह ।

## ब्रह्मानन्द

आज दिन फगुआ रहेक। खट्टर कका कमर बादाम दऽ कऽ भाङ छनैत रहथि। हमरा दक्षिणहि वज्रनाह-आधर आवत आइ कंसरिया छनैत छैक। एक गिलास तोहू पीथि लैह।

हम कहलियेन्ह-खट्टर कका, हम त नहि पियेत छी।

खट्टर कका-तखन किऐक जिवैत छी? नोनकाड़ा पीयक हेतु? सौ, ई मानप जन्म बारवार नहि भेटतीह।

हम-खट्टर कका, हमरा डर होइ अछि।

खट्टर कका-वज्रनाह श्री आर्यकुलक नाम किऐक हँसवैत छह? अपना यज्ञक रनातन धर्म केओ छोड़य?

हम-ई रनातन धर्म कोना भेल?

खट्टर कका-वेद पढ़त तखन वृजयहीक जे हमरा लोकनिक पूर्वज कोना सोमपान करैत छलाह। ऋग्वेदक प्रथमे मंडल सँ जे लोगक स्तुतिगान आरंभ भेल अछि सो किऐक राग पर आजात? नयम मंडलमे त तेहन सोमरसक प्रवाह छूटल छैक जे सब किछु ओहीमे पुँवे गेल अछि।

हम-परन्तु सोमरस भाइ थीक तकर प्रमाण?

खट्टर कका-प्रमाण एक दु गलि, अनेको देखत ओ कुँडी राँटा सँ घोटल जाइ छल।<sup>१</sup> लोड़ा नऽ कऽ पीसल जाइ छल।<sup>२</sup> बस्त्र सँ छानल जाइ छल,<sup>३</sup> दूध या पानिमे घारल जाइ छल।<sup>४</sup> ओहिमे कड़एकटा मसाला पड़ैत छलैक।<sup>५</sup> ओ तीन रंगक छानल जाइत छल-हरियर उज्जर ओ पीयर ऊर्धत रादा, दुधिया ओ केसरिया। एहि तीन रंगक वर्णन वेदमे आएल अछि। यदि एतनी पर तोरु मदेह हो जे ओ भाङ नाहि लोक तखन भुजबराक चाली जे तोरु बुझिये भाङ पड़ल छीह।

हम-परन्तु किछु गोटा सोमरसक अर्थ ज्ञान अथवा चन्द्रमाक किरण लगवैत छथि।

खट्टर कका-हुनका लोकनि केँ बुद्धिक अजीर्ण रहैतैन्ह। जेना कतेक गोटा केँ विश्वपतिक विपरीत वर्णनमे जाला परमात्माक संयोगक भेटि जाइत छैक। परन्तु ही जी? हम त सोझ-सोझ बात बुझैत छी। यदि सोमक अर्थ ज्ञान त ओ भूँसर सँ कोना फूटल जाइत छल? यदि चन्द्रमाक किरण, त लोड़ा सँ कोना पीसल जाइत छल?

१. ऋग्वेद (१।३८७)। २. (१।२७७)। ३. (१।६४५)। ४. (१।६४१)। ५. (६।१११)।

हम-तखन सोम भाङे छल।

खट्टर कका-अइषय। अध्यायक अध्याय त सको वर्णन सँ भारत अछि। कतहु छामबाक वर्णन<sup>१</sup>। कतहु घोरबाक वर्णन<sup>२</sup>। श्रष्टा लोकनि केँ एकमे अपूर्व आनन्द भेटैत छलैक। देखत देखताक राजा इन्द्र नभक पियेत छथि जे कुत मऽ जाइत छथि<sup>३</sup>। तेना पियेत छथि जे दाढ़ी-मोछ पर्यन्त रस सँ भीजि जाइ छलैक<sup>४</sup>। दाढ़ी सँ चुबैत रस केँ झाड़ैत छथि<sup>५</sup>। आवक लोक की पिउत?

हम-परन्तु यदि सोमरस वास्तवमे भाङ छल तखन मनीषी लोकनि ओहन गंभीर तत्त्व.....

खट्टर कका-ही, गाढ़ रंग छनैत उत्तर म गंभीर लच्छ मुझैत छैक। सँ वैदिक ऋषाकार लोकनि सोमरसक प्रवाहमे नेहन रस बहा देने छथि जे कल्प-कल्प त महिए रहैन्ह-काटी मोड़ि देने छथि। संघमे जेहन भृंगार रस छैक तेहन संसारक कोनो साहित्यमे नहि भेटतीह।

हम-सकित होइत पुष्टिलियेन्ह-ये वेदमे भृंगार-रस? हमरा त होइ छल जे वेदमे केवल भगवानेदाक चर्चा रहैन्ह।

खट्टर कका-वज्रनाह-तो वेद देखलह कहिया? जे वेदक भागे टा सुनल छथि से एतिना बुझैत छथि। परन्तु वेद खोलि कऽ देखल तखन ने वृजयहीक जे ओहिमे की सब छैक। सहस्रशीर्षा मन्त्र सँ नऽ कऽ सौमि केँ भारवाक उपाय पर्यन्त ओहिमे भेटि जैतीह।

हमरा भूँह तकैत देखि खट्टर कका-वज्रनाह हमरा लोकनिक वेद की थीक जे भानुमतीक पेटरी बीक। जे धाही से ओहिमे सँ निकालि निचऽ। त वेद सँ केओ डवाइ जातल बाहर करैत छथि, केओ रेंडिओ बाहर करैत छथि। हम भाङ बाहर कऽ लेल त कोन अनुरोध केल?

हम कहलियेन्ह-खट्टर कका, एकटा वडका भ्रामसोपाध्याय दिव्दु करैत छथि जे रेलगाड़ी बर्नवाक मन्त्र वेदमे छैक।

खट्टर कका-वादाय धोरित वज्रनाह-हँ, लेकिन ओहि रेलगाड़ीक एंजिन हुनके विभागक भीतर सीटी दैत छलैन्ह। ही हम पुरैत छिऔह जे देशमे क्रोचक लॉज पंडित भरल छथि जे राति-दिन 'गणपतिग्व हयामहे' करैत रहैत छथि। किऐक ने सब गोटा मिलि कऽ 'भुज वैदिक रेलवे' चला लैत छथि? रेलक कोन कथा, एकटा साइकिली ई लोकनि आठ धरि बाहर कय सकलाह अछि? और जखन एक खिलायनक बच्चा 'एटम बम' आविष्कार कऽ संसारक विध्वजय कऽ लैत अछि त तिनका लोकनिक निद्र दुटै छलैन्ह। हाजी नैत चुटकी बजवैत गलधोधी

१. ऋग्वेद (४।६८।३)। २. (१।३७।३)। ३. (७।१८।३)। ४. (१।२६।४)। ५. (२।११।१७)।

करवा भागि ग्राह्य छथि—'अ' ई घरत न हमरा अथर्ववेदक थीक।' छी, एकरे काँ छैक धेधरपनी—एका लज्जा परित्यज्य सर्वत्र विजयी भयेन।

हम कहलिएक—खट्टर कका, शास्त्रमे रेल, तार, विजली, रेडिओ, ग्रामोफोन, टेलीफोन एरोप्लान, रीकेट सभ क्रिश्चन यैह सभ बाहर केनक। अपना देशक पंडित की कैलकि ?

खट्टर कका माडमे मलाइ मिलैत बजलाह—अपना देशक पंडित केवन घोंघाउज फैललि। कहियो जितिया लेल। कहियो छिटि लेल। कतहु 'घटो घट' लऽ कऽ। कतहु 'नीलो घट' लऽ कऽ। अनीचार कहिया पड़ैत अछि ? दुर्गामी कधी पर चडि कऽ अवैत छथि ? एहि सभ बात सँ फूरखनि होइतक तखन ने हेलिकोट्टर वा टेलिभिजन बाहर करिनिथि ?

हम कहलिएक—परन्तु आध्यात्मिक विषयमे .

खट्टर कका बजलाह—आब बेसी तामस जुनि टठावह। 'आध्यात्मिक' शब्द सुनि कऽ हमर देह जरि जाइत अछि।

हम—से कियेक खट्टर कका ?

खट्टर कका—यैह 'आध्यात्मिक' हमरा लोकनि केँ चौपट कऽ देनक।

हम—से कोना ?

खट्टर कका—ब्रह्म सत्य जगनिथ्या—यैह वेदान्त त हमरा लोकनि केँ अकर्मण्य बना देनक। संसार मिथ्या शरीर मिथ्या, धन मिथ्या जन मिथ्या जीवन मिथ्या, सुख मिथ्या सर्व मिथ्या यस, वस्तुमात्र केँ स्थापन कऽ वृक्षित रहू। चीना हफ़ीम, भारतमे वेदान्त। छी, एशियाक बीये बताह छैक

हम—परन्तु, आनोआन देशक लोक त वेदान्तक प्रशंसा करैत अछि ?

खट्टर कका—हँ, हमरा लोकनि जतेक अधिक वेदान्ती बनल रही ततेक आन देशक केँ फायदा छैक।

हम—से कोना ?

खट्टर कका—जखन ओ सभ चढ़ाइ कऽ देत त हमरा लोकनि 'सोऽहम्' जयैत रहि जाएव। यैह 'सोऽहम्' करैत-करैत त हम सभ सोहल सुखी भऽ गेलहुँ।

हम—परन्तु पारमार्थिक दृष्टिऐँ

खट्टर कका—फेर वैत बन ? छी, पारमार्थिक दृष्टिऐँ हमरा लोकनि कोन जग जिलने छी ? किनका ब्रह्मक साक्षात्कार मिलैक अछि ? हमरा ग आइ धरि केओ ब्रह्मज्ञानी नहि भेटलाह अछि। जी गम्भ सुनबाक हो तखन त 'वद्वपथान' मे वद्वम बाबा पूजयबला भगतो एहि देशमे वेदान्त छटैत अछि। कलौ वेदान्तिन राखे फलसुने बालक इय।

हम—परन्तु जकरा ब्रह्मानन्दक रस प्राप्त भऽ गेल छैक से...

खट्टर ककाक दुधिया भाइ तैयार भऽ गेल छलैक। बजलाह ब्रह्मानन्दक रस यैह धियेक हम त रस भ्रान्त ओ ब्रह्म एहि नीनु केँ एक्के कऽ वृक्षित छी। ई काह खट्टर कका लोटा उठैलन्हि और पिबैत पिबैत आनन्दमे विभोर भऽ गेलाह।

हम पुछलिएक खट्टर कका अहाँ रसक अनन्य प्रेमी दिकहुँ। परन्तु पदरसमे बेसी आनन्द भेटैत अछि कि नगरसमे ?

खट्टर ककाक जौखने लाली आवि गेलैक। बजलाह—हम दूनमे कोनो भेद नहि धूनेन छी। रात्रिकेक मजो रस हमरा पदरसमे भेटि जाइत अछि। भृंगार और मधुर एक्के थीक जैह रस विद्यापतिक 'वरयीवनि' मे छैन्ह रैह रस हमरा गानादह आम मे भेटि जाइत अछि। हास्यक स्वाद हमरा अम्मतमे भेटि जाइत अछि। जैह गोनु आक चुटकुला यैह तेनरिके खतामेड़ी। वीर ओ रौद्रक अनुभव हमरा लौडिया मरचाइमे भऽ जाइत अछि और दीपस्वक अनुभूति तीनमे। करुण रसक सत्य लयणमे भेटि जाइत अछि और भान्ना रसक तत्त्व कथायमे। वैराग्यशक्तक पट्ट अथवा त्रिपञ्चाभूर्ण फाँक, एक्के वात थीक। अद्भुत रसक आनन्द हमरा पिपरमिटमे भेटि जाइत अछि।

हम पुछलिएक—खट्टर कका, अहाँ केँ कोन रसमे विशेष आनन्द भेटैत अछि ?

खट्टर कका बजलाह—हमरा रस मात्रमे आनन्द भेटैत अछि। चाहे ओ रस अनगरक हो या कश्मिरक। सामिलक रस हो या क्षुधितक विचारि कऽ देखल जाय त सभ रस एक्के थीक। चाहे ओ मदिरामे हो वा मदिराशोभे ! मृगनैतीमे वा मैनी माछमे। कबुकमे वा कंचुक फलमे। गोपीमे अथवा गोपी आममे।

खट्टर कका तरंगमे आवि गेलाह। बजलाह—रस की वस्तु थीक ? जलक सुस्मरण कण। यैह अण पुष्पमे जा मधु बनि जाइत अछि, जंगुरमे जा आसव बनि जाइत अछि। मोतीमे जा 'आभा' बनि जाइत अछि, तरुणीक गाल पर जा ओज बनि जाइत अछि। अरुणद पर अद्वैत काश्मीरी सेव और तरुणाइ पर अद्वैत काश्मीरी गान एक्के उपादानक दू भिन्न स्वरूप छैक। ते भास्विक दृष्टिऐँ इभक लताम और मुग्धा नादिकामे कोनो भेद नहि। एहि विषयमे हम शुद्ध अद्वैतवादी छी। काव्य-रस ओ वाक्ता-रसमे, गंगाजल ओ गुलाबजलमे, सरणामृत ओ अधराभूतमे हमरा भेद नहि वृक्षि पड़ैत अछि। छेलाक संदेश हो या प्रियतमाक, दून मे हमरा समान माधुर्य भेटैत अछि। कविता ओ कामिनीक पदमे हमरा एक्के विलसताक अनुभव होइत। बंता फुल गेल, इजो/िया छिटकि गेल, सुन्दरी पुराकरा उठलैह। बात एक्के थीक। कलकंठी खिलखिला उठनीह या शेफालिकाक फूल झहरि गेल अथवा धाशनीमे बुनिया उडिला गेल—एहि तीनूमे भेद की ?



हम कलकलेंक-आम ! माधुर्यक वाहि आधि गेल । खड्डर कका, आव अहाँ असली रंग पर आवि गेलहुँ ।

खड्डर कका अपना प्रयासमे वजीत गेलाह-हौ, एही रस केँ राखिदानन्द, परब्रह्म वा भगवान आदि नाना नाम देल गेल छैक ई 'नाना रूपधरो हरि' थिकाह । कतहु वैखरी रूपमे योगी केँ नखवैत छथि, कतहु किन्नरी रूपमे भोगी केँ नखवैत छथि । कतहु सराज बनि भ्रमर केँ रिझवैत छथि, कतहु उरोज बनि रसिक केँ रिझवैत छथि । कतहु गुरालय (देखालय) बनि आस्तिक केँ मोहैत छथि कतहु गुराऽलय (नदिरालय) बनि नास्तिक केँ । कतहु कंचन रूपमे लोभवैत छथि, कतहु कंचनी रूपमे । कतहु धारांगना रूपमे, कतहु वीरांगना रूपमे ।

ई रस नित्य ओ शाश्वत थिकाह । अनदि कालसँ हिनक उपासना होइत आवि रहल अछि । वैदिक युगक सोम वा आधुनिक युगक चाय, हिनकेँ रूप थीक । सत्ययुगक रभा, उर्वशी ओ मेनूका एखन चित्रपटक तारिका रूपमे अधनीर्ण भेल छथि । एहि परम्पराक कहियो अन्त होमयवला नहि । ई रस अक्षय ओ अनन्त थिकाह ।

वैह रस सृष्टिकर्ता थिकाह । सृष्टिक मूल थीक रसवृष्टि । अंजन, पिङ्गज, उद्भिज-सभक उत्पत्ति रसेक बिन्दु सँ छैक । और पालन-पोषण-सभ किछु त रसे पर निर्भर छैक । जन्म होइमहि शिशु पयोधर दिस लपकैत अछि । और तरुणो भेला उत्तर सैह संस्कार बनल रहि जाइत छैक, रस मूलतः एक्केँ थीक, चाहे ओ उमड़ल पयोधर सँ भरल अथवा उमड़ल पयोधर सँ । मयूर सँ हजुर पर्यन्त ओ देखि कऽ माथि उदैत छथि । अतएव वैह रस ब्रह्मा ओ विष्णु दूनु थिकाह ।

और संहारकारी महेशो वैह थिकाह । जे मधु चुट्टी केँ अमृतकण पियवैत छैक सैह अपनाभे लपटा कऽ प्राणो लैत छैक । दीपक ज्योति पतंगक हेतु जीवन-मरण दूनु थिकैक । पिपय-रस जियेयो करैत छैक, मारवो करत छैक । सँ ओकरा अमृत कहू वा बिष । बात एक्केँ थीक ।

वैह रस ब्रह्म वा ब्रह्मानन्द थिकाह । बीरासी लक्ष योनि हिनकेँ पाछाँ नाथि रहल छथि । भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न रूपेँ हिनक आराधना करैत अछि । केओ राजा बनि पृथ्वीक सुख भोगैत छथि । केओ तपस्वी बनि स्वर्गक सुख लुटय बाह्रि छथि । बेदानी केँ मोक्षमे चरम आनन्द भेटैत छैक । धार्मिकपंथी कहै छथि-मीधिमोक्षो हि मोक्षः

हम कर्जालेंक-खड्डर कका, अहाँ घरम आनन्द कधीमे मानैत छी ?

खड्डर कका बजलाह-गुनभ संसारमे पाँच टा आनन्द मुख्य थीक । शास्त्रानन्द, काव्यानन्द, संगीतानन्द, विषयानन्द, भोजनानन्द । एहिमे कोन ककरा सँ बलघान से एहि श्लोक सँ बूझह-

काव्येन हन्यते शास्त्रं, काव्ये गीतेन हन्यते ।

गीतं नारी-विलासेन, बुध्या सोऽपि हन्यते ॥

शास्त्रक चर्चा प्रियगर संगैत छैक परन्तु जहाँ काव्यामृतक वर्षा होमय लागल कि लोक ओकरे रसास्वादनमे लागि जाइत अछि । और जखन मधुर रागिणीक स्वरलहरी झंकृत भेल तखन फेर कविता केँ सुनैत अछि ? परन्तु ओहू सँ बेसी प्रबल होइ छथि कामिनी । हुनक नूपुर-संकारक आगाँ कोन गीत-वाद्य ठहरि सकैत अछि ? परन्तु एक शक्ति एहन अछि जे हुनको पाछाँडि दैत छैक । ओ थीक उदरक ज्याला । सँ भोजनानन्द केँ हम सभ सँ प्रबल मानैत छी । रसना केँ जाहि वस्तु सँ सृति भेटय, सैह ब्रह्म थिक । अन्न ब्रह्म मधुर ब्रह्म ।

यधि मधुरं मधु मधुरं ब्रह्मा मधुरा दित्तापि मधुरैव ।

तस्य तदैव हि मधुरं यस्य मनो यत्र सत्तनम् ॥

अतएव हमरा सँ यदि केओ पूछय जे जीवनक घरम आनन्द की थीक ? त हमर उत्तर अछि रसो वैरः अर्थात् रसगुला । रसगुला केँ हम साकार ब्रह्मक प्रतीक मानैत छी, जकर सायुज्य सँ सचः अनिर्वचनीय आनन्दक प्राप्ति होइछ । निर्गुण निराकार ब्रह्म तऽ कऽ कि चाटव ? सँ हम सगुण ब्रह्मक उपासना करै छी-

अखण्डमण्डलाकारं श्वेतवर्णं रसान्वितम् ।

सर्वानन्दकरं दिव्यं रसगोलं भजाम्यहम् ॥

परन्तु ओहि ब्रह्मक पूर्ण आनन्द लेबक हो त भंग-भयानीक आराधना करव आवश्यक । सँ हम भंग-भयानी केँ मोक्षक साधन चुनैत छी । वैह भयानी हमर आराध्य देवी थिकीह ।

सदा रसमयी देवी मधुरानन्ददायिनी ।

यस्याः शुब्धनमात्रेण ब्रह्मानन्दः प्रजायते ॥

हमरा लोकनिक पूर्वज पिउबाक आनन्द जन्मैत छलाह ।

एकेन शुष्कघणकेन घटं पिबामि

वापीं पिबामि सहस्र लघुणांखंडैः

संतप्यते यदि च रोहितमस्त्यखंडः

संगां पिबामि यमुनां सह सागरेण ।

हुनका लोकनिक सिद्धान्त छलैक-

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले ।

ही, आव ब्रह्मानन्दमे लीन भऽ रहल छी . . .

एतवा कहैत खड्डर कका अचेत भऽ गेलाह ।

ओकर दुख्खा सँ काफ़ी आवि कऽ वजलीह-तावत किछु काल हुनका ओहिना छोड़ि दियौह । हम अवि कऽ सन्तारि देबैह ।



## शास्त्रक वचन

भाति दिन छहूर कका में आसवचर्चा छिड़ि गेल बान ई भेलैक जे छहूर कका चार छहूर रहियि । हम कहलियेन्ह—छहूर कका, भरवेमे छहूरनी करवैत छिएक ?

छहूर कका बजलाह—हौ, अनदिना जन नमि भेटैत अछि । तैं धरतक काज हम भदवेमे करा लैत छी ।

हम कहलियेन्ह—छहूर कका, अही शास्त्रक वचन नहि मानैत छिएक ?

छहूर कका बजलाह—कोन-कोन वचन मानय कहैत छह ?

हम कहलियेन्ह—शास्त्रमे जे किछु लिखल छैक से हमरा लोकनिक फलदायी । सभमे किछु ने किछु अभिप्राय भरल छैक । मनु, पांडवकस्य, पराशर आदि कि एकोटा वचन निरर्थक लिखने छथि ?

छहूर कका मुसकुरा उठलाह । बजलाह—तखन हम एकटा पुरैत छिऔह । मनुक वचन छैन्ह—

१ दिवीन्द्रामुधं दृष्ट्वा कस्यचिद्विशयेदबुधः ।

जी भाकाशमे इन्द्रधनुष देखी त दोसरा केँ नहि देखायी । एहिमे कोन अभिप्राय छैक ? और उदाहरण लैह । स्मृतिसमुच्चयमे लिखैत छैक—

स्वगृहे प्राक्शिराः स्वप्यात्, श्वाशुरे दक्षिणाशिराः ।

प्रत्यक्षशिराः प्रचासे च न कदाचिदुदङ्गमुखः ।

अर्थात् अपना घरमे पूर मुहें सूती । सामुरमे दक्षिण मुहें सूती । परदेशमे पश्चिम मुहें सूती । एहिमे की तात्पर्य छैक ?

हमरा निरुत्तर देखि छहूर कका दिहूँसैत बजलाह—एहि यचैनक अनुसार यदि गामक जमाय चलऽ लागयि त भारी समस्या भऽ जैतैन्ह ।

हम कहलियेन्ह—से किएक छहूर कका ?

छहूर कका ताख पर से मोटा कुडी उतारैत बजलाह—हौ, गामक देखी अपना घरमे पूर भर माथ कऽ कऽ सुतगीह और वरक सिरमा दक्षिण भर रह्यौन्ह । तखन घर कि पडल पडल बखीर खोंदताह ?

हम कहलियेन्ह—छहूर कका, संभव जे एहूमे किछु गूढ आशय होइक ।

छहूर कका भाइ रंगईत बजलाह—तोहर बाब सुनि कऽ एकटा कथा मन पडि जाइत अछि । एकटा यजमान श्राद्ध करैत छलाह । ओहि ठाम एकटा बिलाड़ि आवि कऽ बारबार मइराय लागल । से देखि पुरोहित कहलथिन्ह—एकरा यानि

दिजीक यजमानक वातक ई बात देखैत रहथिन्ह । अखन किछु दिनक उपरान्त ओ यजमान मरि गेलाह और येह वालक हुनक श्राद्ध करय लगलथिन्ह त अपना पुरोहित मे पुछलथिन्ह—तखन धरि बिलाड़ि मडि बान्हल गेल ? पुरोहित कहलथिन्ह—ओही जे गति कर्मक विधान नहि छैक । यजमान पूर बजलाह—'हमरा कृपाक येह रीति अछि—मम स्वयं अपना अर्पित से देखि चुकल छी ।' तखन एकटा बिलाड़ि कनाहु से अनाओल गेल और ओकरा गरम रस्सी बान्हल गेल । रस्सी से जोहि वशम बिलाड़ि बन्हाक प्रथा चलि अवैत अछि । वशज लोकनिक केँ मोह छैन्ह जे माजीरयधनमे गूढ तात्पर्य भरल छैतैक । हौ, एही तरह एहि दशमे कतेक रास अन्धविश्वास पसरल अछि, नकर ठेकान नहि

हम—तखन आचार्य लाइन ततक रास वचन कि अकारण बनौत छथि ?

छहूर कका भाइमे सौंज मरगस देल बजलाह—हौ, रासरासमे अकारण कोनो वस्तु होइ छैक ? कोनो पक्षि केँ सामुरमे घर चुदैत छल छैतैन्ह । दक्षिण भर कियु निगु देखि खोट घुसका मेन होलाह और अनाक बनौत होलाह श्वाशुरे दक्षिणाशिरा । कोनो आचार्य केँ अने दिन पूवधर ठम लागि गेल छैतैन्ह ताहि दिन से सिद्धांत बनौत होलाह—शनिवारे त्यजेत पूरम् । हुनकें दखादेखी ई निचम धरि गेल भेल । तहिना कोनो आचार्य रातिमे निद्रा खेन होलाह से मडि पखल छैतैन्ह । बस, एकटा श्लोक बना देलन्हि—

सर्वं तु विलसच्चन्द्रं नाद्यादस्तामि ते रवी ।

मनु (४।७५)

'अर्थात् रातिमे तिनक बनल कोनो वस्तु नहि छैवाक चाली ।' ....और हमरा लोकनि ओही सभ स्मृति केँ एखन धरि श्राव्य आबि रहल छी ।

हम—छहूर कका भऽ सफैत अछि, एहू गाममे कोनो वैज्ञानिक रहस्य होइक ।

छहूर कका कांयपूर्वक बजलाह—हौ, जेना कतेक गोटा दुखैत छथि जे टोक राखने मस्मिकमे विद्युत प्रवाहित होइ छैक, से पैघ टीक रहौन छथि । प्राय ओती बिजलीक कारण हुनका लोकनि केँ एहन एहन बात फुरैत छैन्ह । आप आन देश बना त टीक रखितन्ह न अछि फुरैतैक कोना ? हौ, अलासमे दूझत त हमरा लोकार्जन केँ बुद्धिक अजीर्ण अछि ।

हम—छहूर कका, एतेक आचार-विचार और कोनो देशमे छैक ?

छहूर कका सौंज मरीच पिसेन बजलाह—हौ और देश केँ एतेक फुरसतिप कहां छैक ? जी यूरोप अमेरिका हमरा सभक कृत्तरारसमुच्चय लऽ कऽ आर्थिक कृत्य करऽ बेसय नखन मचड़ जाहाज ओ ट्रैक्टर केँ बनाओत ? हमरा लोकनिक कृषि केँ कोनो काज गूढ नहि करैन्ह । बेसन बेसन चचन गढ़ल करथि । केँ आदुसक दातमनि करी ? केँ टा कुरुड़ करी ? कोन दिन तेल नगाची ? कहिया कंश कटावी ? कोन समय गय बख पंडिरी ? सभटा दुखि एहीमे खर्च होमय

लगलैक । जे आचार्य ऐलाह से बस टा वचन जोड़मे गेलक । फग्वरूप विधि-  
मियेधक लेहन मझाल बनि गेल जे लोक के नदिओ फिरवामे स्वतंत्रता नहि  
रहलैक ।

हम-से कोना, खहर कका ?

खहर कका-स्मृति देखल ।

मृत्योधारसमुत्तर्ग दिवा कुर्यादुदङ्मुखः ।

दक्षिणाभिमुखो रात्री संभ्योश्च भयादिना ॥

(मनु ४।५०)

लक्ष्मी नदी कोन मुँह मऽ कऽ करी तकरो विधान छैक । दिनमे उत्तर मुँह । रातिमे  
दक्षिण मुँह । हो, यदि आइ हमरा लोकनि मनुस्मृतिक अनुसार चलऽ लागी त  
देशमे लाखो पैखामा तोड़ि कऽ दोसर बनवावऽ पड़त । दिनक लेन एक तरहक,  
रातिक लेन दोसरा तरहक ।

हमरा मुँह तकैत देखि खहर कका पुन बाजम लगलाह-एतखे नहि ।  
धर्मशास्त्रक अनुसार चलने देशक सभटा 'शेरिंग रीलुन' (हजामतक दोकाम)  
टूटि जाएत और समस्त 'लौड़ी' (धोधीक लोकान) के तीन दिन बंद राखय पड़त ।

हम-से कियेक, खहर कका ?

खहर कका-देखल, शास्त्रमे लिखैत छैक जे-

नापितस्य गृहे क्षीरं शिलापृष्ठे तु चन्दनम् ।

जलमध्ये मुखं वृद्ध्वा हस्ति पुष्पं पुराकृतम् ॥

(नीतिदर्पण)

जी हजामक ओहिठाम जाकऽ केश कटावी त पहिलुको सभटा पुष्प भट्ट भऽ  
जाय । और,

आदित्यसौरिधरणीसुतपासरेषु

प्रक्षालनाय रजकृत्य न स्वस्थानम् ।

शंसन्ति क्षीरभृगुगर्गपराशराद्याः

पुंसां भयन्ति विपदः सह पुत्रदारिः ॥

(रुद्रधरीय वर्षकृत्य)

जी शनि, रवि ओ मंगल दिन धोबी के कपड़ा धोयक हेतु दियेक त स्त्री-पुत्र  
समेत नाना विपत्तिमे पड़ि जाइ । शुक्र, भृगु, गर्ग और पराशर आदिक वैद मत  
धिकैक ।

हम-खहर कका, ई सभ आचारक बंधन छैक ।

खहर कका-परन्तु मखन 'अति' भऽ जाइत छैक त आचारो 'अध्याचार'  
बनि जाइत छैक । सैह अपमा देशमे भेलैक अछि । पड़िय के कुकड़ नहि खाइ,  
छिनीया के कटहर नहि खाइ, तृतीया के नोन नहि खाइ, चौठ के तिल नहि खाइ,

पंचमी के आगिन नहि खाइ, एठ्ठी के तेल नहि खाइ, सप्तमी के धात्रीफल नहि  
खाइ, अष्टमी के नारिकेर नहि खाइ नवमी के कदीमा नहि खाइ दशमी के  
परोर नहि खाइ ।

हम-खहर कका, ई सभ कि सरिपहुँ शास्त्रक वचन छैक ?

खहर कका-त कि हम अपना दिये सँ बना कऽ कहैत छिओह ? देखल,

पराशरक वचन छैक-

कुष्माण्डं वृहतीफलानि तयणं वज्रं तिलान्नं तथा

तिलं धामलकं दिवं प्रयसता शीर्षं कपालान्नकम् ।

निषावाश्च मसुरिका फलमथो वृन्नाकसंज्ञां मधु

वृत्तं स्त्रीगमनं क्रमात् प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ।

हम सखन त प्रत्येक गृहिणी के ई भक्ष्याभक्ष्यक चार्ट बना कऽ राखय  
पड़ैक ?

खहर कका-केवल भक्ष्याभक्ष्यक कियेक ? बहुतो बातक । परन्तु तो भातिज  
दिक्काह । सभ बात कोना कहिओह ?

हम-खहर कका, शास्त्रमे एहन एहन बात कियेक भरल छैक ?

खहर कका भाइक गोना बनैत बजलाह-हो, पंडित लोकनि घालाक  
छलाह । जनता मुख छल त ओकरा कापूमे करवाक हेतु ई लोकनि नाना प्रकारक  
बन्धन तैयार कैलनि । जेना मानजायक हेतु छान-पगहा तैयार कैल जाइ छैक ।  
और ई लोकनि नेना कऽ एहि देश के नथलनि जे की अङ्ग्रेज नथने छल ! जे  
काज शस्त्रक बल सँ नहि होइतैक से शास्त्रक बल सँ भऽ गेलैक । ई लोकनि  
बात बात पर 'कंट्रोल' (प्रतिबंध) लगौलनि । अङ्ग्रेज स भला रवि दिन एडिओ  
देत छलैक । परन्तु ई लोकनि स और लगाम कसि देलनि । एक आचार्यक  
हुकुम भेलैक-

मत्स्यं मांसं मसूरं च कोस्यपात्रे च भोजनम् ।

आर्द्रकं रक्तशाकं च रबी हि प्रवर्जयेत् ॥

(ब्रह्मवैवर्त)

अर्थात् रवि दिन केओ माछ, मांस, मसुरीक पात्रि, आद ओ ताल साग नहि  
खाय । कासाक धारी-काटीमे रोहो भोजन नहि करय । दोसर आचार्यक फरमान  
बहैलैक-

क्षीरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्

रतिं स्नानं च मध्याह्ने रबी सप्त विवर्जयेत्

(स्मृतिसंग्रह)

अर्थात् रवि दिन मे केओ केश कटावी, ने तेल लगावी, ने गम पानिक व्यपहार

करी, ने रातिमे भोजन करी, ने दुपहरमे स्नान करी, और ने. कहीं धरि कदिआह? तौ भातिज धिकाह।

हम-खड्ग कका, एहन, एहन वचन पर लोक के आस्था कोना कराओल गेलैक?

खड्ग कका भाषा दोहेन कहय लागलह स्वर्गक लोक ओ नरकक भय देखा कऽ एही दुनू पंक्ति पर धर्मशास्त्रक गाड़ी चले गेलैक। ओना कऽ ओ आन दुधार भाषा शास्त्रक के किसेक दितैक? ने एहन वचन घना ऐसीन जे 'न ब्रह्मण के दुधार गाय दान करताह से स्वर्ग जैताह।' परन्तु गाय कर्ताह। 'अद्वैत' के? अद्वैत कही। और ब्रह्मण दूध पि जाताह कथीमे? कासक बहारा अनाथ सभ छ विचारि कऽ पयका मोसविदा बना देलथिन्ह

धेनुव यो द्विजे दद्यात्कन्यया पयास्वनीम्

कस्यचस्त्रादिभिर्युक्तां स्वर्गलोकं गच्छीयत

(मनुस्मृति)

यस, स्वर्गक लाभ धन्यमान लोकनि अद्वैत ओ बड़ा समेत आन अपन दुधार गाय कऽ कऽ श्रावणक दरवाजा पर पहुँचय लागलाह। ही, एहन एकदम कि नबाचीओ हुकूमतमे चलल छलैक?

खड्ग कका लोगो धौरेत बजलाह-ही, स्वर्ग ओ नरक दूनू त अपने हाथमे गेलैक। जे बात पसिंद पड़लैक ताहि पर स्वर्गक मोहर लगा बेलथिन्ह। जे बात नापसिंद ताहि पर नरकक छाप लगा देलथिन्ह। कतक ठाम त एना चूड़ पड़ैत छैक जेना चिमेटा कऽ श्राप दऽ रखल होथि का गरि पड़ि रहल होथि। काना आचार्य के स्त्री से झगड़ा भेल छैलैक। एकटा वचन छैक दलथिन्ह-

ऋतुस्नाता तु या नारी भर्तारं नोपसर्पति

सा भूता नरकं याति विधवा च पुनः पुनः।

अर्थात् ऋतुस्नानक उपरान्त जे स्त्री त्यामाक सेवन तँ करथि से नरक आधि और अग्रिम जन्ममे बारबार विधवा होथि। तहिना कोनो पंडित के भावी श्वशुर कन्यादानमे किछु दिलथ कऽ देन होइथिन्ह। यस, सगरो पूछाक रज्जार भऽ गेलैक-

प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति,

मासि मासि राजस्तास्याः पिबन्ति पितरोऽनिशम्-

अर्थात् कन्याक वारम्बार वर्ष भेलो उत्तर पंदे शिखर नहि होइत त दूधकर मासिक आषित पितर लोकनि पिबैत छलैक। एव प्रकारे निम्नका जे मन्त्रमे ऐलैक से एकटा श्लोक जोड़ि कऽ चला देलथिन्ह। इदं दुधानं, इदं न कुर्यात्' दैह दूनु तानी-भरनी सऽ कऽ तेहन महाजाल ब्रुल गेल जे लोक आँकरा कऽ रहि गेल। एक त संस्कृतक श्लोक ताहि पर विद्विलिखि लखार। एक बेर जे

श्लोक धनि गेल से चबलेख भऽ गेल। आय के पूछी जे 'कथं न कुर्यात्?' यदि केओ साइस कय मुह लोखनक त 'नारिक' कहौलक। एहन स्थितिमे शास्त्रक विरोध के करी? एही छरि सत्तासखक परीक्षा एहि देशमे नहि भऽ सकल

हम-खड्ग कका, अपना देशमे ऐहिक नहि छलैक जे एहि राम यानक सर्मिका काँतिथि।

खड्ग कका भाइमे कीनी मिलवैत बजलाह ही, एहि देशक जलवायु विज्ञानक अनुकूल नहि छैक। जे विज्ञान जन्मो लेखक से शास्त्रक सन्धिमे बनि गेल। जे बात धर्मशास्त्र से छुटल छलैक से ज्योतिष पर कऽ देलथि मनु, धातुसन्ध आदि, लोक के सभक हककड़ी लगौन छलैथिन्ह, भूगु आ गार्ग प्रभृति कालक बड़ो पसिंद दलथिन्ह। ई कास बूझह त हमरी देशक महाजाल भऽ गेल। छोट बान्ह त दिनक विचार। छोट चारू त दिनक विचार। छोट चारू त दिनक विचार। छोट आउ त दिनक विचार। छोट आउ त दिनक विचार। छोट कीनू त दिनक विचार। ही एनेक कनहू छोट-छोट भेलथि? जहाँ और और देशक लोक धिमाक धने आकाशमे उड़ि रहल अछि तहाँ हमरा लोकनिक शास्त्र पैरेमे लान लगा देने अछि। याथा करु त मुहूर्त देखि कऽ। विदाह करु त मुहूर्त देखि कऽ। द्विरागमन करु त मुहूर्त देखि कऽ। और कहीं धरि, गर्भदान करु त मुहूर्त देखि कऽ।

हम-खड्ग कका, ई अहाँ अतिशयोक्ति कय रहल छी। गर्भदान कतहू पतझ देखि कऽ सेहो क अछि?

खड्ग कका-तखन वचन सुनि लैह।

पञ्चदशमी पंचदशी नान्दी चतुर्दशीरप्युग्रमयत्र हित्या

श्रेया श्रूया स्युस्त्रिधयो निरंके वाग अशाकायसितद्रुजाश्च।

पाटी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावास्या चीठ चतुर्दशी ई सभ तिथि एहि कार्यमे इज्जत चीक। दिनमे सोम, बुध, शुक्र प्रशस्त चीक। नहि विश्वास हो न बृहज्ज्योतिषसंग उगटा कऽ देखल।

हम-खड्ग कका, अहाँ के ज्योतिष पर विश्वास नहि अछि?

खड्ग कका ही, फलित ज्योतिष जे फलित हो तखन ने विश्वास हो? परन्तु से होइत त एखन धरि हम कम से कम अझाइ हजार बेर मरि चुकल रहितहुँ।

हम से कीना, खड्ग कका?

खड्ग कका-देखल ज्योतिषक वचन छैक जे-

सिंहापं कांति वितरति शशी भूमितनयो

मूर्ति तस्मीं सौम्यः सुरपातिगुरुर्वितरुणम्

विपत्ति दैत्यानां गुरुरखिलभोगानुगमनम्

नृणां तैलाम्ब्यात् सपदि कुर्वते सूर्यतनयः।



अर्थात् रवि दिन तेल लगीने कष्ट, सोम दिन कांति मंगल दिन मृत्यु, बुद्ध दिन लक्ष्मी कुहस्थिति दिन वरप्रप्ता, शुक्र दिन विपत्ति और शनि दिन सुखक भोग हो। एहिमे कोन कारण-कार्य सम्बन्ध हैक से त साइंस बला जाँच करधु। परन्तु हम करीब पचास वर्ष सँ सम दिन तेल लगा रहल छी। एतबा दिनमे २५०० मंगल न अथशय पड़ल नैत। परन्तु आइ धरि हम जिवितहि छी। तथापि तो ज्योतिषमे विश्वास करय कहैत छह ?

हम कहलियेन्ह-खट्टर कका, एकर उत्तर त कोनो ज्योतिषीए दऽ सकैत छथि।

खट्टर कका अडपोछा सँ भाऊ छनैत बजलाह-ज्योतिषी की उत्तर देताह ? अपने कंदा सँ गरमे फाँसी लागि जैनेह। हो, एकेटा दृष्टान्त दैत छिऔह जे कहन गड़वड़ाध्याय लागि जाइत छैन्ह। देखह भ्रतु प्रकरणमे कहैत छथि जे-

आदित्ये विधवा नारी (सोमे चैव मृतप्रणा)

अर्थात् जी कन्याक सर्वप्रथम ऋतुदर्शन रवि दिन होइन्ह त ओ विधवा होथि। और पुनः कहै छथि जे-

पंचम्यां चैव सौभाग्यं (पञ्चम्यां कार्यदिनाशनम्)

जर्थात् यदि पंचमी तिथिमे ऋतुदर्शन होइन्ह त कन्या सौभाग्यवती होथि। आव हम पढ़ैत छिऔह जे जी पंचमी रवि की कन्याक ऋतुदर्शन होइन्ह तखन ओ की होथि ?

हमरा चुप देखि खट्टर कका बजलाह-और देखह, एक वचन छैन्ह जे-

(पौषे तु पुञ्चली नारी) भाधे पुत्रवती भवेत्

अर्थात् माघमासमे रजोदर्शन भेने पुत्रवती होथि। और दोसर वचन छैन्ह जे-

कृत्तिकाया च यंध्या स्यात् (रोहिण्यां वारुभाविणी)

अर्थात् कृत्तिका नक्षत्रमे रजोदर्शन भेने यंध्या होथि। आव ज्योतिषी सँ पुछहुन जे यदि माघमास कृत्तिका नक्षत्रमे किनको रजोदर्शन होइन्ह तखन त यंध्या-पुत्रक जन्म भऽ जैनेह ?

हमरा निरुत्तर देखि खट्टर कका पुनः बजलाह-और तमाशा देखह। एकठाम त कहैत छथि जे-

धने पतिव्रता होया (मार्गशीर्षा च नक्रके)

अर्थात् धन राशिमे रजस्वला भेने पतिव्रता होथि। और दोसर ठाम कहै छथि जे-

मंघे च पुञ्चली नारी (शेयं वारफर्ष शुभम्)

अर्थात् शनि दिन रजस्वला भेने व्याधिचारिणी होथि। आव सोही कहह जे यदि धन राशिमे शनि दिन कन्या रजस्वला भऽ जाथि तखन ओ की कार्य ? हो, कहाँ धरि कहिऔह ? तत्तेक पाखंड भरल छैक जे सभटाक उद्घाटन कैने

महाभारतक पोधा बनि जाय। तथापि पंडित लोकनि क ओखि नहि फुजैत छैन्ह।

हम मुख्य होइत कहलियेन्ह-खट्टर कका, तखन की करवाक चाही ?

खट्टर कका बजलाह-हमरा लोकनि शास्त्रक नाम पर जे फूसि कटाकाक माता गौथि कऽ पहिरने छी तकरा विराजन करवाक चाही। बाधित वचन सभ पर हरताल लगैवाक चाही। इ परस्पर-विरोधी श्लोकमे सँ जे मिथ्या सिद्ध हो तकरा ग्रन्थ सँ दूर करवाक चाही, परन्तु हमरा लोकनि क भाध पर सँ ओ बड़का भूत उतरय तखन ने ?

हम-कोन भूत, खट्टर कका ?

खट्टर कका-‘लिखलाहा’क भूत। सभ किछु दरि सकैत अछि किन्तु ‘लिखलाहा’ नहि टैत सकैत अछि। जहाँ कोनो पंडित सँ गम्य करह कि रैह माध परफ भूत बाजय लगैनेह-‘‘लिखल छैक जे ।’’ हुनका कहूँ जे ‘‘औ चिनी ! लिखल छैक त रहऽ दिऔह। ओकरा नामे कि अहाँ दमासी पड़ा लिखि देने छिऔह ? अपन बुद्धि कि कतहु बंधक राखल अछि ?’’ परन्तु जायत धरि ओ भूत माध पर रहतेन्ह तखन कि पंडित लोकनि अपना मस्तिष्क सँ किछु सोचि सकै छथि ?

हम-तखन ओ भूत भगैवाक उपाय ?

खट्टर कका-उपाय वैह जे पंडित लोकनि किछु दिन हमर सत्संग फैल करधु। परन्तु ओ लोकनि त हमरा गारिध पढ़ैत हैताह।

हम-खट्टर कका, जे यथार्थ पंडित हैताह से अहाँ की गारि नहि पढ़ताह।

खट्टर कका लोटामे भाइ घोरैत बजलाह-आय जे करधु। परन्तु हम मुँहदेखल त नहिए कहबैन्ह। एहि देशमे अन्यविश्वासक मूल स्रोत अछि शास्त्र। स्मृति, पुराण, ज्योतिष, कर्मकांड। एकैकमयनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्। सहस्रो वर्ष सँ लोक अज्ञानक बंधनमे पड़ल अछि। भदवाक बंधन दिक्शूलक बंधन, अघपहराक बन्धन अतीचारक बंधन, ग्रहक बंधन, नक्षत्रक बंधन ! हो, एतेक कतहु बंधन भेल ? त्याइत एति देशक लोक मोक्षक पाछाँ बेहाल रहैत अछि ?

हम कहलियेन्ह-खट्टर कका, ई त मार्मिक गप्प कहल।

खट्टर ककाक भाइ पैधार छलैन्ह। हाथमे लोटा उठा बजलाह-हो, हमहीं कहाँ धरि सोच करू ? जखन दस दराटा अवतार आबि कऽ एहि देशक उच्चार नहि कय सकलाह तखन बेचारे एकटा खट्टर क्षा एसकर की करताह ? एही हारें त हम चिन्ताहरण बूटी की सधने छी।

ई कहि खट्टर कका भरलो लोटा भाइ चला गेलाह।



## प्राचीन आदर्श

खड्डर कका हमरा हाथमे गोटगर पुस्तक देखि पुछलन्हि—हो, ई की धिकोह ? हम कहलियेन्ह—आदर्श चरितावली ।

खड्डर कका उनटवैत-पनटवैत बजलाह—ई हम पढ़ने माया खराब भऽ जेतीह ।

हम—खड्डर कका, ई की कहैत छी ? एहिमे एकसँ एक आदर्श चरित्र भरल छथि जिनकर अनुसरण कैने परम पद प्राप्त भऽ जाय ।

खड्डर कका मुसकुराइन बजलाह—परम पद हा वा नहि किन्तु परम अन्दरि त अवश्ये भऽ जाय ।

हम—हे कोना, खड्डर कका ?

खड्डर कका ताखपर सँ सोला-कुंडी उतारैत बजलाह हो, आइ जे कोओ माखन-घोर दुःखदैन धिहारी जकाँ धीर हारा करैत 'गांधी' कीन पदोधार यदन-चंचल-करपुगशाली'क अनुकरण करय लागि अछि त की गति हेनेन्ह ? जेन, अत्यतास वा पागतखाना ।

हम—खड्डर कका, अवतारक त गम्य हो नहि । ओहून सीला कि मनुष्य कऽ सकैत अछि ? परन्तु मानव-चरित्र देखू ।

खड्डर कका तोरा कोन मानव चरित्र सभ में बेसी आदर्श दूझि पड़ैत छीह ?

हम—सत्यवादी दानधरे राजा हरिश्चन्द्र ।

खड्डर कका भाइक पुष्टिया बाहर करैत बजलाह आइ तो हम हुनक अनुकरण करय लागि जाइ त लोक हरीमे टोकि देत ।

हम—हे कोना ?

खड्डर कका—मानि सैह, जे रानिमे हम स्वप्न देखल जे तोरा कार्क केँ कृशतिल गंगाजल नऽ संकल्प कय, अम्बुल्ला मिथी केँ दान कऽ देलियेन्ह । आव जौ हम अल्पनि त्यागि 'हय अम्बुल्ला' हय अम्बुल्ला' करय लागि और कतहु सँ ओकरा जाओ, अथदस्ता तोरा कार्क केँ ओकरा पंख लगा दिऐन्ह त लोक की कहत ? सम्मत वा बलाह ?

हम—खड्डर कका, ओहिठाम सत्यर्थ एक सत्यक महिमा देखैयाक, जे म्यन्तमे देल वचन पालन करक चाही ।

खड्डर कका भाइ रगड़ैत बजलाह—हो, एहीठाम त नूखेता आरंभ भऽ जइत छैक । स्वप्नमे लोक केँक उटपटांग बात देखैत अछि जे तकरा सत्य मानि

लोक घमऽ भागय त कि एकरा दिन निमहि सकैत छैक ? मानि सैह, स्वप्नमे तो हमर खेन केवाला लेनाह त कि जंगला पर हम तोरा दस्तावेज बना देवीह ? परन्तु की करि ओह ? एहि देशमे त जाग्रत अवस्था सँ बेसी स्वप्नमेक महत्त्व छैक ।

हम—हे कोना, खड्डर कका ?

खड्डर कका—देखह, एहि देशक दर्शन की छैक ? वेदान्त । और वेदान्तक मयन कथी पर अछि छैक ? स्वप्नक अनुभव पर । संपूर्ण संसार स्वप्नयत् थीक । पृथ्वीक अन्यान्य देश जाग्रत अनुभव पर चलैत अछि परन्तु हमरा लोकनिक आदर्श अछि सुषुप्तावस्था । यन्कि एक डिग्री ओह सँ बेसी 'तीरयावस्था' हो हम पुछैत छिओह, यदि आइ समस्त भारतीय तुरीयावस्था केँ प्राप्त करै मुर्दा सँ बाजी लगा कऽ पड़ि रहथि त देशक की दशा छैक ?

हम—खड्डर कका, हमरा सभक सिद्धान्त थीक—

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

खड्डर कका व्यंग्यपूर्णक बजलाह—हँ । जखन समस्त संसार जगैत अछि तखन हम फाफ करैत छी और सर्वत्रिक अधिकारमे हम जगैत छी । भऽ सकैछ जे कोनो पक्षी-विशेष हँ हमरा लोकनि केँ ई प्रेरणा भेटल हो ।

हम—खड्डर कका, अहाँक व्यंग्य बड़ छीक्षण होइत अछि ।

खड्डर कका मुसकुराइन बजलाह—हम कि कोनो बेजाय कहैत छिओह ? एहि देशक पक्षीओ सभ तत्त्वदर्शी होइ छथि । शुक जटायु, गरुड़, काक सभ त हमरा सभक गुरुप धिकाह । और उलूक पक्षीक त कोनो कथे नहि । यदि हुनकामे विश्वास महत्त्व नहि रहितैन्ह त वैशेषिक-कर्ता कणाद केँ पैह नाम किऐक पाड़ियेन्ह ?

हम क्षुब्ध होइत कहलियेन्ह—खड्डर कका, एहि पुस्तकमे एतेक राखे उपाख्यान छैक, ताहिमे एकांटा आदर्श चरित्र अहाँ केँ नहि भेटैत अछि ?

खड्डर कका तही देखावह ।

हम—देखू, भीष्म पितामह केहन आदर्श छलाह जे

खड्डर कका—जे कीरवक भरल सभामे ओपदी केँ बग्न होइत देखलथिन्ह, तथ'मे चुपचाप छाड़ खरीने बैसल रहलाह ।

हम—प्रकाद ओ विभीषण केहन आदर्श छलाह जे....

खड्डर कका—एक गोटा चाप केँ मरबीअन्हि, दोसर भाई की । भगवान ने करथु जे एहन एहन आदर्श फेर भारतवर्षमे जन्म लेथि ।

हम—परन्तु कइल जाइ छैक जे—

अश्वत्थामा बलिर्व्यासः हनूमाञ्च विभीषण

कृप परशुरामश्च सन्ती चिरजीविनः ।

खट्टर कक्का—एकर असली अर्थ बुझलहक? दरिद्र ब्राह्मण, मुख्य राजा, खुशामदी पंडित दुइह सेवक, कृतघ्न भाइ, दधी आचार्य एवं क्रोधी शिष्य—ई सातो आदर्श एहि भूमि पर बहुत दिन धरि कायम रहलाह। ई एहि देशक दुर्भाग्य बुझह।

हम—खट्टर कक्का, अहाँ त सभटा अद्भुत अर्थ लगवैत छी। परंच एही देशमे शिष्यि औ दधीचि सन आदर्श दानी सेहो भऽ गेल छथि।

खट्टर कक्का व्यंग्य करैत बजलाह—हैं। राजा शिष्यि अपन मांस काटि कऽ दान कैलन्हि और दधीचि अपन हड्डी। यदि हमहूँ ककरो मडला पर अपन नाक काटि कऽ दऽ दिएक त तौ हमरा आदर्श कऽ कऽ बुझवह?

हम—खट्टर कक्का, अहाँ त केहन छी लगवैत छिएक जे जड़िए सँ साफ कऽ दैत छिएक। आव ककरो नामी लैत छर होइ अछि। राजा नल कँ अहाँ केहन बुझैत छिएक।

खट्टर कक्का—कापुरुष।

हम—सँ किएक?

खट्टर कक्का भाइक गोला धनवैत बजलाह—हो, आइ यदि तौ जूआमे अपन घर-द्वार, खेत-पथार, डीह-झावर, सभ किल्लु गम्प, आवक और हमरा मतिज-पुलोह कँ लय जंगलक बाट धरह और ओहिठाम अकस्य धनमे हुनकर सुतलै छोड़ि—बल्कि हुनका देह सँ चुपचाप नूआ फो, हुनके साडीक ओंघर पहिरि—कतहु पड़ा जाह, त तोरा हम की कहवैह? महापुरुष अथवा कापुरुष?

हम—खट्टर कक्का, राजा नृगक उपाख्याम लियऽ।

खट्टर कक्का पुनः ध्यंग्य करैत बजलाह—हैं, राजा नृग सहस्रो गाय दान कैलन्हि से त मेस कोठीक कान्ह पर और एकटा गाय धोखा सँ वापस आवि गेलन्हि त ओही पाप सँ हजारो वर्ष धरि इनारमे गिरगिट भेल पड़ल रहलाह। ही राजा नृग कँ जी कनेको संस्कारक लेश छल हैलन्हि त फेर दोसर जन्ममे एकरोटा गोदानक नाम नहि मेने हैताह।

हम—खट्टर कक्का, शंख ओ लिखित केहन छलाह?

खट्टर कक्का—दूनु उपर्युपरि छलाह। यदि ओहने बुझि सभ कँ भऽ जाइक त सन्पूर्ण देश पागलखाना बनि जाय।

हम—सँ कोना, खट्टर कक्का?

खट्टर कक्का भाइ छनैत बजलाह—मानि लैह, हम तोरा पड़ुआइमे भाइ सोइय गेलहुँ। तोरा सँ भेट महि भेल। हम दु कारि टा दुस्ती तोड़ि लेल। पछाति तोरा कहि देखिओह। तौ बजलाह—नीक कैल जे लऽ लेल। यदि एहू पर हम संतुष्ट नहि होइ और एहि बात पर अड़ि जाइ जे तौ यघरिया हौस लऽ कऽ हमर हाथ

काटिए लैह त तौ हमरा की बुझयह? और तो यदि सरिपहुँ हमर हाथ काटि लैह त तोरा लोक की बुझतौह? हो, ई लोकनि अजायब घरमे राखय योग्य छलाह।

हम—खट्टर कक्का, अहाँ सँ के वरस करी? परन्तु एही भारतभूमि पर एक सँ एक नामी राजा भेल छथि, जेना महाराज दुष्यन्त, राजा यशति

खट्टर कक्का—हैं, सुक्रिये नाम कि कुक्रिये नाम। दुष्यन्त तपोवनमे जा मुनिकन्या कँ गर्भ कऽ दलधिन और पाछाँ कहलधिन जे हम एहि पुयसी कँ चिन्हवो नहि करैत छिएन्ह। एहन भागी लंपट और कायर के हित? कोनो औरजक बेटी रमितेन्ह त ओही दाम गल्ली मारि दितेन्ह... और यशति कँ हम की कहिओन्ह? वृद्धारीमे रौख भेलैन्ह त वेदा सँ यीयन पैच लऽ कऽ भोग कैलन्हि। हिनकर जोड़ा विश्वमे कतहु भेटतीह? परन्तु हम की बाजु? एहि देशक त इनारोमे भाइ घोरएल छैक।

खट्टर कक्का दू बुन्द उत्सर्ग कय भरि लोटा भाइ चढ़ा गेलाह। पुनः तीव्र स्वरमे कहय लगलाह—एहि देशक राजा सन कामुक ओ स्त्रीण पृथ्वी पर कतहु नहि भेटतीह। बूझह त पुराणमे दुइएटा धरित्र मुख्य। राजा ओ ब्राह्मण। एक कामी, दोसर क्रोधी। और दूहू लोभी। केओ राज्यक पाछाँ, केओ स्वर्गक पाछाँ। से यदि क्रम, क्रोध ओ लोभक शिक्षा लेयाक हो त पुराण पढ़ह।

हम कहलैएन्ह खट्टर कक्का, ई अहाँक अन्याय थीक। राजा दऽ त हम नहि कहय। किन्तु ब्राह्मण एहठामक आदर्श भऽ गेल छथि। देखू, देवर्षि नारद केहन झानी छलाह....

खट्टर कक्का—जिनका यिना झगड़ा लगौने कहिओ पेटक अन्न नहि पचलैन्ह।

हम—खट्टर कक्का, ब्रह्मर्षि द्रोणाचार्य केहन तेजस्वी छलाह

खट्टर कक्का—जे स्वार्थवश एकलव्यक ओंठ कतरबा लेलधिन। आवक विद्यार्थी रझितैन्ह त फराके सँ ओंठ देखा दितैन्ह।

हम—राजर्षि विश्वामित्र केहन तपस्वी रहथि....

खट्टर कक्का—जे अन्धकार रातिमे चुपचाप वशिष्ठ मुनिक घेंट काटक हेतु छपकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह।

हम—खट्टर कक्का अहाँ त हमर मुँह बंद कऽ दैत छी। परन्तु देखू, हम गुरु-भक्तिक दृष्टान्त दैत छी। आरुणि केहन आदर्श रहथि?

खट्टर कक्का—मूर्ख रहथि। गुरुक खेतमे पानि रोक्काक रहैन्ह त आरि बलितथि। अपने की पड़ि रहलाह? हो, ओहि तरहे लोक कत्तीकाल धरि क्रियाकर्म रोक्के पड़ल रहि सकैत अछि? एनया महि फुरलैन्ह जे जखन उठब तखन सभटा पानि बहि जाएत। एहने एहने विद्यार्थी भरि दिन पात खरडि रातिमे धधरा कय पड़ैत छलाह।

हम कुछ होइत कहलियेक-खट्टर कका तखन एहन एहन कथाक कानो उपयोगिता नहि ?

खट्टर कका बजलाह-उपयोगिता अथर्व नहि दिनक गुरु बनाए रहथि । विद्यार्थी भुसबौल होथि । एहन एहन उपाख्यान गढ़ि पंक्ति काकनि बेल भे बेना चिरवाकथि, गाय चरवाकथि, खेत कमवाकथि । एहि तरहें सभ कथामे किछु ने किछु अभिप्राय भरल छैक । कोनो ब्राह्मण गाय सँ केओ नेयो लनाम लोइ नेने हैलैक । तकरा सजावक हेतु शंखक म्पिगा । गढ़ि देलथिन्ह कोनो ब्राह्मण के राजा गाय बऽ कऽ छीने नेने हैलैक । तकरा डरावक हेतु मृगक पिहानी रचि देलथिन्ह । एय प्रकारे अनेको आख्यान बनि गेल । कोनो राजा के टकरा सेतु, कोनो विद्यार्थी के परतारक हेतु, कोनो शूद्र के सरि करक हेतु, कोनो स्त्री के नथक हेतु । कथाकार लोकनि तेना चढ़ा-चढ़ा कऽ टाटक टाढ़ केने छथि जेना की मा-कुकर के डरवाक हेतु मकड़क खनमे दलवाई बनावल जाइ छैक । परन्तु आवक लोक के एना परतारब कठिन ।

हम पुछलियेक-तखन पौराणिक आदर्शक किछु मूल्य नहि ?

खट्टर कका बजलाह-वेह मूल्य जे 'मूजियम'मे राखल कलि-तरुआरिह होइत छैक । ओ प्रदर्शन लेल रैत छैक, व्यवहारक हेतु नहि ।

हमरा सोचैत देखि खट्टर कका कहल लगलाह-हो बात ई छैक जे पुराणमे जाहि नैतिक आदर्शक धिंशण कैल गेलैक तकरा परकाष्ठा पर पहुँचा देल गेलिथ । परिणाम ई भेलैक जे ओकर म्याड (विद्रूप) बनि गेल छैक । आनिधक महिमा देखैवाक भेल त फलसी वेदा के काटि कऽ धारमे परसि देलैक । सन्तत्यक महिमा देखैवाक भेल त 'फलसी कोचा सँ आगि बहरा गेलैक ।' कोनो सती सूर्यक चक्का रोकि दैत छथि, केओ यमराज के पछाड़ि दैत छथि । बिना अतिशयोक्ति हमरा लोकनि के बाजहि नहि अवेत अछि । कोनो बात परसिद त सहस्र अश्वमेधक तुल्य ! नापसिद त कोटि ब्रह्महत्याक समान ! जकर स्तुति करय लागब तकरा 'स्यमर्कः स्यं सोम' करैत आकाशम टेका देब । जकर निंदा करय लागब तकरा असुर वा ससुर बनवैत पानानमे धसा देब । ई बात सौंदर्य पुग सँ आवि रहल अछि । बृहत्त त अतिशयोक्ति हमरा समक वंशज गृग दीक

हम-खट्टर कका, अतिशयोक्ति त किछु ने किछु सभ देशक साहित्यमे भेटत ।

खट्टर कका कतरा करैत बजलाह-हो । परन्तु हमरा लोकनिक रोम-रोममे भीजल अछि । वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद साहित्य, संगीत चित्रकला मूर्तिविद्या-सभमे वैह बात भेटतीह । ओखि दिब नोक त कान भरि सटा देल गेल । पयोधर पृष्ठ नीक, त कलश सन सन बना देल गेल, कवि लोकनि के ओहू सँ मन नहि भरलैक त गजकुम्भ सँ उपमा दैत दैत पर्यन धरि टंका

देलाथिन्ह । हो सभ बातक एकटा सीमा होइत छैक ! एहि ठाम त कोनो सीमे नहि । मुखमस्तीति यवनव्यः शहस्ता इति । जिनका जे फुरलैन्ह से लिखि गेलैह । फलस्वरूप अतिशयोक्तिक बाजार लागि गेल । केओ महाइ उठा लैत छथि केओ समुद्र मंथि जाइ छथि केओ पृथ्वी के दात तर घऽ लैत छथि । केओ सूर्य के काटि जाइ छथि । भूह ओ हाथक कोनो संख्यो नहि । केओ चतुरानन, केओ पंचानन, केओ षडानन ! केओ चतुर्भुज, केओ अष्टभुज, केओ सत्सभुज ! केओ एक सहस्र वर्ष युद्ध कैलन्हि, केओ दस सहस्र वर्ष तपस्या कैलन्हि, केओ बीस सहस्र वर्ष भोग कैलन्हि ! ... बृहत्त त वैह अतिशयोक्ति हमरा सभ के छा गेल ।

हम कहलियेक-खट्टर कका ! त कि ई सभ कान कपेककल्पित छैक ?

खट्टर कका ज्येष्ठपूर्वक बजलाह जावन पर्यन्त अपना देशक तीन परीक्षोभौषण पुराणचर्च लोकनि जीवित छथि नासन एहन बात बजवाक दु सारस के कथ राकैत अछि ? हमर एकटा महावीरजी आवि जयि त समस्त संसारक सेना के नाइदिमे जपेटि लैथि । एकटा अगस्त्य मुनि आवि जाथि त सभ जहाज समेत समुद्र के बुरूगे उटा कऽ पीवि जाथि । एकटा यममोना तंसर नेत्र उधारथि त सभ बमगोला बला बग बाजि जाथि । एकटा बराह भगवान अघतार तैथि त पृथ्वी के फटबाज जकाँ उठा कऽ फेंकि दीथि । तखन आन आन देश बना बाप बाप कऽ धिचिया छलताह । यूरोप अमेरिका आविष्कार करैत रहथु । हमरा नोकनिक काज अवगार सँ चलि नाइत अछि । एकटा अघतार एखन भऽ जाइत त सभ टा सामग्री बन भऽ जाइत । कोशी के काटि दितथि, बाढ़ि बन्द भऽ जाइत । नख लऽ कऽ दीरि दितथि, नहर बनि जाइत । पृथ्वी के एक चाण मारितथि, अन्न उपजि जाइत । पैरक पैल छोड़ा कऽ फेंकि दितथि, कल-कारखाना बनि जाइत । देश नहन समुद्र भऽ जाइत जे लोक घूटे लऽ कऽ लघुशंका करैत ।

हम कहलियेक-खट्टर कका, अहाँ त अतिशयोक्तिक धारे बहा देलियेक !

खट्टर कका चिईलैत बजलाह हो, वंशज ककर छी ? रक्तक धर्म कतहु छुटलैक अछि ? विज्ञानक उन्नति करबा लेल त पृथ्वी पर और और जाति अछि । कल्याण-विनाशक भार लेहो त कभरो ऊपर रहक चाही । से मनमोदक बनेबाक भार हमरा लोकनि पर अछि ।

हम कहलियेक-खट्टर कका, मानि लियऽ जे किछु अतिरंजनो होय, तथापि भाव ओ सत्यगुणी अद्वैत पृथ्वी पर भेटि सकैत अछि ?

खट्टर कका नासि लैत बजलाह हो, सत्ययुगक लोक कोनो दोसर प्रकारक जिय नहि होइत छलाह । सभ युगमे मनुष्यक स्वभाव एकै रंग होइत छैक । तखन परिस्थितिक भेद सँ व्यवहारमे अन्तर पड़ैत छैक । देखह, पहिने लोकक



संख्या कम छलैक। जसवा अन्न फस उपजेत एतैक सैह नहि खा सकैत छन। एहिठाम अन्निक आश्रम, दू कोस दूर वशिष्ठक आश्रम, बीचमे ककरो घर नहि। अन्न केँ एक हजार गाय, वशिष्ठ केँ दू हजार गाय। आज एतैक दुध नही की हो ? तँ अलिशि-देव केँ खेहारि खेहारि कऽ सत्कार कैल जाइत। ओतवा घृत केँ खा सकैत ? जे वचैत छल से जरा कऽ होय कऽ देन जाइ छल। ताहि दिन सभ केँ अपना जरूरति सँ फाजिले छनैक केँओ चोरो कियेक करैत ? परन्तु आइ जनसंख्या बहुत बढ़ि गेलैक अछि। पृथ्वी ओतवे, खनिहार दसगुना बेसी। तँ अन्न वशिष्ठक रान्तान पेट खातिर एक दोसरा केँ छेपि रहल छथिन्ह। यदि लोकक आवादी कम भय दशमाश पर आवि जात त फेर सत्ययुग पलटि आवय पुनः गौरसक धार बहऽ लागय।

हम-तखन सत्ययुग ओ कलियुगमे अन्तर कोन बात नऽ कऽ ?

खट्टर कका-हो लोक से साथ बेसी त सत्ययुग। खाद्य सँ लोक बेसी त कलियुग। पूर्वजमे कहियो अकाल पड़ि जाइत छलैक त चोरी आदि कलिक धर्म प्रकट भऽ जाइत छलैक। एक बेर अश्वत्थामा केँ दूध नहि भेटलैक त पिटार घोरि कऽ पिउनलि। एखन देशमे करोड़ो अश्वत्थामा मौजूद छथि

हम-तखन प्राचीन ओ नवीन युगमे धर्ममूलक भेद नहि छैक ?

खट्टर कका-धर्ममूलक नहि अर्थमूलक भेद छैक। एही आर्थिक आधार पर समाज नैतिक आदर्श बनैत छैक। हम त धुँधैत छी जे अर्थ धर्मक मूल थीक जौ अर्थ हटा दी त कोनो आदर्शिक मूल्य नहि।

हम-से कोना ? खट्टर कका ?

खट्टर कका-देखह, सभ सँ बड़का धर्म अछि दान ओ दया। दू मुट्ठी अछि त दोसरा केँ एक मुट्ठी दिओक। जकरा रखे नहि करलैक से अनका देलैक की ? तँ हम कहैत छिओह जे धर्मक मूल अर्थ।

हम-परन्तु आनी आन धर्म त छैक ?

खट्टर कका-हँ परन्तु धियारि कऽ देखह त अर्थ बिना कोनो धर्मक अर्थ नहि। गी-गंगा-गीता सभ आदर्श ओही भित्ति पर टाढ़ छथि।

हम-ई बात नीक जकाँ बुझवामे नहि आएल।

खट्टर कका-देखह, गौ सँ दूध ओ खसामे सहायता। तँ ओ माता गंगाजीक प्रसादान मिर्चाई ओ वाणिज्य, तँ ओ पूज्य। गीताक कृपा सँ सभ अपन अपन स्वधर्म (व्यवसाय) भ लागन रहय, केँओ दोसराक कृति या जोधिकामे हस्तक्षेप नहि करैक। तँ ओ मान्य। सभमे गूढ़ सादर्य भरल छैक

हम-तखन एकटा संदेह होइछ, खट्टर कका। एहि देशमे अर्थ केँ एतैक तुच्छ दृष्टि सँ कियेक देखल गेल छैक ?

खट्टर कका बजलाह-हो, यैह त दोग छैक। ऊपर सँ कहय जे द्रव्य तुच्छ थीक। और गितरे भीतर टका धर्म टका कर्म टका हि परमा गति। ओही खातिर एतैक रासे दान-दक्षिणाक माहात्म्य गाओल गेल छैक। द्रव्यमे एतका शक्ति छै जे कतबो पाप कैला उत्तर पाक भऽ जाउ। मोदान वा स्वर्णदान कर, व्यभिचारक दाय भेटा जाएत। शोना-चानोमे हत्या पशुबाक सामर्थ्य छैक। आइयो और ताहु दिन एहि भूमि खातिर साहू दिन कुरुक्षेत्र मचैत छल, आइयो मचैत अछि। मनुष्य कहाँ बदलल अछि ? सप्ताहिक महिमा सभ दिन सँ छैक। कुछ आदर्शिक कोन मोल ? परन्तु हो वायू, ब्रह्मण देवता चलाक छलाह। जौ द्रव्य केँ तुच्छ नहि कहिनथिन्ह त लोक दितैक कोना ? ओही तुच्छ द्रव्यक निमित्त एतैक रासे राजा हरिश्चन्द्र ओ नृग सन दानीक उपाख्यान पसारल गेल अछि।



## भूतक मंत्र

खट्टर कका भाङ्ग थो कऽ पसवेन रहसि हमरा संग एक अपरिचित व्यक्ति की देखि पुछलन्हि—हो, ई के छथिन्ह ? यदि ककरो माथमे कुश देखी त कुशल नहि ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, राति बघेयावाली केँ भूत लागि गेलैन्ह । हुनकेँ झाड़क हेतु आएल छथिन्ह । ई चटकर भारी ओझा छथि । बारह बर्य कामाख्या रहि मंत्र सिख केने छथि ।

खट्टर कका की हँसी लागि गेलैन्ह । बजल ह—ई त स्वयं भूत छसि । ककरा पर चढ़ियन्ह तकर निस्तार नहि ।

ओझा तरेनि कऽ बजलन्हि—हम कि अरना मने कनहु जइ छी ? जे बज्जैत अछि, तकरा ओहि ठाम गाइ छी ।

खट्टर कका पुछलन्हि—अहाँ लोक की एना ठकै छियेक किएक ?

ओझा बिगड़ि कऽ कहलन्हि—अहाँ हमरा सँ रजि लागू हम मंत्र जैत छी । नभ सँ की नहि भऽ सकैत छैक ?

खट्टर कका उत्तर देलन्हि—बेस, त हम एकटा जाक अहाँकेँ लग दैत छी । अहाँ जेक मने जेना छी त 'बड़ि कऽ' भाकरा भगात । मंत्र हाथ सँ अलग भऽ नहि देव । यदि फतवी 'ही-छी' केने ओ छड़ि देय त हम वृद्ध जे अहाँक मध्यमे अछि अछि ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, ई अछल्लल छसि । तटताह नहि ।

खट्टर कका बजलन्हि—बेस ! अँदे जामूनक गठने एकटा घाँड़नक छत्ता छैक । सायत सँ उतारि कऽ धोनीक बीच रखि दहुन । ऐखन मंत्रक परीक्षा भऽ जैतछ ।

ई रंग रंग देखि आझा ओहि ठाम सँ घसकि गेलाह ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, ई कहैत छथिन्ह जे बघेयावालीक देह पर जिन चढ़ल छैन्ह ।

खट्टर ककाक ठोर पर भूखी अछि गेलैन्ह । सोटा कुडीमे भाङ्ग राखैत बजलन्हि—हो, ठाँठ भरि जन्म गेलियन्ह, कुँडुमे वातरस घेने । ताहि पर दुइदारीमे दोसर बियाह कय एकटा रसिनी उठा अन्ने छथि । तखन आँइनमे जिन पड़ल गइ छैन्ह त से कोन भारी बात ?

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, अहाँ केँ त सब बातमे हँसिए रहैत अछि ।

खट्टर कका बजलन्हि—हँसीक बात न धियेक । जकरा अंगीर नहि, सेहो हमरा लोकनिक स्वीगण पर चढ़ि जाइत छैन्ह । अकलक बहू, सभक भोजाइ । भूतो केँ एही ठामे दबेर चन्द्रक शिखर होइ छैन्ह ।

हम—खट्टर कका अहाँ भूत नहि मानैत छी ?

खट्टर कका—हो, हम भूत, भयिष्य, वर्तमान—हीनू मानैत छी । पूर्णभूत, साना-भूत, संदिग्धभूत ।

हम—हो भूत नहि ।

खट्टर कका—तखन कोन भूत ?

हम—जे भूत लोक पर चढ़ि जाइत छैक ।

खट्टर कका एक छन मोचि कऽ बजलन्हि—हँसो भूत मानैत छी हमरा लोकनिक माथ पर शरिपुँ भूत चढ़ल अछि ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, अहाँ व्यर्थ करैत छी । परन्तु पदपरायण देखिओक जे कतेक राते भूतक यर्गन दल छैक ।

खट्टर कका भाङ्गमे मरीच भानवैत बजलन्हि—वैह भूत तोर माथ पर सँ साजि रहल छीह । घुञ्ज बड़का पड़नक कपार पर ई भूत चढ़ल रहैत छैन्ह । जहाँ बिक्रु पुछहुन कि 'कन्ने' ठाम लिखल छैक । आन आन देश गव गव अविचार कऽ रहल अछि हमरा लोकनिक अँखि पर पूराजक जाला छारने अछि ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, एक दिन हमरो देशमे बहुत रामे विहंगम छल । हमरो पुष्पक विमान छल, अग्निवाण छल ।

खट्टर कका बिचरलन्हि—टोकेन बजलन्हि—जेर वैह भूत वाजि रहल छीह । 'भूत'क भूत । झूठी चलि गेल, हाथसार चलि गेल । परन्तु हम हाथमे सिक्का घेने छी । की त 'एक दिन हमहुँ हाथीबग्रा छलहुँ' आव की छी, से ने देखू मूनी खड़ तर, स्वप्न देखी नौ भ सक । हमरो जॉर गेल छैत नहि अछि आन-आन देश हिमालयक थोटी पर चढ़ि गेल ; हम खादिमे पड़ल बजैत छी—'एक दिन हमरो पुरुखा चढ़ल छलाह ।' आन-आन देशक अँखि भयिष्य पर छैक ; हम भूत दिस मुँह फेरि कऽ बैसल छी । ई भूत जान छोड़्य सखन ने आगी बढी ।

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, अहाँकेँ भूत प्रेमे विश्वास नहि अछि । परन्तु कतेको लोक अपना अँखि सँ देखैत अछि, कतेको केँ भूत खेहारैत छैक । से कोना होइ छैक ?

खट्टर कका एक चुल्ही लोक भाङ्गमे पिछरवैत बजलन्हि—हो, ओ धिकैक भयक भूत । अज्ञानक कारण अन्धार रातिमे सुनसान गल्लीक बीच कोनो घोर वा जारकेँ भूत मानि कतेक गेटे गायत्री-मंत्र जपय लगैत छथि । कुष्माभिसारिका

कै यमिणी दुःखि हुनक धोती नील भऽ जाइ छैन्ह । मरिचकविकार सँ केओ प्रलाप करैत अछि त ओ भूतक बकनाइ भऽ गेल ! केओ चुपचाप आँठनमे पजेबा-खपटा बरसा देनक त ओ प्रेनक उपद्रव भऽ गेल । रानिमे चीरक बोध 'कासफोरस' चमकल त राकल । राँप नहि देखाइ पड़ल त भूतसम्पा ! अगि कोना लगल से ज्ञात नहि त ब्रह्माग्नि । हो, ई सभ अविद्याक अन्धकार धिक्कीक रज्जौ बघाऽहेब्रम ।

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका अहाँ कै अनीकिक वातमे विश्वास नहि अछि । परन्तु ओखन एहि देशमे तेहन-तेहन गुणी छथि जे कर्ण-पिशाच कै वश कय परोक्षक वात जानि जाइत छथि, मन्त्र द्वारा पिलही कटैत छथि चित्ती कौट्टी केँकि राँप कै नथैत छथि, बड़ा चला कऽ चोगक पता लगा लैत छथि बैताल सिद्ध कय जे चाहथि से मैगा सकैत छथि 'एतय नहि, ओ भोक्नि तन्त्र द्वारा मारण, उच्चाटन, वशीकरण-सभटा कय सकैत छथि ।

खट्टर कका जोर-जार सँ भाङ रगड़ैत बजलाह-फूसि वात । यदि एहिमे एकोटा सय रहितैक त हम मुसरे तोल पिटा दिगहु । पिलहीक दवाइ वा इंजेक्शनमे जे देशक करोड़ो टका बाहर जाइ अछि से बाँचि जाइत सरकार खुफिया पुलिस तटा कऽ बड़ा चलेबाक महकमा खोलि दैत । सिचार्ड मंत्री पुरश्चरण द्वारा धरस करवा लिहथि । महामारीक समयमे डिस्ट्रिक्ट बोर्डक चेयरमैन महागुल्युजय पाठ करवितथि- 'जम्बक यजुषहे सुगन्धि पुष्टियर्तनम् ।' प्रधानमंत्री रेडियोक रानमे एकटा कर्णपिशाची राखि लिखथि । परासष्टनीति सँ जे काज नहि चलितैक से मोहन या उच्चाटनक प्रयोग सँ सिद्ध भऽ जइतैक । पलटनक मदमे जे ओतया धर्य होइ छैन्ह से बाँचि जइतैक । कोनो देशक सेना आक्रमण करैत त एक झूठ तानिक कै ठाढ़ कय देल जइतैक । ओ 'हुम फट् स्वाहा' कऽ कऽ सभ कै भगा दितऽथिन्ह । अथवा तेना कऽ सभन कऽ दितऽथिन्ह जे ओ सभ आगो बढिअ नहि सकैत । अथवा मेहन वशीकरण कऽ दितऽथिन्ह जे लइक छोड़ि हमरा सभक पैर दाख्य लगैत । हो, ई सभ त बड़का धाम छैक । हम एकटा साधारण परीक्षा कइत छिऔह । यदि अपना देशक तांत्रिक कै वशीकरणक दावा छैन्ह त पहिने वरक चाप पर प्रयोग कऽ कऽ देखथु । यदि ओ बेटाक धाम मइनाइ छोड़ि देधैन्ह त हम बूझव जे तन्त्र मंत्र सफल । नहि त एकरंगा ओ लाल टोप धर्य ।

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका, ओझा आइ राति भूत झाड़थिन्ह, ताहि खातिर बहुसो वस्तु धाँकिएन्ह । उनटा सरिसव । कारी बाछीक गोबर । तमिया मसानक भस्म । श्यामकर्ण घोड़ाक नाइडि । ताही सभक जोगारमे गेल छथि ।

खट्टर कका भाङक गोला बनवैत बजलाह-एकर नाम छैक मुन्घा पाखंड । भाला उनटा सरिसव और भूत पडैवामे कोन कार्य-कारण सम्बन्ध छैक ?

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका, तंत्र मंत्रक रहस्य गुना होइ छैक, सँ आधा राति कऽ एकरनामे बबेयापालीक भूत झाड़ल जैरैन्ह ।

खट्टर कका बंटा पटकैत बजलाह-एकर नाम छि गूडपनी । आम-आम देशक विद्या हुकाफ घोट पर चमैत अछि, और हमरा राधाक विद्या कनफुसकीमे रहि जाइत अछि । हो, चोर कनहु इजोस सहय टकविद्या अंधकारमे चलैत छैक । पाश्चात्य विज्ञान कै देखनीक जे कोना सोन जकाँ प्रकाशमे चमकैत छैक । ओ रेडियो बहार धरैत अछि त सम्पूर्ण पृथ्वीमे खिरा दैत अछि । परन्तु अपना देशक कोनो पंडित कै ई विद्या हाथ लागल रहितैक न नहि जानि कतक आडम्बर पसारितथि । कहितऽथिन्ह जे सोझे दैकुठ सँ आकाशवाणी आवि रहल अछि । यजमान कै सघेल स्नान करा अहोरात्र उपवास करा शुभ मन्त्रमे सुवर्ण-धेनु दान करा अमावास्या रात्रिमे एकान्त श्मशानमे लऽ जा, कोनो मुइल मोकक खर सुना दितऽथिन्ह और सिद्ध बनि भरि जन्म पुजवैत रहितथि । रेडियो कै चंडीक मूर्ति बना, एकरंगा सँ झपि, यक्षपिशाचक मंत्र पढ़ि, अक्षत सिद्ध छोटि, यथार्थ वस्तु पर तेहन आचरण चढ़ा दिगथि जे केओ असली भेद नहि बूझि सकय । और मरवा काल चुपचाप अपना बेटाक कानमे गुप्त मंत्र दम हुनको सिद्ध बना जैतथि ।

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका, अहाँ मंत्र कै पाखंड बुझैत छिएक ?

खट्टर कका भाङ घोटैत बजलाह-हो, मन्त्रक अर्थ धिक्कीक अधिकत परामर्श । यदि तोरा पेटमे कृमि छीह तऽ हम विचार देवीह जे वाचमिडंग खाह । परन्तु यदि हम तोरा कर्हिहीह जे पेटमे एकटा गुल्मरक गाछ जनमि गेलौह अछि, त ई पाखंड भेल । यदि कर्हिहीह जे ओ गाछ कटवाक हेतु एकटा जप करय पड़त, त ई महा पाखंड भेल । यदि कर्हिहीह जे ओहि जप कै फलित करय हेतु थोड़ेक ऊँटक मकटी विलाडिक गोजी, यादुरक काँची, भगजोगनीक नेड़ी तथा पीथ भरि स्वर्ण चाही, त ई महा-महा-पाखंड भेल । एही प्रकारक महा-महा-पाखंडी समाजमे सिद्धनांत्रिक आदि नाम सँ पुजवैत छथि । लोक १०८ श्री हुनका नाममे लगा हुनक अंगुष्ठीक पिबैत छैन्ह । हमर वश चलय त सोझे ४२० टका लगा दिऐन्ह । खट्टर-पुराणक एकटा श्लोक सदा स्मरण राखह-

तांत्रिक मन्त्रिकश्चैव हस्तरेखाविशारदः ।

भूतयक्ता भविष्यङ्गः सर्वे पाखंडिनः स्मृताः ॥

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका, संजो अहाँ कै जाने बुझना जाइत ?

खट्टर कका भाङमे नीनी दैत बजलाह-हो, असली मंत्र थीक रसायनशास्त्र । वृ वस्तुक सयोग रौ एक तैसर वस्तुक आविर्भाव भऽ जाइ छैक । एहि विज्ञान रौ आन देश एतेक उन्नति कैलक अछि । परन्तु तकरे नकल पर झूठ फूसि आडम्बर पसारि, माटिकी घीभी, पानिकी घृत अथवा धामक सोन बनेबाक डोंग करव

ठकपनी थीक। एही छस-दिवाकें धूर्तगण तंत्रक नामसँ प्रसिद्ध केने छथि। अमुक नशकमे अमुक मय रंगे अमुक लेप लगा लियऽ, त अदृश्य भऽ जाएम। हो जाउ जाँ ई सन्ध गंतक। इम रेलमे डेस खुसा दिगहुँ। टी० टी० आइ० टिटियाहुने रहि जेतथि। सभ ठाम परनुहें फलाहार भवैत। नित्य मलाहमे आइ छगितहुँ। ककरो मासुरमे जा कऽ गानपूआ छनि भविन्हूँ। एहन सबक अग्यो लोकनव की के पुटैत ?

हम कहलियेन्ह-खड्डर कका, ओझा दयेयावालीक हेतु एकटा यंत्र बना रहल अथिन्ह

खड्डर कका भाइ घोरित बजलाह-ओकरा यंत्र नहि, पड़चंत्र कहल असल यंत्र थीक मशीन। यंत्र द्वारा आकाशमे उड़ि जाउ पातासमे चलि जाउ, पहाड़ उड़ा दिवऽ समुद्र बाधि दिवऽ, पानि दरमा दिवऽ, श्रितनी चमका दिवऽ और ई सभटा यंत्र यूरोप-अमेरिका बनार केनक अथि। यूजन तऽ तंत्ररूपी देताल आकरे सिद्ध भवैत अथि। यंत्र खेत जोखैत छैक, चाउर फुटैत छैक, घानस करैत छैक, कण्डा धूवैत छैक भार उठवैत छैक, पग्या होकैत छैक गीत सुनवैत छैक हमरा लोकनि की जाहि यंत्रक फाज पड़ैत अथि मे सभटा ओकरे सँ मडैत छियेक और वदनामे हमरा लोकनि कोन यंत्र देखि छियेक ? एतुका पथिद्धन सँ और तरे की लागवैत ? यहन करताह तऽ एकटा कोश उपरि कऽ तामगे भद्रवापऽ पठा देखिन्ह जे लैह सिद्धिदाता यंत्र।

हम कहलियेन्ह-खड्डर कका, नखन भूतक मंत्रमे अहीकें विश्वास नहि अथि ?

खड्डर कका बजलाह-असलमे पूछल त भूतक मंत्र एहि देशक लोक जनिहे नहि जथि। भूतक मंत्र जनैत अथि पाश्चात्य देश। छिनि, जल, पायक, गगन, समीर-एहि पाँचो भूत की ओ तेना कऽ अपना वशमे केने अथि जे सभ काज ओकरा सँ लय रहल अथि। और हमरा लोकनि नकली भूतक फेरमे पड़ि उनटा सरिसव जोड़ने भेन फिर छी

हम कहलियेन्ह-खड्डर कका, अही पाश्चात्य विज्ञानक समर्थक छी। परन्तु आधुनिक विज्ञान लोक की सहार दित तऽ आ रहल अथि।

खड्डर कका विहुरित बजलाह और रामायण महाभारत कि लोक की सृष्टि दिस तऽ गेल छग ? हो, युद्ध सभ युग सँ सँझल आएल छैक। परन्तु तकर दाय विज्ञान की गाँठे दहीक। यदि केओ नेज सरीता सँ सुपारी नहि कतरि अपन नाक कतरि लेवथ त एहिमे सरीताक कोन दोष ?

हम खड्डर कका, पाश्चात्य सभ्यता भौतिकवादक मृगमरीचिकामे पड़ल अथि परन्तु हमरा लोकनिक पुरखा ज्ञानी छलाह। सँ ओ लोकनि सांसारिक

ऐश्वर्य की कुछ बूझि भौतिक विज्ञान की महत्त्व नाहि दलनि। एही आध्यात्मिक मनोवृत्तिक कारण ओखन धरि पैह धर्मप्राण देश जगद्गुरु कहेवाक योग्यता रखि अथि।

खड्डर कका बजलाह एकरे कहैत छैक 'एकरा लज्जा परित्याज्य सर्वत्र विजयी भवेत्।' हो, जनय एक धूस समीर खुर्द्वर भाइ भाइमे चेत फटी आनि होय, जनय इत्यक लाभ वेदासंगी की वेचि देल जाय जतय भूतक नाम पर धरवी बेचल जाय, ताहि देश की नौ धर्मप्राण कहैत छह ? धर्म देखवाक हो त यूरोप-अमेरिका सँ भूमि आवइ जत रेलमे सावून लीनया पर्यन्त सुरक्षित रहैत छैक, जातीय दरिद्र सरही ओकर जकरा दाकन सँ एक सात अंगक चक्को शुद्ध धूस करैत कऽ अग्नि सकेन आछे ओकरा प्रोचालयमे जावा समाइ रहैत छैक ततक मोरा सभक भाजनालयमे नहि। जना अजरज अपना देव नदी की रहैत अथि, तना दाद हम अपन गंगाजी की रखि रहियेतेएन्ह न असली पूजा होइवैत। परन्तु एहिठान १ लोक नदीमे फूल चढ़ा कऽ गद्दे मोहो फीर दैत छैन्ह। सार्वजनिक स्थानक पवित्रता फाना राखी, सोरोटा धर्म हार सभ नाहि जनैत छी। तखन अनन्तर कोन गुरु मंत्र देखै ? अगन नन भियौ मिट्टि धनैत रहू जे हम छी 'सभक गुरु गोवर्धन दास।'

हम कहलियेन्ह-खड्डर कका अहीकें वातमे मूमव त कहिन, परन्तु कान्हि स्वामी अध्यात्मानन्दक व्याख्यान हेतैन्ह जे भौतिकवाद सभ अनर्थक जड़ि थीक।

खड्डर कका व्यंग्य करैत बजलाह है। ओ भौतिकवादीक बनाजोल रेलगाड़ी सँ उत्तरि, भौतिकवादीक बनाजोल चरण लागैत, भौतिकवादीक बनाजोल लाइन्सपर पर घिसिया कऽ बजलाह जे भौतिकवादी सभ्यता बड़ अधलाह थीक। और हुनक अनुयायी भौतिक कागज पर भौतिक फाउटेनमेन सँ हुनक चकल-गोट कय, भौतिक प्रीग्रामर प्रेसमे छपवाक हेतु पठा देखिन्ह। ... हो असलमे पूछल त हमरा लोकनि निर्लज्ज छी, बेधर छी, बेहया छी।

खड्डर ककाक भाइ तैयार भऽ गेल छलैन्ह। ओ लोटा हाथमे सैत बजलाह-पाश्चात्य देश पंच भद्राभूत की अपना वशमे केने आछ। और हमरा लोकनिक माथ पर सूर्य चक्र भूमि सवार आछ जखन ई भूत भस्मीभूत हो तखन ने देशक भविष्य बनय। एही हाने १ हम भूतनाथक आराधनामे लागल रहैत छी।

ई लहि खड्डर कका दू दुन्द शिष्यजीक नामपर उत्सव करय बह पड़ सभटा भाइ पीवि गेलन्ह।



## चन्द्र-ग्रहण

ओहि राति चन्द्र ग्रहण लागल रहेक। सीसे गामक लोक उमडि कऽ थड्का पोखरिमे स्नान करैत छथ। ओकर खट्टर कका अपना दलानमे बैसल छथ तथैन रहथि। हम जा कऽ कहलियेन्ह खट्टर कका, ग्रहण स्नान नहि करवैक ?

खट्टर कका बजलाह—ही, ई पूस मास! पाला पड़ैत। ताहिमे आधा राति कऽ हम बहाउ गऽ ? से कि हमरा कुकुर कटने अछि ?

हम कहलियेन्ह—देखिऔक स स्नानक हेतु कोहन भेटियापसान मचल ऐक ?

खट्टर कका सिहरैत बजलाह—हे नारायण ! ई सनसन बसान ! ई कनकन पनि ! कनेक छूरी त आहुर वर्ष धनि जाय ! ताहिमे ई सससो नर नारी भरि छाती पानिमे छड छथि ! कतेको बुद्धिमान एकटंगा देने छथि । बच्चा सभ छिटुरि रहल अछि । मर्द सभ सर्द भऽ रहल छथि । कोमलांगी सभ कटुआ रहल छथि । पुरवैयाक लहरा तीतल नुआ की चीरि फय युवतीक छाती छेदि रहल ऐक । बृद्धागण घरधर कोपि रहल छथि । तद्यपि पुण्यक लोभे सभ केओ टेलमटेल करैत आगौं बढल जा रहल छथि । छाम दे धर्मप्राण देख !

हम पुछलियेन्ह—खट्टर कका, अहाँ नहिए नहैवैक ?

खट्टर कका बजलाह—ही, चन्द्रमा पर पृथ्वीक छाया पड़ल ऐक, किछु कालमे अपनहि हटि जैतैक । ताहि खातिर हम कियेक पानिमे डुबू ? सीसे गामक रंग हमहुं बताह भऽ जाउ ?

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, ओकर बोच बाबू कै देखिऔक । कोना मुँह झोपने जप कऽ रहल छथि ! हुनका एहि बेर ग्रहण देखवाक नहि लिखैत ऐक । तँ ऊपर नहि सकैत छथि ।

खट्टर कका—तयत्ताह स की हैतैक ?

हम—मृत्यु ।

खट्टर कका—मृत्यु त एक दिन हैये करतैक । ओ कि मुँह झोपने मानतैक ?

हम—राशिक विचारें मृत्यु फल लिखैत ऐक ।

खट्टर कका बजलाह—ही, हम स नने सँ सभटा ग्रहण देखैत ऐलहुं अछि । ओहि मे कतेको मृत्युयोग पार कऽ चुकल हैय, कतियो ओ सँ सोमाय नम भलि जपलहुं । परन्तु राशिक फल कहाँ छटित भेल ? यदि सरिपहुं एना हाइतैक त अफगानिस्तान, पलुचिस्तान, तुर्किस्तान, इराणिस्तान—सभ एखन धरि

कश्मिस्तान धनि गेल रहैत । ग्रहण आर्यवर्तमे बोच बाबू सन सन बुद्धिनिधान पृथ्वीक शीमा बढवैत गेलैछि । परन्तु एहि दशक दिग्गज लाकनि क के बुझावै ?

हम—खट्टर कका, तखन एतेक रातरे जे ग्रहणाक फल लिखल ऐक मे कपोल-कल्पितै ऐक ?

खट्टर कका ता अपन विचारि कऽ देखल राशिक अनुस्तर लाग काकी के एनि बेर की फल नहराउन ऐक ? खोनाश ! फल बनवऽ बसा की एतयो ध्यान नाह रसक जे ई फल ग्वी बालक भा ब्रह्मचारिमे कोना दलि । हैतैक ? ही, बारह टा राशिम आउक फल जानि बुझि कऽ अनिष्टे राखल गेल ऐक । कोनामे व्याधा, कोनामे चिन्ता, कोनामे धान, कोनामे माननाश ! से जौ नहि रहितैक त लोक कायक कोना अतिरन्त ? बूझल त इ ग्रहण चन्द्रमा केँ नहि लगैत ऐक । इपरा सभ कै लगैत अछि

हम—स कोना ?

खट्टर कका—ग्रहण स ई जे ग्रहण होइतहि हमरा लोकनि कै अशौच लागि जाइ तँ जना जन्मशौच मरणशौच, लहिना ग्रहणाशौच । एक पहर दसिनहि सँ भानम भाउ बंद ' नदुरान्त सभय घेल पातन बाहर कंक । तीन तीन बेर स्नान करू जमउ बढनु और गेँ अनेष्ट फल हो त शान्ति कराउ, जप करू, ब्रह्मण के गम दशिषा दिअल । ही ई सभटा बूझल त लोकक हेतु बनगैक अछि । एहि दशमे 'ग्रहण' क भये जाइ ऐक जेतैक

हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, ई न बेस क पर कहल ।

ग्रहणमे ६११ राश हस्ता उटैलक—ग्रहणदान ! ग्रहणदान !

खट्टर कका बजलाह—इखत र खुक पाइ वन्च कोना अपन कर उगाइक हेतु दीडि रहल छथि । एतन विजयन भटि जेनेक तखन सिफारिश कऽ कऽ चन्द्रमा कै छडवा देबैन । ता चन्द्रमा गहक दलि । एतन किछेचइत रमय ! त देखैत छैन ? क एक रुपैया अठानी बरसि रहल छथि । जय र हाय सभक बुझि !

हम—खट्टर कका, तखन अहाँक को विचार जे ई सभटा व्यर्थ थीक ?

खट्टर कका—व्यर्थ त थीकै । आइ सम्पूर्ण देशमे धमगन्जर मचैत हैं । सिमरियामे, तशाश्कमेधमे चिन्तेगी मन्त्राग मन्त्रक भाख नरगुंडक सम्प्र लहराइत हैं । आहिमे कतेक बच्चा हराएत कतेक बुढ़ी पिया कऽ मरतीह, कतेक युवती मर्दिन हाइतीक मकर देखन नहि । और ई सभटा धर्मक नाम पर हैं । एतन धर्मधकेल और कोना देशमे भटलोह ? जहाँ यूरोप-अमेरिका केँ एको पाइ खच गलि हैतैक तहाँ हमरा देशमे आइ कगडा रुपैया भुरकुस भऽ जाएत । हमरा लोकनि केवल छायाक पाछा दीड्य जेनेत छी । यदि एतवा टका रोम पृथ्वीमे लगयितहुं न आन देश सँ अन्न नहि माडय पईत । परन्तु की कहै छह ?



एक देशमे त सब यास विचित्रे छैक। घेटमे आन्न नहि रहौक, झँड़मे दन्न नाह  
रनौक, तथापि सभ केओ स्वर्ग जीवाक हेतु कोई कसने।

हम कहनिऐक-खडूर कका, एही धर्मस्थलक कारण कुभस्त्राना कतेक  
गोराक प्राण गेलैक।

खडूर कका-ही, भूखताक कृप मारि गेने एहिना होइत छैक-

हम-खडूर कका एहि देशमे भूखेक मृश्या कोन पगलैक

खडूर कका-बसी भ्रमनाइ त ने छीक ? नखन धरि जाह एहि देशक  
भूखताक प्रधान कारण बिधाह पड़ैत लोकनि

हम-खडूर कका, अहाँ त आश्चर्ये चरित छी। पड़ैत ककन भूखताक कारण  
होय ?

खडूर कका-हम सखे कहैत छिऊँम। पड़ैत लोकनि के सद्योग्रहा प्रलय  
विद्या हाथ लागि गेलैक-प्रलयक ज्ञान। आइ-काल्हि त विज्ञानक साधनाया  
विद्यार्थी गणित द्वारा एतया जानि जाइ अछि। परन्तु तबि दिन ई वस्तु जलौकय  
चमत्कार कऽ कऽ बुझना भेल। फलस्वरूप पड़ैत लोकनि सद्योग्रहाक ज्ञान पर ग्रहण  
करय लगलाह। सूर्य-चन्द्रमा सोना चानी धनि रत्नधन ई विद्या बुझाह बुझक  
केतु कामधेनु सिद्ध मऽ गेलैक। द्यू ठाँव दूहय लगलाह। लोक के हृदयक पर  
अखंड विश्वास जमि गेलैक। "जखन आकाशक मान ई बिजनेस युक्ति जाइ  
छथि तखन पृथ्वीक हाल किएक ने बुझन मऽ पड़ैत सभ लोकन हम कम  
धनीलन्हि जे "हम सभटा भविष्य जने छी। तँ खुद करम। हम गाना कय  
सभ जात कहि देवीह।" बस, चन्द्रमसक संग-संग साँपग्रहणक नाम कमय  
हाणि गेलथिन्ह। साधारण जनता त दुर्लभ छी पड़ैत लोकनि और निराइ बना  
देलथिन्ह। सभ बातमे ग्रहक फेर लगा देलथिन्ह।

हम-से किएक, खडूर कका ?

खडूर कका-लेबक हेतु सभो कहन चमत्कार बुझैत। चन्द्रमा ओ शुक्रक  
नाम पर उज्जर रंगक पदार्थ जेना उज्जर चन्द्र, उज्जर धनु, उज्जर चंद्र  
धानी, सोरी, दही, कपूर। अनि कैतुक नाम पर कारी रंगक पदार्थ जेना कारी  
मिर्च, कारी उड़ीद कारी कदल कारी छानर, कारी मणि। सूर्य ओ मंगलक  
नाम पर लाल वस्तु जेना सोना, गहूम, मसुरी, गुड़, केसर, लाल वस्त्र, लाल  
गाय, लाल मणि। ही, हमर त ई हम कविता अहाँ यूँ पड़ैत अछि।

हम-परन्तु यजमान लोकनि की त ई कविता बड़ह मठग पड़ल हैनैक।

खडूर कका-ताहिमे कोन संदेह ? ओना त केओ अपना मने एक सिंतुआ  
छी नहि दिनेक। चन्द्रमाक नाम पर घृतक घैले समर्पण करय लगलैक। देखह,  
पूत लेवक भेल कहन सुन्दर श्रावक बनाओल छैक-

घृतकुम्भोपरि विहितं श्रावं नयनीतपुरितं दद्यात्।

नाड्यार्तिदोषशान्तौ द्विजाय दोषाकरग्रहणे।

अर्थात् 'चन्द्रग्रहणमे पूतक घैल पर अंशमे माखन भरि कऽ श्रावण के दान करय  
त नाडी-शान्त होइक। पड़ैत लोकनि तेना कऽ यजमानक नाडी अपना  
भूट्टीमे कैलन्हि जे यजमान भरि जन्म अनाडी बनल रहि गेलाह। केवल नाडीए  
नहि छ यजमानक नारी सखे पड़ैतक भूट्टीमे आवि गेलथिन्ह। तेहन पंचांगक  
आन पगलान भेल जे यजमान यजमानिक पाँचो अंग ओहिमे पड़ि गेलैक।

हम-खडूर कका, अहाँ त अलकरेमे गप्प करैत छी।

खडूर कका-अलकार नहि यथार्थ कहैत छिऊँम। ई पड़ैत लोकनि  
यजमानिक केश परान्न अपना हाथमे कऽ लेलैक।

हम-से कना ?

खडूर कका-देखह, एखन धरि पंचांगमे स्वीगणक केश वस्त्रक मुहूर्त छपि  
रहल अछि।

सभ खडूर कका, हमरा विश्वास नहि होइ अछि।

खडूर कका सीरम तर सँ 'भिक्षुनादेशीय पंचांगम्' दवर कैलन्हि।  
बजलाह नखन दखि गेल। आचमन स्वोपा केशवसनमुहूर्त अश्विनी, आर्द्रा  
पुष्य पुनर्वसु नक्षत्रम् इन पड़ैत छि गेल जे भरणी कृत्तिका, रोहिणी मृगशिरा  
नक्षत्रम् किछ नहि भदि काना मन्त्री रोहिणी नक्षत्रमे खंडा धार्मिक नतीर त  
एहिमे पड़ैतक की नहि जेना कहैत ? जखन जा अपन टोक पतझा देखि कऽ  
नहि चले छथि त स्वीगण किएक पतझा टण्डिकऽ अपन केश वस्त्रतीह ?

हम खडूर कका, हमरा नहि जानल छल जे इहो सब दन्न पतझा ने बिगुल  
रहैत छल

खडूर कका वज्रमन्त्र पड़ैत लोकनि नीर निखनाहे की ? सुनि कहिवा  
गाइल जाय, नववर्ष कोन दिन पानमम नाथि, प्रसूनी कोन तिथिमे नख  
कनवाध कोन लगनमे स्नान करैथ कोन समय लहरी पहिरैथ, कखन स्नानपान  
करैथ और कोन दशक कलचरने एका-एकन खात भेटतीह ?

हम खडूर कका इ सभ कि वास्तवमे लिखल छैक ?

खडूर कका पतझा हमरा हाथमे दैत बजलाह नखन सौं अपने आँखि सँ  
दखि गेल। कहन बड़का पुच्छरमे देल छैक। सुनिच्छा-स्थपनम्। नवयध्या  
पाकारभ प्रसूनीना नवयधेदनम् पुनः स्नानम् स्वीगण लाक्षाभरणधारणम्।  
शिक्षी स्नानपानम्। राभक मुहूर्त दन्न छैक और अपना देशक बड़का बड़का  
पड़ैत एकर अनुमोदन कर्ता अछि। देखह, कहन कहन लक्षप्रतिष्ठ धीनपरीक्षोत्तीर्णक  
नाम एहि पर छपल छैक।

हम-खट्टर कका, एहन एहन मीगियाही बातमें पंडित लोकनि के पढ़ाक कोन प्रयोजन ? हुनका लोकनि के अधिक भक्तत्वपूर्ण विषयमें अपन बुद्धि लगावक चाकिऐक ।

खट्टर कका-ही, एहि देशक पंडित तेहन पुरुषाह रहितथि त कनिसहूँ कियेक ? परन्तु ई लोकनि त 'स्त्रीणाम् अहङ्कारफलम् मे अपन पांडित्य खर्च करैत छथि । स्त्रीक जीव फरकैन्ह त स्वामीक दुलार भेटैन्ह, डॉक्टर सभिन फरकैन्ह त नीच सँ प्रेम होइन्ह, नाभि फरकैन्ह त पतिक नाश होइन्ह, स्तन फरकैन्ह त विजय होइन्ह । पंडित हिनका लोकनिक ऊँ-आँग जकाई नसे छथि- तेहन पंचांग बना कय ऊपर सँ भंड देने छथिन्ह जे समाज केँ अर्धांग मारि देन छथि ।

हम-परन्तु पंचांगमें महत्त्वोक बात त रहैत छैक । यथा वृष्टियोग वर्षभर

खट्टर कका भुरसुराइत यजमान तखन एही वर्षक फल देखैत । एहिबेर 'परामर्श' नामक संस्कार लिखैत छथि, जकर फल-

पीडिताश्च प्रजाः सर्वे मयभीताः परामये ।

अर्थात् प्रजा पीडित रहथि, सब फेओ मयभीत रहथि ।

हम-तखन त वर्षफल बहुत अधमारे छैक ।

खट्टर कका-धम्कह । सर्वेश बृहस्पति छथि, तिनकर फल

विप्रा यज्ञरता भवन्ति तपसा श्रमैः क्षितिष्वपिपिता

राजा मन्त्रिदुतो गजैश्च महिदैर्दशः समृद्धालय

रोगं घ्नन्ति सुवृष्टयः प्रतिदिनं कूरा दिनश्यन्ति ये

चौरव्याघ्रभुजंगमाश्च बहुधा नश्यन्ति जीवेऽव्यये

भावार्थ ई जे अन्न पानि गाय महिष सँ दश समृद्धिशाली रहत, सुब वृष्टि होय रोग रोग ओ हिसक मनुक नाश होय राजा-मन्त्रि-दुता अपन काम सँ सज्जन रहथि ।

हम-तखन त वर्षफल बहुत बढ़िया भेल । प्रजा केँ कोन बानक काज नहि रहतैक ।

खट्टर कका-धम्कह । एहिबेर 'संचाहक' नामक मंत्र छथि तिनकर फल

आदित्ये बहुवित्तनाशनपरा लोका प्यारव्याकुला

मेघानां जलकमिरेय महती शस्यस्य नाशो ध्रुवम् ।

अर्थात् एहि वर्ष धनक नाश होत लोक प्यार सँ पीडित रहत, मेघ नहि बरसत और अन्न नहि होएत ।

हम-आदि री बाप । ई त सभटा अधमारे भेल । रीदी ओ अकारण सँ लोक मवाह भंड जाएत ।

खट्टर कका-धम्कह । एहिबेर 'सर्वर्तक' नामक मंत्र छथि तिनकर फल-

सर्वर्तके महावृष्टिः शस्यवृद्धिकरी शुभा

जलापूर्णा मही भित्ति जलदैर्घ्यवृद्धिर्नभः ।

अर्थात् एहि वर्ष अन्नका वृद्धि होत खूब अन्न उपजत पृथ्वी जलमय भंड जमीन और आकाशमें सभ दिन मेघ लगले रहत ।

हम-खट्टर कका, ई त नलेक रंगक बाप भिखन छैक जे मुछिए नहि काज करैत अछि ।

खट्टर कका-यैह त सारंग छैक । ई जाल तेहन कौशल सँ धूमल छैक जे केओ पराईए नहि सकैत अछि । देशमें अतिवृष्टि भेल त 'सर्वर्तक' नामक मंत्रक फल होत । अनावृष्टि भेल त 'संचाहक' नामक मंत्रक फल होत । देशमें फलहु अतिवृष्टि कतहु अनावृष्टि भेल, त 'हम दूनु तरहक फल लिखन छलहुँ ।' ही हिनका लोकनि सँ पार पाएब कठिन ।

हम-परन्तु पंचांगमें कनेक बाप एहनो त छैक जे देखि कय आन देशक विद्वान सकित रहि जाथि ।

खट्टर कका व्याप्यपूर्णक दजलाह-हँ, जेना पृथ्वी कोन समय शयन करैत छथि, कोन समय जाग्रत रहैत छथि । अग्न कोन दिन आकाशमें रहैत छथि कोन दिन पतालमें । कोन साल दुर्गाजी हाथी पर चढ़ि कऽ अथैत छथि, कोन साल महर्षामे सवार भऽ कऽ । शिवजी कहिया बसहा पर रहैत छथि कहिया गौरीक संग विहार करैत छथि ।

हम-शिवजी कहिया विहार करैत छथि सेहो पतझावना जानि जाइन छथिन्ह ?

खट्टर कका-केवल जानिए नहि जाइत छथिन्ह । ओहि समय पूजा करवैत छथिन्ह । देखत, श्रावण वृत्त चतुर्दशीमें पंचांगकार लिखैत छथि कामविद्धो हर पूज्यः ।

हम-खट्टर कका, अहाँ त तेहन तेहन बात देखा देत छी जे हमरा किछु जवाबे नहि छुरैत अछि ।

खट्टर कका-जवाब की फुर-नैह ? एहि देशक पंडित ज्योतिषी प्रणम्य दंडता धिक्काह । एकटा दूखीन आविष्कार करताह से त होइन्ह नहि, घरमें बैसन बैसन एम्मुखे चार्खनाश्च नामे चन्द्र धनक्षत्र करैत रहमाह । एही द्वार जहाँ रुग्ण-भगरिका चन्द्रनाक पर पहुँचयक सैधारी कऽ रहल अछि तहाँ हमरा लोकनि एखन घरि हाथमें केरा लय चतुर्थी चन्द्राय नमः कय रहल छी !

हम-खट्टर कका, चन्द्रमाक नाम लेल त चन्द्रग्रहण भन पड़ि गेल । आइ चूड़ामणि योग बिकैक ।

खट्टर कका-विहँसेन बजलाह हँ । आइ कतेक गोटा यजमानक घर चूड़ा हाजिराह । गोटेक केँ भण्डो हाथ माथि जाइत त आइधर्य नहि । तखन चूड़ामणि योगमें कोन संदेह ? ही, एहन एहन योग बनावयबला चतुर-चूड़ामणि छलाह ।

राम-खट्टर कका, आइ कतेक गोटा मंत्रो लंवाह ।

खट्टर कका-हैं, गुरु कानमे एकवैर 'हैं' कहि देखिन्ह और चेना मे भार जन्म हीन धुअवेत रहथिन्ह । 'हैं'क अर्य छैक जगसा, परन्तु 'हैं' कहदा कान हुनका कनेको लज्जा नहि होइ छैन्ह जे परतारि रहल छिऐक । छी चला मुइयाक एहन सुगम तरीका कोना दशयला बहार केन ग्रथ ?

राम-खट्टर कका, हम त एहीकाल गप्पेमे बाइल रहि गेलहुं, आइ जाय दिअ । कम से कम उग्रासे त नहा ली ।

खट्टर कका बजलाह सैं हैं अवश्य अवश्य । एक बूढ़ तगरा गप्पे नगीने अविहड ।

हमरा उदैल देखि खट्टर कका पुन' भुलकुंगलत बजलाह-बन्धमाक सर्वप्रथम भेल छलेक से त छुटलैन्ह । परन्तु एहि भारत भूमिक जे सर्वप्रथम भेल छैक स'हि से उद्धार होइन्ह तखन ने । ई मूर्खतापूर्ण राहु कहिवा हमरा लोकनिक मिड छोड़लाह से के कहि सकैत आछ ? हम त ओही उग्रासक बाट लाकि रहल छी ।

ई कहि खट्टर कका श्लोक पढ़य लगलाह-

भारतं बन्धवत् प्रसन्नं सौख्यरूपेण राहुणा ।  
न जाने केन दलेन कदा मोक्षं भविष्यति ॥

## पंडितक गप्प

सहि दिन भूमदीनक पंडित पंडित कैं खट्टर कका से भिन्न भऽ गेलैन्ह । बात ई भेलैक जे पंडितजी छोटनवायूक ओहिठाम श्राद्धक नेओत पूरय आएल रहथि भुटकृष्णदूक मृत्यु पर गप्प बलेत छल । पंडितजी ज्ञानक बात सभ कहऽ लगलाहन्त भावी पर कवते बस नहि चलेत छैक । इनका त एखन परदाक चरस नहि छेलैन्ह । परन्तु त ५ काले समयमे क'रियन प्राप्तकाल न'तीअति । तखन क'रियन पूरा भऽ जाउक तखन केओ नहि ब'रिय सकैत आछ । जैर आ काल नहि पूर्ण होउक धर मारिया नहि सकैत अछि ।

तावन अक्षरवादीक पुणेगी बरगामृत बौद्ध एलाह । पंडितजी साथ पर छिटैत श्लोक पढ़य लगलाह-

अकालमृत्युहरणं सर्वथाधिदिनशून्यम्

विष्णुपादादकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्

एतयहिमे कोइगैसे पढ़िब गेलाह खट्टर कका । भा अविनष्टि लोकनिक को ओ पंडितजी 'अहं' पखन कहने छलाह । विना काल पूर्ण भने केओ मारिए नहि सकैत अछि नाहन कर अथा मृत्युहरणम् कियेक कहने छिऐक ?

पंडितजी एहाक संग जुन पकड़ा गेलाह जे कोनो जयावे नहि फुरथिन्ह ग'रियनय लगलाह-

खट्टर कका हमर कहलन्हि वदे छल ? तखन पंडित लोकनि खंडित भऽ जाइ छथि त तहिना कहिय नगेन छ'स ।

हम कहलन्हिन्ह खट्टर कका हिमका लोकनिक शोकमे परस्पर दिगध क्रियेक रहैत छैन्ह ?

खट्टर कका बजलाह एकर कारण जे पंडित लोकनि परस्पर विरोधक प्रती होइ छथि । जहिना लोकमे तहिना श्लोकमे, ते हिमका लोकनिक वचनमे परस्पर विरोध रहैत छैन्ह । कहत त फेर देला दिओह । (पंडित जी ग) की ओ पंडितजी ! भावी त सर्वपरि धीक ?

पंडित जी-अवश्य

न भयति यत्न भाष्यं भवति च भाष्यं विनापि वनेन ।

करतल्लगसमपि नश्यति वयं न भविष्यति नश्यति ।







जे चीदतमासी धारी-बाटी लोटा-गिलास उतार्य भेल छिन्ह से समटा चण्डिकाक प्रोहित-महापात्र सभ नेहाल भऽ गेलन्ह । भगवान भूटकुनवायूक आत्मा केँ शान्ति प्रदान करधुन्ह ।

खड्डर कका एही काल धरि चुपचाप रूत उलाह । आय नहि रहल गेनैन्ह बजलाह—अहाँ ओ पंडितजी ! अहाँ तीन रंगक दाह किरैक बजैत छी ? एक रंगक घान बाजू ।

पंडितजी—हम तीन रंगक घान कौन बजैत छी ?

खड्डर कका—अहाँ की की निश्चय अछि ? प्रेतलोकक विनर मर्यादाकें छथिन्ह ? अथवा प्रेतोक्ति ? अथवा पुनर्जन्म ग्राह्य छीन्ह ? किंवा दोन रंगक संग रहि भऽ सकैत अछि ।

आय पंडितजी केर गोडियाय नालाह । खड्डर कका कहलथिन्ह—अहाँ स्वयं ज्ञानक घेरा दऽ कऽ देखिऔक जे भूटकुन घात सरिपहँ जन्म-प्रलय कैने हँताह न उटियार वा बरही भेल देखैत । तब तेहो वृत्ति दुध पिबैत होलाह । ग्री मातक याद जा कऽ अन्नप्राशन कैनेक भऽ तखन भगवत् सिद्ध भूतका छोटा पैठ कैनेक ? और यदि ओ भविष्य स्वगतोक्ते किहार करैत होलाह तखन आदिश्रमक अनुवादक छेड़ि एहिदामक हस्तोदक पीबय किरैक औताह ? और यदि ओ प्रेतलोकमे भटकैत छथिन्ह त हुन्का निमित्त छाता जुता किरैक उत्सर्ग करीनाहँ अछि ? की प्रेतगण पनही पहिरि कऽ चलैत छथि ?

पंडितजी केँ निरुत्तर देखि खड्डर कका कहलथिन्ह—औ पंडितजी ! जगका परतारिऔक परनु खड्डर का नहि मानलाह । ई समटा प्रथम अहाँ ज्ञानकिक प्रसारण अछि । कबहु नैयक हेतु लोभीक गानमे तबक उपात नहि पड़ल । से जायत प्रयत्न एहि देशमे प्रेतलोकक सन मन स्वाकाम व्यक्तित्व जियैत छथि ताखन अहाँ सन-सान पंडित केँ बालुसारीक डंकल हाँसे रहैत परनु भाषा अधिक दिन ई बालाफी नहि चलत से कहि दैत छी ।

पंडितजी छिरिया कऽ बजलाह—अहाँ चार्याक जकाँ बजैत छी । आत्मा केँ नहि मानैत छी । तँ एना कहै छी ।

खड्डर कका पुछलथिन्ह—‘आत्मा’ अहाँ ककरा कहैत छिऐक ?

पंडितजी शास्त्रार्थक गुणमे वाजय लगलाह—अरी इन्द्रिय धन, बुद्धि सभ से पर जे सत्-चित्-आनन्द स्वरूप छथि सैह आत्मा थिकथि ।

खड्डर कका—आत्मा कहियो दु खिन्ने पड़ैत छथि ? हुन्का कोनो अर्थ छथि, मामिला-मोहमा, प्राण पैच—कधक चिन्ता रहैत छैक ?

पंडितजी—कथमपि नहि । आत्मा नित्य शुद्ध-बुद्धि-मुक्त आनन्द स्वरूप थिकाह । हुन्कामे शरीर वा मनक धर्म आरोप करब अनर्गल थिक ।

आय खड्डर कका पुन गिरिया कऽ देखलथिन्ह—औ पंडितजी ! तखन आत्मा स्वतः आनन्द-स्वरूप थिकाह तखन अहाँ ई विचार करीतछि जे भगवान भूटकुनवायूक आत्मा केँ शान्ति प्रदान करधुन्ह ? भूटकुनवायूक आत्मा केँ कि छैक गइल छैक ?

हम देखत जे पंडितजी पुन खड्डर ककाक चपेटारि आबि गेलाह । खड्डर कका सेना मे घेरि सैत छथिन्ह जे वेधारे सकयल भऽ जाइ छथि ।

पंडितजी झोष से फो-फोँ करब लगलह । पुन, वीरासन तगवैत बजलाह—अहाँ हमरा से कक विषय कहैत छी ? देखि तखन निश्चय । जखन अहाँ सदा कऽ दूह लइक हेतु आएल छी । तामें अहाँ नाँव कऽ नेवार छी । खड्डर भइए जाव ।

खड्डर कका हमरा कहलथिन्ह—देखत आज केहन दुस्परताम रहैत अछि पंडितजीक पूर्वपक शुरु भैलथिन्ह जे खड्डर का पाहन ई कहु जे जन्म लख्या—पछी जयैत छी ?

खड्डर कका उत्तर देलथिन्ह—सख्या-गायत्री हुन्का हेतु छिन्ह जे पछी ओ भदबुद्धि होथि ।

पंडितजी उत्तेजित होइत पुछलथिन्ह—स क्या ?

खड्डर कका शान्त भाव से कहलथिन्ह—देखि अधमार्गक सुकाय अर्थ छैक पाप छोड़बबबला मंत्र । और गायत्री मंत्रक अभिप्राय छैक बुद्धिक हेतु प्रादुर्भाव दियो यो नः प्रबोदयत् । अतएव जे पाप कैने होथि या छी (पंडित केँ प्रसादिन प्रेरित) करायब चाहथि से संज्ञा गायत्री करब ।

पंडितजी तामसे घेर भऽ गेलाह । परधर कर्मत इन्साफक अहाँ भाजन काल भगवत्क हेतु नैयक दैत छी ?

खड्डर कका शान्त भाव से उत्तर देलथिन्ह—हम अपने धारीमे छापब और हुन्का लेल लीधीर दू टा भाग छैथि दबैत, हुनक अपमान नहि कर सकैत छिऐथि । भगवान कोनो लुकुर थिलथि नहि छथि जे जेहि तरंग कोरा देन जएतैक ।

पंडितजी कुछ होइत पुछलथिन्ह—अहाँ बंदन करैत छी ?

खड्डर कका पुन अधिधनित भाव से उत्तर देलथिन्ह प्राचीन कालमे भोगाभिलाषिणी युवती स्तनमे चंदन करैत छलीह और घोषार्थिनी छत्राण लखलखे । ऊँच केँओ भोज्य नहि खोअवैत अछि त चंदन कधीपर करब । छेड़ि हमरो बालुसारीक नेओम पड़य त चंदन कऽ सकैत छी । परनु हमरा त केँओ पंडितमे मोजरे नहि करैत अछि ।

हम कहलथिन्ह खड्डर कका—अहाँ त पंडित-पछाड़ छी । पंडित लोकनि अहाँक हरेँ छीह कटने भेल फिरत छथि ।

खट्टर कका बजलाह—ही, हमरा पंडितवला असनीए गुण नहि अछि—रोड दीप नहि करय अवेन अछि। अर्घो-सगड़ ओ घंटीक टंट-घंट नहि रखैत छी। चर्चर घंटा वैस कऽ नाक झुल्ल पार नहि लगेन अछि। आइपर पसारय नहि अवैत अछि। दरवार करवाक नृगि नहि अछि। एही द्वारे कतहु सँ पंडितमेक नेओन नहि अवैत अछि। नहि न हमरा कि लहड़ु शिलपी सँ अरुचि रहैत अछि ?

पंडितजी बजलाह—जे ब्राह्मणक कर्म नहि करैत तकरा नेओन कोना भेटतैक ?

न तिष्ठति सु यः पूर्वा नौपास्ते यश्च पश्चिमात् ।

स शूद्रवद्विष्कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणः ।

अहाँ सुर्वोपस्थान करैत छी ?

खट्टर कका कहनथिन्ह—बिना सुर्वोपस्थान केने कि जिनकी कटमे अटकै जाइ छैक ?

पंडितजी तमसाइरा बजलाह—ई शुक विनाद धीक—एतया कान श्राव्य स्थानमे शास्त्रार्थ करितहुँ त विवाद नैत—अहाँ सँ को भेजत ? केरा ? एहीदाम एकटा छीतन वानु छथि जे पण्डितक एतेक सत्कार करैत छथि। और एक अहाँ छी जे पण्डितक निन्दा करैत छी—की पण्डित अहाँक लेख बड़ अथलाह होइ छथि ?

खट्टर कका विनयपूर्वक कहनथिन्ह—सभ पण्डितक विषयमे त नहि कहि सकैत छी। परन्तु किछु पण्डितमे ई सात टा लक्षण रहित होइ छैन्ह—

लोभी क्रोधी तथाऽधीर स्वैण कृपण एव च

निन्दकश्चादुकारश्च पण्डितः सप्तलक्षणः ॥

से जे जेवन भारी पण्डित तेहने लोभी, तेहने खिसियाह, तेहने अगुनाह, तेहने पीनियाह, तेहने कृपण, तेहने निन्दक, ओ तेहने छुशामदी।

पण्डितजी कचकावात बजलाह—अहाँ भारी निन्दक छी।

खट्टर कका शान्त भाव सँ बजलाह—एकर कारण जे हमहुँ संस्कृत पढ़न छी। पंडितजी—संस्कृत ओ परनिन्दाम कोन सम्बन्ध ?

खट्टर कका—अव्याभिधरित सम्बन्ध। कोनो पण्डित एहन छथि जिनका अनकर निन्दा बेधेक पेटक अन्न पचैत होइक ?

हम पुछनिऐक—खट्टर कका ई बात यथार्थ। परन्तु एकर कारण की ?

खट्टर कका विहसि उठलाह। पुनः बजलाह—कारण ई जे जेखन कऽओ संस्कृत प्रारम्भ करैत छथि तेखन सीखि जाइत छथि जे 'रम' उत्तम पुरुष, 'नौ' मध्यम पुरुष और सभ कोओ 'अन्य' अर्थात् 'अधम पुरुष'। 'उत्तम ओ 'मध्यम'क अनंतर त 'अधम' कोटि होइ छैक। तँ संसार भरि लोक हुनका दृष्टिमे 'अधम' बुझि पड़ैत छैन्ह।

हम—याह ! ई त एक लाखक गप्प कहल।

खट्टर कका—तखन खट्टर-पुराणक एकटा और श्लोक सुनि लैह—

मधुरेण महाप्रीतिः शृंगारसचिन्तनम्

परीपदेशे पाण्डित्यं पण्डितस्य त्रयोमुपाः ।

हम—खट्टर कका तँ ई कहनि अन्तर एक प्रकारक आदेश हैम छथिन्ह ओ त स्वयं वामरा प्रकाश आरंभ करैत छथि। एकर की कारण ?

खट्टर कका—एकरा कारण व्याकरण। संस्कृत भाषामे पण्डितक क्रियाक भेद कऽ देव गेल छैक। 'परस्मैपद' एक रंग, ओ 'आत्मनेपद' दोसर रंग। एही अभ्यासक कारणे पण्डित लोकनि क्रिया मात्रमे 'परस्मै' (दोसराक हेतु) ओ 'आत्मने' (अपना हेतु)क भेद करैत छथि।

हम—खट्टर कका, इहो लाख टकाक गप्प भेल। राजा भोज रहितथि त एहन-एहन बात पर अहंकी उभरैत दितथि।

खट्टर कका—ही, हमरा त वर्षीओ उभिलयथला गुणग्राहक नहि भेटैत छथि। छुट्ट प्रशंसा जतेक लियऽ।

हम—खट्टर कका हमरा न ओनाथा अछिन्ह नहि जे अहाँक वानक मुख्य दऽ सकी। परन्तु एकटा ई न कह जे पण्डित लोकनि लोभी कियेक होइ छथि ?

खट्टर कका मूलकआइत बजलाह—ही, जिनका बाल्यावस्थाहि सँ एकटा, दूसरी नाह दस दस टा सकार कटम्य बाल देन गइक, मनिका जी 'न' अक्षरक गम्भार नहि लेनेक त कि 'द' अक्षरक लेनेक ? एही द्वारे पण्डित लोकनि नेवामे प्रवीण होइ छथि, देखामे कृपण।

हम—खट्टर कका, अहाँ त सभदा चमत्कारे बजैत छी। तखन ई कह जे पण्डित लोकनि एतेक रमिक कियेक होइ छथि ?

खट्टर कका विहसित बजलाह—एकरा कारण त रीत जे ओ छात्रावस्थहि सँ 'मनोरमा' कुचमर्दन क अभ्यास करैत छथि। पुरु ओतहमे परीक्षी नैत छथिन्ह। आन कोनो पापामे एहन पादुवग्रन्थ भेटगीक ?

हम—थन्य ही खट्टर कका। तेहन तेहन पौनिक गप्प कइ छियेक जे किनको ध्यानमे नहि आयन रैतक। तखन ई कह जे पण्डित लोकनि अपना बुझि सँ किछु सोचि कऽ नव आविष्कार कियेक नहि करैत छथि ?

खट्टर कका—एकर कारण हम एक वर कहने छी अहं प्रारम्भहि सँ लघु कीमुदीने अहं वरदराज भट्टाचार्य, अहं वरदराज भट्टाचार्य.....

बहिरु पण्डित की 'रम' किछु त सुनइ नहि पड़लैक, परन्तु साराश बुझा गेलैक। बजलाह—अहाँ लोकनि एहीकारण सँ पण्डितक उपहास करैत छी ? परन्तु पण्डित बिना कोनो छात्र नहि रहैत सकैत अछि।

खहर ककाक तंग... अरानी पण्डित... तिलका कम धोड़वे किछु करैत  
विद्यालय ? न नकली पण्डित... पण्डित पण्डित खोलवाक हेतु खहर झाक जन्म  
भयन कैल ।

पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...

खहर ककाक... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...  
विद्यालय भन्वपण्डित । अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...  
पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...

पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...  
पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित... अरानी पण्डित...

## गीताक मर्म

खहर कका भाई... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

अम कका...

खहर कका... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

खहर कका... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...  
गीताक मर्म... गीताक मर्म... गीताक मर्म...

अहिंसा-वैराग्य भरल छैक। परन्तु ओ न सेहन नि स्पृह भऽ कऽ मग्नक फंदन करय बजनाह जे की लोक ताड़क राखुन छोपत ? ही वादू, एक न ओहिना गाममे भान्ना-वर्षी धनकैत छै अछि। जी गीताक सान ओहि पर चढ़ि गेलैक त प्रत्येक गाम कुरुक्षेत्र बनि जैत। सँ हम हाथ ओड़ैत छिओह जे एखन गर्भ शांतिमे गोता नहि पढ़ैत। हे, जखन हमरा वयसक हेतव नखन सलेक हर्ज नहि।

हम कहलियेन्ह-खहर कका, भऽ सकैत अछि जे गीताकारक दोसरे अभिप्राय होइत।

खहर कका भऽ कऽ वज्रनाह-ही, दोसर अभिप्राय कौन होइत ओन ? स्वयं गीताकार न साक्षी बनि जऽ गेथे धरल हर्षण ? तखन मना किऐक जे कैलाशमे ? फलितशिल्प न ओ अर्जुन ! हम अहं के एतक ज्ञान गिराओल ई ईह नइकर धीक। संगार क्षणभंगुर धीक हस्तिनापुरक की शस्त्री ? एक दिन मरिमे मिलि जाइत ताहि खातिर अहं स्वयंकर कर किऐक वद एव न सांसारिक सुख तुच्छ धीक। अहं राज्यक मनोरथ छोड़ू। एहि खातिर बुद्ध पितामह ओ पुन्य आचार्य पर तीर धन्याय कि अहं के शोभा देन ? छोड़ू ई झण्डा और चल्तु हमरा संग तिलकय। पैर ने न लक दैसगत जे क्षत्रिय भऽ कऽ मैदान छोड़ि देतनि। परन्तु जे धर्मार्थ ज्ञानी शोध स निन्दा ओ प्रशंसा सँ विचलित नहि तइ छथि। परन्तु इ सभ न कहलशिल्प नहि, उनटे और उसका देलावल जे खूब मरि कर। हाथ रे बुद्धि

हम कहलियेन्ह खहर कका वड़का वड़का लोक गीताक प्रचार सँ विश्वशांति स्थापित करय चाहैत छथि और अहं के ओहिमे युद्धक वादश भेटैत अछि ?

खहर कका भूयकुराइन वज्रनाह-तो अस्ता सुनने छह ? कोना श्रेम पर ललकारा देन छैक ? आखिर मन करै सो होय, एकदिन सबको मरना होगा। और ओहि घोल पर कतका कति मरेत ओछ हमरा त गीतामे पैर ललकारा भेटैत अछि

अन्तवन्त इगे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः

अनाशिनोऽप्रभयस्य तस्माद् युद्धस्य भारत

परन्तु ही वादू ! कहियो त मरवाक अछि तँ एखने मरि जाइ-ई तकर हमार नहि जँचित अछि।

हम कहलियेन्ह-खहर कका, भगवानक कथ्य छैक जे जीवक कहियो नाश नहि होइत छैक।

खहर कका भाइ छनैत वज्रनाह-ही ई सभ परमारकाक बात छैक। जी जीवक नाश नहि होइ छैक न खूनक मजाय फोसी किऐक होइत छैक ? श्रीकृष्ण अर्जुन के त उपदेश दैत छथि जे-

यतासृजतासृष्टश्च नानुशोभन्ति संदिता

परन्तु जे न भिन्नस्थित दृष्टि सेनाह तखन ओ ज्ञान करैत छैक ? यदि यतासृष्ट देह दान सभ्य जे

न ज्ञायत श्रियम वा कदाचिन्म

नाय भूत्वा भवितु वा न भूय

अतो नित्य शाश्वतोऽयं प्राणः

न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

तखन फेर जगदध नें बदला नवक हेतु एतक प्रपञ्च किऐक स्थान गेल ? ओहि वाम ई दधन किऐक विमरि सेवेक जे

इ खानुदागमना मुहोदय विगतसूह

नियम भवताय ध्याय्योदीनेच्छता

जे ना एखन जना छह इ सभ दान नाह नृस्यलोक।

हम कहलियेन्ह-खहर कका प्रसिद्ध छैक न

सर्वोऽस्मिन्मयी गोदा शोभा गायत्र्यनंदन

यथा दत्त गृहीतोऽपि दत्त गीतामृत मदन

मग्नतः प्रोत्पद्यते मंथन कृष्ण भगवान इ गेना रूपे समुद्र वातर कय अर्जुन मदी दत्त के ज्ञान पुन प्रपञ्च

खहर कका विदेयन वज्रनाह-ही अर्जुन कोठ न दीन खनाह। तँ न श्रीकृष्ण वृत्तक मिक, लड़कन जनि रहलनि। तँ वृद्धता बरना गीतक न नैम गीताक रचना भल न। श्रीकृष्ण के लड़कन मज रहल। अर्जुन के मन्त्रक देन धन्य जे पहाडार एक गाम होइतनि। अर्जुन पर रोहन ने श्याम रंग चढ़ि गेलैक जे राजाक लोभ सभुन रक्षण समर कलांस

हम कहलियेन्ह-खहर कका, ज्ञान ज्ञानसकल भऽ युद्ध कैलनि, किऐक राज्यक लोभे गति

सदर कऽ जगदध के वज्रनाह-ही। हस्तिनापुरक गद्दी तोरे नाम तँ निशि मलभूत हो, जनासकल रहितथि त एक सँ चिमिओल भाइक शोषित सँ जे जेकर कर गिह दाय न हन्यथक राज्य। सीरा हेतु ननेक ने रक्तपात भन जे आइ पर्यन्त दिल्लीक किला लाल रंग भेल अछि।

हम कहलियेन्ह-खहर कका, कतक ज्ञान कहाँ लऽ ऐनियेक ?

खहर ककाक भाइ वज्रनाह-ही छलैक, भरलो लोटा एक छाकमे पाँच गेनाह। मग्नत सभ्यन होइत वज्रनाह-अरसमे श्रीकृष्ण के तईवाक रहैत और अर्जुन मोझे चपाने मल्लह। तँ कृष्ण के जे जे फुरैत गेलैक से कह। गेलाहिन-

इहं ज्ञान ने एव करह। आत्मा अमर ने बड़ करह। राज्य भेटतौह तँ युद्ध करह। धर्मय विचार न युद्ध करह। मोह लड़न जगदा हेनौह तँ युद्ध करह।

हम कहलियेन्ह-खहर कका, जे एतक वज्रनाह दूर नाह भेलैक, तखन एकके





प्रयोजन ? सोझा भयन कल ऐंठि दितऽथिह । हुनक इच्छाक आगी अर्जुनक  
इच्छा की ? तखन ई किनेक कहैत छथिह जे—

गोधैरशि तथा कुर

जे इच्छा हो से कल, और यदि यैह, त ओही पर रहिनिधि । मयन हऽ विनेक  
जे

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज

आहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः

‘अहौ सभदा धर्म छोड़ि हमरा शरणमे आवि जाह, हम अहाँ की सभ पाप स  
मुक्त कर देब । हो एना त कोनो पड़ा, परहित वा धर्मही ब्रजना भगवान  
कहतु एना ब्रजथि । और यदि भन मे ऐह कहव त तबह न अछारह त  
अध्याय पसरबक फल कज छैनैह । एक प्रकाशमे छैह ‘वन, शिक जे—

अहं निर्देश्यामि त्वां तस्मै च युष्मस्य धारण

‘हं ब्रज । हम अहाँ की आज्ञा देन छी, मैं सुख कर ।

हम कहनिधैह खड्ग कका कज न छैह जे अट्टारही अध्याय गीताक  
निजधे शिकर निजधे कर्म

खड्ग कका बजलाह हो पैह त मयराहु तम नहि नैह अछि । कर्म कनह  
निजधे भनेक छैह । दित इच्छाक प्ररम तखन नहि नैह । लोक जे काज  
करै छैह त कोनो ने जाना कामना त प्ररम भैह । समस्त कामनाक  
त्याग कऽ देव’ इहो त एकटा कामने भल ।

हम—खड्ग कका, अहाँ त सभ काम अपन नाग । तम देन छैह । प्ररम  
जीवनमुक्त की त कोनो कामना नहि रहैत छैह ।

खड्ग कका मुसकरइत बजलाह हो शरण त तब धरि गकरा मयन कन  
नहि भेटलाह अछि । और यदि केओ एहन जाय कर्म न हऽ पुरन निजधे त  
हम कर्म कऽ तब वन हुनका मल पर गमयैत छिथन । हुनकर ‘मयनप्रज्ञा  
कायम रहैत । हुनक दह उठना पर हुनका ई इच्छा छैह कि ताह त सुख  
छुनि जाय नदी किनरा काय केनो नोट । जीन नैह त कोनो हेनैह कि जाहि ?

हम गहरित होइ । कर्मालेख तखन अहं त मरिण्ड विश्राम ओउ त  
भगवान् अर्जुन की परतारि नेने छथेह ?

खड्ग कका टटा कऽ हंसि पड़लाह । एक चुटकी कतरा मूँहमे देन  
बजलाह—हौ, तौहू नहाठे छह ? ई सभदा कवि-कल्पना शिकर, कवि की कोनो  
आधार धाही । कोनो मयसजक प्ररम तय योगवाजक रचना केन छथि  
कोनो कुक्षेत्रक पुरिधाममे गीताक रचना केन छथि । नहि त ताही कहत त  
ममाराज युद्धक बीषो अट्टारह अध्याय गीता कहलाह आ मुनषाक अवकाश  
छलेक ? यावत ई अट्टारह अध्याय होइत छल नाथ त कि अट्टारही अध्याय

रान बैसल अहीरो छल । प्र मंजक कनमे कि गेहियो भागल छैनैह ?  
हो त सभ किछु नैह । कवि की कोनो साथे सख्ययोग ओ वैदिक पंडितारे  
तखन प्ररम त छैनैह ।

अहं कर्मालेख—खड्ग कका, तखन अहाँक दृष्टिमे गीता स कोनो लाभ  
नैह ।

खड्ग कका व्यंग्य करैत बजलाह—लाभ किएक ने ? एकटा लाभ त पैह  
जे एहि सँ कहनाह छैह—

हम नहिह होइत पुरुष तम से कर्म, हऽ कक

खड्ग कका बजलाह तखन गीताक उपद छैह—

यत्किंचिदधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

कामपन्नहेतुर्भू मा ते संगोऽस्त्वकार्णवा ।

अथान ‘अनासक्त भऽ कऽ कर्म करी, फलक आशा नहि राखी । काम आरक  
बहद की मुझक धेकी सँ कोन प्रयोजन । हो यदि एका ज्ञान मजदूर की भऽ  
जहक त कोनो कारखानामे छटना किऐ तैह ।

हम पुरुषनिधैह—और कोनो लाभ नहि ?

खड्ग कका विह्वल बजलाह—और लाभ पैह जे देशक जमख्य जे मुरसक  
पैह जहाँ निरन्तर बहल जा रहल अछि से कम भऽ जयत

हम मे नाग कहत छैह ?

खड्ग कका बजलाह तखन

कमण्योऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

तबमे सतनि निरोधक गुप्त भत्र भरल छैह जे प्रत्येक नयविद्वित दृष्टि की  
मरण गलक दानी । कर्म कर्म केन नाह, फलक आशा नहि राखी । एहिधाम  
फलक अछ नताह । अहं तैह कहत छैनैह कि नहि अथ नाग जैतीह । ... परन्तु  
नौ भातिज धिकरह । वही छोलि कऽ कोनो अहिअथ









नैयायिकजी गोडियाचन बजलाह-

कृतकर्मणा भोगादेश क्षय

खड्डर कका कहलथिन्ह-तखन औ नैयायिकजी ! हम पुछित छी जे देशमे  
खक लाग्य जाकेल अकाल सँ पीड़ित होइ छथि । हम किएक हुनकर सहायता  
करौ ? कोनो अवस्था पर बलात्कार होइ छन्हि । हम किएक दीड़ि औन्ह ?  
अब हमनो स्वयं फल भोगैत छथि । फल भोगि नेने ओतवा वंघन कटि जैतन्ह ।  
एवन हम वीधमे पड़ि कऽ मोक्षमे बाधक किण्वक नानि चीन्ह ।

नैयायिकजी की गो देखाइत देखि खड्डर कका मुडलथिन्ह-अच्छा एकटा त  
कऽ हमनो पदार्थ पर अकाल अविषयक अछि कि पावक ।

नैयायिकजी अविषयक पदार्थ अविषयक होइछ ।

खड्डर कका-जे मनुष्य पार करैत अछि तकरा त फल मनुष्यक शरीर नहि  
देखैत छी ।

नैयायिकजी-तब

खड्डर कका-तखन त मनुष्यक सख्या दिवानुदिन कम्प होनक धाही ?

नैयायिकजी-हँ, से त चाल ।

खड्डर कका-तखन मन-रहस्य मन्त्रा 'दिवादिदिन वाद' किएक रहल अछि ?

नैयायिकजी-हँ, तब नहि जुरलन्ह ।

खड्डर कका-तब मोक्षक दु व मुख्य भोग त पावे पुण्य में हाइत छैक ?

नैयायिकजी-तब नहि

खड्डर कका-तब स ई कीन्ह आइत नइक पूर्व जन्ममे भारी पाप कैने छल ?  
और जन्मन बाधक कइत भारी पुण्य कैने छल ? हमरा फोखारक माछ मध आइत  
जन्मन घल्लहवा कैने छल ? और मधुरक कण्डु सभ चन्द्रामण आ कैने छल ?  
नैयायिकजी की मोडियाचन बजलाह ।

खड्डर कका पुन पुननाइत देखि नैयायिकजी । अमेरिकन लोक दिनमें  
नीन नीन धेर भागन उड़ैत अछि और हमरा सभ कै मट्टी नहि जुड़ैत अछि ।  
आ सभ 'मन' हवा कऽ दहन मोड़ैत अछि और हमरा लोकनि साम सुरड़ैत  
झान रहल छ । नइक त अमेरिकन सभ पूर्वजन्मक धर्मन्मा थीक और हम  
अहाँ पुनन पावै शिकरौ । दोसर मोड़ 'मन' कऽ जे कह कानक बेसी धर्मन्मा  
अमेरिकनमे जा तऽ जन्म दिन छथि, उतम अविषयक पावै फल देहाक खानि  
वधायक रहल छल ।

नैयायिकजी की मोडियाचन बजलाह-देख, लोकक सिद्धान्त सँ  
धर्मन्मा माइत के भारि मोड़ जइत छैक

नैयायिकजी-तब नहि

खड्डर कका कहलथिन्ह-देख, गर्भाधानक प्रक्रिया त जनसे हैत शक्यतया  
जीवित कीटाणु विद्यमान रहे छथि । जिनका सुयोग भेटैत छैक से गर्भाशयन  
जा शरीर धारण करैत छथि ।

नैयायिकजी-हँ ।

खड्डर कका तखन त ओ धीवकीर मूख-शरीरधारी जीवन्मा विचार  
जन्म नेवाक पूर्ण जननेन्द्रियमे विचार करैत छथि ।

नैयायिकजी मुँह ताकय लगलथिन्ह ।

खड्डर कका कहलथिन्ह-तखन स ई मानय पड़ैत जे आइकनि जन्मना  
धर्मन्मा लोकनि मृत्युक उपरान्त अमेरिकन योनिमे जा कऽ वास करैत छथि ।

नैयायिकजी छिलभिला उठलाह । बजलाह-अहाँ त शास्त्रक उपर नहि  
छी । तखन जे ओतेक रास पुनर्जन्म ओ मोक्षक विवेचन कैल गेल छैक से फल  
छी । तखन जे ओतेक रास पुनर्जन्म ओ मोक्षक विवेचन कैल गेल छैक से फल

खड्डर कका ज्ञान भाव सँ उत्तर देलथिन्ह-फूलि कि राख से तऽ हम नहि  
कहब । परन्तु अहाँक मोक्ष अनोन धरि अवश्य अछि । जहि मोक्षमे पुण्य दु खक  
कोनो अनुभव नहि, से मोक्ष तऽ कऽ लोक की करत ? एक ओर मोक्ष त एतक  
दूर धरि कहि गेल छथि जे ओहन मोक्ष सँ जंगलमे शिवरथ जन्म नीक-

धरं बुद्धावनेऽरूपे भृगातन्व भजाम्यहम्

नहि वैश्विकीं मूर्धित प्रार्थयामि कदाचन

नैयायिकजी बजलाह-तखन गौतम औ कणाद मूर्ख छलाह ?

खड्डर कका कहलथिन्ह-सेहो हम नहि कहब । परन्तु आलायकक लोक  
छैक ।

मुक्तये सर्वजीवानो यः शिलात्वं प्रयच्छति ।

म एत गौतम प्रोक्त उलूकश्च तथाऽपरः ।

गौतम ओ कणाद दुइक अनुसार मोक्षक सर्वपाथर तर्क निश्चयतः भोजन  
से एक मोक्ष 'गौतम' (गड्ड) ओ दोसर मोक्ष 'उलूक' नाम सँ प्रसिद्ध अछि ।

नैयायिकजी की आय वेसीकान धरि अहिदाम राख समीपान नाहि मुझना  
गेलेन । बजलाह-एखन त विद्यालयक समय भऽ गेल । कियो दोसर दिन  
प्राय कऽ हम अहाँ सँ शास्त्रार्थ करब ।

खड्डर कका मुसकुराइत उत्तर देलथिन्ह-अवश्य करब । अहाँ लोकनि  
जन्मान निरा-परान्त पर अछरित होइ अछि । व्यभिचार अप नहि लागब ।  
से मूख नीक नहि नैयायिक विचार सँ कह, अपन विचार, नाहि नियम ।

नैयायिकजी तब पर हम कणादक खड्डर कका आइ नैयायिकजी  
दुहातम मान्य । परन्तु ई न कह से जे ओ की गोतहु आत्मान विषयक  
नहि अछि ?

खड्डर कका-आत्मा सँ नोकर की अभिप्राय ?

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...  
... को ...  
... को ...  
... को ...

हम ... को ...

## भगवानक चर्चा

आजि दिन खहर कका हमरा देखि पुछलन्हि—ही, आज बहुत दिन पर  
आनें आह। कहीं छिटकल गइ छल ?

हम कहलियेन्ह—खहर कका, अहाँ लग अवेत छल होइ जहि।

खहर कका—हो कियेक ?

हम—अहाँ भगवान की नहि मानैत छियेन्ह।

खहर कका—मुसकुराइत बजलाह—बुझल त भगवाने हमरा नहि मानैत छथि।

हम त हुनका भीसा कऽ ड बुझैत छियेन्ह।

हम—अहाँ की त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खहर कका—हँसो नहि, सरिपहुँ कहैत छिओह। देखल, लक्ष्मी ओ दरिद्र,  
दुहु भोग्य वस्तिन हम दरिद्रक पुत्र, ओ लक्ष्मीक स्वामी। तखन सन्धधमे  
पाडल की ?

हम खहर कका—अहाँ भगवानो सँ परिहरा करैत छियेन्ह परन्तु यदि  
भगवान नहि रहतथि त एतेक रासे सृष्टि कोना होइत ?

खहर कका—जेना नित्य होइत अछि। एही गाममे सदस्यो सृष्टिकर्ता मौजूद  
छथि। आन फाजमे लोक बुझियक रही, परन्तु एहि कार्यमे

हम खहर कका, अहाँ दोसरे दिस लऽ गेलहुँ। हमर तात्पर्य जे आदि  
सृष्टिकर्ता त मानहि पड़ल

खहर कका भाइक पूछिवा खोलैत बजलाह—ही, मानबामे हमरा एकी रती  
उत्तर नहि। परन्तु कनेक धारा कऽ कहल। ओ आदि पुरुष कहीं सँ ऐलाह ?  
जो कऽ सँ अर्द्ध पड़लाह ? अथवा अर्द्ध धात सँ सृजल छलाह और निरुद्ध  
हुन त पर एकएक सृष्टि करवाक प्रवृत्ति भोजेन्ह ? यदि सृष्टि कैलन्हि त कान  
सभ नहि ई करी जे अर्द्धमे कोनो स्त्री कें उत्पन्न करै स्थल पुत्रक कार्य  
सभ अर्द्ध कैलन्हि त हुनका गारिए पड़ि जाएतैन्ह। यदि आदिमे एकटा नर ओ  
एकटा नारी उत्पन्न कैलन्हि त दुहुमे भाइ बहिनक सम्बन्ध। ओ ओही सँ समस्त  
मानव गन्तव्य भोजे त गन्तव्य मनुष्य गारिए रहित थोक। तखन ककरा हाथक  
देखल गनि पड़ल जाय ?

हम कहलियेन्ह—खहर कका, अहाँक तर्कमे की सकत ? परन्तु आदि  
सृष्टिकर्ता कौन अवश्य छलन्हि।

खहर कका भाइ रगड़ैत बजलाह—वेस, मानि लेल जे ओ छलाह। परन्तु  
आय ओ की कऽ रहल छथि ? सृष्टिकर्ता जे कार्य छैक से त उसरोत्तर वृद्धि  
पर छैक। साधोसाध होअक होअ बच्चा जनमैत छैक तब ओ अर्द्धमे हुनका  
पड़लाक कोन प्रयोजन छैन्ह ? ओ ऐमा न करै दवाय ?

हम—खहर कका ओ कि काल करीत भऽ क देखियल छथि ? सचेव्यापी  
घटघटवासी थिकाह। तर्क ब्रह्ममय जगत

खहर कका—आय तँ वेदांत छोटय लगलाह। परन्तु जे अहाँ छल ताहि पर  
आपना पूर्ण विश्वास छीह ?

हम—अवश्य। हममे गुणमे मय्य बुद्धिमे अर्द्ध देखी रहै गेल।

खहर कका—चाह रे ब्रह्मज्ञानी। तखन हम पुछैत छी जे अर्द्ध वैश्याकमे वैशि  
कऽ पूजा कियेक नहि करैत छी ? चंदनक स्थानमे मल विनाश करै नयेत छी ?  
दुर्गाक स्थानमे मूर्गाक पूजा कियेक नहि करैत छी ? चंदीक स्थानमे रंटीक  
चरणामृत कियेक नहि पियैत छी ?

हम खहर कका—पवित्र ओ अपवित्रक अन्तर

खहर कका—इतैत बजलाह—तखन मय्य ब्रह्ममय छल। तखन पवित्र की और  
अपवित्र की ? यदि भगवान सरिपहुँ धरिपहुँ करी थिकाह त अर्द्धक घटमे सेरा  
वार करैत छथि, तखन चरशाला ओ मधुशालामे की अन्तर ?

हम—सुखपथू ओ वैश्यामे त अवश्य भेद छैक ?

खहर कका—भइयोतना पटकैत बजलाह—की भेद नैक ? वेद ब्रह्म कुलवधूक  
शरीरमे छथिन्ह, सेह ब्रह्म वैश्याक शरीरमे। और वेद ब्रह्म पारमे छथिन्ह सेह  
जायमे। तखन व्यर्थ एतेक रासे टिटिणा कियेक ?

हम—खहर कका, अहाँ सँ पार गएव कटिन। परन्तु भगवानक महिमा  
अनन्त छल। ओ अन्तही सन्निवेशमान करुणानिधान

खहर कका—ब्रह्म ब्रह्म एक वेद पुरुष राम ब्रह्म पुरुष लोह उद्विग्न।  
एक एकटा गवायक देह, हुनका अर्द्धायाँ किंकर्तव्य छलन्हि

हम—ओ सभक अभ्यन्तरमे वास करैत छथि। हम अहाँ जे किछु करैत छी  
से हुनके प्रेरणा सँ। कोनापि देवेन हृदिस्थितैत यथा निवृत्तोऽस्मि तथा करोमि।

खहर कका—वेस, त आव एकी पर रहलसँ नी लागल हार देखल त एक  
भइयोतना लमैवाह।

हम—हँ, लगा देख।

खहर कका—अच्छा त ई करम जखन भगवान सभ। इच्छा करैत छथि तखन  
त हमरा लोहनि हुनका हाथक कटापुतरी गेलहुँ, अना मन्त्र छ, जेना नाथय।

हम—आदिमे कोन मदत ?

[illegible] $r_2 \vdash \perp$ 

७. सने लगे स्वयं कष्ट भोग्यमा नथे । वरदाहः खरदार ! तो तुरंत वाज्जल पडल । ती लक्ष्मी दुःखान्तरि नथे । सतीति , सभदा भगवाने करवीन छवि घेत । पुत्र प्रदान याना ओ व्याधक साधने भाभा धारित छविह । वखन फेर साधु कधी हें उत्तम आर व्याध कधी हें अपम ? जे कहवाक हा स भगवान धी धर्मदा

हमारा गान्धिसाहित्य दक्षिण खूबतर चला था जहाँ इससे एक १५ फी. का काल बन जा  
 गया जो ठीक करके आर्ट से अपने प्रयोगों से कि भगवानक प्रेरणा है ? यदि  
 इस प्रकार प्रेरणा से न सत्यता हीन हो जाये तो अन्तः प्रेरणा से करें।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तिका आपको सहायता प्रदान करेगी।  
हम आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत करते हैं।  
हम आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत करते हैं।  
हम आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत करते हैं।

खरक का खसल अन्न कर है। भगवान् का भू-व्यापन अर्थः ३० नाना  
पर अर्थान्तरक। की गंध बल भगवान् का इच्छा है जोइ है।

244 3 3 3 3

[illegible]

अस फेर गोलियाइन दास खरूर कका बचकन बजे छल किछ भे । वंदि  
साथ गला मर सक दुखा म । छल तंगन । जैके हय्य ओ लगानस  
हाल । छल साधन मर भाव हय्य कल म । छल ।

माना  $f(x) = x^2 + 2x + 1$  और  $g(x) = x^2 + 1$ । तब  $f(x) + g(x)$  का मान ज्ञात करें।

[illegible]

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः, एतावन्ति वाणी । आत्मा काले मां कृतं तेन न मे कलहः  
भाग्यं वदन्त्यसि ।

२५४ कक्षा-नरदन म जनेक लोक मरलेमान कोशीक बाढि सँ तबाह होइन छथि ओ सब जापाए धिकारन । जी किनको बाघ पकड़ि कऽ चिलियैक त वृद्धी न भो जेवन पूवजसकृत पापक भाग कऽ रहल छथि ? नरदन राजा कँ क्षुध दित पायल ।

हम आप पाठ्य-क्रम को पढ़ना चाहते हैं।

खुदर ककर-शक्तिन ग्राहक मूलमे पहुँचाह किऐक ? और जौ पुण्य कर्म सँने  
ग्राहक न मन्यं साहि प्रभाप सँ वौंचि जइतहि । भगवान के दीइयाक कोन काग  
जुगन्य

મમ જીવન જીવન ભક્ત પર ખીંડ પડેલ છેને તંત્રન તંત્રન મગદાન ત્રય  
અવિ ૫૦, ૨૪૫ કરેન પ્રાંતિક । ઓ ભક્તાવત્માન ચિત્તરૂ ।

महूर ककः। अर्थात् पञ्चमनी शिकारु। जी सम्पदशी रहितव्य त शयरीक धेर  
किएक यगी पीठ गमिपेन + द्योधनक मेवा छोडि विदुरक साग किएक  
मूर्च। २ सुगन्ध एक पुरही चाउर देवाधन तकरा धरनामे त मुनका कोठा-  
मोफा बनि गनैक और इय जे बीस वर्ष धरि गित्य अशत छोटे कऽ पूजा  
कालिगन्ध मे एकटा हटपरी मेहि बनवा भलेन।

हम खड़ा कक्षा, दृष्टि भावना यस्य सिद्धिभवति तादृशी । जे हुनकर जतन भयान करीत ऐक लक्षण स्वीक कर भेटेन ऐक ।

इस प्रकार जयन्त ई कहह जे भगवान् बनिजो छथि। तबदा दाम देवीक  
नार्हि निराय में गयावू पर तीन कऽ द कह। तखन हुनका ओ दमड़ी साहमे  
तला ली ?

मन-गुण-कला । अ-ज्ञान-दशामर्थ-प्रति । हनकर-करुण-य-अन्त-नानि-सिद्ध ।

क्षेत्र कर्म-नखन गंगारम ने एलेक दुःख-नारिद्र्य छेक से दूर किएक ने  
करेन-प्रथम १ भाग शक दुःखिदा भवामनी एहि तब से मोक के पैर किएक  
रहल - ५ \*

४-१) लवक अपना कर्मक फल से वंश प्रप्त अंग

छात्र कक्षा-तन्त्रन श कर्म प्रधान भेल। भगवानक इच्छा बनो रहनेक  
 भा दूना करक चाहनाह त की कस शकैत छथि ? हमरा कर्म नहि किन राम  
 न दवाइ लही तै ? और जो कर्म छैल बहुत बल्लन फेर खुनकर एहमने कोन ?  
 ॥ कबीर काशिम मनिहें, रामक कोन नहारा ?

૨૫૧ ૧૨ જાન સત્વંશક્તિમાન છથિ :

છાંદો? કલ્પા ભગવત્ ગાના વગવેત ચરુતાહ ઘણાં. શાસ્ત્રન ઓ સંસારીક મનસ્તા  
કલ્પા કિષ્કિંકરે જે દુઃ કરેત છલિ? દુઃકરે વા કારણ બડ સર્વેત અલિ. એક ત  
૫ જે ઓ ચાલિતે નહિ છલિ. લેસર રૂ જે ચાલિત છલિ, પરમ્તુ કડ નહિ સર્વેત



छधि। जों नहि चहै छधि स निश्चय प्रशि। जे सनि कउ सके छधि न निर्मल  
छधि। तमून मुनका दयागु आ सयईक्षितमान गुनु एक संग कियव कहन  
छहुन ? एकर जवाब देह, नहि हा फेर हमर अशुधोदना उदत

हम—ख़ादर कका, अर्थात् अथाव १५ यइका यइका नहि दऽ सकैत छथि। हम की दऽ सकैत छी? परन्तु एतावा स अयश्च जे भगवानक माया अपरम्पार ऐन्ठ। इनका हेतु किछु असम्भव नहि। ओ जे चाहिये से कऽ सकै छथि।

खट्टर कथा देखे त हम एकटा पृष्ठित छिऔन । भगवान आत्महत्या कऽ सकैत छथि ?

हम-खड्डर लका, अहाँ केँ न दिनोदे रहैत अछि। परन्तु भगवान् परमात्मा  
किणैक ? जखन जखन पृथ्वी पर पापक वृद्धि होइत गैक, तखन तखन ओ अनक  
रक्षार्थ अवतार लैत छथि।

खहर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह । वज्रपाह-हौ, पाप की कहवै टैक ?  
हम किछु द्विपण होइत कहिभिरेन्ह-पाप थीक 'नंस' आ ह्याभनार । ई म  
सभ जनैत अछि ।

खट्टर कक्षा मूलधुरी उठाने । राजकाश-से तारा भगवान की पवित्र नदि  
ऐक ?

हम-कदापि नहि ।

खड़क का भाड़ घोरित दलधनक राखिन नय भूषित छिऔड न आदिकन  
नय कितोक वनीनकि ? सन के जान नख किएक दे धिन्ह ? धरियाइ के  
ओहन दीस किएक दलधनक ? राखिन अनेक एहर केएक धार देनधनक ?  
दिछइमे इक किएक दलधनक ? ककुर छिन्हइ, गीदइ, मुराइ, गिरइ,  
छिन्हइ सभ के शिकारी किएक वनीनधनक ? नी वरि हुनका आसंग पसिन्द  
छलेन, त नख के प्रवृत्ता जंयम कियेक दलधनक ? जेहेन स्वय आगि लगा  
कऽ पाजौ धेन नर, कऽ दीडी-ई कान दुदुमान्नी अल । और यदि हुनका  
राखित बड़इ पसिन्द छलेन त हय एख छिऔड जे चौरासी लाख योनिमे के  
टा योनि सनधन बना छेक ? एखो त नहि जो हुनका प्रसवये पंगद छलेन  
त सृष्टिक प्रक्रिया ओहन अश्लील किएक वनीनकि ? जो एखन बना छइ  
सभ बात नहि बड़बड़क ।

हम-छट्टर कंका, अहाँ त उनटे मंगा कहा दित दिऐक। तखन पाप पुण्यक भेदे की रहलिक ?

स्युद्ध कका विहंसित वज्रपादः—तो वेदान्तियो यमवह और पाप-दुष्यक भेदो रखवह। ई वनू कात कोना हैगीह ? यदि शर्ष चक्षस्यं जयतु, तखन त ई मानय

[illegible]

कर्म के सारवाक वाटे गरि भेंटै छैक ।

उत्तर-वक्र। वज्राल- तारा श्लोकाने अपने जालमें कैमि जाइत छु। एक  
व. उल्लेख नहि।

कर्म प्रधान विषय करि राखी,  
जो जस करहि सो तस पल चाख ।

उत्तर दोसर धेरै कुराहरू छैनन् ।

मोहने मन्द नं राम रचि राखु,  
काँ करि यत्न चलायहि साखा।

[illegible]

हम अपने कर्मों से ही अपने प्रत्यक्ष भोक्ता उत्पन्न कऽ देत छियेक जे  
आपके कर्मों से उत्पन्न भोक्ता हैं। यह भोक्ता आपकी कृपा से भगवान् छिये वा  
नहीं।

हमारा सभक सुष्टि कय अपन नीला कय मय प्रथे अन्धे हमर लकने हुनक सुष्टि कय अपन मनोविनोद कय न्मन होत

कम प्रकाश के क्षेत्रों में प्रकाश की तीव्रता बढ़ाने के लिए कि प्रकाश के फाल्गुनिक केंद्रों को सही में

सष्टर कक्षा विनोदपूर्वक तथा जोर 'वास्तविक' भगवान रोह छवि।  
 नैष्ठ भाग्यधाम में भगवान। 'भग' व्यापक 'भाग्य' निम्नस्थ। से जिनका  
 गतेक प्रवर राक्षस उपलब्ध है। न गान वरुण 'मयका' छवि। जिनका गति  
 'न ग' उल्लेखनीय मर्यादा को धृष्टि को करवाह।

हम कर्मचारी-संघ के रूप में २५वीं भाइयों तरंग में भगवानों की सेलिफेक।



खडर कका शिमकीरक नरुआ कूड़कूड़वैत वजलाह-ही ई राग रसात  
अनकर फुसिन्दक सेनु होइ ऐक । तो नरुआ ही कऽ कऽ राग रसात न  
महाभारत किाक होइत ? यदि रागचन्द्रतो रागन के धना कऽ जेता भिन्न, न  
लोककाने किाक मचेत ? जे ममसे आल मकरा सेनु इ राग रसात होइ ऐक  
जे अकल दुखर अछि - केर सन्तापन हो सभ मंगस्यतो भूत दानाभार सेन  
ऐक भवता धैर कऽ कऽ वैस जाइत अछि । नपुंसक मारि खा कऽ रसि जाइत  
अछि परन्तु जे सबल छथि, क्षामक छथि, विनकर दोसरे धर्म कहै ऐक  
हम हुनकर धर्म की रोइ छुन ।

खडर कका जहि से हुनक डोहरी होइत गेइ हुनक धम साइ ऐक ।  
रो जहि प्रकार होइत जनुक छी पर चोड़ कऽ, जवना पुनरा उदकक  
ओर से, या मनुकक ओर से । उदक गरम एकटा सेन करे छै । कोसी पड़  
अछि । सबल मुलमे से ए खुन करे छथि प ओर कलथन छथि बह प्रसन्न  
धर्म धिकैक ।

हम परन्तु व्यासजी न कर्म पलाय अछि न

अष्टादश पुराणपु व्यासस्य वचनदयम्

परंपकार पुण्याय पात्राय निजरीइतम्

जहि से दोसराक उपकार साइक से धम मोक जाहि से दोसरा के दुख हूँवैक  
से पाय छैक,

खडर कका शकल नरुआक स्याद गैत वजलाह ही याद वैत न । खन  
प्राणायाम के धम, ऊँर एन-पु-मगण के धमन शि कऽ नरुआ । हम नरु  
मान लेइ लीह से अनकर की उपकार होइक ? हम पैयाजक नरुआ खाएव ताहि  
से अनकर की विच्छेदक । और यदि दोसरा के आनन्द देव गैह धर्म, सखन  
न व्यभिचारी के धर्म कऽ कऽ दुखक धम ।

हम कहलौकाल-खडर कका अहाँ त तेहन तेहन सुनिन दन दिगक न धमन  
अस्तित्वे ओप भऽ जाय परी द्वार पतिन माकात अहाँ के मस्तिष्क कहैत भाइ ।

खडर कका शिखाइक बँधार साइक वजलाह ही ई कि हम अपना दिसा  
से कहैत छिऔत ? स्वयं कृपासि भऽ काँस रस दाय

अधना हस्तनारि सुदुर्लाभस्यभिनाग

भूचन धम प्रसज्येन वृषगी ह्यकारि

अर्थात् 'यदि दोसरा के आनन्द प्रदान करय तऽ धाक मदन । पुराणयोगमन  
करययला सोहो नर्मन्य' धिक अनकर मानिअने मकरा जे राग पर एहन एहन  
कलेक राखे शाखाई छैक । परन्तु से सभ ग्रन्थ न तोरा ओकनि देखवह नहि,  
सोहो खडर झा के पारि पढ़यहुन

हम नखन धम परीपकारमूलक नहि थीक ?

खडर कका अरिक्तायक वजला मूम सेन वजलाह तो एखन मेवा छह  
जखन पाणिपत्य तकर नखन वृजलकीक न

आष्टादश पुराणपु सट्टरस्य कथोदयम्

मित्रपकार पुण्याय पात्राय निजरीइतम्

जहिसे अपना उपकार हो गैह धर्म शक और जहिसे अपना दुख पहुँचय  
सैह पाय छैक

हमरा गुन नकीन दमि खडर कका वजलाह ही परगार्थक चयका चलैत  
ऐक से स्वार्थक श्री पर दान धूम कि ओहिना केन जाइ ऐक ? कोओ नान  
लेल करे अछि, कोओ स्वर्ग लेल राग प्रभाष मई ऐक, यदि स्वार्थक लेल  
निर्दोष जाइक न धर्मक दानी नुन किहा जाय न अनुभवी आधर्य लार्कनिक  
विद्वान्त ऐक अन्ना रहित धम

हम-खडर कका, अहाँ त लोक केँ सदाय जानमे धऽ दैत छिऐक । परन्तु  
हम कहत जे सभ जीव पर दया राखी वैह सभ से बड़का धम धिकैक ।

खडर कका ओलक सानामे जमीरी सेवो गरित वजलाह-कनेक वृद्ध कऽ  
कहैत । हमरा खाटमे उड़ीस भाग अछि । तकरा भरि सति अपन भोगित पोषक  
दिएक ? रतिमे बहुत रामे मछर करैत अछि, तकरा धुऔ गहि लगविएक ?  
नवानक गाछमे बिहने खोला मलमे अछि । तकरा नहि इविऐक । तोरा ककीक  
केशमे डोल परत ऐक । से जहि मरधि ? पुनरा घर से सति बहराइत अछि ।  
तकरा सँहिना सहमह करैत छोड़ि दिएक ? यदि मनुष्य सभ जीव पर दया करउ  
लागय, स जीवित रहि सकै जाइ ?

हम-खडर कका, अहाँक जिरहमे दय न मुश्किल । परन्तु जहाँ धरि भऽ  
सकय, अहिंसा ओ प्रेम ही काज लेनक थाही ।

खडर कका ओलक चटनी चखैत वजलाह-ही वैह बाग त हमरा वृद्धमे  
नहि अथै । अछि । हम मनुष्य के दयाक पाथ होइत अछि । गनि नैह, एकटा  
आतलधी तोरा घरमे ऐसि हाओ और आइनेमे दलाकर करय लागि जाओ  
त एहना शिथिले तोहर की कलंक हैवीह ? अकरा पंखा होइक लगयहीक ?  
छँड़-छरयन आरामे बड़ा देवहीक ? अन्तमे चलया काल जनउ सुपारी दऽ कऽ  
विदा करयहीक ?

हम कहलौकाल खडर कका अहाँ त तेहन वृजलन दऽ दैत छी जे हमर  
पूँर वंद मऽ जाइ अछि । परन्तु एतथा त अहाँ मानव जे सभ धर्मक मूल थीक  
इहिय दमन ।

खडर कका नन्तरिक खटमिट्टी धर्मत वजलाह ई यात जे परचारि गेह से

भारी अभावग्रस्त छल । कम त बुझैत गेल जे चरकर भोजन करव पथ होएक ओर  
जीव केँ कष्ट देनाह मैह अथवा धोखे

हम-परन्तु इन्द्रिय-सुख त अन्यन्न तुल्य यस्तु वीर । तं इन्द्रिय निग

खहर कका कौं काध उठि गेलैन्ह । धजनाह-नौ, पाँच डोमिय एहन अवगाह  
राम् धक त यिल्वमंगल जकाँ अखि फोड़ि लैह । जड़भरत ककाँ नाक कान  
मुनि कउ बेसि रहह ।

हम-हमारे अभिप्राय हैं जै ब्रह्मचर्य-पुथक

अर्थ ब्रह्म शम्भान् यथा । ब्रह्म नपुंसक लिंग छति । अत्र ब्रह्म शम्भो भवति । नपुंसकवत् आचरण । एतरे तौ धर्म कः कः वृद्धौ छ ?

हम-छहर कक्षा, मिखाथकीक अभि-

पदं विंदुपासेन जीवनं विन्दुधारणात् ।

एहर कका कइकि कः बजसाद अशुद्ध

जीवनं विंदुपात्तेन मरणं विंदुधारणात् ।

विदुषाते सैं जीवनक सृष्टि कहै छैक। यदि सभ अपन अपन विदु अपना कोषागारेमें रखबै रहि जाय त ई सृष्टि कोना चलत ? औ, धर्म ककरा क्यो ? जाहि सैं सृष्टिक धारण हो । आब तांरो कहत नै कहत धर्म की थीक ? विदुषा अथवा विदुषाते ?

हम-तखन प्रज्ञाचारी वनय मूर्द्धता शीक?

खरर कका दमदइ नभैत बज्जकाह—एहो अधमे जयजय नृपतिना दीक परम्पु  
जिनका सामर्थ्य होइक से दोहरा अर्थर द्रव्यवागं बर्न सकैत छथि । ब्रह्म स्वच्छ  
होइ छथि । तैं ब्रह्मचारीक अर्थ स्वच्छदाचारी । जेना सैंध्यासी । संन्य साधक बध  
जे सन्धक प्रकारे त्यास अथवा त्याग करथि । तैं ओ लोकनि गामार्निक बन्धन  
कें त्याग कऽ देत छथि । जेथान आरि धूरक गीमा नहि रहैत छथि । टट भज्जमे  
सौंद दूजह । तैं यहूत गोर । जयना नाथमे गास्वामी इन्द्र सदा जल्लि जेत छथि ।

हम— गोस्वामी'क हैं अर्थ हमरा नहि वझल छुअ ।

खंडर कका दृक्गरीडों द्वारा चरदैन यज्जल मोरा वुद्धने को छुंइ । अ  
लोकनि जे वैङ-कण्डनु रदैम एधि से कधीक प्रतीक धिक्कि । काके अकार  
पर ध्यान दहीक । तखन बुझा नैनीह भातिज दिक्क । वेसी खोनि के कोना  
कहिऔह ?

साधत काकी एक छिपली तरल माछ आगोमे धऽ गेलथिन्ह ।

खहर कक्षा वजनाह-रस, अथ गण्य जमि गेल । पृथक् क' पृथक् एह ?

राम कहलियेह—खुहूर कका, अहाँक त राभय गण अद्भुत होइ अछि ।  
यस्तु साधु संत त भगनी होइ धर्षि चाहि अँगुर कोषन पाँहि ॥ ७५ ॥ रित ७५ ॥

शहर कका एकटा खुब भुम एनइक स्वाद नील धजनाह—गी, एकटा चिना-

17. 7.

वाणिज्य एक नवम साम्राज्य

नं० २६ भयंका लै मय्यु उत्तमं

मे ई लोकनि स्वयंकर अपनार नान रहल अछि । रई छथि जे एहीदाम बेनी  
खानि कऽ गलि देन छथि । चार आंगुरक घिट्या फरनि  
मास लागी बनि जाइत छथि । परन्तु होजी ! ई कदाचित ओहूदाम नागा  
(धन्य) भऽ जाइन्ह तखम न ठिठियाएने रहि जैता ।

५५—खट्वर कका, एराक रासे योगी जं योग साधन जर मगध स

छाहर कथा-राभटा भागी निमिन । भोयक साधन दान । विचार क, दान  
विना 'युज' धातुक सनायता स 'भुज' धातुक भुज नो गरीत ।

१५ गन्तुं अर्हसि इति कश्चिद्विद्वान्वाच्यं पश्यन्मातुल्यं

खंड केका-परमात्म नहि, परात्मा । आत्माक ज्य अघन शरीर । परात्माक अर्थ नानक २११ । आहा दून्व, मिमन योग थीक । तेह शब्दक प्रकार स हो । म्हाग ७८५० १०५

॥ अज्ञानं यः प्रमुखात् अथ ज्ञानं तेन मुमुक्षुः । साक्षात् सं भाष्यं सं ज्ञानं  
प्रापयति ॥

खट्ट कक तुल्यवपुष तम मासक आगवादन लेन चक्रवर्त मयस अना  
मलक भो वृद्ध एव जे एते नक (नामिकाक रू दवावे) आन नक  
(यमक) ह्यो दोन ज्ञान । एनय कुडामनी (योग) तमने अन्त अर्धमने  
(कुडामना) मन्त्र भो जेनह एते काम खेचरो (पुत्र) सधन आदित्य  
अर्ध (आकाश विहारिणी परी) प्राप्त भऽ जैतीठ । जे एतियम नारी के नरकक  
उदामे अहेन ह्यो मेरो नाति खानिर स्वर्ग जाय चारैत हसि ।

કલમ-૧૪૬ પુનઃ સારો કે પુનઃગાથ હોઈને આંદો

खंड १ वंशिका से सभटा स्थानक निमित्त । रक्षाज लोकमें लोक भगवान के रक्षाफल चढ़ावन छैक । निबानथाक लोग से मिलन छैक । यदि लोक के निमित्त भइ गइक जे स्थानक फलक एक टाटक मात्र थीक त आइए सभटा लोक ओ पूजाक नाटक समाप्त भइ जाय । अखन हनुमछी धेतयावानी नहि त लोक नैमुझीमे हाथ दरा जय किणक करत ? यदि मृगयना नहि न नृगाछा ना किणक पहिरत ? यदि थोडशी नहि, त एकदशी किणैक करत ?

४५-अहा ! खड्डर कका ! जलंकारक चारा पढि गेल । आब अहाँ तरंगमे आबि गेलह ।

शिवर शब्दों (१५) जहाँ भी आओल माए मेने ऐलछिन्ह

खट्वा कक्षा यजमानह—एकन रंग पर जी नरग नहि चलय न हलद कक्षा ५२ २



हम कहलियेक-खड्डर कका गानि सभ जे कामक बेग प्रवर्तन थीक। परन्तु नोक गर्वादा त बान्हि सकैत अछि। जेना पतिव्रता स्त्री

'पतिव्रता'क नाम सुनैत खड्डर ककका ओहि घाँटि गजैक। बजलाह-हौ, पतिव्रता स्त्री सन संकीर्ण ओ स्वाधिन सँसारमे केओ नहि जाइ अछि।

पुन' अपन स्त्री केँ देखि कहलन्हि-अहाँ जाउ नै। एहिनाम लड़ भऽ कऽ गप्प की सुनै छी ?

हुनका गेला पर हम कहलियेक-खड्डर कका, अहाँक सभ दात आश्चर्य होइ अछि। जखन पतिव्रता अधनाह, तखन अहाँ स्त्री-जातिमे श्रेष्ठ ककरा बूझैत छियेक ?

खड्डर कका माछक काँट छोड़ैत बजलाह-वेध्या कौं।

हम-खड्डर कका, अहाँ केँ भाइ लागल अछि।

खड्डर कका बजलाह-हौ भाइ त हमरा लगने रहै अछि। भोरे हरिचरक माजूमक धर्मी भऽ कऽ जनखइ भेलैक अछि। परन्तु हम तौरा पुडैत छि-ओह जे यदि वेध्या सर्वश्रेष्ठ नहि रहैत त नित्य स्वर्गमे कोना निवारा करैत। यइका यइका धर्माला ताकनि पुण्यबन्ध भऽ गेल। उत्तर पुन' मर्त्य-लोकमे आदि जाइत छथि। हीण पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति। परन्तु रक्षा, उर्वशी, तिलोत्समा आदि ओतय अक्षय सुखक भोग करैत छथि। कोनो कुलधर्मी ई सौभाग्य प्राप्त छैक ?

हम-खड्डर कका, कहाँ कुलधर्मी ओ कहाँ वेध्या ? दुनूमे कलका अन्तर छैक ?

खड्डर कका जनया अन्तर एक झुकड़ी पानि ओ महानदीक धारामे। एक झुझुंटी थीक, दोसर उदारताक प्रतीक। जे केवल एक गोराक काज आएल, सेहो देह कोनो देह थीक ? सराही ओहि शरीर केँ, जे अनेकक काज आयब।

हम-खड्डर कका, एहि सभ बात सँ सतीत्व धर्म पर आधारित पहुँचत।

खड्डर कका हौ, सतीत्व-धर्म सँ बेसी प्रबल धार्मिक प्रकृति धर्म, जे सृष्टिक आदि-काल सँ चलि रहल छैक। सतीत्व त हमर लोहर दमाओल अछि।

हम-तखन पतिव्रता केँ अहाँ ईश्वरीय आज्ञा कऽ कऽ नहि बुझैत छियेक ?

खड्डर कका विहँसैत बजलाह-हौ, ईश्वर केँ सभ ठग कियेक छलैत छहुन ? हुनका कि एतयै काज छैक जे दुखीन लगने वैमल रक्षाथ ?

हम-तखन ई चलु चलल कोना ?

खड्डर कका प्रेम सँ रोहक सीरा सँ घी बाहर करैत बजलाह-हौ हमरा लोकनिक पुरुखा बलाक एलाह। बुद्धारियोमे केँ केँ टा विवाह कथ कऽ अनेक छलाह। कहाँ धरि दुवरी सभक रखदारी करिनिधि सँ किछु श्लोक बना कऽ पेर छानि देलथिन्ह। चार्वाक त साफ कहै छथि जे-

पातिप्रत्यादि संकेतः बुद्धिमद्बुद्धिः कृत  
रूपवीर्ययता सार्द्ध स्त्रीकलिमतच्छिन्नुभिः।

खड्डर कका एह सोचा पानि दिथकनि। पुन' बजलाह-असलमे मुझह त बजलाह-हौ पाँच। कवन छैक, मरि व्यभिचार थीक।

हम कहलियेक-खड्डर कका,

कजोरदार केर उनटे बानी, बरिसय केवल भीजय पानी।

तहाँ जे निश्चय नशा लागल अछि।

खड्डर कका गर्भाश्रितपूर्वक बजलाह-हौ, नशा त हमरा लगने रहैत अछि। परन्तु कनेक अपने विचारि कऽ देखह। व्यभिचारक अर्थ की। नियमक लपवात आय देखह जे स्वाभाविक नियम की धिकैक ? नर ओ मादाक संयोग नै स्वभावतः गर्भाश्रित भऽ, जइ छैक। गर्भिणीकाहेर ने शङ्काइ दजैवाक काज छैक न शय गूँचवाक। सिपूरान जे गदगदल त केवल आइधर धिकैक। स्त्री केँ भाँष्य जका नाथक भऽ, देखै छुन नहि ? एखन धरि पतिव्रता स्त्री अपन पति केँ नाम कहैत छथि। ओ प्राणी मान केँ मधुन कममे स्वतंत्रता छैक। केवल मानुष प्राणि नियमक जल्मधन कथ स्त्रीक पैरमे छान लगा दैत अछि। एही द्वारे हम पतिव्रताधन केँ व्यभिचार कहैत छियेक।

हम-खड्डर कका, एना कहबैक त नारी सती-धर्मक पालन नहि करत।

खड्डर कका बजलाह-हौ, सहीक अर्थ की ? उत्तम। उत्तम केँ थीक ? जे अपना आँकवाक मर्यादा कऽ। तुलसीदास कहै छथि-

विधि रद न होइ 'बगडाई' नारी

तन कहे प्री

पतिम स्वयन होइ मूँधरहि नारी

न नारी पुरुषक दास्य बजलाह-हौ मूँधर भऽ अपना केँ स्वतंत्र रखि स्वाभाविक नियमक पालन करत अछि। उत्तम वा सती कहाबय योग्य अछि। एहि द्वारे हम नशा केँ सबश्रेष्ठ नारी कऽ कऽ बुझैत छी। पतिव्रता स्त्री भुसकील छोड़ छथि।

हम-खड्डर कका, अहाँ हँसी करैत छी।

खड्डर कका से जाम नौ जे मुझह।

हम काकी दहने लऽ कऽ पहुँचि गेलथिन्ह।

हम पुछलियेक-खड्डर कका, अहाँ केँ स्वर्गमे विश्वास नहि अछि ?

खड्डर कका दही भात सनैत बजलाह-हौ, यदि को गोटा आनथ सँ आदि कऽ कनेक तखन न विश्वास होइत। परन्तु आइ धरि जे मेलाह से फिरि कऽ कहऽ नहि ऐलाह। और त लोकनि कहै छथि से गेने नहि छथि। तखन हुनका यागक कोन प्रतीति ?

हम खट्टर कका यदि पहिले किछु सत्त्व भक्ति रहितैक स एतना दिन सैं ई  
५। कोना बलि अवन

नावन काकी दू टा कृष्णभोग आम नेने प्पुधिरु।

खट्टर कका दही मानमे आमक रस गरित बजलाह—हो नत्तु वेर छेक जे  
नाक स पृथ्वी पर भोग सैं नृनि न्दि होइ छेक। नृपणक ज्ञाना ज्ञान नाह छेक।  
परन्तु जीवन परिमित, देहक शायन भन्ना, छोड़व दिनमे नृपणा पर्यन्त जाइ छेक।  
और कामना वनन—हेन छेक, नाचन शोग खतम भऽ जाइ छेक। एही डार—नोक  
कल्पना सै पूर्ण करे अछि। जे शिखना एहि जन्ममे नहि पूर्ण भेल सै मुइलाक  
बाद पूर्ण भऽ जाएत। एहन काम जाएव अहाँ जरा-मरण नहि। अजर अमर भऽ  
कऽ तब नैतक खेवाक हेतु मिष्टान्त पदार्थक हेतु अमृत, भोग कयवाक हेतु  
सुन्दरी और सभ्यता मुप्ते। एही केवा खन नाहि। सै खेती कयवाक जङ्गल, जे  
अति-धुरक सकरार, नै मासिला-मोकदमाक वखेइ। कम्पबृक्ष तर बैसि जाउ,  
जे इच्छा हो सै माडि गियऽ। रावही पीवाक मन छे, कामधेनु केँ कहि दिओक।  
विहार करवाक हो, असराक झुंडमे सकिवा जाउ। ई सुरालय की भेल  
श्वशुरालय भेल। बहिरि ताह सैं सतसगुना यक्षि कऽ। सासुरमे न एखेडा पोडशी  
पर मोरह अपन ओधकार भलेन छेक। परन्तु सासुर न सोरह हजार पोडशी अपन  
मारहनी अन्ध कयवाक हेतु लाडि रहैत छाथ। ओहि टाग कोणे सर समर  
रोकयवला भलि। सम सारिए सारि। और सभ अक्षय-वीवना! आव एहि सैं  
दऽ की वाही? परन्तु हो जी। एक यान बड्ड पडबड।

६। सै की, खट्टर कका?

खट्टर कका आमक वोभा लगवैत बजलाह—विचारि कऽ देखत लोक स्वर्ग  
मेने अगती भऽ जाइ अछि

हम—सै कोना खट्टर कका?

खट्टर कका मान लेह नै नोहर सन्तो पुरुषा स्वर्ग गेलथुन। भाय आही  
अपसरा गय केँ गा गे विहार भोग केँन लाइथुन। और नोहू नैवह त गैह करवह।  
सै हम कडे छिओह जे स्वर्ग मेने धर्म नष्ट भऽ जाय।

हम—खट्टर कका, अहाँ त नेहन यान वाजि धेनहुँ जे आव लोक केँ स्थान  
नेवामे मन भटकै जैनेक।

खट्टर कका भुसफुराइत बजलाह—हम कि अचुकत कहै छिओह?

हम कहलिऐक—खट्टर कका, आव हँसी नहि करु। हमर बुद्धि काज भलि  
करैत अछि। अहाँ काहु जे धर्म की वस्तु धीक।

खट्टर कका चूर जेग बजलाह—हो, मनस्त धर्मक रहस्य हम एके अलोकमे  
कनि दैन छिओह

भूत धर्मप्रपंचा, य धम्मदया पनेनाहि

कदाचित् स्वयंशरीया भलपान्तरना, धव

इपन कमजोर मरदान आ पत्नीक पृष्ठ स्तन, ई दूनु धम्म डोमरव मुइलमे  
नहि जाय—एही नृ। नचा राह धमाधनक प्रपंच रहल जेन कहि

हम विस्मित होइत पुछसिऐक—बहर कका ई ज्ञान अर्थक? टन कृति  
छेक। तखन अगती धर्म की धीक?

खट्टर कका (वहुरीन बजलाह) आसनी धर्मक परिभाषा—सत्त्वक हो।  
मोहाला गुन दखल। अर्थक भक्ति जैनीह

हम—हो ज्ञान सूत्र धिक्केक?

खट्टर कका बजलाह—ओ धिधापुलाक समझ पुजाराण करवा यय भलि  
छेक। काने मीमंसक सैं पृष्ठि कियै, हुन। ईकफार मोक्षमे न वनन एग सार  
पादि लगेने छयि। परन्तु हम सोझ सोझ अर्थ वुझे जे ज्ञान सै सृष्टिक कान  
आगी बड्डय सैह धर्म धीक। सै जिनकामे जतेक रामधे होइन्ह।

ई कहैत खट्टर कका अन्तयक हेतु उठि गेलाह

## पुरातन सभ्यता

ओंहि दिन खट्टर कच्छर सँ पुरानन सभ्यता पर गम्भ छिड़ गन

हम करनिऐक-देखु, खड्डर कका, ताहि दिनक अपि मुनि जेवन गन्तव्य  
जीवन व्यर्थात करयि! गुफा-कंदरामे रहि कंदमूल तथा नगम्या करयि। ब्रह्म  
मूर्तारमे उठि, नदीमे स्नान करय, चक्कल पहिगने, कमलभुमे गम भरने, कुटीमे  
आनि कुशमन पर गुरु देवक ध्यान करय। कदा पांच रात्राय नोचर  
छनैक? औखन बरि दाही ओ मेरुअ घस्र देखि कऽ नाक के भद्रा भजन  
भऽ जाइ छैक।

खट्टर कका भाइक पत्नी धोइत वजमसि—ही जगज्जे हज्जम तौह भईह  
तैं दाड़ी। धोयी नहि भेटेह, तैं कपाय हन नयक नहि हन। वसक अभावमे  
नानक भन्व अभावम कंद मूल नकरा उभावमे एकभुक्त या उपवास  
नोटक अभावमे कमचू में पानि पीवधि। धारीक अभावमे पाव पर खाधि  
अथवा हाथे पर भोजन करा करपाचें हन जांथ।

## ୫୫- ପରୀକ୍ଷା

खजूर-सिंघाड़ा कियेक खोजितनिधि ?

हम अं लोकनि धीनराग रहथि । इच्छा केँ जिताने रहथि ।

खहर फका—ई धारा हम नहीं मानवीह। हुनको लोकनि के सौख लक्ष्य नहीं छलैक। कूने जोहने भल फिरत हज्जह भो क अभयम लक्षण और तात्पर्य क अभयमे भस्म लगवैत लललह। 'द्वन्द्व क स्थानमे भूँ' क दृष्टिकोण बिपरीत छलैक। आभूषणक स्थानमे तुनसी वा मरुक्षक माला मण्डमनक स्थानमे मृत्तम, ई युग बदलै छैक फैशन बदलै छैक। धारन्त मनुष्यक जगना नहीं धरौ छैक।

हम-खड्ग कक्षा, ओहि युगक संस्कृति, दोसर छलंक ।

खट्वर कका-हो, ताहि दिन बारू काल अरण्ये अरण्य रहैक। तथान जंगली  
सम्भारगो जे मध वस्तु होइ छैक से सभा ताहि दिन छलैक। मृगजाल व्याघ्रचर्म,  
कुशासन, धूप, चंदन, यव, तिल, मधु, चमर, भोजपत्र। औखन, छपरक १५  
देखवाक हो त झारखंडमे जा कइ देखि आवह केन अनुमदवा केन मारियव  
थैह एकवस्त्रा नारी। यदि आइ राभटा मित्र गेबुन, जाही अ दहीक डकान

यं भः जाय त पुन व्रत सत्ययुगक दृश्य उपरिधत भः जाय । विनासितक  
घात सभ मुनि दत्तक, सभतरि मुनिप मुनि देखाइ पड़युक्त ।

हम—खट्टर कफ़ा, ओ लोकरनि केहन सपस्या करबि ?

खट्टर चक्रा मी, तपस्व्य स्वाइन करीं पेटक समख्या तपस्वा करतें छेक  
से हर जावने हो, या 'हर' अपने। कोक्षरि रीने दा नाक धन हाथ पेर जावीन  
वा धंटी डोळीने।

हम खुद को क्या, ओ लांजानि एकटा कीशेध बस्त्र पर जाइ फाटि नीत छलाह। ई कि साधारण बात हैक?

सहुर कका ही आधुनिक युवती ओहू से बेसी झिर्झम रहम पर जाइ के जीने लेत छथि आ ओक कम गणध्वनी घिकीर प्रदर्शनक हेतु जे ५७ उमरजेल जाइ ऐक से कष्ट कष्ट नहि बूझि पडै छैक।

हम-खट्टर कक्षा, ओ लोकनि अग्निहोत्री छत्वाह ।

खरक का विहसैन वजन कम हो, आडक दूध दान उपचार एक दोहरी या दोहरी ए प्रजनन उपनश्य गति छोलेक, तखन धुती रपीने रित छलान। स्वास्त पधामिनसाधन की एतक महत्त्व दऽ गेल छथि।

हम स्वयंवर कक्षाओं में आकाश आध्यात्मिक दृष्टि में अति करीब आना।

छद्म कथा तथा कऽ हंसि पड्याह । तम मुद्रलिंग-व्यङ्ग्य कथा, हैस्तम्भ  
किरेक ?

खुद्वन कृतो भावः पसदैन ध जलाप्र-ई वृषावाकः ॥ वहत पाठौ जय पड़नेह ।  
प्राचैदिक धामे पहिने हमरा भौकनिक पुख्खा अथिनक रहय नहि जनेन पुलाह

प्रत्यक्ष चक्षुषि न दृश्यते न च स्पर्शेन न च शब्देन न च गन्धेन न च रसोपलब्धम् ।  
 दान्तान्तरं वा चिच्छीरं दंष्ट्रिं धक्त्वि न भवति । कालक्रमेण अग्निरा आदि क्रयि कै  
 पन्ता लग्नैन्तु ते धर्षण स आग्नि उत्पन्न केन जा राकेछ ई श्वेद्या हाथमे अविनाशे  
 ओ नोफन्ति खूशी रौ नाचय लग्नाह । पहिने काँचे भास खाइ छमाह । आव पका  
 कऽ खाय लगलाह । आग्नि जीवित मांस (आम) ओ गुह्य मात (कष्य) दूदू के  
 शोन्कर स्पाध्य बना हैन्त, तैं ओकरा 'आमाद' ओ 'कष्याद' कति स्तुति करय  
 लगलाह । पहिने काँचे दद तिल मक्षण करैत छमाह । आव लावा ओरमाक ह्वाह  
 भय लगलैन्त । आँटा कै भुजि कऽ पुरोडाश बनावय लगलाह । पहिने जाङ्गी  
 टिदुरैत रक्षि, आव आग्नि तपयाक आनन्द भेटलैन्त । पत्रिने गन्धिक अन्धकारमे  
 भय सै नुकाहल रहथि । आव प्रकाशमे सभ फिट्टु सृजय लगलैन्त । तमसो मा  
 ज्योतिर्गमय गाध्य लगलाह, अग्नि क ज्वाला सै जंगली पशु हइकि कऽ दूर  
 पड़ा जाइन्त । ई सभ निश्चिन्त भऽ शूतय लगलाह । जखन एतेक उपकार  
 अग्निदेवता सैं होमय लगनैन्त तखन फीना ते हुनकर गुण गावधू ? तैं अग्नि-  
 देवताक गुणगान सैं वेद भरल अछि । अग्निमीले पुरोहितभू...







राख्य लागल। बादय मानये, जखन सभसँ बेसी जंगल रहै छैक, तखने कृषीपाठनक दिन कायन कैल गेल। बिना जन-कोनिक, केवल पुण्यक लोभ पर, सामूहिक रूप कइ प्रहसल लागल। वैदिक काल 'कुशल' कलावय जे कइ कदवाना निपुण हो। हो, नहि दिनक जेहि बाधकयक पितृमह रहथि।

हम खट्टर कका नाह दिन भाविध सत्कारक जेन सभल रहैक ?

खट्टर कका बजलाह-हो, ब्राह्मण लोकनि अपनै परनुई करय नाथि न अगियाएले पहुँचथि। वैदिकानरः प्रविशत्यतिथिब्राह्मणः १ अर्थात् ब्राह्मण देखना साक्षात् अग्निस्वरूप होइ छथि। तत्पर्यं न हुनका नुरान समिधा वा भोजन भेनक पाठ्य जे मूर्ख हुनका इच्छापूर्ण भाजन नहि करौनैक तकर धीयापूता मानवान भी समझा पुण्य नष्ट हो, जेनैक। इच्छापूर्वक पूजपशुस्य सर्वाङ्ग, एतद्वृत्तं पुरुषस्य नमोभवा, यस्यानयनं वर्तते ब्राह्मणे नृते। जहाँ १ शरीर अधम धीक, और ओही चुकत तकर पूर्ण हेतु एतेक प्रपंच। जखन शरीरक मनो महत्त्व नहि न कर समझ-सवा छिऐक करवेन छलाह ? हो, ई अकनि एक्को छारि पर नहि रहैत छलाह। अनका त उपदेश देनैक जे "अग्निदेवो भव" और अपना ओहिदाम अतिथि पहुँचि जइन्ह त खिमिया कइ ओकरा 'गोष्थ' कइनिह। बिकट पाहुन सँ ताहू दिन लोक डराइ छल।

हम-खट्टर कका आहि युगक मितान एहि युग सँ कियेक करैत छिऐक ? कसँ सत्ययुग, कसँ कलियुग।

खट्टर कका भाउमे मरीच मिनयन बजलाह-हो, सभ युगमे नोक वैद रहैत अछि। तखन परिस्थिति जेना नचवैत छैक तेना नचैत अछि। देखब, ऐनरेय ब्राह्मण मे लिखैत छैक

कलिः क्षयानी भवति संजितानस्तु ह्यपः

उत्तिष्ठन्प्रेता नयति कृतं संपद्यते चैव न॥

पंडित लोकनि एकर अर्थ लगैत छथि जे सत्ययुग चलैत छल कलियुग भूला आछि। परन्तु अरुनी अर्थ हम नारा दइत देत छिऔह सत्ययुगमे समर युद्धक समय स्वाच्छन्द विनश होलाह और सभ नहन प्रभूता लागल छलैक जे कतहु एकटाप रिधर भइ कइ नहि रहय देत छलैक। ओखन कजर सम कँ नहि देखैत छडीक ? रिडकें पछि ओ मानजाल गन बीजाएल फिरे अछि। प्रेतामे किछु स्थिर आधय लगलैक। जनक प्रभुति हर जेवम लगलाह। एक ठाम पैर जमय लगलैक। हापरमे नोक और सुभ्यस्त भेल। सुखक साधन बढ़लैक। नोक अंगममे अछि आधय लागल। और कलियुगमे त ऐश्वर्य ओ बिलासिनाक हई हिसाब नहि।

लेक निश्चिन्त भइ कइ सुलल अछि। एहि तरसँ मानव सभ्यताक समिध विकास भेल छैक।

हम खट्टर कका, ओही न विलक्षण अर्थ लगा देन छिऐक। पानु एतवा अचश्य मानय पड़त जे साहि दिन धर्मक प्रहार रहैक, जाइकाहि धनक महत्त्व छैक।

खट्टर कका हो अनक महत्त्व सभ दिन सँ छैक। आइयो अवधि स्वर्णक अवस्था न भव्यक पैर पर पदा देन जाइत छैक। तहू दिन सभ बात रहैक। हिरण्ययेन पावेण सत्यस्थापिहितं मुख्यम्।<sup>१</sup>

हम-खट्टर कका नाहि दिन देवताक पूजा-होइन्ह एखन धनिकक पूजा होइछ।

खट्टर कका भाउक गोला बनयैत बजलाह-हो, वैद धनिक, सैह देखता। देखताक अर्थ 'जे चमकैत रहय। नाहि दिनक राजा सभ रंग-विरंगक वस्त्रमे चमकैत रहथि। ईश्वर क अर्थ जकरा ऐश्वर्य होइक। 'नक्ष्मीपति'क अर्थ जकरा धरमे रूपति होइक। 'नारायण'क अर्थ जे जल-महलमे शयन करय। 'गुरुद्वारा'क अर्थ जे शीघ्रगामी यान पर चलय। 'प्रजापति'क अर्थ जे प्रजाक स्वामी हो। 'हर'क अर्थ जे कर या भोग्यकारी हरन करय। 'यमुर्भुज'क अर्थ जकर चाहुयत धारु दिस पसरल होइक। 'पंचमुख'क अर्थ जे पाँच मोटाक अंश छाय। हो, 'देवता'क अर्थ 'धनिक'।

हम-परन्तु सर्वप्रथम पूजा त-गणेशक होइ छैक ?

खट्टर कका हो गणेश'क अर्थ गण सा जनक सरदार। तहू दिनक दलपनि गजदंन होइत छलाह, और साधारण जनता मूय जहाँ हुनका तम पिछाइल छल। ई सभ रूपक धर्मिक।

खट्टर कका भाउक गोला के हाथ सँ चिकनवीन बजलाह-पछिने छोट-छोट दान रहैक। सँ गणेश सँ श्रीगणेश भेल। पाछा जखन राजा-राजा महलमे विहार करय लगलाह तखन अमरालय वा अप्सरालयमे विहार करय बला इन्द्र आदिक कल्पना कैल गेल। जखन एकछत्र सम्राट होमय लगलाह तखन एकमेवाद्वि द्वैत प्रथक कल्पना भेल। हो, देवता सभ सामान्यवादक प्रतीक बिकाह, वल सम्राज्यवादक।

हम-खट्टर कका नाहि दिन वर्णाश्रम धर्मक केहन सुन्दर व्यवस्था रहैक !

खट्टर कका भायन पाइ धारि बलाह-हो, ब्राह्मण के धर्म छलैक बल नहि। श्रमिक के मन छलैक, बुद्धि नहि। एक बात बात शास्त्र बाहर करैत छलाह, जे गण यान यानमे शस्त्र बाहर करैत छलाह

हम—आ सभ सिद्धान्त पर चलैत छलाह।

खट्टर कका भाइमे चीनी मिलवैत वजन्ताह सिद्धांत नाहीं राजाक कहल।  
प्राप्ति कैं सनक चहुँक त वचन गहि लहि। हर्षभय कैं सनक चहुँक त वचन  
छानि लेखि। दूनु संहने एकयगाह। ही, हम पूछैत छि जेहि जे यदि कौनों राजासे  
धनुष तोड़ि दितैक त जनक भद्रराज की करिनाथ ? यदि कौना चाहुँक त वचन  
कऽ दिऐक त शिशुपाल की करिनाथ ? ई सभ सनक कहल छलाह। मित्राचार्य कहल  
वताह। कौनो वचन छानि भिखारी भऽ आदि। कैं ओ जेन पर न भऽ देखि।  
एही लोकक पाछी कनेको राजा कहि मरलाह, कनेको रानी कहि मुड़योह। कनेको  
महल खंडर भऽ गेल। सौंसे इतिहास त एही सँ भरल आछे।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि धीर छलाह।

खट्टर कका—धीर नहि, चलाह कहल। ही, राजनीति, मर्यादा—सभदा मनुष्यक  
चरित्रओल छैक। जेहन समय होइक तेहन करैक चाही। कौनों सिद्धान्त एहन  
नहि छैक जहि पर ओखि मूनि कऽ लोक चलि सकय।

हम—परन्तु सत्ये नास्ति भयं क्वचित्।

खट्टर कका—ई फूसि बात चीक। सत्ये चाऽपि भयं क्वचित्। यदि  
रान्तिपातक रंगी के सत्य बात कहि देल जाइक त आतंके में जेकर प्राण छूटि  
जैतैक। जहि सँ प्राणे चलि जाय तेहन सिद्धान्त कौन काजक ?

हम—परन्तु नीतिहार कहै छथि जे अधिपत्याधिक फलम्

खट्टर कका—इहो अशुद्ध। यदि पैह सिद्धान्त मानि कऽ चलल जाय त भय  
ग्रस्त भऽ जाय।

हम—से कौना, खट्टर कका ?

खट्टर कका—‘जनेक बेसी तनेक फल’ तखन त चाउर कैं और एक घंटा  
वदकऽ लेल छाड़ि दिऐक ? दालिमे दोहर नोन धऽ दिऐक ? चारि सेर धूस उर  
कऽ पीयि जाइ ? आठ टा विवाह कऽ ली ? सोरह टा रत्नान जनमा ली ?  
ही, ई सभ वचन कहऽ सुनऽ लेल छोड़ छैक।

हम—नीतिक वचन छैक जे, ‘कालि करि सो आज कर आज करि मो अय्य।’

खट्टर कका—ही पैह सभ सनक कहबै छैक। हमरा कालि भरवाक कछि  
त आइए मरि जाइ ? कार्तिकमे पार्वण करवाक अछि त एही मास कऽ सा ?  
पाँच वर्षक बाद दधीक विवाह करवाक अछि से एही श्रद्धा मे कऽ दिऐक ?  
गायधाय वाक्ताभूमि दिस जाएथ से एखने मऽ आवी ? सभ काजमे अपन बुद्धि  
नगावक चानी। केवल सिद्धान्तक पाछी ओखि मूनि कऽ चलने सिद्धान्तो भेटव  
कछिन।

हम कहबिऐक—खट्टर कका असली बात त यिसरिए पैह। भोलयाथाक  
ओरिठाम अपट्याम कीर्तन भऽ रहल छैक। खलवेक ?

खट्टर कका यजन्ताह—ही, धीर बाधमे धीर-वायक भय सँ राति नीर  
कीर्तन कैल जाय त एकदा काने। परन्तु एखन दिनमे गायक बीच अपट्याम  
सँ कौन लभ ? हम ‘राम नाम’मे लागि जाएथ, ता एकर सभदा लताम होइ  
कऽ ली जायत।

हम—सदा कछर, अशुद्ध जवन सभा भऽ रहल छैक। सत्रह कंठर धूत आपन  
छैक।

खट्टर कका कपन मधु उल्लेख जजन्ताह—हय रे बुद्धिमान मर। ही जखन  
दिवासमाइ नहि छैक तखन हय पुरखा सभ धूत दऽ दऽ कऽ अग्नि कैं जीवित  
रखै जताह। आज तखन मधु ना कोसी माइने अग्नि पज्जि जाइन अछि तखन  
कयक कयक पुरखा कयक कौन प्रज्जिन ? र पि ससनि कय कयक पुरखा  
बलि गेल और हम सभ लाठी लऽ कऽ लकीर पी दे रहल छै। यु-वजनि गेन  
परिधिनि नदनि गेल, परन्तु हम प्राचीन संस्कृति क नाम पर नदल भऽनि, युद्ध  
मे न जगक रक्षा कऽ रहल छी।

खट्टर कका भऽ छानि कऽ दू धूत उत्सर्ग बै नकि और लोय जन्ताह कऽ  
धष्ट धष्ट जनि जताह।

## मिथिलाक संस्कृति

ओहिदिन खट्टर कका मखानक लावा फँकेत रहथि। हमरा हाथमे लेख बखि पुछलन्हि—ई की थिकीह ?

हम कहलियेन्ह—मिथिलाक संस्कृति पर एकटा निबंध तैयार कील अछि।

खट्टर कका बजलाह—किछु हमरी सुनावह।

हम कहलियेन्ह—पहिने राजर्षि जनक सँ प्रारम्भ कैने छियनि। ओ तेहन जीवन्मुक्त छलाह जे—

मिथिलायां प्रदीप्तायां न भे रहति किंचन।

एहन ब्रह्मज्ञान मिथिलेमे हो।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—हो, यह ब्रह्मज्ञान त हमरा सभ की ताहेय कऽ देखक। सीसे मिथिलामे आगि भे लागि जाउ संघिल भाइक भेलें धन्य मर।

हम—खट्टर कका, हुनका सँ ई शिक्षा भेटैत अछि जे पद्मपत्र हकाँ निर्मित रहबाक चाही।

खट्टर कका बजलाह—उपमा त यइइ सुन्दर। परन्तु एकरे दिन तेना रहि कऽ देखल त। यदि तौ कमलक पात जकी रहि आह त हम ऐखन जा कऽ तोरा बाड़ी सँ सभ टा भौटा लाँड़ लायी हो, पद्मपत्र बनि कऽ रहबल त लोक घराही पर्यन्त देखल कऽ लेतीह।

हम—परन्तु जनक त विदेह छलाह।

खट्टर कका—जौ सरिपहुँ विदेह रहितथि त जेहने राम तेहने रावण। तखन एतेक राखे धनुष-यज्ञ ओ सीता-स्वयंवर ठनबाक कोन काज छलैक ?

हम—अहाँ की त खंडनेमे रस भेटैत अछि। देखू, याज्ञवल्क्य अछि केहन आत्मज्ञानी छलाह !

खट्टर कका व्यंग्यपूर्णक बजलाह—तेहन आत्मज्ञानी छलाह जे मैथेयी ओ काल्यायनी, दू दू टा स्त्री रखैत छलाह एक आध्यात्मिक दोसर सांसारिक। हमरा त जे किछु छथि से एकर भार्या सुन्दरी वा दरी वा

हम—खट्टर कका, गार्गी ओ याज्ञवल्क्यक शास्त्रार्थ केहन उच्च स्तर पर छलैक ?

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—से तौ अपनहि पढ़ि कऽ देखि लैह। अखन गार्गी प्रश्न पुछैत पुछैत नाकोदम कऽ देखिन्ह, तखन अन्तमे याज्ञवल्क्य खिसिया कऽ कहलथिन्ह— 'आव बेसी पुछ्यै त माथ कटि कऽ नीचा खाँस

पडतीक।' हो, अपना देशक पंडित लोकनि स्त्री की एहिना झगड़ेन एतनाक अछि।

हम—परंच प्रश्नोत्तरीक विषय केहन गूढ़ छलैक।

खट्टर ककाक मखान निःशेष भऽ चुकल छलैक। हाथ मुन पोंचन बजलाह—हो, हमर छी चर्पक नलिनी अछि। ओ तोरा काकी की पुछय लगलैन्ह—नानी, ई पृथ्वी कयीपर छैक ? ई कहलथिन्ह—शेषनाग पर। ओ पुछलकैन्ह—शेषनाग कयी पर छथि ? ई कहलथिन्ह—कच्छप पर। ओ पुछलकैन्ह—कच्छप कयी पर छथि ? ई कहलथिन्ह—तोरा मूड़ी पर। हमरा एहि नलिनी नानी और गार्गी-याज्ञवल्क्यक सवादम कोनो विशेष ज्ञान नहि बुझन जाइछ।

हम खट्टर कका कर्तक बात कहुँ सिम दलियेक ? गार्गी आ मैथेयी केहन भारी विदुषी रहथि ?

खट्टर कका सुपारीक कतरा करैत बजलाह—हो, गार्गी मैथेयी की जेहन रहथि ? आइकालुक फौजियेया सड़की हुनका सिखा दिरैक।

हम खट्टर कका, अहाँ हमो करैत छ।

खट्टर कका तखन त परीक्षा भऽ कऽ दौंस लेल। भागीरथ युद्धक ई पुछलहुन जे सीता सभ चाकी अथवा गैला रान ? देखलैक ककरा बसी भौं अवे छैक। ई आगी की मिखन छल ?

हम—खट्टर कका ! अहाँ न हँसिये गभन बात ह्वा दैत छी। देखू मछन मिश्रक म्ही शरद्वता केहन दिइत रहथि जे शंकरानन्द जी प्रारम्भ कऽ जेनाथिन्ह।

खट्टर कका एक चुटकी कतरा मुँह मे दैत बजलाह—हो, बालग्राधारी सँ कतहु कामशास्त्रक चिन्म पुछल जाइक ? ई त सहिना गैल जेना केओ वैष्णव सँ माछक स्वाद पुछैक।

हम—ओ केहन आदर्श पत्नी रहथि ?

खट्टर कका दुरखा दिस तकैत बजलाह—देखल, एहन बात हमरा आइनाऽ मुनि बजिहऽ। हो, बृद्ध स्वामीक भान भर्दन कय युवा संन्यासीक गरमे विजयमाला देथ—ई कोनो नीक बात भेलैक। खट्टर मछन मिश्र घर छोड़ि संन्यासी भऽ गेलाह। यदि तोहर काकी एना करथुन्ह त एको दिन एहि घरमे याद भऽ सकै छैन्ह ? एही भंगछोटना लऽ कऽ कपार फोड़ि देबैन्ह और ओही साधुक संग गम्भक बाहर कऽ देखैन्ह। .....हँ, आगी बल्लह।

हम—धन्य छी, खट्टर कका ! आब हम की बाजू ? हुनका लोकानिक उच्च आदर्श छलैक ? एही मिथिलामे अथवा मिश्र सभ संन्यासी पाँचन भऽ गेल एहि जे राधा कृष्णवादीक साग खा कऽ रुग्ण कैरैन्ह किन्तु ककरो सँ किछु मँगलथिन्ह नहि।







धीक। साह पछवा दसात रही, परंच हमरा लोकनिक स्त्रीगण मुनरोखीगक दीप नहि मिझाय देसीह।

खड्डर कक्का विमुसेन बजलाह-है, औंचर तर नुकीने रहनीह परन्तु लंचर रहैह तखन ने। आय त संस्कृतोबला के सोख होइ ऐक जे बहू शलवारे परिसरि। रासु भरीत काहै छधिक, पुताहु माथ उधारि कऽ चले गइल। हुनको पुंछु औंकिन्ह त चट्टी परि कऽ चिनचार पर अछा फोड़िबन्ह। तखन कुनरोखीगक रक्षा के करैन्ह?

हम-तखन अझाक की विचार जे पुरनका रीति-नीति उठि जाय?

खड्डर कक्का-हो जकरा उठवाक हैतैक ते कि हमरा ओंचर पुठि कऽ उठत। टीक ओ मोठ कहिया पूछय आएल जे बोध ओ औंचर पूछय आओन? जकरा जैनाक होइ ऐक से स्वत घालि जाइत अछि जेना गोदना मिस्सी, खुदेया, चमकी। जकरा ऐवक होइ ऐक से स्वत आवि जाइत अछि जेना स्तो, याउडर, नेलपालिश ब्रेसरी। जखन स्वयं पंडित लोकनि सालमसाली पनही छोड़ि कऽ अंगरेजी जूता पहिरय लगलाह अछि तखन पंडिताइन सहदी फाड़ि कऽ पैंस्टिकक दूड़ी कियेक ने पहिरिबन्ह? हुनक बेटा टोप बेटा कऽ टोप कियेक ने लगौतैक? आय बूढ़ बुढ़ानुस माथ पटकि कऽ मरि जैलाह तथापि ने हुनक बेटा ठाढ़ीका थानन करैन्ह, ने पुनोहु पटमासी सिद्ध करबिन्ह छोटका पोता के रिद्ध रिद्धी पहिरा कऽ देखथु न जे पहिरे ऐक? पोती सँ तुसारी पुजवा कऽ देखथु न जे पुने ऐक? हो, ई पछवा विरडी सभदा पुरन पोथी पनझा के उधिया कऽ फेंकि देतीह। वैह युगधर्म यिकैक।

हम-खड्डर कक्का एहन भष्ट युग हमरे सभक समयमे कियेक आवि गेलैक?

खड्डर कक्का-हो सभ युगमे एहिना भटपर होइत ऐकैक अछि बुढ़वा बुढ़वा पंडित लोकनि जे मिर्जई पहिरैत छथि से मुसलमानी अमलदारीमे मिर्जा सभ पहिरैत छल। अबकन-धपकन कि वैदिक युगक वस्त्र ऐक? तांतेना आव नवका सोक अङ्गरेजी फोट पहिरैत अछि। ई धामपट्टा न होइत रहै ऐक

हम-परन्तु ई त धर्गराकरी सभ्यता भेल।

खड्डर कक्का-धर्गराकरी नहि कलमी कहह। कलमी आम बेसी पीठ होइ ऐक। त कलमी वस्तुक बेसी आदर होइ ऐक, कलमी फल, कलमी बहू कलमी बेरा। ही, बीजू सभ्यता ऐक केनय?

हम-परज्व हमरा सभक जे विशुद्ध संस्कृति

खड्डर कक्का भड़पोटना पटकैत बजलाह-ही, संस्कृति के अङ्गरेजी खेलक, संस्कृति के ईराणी खेलक, आयुर्वेद के डाक्टरी खेलक, पंडित के सहिब खेलक, अछिजल के कल खेलक, धर्मशास्त्रा के होटल खेलक भस्त्रा के रिद्धा खेलक,

धोड़ा के साइकिम खेलक, लक्षी के मालर खेलक, गंगवत के 'रानेगा खेलक, मंदिर के कल्ल खेलक, धूआ के परा' नरक तर के कल्ल खेलक मत के दिवदल खेलक, गज के मालर खेलक, गज के घाटी खेलक, भाङ के चाय खेलक, पतिव्रता के मेम खेलक, तथापि तौ विशुद्ध संस्कृतिक नाम अपिन्हि छह? तखन केने ऐक जे श्रीक गुरु भरीझा और नाक जखनहि छी।

हम तखन प्रत्यक्ष?

खड्डर कक्का उपाय छिभू नहि। चुपचाप देखैत चला ने जकरा में प्रयत्न होइ ऐक से तकरा मा' जाइ ऐक ई मन्थन्याय धिकैक। एहन पश्चिमक कौनि धमकल ऐक। काहिल हमरा लोकनिक भासा फलटत त भऽ सकै अछि जे एक दिन भइलमे फाटी अ' पेरिमे पछिया साड़ी पहुँचि जाय। इंग्लैंड वाली अरिकय रान्नि और अमेरिका वाली अदोरी भौटा। आयरलैंडमे अरिपन और आस्ट्रेलियामे अडिथक फर चलि जाय। फ्रांस फविकका पट्टय और जर्मनी यजुर्वेद चीन चानन करय और जापान जमउ परहरय, न्यूयार्कमे नचारी ओ मास्कोमे मनेश्यानी मुनाइ पडय। भ' सरे अछि ने एक दिन सँगे मसार समझाउनि पावय लगय। परन्तु ई न सामर्थ्यक ऊपर ऐक ज'ि वस्तुमे शक्ति हैतैक से अमरलती जकाँ पसरि जायत।

हम खड्डर कक्का लोक अपन प्राचीन आचार परीइ कऽ नदका चालि पर कियेक, तुनेन अछि?

खड्डर कक्का-हो, आचार होइक का औंचर। बेसी पुरान भऽ गेला उत्तर दक्षिण फूँझी पायल जाइत ऐक। तखन गुप्तसाइन भऽ जाइ ऐक। नवकाक स्वादे दोसर होइ ऐक। ताकमे अनन्तर साराक तेल-मसाला और बसी नदकार लगैत ऐक।

हमरा मूँह तकैत देखि खड्डर कक्का बजलाह-हो हमरा लोकनिक संस्कृतिक वषामालामे अ'क अर्थ होइ मुन अथवा घाउर आछलल। अथ 'अ' सँ अडा, अमजेट।

हम-तखन त किछु दिनमे पुरनका पर्वो त्योहार अंटे जाएत?

खड्डर कक्का विमुसेन बजलाह-हमरे न वैह चिन्ता होइ अछि। कताचित खीर-पुड़ी सौंभ बिजुकिना ने उठि जाय। मै हम नारा काक के निव्य बीठचन्द्र करय कहैत छियेह। जायत रील तावत व्याख्यानम्!

हम कहनिएह-खड्डर कक्का हमरा लोकनि केँ चाओ जे प्राणपण सँ अपना संस्कृति केँ बचेवाक चेष्टा करी।

खड्डर कक्का परिहासक स्वामे बजलाह-हो हमर त विचार होइ अछि जे आय चन्द्रमाकेँ जा कऽ दूने नय पति घन ओल जच 'चन्द्रमा झा पति'। तखन अपन संस्कृति दौंच सकैत अछि। ई पुच्छै त घुतकार भऽ गेलि।

[illegible]

खट्टर वक्ता माण्डव इ शरं वसन्ति नन्द्यः स्य गार्ग आचमनं चरैः।  
यज गच्छ-हो अह, 'जय भगवती' करम् । हमरा लोथनिक अशली सङ्कृति दम्  
धीक । जी ई सङ्कृति कायम रहि जाय त हम लाय्द येरि मिथिलाप कोरिउम  
नून ली । हमरा सोध गद्दि चार ।

## काव्यक रस

आज हीन सुहृद का यह प्रिय शशि हमरा संगमें एक व्यक्ति की दीख  
कल यजनाह-ही, ई सुलझी बला के अधुन ?

हम क्षान्तिपूर्वक ही कार्य लयि हमर सपर धियाह। अपन कदितो अहाँ के  
सुनायब चाहित छथि।

गुनायक चले।  
 गङ्गा यका राजाह - राई इभरा वसि ७५, कावना भुनकाक फूरमति नकि  
 अकि। ई जी ता तस्सी धरना जवन ओर ई पेशा भनगौन जाति न हय धौडक  
 सनि लेयिह।

हम कहलियेन्त—येरा स. सिंह रहौ ।

कार्यजी अपन 'प्रिया भिन्न' नाथर प्रेमकाय प्रारम्भ कैनि किन्तु कानि रानलाक उपरान्त खहर कका कल्लथिन्ह—औ, आव बंद करल

कविजी अकथकत्र कऽ पुउलायिन्ह-से कियेक ?

खट्टर ककड़ा बजलाह—हमरा फूसि नहि सुनल जाइ अछि !

कविजी-हम फुरि की कहल अछि ?

खट्टर कहे। तबछा पुमिए कहल आछ। भौं कहैत छी जे चालक पक्षी  
स्थानीक युद्ध छोटि और कोना पानि नहि पिशैत अछि। अहाँ धानक केँ कसिया  
पानि पिया कऽ देखने छिएक ?

कान्दजी नहि ।

स्वप्न कक्षा परन्तु रक्त त सिद्धिवाखनाभे देखने छिप्यै । ओ वारो मार  
तीसरो दिन पानि पिबैत अछि ।

कविजी ध्रुप भद्र गेहान। खहर फसा पुम कहलथिन्ह—औ कविजी 'अहाँ लिखे छी जे तयोर एही अग्नि-मक्षण कय पचा लैत अछि। अहाँ कहियो ककोर की अग्नि खोजा कय देखने छियेक ?

कविजी-नहि ।

साहू कक्का-तखन अहाँ कोना युझैत छिऐक जे ओकर टोर नहि दैकैत छैक ?

कविजी सुख ।

खहर ककरो- अहाँ लिखेत छी जे सकयल पक्षीक जोड़ा रातमे एक सग भलिए गछि सकयल छैछ। परन्तु हम थ एकके पिजड़ागे नर-मादा दूगू केँ रहैत देखने छिएक।

कविजी वृष्य ।



खट्टर कका वसन्ताह नखन तों वानि दैत रहह । हम कुचकीर्तन गुना दैत छिभौह ।

देखइ, कतहु सखी नायिका की शिक्षा दैत छिभन  
झोंपय कृच दरसाएय आध  
कतहु नायक की उपदेश दैत छिभन-

गनइत मोलिय हारा  
छले परसव कुच भारा  
नायिका चीयनक भार सैं अथग्रहमे छधि । कियेक त-  
उतत उरोज चिर झपकए, पुनि पुनि दरसाय  
जइए जसने गोअए चाहए, हिम गिरि ने मुकाय  
कतवो औचर चीपेति कऽ रखै छधि, तथापि-

तेइ उदराल कृच जोरा  
पलटि वेसाओन कनक कयोरा  
तखन ओ हाथ लऽ कऽ झैपैत छधि । ई देखि नायकक चित्त चंचल भऽ जाइ छैन-

करयुग पिहित पयोधर अंचल  
चंचल चित देखि भेला

कियेक त-

आध उरज मेरि आध औचर भरि तय धरि दगधे अनंग  
संयोगवश नायिकाक अंचल ससरि जाइ छैन । नायक कृतार्थ भऽ जाइ छधि-  
ता पुनि अपूरब देखल रै कुचयुग अरविद  
देखि कऽ मनमे सिहंता होइ छैन जे-

वाल पयोधर गिरिक सरोवर अनुपमिए अनुरागे  
कओन पुरुष कर परसए पाओल जे तनु जितल परामे  
रौभाग्यवश नायक की अनुकूल अवसर भेटि जाइ छैन,

औचर परसि पयोधर हेर  
जनम पंगु जनि भेटल सुमेरु  
जेना दरिद्र की स्वर्णकलश भेटि जाइत तहिना नायक करय लगीत छधि-

खनहिं वीर धर खनहिं चिकुर मह  
करए चाह कुच भंगे  
अन्तमे सफलता हाथ लगीत छैन-कुचकोरक तय कर गहि लेल  
सदुपरान्त -

पीन पयोधर नख रेख देल  
कनक कुभ लनि भगनहु भेला

सायका वीर जइ

मनस क- नख खन भरी  
जान स- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी

सायका वीर जइ

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

मनस क- नख खन भरी  
जान स- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

मनस क- नख खन भरी  
जान स- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी  
न- नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी

नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी  
नख खन भरी







३.५  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$  अर्थात् १/४ का प्रसरण होना सम्भव है।  
 ४. (०.५)

समूह को नए प्रारंभ के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, हमने एक विशेष प्रोग्राम शुरू किया है। इस प्रोग्राम के तहत, हम आपको अपने प्रारंभ के लिए आवश्यक सभी सामग्री प्रदान करेंगे।

महाराज कृष्ण के भक्त मनि लाल घण्टा गेलाह ? जी, सामान्य धर्मनक बाग।  
जाव ईह । अहं सत्य सन मन्यागी । भवानीभुजगल । मे भवानीक । अहं क  
मनि केन लालक

गुप्तोत्तरादिद्वयं वि० १०. भाष्यकारादिकामं निरूप्य  
मृत्तुर्वाक्यायत्तनार्थं च लिखोवनी स्थ ते रोमराजि भव भव  
तो एवम भावा। दाद अत्रो नोरा यद्वर्त्त सै करम माणि जाद्वर य पुनः। कम  
तुगतेः १

तम-खट्वर धर। अहाँ त महम दू दन्त दैत छी ओ हमर मुँस बंद भऽ जाइत अछि। भइर खानि कानो राग न प्रवि दिग। धन

खट्वा कक - शायन फर मचने दी। कर्मावर्ध ।  
 मृष्ट कक खान गगिता । खट्वा । खज्जाह - देखह, रोमायनीक  
 वर्णन मनि ठानक काने कनथ । खट्वा । खज्जाह देखीन प्रमि । एगोटा खज्जाह  
 कनेन खज्जाह -

निम्नलिखित का पद सही ढंग से पूरित करें।  
 यदि सही ढंग से पूरित नहीं किया गया तो सही ढंग से पूरित करें।  
 अर्थात् इस रोमाञ्चक कहानी में राक्षसों की दुर्भावना के कारण  
 गैर अर्थ।

दामर गोटा के अंतिम सुनिये, भोवी मृदेल है ।  
 दयाभरन भद्रयं समुत्पन्न  
 रसस्थ नृदि सन्निधे नावधान  
 अतः समुद्गच्छति नभिरधतो  
 विसरि रोमलि पिपीलिकावधि ।

अर्थात् ई रोमायणी मन्त्रि पीयूषः। ऊपर पयोधर देखि रसवृष्टिक अनुमान कथ नाभि रूपी विषय रैं घट्टीक धारी चलल अछि।

तेषां भेषा के ओ नानाक मय्यइ बुझि पड़ैत छैल ।  
 वन्यया राजकुमारीनकठिनोत्तुनी यहन्याः स्तनी  
 मय्य बामनस अपि घन जातिशि प्राप्नोति भंग द्विधा  
 तन्मय निपुणं रोमलतिकोदभेदापदेशादसौ  
 निस्पन्दस्फुटलोहश्रुतिकया संधानितो वैधस  
 नायिका कोमलांगी छथि । कति प्रदेश अत्यन्त कृश छैल । उपर पन पराधरक

भारत से हॉलुडू टूटि फूड दू खंड नहि भंड जाइन्ह तँ चीनमे लागल सिविलिज म  
वानिह देन गेल छैन्ह !

चारिम मोथा फें ओ तीर्थस्थान घुड़ना जाइ सैक !  
उचुड़स्तन पर्यतादघतरइ मंगेथ हाराबली  
रोमाली गवनीननोरजसविः सैथ कनिदनाजा  
जान नीर्निर्द सूर्यजनक यतनचौ संगम  
चन्द्रा मज्जनि नागनगाह ॥ ५ ॥ भूमे मज्जाक छुलान  
अधिका स्तन सै न हार ताचा लटकल बाछ सै स्तन में निक्कसनि गगन धाक  
थोर नीच रोमाबलीक देखा घमुनाक धार थीक । जहाँ हुनूक मंगन स नीधंगन  
प्रवृत्त थीक ।

पंचम गोल के आदिमे नरपण्य शिशु धौट जाइत छुन ।  
 मरुभवनवाचन । गङ्गा  
 राजमर्षिभवनमृदुमृदु ।  
 नरपण्य मानस्य देखेन ।  
 स्वामिभक्तिमहिमा । इति ।

अर्धान् कान्देशक तापकः सन् जन्तुनां शिरसि स्थितः सैव तन्मात्रेण रूपमेव प्रकट  
प्राप्तिः ।

सौ जलया धृष्टि नास इ लोकाने सोमान्जने तर्गोने ग्रथि ततथा होयरा  
वस्तुन जन्निन सिसादि = प्रेक्षक वस्तु उपकार होइत

अथ एतद् कृत्वा नान्यथापि शक्यं कथं प्रणम्य देवता होहं हृदि ।  
एतद् कृत्वा-ती म गात्रं रक्षितं न त्वोद्यमे राक्षसतां देवदेवतिथि ? देखल

मौलिक ध्यान कौन सा है ?  
 प्रत्येक में सम्पूर्ण नवम्बर के अन्तर्गत

पिराजम्बुकर दुध कृष्ण नालने  
मुरत कः भाटी पथकलि ते सारजम्बी

भजामस्त्या गौरीं नमपश्चिदिशोरीगविरतम् ।  
त्रिपा सन्दरीकं स्वर्त देवकन

गमरेतु प्रथमपुष्पिणीम्  
रुधिर विद नीलाश्वराम

॥३॥ सन्तरोमश्चरा !

आज्जं ब्रह्मचारिणी सरस्वती पर्यन्त कैं ई लोकनि नहि छोड़नदिन्ह ।  
वामकन - निहितरीषाम

७२८ संगीत-मार्गः ।

आज का दिन बहुत ही अच्छा है।

आज का दिन बहुत ही अच्छा है।

और कहीं धीरे से बगवानी ओक भजन कर रहा है।

जय जय है पाणिपत महाराज।

रघुनाथदास।

जिनका नाम है।

निशान निशान जो है।

हो, जिना कुछ है ई लक्ष्मी ध्यान में है।

हम खहर कका, यों लोकान पदम पावन। फिर कय नमन को करेन।

खहर कका-ही, जाहिदाम सौंदर्यक स्तन।

कुच-अन्यथास्तथा हृदयमपि ते चंचल।

तन्निदाम अन्यथा देवता कोन धार। ही वायु। सोमराज कवि मुकुन्द। कनेक।

खहर ककाक खाट तैयार भउ गेल छलैक।

वृद्धाह त कविक मुहमे लगाम नहि रहै छलैक। हमरा त भाज्यो हाइ।

पुनः बजलाह-लोकान मनरा न अपन मंहसे जगम नाइ।

फिर दुसिओक?

हम कलनिऐक-खहर कका मयितकान्यमे गेह गनया।

खहर कका चंचलाह-ही भक्तिमार्ग सुख होइ अछि।

रसकीर्तन करू गोपी-भीन-पयोधर दर्शन चंचल कर गृह-शांती।

आज मायन लोक सुखा जाइ अछि।

कहल जाइ छैक। भक्तिमार्गमे कलि कउ भनग।

रस में छलकैत अंगूर सुखा कउ मोनकला भउ जाइ।

कनेक। भक्तिमार्गमे कलि कउ भनग।

रस में छलकैत अंगूर सुखा कउ मोनकला भउ जाइ।

कनेक। भक्तिमार्गमे कलि कउ भनग।

रस में छलकैत अंगूर सुखा कउ मोनकला भउ जाइ।

## पुराणक चाशनी

खहर कका पुराण देखी। रसधि। हमरा रसि।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।

रस धीरानक-रसध्यान पर भागवत भउ।



गच्छन् न गच्छात्तु दे पाशा दैव मांस म दन्तु, एते हिना के चानि  
क म २५ भने नार ।

यम

मया गद्यान्तया भुर्गु राम्भ्याम म्नात्तु दृगा ।

प्रजग्मृर्गोपिक्का कणा योनिमाच्छाद्य राशिना ॥

सुन्दरी के नर नाथ से गुनाग के शैपने चमल हुनका पकड़िय ! परन्तु घृन्दायन  
द्विधाम न परि संजक साना करत नन नैवार गुनन सस्यन काज्यायन-

दुम्भममोदरी गच्छ के करिष्याति मधुधना

अर्ध मन्त्र नौडर नी गद्यान्तया हस्तर की कड, मन्त्र लुधि से दसैत भिष्टक !

इ मुनिर्वाहि राधाय कथ काममे परिणत भड गेनेक ।

श्रुता गहाय स राधा वभूव कामपीडिता

और तकरा दद न मय शोभिका विनि कम-

नमो ज्योतिर्गिरायन्त श्रीकृष्णार्पणम् ॥

भगवानक इच्छा पूर्ण करने वाली राधक इच्छा पूर्ण करने भार कथा  
मुनामिरा युद्धी लीलनिक इच्छा मन्त्र पूर्ण होऊन, तबि हनु पू का  
आशीवाद दैत गर्धन-

गङ्गाया कृपारी सोय न मृणुयन् वस्त्रं वाद

श्रीकृष्णमदश काल पुण्यन नागिन् श्रुत्य ।

अथान रादि दुगारी लोकनि भविष्यवक सन्त भय ई श्रुत्य मुनोय न निश्चय  
श्रीकृष्ण सन रसिया केओ भेदिए जडागन ।

हम खड्ग कका राधक के मितु गेभरे अभिप्राय हैनिक ।

खड्ग कका वज्रनाम तखन कनेक शोकसे चाशनी चाखि गैह ।

दुन प्रजग्मृर्ग कणा सुन्दर रासमन्त्रम्

पुर्नोन्तानिकानुक्त मन्त्रिणां मुनिननम् ।

काश्चिद्वृत्तौ कृष्ण मन्त्रोदय मन्त्रोदय ।

गुहीत्या श्रमो लक्ष्मणकृष्ण क लायन ।

काश्चिन्वशात् भूतयो दक्षकृष्ण मानयम् ।

अथ पीडयमान कृत्वा नमो च वरिषि ।

अथैव काश्चिन् प्रयाग न गङ्गाया मन्त्रयोर्मय

मन्त्राणि विविचाभ्यां कुरु प्रज्जलीयति ।

प्रीतिमक रनि समुत्तक तार । गङ्गा रधान । गोपगण नि संकल भव जेनि  
करन छुधि केओ भगवानक मन्त्रा गनि लैत गर्धन केओ पोताम्वर जोनि  
लैत छुधि केओ फल कड कोरमे चांटे जहान छुधि केओ छुधि कड  
कहा पर सपान भड जड छुधि केओ सप मिलि कड चगेयरो कड लैत छुधि केओ

केओ कड लैयन न समरा मानम सोंग काट, केओ कड छुधि केओ ज छुनी पर  
कड न छुधि केओ ई पुराणकार लोकनि रसिक-शिरमणि छुनाए

इह कवचक ज वंशच ललाटि-

आशुत फानातुरा कृष्ण वनादाकृष्ण कानुकात् ।

अथैव निजग्राह यमन च चक्रे ह ।

आशुत कामप्रयत्ना च नमन कृत्वा तु नाथवन्

नितर न पीतयन्तु मन्त्राय पुनरुत्त

पुनरुत्त गद वन्त्रात्तु मन्त्राय पुन पुन

मन्त्राय मन्त्राय च मन्त्राय मन्त्राय

कानुकात् कानुकात् मन्त्राय मन्त्राय

कानुकात् मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

हम खड्ग कका कवचक पद दृष्ट केओ लोके ।

खड्ग कका ली की काट लोके मुनिगण कामकला भय ललाट छुधि  
केओ छुधि केओ भगवान केओ कड मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

हम खड्ग कका मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

खड्ग कका मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
भार ललाट मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

अभिगाथा मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

हम खड्ग कका मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय  
मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

हम खड्ग कका मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय

खड्ग कका मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय मन्त्राय









खड्डर कका दल्लाह है ~~अन्वित~~ न नरन नरन छिन्न से दल्लाह मूलन  
योग्य नहि। देखह, पदमप्रापमे केहन वर्णन छैक ~~अन्वित~~ अन्वित अन्वित दल्लाह  
वना गीरीक समीप जाइ अछि। गीरी अपना सखी केँ सिखा पड़ा कऽ ओकर  
लग पटवैत छथिन्ह। जालंधर हुनका पकाडि लैत छैन्ह और लगे छैन्ह ~~अन्वित~~ अन्वित

तनी जालंधरः सखी वीर्य स प्रमुमोच ह

अन्वित अन्वित सखी वीर्य स प्रमुमोच ह

मटा हि छिन्न ~~अन्वित~~ अन्वित मटा हि छिन्न

अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित

धाइय कालमे जालंधर स्वयम्भूत भऽ अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित  
कहै छथिन्ह—अहाँ भन-एव नाह छी से हम वाइ ~~अन्वित~~ अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित  
छका दलहु हम गीरी नहि हुकर सखी बिकहै।

हम-खड्डर कका पुराणमे एहन एहन ~~अन्वित~~ अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित  
छैक?

खड्डर कका—है एहन एहन ~~अन्वित~~ अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित अन्वित  
मनक बिकार बाहर केन छथि। एही हरे एक आनन्दक प्रियिमा कऽ गति  
देने छैन्ह—

पौराणिकानां व्यभिचार-क्षयो

नरकनीय कृतिनि कृतानि

पुराणप्रति व्यभिचारजाः

तस्यापि पुत्र व्यभिचारजाः।

हम-खड्डर कका, ई सब देखि कऽ त रीत बूझि पड़ैत अछि जे पुराणमे यौन  
वासनाक समुद्र लहरा रहल अछि।

खड्डर कका—ताहिमे कोन संदेह? तेहन तेहन विकृत वासनाक उदाहरण  
छैक जे देखि कऽ गुप्ति रहि जैवह। एकटा ब्रह्मपुराणक उपाख्यान छैह—

सहस्र वर्षक युद्ध गीतमे अपनी सँ अधिक युद्ध अपत्यिनीक राग भोग करैत  
छथि। से देखि गीतमी कहैत छथिन्ह

अभिषिद्यस्व भार्यात्वं वृद्धां विगतस्तस्तीम्

नययौधनसम्पन्ना रम्यरूपा भदिष्यति।

ओहि गीतमी-सीधमे स्नान करैत बेसी गलितस्तनी वृद्धा पुन नययौधका सुन्दरी  
बनि जाइत छथि।

एक मछी नामक तरुणी बिथवा भेला पर वेश्या बनि जाइ छथि। ओ अपना  
युवा पुत्र सँ समागम करैत छथि।

मेने न पुत्रमात्मीयं स नपि न मातरम्

तदा समागमश्चाऽस्तिविना मातृपुत्रयो

और ई दोष कहैत छैन्ह मानमे सीधमे स्नान केना सँ

सर्वाधिक ~~अन्वित~~ अन्वित गीताजीमे जा कऽ गर्भपात कऽ अवैत छथि। ओ पाप-  
प्रसूतन ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

इहो मानमे पढ़ने ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

भागवतमे कुर पाप सहस्रभागवान् भव  
जाइ जाइ स हकक देहमे साहस टा छिड़ भऽ जाइ छैन्ह। पाछी गीतमी सीधमे  
मान केना ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

चलना ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ  
मान ~~अन्वित~~ अन्वित मानमे कोन न मान केना सँ

## दर्शन शास्त्रक रहस्य

खडुर कका भाइक नशामे चुत रूथि । हमरा माधमे ग्रन्थ देखि पुनर्जाकि है  
जा निजिह

माधुन नर दण्डि रय ।

खडुर कका मयपुरा जगज्ज दण्डि । हमरा पर चेतनपन सकार भर्त्ताह  
है ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

माधुन नर दण्डि रय ।

खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।

हम कहिनिह खडुर कका मयपुरा है जगि दण्डि कका म नृपति  
निजिह ।













हम सुष्टर कौकिल नाग...  
साशान कृष्ण आ मन्त्राणां प्रकाश। क...  
...समाप्त रसात्ता वरुण...

सुष्टर कौकिल नाग...  
तपुन करित...  
...ज। प्रशस्त्यस्य कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

हम देखते हैं सुष्टर कौकिल नाग...  
भविष्यत् कर्तुं सौ कर्तुं...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...

सुष्टर कौकिल नाग...  
...  
...कौकिल नाग...





कतहु मधुमकक स्त्री कै बूब होइ ऐक ।<sup>१</sup> कतहु गर्भ में शिशु झगड़ा करैत ऐक  
जे हन पट रौ नखे बहराएब ।<sup>२</sup> कतहु धोड़ी सँ गायक जन्म होइ ऐक ।<sup>३</sup> कतहु  
पुन अपना माय के जन्म दैत अछि ।<sup>४</sup> ओ सँतन तेहन उत्पत्यंग नान भरत ऐक  
जे गुलि काज नहि देखीह ।

हम शुद्ध साइन पुष्टिऐन्त खट्टर कका, एहन एहन बात वेदमें कोना  
ऐक ? ई सभ क्षेत्रक त ने धिकैक ?

खट्टर कका अँखि मूनेन वजलाह के जानय ? सोम रसक प्रवाहमे जिनका  
जे कुरेन्त में बाजि गलाह । हम अपना नरंगमे क्षेत्रक बात बाजि जाइ श्री से  
केओ पाजो नहि देत अछि । और ओ लोकनि ओ ब्रजि मेलाह से वेदवाक्य भऽ  
गेल ! ... ही, किमु अनट-विनट त ने वजना गेल अछि ?

हम कर्त्तव्यऐन्त खट्टर कका, फगुआक दिन सभ किछु माफ रहैत ऐक ।  
ताहूमे अहाँ कै ।

ताका काकी एक बार चाशनीदार छेनाक पानपुआ ओ मधुर नेने मधुधि  
गलीह । खट्टर कका उल्लासित भय वजलाह-देखद, अगली दृष्टक सामग्री आयि  
गेल ।

हागा भँह तकेन देखि करलन्हि ही, वैदिक घटक रहस्य की धिकैक ?  
रचनकुंड थीक उदरकुंडक प्रतीक । ह्याध्वनक उदाला जठराग्निनक सूचक थीक ।  
सिंध्याक अर्थ भोज्य पदार्थ । मैं कस्य देयाय हविना विशेम् ।<sup>५</sup> एहि प्रश्नक असली  
उत्तर हम सुझैत छी 'उदरदेयाय' ।

हम-परन्तु,.....

खट्टर कका-परन्तु की ? वैदिक ऋचिक मूने थीक मधुर भोजन । मधुर  
पर एत फूँत ऐक । एहनो और ताहू दिन । हमरा लोकनिक पूर्वज केँ कतहु  
भीठ गुल्लरो भेटि जाइन्ह त गीत ठछा देखि-

वरन् वै मधु विन्दति, वरन् स्थामुदुस्वरम् ।<sup>६</sup>

मधु वा धृत भेटि गेने आनन्द सँ नाचि उठयि-

मधुञ्चुत घृन्मिषु पुपूतम् ।<sup>७</sup>

मधु-वृक्ष, जल, स्थल, आकाश, सभमे मधुरे जोड़ने भेल फिरयि-

मधुरत्विः ।<sup>८</sup> यीर्वाचि आपो मधुमन्तो भवन्तु,..... ।<sup>९</sup>

संपूर्ण विषय हनका लोकनि केँ मधुरे-मधुर सुझैन्ह । आनन्द सँ मधु-पान  
कय मधु पाठ कैय-

१ ऋ० (११११३२४) । २ ऋ० (४११४) । ३ ऋ० (११२११२) । ४ ऋ० (१२१११३) ।

५ ऋ० (१०१२१५) । ६ ऐतरेय (३१३११५) । ७ ऋ० (४१५३१२) । ८ ऋ० (४१५३३) ।

मधुवाता प्रतायते । मधु हरन्ति सिन्धवा ।  
माध्वीनः सन्तु ओषधीः । मधु नक्षत्रमुतोषसो ।  
मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु धीरस्तु नः पिता ।  
मधुमान् नो वनस्पतिः । मधुमान् अस्तु सूर्यः ।  
माध्वीर्गायो भवन्तु नः ।<sup>१०</sup>

ही एहि देशमे मुहलो उत्तर पितर केँ ओम मधु मधु मधु कहि कऽ तृप्त  
कैल जाइ छैन्ह । एहन मधुर-प्रेमी जाति और केँ हैत ? वैश, आब मधुरेण  
समापयेत् करह ।

हम कर्त्तव्यऐन्त-खट्टर कका, आइकान्हि हारा मिष्टान्न वर्जित अछि

खट्टर कका वजलाह मिष्टान्ने तऽ मिष्टान्न थीक सिंह बाजि तऽ छेवज  
की ? धृष्टान्न ? हो मधुरेण समापयेत् एकर असली भाष्य बूझ छीक ? मधुरे  
खाइत-खाइत ई जीवन समाप्त कऽ दी । पैह हमरा लोकनिक पृथक्क मूलमंत्र  
थीक । यन्कि हम त एक अक्षर परिष्कारो कऽ देल छिऐक जे मधुरे न समापयेत  
अर्थात् मधुर भेटैत जाय त हाथ धारये नहि करी ।

ई कहि खट्टर कका संस्वर वेदपाठ करय लगलाह-

जिह्वा अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधुलकम्

मधुयन्त्रे निक्रमणं, मधुमन्त्रे पराचणम् ।

वाचा ददाति मधुमद् भूयासं मधुसंद्दुशम् ।<sup>११</sup>

पुन वजनाह-एकर अर्थ वृक्षलक्षिक ? वाचजीवन मधुर खाइत रही और  
मधुर नजैत रही । पैह प्रदक सभ सँ मधुर पत्र धिकैक । पैह, फगुआक प्रसाद  
पावह ।

## खट्टर ककाक टटका गप्प

एक दिन खट्टर कका ने धन भंडा रखा। पुर्णान्तेक-खट्टर कका, प्रसन्न थी ?

यजलाह-प्रसन्न की रहव ? सन्न थी। अपना देशक जानति देखिकऽ। सुजला, सुफला, शान्तिशान्ति भागि के हमरा लोकनि अजला, अफला, शान्तिशान्ति बना देनिऐक और शिक्षापात्र नेने संसारक अनी दाह छी-अन्न दहि।

हम-खट्टर कका, एना किएक भेलैक ?

खट्टर कका-ही, कारण बहुत प्राचीन छैक। वैदिक युग सँ हमरा लोकनिक शिक्षा पर द अक्षर बिसल अछि। देहि, देहि, देहि। पहिने इन्द्र वरुण केँ गोहारवैत छलिऐक, आव अमेरिका लस केँ। बिना उधारे हमरा लोकनिक इन्द्रार नहि।

हम-परन्तु उपनिषदक शिक्षा.....

खट्टर कका-ही उपनिषदो आपल त दैत अक्षर नेने। द द द अरानी अर्थ दया, दान, दमन तऽ कोटीक कानक पर गेल, केवल द अक्षर रहि गेल। देखि छह नहि, वेद, उपनिषद-दुहुक अन्तमे कोन अक्षर छैक ?

हम-परन्तु अपन देश त जगद्गुरु छल ?

खट्टर कका-तँ हम आइ सभ केँ अपन गुरुमंत्र सुना रहल छिएक-श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया दयम्। श्रिया देयम्। हिंसा देयम्। भिया दयम्। संविदया देयम्।

हम-खट्टर कका, हमरा लोकनि एना याचना करी त त उचित नहि।

खट्टर कका-ही, हमरा लोकनि केँ भगवाने गौरव ब्रति पड़ैत अछि। अदिए नै शिक्षाक शिक्षा भटल अछि की वेदान्ती की वेद, जे ऐनाम से बिभु धर्म केँ कण्ठ मे गटने। लोक कर्म केँ कुछ धर्म शिक्षा केँ मत्तव देयम् लागल। संपूर्ण देशमे शिक्षावृत्ति पसरि गेल। वेद सम्भार एखन धरि बनल अछि।

हम-खट्टर कका, एहि कृषिप्रधान देशमे

खट्टर कका-ही, कृषिप्रधान नहि। कृषिप्रधान कहल। हमरा लोकनि आकाशे दिग नकैत छी। आन आन देशक लोक पामास सँ पामि खरिब कऽ पटवैत अछि, नै दारवा पास आवा नक्षत्र बनल गेल छैक। हमरा लोकनि केँ हथिया नहि बरसल न प्रसन्नकैक आशा।

हम-खट्टर कका, आइकालि किछु दुराणल देखैत छी।

खट्टर कका-ही, मोटाएथ कथी पर ? घूत कोषे टा मे रहि गेल। नान प्रकारक व्यंजन आब वर्णमाना टा मे भेटैत अछि। तखन देखाएथ खर कडा पर बहराएल ?

हम-आब त निमंत्रणो उठल जाइत अछि।

खट्टर कका-निमंत्रण देत केँ ? कोटी ओ कोटा बना आव स्वयं कोटाक पाछाँ दौड़ रहल छल। गरम रूख केँ गरम खा गेल। तँ अनन्त मित्र कलाह से अनन्त मित्र भऽ गेलाह। अपने अन्न बिना ककल कानि रहल छल।

हम-तँ आव भोजक स्थानमे 'पार्टी' बनि गेल अछि।

खट्टर कका-भोजक अर्थ होइ छल 'भरि पेट'। 'पार्टी'क अर्थ 'भरि पेट' अर्थात् एक फक्का दासगोट ओ एकटा सिमारा। ई सिमारा ओहि कऽ गोट मे तरकारीक संहार कऽ देलक। पहिने अदेवाधे चरण अखारि कऽ एक बड़का मधुर अंगुलि भलि देत छल। आव आइइ चमच नीनी एक चुक गेल दध अ। तँ गोमूत्र-रंगक काका चुआ दैत अछि।

हम-हँ, आव त सभ ठाम 'टी'

खट्टर कका-ही, पीह छै त सभक टीक काटि लेलक। पहिने संजयक अर्थ छवैक अद्वारह टा बाटी, आव केवल 'टी' टा रहि गेलैक। आधुनिक मध्य भाग टार दामि दैन छैक, भफाइत इन्दोर तऽ कऽ। आचनगीयनक स्थानमे थायमानेय। पहिने विवाहमे टाका भेटैत छल, आव भेटै छैक 'दा दा'। टी पिया कऽ दा दा कऽ देनैह। अर्थात् टिन्कारी तऽ देनैह। आइकालि सभ्यता वृक्ष तऽ द अक्षर पर चलेत अछि-चेस्ट, टी, टेरिनि, टैजिस्टर ओ दा दा। म्वाइन लोक टिटिया रहल अछि।

हम-वास्तवमे संस्कृति बदलि गेलैक

खट्टर कका-ही, 'संस्कृति'क अर्थ बदलि गेलैक। सांस्कृतिक कार्य मान नाच एहि हिमात संस्कृतक पंडित महा शास्त्र छल जे वेदी पुनरुद्धार पहिने कऽ नवै अछि सैत संस्कृति 'वेदी' लोकनि माग केँ नम्मी (माना) कनेत अछि और वाप केँ पापा (पाप ?)। ई सभ बात पहिने गरि कहिबैक। आव कलचर कहै छैक। आव 'चाचा' केँ 'चा' पिया कऽ 'चा चा चा' डाम देखा देनैह।

हम-खट्टर कका, अहाँ त प्राचीन केँ धुमेन छनिऐक अह आ गुंनव केँ किरोक दुरीत छिएक ?

खट्टर कका-ही, हम कि ककरो नामे 'धर्मधन' लिख देन छिएक। हम पिनी मगर झा कलाधन तऽ जगदम्मा जय गेलैह। तँ एत दना दना दऽ गेल। 'अकर छवैक, अकर गवैक। तबक खवैक तबक गवैक।' तँ तँ तँ



मान गिर्वक ' ये पुरना के भाव सभ तह के १६ रागका मन्त्रन एते नयका पाइ बसारे नहि करत। तखन बजिदी ककरा दिस ?

हम-है, एखन त कठिन समस्या ...

खट्टर कका-हो, पहिले लोक फुरा फुरा के समस्या देखैत रहन । पुनि करैत छल आवत पूरा नान नहुन, जेन वस्तु सभ न मर मरवा बनि के । एक भऽ जइछ हल भेटिने नहि अछि समाधान का करव ? समाधान देखै नहि कऽ सकैत छी । कणन वन कऽ भाइ-अभबल विनयन करैत रहै । आवत त ठंडइयो छानब से कठिन।

हम-मे किऐक, खट्टर कका ?

खट्टर कका-हो बाणी पछल बलि गन। मरीच अकाश तहके गल राहा मरीच जकाँ छत्रवेध धारण कैत। जेवना वीरा मंग मिश्रायल बादामने वहेझक अँछी भिचा देत अछि। शाशित हंगलकी खेनाइ छाँड़े देलहु जे कतहु बध्नीक भेराड़ी ने फेटने हो।

हम खट्टर कका लोक एना देखनी किऐक करैत छैक ?

खट्टर कका-हो पहिले नार-सरहोमि एना टकैत छलैक। आवत सभ मर्त्यमर्क। सर्व भयन्तु सुखिन मे सर्वक स्थानम मारव वृद्धक, शंकराचार्य के सारे नाँव छैक से मरार के आगर कान नीनाइ हमन त त स्फाज सारे सर मुँजैत अछि।

हम-खट्टर कका, अहाँ के त सभ बातमे परिहासे रहैत अछि। किन्तु, ई नाना प्रकारक प्रबंध

खट्टर कका-हो गंदगी जलनि त दइ प्रवास के गति जे नान रागन के मभाप्त कऽ दी परन्तु नान के मेटा दनाह से किनकर नानाक सक्क छैक। जायत पंचक अस्तित्व रहैत, तावत प्रबंध कौना उठ सकैत अछि ? सर्व मिथ्याक अर्थ पैत अर्थ तह गल अछि जे आइकालि जे वस्तु भेटन अछि से सभ नकली छीछ। जे भाषण होइछ से सभ फूसि छीक।

हम अहाँ के लोकतन्त्रमे विश्वास नहि अछि ? बहुमत त मानसि पड़न।

खट्टर कका-हमरा ने लोकमे विश्वास अछि, ने तंत्रमे पहिले स्थानक मत चलै छलैक। आवत वृद्ध मन चले छैक जेम्हर यमी हाथ उठल। माघक कोनो मोल नहि ९९ विधान से ५०० मूर्खक मृत्यु बसी। एक टा सनी से दू टा कुलटाक मृत्यु अधिक खूदरा से धाँकक भाव बसी। ई लोकतंत्र भेल या धोक्कतंत्र ? वृद्ध त ई तंत्र दइए टा मंत्र पर ननिन अछि भोट जीर नोट

हम खट्टर कका, अहाँ वैशिओ हंसोमे गंभीर बात कहि दैत छिएक। एहि देशक लोक धर्म-नीति बिसरि गेल अछि।

खट्टर कका-हो एहि देशमे उदारताक काम नाँव छैक। किन्तु अर्थ बदलि गेल छैक।

हम-से कौना ?

खट्टर कका-देखह। चर्पटपंजरिका लैह।

अर्धयनर्ध भायव नित्यम्

एकर अर्थ ई १२५ 'लेक अर्थ अ' अर्थ' (यन) ओ तफरा प्राप्त करबाक निमित्त जनता 'अनर्थ' मऽ सकल तकर भायना नित्य करैत रह।

यायत् धितोपार्जनशक्तः

तायन् निजपरिवारे रत्न

पश्चात् जर्जरभूते देहे

दाता कोऽपि न पृच्छति मेहे।

एकर तात्पर्य ई जे जवन उपार्जन कऽ सकै छी नावो धरि परिवारमे आदर छैत। पाद्री तहर भेल पर धर्म क ले कल्पे नहि पूछा। ते जका टाका कमा सकै छी से एखने कामा लियऽ।

नारीस्तनभर गार्भिनिवेशम्

दृष्ट्वा मायापोषावेशम्

एतन्मांसवसावि धिकारम्

मनसि शिचारय वारवारम्

भज गोविन्दं भूयसो।

एकर भाषार्थ वृश्चलीक ? यवनी नारीक स्तन दोध कऽ पुरक मनमे मोहक आवेश आवि जाडन छैक। ओ स्तन मांसक लोइया मात्र थीक मायाक एहन लीला जे ओही मांस पर संगम चलेन छैक। ई दान ब्रह्मचारी शंकरक उपदेश छैक जे जेहि गोलाकार मर्यादितरूपी स्तनमहलपर मनमे वारवार विचार वा ध्यान करैत रह (जाहि से मत्त्वज्ञानक भानन्द भैत रहय) और जे लोकनि भूढमति वा मंदबुद्धि होथि से गोविन्द के भजयु।

हम-धन्य श्री, खट्टर कका। अहाँ के त सभ बातमे विनोद सुझैत अछि। उनटे गंगा बहा दैत छिएक।

खट्टर कका-हम कहैत छिएक कि आधुनिक मर्त्य कालक चेला लोकनि बहवैत छथुन ? हुनका लोकनिक सिद्ध न छैक जे चीला छूटल लेकिन चीली नहि छूटल। कदम्ब से फंदीभा धरि सभ प्रतीकें सुझैत छैक। इन्द्रियनिरोधक स्थानमे गर्भनिरोध करै छथि। भेल लाइन 'झाँड़ि तेहन रूप लाइन' ऐकनिक अछि जे भावी पीढ़ी कूपमे जा रहल अछि।

हम-वास्तवमे आव सभ बात उनटि रहल छैक।



खड्डर कका नाहिमे कोन सदेह। पहिने पुनजन्मक अणव मोड़न छलीक आव जन्मनिरोधक अणव हाइत अछि। आधुनिक नारी 'पुरुषो भव' क स्थानमे 'रूपवती भव' 'सुपथनी भव' आशीवाद चारैत छथि। पहिने स्वामी स्त्रीक माँग भरैत छलाह। आव स्त्री स्वास्तीक माँग पुरैत छथिन्ह। स्वयं कमा कऽ। कतिपय पति' मे 'न' अक्षरक दान सेहो भऽ जाइत छन्हि। पतिव्रत मेला दैला चिरैत छल, आव छैला वमन फिरैत अछि। छोडा सभ छोट पतिव्रत भोगन अछि, छोडी सभ खुद कसय लागति अछि। पहिने औनामासी सँ शुरू करै छल, आव गिनेमाजारी सँ। घिस प' पर धिअपट अँफिन रहैत छैक। रानी सभ लीडरानी बनि गेलीन्ह। राजनेत्री लार्कन अभिनत्रीक कान धाँटि रहल छथि। पहिने अपसरा होइ छलीन्ह, आव अपसरा होइ छथि। 'फेशन' ओ 'वैशन' दिनादेन बढ़न जाइत अछि। पतिव्रत नारी मंदिरमे माथ नथवेन छलीन्ह आवक नारी मध्ये पर मंदिर उठैत छथि। श्री, आव एहि युगक कैं के रोकि सकैत अछि?

हम-परन्तु बुद्ध, गाँधी ओ विनोबा

खड्डर कका-हौ, बुद्ध, गाँधी आ विनोबाक साधना कैं नाक दूर सँ प्रणाम करैत छैक। हम सँ अनन्त मेयक हेतु फिथक साधना होइ छथि। गीता गेलीह, गीतावाली ऐलीह। दुर्गा गेलीह। दुर्गा खाटे ऐलीह। लोक नूनन दिस चोड़ैत अछि। नृत्यसामान सँ बारी व्रजयन्त्रीसामानक अप होइ छैक। संगमने त्रिवेणी संगम सँ अधिक मेला देखल। केरना अकाल रहोक, सिनेमामे बिकाल बसैत भेटतौह। से लडि कऽ कोन अगाध बिकाल संध्य करत गऽ? हौ युगधर्म बदलि गेलैक। रीतिकानीन (वा धानुकानीन?) नादिका अमृतकल्प छलकवेरा छलीह। एहि अरीतिकालमे नादिकाक शान आनपीनक नोक पर चरैत छैक। विद्यार्पितक पद छैक-पीन पचोथर दुवरि गाला। आधुनिक फैशन देखिनथि स पीन काटि कऽ पिन बना दितऽथिन्ह।

हम-खड्डर कका, कतवा युग बदलीक, पैघक महत्त्व रहये करतैक।

खड्डर कका हौ, कतक राम पैघ सँ छोटक मध्य बगै होइ छैक। जेना छोटकी अणाची बड़की सँ तज होइ अछि। बड़की पड़ी दीशानम टाडन रहै अछि, छोटकी बड़ी सतत पहेँत पकड़न रहै छैक। प्रयसी प्रायशः श्रयसीक धाती पर सवार रहै छैक।

हम-खड्डर कका, एहि युगमे एतेक भ्रष्टाचार किऐक बड़ गेल छैक?

खड्डर कका हौ शरीरक जे अंग अधिरक्षित (विना हड्डीक) होइछ से बड़ दुनिवार। जेना चारि ओंगुरक जिह्वा से हमरा लोकनिक पूर्वज निग-वचनक अनुशासन सँ क्रिया कैं मर्दादिन रहै छलाह। आव त से यात व्याकरणे टा मे रहि गेल अछि। एहि आधुनिक युगमे, गणतंत्राज पद्धतिमे उभरानेकी व्यक्ति

कैं समान अधिकार भेटि गेल छैक। नखन स्वच्छंदता ओ भ्रष्टाचारक नग्न नृत्य नहि हो, त हो की?

हमरा मुँह नकीन देखि खड्डर कका बजलाह-हौ महाजनों येन गण स पधा। से द्वारा लोकनिक मरुजन' छथि पुरान-अमेरिका। हुनका लोक पर चलाए रहल छी और उपमे की?

हम-किछु गोटाक धिआर छैक जे नव ओ पाइय/य-दृष्टि समन्वय चाली। मध्यम मार्ग उत्तम होइछ

खड्डर कका चिरौंला बजलाह-हौ मध्यम कलाहु जान हो। यदि मध्यमे पकन कैल जाय, नखन त युवतीक पति शिक्षक जकाँ नाभिप्रे अटकल रहि जाथि। बीचोबीच। ने एक धान ऊपर, ने नीचा। तखन त माध्यमिक भूचवादे साथ लगलैक! .... तौ भानिज धिआह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह?

हम-खड्डर कका अहाँ कैं त सदिखन परिहासे रहैत अछि। ई कहू ओ सदाचारक रक्षा कोना छैत?

खड्डर कका-हौ, एकर देख छोरे भेटलीह अछि? खूप छूर कऽ रहल भादिनीक पलइ जकरा जीभ पर थडि चुकल छैक स उमिनल परेर दिस किऐक तकतैह? हौ, जखन मरधाइ परगना छाड़न खाइन मुमकयि उखड़ि जीतैक तखन अपने पुरान चाउरक भड़गिल जोहमे भेल फिरलौह। सेह पथ्य धीक सदाचार। हौ तदा मार पर न कैंओ नाहा रहि सकै अछि। जखन साधार भऽ जाइ अछि तखन सदाचार पर ऐनहि दुश्मन ना व्यर्थ दिना किऐक करै छह?

हम कहलैकैह खड्डर कका, ई महंगा देखि नऽ किछु फुरितहि ने अछि। प्रत्येक बस्तुक भाव

खड्डर कका बजलाह-हौ, पहिने कधि लोकनि भव-कथ भाव दैत छलाह। अणव गिनियाँ दऽ रहल जाछ। निच नबोन। आइ रूपिचामे श्री कनमा चाउर न काहि पाँच कनमा।

हम-खड्डर कका आव त चाउरक अभावमे अन्तुआक होनल शुनि रहल अछि।

खड्डर कका हौ, आव पार्टिआमे कलाकदक स्थानमे शकतकद भेटलीह। तेहन समय अर्थ रहल अछि, जे पर कैं बहुता लऽ कऽ महजक हेतैह। चाउरक अभावमे जेने लऽ कऽ दूषाक्षन हेतैह। दर्भक बदला पिदार नऽ कऽ चुमाओन हेतैह।

हम-बास्तवमे जहाँ पुष-बड़ीक धार बहैत छल, तहाँ

खड्डर कका तहाँ आव नदिओ सुखाएल जा रहल अछि। मेघो कैं जेना मूत्रायरोध भऽ गेल होइक।

हम-खट्टर कका, किधु पडितक कथा छिन्ह जे पत्रिने यज्ञक धुआँ उठैत छल, ताहि सँ वर्षा होइत छल।

खट्टर कका-हो, आइकन्हि पाखक लाख रेलक इंजिन ओ कारखानाक चिमनी सँ धुआँ उठैत रहै छैक। मशीनक कोन कथा जे मोकाक धुँह सँ धुआँ उठैत छैक। एतक धुआँ त कोनो घुम नहि उठैत छलैक। सखन न धुआँधार वर्षा होमक बाही ?

हम-किधु गोटे कहे छल जे लोकक पाप सँ मेघ नहि बरौन अछि।

खट्टर कका-हो, यदि मेघ की एतना बोध रहिनैक त चौरबजार पर दल खसवैत। से त होइ छै नहि। खट्टर ककाक इनार चटाएल जा रहल छैक। खेत खाय गवहा, मारि खाय जोलहा।

हम-खट्टर कका, पैह देश थीक जहाँ ताला लगाएव लोक थरस बुझैत छल।

खट्टर कका विहूँसैत दजलात हो ताला लगाएव त आइयो व्यर्थ बुझि पडैत अछि। जखन मौका घेठकैक, मोड़िए देत। एखन त धातुपाकमे सब सँ बेसी धुरादिगणक चलती छैक।

हम-एखन लोक पाइक हेतु कोन कर्म नहि करै अछि ?

खट्टर कका पाइ खातिर एहि झालझ-युग'मे थीक कोन कथा जे स्त्री पर्यन्त खोटी नहि घेठलौह।

हम आइकन्हि लोकक मनमे श्रान्ति नहि छैक। बात बातमे हड़ताल। खट्टर कका, ई हड़ताल पत्रिने छलैक ?

खट्टर कका-हो पत्रिने बनिया अन्याय करैत छलैक त राजाक दिस सँ हड़ताल होइक अर्थात् हाटमे ताला लागि जाइक। बाद त हर (महादेव)क मान जकाँ कखन कोन दात पर ताइव गाँव जाएत तकर ठेकान नहि। ई हड़ताल बूझ त गीता पर हरताल फेरि देलक।

हम-हो कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका-वेखह, भीलाक भूलमंत्र छैक-

कर्मण्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन।

एहि मुगक मंत्र भऽ गेलैक-

फलेष्वेवाधिकारस्तु मा कर्मणि कदाचन।

हम-आब त अफसर लोकनि की घेराव-पधराव होमय लगलैन्ह अछि। ई सब पत्रिने छलैक ?

खट्टर कका-हो, एक बेर अफसरक घेराव भेल छैक। गोकुलक ब्रजवाला लोकनि रथ की घेरि लेने रहलैन। आब त कूर से कूर शक्ति की घेरावक कूर सँ घेठमे केराव फूटय लगलैन्ह अछि। एहि देशमे अन्धक भरि हेतुन पधर लागल रहैत छलैक। तखन लोक लघार किएक मारलैक ? आब पधर उठि गेलैक।

पधराव आवि गेलैक। एकरा बाद नहि जानि की रूप आभोत-उठाय, पटकाव

हम-खट्टर कका, लोकक घेठ भरल रहलैक त एना नहि करल। आब खेती दिस।

खट्टर कका-हो खेती के कायदे ? जे हर जोतत छल से शहर दिस मुँह कैलक। थोड़ा बाओंग करैत छल से थोड़ा एठ करव लागल। थूट पछाड़ैत छल से थूट लगावय लागल। धुआँधर पाँसीर फऽ कुर्मी पर बिरत कि जग पर ? होकर स्त्री आब नाचलान गऽीम मेसारी कोना खेतक ? कृषक समुदाय कर्षण छाँड़ि आकर्षण दिस दीडल जा रहल अछि। समाज सँ खेतिहर वग मुक्त भऽ जाएत। रति जाएत केवल ट्रेक्टर ओ फट्टेक्टर।

हम-खट्टर कका, आब त अपनहि हाथ सँ खेती करव पडत।

खट्टर कका-हो, हम आब कलम छोड़ि खेती धरव, से पार लागत ? एक गाव अछि, से बलाघ भेल अछि। चार दिन ताचार छी। तहकाँक मरद सोव से धड़द पोसय। तखन बटाइ नहि लगावती त उपाये की ?

हम-परन्तु आब त बटाइ-पधा समाप्त भऽ रहल अछि।

खट्टर कका-तकर अर्थ जे खट्टर झ स्वयं जा कऽ महर रोपयु गऽ। बिहान लोकनि खेतमे जा कऽ देव सोइयु, नहि त देव लऽ कऽ अपन कपार फोड़यु।

हम-सरकारक नीति छन्ह-ज जोतव तकरे खेत।

खट्टर कका तखन त जे चरावय, नकर गाव ! जे मौकय तकरे गाड़ी। जे बहिशा उठावय, तकरे भार। जे भूहफा डोवत, तकरे कानयो। बाह २ बरस जफर ठेगा, तकर महिय।

हम-खट्टर कका, एखन सकारिताक युग छिन्ह

खट्टर कका-हो, युगक वजलाह जे वल इक जय लागल जा रहल अछि। हो, एक गोटाक भूमि दोसरक परिक्षन। इत पाखरक महदोग सँ लौटल खाइत भवैत अछि, एहिमे सरकारक श्री निः है। छैक ? घर-कनिच रंग थीधमे दशाजी।

हम-खट्टर कका, अखबारमे एकटा समाचार पढ़लैक जौह। संसार दरभंगा जिला दान भऽ गेल

खट्टर कका-हो, कनेक बुझा कऽ कहइ, ज ककरा दान कऽ देलकैक हम सब कतय गेलहुँ ?

हमारा मुँह तकैत देखि खट्टर कका दजलाह जे राजमे ई कहइ जे जिला छैक किनकर ? और ओ ककरा बामे दानधन ? बिब-सकल ? बिब-राज हरिश्चन्द्र जकाँ हुनको कोनो विश्वामित्र भोट गेलथिन्ह अछि। जिनका कृष्ण तिल गंगावन लऽ कऽ ...

हम से वान नहि टिक

खड्डर कका-तखन दान भनैक कोना ? यदि कवन इत्य मे होइक त धवन का वरिदता ? जाह, हम संपूर्ण दश दान कऽ देल ।

हम-खड्डर कका, किछु गोपल निखान ऐक जे व्यभिचर संपात उठा दैल जाय ।

खड्डर कका-तखन तऽ हमर लोखे छीनि लेल । धानि कथीने पिउब ? जकरा मन हितैक से उठा कऽ बाह्यभूमि दिस धलि आएल ।

हम-अहाँ न मम वन होखाम उठा दैल छिअक । किछु गानाक विचार छैक जे रामभूदिक रूप से खेनी हो ।

खड्डर कका-तखन त साझी पोखरि बला पारि भऽ जैतीह । हम पहीद्वार मुझ छैथ जे भारनैक न सभक जेनेक । हमर काम गन आछि न मरि भरु गऽ । हो साझीक सुइ साँघ पर यो न छैक । नवर धरि अपन अपन फुटत आथग नवैक नावन नाक शम कनौह । स्व इदनु हम दसौक तखन स्वद (घाम) क्रिमेक बहैनीह ? एखन हम अपना बाड़ीमे खटैल छी जे भौटा खाएब । यदि अति पर मीमे ममक, हक तऽ जहक तखन हमर काम कुरुर कटने आछि जे माथ पर पंधिया उठा कऽ उठा पटाएब । आइ धूर मेठा दसौक, लोक दल नग देतीह ।

हम-किछु दसौक मनव्य छैक जे उगादनक यमल रूप से विवरण कैल जाय ।

खड्डर कका-कनक सिला कऽ कनक हमरो बाड़ीने एकटा वेदना बहराएल । गाममे दू सतस व्यक्ति छथि । तखन त एको दऽ दाना हमरा भलि भवत गाममे मरि य अवधि नव । हम छथि तखन न केकरा दुइ रस किनवो भुँजी नहि जेनेक ।

हम-जकरा मम से वेशी आयसक न लोक नवन भेटैक ।

खड्डर कका-हो सी पक अमार से कानार तखन न फुटय कपार । गाछी खड्डर पर कबारा कुरुरि । भान भवत ककरो नकभेगहा । तखन मारि बजरि हैनेक ममम नहक । तऽ ककरो गहू दसौक, ककरो गन्धुनी ? सीरा पुर्न जाना ब-वह ? ममान विवरण नूतनान दऽ सुंदर भवत लगेन अछि परन्तु करय लगवत त रण मरि जैतीह ।

हम-किछु मोटक जाइना छैक जे मम भरिक भोजन एकदम धनय ।

खड्डर कका-तखन न और सगलस लागल । एखन अपना-अपना घरमे जकरा जे जुड़े छैक से खाइ अछि । केओ खुद्दी, केओ खोआ । केओ नेहा, केओ कोआ । जखन समदरका टोकना सड़नैक, तखन तऽ सभ बरानीए लगे जैतीह । खुद्दी-नेहा के खेतीह ? अल्लूओ ककरयमला हलुएक भाह करतीह । कनेको दू

रंग गोलेक कि हड़दंग गचा देतीह । जहाँ ककारो आगौ छाकी

सायब दुहलाम काको अधि कऽ कान्धिक-अहाँ देसल वैराय छाकीक गण उठा रहल छी, एकर धरम एक दाना खड्डर नहि अछि । भानस कथी से रन ।

खड्डर कका-हमरा दिस नाकि वजलाह देखे छहुन । इ उदयनाचार्यक स्त्री से कथ नहि अछि । हमर भग कऽ दनैक । हमर सभ टा तरंग मुखा गम ।

पुन काको दिस नाकि कऽ कान्धिक-वैराय टाका बजार करु और धन अजयकऽ, राख । भवियप्रमाणे निखन छैक जे क्षमिप्रम धरद्वार गवा हैन । अर्थात् जकरा भामे पक धन चारर सवैक सिंह राजा कलाआन से आइ हम अहाँ के घटेश्वरी रानी बना देब । नहि तऽ दुधव जे आइ एकादशीए सौक

हम-खड्डर कका-अहाँक गण गुनक हेतु चहु मे लोक उत्सुक अछि । यदि आज्ञा नऽ त किछु दटक गण छमा दी ।

खड्डर कका-हो ककाक दटक गण हम कओ गुननाह उकर केओ नहि दे गह । तखन छुछ वक्तवास केन कोन फल ? तखन न अन्न सभक राक्षकार दुर्धम । मधुक भाज हो तखन न मधुर गम जमय । हम भोजक आसन पर बैसह छी न लगे भलि जे मिहसन बा इन्द्रासन पर बैसन होइ । जखन सपगण रागुन्ना ओ सपगण गपड़ी हो तखन न सपगण राधक । कम से कम आठ टा रसगुल्ला पर गणपटक जमे छैक ।

हम-पन्तु भाइकालि त मेहन अकाल अछि ।

खड्डर कका-जे माक हल घेरम अछि । जखन माल नहि, त गाल कथी पर जावत ? देसल मम सहेन नाम पसारन अछि जे लोक विरोधान भऽ रहल अछि । यदि जल से धुकरा होइक तखन न नर माक गण हो तबको नवारा सुनने छह ?

हम-नहि, खड्डर कका !

खड्डर कका-तखन सुनह ।

कंदन भेल अन्हर औ बादा, कंदन भेल अन्हर !!

भान भेल दुर्लभ भारतमे, मयना धानक छेर ।

मकड़ मयानक कान कटे अछि अल्लूओ खरि छुवर ।

महुआ मिररिफ भाव विकसित जीरक भाव जनै ।

सभ से बड़ियक अन्न खेतीही रक्षा रूपये सर ।

टाका भेल टकानी, वस्तुक हेतु मयल अछि रेड़ ।

धर्मवला धक्का खाइल छथि, पापिक हाथ बटेर ।

सहसह अछि करैत सौं सन धोरवा सब केर ओर ।

वाच भर्तृहृदयः प्रथमः स यमः कालः न कोऽपि वरः  
 जनेना दृष्टः स लक्ष्मिः स्वयं जनेन कति विना दृष्टः  
 स त्वः । अहं तस्मिन् वरः श्रुत्वा भर्तृहृदये त्वः  
 जनेन वरः

सर्वकर्मणि प्रथमः खड्डरः जनेना इत्येव प्रथमः स त्वः नोऽपि वरः । एकस्मिन्  
 मन्त्रे जनेना

खड्डरः ककाक वरः स त्वः । सर्वकर्मणि प्रथमः खड्डरः जनेना इत्येव प्रथमः स त्वः नोऽपि वरः । एकस्मिन्  
 मन्त्रे जनेना

मीनः मन्त्रः स त्वः । नोऽपि वरः स त्वः नोऽपि वरः ।

सर्वकर्मणि प्रथमः खड्डरः जनेना इत्येव प्रथमः स त्वः नोऽपि वरः । एकस्मिन्

मन्त्रे जनेना सर्वकर्मणि प्रथमः खड्डरः जनेना इत्येव प्रथमः स त्वः नोऽपि वरः । एकस्मिन्  
 मन्त्रे जनेना

मीनः मन्त्रः स त्वः । नोऽपि वरः स त्वः नोऽपि वरः ।

सर्वकर्मणि प्रथमः खड्डरः जनेना इत्येव प्रथमः स त्वः नोऽपि वरः । एकस्मिन्  
 मन्त्रे जनेना



अब मैं तीन वर्ष पहिले 'मिथिला' नामक एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करने आकर प्रकाशक छलाह श्रीयुक्त बालू रामलाल शर्मा और सम्पादक मंडल में छलाह श्रीरत बाबू भोलालाल दास बी० ए० एल० बी० । एक दिन मध्य समय भोलाबाबू आबि छत पर सवार भऽ गेलाह जे 'मिथिला' के अन्तिम फर्मा अहाँक लेख वचक रुकल अछि छट द' किछु लिखि दिअोँक जे कारनिह छपि जाय । हमरा राति में जे किछु फुरल स लिखि-लिखि कय हुनका दर देलिअनिह । तेह भेल 'कन्यादान' के श्रीगणेश तकरा बाद अहय जाँहया भोलाबाबूक तगादा भल गेल आइक लिखि दिअ छ'इयन गेलहुँ चारि पाँच अंक धरि बैठ सिलसिला चलल ।

'कन्यादान' के किछु अश बहराउन समालोचनक विराही उठि गेल । केओ एकर प्रशंसक पुल बान्दय लगलाह त कआ कदारिक छ' में आकरा अहय लगलाह । किन्तु एक बात धरि अवश्य भेल । 'कन्यादान' जनमित प्रसिद्ध भऽ उठल । जे लोकनि एकर विराधी छलाह ताँकी लोकनि केँ आगाँक अश पढ़्याक हेतु जी कछमछ करब लगलैन ।

एहो समय 'मिथिला' शिथिल गय सूति रहलीह । कन्यादानोकेँ हेतु अतोचार पड़ि गेल । किन्तु 'कन्यादान' एतेक लोकप्रिय भऽ उठल छल जे ओकरा सम्बन्ध में प्रकाशकक नाम सँ चिट्ठी पर चिट्ठी आयब लागल । हुनका बाध्य भऽ एकरा पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक विचार करय पड़लैन । ओ हमसँ आगाँक अश मैगलनिह । जखन हमर एम० ए०क परीक्षा सम्पन्न भय गेल, तखन तीन वर्षक अटकल 'कन्यादान' केँ गाड़ी फेरि सभरल और अन्तर्गत स्तान पर पहुँच ठाढ़ भय गेल अछि । आज जे किछु अँडि से समझे अछि । हम पुस्तकक विषय में को कहूँ ? पुस्तक स्वयं अपना विषय में कहत ।

नदि ममाजक भोड़वा उपकार वा भनारजत एकरा सँ भऽ सकल त हम बुझब जे एकर अन्त निर्भरक नहि भेलैक ।

## समर्पण

जो समाज कन्या के जड़ पदार्थवत् शान कद दंबा में कुठित  
नहि हड़ित छधि

जाहि समाजक सूत्रधार नाकनि बालक के पड़ेवाक पाछाँ  
हजारक हजार पानि में बहबैत छधि और कन्याक  
हेतु चारि कैल्याक सिलेरो कीनम आवश्यक  
नहि मुसैत छधि

जाहि समाज में धी० ए० पास पतिक जीवन सगिनी  
ए बी पर्यन्त नहि जनैत छधिन्ह

जाहि समाज के दाम्पत्य-जीवनक गाढ़ी में सरकसिया  
घाड़क संग निरीह बाछी के जेतेन कनको  
ममता नहि लगैत छैन्ह

ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिस में  
ई पुस्तक सन्निध, सानुरोध ओ सभय  
समर्पित ।

—लेखक

कनेयाँमाइक ओरिआओन

[illegible]

तमस धर्मि गति । विषय हास्य दरी 'भारत दिवस' वसति किं व दिवस । अपर्य  
पक्षक लल जीव 'दिवस' । अद्वितीयक फलान्तर मे प्रथम कीर्तन हैक।

ए चर्चा है। गर्भत छिड़क जे अहराज्या सभ के शक्ति भीतरक किछु बिचार  
नहीं रहे। छेक

अनि एति आशु कवयः ॥ उक्तं ? यिदमपराणां जन्मार्थं अगस्त्यं हन्ति  
स आर अह्वयः पदं हन्ति यमहं पदं हन्ति पदं हन्ति हन्ति। हाक कर्तव्य  
॥ अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥  
अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥ अज्ञा नल लो ॥

दूर जाओ ! आंनों कोशों लोक संधि ! ज्यतिपीजी एकटा मांचयन के उठ  
अमलमिह । झम त ई हम लोकक बीच में कहयैहि । पकल 'सो' अक्षर नहि किन्तु  
कीनफाट भेले चाहय । दिन राति भातिफि झुण्ड म यैका । रह- धुमस करैत, बचहुन्तुक  
जम्है एकटा सखब आकरा तकिय, एहन कतहु लोक भयस ।

हस्तबलि में विनम्रों के अर्पित देखि सत्सङ्गकी झग दः आवस्यसङ्गक पैक  
कनुरिय आंगु के राखि देस/भक्त जहाँ मैं आ समाज बुध भय गलीह तहान सज्जकों  
न-पला गै वन के बराल कय धनजहाँ त अरु स चोहरा दिन बाँकी रहि गलेक  
आछ कथक रखत धरि किछु निषभय रहि । कथा की हीनक म राखि नहि पड़ैत  
आछ

अतः प्रमाण्यो अक्षर २ मिलितः । अग्रे हति किं एक भेल छह ? हँ कुंभ्या  
१) मिलित एक वतरी हततक ।

[illegible]

आवश्यानी से निम्नजाती में २५ में कम । भगवनी अतिमान बनने लखुनह ।  
अपन लखुनह नीक हाफनेह ते भयक अँखि में गल्लोह

लालकाकी ई ए बहिन । वह आरोग्यवादी दधुन । निवाह दान हाईन अपन  
पर दुः सम्पत्ति साधु से ई उपाय नहि दधुन । ज धन कान कऽ बंटी के  
गानलक । येन तम चाहत छी ।

एतवहि में दक्षिण भर में भरी घटा उल्ल । चारु काम में मध उमहि आएल ।  
धनुवहि काल में गजन तजनक भइ मुमामधर बुद्धि हास्य लगल । अल्लाक कानिया  
बुद्धि दखि लालकाका काजय लगल । की कहु बहिन । अहिना सभ घर में सहस्र  
भर बुद्धि छैक । एक हाथ बानहु निरु गति अछि । अपन घरहटक काज सम्पन्न  
कय जैतहि स विचरि म भदका पाँदु गेलन्ह । अब कबेर कान ताम होएतक ताही  
लेल झूझैत छी ।

एतवहि में दुनमुनकाकी लखन करैत हैफत हैतैत ओहि ठाम पहुँचलौह । अबैत  
दरी विचरि भयलौह । अदीरी ई हम पति पर सुखय देने छलैएक स सभ  
भाँजि गेलन्ह । हम की करियौक ?

ई सुनिहि लगलकाकी लाल पीयर होमय लागीह । बहिन मारी एहन बुद्धि  
के । गहन भयनहि लक । जैयन घटा दखलैएक तैयन ने सर्पट कय ठठा  
लितह । हाथ में कि मेहरो लगल छल ? सभ अदीरी भिजा कऽ तखन समाह नेन  
आयल छधि ।

फिर आवश्यानीके निरा लकि कए काजय लगलौह । कह न भन । अब कोन  
उपाय होएतक ? कतक सल सँ अदीरी खनन छलहुँ से सभ ई दुरि कए दलन्हि ।  
कत सँ आइ हिनका सुखयहु कहुनहि । हिनका मन लदगधर एहि वरापट्टा में  
नहि भटलैक । मरुआ भरि कधक लूर नहि छैन । बलि कनक कहलैएक जे  
अँचलक बासन में तन दय दिवीक । बस जमाइक लल धमलीक तल गइबोन रही  
भरलौ बरतम उझील दलन्हि ।

दुनमुनकाकी कान सँ कम सुनैत छलौह । तँ ई सभ गाननन हुका सुनवा  
म नहि एलैक । किन्तु क्रम में बुद्धि गल्लौह । हमर शिकयन बनि गलन अछि । जोर  
पटपटैत बिदा भनौह । सर । अछन न एकटा हमही लक छलैएक जे एतक ललकैत  
छधि ।

एतवहि में बिल्टी बजि उठल । छेया । ए छेया । दुनमुनकाकीक मुआ मे  
की भेलैन्ह ? सोस पोठ थाल लागल छैन ।

ताबत में बुद्धि हैतैत हैत । आवि कय काजयबौक । थान लगलैन्ह स्वाइत ।

१२ / क बदान

गत छनौह बाड़ी मे सुनिग लइह । पंक बनि दुरा सुनिग के दू बाय में ५२ कऽ  
खुन जोर सँ झोकए ल गेलन्ह । सुनिगक दूरी में दुरि भयक लकिन अपन भय  
दऽ चितई छसि पड़लौह ।

ई सुनि बिल्टी हैत हैत अँचलौह । आवश्यानी अति दखि  
कहलैएक-अहा हा । यह चट लगल हैतक । उठ ए फुचुराओ । उठ २. नओ  
वर्तन लखऽ । कान दऽ सँल अछि ।

दुनमुनकाकीक गेहा पर लालकाकी काजय लगलौह-देखु बहिन, काजय  
घा धिकक । स न दखन कय दखल गलक अछि न अतिजनक भासन निगलन  
गलैक अछि न उल्लवक बमलक अछि । हम एकसाँ को को कर । उठ दकुम  
नाद को निरिधा बुद्धि कर । दुगह छेया तकि दिनास निरिधाई सँ न छुटौ  
बुद्धि महर एकटा खल गलन नहि गलन । नैका धकल आम छधि, काजय  
दुनि जैतैह दकर ठेकान नहि । दकुमनक हानन दखलैन्ह छधि । हम बरी न  
हो नहि करी, नहि हो । लिलीगे दनीगे सभ पड़ल छैक । जे काजयन झगलौ ललधि  
दलक तँ औस प्रलय । फेरि विधिकरी के होएतक से पुरिग न अछि ।

आवश्यानी-स फिदक ? यहकागलन कनियौ तँ अधि

लालकाकी आ पदु भयने छधि । रंग विरंग किराज सभ नन रहन छेया ।  
दहि पाठौ खेनया दिनास बिमर जाइत छैन । हम मुँह पर कहैत छलैन्ह । कनहु  
सुनिग लखलौह । एक दिन दखलैन्ह न भनै छेया ज नक कान धव घाछा विधि  
छैक । हम ! बुन ई सभ नहि दलैन्ह ।

आवश्यानी नाहन फुचुराओ हाइबौक

लालकाकी इहो एकटा स्याह करै छधि । ओ विधि की कसभन अडार ?  
काज करय जैतैह त कज ओखि काडि कय बँस रहलैन्ह । धरक नक घय  
लैन्ह कान । काजर में जैतैह त पोट सुरकत जैतैह ।

एतवहि में सुनिग थोड़ उठल । दुनमुनकाकी के तँ गति रह नुडपिते उठि  
गलैन्ह अछि ।

ई सुनिहि लखलौह कनियौ घा सँ गज औन कय कहलैन्ह । बेरा,  
काने धति नहि । कनयौ विधिकरी दू, अपनहि बनि जाएब ।

बुद्धि । भौजो की न आनन सँ छैन । सभ काज में एक एक टा अध लखैत  
रहैत छधि ।

लालकाकी बेजय कान कहैत छधुन ? तौस बीच में बेजयक कोन काज ?  
नहि विवाहक कानो चना रतन छैक कि काज म ठह भय कान लधि कय सुनय  
न छै । जाह, अपन काज दखल गऽ

कनयौमलक ओरिआओन / १३



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible][illegible]

दुःखानि दास फलि अपना उदत्त स्वर्गमें धार आनन्द के दान-मौजिन कहेत  
 राजनारद अथ ए नमस्कृत अत्रों के गान पदार्थक दृष्टान्त धार्य मोह न । अह  
 रम्य । अथ । तम कल्या अजय नम । पतक उयम न ते वा । सम्यक् मे  
 अथ अहमि रहन मेह । ते दम्पकाल अथ ज्ञान । स्वर्ग धरनी गेउ बुद्धि म  
 लानका । नम निधुन कथ । है न गेउ अथ कल्या नम । त नमि अथ  
 कल्या अथ कृत माध । नम पार वर कृत । भटनी नै । अथ

दुस्तरमनि हाई एलि वरि और जोर में चिकड़ाई कथ काजप लगानीह उ अहाँ को बजावै ? नीक घर में न दक्क तै का इना न फीक टक्क ? एलि सै त पाथ हाँय हाँ कइ गदरि हाँ दक्क य नीक । हाँ गामधँ असुरक प्रायितामह हाँ दय हाँ फीज रगोमस तिवार कोनदि । अश्वन एकटा विशाह और करय सभागाशो माला नै गालक पुराणा पर कहलैश्वर । पाव में उल्लस दिन त इनामस सय जणव नया दिन कलय जाएव अहाँक कथा पर ? ताहि दिन एहन धंशक मयादा रहेक । अश्व तै लाल हायभना के नया अनेध । उ कनक हाँय दय ।

सालकायें बहुतदाई जाइत अछि तहि लेल यन्त्रा म एक मित्रता  
हम अछि म माय चरि हू वृक्षयि भाने त्य ठायाक कनक पहिने अछि  
नै भय जालिह

ॐ ह्रीं क्लीं बुद्धाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं बुद्धाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं बुद्धाय नमः ॥

१४ / कन्यादान

हरि गर्जित बिदा भोजन-कान पाय लगात जे खाया करएहुँ जिनहुँ जे अरु रीति  
जि जेहुँ नहि बरीह न की करय छिछियायल आबिहुँ ३ पतिन औरन यनाय जल  
धी धौंक तँ यनक पैल भुषका ईक । आय त सिनुआभरि छार दबा म लोक के करज  
फटल छैक ।

फटेले छेक ।  
 अखन दुलायमान फिससक हाव कानपस सँ बहिषून भय पल तखन सानेकामो  
 यजमानह 'ह । १ । गानत धरि ड छानेह तावत धरि तम कहुकम्प कौन छानह । अब  
 जा कऽ कहतहुँ सँ प्राण म प्राण आयल परित । अवशान भगवभूति देखबत  
 कहलथिन्ह—'त । हम त भूपे साधि दलतहुँ । काम प्रकान किछु अमर बिगट कथ  
 भूत सँ बाहर भए जाइत सँ हमर पर उमरि जैतथि ।'  
 → लोक लेखक कि गद्यक प्राप्ति के

नालकाकी-ठिनका मुँह में जहाँ कन्क क्यो टोंक देलक कि युनक घाही में  
किसीक हुना के खबरलक ।

आवश्यकता—हैं ए. वाहिना । हिनको ३५ ज. लाक कर्ष खेन्ड स हमरा साथ बूझि रहत अछि । ( तहँ-तहँ ) देखैत ने छभिन् बजैत फाल कोन दू ओखि इनटि नाइत खेन्डि । दुनअब्रिअन् डाइनक जतक लक्षण होइत छैक ।

श्री कान्तिहारी : जी काग्रिक, आप देखें । आइ-कान्तिहारी के कान बहुत छफ हुनमुनकाकी दिशि) आठ एं फुचुकानी) इटपट भानस चढ़ा लिये, यर्षा विकलक समय अदि क जान खखन श्री हांव ?

आवेशशान्ति—बंश बहिन ! आब हमई चलैत छी । साँझ देखक बौर भए गलैक ।  
फूलमतिथि एकामारये झाड़ति

लासकाजी- हिनकें पर तैं आस अछि ब्रह्म । तैं ई महि सम्भारतहु त सभ काज भण्कुल भए जाएत ।

आदेशकारी आह कहते हैं। हमारा स्वकर्म ही जे सब स्वगत में किन्हीं ठठार रखे ?

उठाए रखे ?  
 ३. कात अन्नचरणी ठहरे । गन्धी । लालकाको हुनका अतिचतन अतिचतन  
 दन्धाओ पर नवाक गच्छे लान धरि नन गन्धीनि । अहि राम दूग गच्छे ठहरे भए करि  
 गन्धी करि लालनीह पतिने नवाक चन्ने उठन जे एहि बाट जे चलन आँछ स एकटा  
 काँच गच्छेहि जाइत अछि । तखन निमकीक गन्धी हामय लागन जे जतक बदन छलैक  
 गन्धी म फुफुरी पछि गन्धी । तदुपरान्त गन्धी उठल जे पहरी लालकाको पटना रई बह  
 गन्धी जेता लालनीह । पटनाक लाम सुनैत लालकाको फुसिद आँछर मी नार जाइत  
 गन्धी गन्धीह जेता छी बहका बीअ पटना मी कोहवा अछैत छैथ भुइया बाबु पामु  
 गन्धीह जे जे श्री० ए० मे पढैत छैक तकरा पलटन म लामु जाइत छैक । काजक

कनेसाँमाइक ओरिआओन / १५

ते नन्द भगवन्तस्मिन् लोकेन प्रसूतः सः श्रीनन्दः पतिः रामदासः माता विनयिका। रहतेन्द  
री आताह ।

एकदम एक नाम मुनेन अवलम्बयामि कं यमि देह मिहमि उतलैन्ह - 'बाप रे बाप। मुनेन छियेन ज पण्डित म पिचयति पण्डित पण्डित पण्डित रहैन्ह छैक। जहाँ क्या बहाराएल कि लगल किमिच धाँकि देन छैक।' पहरा १० मुनि मगनकको के मन पडनेन्ह अ भउ कलिक कलवान नीक नकै नहि दसकै अछि। एहि पर चोरक गप्प उठल अशुभार्थ बाधक घर म सभ पडल छैन्ह म एकटा कुटुम्ही कौसा नहि रहय दैलकैन्ह। लालकाकी कहय लगलथिन्ह जे 'शति मे हम जहाँ कनेक पातो खइखइइह मुनेन छिदक कि छुब बोरे सँ रामायण पाठ करय लगैन्ह छै। चोर खांदिए ई त बुझसाइ जे पखन सभ जगल अछि।' वरि पर अवलम्बयामि कहलायन्ह 'हम त ककुल भुज्ज मुनि हम शक्ति कय पछि रहैन्ह छै। उकलगीना मुनो बुझि कऽ सँ छेड़ि देत।'

नदनन्तर दू-एकटा घोरक बिस्मा-पिठानी चलल । अवशरानी कमेक और लो  
मे घुसिक कए काय लगलमिन्ह भसुक्की राति फुलमनिया फुले केबाड़ छडि  
दलकक आधारगि ऊँ दायी नै दू पद दू दिनि । अब एतक साहस नहि पड़य  
जे छोट सँ ठहरि कए कबाड़ लगा आयी । कतहु चौकतिए लग गालमि दबा देल ।  
परि राति भयान भयान गोरखन प्रात केनहुँ । छन-छन डर होय जे गालमि भा  
ते न रहल अछि ।

कालजिनस्य अत्र नष्टानि सुनि श्लाघक्यते के अपन फलकसमी मन पडुल्लिधित्ति।  
गिरि हाकी अपर दु ख कहि सुनीलधिनि । तखुन विरतु बडकागमललेक मयानखन  
भलैनि । अन्त मे घुरि फिरि कय फिरि कन्यादनक आरिमाआओन पर गण्य पहुँच गल्ल ।

एवं प्रकारेण नाना घन्टा धरि वातावरणपत्र क्रम बनल रहल , स्थान रिप रिप कऽ करि ध्वनी पडय लगलैक तरुन जे का आवेशरानी के मन पडलैन्ह जे अब सौझ दीवोक बरि भए गेल । लालकाकी चलचकल पुराइ कैलथिन्ह - 'धम्हू सुप नेने अरैत छो आवा भोँझि आसब , किन्तु आवेशरानी कहथिन्ह 'नहि नहि एतबहि दुःख लख कम । आहो' इटकि कय बलि भैरवक ।' आवेशरानीक गेला उत्तर लालकाकी माछ सँ दइटा पैघ न्छा तहि आहोम एलौह ।

भारत में पैर दैहिक लासकाकी ब्रह्मलोह ई लाकनि । आइ चर-इयक  
गण-सय भेलक अरि, एव सतक भऽ कऽ रहैत रैहऽ

बुधिया बजलि-ई सभ कतवहन तँ दुसमुकाका भाँ गलि मुल में चिधिएथुनि  
ह्यामुनकरा भनरा असो पर पदुआक धर करेन छलन्ह। बुधियाक मुह अपन  
सभ गनि भनभनय आतलिह दुामनबाजी करै। लग हाजरीथन्ह अछै। को द.

१. १९५५-५६ में १०० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 २. १९५६-५७ में १२० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ३. १९५७-५८ में १४० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ४. १९५८-५९ में १६० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ५. १९५९-६० में १८० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ६. १९६०-६१ में २०० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ७. १९६१-६२ में २२० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ८. १९६२-६३ में २४० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 ९. १९६३-६४ में २६० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।  
 १०. १९६४-६५ में २८० करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया था।

1. Definition  
 2. Properties  
 3. Examples  
 4. Conclusion

[illegible]

१. अथवा २. अथवा ३. अथवा ४. अथवा ५. अथवा ६. अथवा ७. अथवा ८. अथवा ९. अथवा १०. अथवा ११. अथवा १२. अथवा १३. अथवा १४. अथवा १५. अथवा १६. अथवा १७. अथवा १८. अथवा १९. अथवा २०. अथवा २१. अथवा २२. अथवा २३. अथवा २४. अथवा २५. अथवा २६. अथवा २७. अथवा २८. अथवा २९. अथवा ३०. अथवा ३१. अथवा ३२. अथवा ३३. अथवा ३४. अथवा ३५. अथवा ३६. अथवा ३७. अथवा ३८. अथवा ३९. अथवा ४०. अथवा ४१. अथवा ४२. अथवा ४३. अथवा ४४. अथवा ४५. अथवा ४६. अथवा ४७. अथवा ४८. अथवा ४९. अथवा ५०. अथवा ५१. अथवा ५२. अथवा ५३. अथवा ५४. अथवा ५५. अथवा ५६. अथवा ५७. अथवा ५८. अथवा ५९. अथवा ६०. अथवा ६१. अथवा ६२. अथवा ६३. अथवा ६४. अथवा ६५. अथवा ६६. अथवा ६७. अथवा ६८. अथवा ६९. अथवा ७०. अथवा ७१. अथवा ७२. अथवा ७३. अथवा ७४. अथवा ७५. अथवा ७६. अथवा ७७. अथवा ७८. अथवा ७९. अथवा ८०. अथवा ८१. अथवा ८२. अथवा ८३. अथवा ८४. अथवा ८५. अथवा ८६. अथवा ८७. अथवा ८८. अथवा ८९. अथवा ९०. अथवा ९१. अथवा ९२. अथवा ९३. अथवा ९४. अथवा ९५. अथवा ९६. अथवा ९७. अथवा ९८. अथवा ९९. अथवा १००.

[illegible][illegible]

क्या आपका नाम आर्या आर्या है ?

२ ]  
सभागार्हक दृश्य

[illegible]

१८ / कन्यादान







[illegible][illegible]

पाञ्चरात्र के विधानों में अथर्ववेद का बहुत बड़ा स्थान है। अथर्ववेद के अथर्वब्राह्मण में अथर्वपाञ्चरात्र नामक एक अध्याय है। इस अध्याय में अथर्वपाञ्चरात्र के विधानों का वर्णन है। अथर्वपाञ्चरात्र के विधानों में अथर्ववेद के अथर्वब्राह्मण के अथर्वपाञ्चरात्र नामक अध्याय का वर्णन है। अथर्वपाञ्चरात्र के विधानों में अथर्ववेद के अथर्वब्राह्मण के अथर्वपाञ्चरात्र नामक अध्याय का वर्णन है।

ई सभ कथा सुनि घट्य अ गाम्भीरतापुनक अजलाइ हो बन्धू तारा स्पर्कनि  
अ दुखभावक जहि सभय एक तक गी अ भावुक उठैत रह गाम्भीरता। एक  
बारिक हाल कहैत छियौ । एकटा सति वर्षक युद्ध-वंश लक्ष्मीपति-सनिहा नखन  
कोइ-कौड़ी मुतावक समय एलैन्ह, तखन ज कऽ विवाह करबाक उधखी-चिखी  
लेलकैन्ह । अस प्रकार वंशक छत्रवर्मा परतारि कऽ अपना अहि तन लऽ गेलैन्ह ।  
पूत नौ सै टका मनबा लेलकैन्ह । सति में एकटा निर्माण न खन न विनाश क लेलकैन्ह  
काय करय गेलन्ह त विधिक अस्वस्थिन्ह जे कनहीं कै कऽथा भय भेल छैक  
चतुर्थक प्रत खर राम कै विदा करय दलकैन्ह । जकर हथ धैलकैन्ह तकर मुहो नोक  
हकी गि देखि लकैन्ह । तखन दुका राम अपन भाप पर पहुँचलाह, तखन समुर  
हलाय तब लेखल व दस वर आदिक नै शन नै गोर । कहै एकटा लकीनी कनक  
को दहक ।

भोलानाथ झा 'मृकन्द के' आश्वामन दंत यजुःसाह की कसबक, मुकुन्द। रम्या

[illegible]

बुद्ध ने यह कह कर कहा। पद्मनाभ ने भी सा संन्यास लक्षणों को प्रशंसा करने के लिए हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। यह कह कर बुद्ध चले गए।

[illegible][illegible]

इतिहास गिरा भन्न ये अं स्त्राद शब्दार्थ म चकार पृष्टं मं कस्य पितृह?

५० है म न हाहा आइ चार सौं में अमरु कान ब्रह्म जो इमरु मय

आइ विन्सु ....

प्र. ५. किन्तु की ? त्रयाणां धाकसम्पन्ने, चतुर्णामपि भोजनम् । तां खेदे कृतकं

अवधि :

मु. है म न इन थहु कय लाइन लो । तहि में भूख कम्म अलि

[illegible]

अचावग काल गुल्म वस-वस-माया ! आइ दलित बड़ दिब सिद्ध भेल, खादिछा  
महन भल लखेक, बोझ पहेंन छल जन जगजल में बनल हो

यह इन कारिकाओं का टुकड़ा है : पृष्ठ (अर्ध) को है : गति कतल से अनन  
छले ?

प्रश्न १) एकका गणना के १ बाजना एही उत्तरवाही पावति सँ अमलतई और कान से भे भानव ?

गै : लक्ष्मिबाई! योग्यदि हीं त ने अनलें ?

तब मैं की हड़प्पी पोखरि मैं नमो अर्पितहुँ !

छात्रों ने एक दृश्य देख्य प्रकट गलाह ।

तदनन्तर काव्यल विद्या का गण प्रणय करीत होते, त्या स्वतःच्या म प्रसिद्ध भवतात।

॥ भवे मुक्तुन्त उति कय शमय तिष्ठे बिदा भलाह । दुहु मम-भांगिन अमपर



[illegible][illegible]

मैंने विचारित भाव मैं कहलायिन्ह । तब गहिरा मैं आइकर्मिह दुष्प्रतिक फल  
भय मन अति । जहाँ धर्म मैं जानि लभे । भयकर हृदय ईक कि कर्मद्वारा मैं नर्क  
अति । कर्मि नकरा पदवैक मैं नहि गुंझा ।

ज्यातिभेदका अपना पैरक अंगूठा दिशि तर्कत बंगलाह हन त आनह भय  
 अंतर्ह किन्तु परम मे- तागला री जैक मुदकि गेल त चलन म कए हाइल अछि  
 मुकुन्द एहि सभ म वेश सहफह अछि । किन्तु ओ त एतए आछए रहि' इगारकड  
 कै पठबितरक सं आकरा किछु गमलें चालत नहि सक ।

इति यावत् । अत्र गुणितोक्तं लालकचमपुष्पादौ कर्तृत्वम् । एतेन तावदा छिन्ना  
लोभयज्जीवा इत्येतावद्धृतम् । अथैवं गगुनिषा लाकः अस्ति जटाह उक्ता अस्ति, ततो  
श्चास्य बनीने अवैत अस्ति ।

अन्तर्गतवा ई प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत भेल जे भवन पर आराखड़ा के किस्म निर्माण के संकल्प ले प्रस्तावित अछि, जसविषी कक्षा एक कान और ध्वनिधर्म कक्षा दोन कक्षा प्रस्तावित अछि किन्तु विवाद भए गेल अछि ।

[illegible][illegible]

1.  $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$  का अवकलन करने पर  $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$

[illegible]

संस्कृत-विज्ञान-मार्गदर्शिका

१. संस्कृत २. संस्कृत ३. संस्कृत ४. संस्कृत ५. संस्कृत ६. संस्कृत ७. संस्कृत ८. संस्कृत ९. संस्कृत १०. संस्कृत

1. The first part of the text is a list of names and dates, which appears to be a table of contents or a list of references. The names are: "The first part of the text is a list of names and dates, which appears to be a table of contents or a list of references." The dates are: "The first part of the text is a list of names and dates, which appears to be a table of contents or a list of references." The names are: "The first part of the text is a list of names and dates, which appears to be a table of contents or a list of references." The dates are: "The first part of the text is a list of names and dates, which appears to be a table of contents or a list of references."

[illegible]

अथवा यदि वह मृत्यु के कारण से मृत हो गया हो तो

[illegible]

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई













[illegible][illegible]

आप किछु चिन्ता न करें। मैं अपने काम में व्यस्त हूँ।

चौध. धर निरुद्ध अधिक दत्त प्रविष्ट छति । भगवान् भला विद्वान् म  
ला. अथ न तत्काल भगवान् दत्त कृत्य गच्छति इति वीर । अथ भगवान् भिन्नान्  
प्रपन्न गम म कष्टकुल्य कर्मणि अथ

चौ. ध्यातक चयन किछु आधक जमा भूसि ई। छेन्ना ४५। लकासि ई  
न तासि लामा जेन किछु स्त्रोणन के

७३३ नाह वसरा त वंशो यहि छैन्ह । ई बाहुनम वय धिक्कन्ह ।

बौद्धधर्मजी देखलन्हि ज अथि काग म जहि लहल दधन लगल्य परम म पन्ना,  
मिना कर वसो आरु के फल्यु स्यामद ।

इतिहास में अनेक राजाओं ने इस क्षेत्र पर हमला किया था। सभी धर्मों एक  
साथ ही मिलकर संघर्ष कर रहे थे। 'महानगर' नाम के अधिक क्षेत्रों में।

नमो भगवते वासुदेवाय  
नमो भगवते वासुदेवाय  
नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible][illegible]

सूचकानां रीतिभिः तैः स्वैः भाषायां चतुर्णां भिन्नानां छलानां विषये ज्ञानान्तरं हर्षवद्गुणः  
 मूलान्तरं प्रथमं भाषायां भाषायां स्वयं भिन्नं ॥

सामयिकी पत्र-पत्रिका की भाँति प्रकाशित होना ।

बोधो बसन्तः का आह वासन्तः जन्तु पाण्डित्यं हि कीनः अहं ओ दान  
गन्तु दान तन्तु अयेन श्री

जलजलक कदमधिनः अत्र समं गह अस्ति । अत्र, अत्र एव १३ इव दए  
अत्रतः नम धनी वासः कए १११ । छै

[illegible]





[illegible]





[अर्थान्तरण रूप में जो कहीं अधिक संज्ञाभरण और भाषा का समझना है। अतः प्रमाणों को जानकर ही भावपूर्ण भी भरी रहने है। सिनारा को प्रसिद्ध अधिपति विधिक माने हुए मात्र नष्ट दिखलती है कि दिल पर कदु घन माला है।]

१०३० भिस्तर मिश्र यु विमल प्रकाशयुज यं १८ व्युत्तं शोभे राग मिनम  
अपरा वैचित्र्यं दन श्रुति न नान्त कृत्य वेग्य गान्धर्व धीक्य एतत् पट्ट विमल विक्रम  
२० यन्मयि एषान्द । यु वाच्य भादन्ध सख भिमेर इ- गन्त अममभिष्टकटद  
विमल गन्त ६ शान्न इन् १६ मकराक्षि लम्ब्य शोक प्यार पण्ड एलिनन्त कृत्य  
व्युत्त ।

अथवा धाम करब । अर्थात् गिनमतक आभनब्रह्मण माल मे पाउहर और दार  
म गनवती गे लाग छऽ सकमत सकमत करत छथि । जबन दिनक प्रकटा मे अनली  
मरुप प्रकट हाइल छैक लखन ओ आकर्षण कहौ ? सरल निरुल प्रकृतिक राख्य खाना  
म ह सध बगवती गडक-भङ्क नहि भटत । अकर विमल कान्ति त सदैव अपनो  
धमकीत रहै छैक ।]

मि० मिश्रा-आइ एम सारो । यू हैव टुकन ए चर' भनकड-ड म्यू ऑन स्क्रीन  
स्टारस । यू मस्ट एडॉप्ट दैट द यजेश समर्थंग मैनेटिक ह्विच अट्रैक्ट्स ऑल आइज  
टु वम । दैथर फेसिनिंग सुक्स, टेंडर स्माइल्स, प्रसफुल मूवमेंट्स, ऐण्ड गार्डिस्टिक  
इन्टेंस कमन्ड ए मैजिकल इमपल्सन्स ओवर दि स्पेक्टर्स

[अर्थात् अफसोस ! अभिप्रायों के सम्बन्ध में आजकल बहुत बुरी राय है। आपका यह मानना पड़गा कि उनमें बुद्धि का तरह कोई एगो अक्षय शक्ति है जो लाखों मनुष्यों की अज्ञानता को अपनी आर खींच लेता है। उनको लिंगों चिन्तन से मोती मुक्तकण्ठ की पगरी चमक और कलापूर्ण शब्दों से सज्जित कर देता है।]

१० १०- बीज धर्म अगर फॉर दी मस्ट पार्ट ऑर्टोफिशियल एण्ड कैन बी  
अचीव्ड थाट ट्रान्मि

[अर्थात्— ई सभ बात स अधिकतर कृत्रिम रहै छैक । मिथिला उत्तर सभ के अभ्यास बनि सकैत छैक ।]

मिस्टर मिश्रा एक घमन मस्टर्ड (सरिसय) का चटनी तैयारी के प्लेन में मिलकर  
 यशपाल आलराइट। लेट अस नाठ कम दु दि नमस्त पॉइन्ट। हाँट अन्नाडर तर ए.सू.क.राम ?

[अर्थात्-अच्छा । अब दूसरे विषय पर आइये । लक्ष्मी की शिक्षा के बारे

४८ / कन्यादान

[illegible]

उत्तराखण्ड के जलवायु वि. के क्षेत्र में जल संचयन के अभाव में जल की कमी का सामना करना पड़ रहा है। जल संचयन के अभाव में जल की कमी का सामना करना पड़ रहा है। जल संचयन के अभाव में जल की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[अंशान् तन्ना धनं कौडं नमसः सहा ह '१' '२' '३' '४' '५' '६' '७' '८' '९' '१०']  
हो की । लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह मोक्षार्थक ज्ञान प्राप्त हो सके ।  
सत्य के यत्नशील प्रवर्तित हो पुनः जनकदा गच्छतः ।

१० १० हाँ उअ रथार दू जेव खर मिहिन इअ दू से गुनना २. + २  
[अथात् अनेक प्रभाव पाना आ मरणा खात मरुछा जावन ]

मि० मिश्रा हज० दे गवर्नर एवम कर्नल गुरुद्वारा ग माना / एकात्मता संग  
एतदिस मान । अतः श्री परम की मयकहाविग रू श्री वाक्य पर एतदित् नद्विद्व  
मै गजेल्य ऑफ हिन्दो इत कांश ।

[अर्थात् क्या उनका विषय पत्र में कहा जा रहा है या नहीं ?] शायद श्रीमान्  
जान सकते हैं। मैं कहूँ कि क्या किसी को मुख्य मुख्य मामलों के लिए प्रत्येक  
पत्र का वह जरूर भेजना होगा ?]

१० १०- (किसी सर्वेच कय घल शां गङ्गाज गङ्गम दि 'गोश्रला मिहिर'  
दि प्रोमियर वोकलो ऑन मवर प्रोवन्स

[अर्थात्-हैं, हमारा घर में मिथिला प्रान्तक मयभ्रष्ट सातहिक पत्र  
मिथिलामिथिल' नियमित रूप में] ५७

[illegible]

प्रिस्टर सी० सी० पिआर / ४९







भारतवासी ही भारत का नाम इसलिए भाजप के कहलन्हि—हमसे फेर स्टेशन लाय पड़त । एह नामक मतभेद भाजप अही लोकवादी रूप रहत । एकदम अहि भाजप गैरवादी हो गेल । एह भूमिका के वजह से एहि रहस्य कहलन्हि । देखल कान बनल बिधुति नहि हो । बहुत पैदा लोक अहि रहल अहि

पुनः बहुतों के बजा कान कहलन्हि—एह नाम स्टेशन का रहल हो । पहर तीन बजे बिजुल फिरो से सम्भव । एहि ठामक मूल इतिहास अहीक होय । दलान पर न चरण लगे तहि पर वड़का शर्मिला प्रत्येक दलक, और भोला वावुक आत्म में जर्मन अपन मनका निष्ठा लव । भाइ साहबक नकल मल पलन जे केहू से धारा भुक्ता क, भाजप पर पड़ल हो बिजुल न कान दलक । और छांटको चौकी पर एक गारा जल साटा और नकल सहज राखल दलक की सभय बुझि गेलहुँ ।

नाम की अपने फुल रहल रहल कहलन्हि । यम न नु सिद्ध क काम है अपन निरुद्ध भाजप

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

बहुत भारवासी का स्टेशनक दोकानक समीप पहुँचलाह त देखे छाँय के लालक का गंधा चिता में निमान छथि । और बुचकुन चौधरि मनाह मन खुद प्रसन्न भ । जल छथि । भारतवासी बहु मोटाक पैर लव कय दलक केहलन्हि और किछु लव कय कय लव । भारतवासी विषयक सब से कहलन्हि—भारत । चलत पहिन या के बिजुल लव कय कय लव रहत

बहुत लवक नाम बुचकुन चौधरि के लव लालक का गंधाक संग स्टेशन निशि बिदा भेलाह । यम न नु सिद्ध क काम है अपन निरुद्ध भाजप

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

नाम—भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

भारतवासी ही भारत पर से मा भाजपों के प्रणाम कय बिदा भेलाह

[illegible][illegible][illegible]

इस प्रकार हमें स्पष्ट है कि हमारे जीवन में जो भी है वह  
अतिशय ही सरल है। हमें केवल एक ही बात याद रखनी है।  
हमारे जीवन में जो भी है वह हमारे जीवन में है।  
हमारे जीवन में जो भी है वह हमारे जीवन में है।

[illegible]

५- लक्षण तद्वत् तत्र को ? हण कन्या किं च लक्षणं तद्वत् न भ्रष्टि तत्र  
त लक्षणं तद्वत्

नन्वयव 'कुरु' स्थितिरा कुरु अन्वयः । हारा नवमिक अन्तक भूहारी कलात्र  
ग मभ प्रन्तः ५०० अन्तक अन्वयः । तादृकान्तक औन्नत्य द्धिभयः कुरु स भन्तः

५६ कन्यादानं

हमारे आधुनिक विचार द्वितीयमन भूल 'प्रधान' के सभ्य परिवर्तन के गलत चित्रण  
एक सत्य-सत्य कथन को प्रसारित करने के लिए हमें हमारे आधुनिक चित्रण के साथ ध्यान  
में अपने कथनों के सभ्य आगोचरों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

अतः यह कथ्यापि यह हास्य भावपूर्ण दृष्ट्या कुछ व्यंग्यकार जे. एच. मकरा कहिये उपलक्षण कर सकते हैं ।

रखने-रामना किन्तु संकुचित भाषा में प्रयोग - आ कहें लुनाई ज 'हम कल्प  
रम-पाँच मिनट का 'इंटरव्यू' कहत हैं, जिसमें उसका रहन सहन और विचार का  
स्टैंडर्ड मातृभाषी हो जाय ।'

भालानाथ पुछनाथिन्ह-‘इंटरव्यू’ कशी ?

करी। किन्तु प्रत्येक पृष्ठि ठेकर उत्तर सुनए भाई तथि।

लालकका कहत ई बतहमन । हिनका यनाह बूझी को भताह ? फइल भियन  
बूझि एकर कहत ऐक अपना नाय बतिय गी जा कऽ एहिना राजनीतिक बज्रम बोझ  
सबि कि एही ठाण आयि कए ई सभ शीख दस करतह ? ई सभ किछु न भय मरत  
इतक जा साथ कहि शवुन ॥ ५ ॥ को हँ भाण ॥

आला०—हैं त और को ? आदि विराध नोक, अन्त विराध चह नोक । पाछी जा कऽ जे टट-धट खडू करताह तहि सँ त...

२० १०—कनेक इमरो विचार सुनि होत जावत । एखन ई गरमा-गरम मित्रान  
मग जान रहम छाँधे , जखन देहानक ज्ये पाणि लागतैक त अपन मुँहा डेलह ई  
सभ मग ख्याल दू एक दिन धरि रहतैक तकरा बाद अपणाह मरा जेतैक ते हम्मर  
विचार बाइछ त हिनका हृदकणव उचिन नहि आनय पहुँच जाथि त युझल जेतैक।  
भल विवाह मार करबह को ? को औ ककाजी ?

भारत-हैं यश र कहेंत छी । अखन सामाजिक बन्धन मे पडि जैतह त अपन  
 ५३ क ५ बन्धन भगताह । एखन गदहपचीसी छैन्ह । द्विरागमन होइत होइत ठेकान  
 ५३ अर्थ जैनाह ।

सत्यकथा एतन लोक में भर जानक चही पाछों कऽ कहत रहै। हठ संधि कथा कै छुड़ि बेधि, त कथा उपाय । भरि जन्म कथा कै हकर कानय पड़त । कं हो भोला ?

भा.सं०-तहि ये कोन सान्द ) कन्याक जीवन मरण मुख दुख तरक  
मधोन रहित रहैक । तैं पूर्वहि भूषण रूपे विचार कर कथाक निरन्तर करवाक चाहौ

१० १०—एतन्नु हिनक स्वभाष त हभरा बुझल अछि । ई व्यक्ति बहुत सज्जन

जटिल समस्या / ५७

छवि । कोवेल घाँट छवि जे शिक्षा के अन्तर्हि समान शिक्षित बनवा—त नहि मे  
हजे की ? जखन अपना अर्थात्तम तय र्थिन्ह त अपन सुधारत रिहायिन्ह । को ओ  
कफाजी ?

भाता०—हैं हैं । पाछी कऽ अपन जना इच्छा ईतन्ह तना निरुद्धत पवर्धत  
रिहायिन्ह बाग रखला इतर न जहि अर पर चर्चायिन्ह गही पर चर्च जौन

नाला०—परन्तु एहिने ज टेट-घंट करक चाहैत छीस से काना भऽ सकीन छैन्ह ?

भाता०—रह स काना हाएतन्ह ?

रे० रे०—और यदि हम फाँक में कुचबाप कन्याक मुँह देखा दिएन त कान  
शरि ?

भाता०—नहि शरि कोन ? जखन पाछी कऽ वेह घ्याघी हाइयिन्ह तखन मुँह  
वसि नेन हजे के ?

लाल०—परन्तु यदि पाछी कऽ पयन नहि हाइन्ह और फिरि कय चल साथि  
तखन त हम लोक में गंतहुँ ?

भाता०—हैं, ई बात विचारणीय अछि

रे० रे०—किन्तु ओकरा में की कोनो पय छैक ? एक बरि दखि लैथिन तखन  
किन्तहुँ फिरि नहि सकैत छवि ।

भाता०—हैं से त ओ अपूव सुन्दरी अछि । हिनका कुछुट्ट म पला कओ  
होएबो नहि करैतन्ह ।

लाल०—परन्तु इ कथ कओ वृद्ध नहि नदय । यदि एक जन में चाना कान  
में ई बात गेल, त गँव भरिक लोक कुचबा करय लागत ।

भाता०—हैं तखन त बाट चलब कानि भऽ आएत । पीठक पाछे सभ आंगुर  
दखबए लागत ।

रे० रे०—ई बात केओ बुझबे जाना करत ? हमर तौन गोटाक अतिरिक्त ओ  
त केओ... और हमरा लोकनि कतहु घुजबे नहि करब । को ओ कफाजी ?

भाता०—हैं हमरा लोकनि बनबे नहि करब त दोसर वृद्ध काना ?

लाल०—बंश । त तोर लोकनिक जे सम्मति होऔ ताहि में हम राजी छी ।

परन्तु पाछी कऽ हमर अपवश जुनि देखबैत जैहऽ ।

तदुपरान्त भोलानाथ झा भातिजक संग अधि जायला के दखब गेलन्ह । लालकका  
धाकन पर आगि बुचकुन चौधर लग रोग गेलन्ह ।



## [ ८ ] गुप्त परामर्श

आग की दह ?

अपन ।

अथका मुक्ता करह अथ लवक बगहल अंगु

मे न जह त जह त मरीन । एक कन्या पति कोह

एतयनि स दुनमुनकाक अहि तम पतिनि लीन श्री कुन्वा वऽ के फलनि । एक  
योग का । राम लाला दखि कय लालिन्ह दगु न भला इ अकदरत भऽ

लाला अर तन अथेन छैन अर इ तम कय काग-टफ खलवत छिन्ह

इ शब्द लालकका के मन गेलन्ह । थय तुरन्त पुछ मचि गय ।

अथै ए पूचकरनी ! ओ अहँ के पुरली अछि ए ना सनाइत अछि ज मंदगन  
ना जहि लगल रहै छिएक ? अंकग पयन भयो खलीयक बपस नहि छैक त  
कि बिच्छकअरि भऽ कऽ बनबक बपस छैक । अनाक छानी किएक करै ?

इ मुग्ध स्त्री दुनमुनकाकी एक दूरल छिलनेक स्त्री हाव में लय पढ़ाव अपन  
कपल पदम लागीन्ह

इ लालकका भोज दखि बुचबा ओ भुक्थियन अही फीके पड़ल  
पुत्तगान्य अपना अपन पदुँत बज्जिन गेलन । भऽ भऽ हमरा अइव बंम जैह  
जहि में को फरि हमरा दही पर दह ?

बुचबा मे को कहि में की भेली ?

कान इतर मे जुललतदा युन्नीयइक कान मे किछु एहन जात धाजति ज  
बुचबादइ ललक इच्छा अर एक चट अपना मरीनक गल पर लगाय बात्रि  
उठलीह भगु ! हमरा इ मभ तक लागैत अछि । तगा त एहिम रहै छीह ।

थोड़बहि काल मे दूह सरीता गले भयो खलव लागीह । अखन बुचबादइ  
अनागनकाल के बहुत हुकय लागलीह अइव बज्जिन ह मरीन । अइ रिदुन  
मे जह चटवत

जलपति दह । ए प्रमथक हय में प्रमथन बंम बज्जिन है है कर म





साथ जैसा कि बाबा 'महामा' ने दुर्गा पर ध्यान रखा है। इ ग्रीन आन्दोलन भावनाओं के प्रतीक हैं। जो बहाने-बाह्य दृष्टि पर ध्यान 'कल' द्वारा प्रकृतिक उद्भव। एखन बाबा-द्वितीय-एल में कोआ दिक नई काग रवेन। इनकी बुधवार आराम करथ लन आदि रहनु।' ध्यानाय झा ठकथी के संग लय ध्वनि, आगे स्थान में बिदा भला।

एकर भावनाकी पन्हाक संग जाय कहलथिन्ह 'ये कनयी। विधिकी' अगो नाथिक। अग्न भश किछु सैंकि लिपि। हम धनमाधर जाइत ह।' बड़का-गामा-ना किछु बज्जिह लल उनीह कि एवर्थ म रवनामयक आहिल बड़ पडलन्ह।

पसंज जलक शब्द मुनि बड़कागामनाओ अति बुद्धि कय अरन करक फुलदा थन कनक अपरि लेलन्हि और पतिक नजि पढ़ना उतर पुन कज्जक भाव देखैत बाथ जौप लयन्ह। तदुपरा एक कदाश बाण चलथ मयकराइन अपना घर म आबि कुसी पर बैसि गयेन। रवतीरमण माथ पिनअरुन और ग्यामरी के प्रणम कय अपना घर म एलाह। तबेर उगारि छुटै पर टीत बजलह ए दुबुर। आपन एक इकरी काम है।

बड़कागामनाले भुक्तो बड़ा कय कहलथिन्ह मैं त्रिन देशी फांस शिखे किसीका काम नहीं करती।

रवतीरमण अच्छा गहले नजरान ल ल लयोजये।' इ कहैत एनीक कामल अधादलक मध्य मुँह म एक खिल्लो नान रफि देलथिन्ह ई देखि रसिका पत्नी कृत्रिम प्राम प्रदर्शन करैत बजलथ 'ऐसा नजरान मैं नहीं चाहती। अभी अपना बापस म लंजिय।' इ कहैत अपना मुँहक पान उगेलि अगोके गुँह म राल बाहर होमय लागलह।

रवतीरमण पत्नी के बहरेबाक उपक्रम करैत देखि हाथ पकड़ि लेलथिन्ह और बज्जिहली कुसी पर बैस देलथिन्ह। पत्नी हाथ छोड़बाक आग्रह करैत कहलथिन्ह जाय जाय दिव। आजक आरुन छैक। लोक सभ की कहत ?

रवतीरमण अपनहुँ आही कुसी पर बैसि बजलथ देखि, हम एकटा जंगली पाले के बड़ा कर अने छी। अकरा मिय पड़ा कय भौय बनउ, नहि त आ फुड़ दइ उड़ि जायत। इ अगो धुत पर लागि सकैत अछि।

एकर बाद थोड़क काल धरि गी। पत्नी में गुन रामसं भेल। दूहक राय मिथि नथ पर बड़कागामना हैनत बहर एलाह और रवतीरमण पन्हाक डबो लथ प्रसन्न हाथ दलन पर गेलाह



मिस्टर सी० सी० मिश्रा पड़ल-पड़ल भावी पत्नीक संग दिगो कार्पनिक चित्र खिचका म तमय भल छलाह एह बाँद म रवतीरमण पहुँचि करलथिन्ह अपकी खातिर अन्दर से पान आया है, इसे ग्रहण कीजिये और जो राखेन्ट (नौकर) इसे लाया है ठमक लिंर इसमें जो रिवाई (बखशीश) देन हो, डाल दीजिये।

मि० मिश्रा के असमझस में पड़ल देखि रवतीरमण कहलथिन्ह-देखिय, बिना स्पण्डड (निम्न पर) का कोई काम मत कर बैठियेगा नहीं ता यू विल कट ए सारी फियर अमंड दि लडोज (भद्र फल) समाज में उपाहारकर बियेगा। पौन हय से कम रखना एटीकेंट (कापदा) के खिलाफ है।

मि० मिश्रा एक नोट बाहर कय आइ डब्य में लिखि दलथिन्ह एवर्थि म सहसा आइन मैं पेरिछनिक स्रोत उठल और मन्द गति सँ दालान दिस बड़य लागल

'आजु शोधा जनक-मन्दिर चलहुँ देखन जाहु रे।'

मि० मिश्रा अकचका कय पुछलथिन्ह थल हुर इर दि मैटर ? अइ हिप ए कोरस नियरवाह। (सामस्या क्या है ? कोरस सुनने में आ रहा है।)

रवतीरमण कहलथिन्ह हँ, आगो का बन्धकम (स्थगित) कार के लिये पहिल आ का प्रोमशन, जलुम रिक्का है। व लाग रिक्का सँड (खान भान गती हुर अपकी लान के लिय आ गही हैं। यू मल यूथ पोसलफ वरी अफ दि पोम जन एण्ड अविजर्व ऑल दि रिचुअल्स इण्ड रनिमनी विध रडर करेमी आरका चिहय कि अवसगनुकूल विधिया का पालन रिश्ततपुनक करी जाय।' इस इर । इ जलुनी एडवाइस (मै मिश्र की हैसियत म आरको यह सलाह दे रहा हैं)।

मि० मिश्रा-वर अइ ऐम संगे, अइ इ नोट ने दि फॉरमैलिटीज (लॉकन म लागस है कि मुझ विधियों का कुछ डाल मालुम नहीं।)

मि० मिश्रा-वर माइफ, योर फेयुचर बाइड विल गाइड यू ऑल अलार्ड कुअ

निम्नलिखित शब्द सुनि मिश्रजीक आवश्यक ठेकाने नई रखी है । विस्तारित

नव में अनुकृतापूर्वक पुछलधिन्त-कैरन पोर मिन्दर फोली टोक विथ भो विहार पोरज-  
क्या आपकी चरन निवारा से पूर्व मेरे माथे निःसंकोच इत्कर यातचीत कर सकती  
३ )

कन्याया-इवन्, हाथगुल स्वर में कन्याधिन-कल शी इर पोर फास्ट-कथम  
इन हर लक्षित देन पोरलफ ( वह तो आपमें भी कई गुनी बड़ी-बड़ी है ) । आप  
त-पुत्रा व-इर ( भागी रत्नी ) से मिर्फ इन्टरलू ( पेट ) भर चाहें हैं और वह अपने  
पुत्रर हम्बेण्ड ( भावी पति ) को पहल ही हर एक पहलू से अच्छी तरह एकजमिन  
पगला कर लेना चाहती है । सब जाकर अपना कन्सेन्ट ( स्वीकृति ) दे सकती । अच्छा,  
तो अब आप तैयार हो गइय

रविवारमण पाग और डारहा लय मि० मिश्राक अर्गो कथम देलधिन्त और  
कहलधिन्त-आपका इय वक्त यह नयनल हैर ( स्वदेशी टापर ) पकन लेना चाहिए और  
यह खदर गल मे डाल लगी चाहिए । वाइफ ( पत्नी ) अपना गिरीब ( स्वागत ) करने  
को सिंगे आ रही है ।

ई कवि रथारमण एक परम सुन्दरी युवतीक दिशि संकेत कैलधिन्त । मिश्रजी  
दखलधिन्त ज अन्तार-जैसे वर्षक एक एतण्यमयी युवती हाथ मे पुष्पमाला नेने तुलसक  
आगे विणमन छधि और मन-मन्द मुस्कराहल क्रमशः बढ़ि रहल छधि । हुनक  
रूप-यौवनक आभा छनि-छनि कर गुलाबी साड़ीक सर हो बहरा रहल अछि । हुनक  
सामुन्त अञ्चल रखावली देखि मिश्रजीक छातो पर सौं प लोटय लगलैन्ह । ओ निनिमय  
दृष्टि में अहि दिशि लक्ष्य लगलाह, किन्तु अहि युवतीक जेवल कटाक्ष भजन ऊपर  
पड़ैत दलि औरि छि जौप गलैन्ह ।

एतवहि म लयनागणक समुदाय समीपतर पहुँचि गेल । मि० मिश्रा भइकैत  
हृदय में अहि दिशि घुमलाह । मन मे सँवेत छलाह ज भावी पति के अन्तः सम्मुख  
देखि आ युवती अवश्य कियु भकुचित भऽ जेतैन्ह । किन्तु हुनक ई अनुमान सर्वथा  
भ्रमपूर्ण सिद्ध गलैन्ह । जेखन मिश्रजी अहि वंचल युवतीक समीप पहुँचलाह कि ओ  
बिजल अक्षं चाकि फूलक माला हिनका सर मे जिरा दलधिन्त । मिश्रजीक अक्षं  
शाने संश्लिष्ट भऽ बठलैन्ह । ओ चित्रवत् स्तम्भ रहि गलाह ।

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

जोत अ (नित नई नई जगह) - मालिक भाफ की जगह का जगह का सस्ती  
 मूल्य का वस्तु जगह का भाग एक जगह नचात आ रहे हैं। इसका मतलब है  
 आता है। मालिक है कि जो दूसरे जगह करे। आता उनका मतलब है  
 मालिक जगह का वस्तु का वस्तु करे। आता है, भाग का इसमें का आता  
 २ भाग

५ आदि यथा । इति । एक एक प्रकाशने दत्तं म लय निः । सोः सोः मिश्रक  
मल मलदि सुखा सुखाय । मलमल

मिश्रण अथवा पेडे मानव स्थावर है। पर, यह। मैं बोसों मत  
का हजबन्ध (पति) होकर आया तो यहाँ बड़बता मत। बड़बत पत्नी मित्र का  
सत्कार है। मैं माझता था कि दो इनको मुझसे पछेता था। मैं का बड़बती और  
बता ही निकली। अब तब क दन पड़े गये। मैं आया इस लड़क' का इम्तहान लेने  
आ। यह शास्त्र उम्मे मुझों को नाक पकड़कर बचाने लगी। अच्छा समाशा है। मैं यहाँ  
आकर क्या फँसा।

एतद्विधि में आ मुद्रांग युवनीं धाजि उठलीं त दु स्र की बात है कि आप में कजुनी  
भी है । मर दाड कयम रह दी आ की बाज फ शकून थम गहो है और अप उमको  
आर धात तक भी लो देव क्या पो तम सैलम न २ आर अपक दस जुल नहीं  
हो ली मुजस मय्या न ज्योन्य

प्रियम्वदं वर्णन ४४ प्रमोदोप में एकटा रुपया बाहर करलक और शुनियौनायक  
प्रमल कलश ४ राख्य दर्शावह । शुनियौनायक तबैत कहैत खनि गोपन

३ अलग-अलग दुरमुनफाकी दूध हथ तक धन जान डाली, भालीरि यो तथ  
नर हनुमनाइत तक शिशु यइय लगानाह । मि० मिश्राक लगान अर्थन अर्थन नम  
किहू नन नम गद्यनाइत यह पा यइमि नहुलाह ।

सुयष्ट्याकं क्रिकेन एव सृजि दलमर्पितं विरम्यते । अत्र दण्डं धनं गन्तव्यं ।  
सुयष्ट्याकं अत्र के दधुक्ता द, लालि कय कहल अरु ॥ १ सग भुजिन अरु अरु  
गोन गदैन छे ? को द' जाले तै मलार पागी

इं सुनि ओकर माय गीत छेहि सूर्यमुखीक हाथ पकड़ि आंकरा पीउ पर  
धमकक लगबै बजलाह गै खुच्छी, हम पहिनाह न पन बंसायन = अंधक हम छे  
रिंदा गल छुनह वी न भौं उड मकरा ओच धरौह न गल गीत सुनैत  
न

६६ / कव्यादानं

१. प्रश्न : यदि  $\sin A = \frac{3}{5}$  तो  $\cos A$  का मान ज्ञात करें।  
 २. उत्तर :  $\sin^2 A + \cos^2 A = 1$   
 $\left(\frac{3}{5}\right)^2 + \cos^2 A = 1$   
 $\frac{9}{25} + \cos^2 A = 1$   
 $\cos^2 A = 1 - \frac{9}{25} = \frac{16}{25}$   
 $\cos A = \pm \frac{4}{5}$   
 ३. प्रश्न :  $\tan A = \frac{4}{3}$  तो  $\sec A$  का मान ज्ञात करें।  
 ४. उत्तर :  $1 + \tan^2 A = \sec^2 A$   
 $1 + \left(\frac{4}{3}\right)^2 = \sec^2 A$   
 $1 + \frac{16}{9} = \sec^2 A$   
 $\frac{25}{9} = \sec^2 A$   
 $\sec A = \pm \frac{5}{3}$

[illegible][illegible][illegible]

पृष्ठ १०० पर पृष्ठ १०१ के बीच एक पृष्ठ है जो कि खाली है। इस पृष्ठ को खाली पृष्ठ कहा जा सकता है।

T 100 200 300 400 500 600 700 800 900 1000

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20

[illegible]

Figure 1. Schematic diagram of the experimental setup.

इ कहि आ भिम्ब, 'मो गो मिश्रक हीर' स 'मो' धारा दलंधन और कछुआ  
 'मो' धारा अनु 'मो' धारा लाल धनः 'मो' मिश्र किंकर्तव्यविमुक्त भय गलाह।  
 इनहि मे मोह दसक वनक हिनक मो दसक हन अपना म उपरीय करय लगल।

आ सुन्दरी पुन 'मिश्र जीक कान मे कहल धनः' बाव बगडीवरणजी पहर कछु  
 पुन मे चौधका मे आनक गरीब करनी हूँ। यदि इसमे मे रह जायें तो मैं अपना  
 'मो' धारा धारा मे स्नान मे मे रहूँ और यदि धन इस तरह दिया तो स्नान मे  
 भी दूटा हो सम्झिय।

सुन्दरीक मुँह से एहि प्रकार अपन नाम (चण्डी चरण)क दुस्वारा सँ मिश्रजी  
 क्षुब्ध भय गलाह। मन मे कहय लगलाह—'अह'। कितनी एहकानसह (बड़ी) लड़की  
 है! मुझको निरिकार हस्कर इस प्रकार सम्बोधित कर रहै है जैसे यह किसी कानन  
 की लड़ी शिनिवपल (अधुआ) हो और मैं इसका स्टुडेंट (विद्यार्थी) हूँ।'

अनधुन मे नारक धन 'मिश्रजी' पन्ना पढ़त मुझ 'उठानक'। मिश्र  
 निरपय भय छार समय लगलाह 'मो' धारा आबि दकुंगेक स्त मे अठा गोटा  
 के परिवर्धित करय लगल।



अठारिक विधि समार भेया उता दयके मिश्रजी सँ मुदल गिरास करै  
 कहल धनः अह। आपनी कानन कलइ ली टिंगल खनन के लिए है आज  
 पल्लव रह्य गुमल पक्ष पुन मे न बड़ा कलश हुआ होगा खैर! इसक बदल अपना  
 मुँह मोठा कर देना चाहिये।' इ कहि दुखी एक सिलवरकफशतरी मे रखल रही-चीनी  
 दिशि संकत करै हिनका आसन पर बैसा देखलिन।

मिश्रजी नन्वमुप जकाँ अहि पर बैसि गलाह इस पन्ना मिश्र धरि कान  
 प्रकार मधुसूक्त विधि सम्पन्न भयक मे किन्वा किछु नहि बूझ पड़लिन। पं. यमनाथ  
 झा 'मिश्र लोचन' कहै-रूपे बाता मे सँ उभर-खाभइ भयक रीड़ा सभ गड़गड़ा  
 कय उड़लिन लगलाह 'मिश्र'क दम आपन अनापक स्वर खुरज सँ निषद परल  
 पहुँचायल लगलाह किन्तु मिश्र मिश्रक ध्यान अहि सभ दिस नहि छलैन्ह। हुनका  
 नवक आनी अहि लगल सुन्दरीक चित्र दृश्य करैत छलैन्ह ओकरा अपन भावी  
 चिन्ता के रूप मे देखि आ आनन्द श्री निम्नक कललत तरंग मे पड़ि कबहुन  
 लभय लगलाह ओकर कानन 'मो' धारा मे रहैत रहैत जगजगदक परिस्थित सँ बहुत

का न भयलिन ओ सपना मे किन्वा कान अहि सपना मे सुनी अ सपना  
 भयलिन 'मो' धारा मे रहैत रहैत जगजगदक परिस्थित सँ बहुत  
 लभय लगलाह ओकर कानन 'मो' धारा मे रहैत रहैत जगजगदक परिस्थित सँ बहुत  
 लभय लगलाह ओकर कानन 'मो' धारा मे रहैत रहैत जगजगदक परिस्थित सँ बहुत

मिश्र मिश्र के धनैत जे आब है इसा भयन जगजगद सन्तार (खुरज) का  
 पल्लव रहल छथि। ई 'विचारि' हुनक हृदय खोला जकाँ उड़लिन लगलिन। किन्तु  
 जगजगदक दृश्य पर रहैत रहैत देखैत छथि जे सौस धर आनी प्रकार खुरजक  
 भयन रहल उन कानन पुष्प मे एक दिन पथ भयन जगजगदक दृश्य  
 भय मे लगल रहैत छथि जगजगदक अनवरत सहायता सँ मिश्रजी अहि धर  
 मे खुरजक भय भयन पर बसलाह त देखैत छथि जे एहि समुदाय मे चरि भयक नेत  
 मे लय अरु वषक वृद्धा परल पौनद छथि। ई देखि मिश्रजी के विश्रामक आशा  
 अरु लय परलिन कानन मे रहैत रहैत कानन मे रहैत रहैत कानन मे रहैत रहैत  
 कानन मे रहैत रहैत देखि बिदाइक आशा परलिन करय पड़ैत छैन्ह

मिश्र मिश्र धनैत जगजगदक दृश्य देखल लगलाह, देखल पुनैत  
 भयन पुनैत पल्लव फूल कदमक गल अदिक रंग धिरी चित्र रखल  
 लय अपन आगी भय मे (गीरी गणेशक पूजार्थ) गोधरक चोत और गोधा सादल  
 देखि मिश्र मिश्र विस्मय मे पड़ि गेलाह

दलापनि पिरसो गरीब बजलैन्ह है लोकनि आब बैस गोपिन मे की भाइत  
 छैक! कन्या निरीक्षण करय न कहलैन्ह।

मिश्र मिश्र धनैत जगजगदक दृश्य देखल लगलाह, देखल पुनैत  
 भयन पुनैत पल्लव फूल कदमक गल अदिक रंग धिरी चित्र रखल  
 लय अपन आगी भय मे (गीरी गणेशक पूजार्थ) गोधरक चोत और गोधा सादल  
 देखि मिश्र मिश्र विस्मय मे पड़ि गेलाह

दृश्य देखल है लय नैत एत जस्ट साइड ?

मिश्र मिश्र धनैत जगजगदक दृश्य देखल लगलाह, देखल पुनैत  
 भयन पुनैत पल्लव फूल कदमक गल अदिक रंग धिरी चित्र रखल  
 लय अपन आगी भय मे (गीरी गणेशक पूजार्थ) गोधरक चोत और गोधा सादल  
 देखि मिश्र मिश्र विस्मय मे पड़ि गेलाह





1. परिचय  
 2. प्रकार  
 3. लक्षण  
 4. कारण  
 5. प्रभाव  
 6. उपचार  
 7. निष्कर्ष

[illegible]

1. प्रश्न : यदि  $\sin \theta = \frac{3}{5}$  तो  $\cos \theta = ?$   
 2. उत्तर :  $\cos \theta = \frac{4}{5}$   
 3. प्रश्न : यदि  $\tan \theta = \frac{5}{12}$  तो  $\sec \theta = ?$   
 4. उत्तर :  $\sec \theta = \frac{13}{12}$   
 5. प्रश्न : यदि  $\csc \theta = \frac{5}{3}$  तो  $\cot \theta = ?$   
 6. उत्तर :  $\cot \theta = \frac{4}{3}$   
 7. प्रश्न : यदि  $\sec \theta = \frac{13}{12}$  तो  $\tan \theta = ?$   
 8. उत्तर :  $\tan \theta = \frac{5}{12}$   
 9. प्रश्न : यदि  $\cot \theta = \frac{4}{3}$  तो  $\csc \theta = ?$   
 10. उत्तर :  $\csc \theta = \frac{5}{3}$

५४ कृत्यानुसूचि

१. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए हैं, उन्हें हम 'वैभवंत' कहते हैं।  
 २. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं, उन्हें हम 'पुण्यवंत' कहते हैं।  
 ३. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए हैं, उन्हें हम 'वैभवंत' कहते हैं।  
 ४. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं, उन्हें हम 'पुण्यवंत' कहते हैं।  
 ५. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए हैं, उन्हें हम 'वैभवंत' कहते हैं।  
 ६. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं, उन्हें हम 'पुण्यवंत' कहते हैं।  
 ७. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए हैं, उन्हें हम 'वैभवंत' कहते हैं।  
 ८. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं, उन्हें हम 'पुण्यवंत' कहते हैं।  
 ९. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए हैं, उन्हें हम 'वैभवंत' कहते हैं।  
 १०. एक व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किए हैं, उन्हें हम 'पुण्यवंत' कहते हैं।

[illegible][illegible]



[illegible]

११० विभ्र (फर्ले) क सम्प्रति अनुसन्ध दः के)

1. अतः यह भक्त म गो रूप का प्रथम ही आ गइ कैस ?  
कनैकेशन क बिना ए इत गल्फिडुस छ ए गइ कैस ?  
आ मा भिजन दक्षिण न जाणा एकि कछम ए  
ममः म इ न आत इज्जत दकई एत म कम ?

मिटर मित्र हाथक बंधन कर :- हमें जंगल आगना है या स्थान देख  
कर ही जंगल स्थानों पर ही रहने हैं

मिस्त्रा मिश्रा आनन्दान्यतः भयः - नदः । इषु वृ एकिजस्ट एमोहेवर, आइ शैलज  
 ५ १ कम फावकड एण्ड क्रियड ए न्देरा ज्ञानर ई- दिम टाउड एन्डम ।

मियज मिश्रा 'मिश्रा'क कव्वा पोरत; प्यार ! क्यो तुय सच्च दिल स मुड  
'सय' (प्यार) करत हो ?

पिसल मिश्र-अहा ! अब दुःख और क्या चाहिये ? (मुखवृन्धन करते) मैं  
 प्रेम की यह सुइर छाप जा गया हूँ। वह टूटने में पाये ।

मिस्टर मिश्र (अध्याक सभा) : अर्जेंट - मालूम होता है अंगूरी शराब का प्याला  
चूस रहा हूँ।

‘मार्गज’ मिश्रा (गान्धे पर गान्धे गुरुकुल) -

मां थार नरे थालिक, मर दिलि र्य रहा करमा ,  
 कल कल करकर व लिय में थार थन जौंगे ।



... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

निम्नलिखित मिश्र अक्षरों में से सही सही रूप में चुनिए।  
 छन-छनका धर ही काना मे ... ..  
 ... ..

लखन गिरान मिश्र कलापूर्वक पै. में नान्द दन्ध लगती है। दान्ध (नाच) कथा  
 में हुनका पैरक मु... ..

मिश्र मिश्र ३ कल्पन ... ..  
 ... ..

मिश्रमिश्र ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

मिश्रजोक पैर तर सौ पृथ्वी सन्दर्भ ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

म. चंद्र मिश्र : उत्तर है। उस चीज का ह. न. लेकर बिनाका नाम' पुस्तक  
करने का उद्देश्य नहीं है।

[illegible]

प्रभुत्व मिश्रक हृदय में उत्पन्न प्रार्थना रूप में प्रकट होती है। यह प्रार्थना फलदायी होती है। किन्तु यह भी जिंजीर बन सकती है। अतः प्रार्थना के साथ ही प्रार्थना के फलदायी प्रभाव का उपयोग करना आवश्यक है। तदुपरांत नये प्रार्थना के फलदायी प्रभाव का उपयोग करना आवश्यक है।

नि० दि० ३२ सुपुटारी हा नाम चुकता है

बुद्धिमान । एतद्दिं मन । इह देखे न उदुए ॥ १६ ॥

प्रश्न-सुम बाइल क्या रहे / य जानना सही है कि क्या सही है गुनाह

ही साथ मेरा विश्वास हुआ है ?

बुचिया (गन्धि पत्र) = मनुष्या के दम आ गुंठानुदर आदि भागों में बहने लागा में हड़न होय।

हो यतो स्पृहा ता ता दा वल्लभाक भक्तो यथा तदा श्रवणं ?

वै-प्रांति मंत्रं यः कुर्वन् क ई कस्तु नः आश्रय वपः नः कस्तु  
३ मासि श्री अश्वि कांचा वास भवन के प्रवेशः कस्तु भवनः

नि, निम्न स्तर परा पर्याप्तता के लिए माप है

श्रीलङ्का ५५

८० कन्यादान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुगन्धयुक्तं च

सि० निश्चय कदा वृत्त जंगल पञ्चदश २५ अक्षर है ।

युक्तिसंगत मा म मातृ प्रसादिते मन्त्रे न गन्तव्य कान्तव्यक नाम एक दश

३. ५. ११. सुनयनस्य पञ्चाङ्गं च शङ्कराचार्यविरचितम् ।

निः शिष्य कथं कुतः पण्डितः तस्मात् सत्यं, श्रुतं च भीतिम् ।

कृत्यार्थं कृत्यम् ।

प्र० : 'मित्र' का क्या रूप मेरे 'क्रिमी' हान का स्वरूप देना नहीं चाहते ?

सुखदाम ५५५

मं० शिक्षा-अर्जुन व मं यज्ञो र उक्तै

ਸ੍ਰਵਤ੍ਰਾਸਿਤੁ ਰੂਪਮ

मि० मिश्र मान म साक्ष्य साबित कर रहे हैं कि यह ब्रह्म का गुण तो नहीं है । अथवा जान बूझकर 'उपसर्ग' का अर्थ मान लिया गया है । और जहाँ इस अव अवस्थिति दर्शाने के लिए माना जाये कि यह क्या लाभ है ।

[illegible][illegible][illegible]

चतुर्थोक्त गानि/ ८९



किसी तरह का हाथ भीप देना होगा ।

पिता का कहना था कि भविष्य में हम सब एक कल्याण कर रहे हैं क्या है जीवन का विलक्षण नहीं होगा।

नृसिंहचरण

सिद्धि मी ॥ १ ॥ मिश्र चान्द्रा के जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक और शिक्षित  
जन्म पर ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥  
अन मी ॥ १ ॥ धन पर विजय प्राप्त करके ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥  
वृद्धि के ली ॥ १ ॥ जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥  
पर चढ़ि गोलाह । इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥  
पत्निय विवाहिक इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥  
इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥ इति धनक जन्म मी ॥ १ ॥

अध्यात्म वृत्ति । मैं वृद्धों के पास चुड़ैल ॥ २ ॥ माहस तख्तगार  
 भय रहस्य होत और न आँखों में अपन और धूप में चरकर नहिं कैंसि रह जनक  
 अँखि छानि कर भयह ओ कहन भारी तबु हाथ मजल छँह

वृत्तान्तः । अत्र च । अत्रिः अत्रिः हाथ से जा रहल अछि । अत्रिः  
यदि अत्रिः अत्रिः कय अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः  
अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः अत्रिः

विभिन्न प्रकार के घसका १०० प विभिन्न को. में. निम्न पृष्ठ की पृष्ठ  
तबालों की १०० को. में. निम्न पृष्ठ की पृष्ठ  
१०० को. में. निम्न पृष्ठ की पृष्ठ  
१०० को. में. निम्न पृष्ठ की पृष्ठ

[ १२ ]

?

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]



... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..





संसार का सार्वत्रिक प्रकाश बसने, यी संसार में है यही संसार का अंश है  
अपने अंश - यही प्रकाश है यही संसार का अंश है यही संसार का अंश है  
यही संसार का अंश है यही संसार का अंश है यही संसार का अंश है यही संसार का अंश है

[illegible]

“हि विषय में प्रयत्न करने से हमें ज्ञान मिलेगा और अनुभव प्राप्त होगा।  
दृष्टि-अर्थक न विद्या ही स्वयं पूर्ण नहीं, अन्यथा शरीर में भाग नष्ट हो जायेगा।  
अच्छ विद्या में शारीरिक शक्ति का उपयोग नहीं होता, शरीर नहीं है। साहब लौकिक  
कारखानों में गैरजा लड़ते हैं। तब सही। व्यवस्था आदिस में टाइपिस्ट का काम कर  
लिये। दूसरे इन्हीं तबतर ही हैं। शरीर कार्यभार के उठावों पर परिणामतः अक्षयक  
भार सहन करने में असमर्थ हो जाते हैं। सड़के जखन इन्हीं पर से अवनत छिपे हैं।  
पर में मूल्यवान् गृहिणीक स्थानपर एक डेराएल छायापटा धरे हैं। गृहस्थाश्रमक  
स्थिति में तब शारीरिक शक्ति में भी कलक के भय से अपना गुप्त रहने को छिपे,  
ओम्हर में भी लौकिक जखन अपना आदिस से अवनत छिपे हैं। शरीरक स्थान में वृद्धि  
के कष्ट न्ये अहि भयपवन का पद के अधर तरास सनहप्रसाद से अभिहित करके  
नष्टमानों के दृष्टि से शरीरक शक्ति के शरीर में भी कलक पाते हैं।

[illegible]

१. गीत विषय में हमने जो कुछ लिखा है, उसमें जो कुछ भी है, वह सब हमने अपने अपने अनुभवों से लिखा है। हमने जो कुछ भी लिखा है, वह सब हमने अपने अपने अनुभवों से लिखा है। हमने जो कुछ भी लिखा है, वह सब हमने अपने अपने अनुभवों से लिखा है।

[illegible]

इ कथन का अर्थ = 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839

<sup>११</sup> भारतीय नगरों के वाली बुद्ध भूषण श्रमक आन्दोलन, पृष्ठ २८-३०।  
गंगा इतिहास।

[illegible]

१. एक ही जगह पर रहना।  
 २. एक ही जगह पर रहना।  
 ३. एक ही जगह पर रहना।  
 ४. एक ही जगह पर रहना।  
 ५. एक ही जगह पर रहना।  
 ६. एक ही जगह पर रहना।  
 ७. एक ही जगह पर रहना।  
 ८. एक ही जगह पर रहना।  
 ९. एक ही जगह पर रहना।  
 १०. एक ही जगह पर रहना।

[illegible]



... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..

... ..

... ..





१. ... ..

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...

...















[illegible]

‘रोमांग’ के उद्घाटन ११३

[illegible]

निम्नलिखित तालिका में दिए गए विवरणों के आधार पर उत्तर दीजिए।

[illegible]

५० दिनेषु तृप्त्युक्तः श्रीमत्पात्रः संलाभकः

युवा: अपनी कमर तक लम्बा पंख छेड़ना। हमक सुनाने पुर्न अधिकधित  
नि। पंख छेड़ने और जब ये धक् धक् करके लगे लगे

[illegible][illegible]

‘पाद’ के अन्वय में ‘कर्म’ हुआ ‘पाद’ पड़ा। अतः ‘मि० बर’ हमका ‘कर्म’  
मे वैसा स्वयं हाइल करत कहय लगल किन्तु—“हम अपन हाथ सँ गाड़ी बसाएब पसन्द  
करै छी। हाथ दुनकरा न दुइव। लाइ हाइल। हमरो सँ बसी ‘एक्सपर्ट’ (विपुल)  
अति। विरली। शान्त बरक अन्वय सँ हमरो सभक संग दुपार घुमब लागल।  
विलासत मे सैह देखय सैह सौख्य जगल। जगल मे पाद बसाएब सिखलक। शान्त  
मे पियारा बजौन मिहलक। स्थित जगल मे स्फुरित। (वर्ष मे भरल) कर्म  
जगल। विरली बजौन मे स्फुरित जगल। जगल मे स्फुरित जगल। जगल मे स्फुरित जगल।  
सँ वैरल। पाद का स्फुरित। विपुल जगल सँ अन्वय मे स्फुरित जगल।  
सँ हम हु। स्फुरित के अन्वय अन्वय अन्वय स्फुरित जगल। अन्वय जगल मिहल सैह

११४ द्विगमन

२७. २०. १९६१ । मद्रास से माया खास जे बूझी हमसँ बनल छिएक ।”

[illegible]

मिश्र कलाकीर्णक चमत्कार से मुग्ध होइत छायाइ, कि काशी, दुस्तक  
 ॥५॥ शीतलक भार नै सहानी 'मिस थीण' लघु मृगजन मैं हनक आगवादा कौन सिक  
 काविक हवा ॥२॥ शीतलक छाया ॥३॥ आ मिश्रजी के अपना स्टीडी कम  
 ॥४॥ आदरणा ॥ ॥५॥ शीतल ॥ मिश्रजी दाखल ॥ ॥६॥ आगवादा ग्रंथक वस्तु मुनिपूर्ण  
 हवा में ॥७॥ शीतल ॥ ॥८॥ आगवादा ॥ ॥९॥ शीतल ॥ ॥१०॥ शीतल ॥ ॥११॥ शीतल ॥ ॥१२॥ शीतल ॥ ॥१३॥ शीतल ॥ ॥१४॥ शीतल ॥ ॥१५॥ शीतल ॥ ॥१६॥ शीतल ॥ ॥१७॥ शीतल ॥ ॥१८॥ शीतल ॥ ॥१९॥ शीतल ॥ ॥२०॥ शीतल ॥ ॥२१॥ शीतल ॥ ॥२२॥ शीतल ॥ ॥२३॥ शीतल ॥ ॥२४॥ शीतल ॥ ॥२५॥ शीतल ॥ ॥२६॥ शीतल ॥ ॥२७॥ शीतल ॥ ॥२८॥ शीतल ॥ ॥२९॥ शीतल ॥ ॥३०॥ शीतल ॥ ॥३१॥ शीतल ॥ ॥३२॥ शीतल ॥ ॥३३॥ शीतल ॥ ॥३४॥ शीतल ॥ ॥३५॥ शीतल ॥ ॥३६॥ शीतल ॥ ॥३७॥ शीतल ॥ ॥३८॥ शीतल ॥ ॥३९॥ शीतल ॥ ॥४०॥ शीतल ॥ ॥४१॥ शीतल ॥ ॥४२॥ शीतल ॥ ॥४३॥ शीतल ॥ ॥४४॥ शीतल ॥ ॥४५॥ शीतल ॥ ॥४६॥ शीतल ॥ ॥४७॥ शीतल ॥ ॥४८॥ शीतल ॥ ॥४९॥ शीतल ॥ ॥५०॥ शीतल ॥ ॥५१॥ शीतल ॥ ॥५२॥ शीतल ॥ ॥५३॥ शीतल ॥ ॥५४॥ शीतल ॥ ॥५५॥ शीतल ॥ ॥५६॥ शीतल ॥ ॥५७॥ शीतल ॥ ॥५८॥ शीतल ॥ ॥५९॥ शीतल ॥ ॥६०॥ शीतल ॥ ॥६१॥ शीतल ॥ ॥६२॥ शीतल ॥ ॥६३॥ शीतल ॥ ॥६४॥ शीतल ॥ ॥६५॥ शीतल ॥ ॥६६॥ शीतल ॥ ॥६७॥ शीतल ॥ ॥६८॥ शीतल ॥ ॥६९॥ शीतल ॥ ॥७०॥ शीतल ॥ ॥७१॥ शीतल ॥ ॥७२॥ शीतल ॥ ॥७३॥ शीतल ॥ ॥७४॥ शीतल ॥ ॥७५॥ शीतल ॥ ॥७६॥ शीतल ॥ ॥७७॥ शीतल ॥ ॥७८॥ शीतल ॥ ॥७९॥ शीतल ॥ ॥८०॥ शीतल ॥ ॥८१॥ शीतल ॥ ॥८२॥ शीतल ॥ ॥८३॥ शीतल ॥ ॥८४॥ शीतल ॥ ॥८५॥ शीतल ॥ ॥८६॥ शीतल ॥ ॥८७॥ शीतल ॥ ॥८८॥ शीतल ॥ ॥८९॥ शीतल ॥ ॥९०॥ शीतल ॥ ॥९१॥ शीतल ॥ ॥९२॥ शीतल ॥ ॥९३॥ शीतल ॥ ॥९४॥ शीतल ॥ ॥९५॥ शीतल ॥ ॥९६॥ शीतल ॥ ॥९७॥ शीतल ॥ ॥९८॥ शीतल ॥ ॥९९॥ शीतल ॥ ॥१००॥ शीतल ॥

'मैं' का स्वरानुगत अध्ययन से खासतः काउन्टेनपूत बाहर किये, आगे में कपोत  
खासतः जिसे खोला सैपार भूयः शरीर । निः शिष्ट अपना के कठिन परिस्थिति में बांध  
कर लाया । हृदयका संकट में पहल दखि खीण देवी खोला विनिन्दक स्वर में  
'मैं' का स्वरानुगत अध्ययन से खासतः काउन्टेनपूत बाहर किये, आगे में कपोत

गी० निम्न कापी लऽ कऽ जीव सम-सम गान अक्षर सँ सुशोभित पृष्ठ पर  
 पृष्ठ १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३,

शर्मा नाटक धेनुत गृहन दुःख कीजारी शक्ति देखि सो मी० मित्र मनहि  
नै कह्यो । शर्मा पर कही जायक लागल । वेणुक रचना में न सुदृक्कम  
अपरा कृतक सभटा जनताका भरी दर्शाथि और वृत्तीरुष के भावनाक  
सब को ज्ञात कर रहैह तेना भागी खड कड थोपि देलाथि ।'

'रोमांस' का उद्गम / ११५

नमो भगवते वासुदेवाय

१. यदि म प्रकृत हों यम + वि + म प्रत्यय हों तो ये प्रत्यय  
 उर्द्ध्व विलोम तथा इह उर्द्ध्व प्रत्यय माना जायेगा यदि  
 ये उर्द्ध्व प्रत्यय हों तो उर्द्ध्व प्रत्यय माना जायेगा यदि  
 ये उर्द्ध्व प्रत्यय हों तो उर्द्ध्व प्रत्यय माना जायेगा यदि

[illegible]

जिन् काम गान् (१५००००००) नमस्वामी जिन्क सम्पत्ति धन कऽ पर जन्म  
मन्त्र गान्

[illegible]

उत्तरांच में भी १०५४ ई. में अनेक प्रकार की आक्रमणों का प्रारंभ हुआ।  
उत्तरांच १२७८ ई.

अ नद्वयद्वयं स्वरं न वाचं दृष्ट्वाह आहं हि न अरां न भाषणं ब्रह्म सुन्दर  
भाल तद्व

विचारा केंद्रा नसा व, अन्तराक्षर म नसा व /

मिस्त्र अण्णा वरुण मन्त्राक आराधना होवा करी घेवनू मभ  
अशें सुन्या होव भय नसत ताली होव यत्काळ नामकार

[illegible][illegible]

११५ / द्विमासमस

$\frac{1}{2} \left( \frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = 1$

$$\frac{1}{17} \cdot \frac{1}{7} = \frac{1}{119} \quad \frac{1}{119} \cdot \frac{1}{13} = \frac{1}{1547} \quad \frac{1}{1547} \cdot \frac{1}{17} = \frac{1}{26299} \quad \frac{1}{26299} \cdot \frac{1}{19} = \frac{1}{500681}$$

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ 
 $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

$$T_{\text{eff}} = \frac{1}{2} \left( T_{\text{eff}}^2 + T_{\text{eff}}^2 \right) = \frac{1}{2} \left( T_{\text{eff}}^2 + T_{\text{eff}}^2 \right) = \frac{1}{2} \left( T_{\text{eff}}^2 + T_{\text{eff}}^2 \right)$$
$$\overline{X_1} \otimes \overline{X_2} = \frac{1}{q} \sum_{i=1}^q \overline{X_1} \otimes \overline{X_2} = \frac{1}{q} \sum_{i=1}^q \overline{X_1} \otimes \overline{X_2}$$

הנהגתו של השר לא תיבחן על ידי שופט

२१. १७५४ ई.स. ६ मघा २३ तारीख १७५४ ई.स. ६ मघा २३ तारीख

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

१५। तः शब्द मन्त्रक कालो न अर्द्धात् तावत् पश्चात् यदा प्रत्ययान्तरं भवेत् ।

$$\frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} f(x) e^{-x^2} dx = \frac{1}{\sqrt{\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} f(x) e^{-x^2} dx$$

आम त्वय म नमः प्रणमः ॥ १ ॥ श्री विष्णवे नमः ॥ म त्वय म नमः

५. गाने के अलावा 'महेश्वर' नाम के एक गाने पर भी ध्यान देना चाहिए।

[illegible]

यदि  $\alpha$  एक वास्तविक संख्या है, तो  $\alpha$  का वर्ग एक वास्तविक संख्या है।

महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में कार्य करने के लिए चुने गए हैं।

२. प्रश्न : क्या आप जानते हैं कि भारत में पशुओं की आवाजें क्यों दबाई जाती हैं?

अथ चत्वारिंशदधिकतमस्य त्रयोविंशत्युपरि तत्राह

२-१७) पञ्चमस्कृतः महाभारतः कृष्णार्धे ३००० श्लोकानि सन्ति । तेषां संक्षेपः ।

महाराष्ट्र शासन, शिक्षण विभाग, मुंबई

[illegible]

14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-1046-1

२६ म ३ मं वि २७३ नमः सां १० ११३ ३ अक्षरान्

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

1. The first group of respondents (Group 1) consisted of 100 individuals who were randomly selected from the population of 1,000 individuals. This group was used to estimate the population mean and standard deviation.

1.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

$\frac{1}{2} \frac{d}{dt} \left( \frac{1}{2} \frac{d^2 x}{dt^2} \right) = \frac{1}{2} \frac{d^3 x}{dt^3}$

1. *Staphylococcus aureus* (100%)

‘गोमांस’क उद्देश्य / ११७



वम् परिवार में धनिक समाज में भी जो लोग मूल्य विवेकपूर्ण व्यवहार  
 भलीभाँति से हुनक कविता शक्ति और उल्लेखनीय आकाशवादी चेतना बनाये रखता है  
 हुन भावुकतापूर्ण उद्गार से एक काया भी उत्पन्न

एक कविताक हीरोईक है "चिन्ता-छाया" तब यह भाव है "अहाँ" का प्रेम  
 संग। यज्ञवद नई छी, यज्ञव आदि का प्रेमन से मन धर आ मुक काय मुख भव  
 अपन अपन स्वा स्वामी से काय दिश के गुणवत्ता कर ३ अर आछ । अखन जइ  
 पदाथ में अहाँ एहन प्राण फीक देत छी तखन चेतनक कोन कथा ?"

एक कविता छलैन्ह "कन्दुक-क्रोडा" पर । भाव है "अहाँ" अहाँ अपन  
 शक्ति तऽ के ३ रतिमक मैदान में, एत छी त विश्वविद्यालयी शक्तिक भावक मूर्ति  
 वनि गइ छी । अहाँक पैरुत पर । मैं अन्तक 'योग' छाछीन जइत अछि और तकर  
 उच्छिन्नाइ दैत हमाय हृदय उच्छिन्नाइ लैत अछि । विश्व धिक्कय लैत अछि और  
 प्रकृति तथैव सौत अछि ।"

एक कविता छलैन्ह "रसविषयो" भाव है "अहाँ" जेहरे हाकि दैत छी  
 तम्हारे रसक वन में जइ । अछि सम्पूर्ण चराचर के अहाँ मधुर रस से आतप्रोत  
 कर दैत छी । अहाँक कागल आँसू में कहन नमस्कार गरल अछि । आ गिताक  
 तार संग संग हान्ते शक्ति तार झुकल कर दैत अछि । अछि अँसुरक मधुर स्पर्श से  
 कानक लच्छा मनहर फूल वनि जइत अछि और दूधक जौन अमृतमय रसवाधूनी

एक कविता छलैन्ह "जल विहारण" भाव है "अहाँ" जखन आकाश अल  
 में मान रहे छी त अन्तक ऊपर एक शक्ति कमल केत जइत अछि । जखन अहाँ  
 जल से बहसय लगै छी तखन सुँडक सुँड लहरगइ कृपा सँधिगी अहराय लगै अछि  
 जहाँ केनेक और ऊपर हाँ छ कि एक जइ भाहर स्रजवाक पानिक ऊपर द्रवत  
 धर जइत अछि ।" इत्यादि इत्यादि ।

कार्यक अदि में एक पृष्ठ पर लिखल रहैन्ह "हाकि दणक मूर्ति के अग्रज  
 हृदय गान्धिर में अहंमि पृष्ठ करत रहन । उभर प्रत्यक्षन फल अक्षत नहि चह । पके  
 छिन्ह तान्का सुकृमा हृदय नई कवितावली बन अपन समस्त समर्पण करत छिन्ह ।

एक दिन मंगलवार ई सुत कार्य "विजय" दर्व के कल्प तह पर लिखि गइन्ह  
 चार समी के ई दृष्टि में पाडल गि रहैन्ह जे में से "मिश्रक अज्ञानमय  
 प्रयमों के धिक्कथिन्ह ।

## गामक महिला-क्लब

आ जे भिन्न अन्तर्गत प्रत्येक कलब अलग अलग कार्यक लक्ष्य में  
 चलैत अछि । गामक स्त्रियों के सुख-सुख दैत छिन्ह ।

गामक स्त्रियोंक अन्तर्गत छी "स्त्रियोग" कलबक कार्य अछि ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।

अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।  
 अन्तर्गत स्त्रियोग स्त्रियोग करत छी ।





















२४५ पञ्चम गात्रम् ८ ३ तृत्तं यजनं ।

एकदा अतिरिक्त आर्थिक साहित्यिक प्रगति में योगदान हासिल के हेतु सरसवती' मध्य चौदें 'विश्वनाथभारत', 'विश्वनाथ' 'हम प्रगति आत्मिक पत्रक सम्पूर्ण

[illegible][illegible]

अत्र गणितक हस्तलिखित २४१। गणितक ११ अंश ३ च ३ अंश विभक्त - २५  
 विषय गणितक ११ अंश ३ च ३ अंश विभक्त - २५  
 विषय गणितक ११ अंश ३ च ३ अंश विभक्त - २५  
 १३६ १३६

1. यदि  $\vec{a}$  और  $\vec{b}$  दो सदिश हों, तो  $\vec{a} \times \vec{b}$  का परिमाण  $|\vec{a}| |\vec{b}| \sin \theta$  होता है, जहाँ  $\theta$   $\vec{a}$  और  $\vec{b}$  के बीच का कोण है।

1. मनुष्यक धर्मिण नाना गुण क नो ऊँ द्विजस नामन पदित मान्य  
नाना क लक्ष म मं एवम ज्ञो मं पर्वत श्रेष्ठ दूत नाम श्रेष्ठ किन्तु नरक  
इति न सुखो नैव क ज्ञान यदी नरक मं गोपिक क हीने पद पद  
मान मं अधीक अन्त्याद्य श्रेष्ठो न न प !

[illegible]

१. 'संज्ञा' म्यस्यैव 'संज्ञा' म चरति तत्त 'संज्ञा' नदं शब्दम् । शब्दम्  
२. 'संज्ञा' म्यस्यैव 'संज्ञा' म चरति तत्त 'संज्ञा' नदं शब्दम् । शब्दम्

महाराष्ट्र राज्य सरकार  
न्याय विभाग, मुंबई  
मुंबई, महाराष्ट्र

आहार-विशिनः पात्रान् नञ् संभोगं रज्यकं त्राह अं कर्तुमिव यान् १५  
 ४७ कलकं कलञ्च लक्ष्मिं शं पुष्पं लक्ष्मिकं पुष्पं

१) निम्नलिखित में से एक सत्य और एक असत्य कथन चुनिए।  
असत्य कथन है कि, यदि किसी व्यक्ति का वजन अधिक हो तो वह बीमार होता है।

प्रतिभाषक उपचर नः। शुद्धा नानाधरं नक पुनरिद वाचरा  
पचकरा एत के लोक नः रं धी एत न्ना ताम कापुव मुनः त तय  
नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर  
नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर नानाधर

अत्र विद्य गार्भोद्धान प्रसवक योनि-क तस्या स्मृतिकर रक्ष  
न " गार्भ रक्ष " तस्या द्विक्रिय मन्त्र-क रक्ष शिशु धारण काल गात्र निदान तस्य

[illegible]

शिक्षाक 'प्रोग्राम' / १३९

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..





इसके बाद धर्मार्थन अनुमति ली विक्रय कर, धर्मार्थन । मम भक्ति  
पर धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

मी न- मिश्र तब लड़पट्टाईत जहाँ अपन दृश्य कहलधन जे ओकरा दाम  
अधे नागरेक । कहलधन "तुम्हारे धर्मार्थन का पर जन हारा हारा फीम एक  
दंडम का धाम रूपी ।

भी-सो मिश्र सलम कऽ कऽ जहिना नोचा उतरक छत् विरा भलाह कि  
मम ब'ट छेकि कऽ छत् भऽ गलेनि "सुन बाबू ! हमारा कसलधन फो पौच रूपी  
है या छ'ट जय ।

आव मिश्रजी के ऊपर यकल साइनवाड पर नजर पड़लक कसलधन फो  
रूपीज फाडथ ।

ममज 'बुलडींग' के अपना दिस तबत दखि ले-मो- मिश्र मनेबेग तै एकद  
नैबटकही नाट बाहर केलनि और ऊन छोड़ा कऽ नोचा सड़क पर दल्लह ।

डग पर पहुँचि दबलीरमज के कहलधन "आव अहाँक बहिन एतय पहुँचनीह  
लखने सभटा प्रबन्ध जालीह । एखन 'गच्छ करहर अठ तल' जैन के नाल ।



एतक धर्मार्थन के नालीहो धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन

धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन  
धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन धर्मार्थन







दुआएँ... 'तबकि' आसन त हमरा वृत्त फटि  
ग...'

बटुकजी के मन्त्री ने दुहा... 'आह। जानती है हुँअइ खूब तेल कऽ खा लेती।  
इ छ 'बिन्ना' से डा लींग रह स और मय न करी, और मझनी में सन दही टोमने  
पु'...

आ रहे 'मल्लक' वडे जल में गिर रहहि। कनक आभाष काल  
चलन... हम आन हाथ में रहि जहाँ नकल कल थिक।'

हुँअइ... 'हदिकर' औ हम जानि बुझि  
कऽ 'फाड़' हड़न... हमरा कय न पुन लाय्य हमर समझ' तहि कज  
अक...।'

आय... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ  
... 'तबकि' कल छक... 'तबकि' कह्य।'

आम... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ  
... 'तबकि' कह्य।'

एकाएक भाजाने... 'आह। हमर छता  
वा भल... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

बटुकजी कहलथिन्ह... 'हम ह परा उक... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

प... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

एय प्रकार खाज पुछारी होइत-होइत अन्तलग्ना पला लागलैन्ह के और सभ  
... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

अधुन... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... 'हँ'। हाँ। शब्द कओ

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

१५२ द्विगमन

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

तीर्थयात्रा / १५३







दुनमुनका के मुहल्ले काय अजय । तू पर लागेन यजलीह—“धमधुमरा मरवा  
त न करे छे । कहीं में पड़ा कौन ।”

इस पर एही कथन कहलथिन्ह—“यह मकान भण्डा लेल गेल अछि । अहाँ  
नकरि गुंगन हउ जउ । तयन हमरा सब बाजार जाइत छी । बटुकजी । जी हेल  
भरवाउ वा त लागेन तू सब ।”

धनमनाथ बजलीह—“जह + लालनेन त गग पर विसर गेल । चलैय काल  
फकरा साँव नहि रहलैक ।”

बटुकजी कहलथिन्ह—“हमरा यय त पड़ल रहै लेकिन जतरा के बखत लालनेन  
के नाम केवल कऽ लीतै ? सब हमों पर मार-मार कऽ छुटैत !”

लालकाजी ‘लान’क नाम छारें लागलैक के ‘रुपटेन’ कहैत रहथिन्ह ।  
बजलीह “यात्रा पहर ‘तेल’क नाम नहि लऽकऽ ‘चिकन’ बाधक चाही । किन्तु  
‘सामटेन’ कहन कौन दउ ?”

“रुपटेन” डराक समतनन कय ओथड़यक वस्तु किनय-बसाहय बाजार चललाह ।  
सामटेन अमरा पर जतरा नी बिछा मुस्ताय लागलीह । जतराथिआइन बटुकनियों  
दऽ कऽ कुहरय लगलीह—“आहि, आहि, आहि । गनर-गनर टूटल जा रहल अछि।”

भलनइमनाथी हुनक तात्पर्य बुझि कैर जौतय लागलथिन्ह । जतराथिआइन  
कहलथिन्ह—“हैं आहिना कऽ छुट्टी दबा दिवऽ । भगवान बेटा रेधु ।...कनेक और  
जो में हौ, हौ...ओतक जोर सँ नहि । जाइ, लाइछ दलहूँ ।

जतराथिआइन केँ जौतबैत दाखि लालकाजी अपना दयादनी पर अनुसेव करैत  
बजलीह—“गै बुचियो । भितियाइनकेँ पैर टटाइत हेलैक । कनक ससरि दहल ।”

दुनमुनका केँ एहि कथाक गूढ़ मर्म नहि बुझि पड़लैक । ओँ पैर पसारि  
कऽ बुचोदइ सँ मुख्य लंगाराऽ लगलीह ।

हँ देखि लालकाजी केँ विदक छुटलीह । अभिसर करैत बाजऽ लगलीह—“संसार  
म ककर कअ नहि । जयन अपन काखिक धौ थरो अरन नहि होइत छैक, तखन  
अनकर बाइलि दयादनी-गौतनी की काज औतैक ? हम त अलकाल धरि मैथाक अपन  
धरि सेवा करैत गलिगलि । मुइना काल आर्शोबाद दलनिह—“ऐ मधुरानो । अहाँ बड़  
मन केल । भगवान हमरा मन मीगति सभ केँ दधुन्ह ” मुदा आजक बहुरिय फकरा  
गहनेन छैक । लूठ जठानुस केँ देखि कऽ जौतक डरें छोड़ करैत अछि  
किनय बहुअन्नन अपने फुरन तेल-कूर लगाअति सँ त आब सिइसै रहत । कनेक  
१५८ / द्विरागमन

अइत जाइत अलेखक न कोइत राइत क भऽ दनि । आब जयन ममइ तू भयन  
त तू नहि ।

[किन्तु] लालकाजी केँ नहि छलैक । किन्तु त दुनमुनकाक एक छोटछोट  
लान त सकयल उमरैत जायत हुनका एक भणि पलल

अपन खनक मुँहसँ निकलैत त तू लालकाजी केँ ओय वश पिय गलिह  
दामनका केँ कय डक दुरइ होइत धरि अलच्छ भणि कहैत छलैक मधुरानुस  
म-पदय लगलैक । ओ दयादनी केँ वधक हल भुन-चुनिक आयाअत यजलीह  
ओ जयनिकाकेँ बिसरि जाक छोटछोट लागलैक । अलेखक केँ भयधर कय जह  
त “धइ—“मैया कनक फकरा” जौत भणि ललक नहि । “कट” होइत माइग  
म कहथिन्ह

‘आब आब । अलेख । वड मधुरानुस  
धन कूट । मधुरानुस । हम दुन सँ छी  
अलि । जौत अलि । वड मुँहसँ  
मुँह धेम । मधुरानुस । हम मधुरानुस छी

“एकटा” अलच्छ पर कलथिन्ह

‘लछामिनि रय  
त कान बूझलै । रय ।  
आलमीक खइ बहल ग । रय  
हँ हम बूझलै लछामिनि रय ।

एकटा ‘छुट्टी’ पर कहथिन्ह

‘इजो में यह लछामिनि  
एपन दखि बिधुअइलौ ।  
कन भी-डही एपन दल ।  
सर भर चाउर मंद ऐपनिह गेल ।  
हम बनाव धर तैरन बनाव  
एपन नाछि व । लछामिनि नाएव ।’

“एकटा” भयधुरानुस पर कलथिन्ह



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

संज्ञा चिह्नक "

आत्मिकताको विकासको लागि धर्म, विज्ञान, कला, साहित्य, खेल, योग, ध्यान, आदि विभिन्न विधाहरूको माध्यमबाट आत्मिक विकास गर्न सकिन्छ।

ग्यानि'अङ्कन कहल'अङ्कन-“हम त दुदरो के भाँटा खाएव नहि । भेंटत त  
फिर फल-फलहरो एकरे से बिबन बलितहूँ ।

तत्रत आतशानां धर्मिक कऽ खनि उत्पत्तिह 'दयधुन ए महिना ! बनारसी  
सा न मीं ह्येनिक रा यधुनक त कनक-कपेक रा सोह ठैक ! और केहन उन्वर !'

भद्रगङ्गायाः आश्रयित भय बन्धनम् - "तुं। अङ्कान्ति पादय नास चैर कतय  
सं ज्ञानेन । ई ४ हि ओ धृष्टा उता कः ज्ञानिप्रभानक हाथ मे दयत समलधिन्त

तत्र तं तर्जनीयं सग मे पङ्क्तिं ब्रह्मन् भवः "हौं हौं ! छेदु, छाद ! हं अहं  
छेद

इ प्रश्न की समाप्ति पर इस के साथ पाठ्य प्रदर्शक अंदा हाथ से छुटि कर  
गिर कर दो अंश और फल दः प्रति गिरः । अंदागणो दोम वमल कः समकैरः

स्वर्णिपुत्र इव अ भूयगङ्गावर्णी एनः स्नानं कुर्यात् पौनः

तबत लखनऊ का एक नज़र एक भंडारिण पर पड़ेलेक । ओ वृक्षोरादिक फानका  
चुड़ा फालापर लागल । खन ओ लखनऊ नर खनकेक तखन घेटी के  
अहराथिह के इ पारि मंडपानी अछि; एकटा री नहि पटलीक । एखन गंगा स्नान  
के हें को कुरा री धन कये ।

[illegible]

गालमाथ कदलधिस 'वश' हज क ? अहो जाकमि 'कहल' के राम दर्शन  
कः अहो जाड । ताव । हमर जाकमि धानर जाकमि वदना मे लगे छी । जखन अहो  
लकन आब न शम भँस लकन लगे छः अहो जाकमि की ही वदना ?

बहुधा यं वृत्तिं तस्मै च यत्नात् ७१ न कोऽप्यत्र कश्चित् क्षणाय गच्छेत्  
उभ ! ज्व एतद्भिः त्वं देखं कर्तव्यं किं वक्तुं रहस्य ।

जानकारी की आदि समस्त श्रेणी। इसी के अन्तर्गत हमें १ के लेख मिलते हैं।

१६२ द्विरागमनं

[illegible]

हिंसा स्वयंभूत धोवनगति से ३। यह भव एक द्वात्रिंशदश भाग कः  
 भाग भाग गतिधन कहलधन ॥ कवला गेब मुदा में विभिन्न दशन-पूजा करा  
 दय। ॥ स्वयं किछु वाजक बाहलधन विन मडक गुण मुदा दान्य मरम गेब पडनेक  
 बाहलधन अत दः धतुर-बेलपात आनि कः लावकाकीक हाथ में दलधन ॥ मकलक  
 गत्र पदावय लालधन

[illegible]

राष्ट्र तन्त्रम ३३३ मार हा भान्य ३३३

हस्त मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

[illegible]

1. 1955 के संवत्सरिक रूप में धर्म के लिए पढ़े गए  
2. 1955 के संवत्सरिक रूप में धर्म के लिए पढ़े गए

[illegible]

ग्रहण ज्ञान १६३





महाराष्ट्र के राजा श्री चंद्रशेखर वामन साहू के नाम से अग्रजों में गणेश विरस,  
द्विज राजान भगवत में गुरु का नाम शायद

१. दुष्क पत्रा ११ लक्षपत्रक इति ४ नवपत्रका नामय लिंगाय, इत्येवमनका।  
२. दुष्क पत्रा ११ लक्षपत्रक इति ४ नवपत्रका नामय लिंगाय, इत्येवमनका।

भारतीय उपमहासागर क्षेत्र में भारत का अधिकार क्षेत्र बढ़ाया जा रहा है।  
यह क्षेत्र भारत के समुद्री सीमा क्षेत्रों में शामिल है।  
यह क्षेत्र भारत के समुद्री सीमा क्षेत्रों में शामिल है।  
यह क्षेत्र भारत के समुद्री सीमा क्षेत्रों में शामिल है।

अध्यापक रासुर दिन भांग। नन्ही बन्दूक लातान। बापादल के घरक उचर  
लसकेन्ह। किन्हु बालकाकी बलक मां मार करक लख रहि रहलस, और रास कअ  
नैयर भऽ कऽ बैरा भल ।

सलील काल सभक अँखि मे पार्न भरि ऐलैन्ह । अवेशसनी बोर पोछैत  
यत्नलैन्ह "बहिना, 'संगक मुख बनारस आइत' स भऽ गेल । किन्तु फिरती बेरि संग  
फुर्कल गेल ।"

लालकाकी कहलथिन्ह--"को कहिऔन्ह बहिना । हमरो प्राण त घर पर टाडल  
अछि । कर्तक-स्नानक बाद हमले बिदा भऽ जाइब ।"

हुनमुनवाकी दुन्दुहिते कै प्रणाम करैत कर्नेत कर्नेत कहलखिन "हमरा से बहुत अपराध भेलैक, कहल-मुनल माफ करिहथि।"

सालकाको सुनकर धरिपण्ड १३३ कऽ उल्लेख कइलाधरक 'अब धरक सभटा  
भार जहाँ पर । जाते विट्ठी दब । जैसे जे भगवान कहिया धरक मुँह देखीनाह ।'

सतत घाड़गाड़ी आवि गलैन्ह । ग० नमनाथ झा बिचिया कऽ भलानाथ कैं  
कहलथिन्ह—“आब राम के च त च च चढ़ऽ कहिऔन्ह नहि त च च च चरिबजो  
देन छति अप्पत ।”



११६ / द्विगम्यत्व

[ ९ ]

### बुच्चीदाइक 'एडुकेशन'

आम्र एक अनुभाव संज्ञा संज्ञा मिश्र मसूरक इति ये आदि मसूरक और खतारमसूरक  
मसूरक निदेशानुसार बुद्धिदायक और मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक  
मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक  
मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक मसूरक

प्रथम दिन 'कर्ता' 'कर्म' 'क्रिया' हैं प्रारम्भ भेल । शास्त्राको बहुतसवस कोनटा लाम्गि, कान पथन मुनै रहलैह जे अ' की सभ पैहूँ आछि किन्तु बसकाल धरि नहि सुनि भेलैन्ह । हतात्मह भऽ बजलैन्ह "ए हो । और क'ना नोक छल सभ पाह भैलै छौह जे अलखै वान सभ बूझबैल छलैक । क्रिया कर्म मुइला पर होइत छैक कर्ता मुँह म अक दैत छैक । ई सभ त कदाह पुरातनक भिया पुता सिखथ जकरा यज्ञानिका पुजाधक हौह । हमर बेटा ई सभ जनि कऽ की करति ? अशुभ बात कैओ भाखथ ! हमरा मुइला पर एकर सभक विचार करिहऽ ।

रति में 'ताकु' के जौन दल खलि तथा छेक 'डरना' मुँह में दल लानाकारीक  
जो अकाय लालैन्ह । आ प्राते धेने अपन धानस फुरता सलन्हि ।

दूसर दिन रविवारमाग बुद्धोदाह के 'एकवचन' 'बहुवचन' बुझाये लागलसन्ह।  
लालकाको औध पजारैत छलीह काँच जारनका धुआँ सँ आँख नभ भाल छलैन्ह।  
उबार 'बहुवचन' 'यहुवचन' सुनैत सुनैत लालकाको के कष्टगिनक स्थान ग  
ब्राध्यानि प्रज्वलित भऽ उठलैन्ह, बजलैन्ह - "एँ हौ ! एक पहर सँ हाथ बहुवचन'  
कि हाथ 'यहुवचन' । दूसर जानी वचन नहि सुनैत छिअँह । भय भक्तो झाँकाइत  
छी और तारा बहुवचन मोन पईत छैह । एकवार माधवचन पहुँ सँ बाहर हँइतैह तखन  
न बुझितिअँह जे सपूत भेलाह !"

रति में जखन लालकण्ठी "कार्तिक जीराणू नाशव अरित सुतय गीहीत त  
युक्तीदाह कै चिन्तित देखि पुछलधन- "तारा का होह छोक ज कच्छमच्छ कर  
छे ? निन्द किएक नहि पड़ैत छोक ?"

वृत्तीदाह उदास भव कहलथिन्ह—“पेय कलने छथिन्ह ३ ३/४ २१ कान काँ

भुन राह छैक तकर मधक धाम और कान-कान भुन में 'न' लगी छैक से मध ठकान राखक भान । मैड सभ मन पाई छिरेक ।"

ई मूर्ख लालकाकी झोथ और भय में धरधर काँपय लगलीह । वटा के साँ पाँ मध बजलीह— "सहाबोर जी तारा कहिया सुमनि दधुन्ह ? कालिह राति 'कदमन न आइ' ति भूत । यैह सब बाल तोरा पढाइ में लिखैत छैह ? हम कहैत रहलीह जे समावण-सहाभयनक नीक-नीक ज्ञान मिलीधन न हमरें सुनब । म सिखयैत छथिन्ह की त भूत-प्रेत-वैताल ! कौन-कौन भुनक की नाम होइ छैक ? कौन-कौन भुन भविष्यत आइ । वाय र वाय आइ धरि राति हम विधियइत रहब । खबरदार जे आइ दिन में 'हरि कहिया' राति कऽ पातक भय सत रहब ।"

ई कालिह लालकाकी भयक मर 'हनुमान चालीसा' पाठ करय लगल छलीह । नसर दिन बुच्चीदाइ हिमय शुरू कैलन्हि । साधरण उगड घटावत जनित छलीह आब 'मिन्न' सँ प्रारम्भ कैलन्हि । रवतोरमण 'हर' 'अंश' बुझनिहि छलाधन कि लालकाकी अग्रि पढ़िधन । एहि बेर सन्तुष्ट होइत कहलन्हि— "हँ, ई सभ बाल पढ़िने जानि सैत में नीक । 'मिन्न' त सासुर में कहिया में कहियो नोनहि पड़ैतक । तखन कतक 'अंश' गरीक केँ त 'हर' भयन होतैक जे सभ नीक जकाँ बुझ दहैक । मिन्नक दयार गनिया त पहिनिहि में सभ हड़पन छैन्ह । इतों जी तशिमार भऽ क जाइति तखन ने बँट खखरा करा कऽ अपन हिमय सति ।"

एक दिन रवतोरमण छन्दक पुस्तक खोलि बुच्चीदाइ केँ 'सवैया' क मात्रा बुझवैत रहथिन्ह । लालकाकी बजलीह— "ई त हमई बुझा देखैक । एक सबें मयाइ, दू सबें अयाइ, तीन सबें...अरसाहा मने नहि पड़ैत अछि ।"

रवतोरमण कहलन्हि— "पडाइ खाला सवैया नहि । ई पिगल पढ़ैत अछि ।"

लालकाकी उत्तरित भऽ कऽ बजलीह— "बापक घर मुहरा पुतक घर हराश' लोहर याप भयर' सामन कहिया 'पिगल' छँखे नहि कैलधुन्ह और ता' सभ एखन में 'कठपिगल' बने जाइ छैह । ई कैमलि कैमलि पिगल छँखेन त अ भ्रमक काज कान चलैतक ?"

बुच्चीदाइ 'पिगल' छँडि 'गज' गजी गजाः' घोखय लगलीह ।

लालकाकी आँरा यमन बजलीह— "हम सँ छो, तो गजै छँ । ई कौन पबनाइ कहयैत छैक ? हम तोकस गीजी और नों हमरा कचकचावें गज गजी गजन् । आधि कऽ सहारा बल नहि त मध भंडितरै बहर कऽ देखैक ।"

१६८ / द्विगमन

एक दिन रवतोरमण पुनः और भुनय यदर तक यज्ञधन बुच्चीदाइ केँ बुझवैत रहथिन्ह । ई दरिद्र लालकाकी पुछलन्हि— "मिदौक चरनिने सँ पाँह सभ क कान भुनान ?"

रवाँ "मिसर बदन छथिन्ह जे ।"

लालकाकी— "हुनका ब्रह्म जे मंगल भवन में विवाह नाम करीत होतैक में लोह' पदक नाम अय्याम छैन्ह । हमरा मध केँ आकर ठहरि जलन कान फल । एहि गजधन में त विष्णुसहस्रनाम पाठ करति त धमै हँडैतक ।"

एक राति बुच्चीदाइ केँ भयगान दाखि लालकाकी पुछलन्हि— "की सोचैत छै ?"

बुच्चीदाइ कहलन्हि— "विनायक पहिल गज' बहराइ कहिया मुहलक सँ मन पाई छिरेक ।"

लालकाकी मुँह गोंहछा कऽ बजलीह— "अनकखल धत सुनि कऽ देहो जोग । विनायक बहराइ सँ तोरा कान काज ? ओ तारा तौन में कि तरह में ? कहियो मरी ? तोरा की एकदृष्ट करबक छँक जे आँहि पा' बहाल छै ? धनो खानि कुप्यैत सती ! आ, पैर दबो हन ।"

दसर दिन प्रातः काल लालकाकी सराह में वैधेय काढ़ने पूजा करैत छलीह । वर बुच्चीदाइ अपन अंग्रेजीक 'रीडर' रटब शुरू कैलन्हि ।

"दि एग इज इन दैट हिम — ठस सहरती में अंश है ।"

बारबार तस्तरौ-अण्डक नाम सुनि लालकाकी खीझा उठलीह । जप समाप्त होइनि वती पर फुफुज कऽ छल्लैह— "ए. ए. ए. अक्षर औरैनी पढ़ि कऽ नेवरा के अण्डा घना देखै । कनक और पढ़ि जेब तखन हमरो मुर्ग बन्दै ।"

ई कहैत लालकाकी तपस कऽ सराह में जप चालीह । अको विन बुच्चीदाइक दू हरमनियम किता कऽ छलैक । किन्तु निरुद्धी केँ ? तखन ई विचार भेल जे रवतोरमण पढ़िने अरने माइजी सँ सीखि आवथि और तखन बहिन केँ मित्र'यथि । तदनुसार रवतोरमण माइजक अत्यंत जा 'सरगम' सीखि ऐलाइ और बुच्चीदाइ केँ सती पढ़ी बिहा देलन्हि ।

समयकाल बुच्चीदाइ रयज करय लगलीह । लालकाकोक कन टनकन होतैक तन जना अपनक स्तर तोर भेल जाइक तेना-तेना हुनक टनक वृत्त लाइन्ह । अगिर हुनका नहि रहि भैरव बुच्चीदाइ 'सा नि ध प' क अण्डा में लोह

बुच्चीदाइक 'एडुकेशन' / १६९

कि धन दऽ एक धनक पीठ में लपकैन्ह । लालकाकी लोचन बजलीह—“बड़ शौख ! हमर पुटपुगे फाटल जाइ अछि और ई फटिमाय बैसली हय । तखन से पधनी पधनी सुनै सुनै कान बहोर भऽ गेल । कऽ पधनी बल्लोह अछि ! चल, फरिा तुलनाक रस बरका कऽ हमरा के न भे दार लखन अपन मित्रिओ भोज रहिहैं ।”

एक दिन बुचोदाइ ‘बैरम पण्ड’ एतनाक लऽ कऽ निव मध होयल रहिह । एक जाका टोपक युवनि के दंगल बजल्लेह दखल ग गाय ! कहन लेक !”

लालकाकी मित्रि कऽ बजलीह—“गे दाइ गे दाइ ! गदरा सन भाउनि और औचर नशार ! दखियौ न काना उतम भलि एहि अछि ? एकारली भाखे संकोध नहि हमरा लोचन के पुता उधार भऽ कऽ अछि ताकि होइत । और एकटा लखे धन सन ! हमरा सभक बेटी-पुताहु एता करैत त... ।”

ताका रविवारमग एकटा रबड़क स्थिमिदू स्ट नेन पहुँचि गलाह । किछु संकुचन भऽ बजल्लेह—मिन्नक इच्छा होइ छैन्ह जे इ बुचोदाइ हलनइ भेखि जाय । तँ ई हल्लुक पोशक किनलधिन्ह अछि ।”

लालकाकी जमाय के नाना उपाधि से विभूषित करैत बजलीह “बड़ सभारि ! हमर बेटी नेम न आछि जे जीधिया रहिरनि ? हम अपना लोहाँ में एहन निलेज नहि बनऽ देखैक ।”

ई कहि लालकाकी रबड़क राशक के मुड़ी मुड़ी कय मोड़ी में फकलधिन्ह । आज हुनक जो डचटि गेलैन्ह ।

जाहि दिन बुचोदाइक हनु नैडगिंटनक सर किन कऽ एलैन्ह ताही दिन लालकाकी गामक हेतु अपन भोटा चाय सरिदाचय लागि गेलीह । बेटी के कहलधिन्ह “बाजि एलहुँ एहन बेटी जमाय से आब हमरा नहि दखल जाइत अछि । दरी फुलो विलायलो कलि । खोजन चललीह बागक चालि न अपना चाय बिलरि गलीह ! देखैत देखैत ओछि पाथर भऽ गेल । हमरा आब गाम लऽ चलइ । तखन जे जे मन आवैक से से करि जाओ ।”

बेटोक कतबो कनने-फिज्जत राश जगायक बुझौने लालकाकी नहि रुकलीह । ओ बेटोक संग गामक हेतु बिदा भऽ गेलीह ।



लालकाकीक जैन्ह एक नवीन समस्या उपस्थित भय गेल । बुचोदाइ एखन १७० / द्विभागन

एतना रवाम से बागोन नीच छलीह ओ लालकाकी नीच न होइत छलीह ओ व कालकरी श्रुति हो न काना ?

मिन्नक इ समस्या रखत हलन भऽ गेल । एक दिन मिन्नजी के दुलही आ गेलीह । ओ मिन्नक बागोन लखी के अप माय लगलीधिन्ह किन्तु दुधमदम न मीमायलण लखी दगा भ गेल १७० । दु लखी धरि मिन्नक बुचोदाइक न गेल छलीह अल्ले हलन न गेल गेल १७० रखत जात पर बिचल १७० बल्लोह ओ गेल हलन एक मिन्नक जोन १७० कऽ देखय गेलधिन्ह ।

ई अधूनपूर्व घटना दाख मिन्नजी के एक विलक्षण रसक अनुभूति भेलैन्ह गाथा सीक हाथ से पानि पिउला में ते मधुर छैक तकर प्रथम अनुभव हुनका जीवन में आइ भेलैन्ह । बागिका पत्नीक कंठस्वर सुनबाक अभिप्राय से आ पुछलधिन्ह—“ताकुर कनव मोल ?”

बुचोदाइ अछि निहुरैत नहुँ-नहुँ उत्तर देलधिन्ह—“गंग्रस्मान करय गेल छैक ।” मिन्नजी पत्नीक हाथ भऽ पुछलैन्ह “अहाँ हमरा दिश तकैत छी कियैक नहि ?”

बुचोदाइ सजा कऽ आहिठाम से जाय लगलीह । मिन्नजी कहलधिन्ह—“सुनु ! हमरा माथ में बड़ह जोर धाह फुकने अछि । तँ कऽ देखू त !”

आब बुचोदाइ नहि जा सकलीह । लजाइत-लजाइत कपार पर आबुर दऽ कऽ दखलधिन्ह त काठ फुटैत ।

मिन्नजी कहलधिन्ह—“तँका पानिक पट्टी दऽ सकैत छी ?”

बुचोदाइ अत्यन्त फुली से ज अपरा पट्टी से एक साफ लला बाहर केलैन्ह और भानस घर से एक बाटी पानि नेन पहुँचि गलाह । सोला में ठाँह भय लला भिजा भिजा पट्टी देखय लगलधिन्ह । मिन्नजी अन्व शैतलतक अनुभव करय लगलाह तँना उत्तर मिन्नजी कहलधिन्ह—“अब अहाँ ज सकै छे ।”

किन्तु बुचोदाइ नहि गलीह मिन्नजी के आँखन तर नै जात भेलैन्ह जे के ओ रंधान में बैसल पैर दबा रहल अछि । ओ मन में विचारय लगलैन्ह “हम त एहि कालिकाक प्रति घोर निष्पूर व्यवहार कैन छिएक । एकरा हुदय में रनेहक अंकुर जोना उत्पन्न भय गेलैक ?”

आदिदिन ‘ताकुर’ के ऐसा ये बेसी विलम्ब भऽ गेलैक । किन्तु ई अपराध तेहन मधुरफलधुक्त भेलैक न मिन्नजी के सपडक बदला पुरस्कार देबाक इच्छा भेलैन्ह

बुचोदाइक ‘एहकेशन’ / १७१



इसके साथ संकायक अध्यापन अनुष्ठान द्वारा 'किन्तु' उना अना एन पल्के  
धन अना धन पल्के नान नान गृह-शिक्षक सम्बन्ध और हास्य लगाने

अध्यापन में दुवने पल्के के निम्नलिखित धन अंश अना भवितव्य भवामी धनपर प  
वदन कम धनपर शिक्षण पल्के शान्तनोय मोक्षन में नमिक गान्धीयपुस्तक पल्के  
गान्धी नमिक गान्धीयपुस्तक में निम्नलिखित धन अंश धनपर किन्तु एहन अधिधन धनक पालन  
कालक अना धनपरपुस्तक शिक्षण गान्धीयपुस्तक अना धनपरपुस्तक चला

अध्यापन एन में न इत्यक पल्के गृह' इत्यक गान्धी के अत्यन्त लघु कऽ  
देन छेन । इत्यक पल्के एक धन विलस में 'भूगोल' के पढ़ाई में भूगोल आबि जगह  
और इतिहास परिक्रम में परिणत भऽ जइछ । इत्यक एक लघुगठन अत्यन्तक इत्यक  
में पल्के धन में अध्यापकके चित्त विषय विषय में विषय 'विलस' पर न छेन  
एन भालक एक गान्धीयपुस्तक शिक्षण हनु लमन अनाधिन के शन्य में नध देखानि  
के किन्तु में परिणत कय दऽ सकैछ । एहन परिस्थिति में कालक गान्धी पल्के धन  
मैतारि मैतारि धन मैतारि लानि जइ छेन और साहित्यरचनाक मंग मंग कऽ रचना  
में इत्यक भऽ जइ छेन । साहित्यरचनाक अध्यापन गान्धीयपुस्तक गान्धीयपुस्तक में विलस  
भऽ जइछ । लघुगठनक विचार भऽ गान्धी पर जइ कऽ सम्पन्न हाइछ और भवामक  
लघुगठन एकत्र पर अद्यतनक गान्धीयपुस्तक हाइछ-हाइछ दू हृदयक दैनमय विराहित भऽ  
जइछ ।

मिश्रजें दाखलनि जे अध्यापन पल्के हनु शिक्षण-मरणि प्रसन्न करब रहिन  
कटिन् जग कर्षणक धन में धनपर धन धनपर । अध्यापन आ एक 'मास्टरनी' के  
गुण में धनपर । गान्धीयपुस्तक एक शिक्षण गान्धीयपुस्तक गान्धीयपुस्तक जे अत्यन्त भारतीय  
परिणत धनपर कर्मका विराजते मेनक जान करैत छेन । इत्यक 'वृत्त' 'गठन' तथा  
'हट' दृष्टि कऽ इत्यक 'विद्युत्' तथा 'कदम' सहस नहि कय सकै छेन  
अ अपनई 'मिस मास्टर' आ 'मिस मास्टर' कहाए पसंद करैत छेन ।

'मिस मास्टर' नरत्नक अधिनिर्देशन । अध्यापन की छेन से त अत  
नहि । किन्तु ओ पहिले एक गिज्ञान गान्धीयपुस्तक में गिज्ञान छेन । काना अत्यन्त  
कारण में 'रिटार' कय आध 'गुण' आदि द्वारा स्वच्छन जीवन कर्षण करैत छेन ।  
मिस मास्टर अध्यापक और अध्यापक में लगेन छेन । पाठ्य, वेसरी तथा शिक्षकक  
कर्षणपूर्ण प्रयोग में आ अत्यन्त अत्यन्त अत्यन्त और कऽ कऽ नहि लागय दैत छेन  
अध्यापन । ओ एक सै टका मरिण पर बुन्नीय के पढ़ाई नहि लेलनि

जानुअर मिस मास्टर कऽ गान्धीयपुस्तक ( 'मिस मास्टर' ) और हाथ में  
गान्धीयपुस्तक नान बुन्नीय के लक्षण धनपर हनु लगेन गान्धीयपुस्तक में मिश्रजें एक  
धन 'मिस मास्टर' धनपर

मिस मास्टर गान्धीयपुस्तक 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर'  
अध्यापक नमिक गान्धीयपुस्तक 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर'  
अध्यापक नमिक गान्धीयपुस्तक 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर'  
अध्यापक नमिक गान्धीयपुस्तक 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर' 'मिस मास्टर'

इत्यक पल्के अध्यापक बुन्नीय अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक

किन्तु गान्धीयपुस्तक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक

बुन्नीय अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक

मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक  
मिस मास्टर अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक

'मिस मास्टर' के लक्षण गान्धीयपुस्तक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक अध्यापक





मिश्रजी बजल्लह 'किश' 'कड़' जईनल्लह उदि हा ॥ १५ ॥ अय्य वनक टाइम  
 भाव कहां अछि ? है ॥ १५ ॥ अछि ज 'किश' 'कड़' अपना संगहि नम चलो  
 लकर अय्य जईनल्लह पहुँचल 'जिश' संह जाल अछि 'कड़ो' खराब भ' जाल ।  
 बजल्लह 'किश' और 'कड़' क नाम सुनि भिन्न संहिवाक मुँह में पनि भरि  
 छै । ॥ १५ ॥ गान गुंन अ अय्य विचरि ॥ तल्लह ॥ ज भिन्न दूक म बन भेल  
 त ॥ १५ ॥ अछि उक ॥ अय्य संह जाल अय्य दूक बजल्लह 'जिश' पन ॥ १५ ॥  
 चन

बजल्लह कहल्लह 'अय्य गम पीछ अछि , सोम गम बँटल्लह जाल कम  
 मं कम क ययम बाने हं तखन एकटा विधि ओर हाइत छैक । वाक मंग वरियत  
 जाइ छैक

सी ॥ गी ॥ अय्य ॥ १५ ॥ बजल्लह "अय्य न एक टाइम नहि अछि ज  
 इनांभरशन काइ ( नियन्त्रण पत्र ) छपावो । अच्छा, त बरियत म मिस संहिवा बजल्लह  
 गम गंधवा धाड़क नाकर-नकर करत अन्त में राजे ॥ १५ ॥ गल्लेह ।

मभ हाक टाक कब न ॥ १५ ॥ मिश्र सासुरक पता सैं तब दल्लि अ "हकाक  
 भंतर द्विगमनक प्रथम कक हमर नाक बरियतक संगे अछि हाइत ज



[ १० ]

## वर-वरियातक विधि

तब पहुँचल दो यडभट्ट जाल तब तबकाज बजल्लह 'कड़' न भला  
 ना जाइ द्विगमन भानेह ॥ १५ ॥

भाल्लह अय्यभदन करत कहल्लह 'त ! द्विगमन में कतक औरआजान  
 अय्य गइ छैक । कयक हन क दाल्ल गहत गगल

न ॥ अय्य विचरि बडल्लह नकभुल्लह, मडगका, हिकय पहुँचो  
 + वल

भाल्लह "अय्य यनन वासन जाइ ।

न ॥ "अय्य वरि अय्य भिन्न वरि जयय कइती करत भाल्लह  
 पाठय

भाल्लह नयन गान अय्य भानेह तब छैक ।

न ॥ गुण्डा नय अय्य नयनो भिन्नवान, जाकर अय्यी ॥

भाल्लह "अय्य वरियत काज हाइ छैक ।"

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । सरकंडक पनी वरि  
 क जगड तयार हाइ छैक जाल वरि छैक । पौढो लिखल जाइ छैक ।"

भाल्लह "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।"

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।"

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।

भाल्लह "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।  
 न ॥ अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।  
 न ॥ अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।

भाल्लह "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।

न ॥ "अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक । अय्य वरि अय्य वरि वरि छैक ।



गंगा संगे वागें आन्य बलि अथेक सहा अरचय नहि ।

अ० "संयुक्त तु लगत्त विद्" कऽ इव पठ्यम् ?

म्याः -" से बहि हंसन्त । छम्बनक वरा उरुत्तक औगन्तु तेमा बुद्धियाक बापक

‘‘तु एव विद्यामयं नदिं त्रैलोक्यं ॥ ३० ॥ किं फलितो ज्योतिषिणा हैम ?’’

[illegible]

आल अग्रधाम भऽ गेलहूँ । सैचरक भार हिनके धर रहतेक ।”

अ. १० "वक्र, जलान ओ समय अंगक त वृद्धम जैक"

मार्ग-११ दिल्ली-राजस्थान राजमार्ग पर दिल्ली से १०० कि.मी. दक्षिण दिशा में स्थित है।  
 यह एक छोटा सा गाँव है।

इ वाक्यात् न संभाव्यते अत्र सूक्तं किं एव मन्त्रं हस्तद्वारेण गीतं सन्तानकं गीतं  
अथि कः कृत्वा भद्रं गच्छेत् इत्यमुं श्रुत्वा श्रीमद्भगवान्वाक्यं तत्र दत्त्वा न तत्र छात्राह  
मन्त्रः एतदन्तर्ह पण्यं ह औत्त आह्वयं भद्रं गच्छेत् । का वरिध्या अथि गच्छेत् ।"

आत्मिकता का अर्थ गिरेन खजन्ने "देव ते देव । त्वात्त काम त्वात्त ईश्वर ?  
कथा प्रथम पान दस्तावेज पर गीत ईश्वर

न्यायन परमा स्तुत्यक माडा रों पांतांटा ऊँ चण्डाक्ष नमोस्तुते शृंगर भ्रमन्  
शृङ्गाक १४ धरी यच्चन्द्राद आहूत म अर्ध सभ के पुगाम कैलांधन

सुखान्वाइक २२ वट र्गस मय कअ मय र्गस र्गस किन्तु एहय वटो के पुष्पाज्जति देवक चाहा अथवा जिवारज्जति ? भूक १ भीमांमा कखक समय नहि  
१४४

झरझरानाथ के अनेक दखि सल्लाकाकी कहलथिन्ह "आउ ऐ बाउ । यह  
 दार पर एतहूँ । घर बरियात दरवाजा लगल अछि । जा कूँ सम्भाषण करिऔक मऽ ।  
 ए प्रबुक्कन" बड़का भारीगो छान्खो चौकी बल्लां खुदुम इ रस अत दऽ दिऔन्ह  
 मऽ ।"

जगत्पितामह सदा प्रियुः, कः बहोलाह । किन्तु दालन पर आधि दाँवै छाम  
न बाग म मरुत । और हाथ म समझक बग नर एक मम दाह अंठ और एक दापथल

१८० / द्विरागमन

175. प्रत्येक जगह से आ गरीबों का भरणपोषण ।

इ एक मिनट भारछंडेनर किंरनय्यकमुद्र तकां पुत्रु पहलाह मग २५२ वि२।  
 म. मनीक। ताम्रर हुमक एन धरैरुं छट १६ नगरज्ज ३५३ छारको नका पर  
 म. मनीक मगि २३१ म. हुम. म. उचुनोक हुंग डी कहररुशिर ३५३ म. ३५३  
 युमर म. ३५३ म. ३५३

मम सवित्रं दुःखं आशुचिं वृद्धिं पुष्टान्धनम् ॥ वायं स्वागामारः क्रिधरं है ॥  
 इत्यष्टोत्तमं माधवः परित्यज्यैव यजन्तम् ॥ वायं न प्रष्टुमं गं वदन् दा है  
 कश्च छवक-भानेकं सौं कामं न्हौं पशुगं । 'वाय' (गौ) मे आज्ञा कौ रहत है? ॥  
 मम सवित्रा कनेक मुस्करावत शहरांमिश्रितं उर्दु नः यजन्तम् ॥ वाही । धर  
 मे गोसलखाग है ॥

अथर्ववेद के हस्तिलिखित 'ख' में म न पञ्जाक गच्छ राम हुआ है और गंम ऊम का खूना हमरा सभक्त घर पे - नहीं होता है ।'

यह नई सभ होइ छल, और जान एहन दुय लागल : लालकाकी धमकीह 'ए  
व'न परिछन हैतह तखन ने अयय औरन औरह । आब सभ सँ पहिन हैतह शङ्क  
नाल ककरा पड़ियैक ।"

अध्यास-10-“भुलमत्तिया और सूर्यमुखी का कंड होकर दंड ऊँचेक । दूनु जतय  
मथन अछि ततय जोड़त भंड कंड । गैर मथन लेय दूनु पड़ौय गेल । बहुत दिन जिनै  
लेय ।”

पूज्यः "इहा दुःखं तं पण्डितं गौरीशं तं " अथै ॥ १ ॥ अखिल आवागमनं तत्कालं  
तस्मिन् सन्निहितं जे 'सरिता' अखि गोल "

३३२ 'गं धौआ, 'सरीता' भी पाहों कऽ भेंट करेन' एहिने ज कऽ सभनऽ  
ई म लऽ अपनऽक ॥१९॥ मरगै न गीतगाइन सभ कै अपन संगहि बजौन अवहन।

उत्पन्नकको के घनाने देखि मान्यभाओ कहस्यन्ह ।<sup>१०</sup> कचुवाती । एत  
२. ३. ४. यशस्वति भय ।<sup>११</sup> क नान्न चन्द्रौ लखियैक । कजरीया डाग हरिऔ ।  
३ ग वरियैक । वाहक मन्त्रमुरा ।<sup>१२</sup> कचुवाती ।

उत्तर प्रदेश के प्रथम राज्यपाल श्री जगन्मोहन शर्मा की मूर्ति का अनावरण किया गया।

वै. वा. १८१





आब मिश्रजों के उत्तर दिये वचित बुझि पड़लैन्ह । संभरलानुवच भजलैन्ह—“हिनी  
कुनरिए छधि ।”

ई सुनिन्हि ठहका पडि गए

फनटी माय बजलैन्ह—“गे दाह मे दाह । सभ परिधाय भइ गेल, बहुरिया पर  
वेण अछि । एहन दुहकनिमो मे क विधान करलैन्ह ?”

भखननवाला “अरखहीक भाग जालैन्ह । जेकर दू घर सभ मे किरि अएल  
छधि ।

काबर मे एहि तरहें हास-परिहास चलैत छल त भागलानथ ठकबाक माथ पर  
एकटा मोटा भजन अइल पहुँचलैन्ह । ललकाकी के डाला दैत कहलनिन्ह “एकरे  
अन्वेषण मे बहुत गति बोलि गेल । क जमे कखन काज भइ पड़ल ? दस बोड  
भोजिया ने एलहुँ अछि । ए । ओकर घर मे एतक लोक किएक जमा अछि ? जमाय  
अबि गेलैन्ह की ?”

लालकाकीक मुँह से सभटा समाचार सुनि कइ भोलानथ बजलैन्ह “नहि नहि।  
एहि खानि अछि छिन किएक होइ छी ? राहब-मेम न बड़का बड़का व्यक्तिक  
आहितम नेआ पूरइ जइ छैक और रहन आवर सरकार हाइ छैक तहन बाक गाँव  
के नहि दाइ छैक । हमरा सभक अहोभाग्य जे बड़ला मे रहयवेली मेम गुनि भईया  
न ऐलीह । दिनकी रहबा मे मायन हाजन मे कनका कोना बाँक किधुनि नहि हागय  
पवैन्ह ।”

आब मेम साहिबक पात्रक प्रबन्ध होयल लगलैन्ह । दुख मे लौच-बाट भेलैन्ह।  
हरदये कवल जोपरन कइ आछाने गलैन्ह बड़का धा मे एक भईया मही भल  
जैति कइ परभल गलैन्ह अंतरह टा बरि मे लैता चलैन्ह जोग-किलास मीति  
कइ पनि धैल गलैन्ह । पै धाबक हुनु चिलमनी-पेन्ही गलैन्ह गलैन्ह

लालकाकी एक बरि आपनि केलनिन्ह किन्तु भोगमाथ बजलैन्ह “नहि ।  
आ राहु-गहियाक धनी मे नहि छधि जे अछोष जकां बहर जात पर खाआ दखैन्ह।  
गहाँ अति मे जइलैन्ह जे सभ सभ दल सुद कइ लल । जे जइलैन्ह धौती आबिए  
गलैन्ह अछि तखन सोजनक लतार किएक न करबैन्ह ? आ तइ लु या नहि पहिरधु।  
रम अपन घरक मयोंद किएक खादथ ?”

इध किछु लीक भइ गेल पर भोलानथ निस साहिब के वज्रवय गलनिन्ह।  
ओ एलीकले एकसरि बेगलें नैसल ओध नय छीह । दाइक काल मे भिम साहिब  
१८४ / द्विरागम

इध कइ उदलैन्ह ओर भोलानथ के दाह दीख मीति । अछान भइ उकल । कति  
रमक गहाँ चललैन्ह

“सीरी” हाथ सुनि भोलानथ छन मे पडि गलैन्ह । गल साँवर के मीति मल्ल  
क अवेक छैक वा “सीरी घर” क ? एहि संशयक निरूपण जे नहि कइ सकलैन्ह  
किन दूक इ भविष्य भइ गेलैन्ह के भिम साहिब के खंगल पिरबा अछि  
पार अब खंगल पर छँडि देखक जहाँ । तँ ओ भिम साहिब के आइल मे अछि  
जम से बजलैन्ह “अब अहाँ लकनि दिनकर राधचिंत अपन नवगत करि जेयौन्ह।  
हम मिसर से भेट करय जेइ छिन्ह

मेम भोजन करय अयल अछि” इ बुझलैन्ह सभ खेगण तमाश दायक हुनु  
उमड़ि पड़लैन्ह । दुनमुनकाकी पर धाबाबक हेतु एक लोटा पनि लइ कइ छँडि भेलैन्ह।  
किन्तु मेम साहिब नुत-पैतबा पहिरनहि अरल र र चलि गलैन्ह । एहि पर पहिरन  
भाला पड़ल

ऊँक मे लबाक कारण मेम सेहुन मोहि कइ गति बैसि सकलैन्ह । दू पैर  
लगा कइ असन पर बैसथे पड़लैन्ह । एहि पर दसस ठाका पवेल ।

भूरी कटैक अभ्यास पश मेम के भाग सनि कइ करि नहि बनायय एलैन्ह।  
दूर से खँवा न नहि अविआइन्ह खाँम खँमि पड़ैन्ह । अयन्य आ एक एक टा  
धान मुँह मे दइय लगलैन्ह । एहि पर तमर उठका पड़ल ।

मेम अप्रतिभ भइ रडैक बरि के आसन जकां खँट खँट खाँम लगलैन्ह।  
ता दुनमुनकाकी डाला धूप लइ कइ पहुँच गलैन्ह । मेम के आग्रह करि  
कवलनिन्ह—“बहिनदाइ । और किछु चाहिन्ह ?”

ममक दूया दिखक पनै पर जगल लेन्ह । कहलनिन्ह—“कुछ ‘चाज’  
गोणइय ।”

दुनमुन “कान सोज ललैन्ह ।”  
मेम मुँसकल मे पडि गलैन्ह कहलनिन्ह “चाज”, पात लल, साँपल०३-  
३ गम० इ० चाज ।”

मेम खेगण के बुझि पड़लैन्ह जे गम अङ्गुली मे पडि रहल छधि । एहि  
मे जेन ललाक पड़ल

मेम साहिब दुनमुन कलै से तन दाग पड़लनिन्ह ।  
पल्लक नाय बजल मे कवलनिन्ह “चाज नाम क्या छलैन्ह ? और मायुक्त  
वर बरियलक विधि / १८५

अन्तराल नन नाति ॥ अन्तर माग रंगत हि गस्तधन । कितु वंओ फिर  
क' त्रय गां जे १५६

د

[ ११ ]  
सामाजिक आन्दोलन और भोजभात

एतद् प्रकृतं निरुद्धं च तत्र अतिशयं पूर्वपक्षे स्थापितं कथं च।  
 न 'साधु माधु' उच्चरत इत्येव लक्षणम् । यत्ना द्विजं हि तत्र उत्तरपक्षे कारिका लभते  
 एतद् पदसंज्ञकं यत् नमानं यद् द्विजं 'द्विज' इत्येतदेव किन्तु एतद् द्विजं चैव  
 च 'द्विज' इत्येतदेव 'द्विज' इति तत्र द्विजं चैव तत्र द्विजं चैव  
 द्विजं चैव तत्र द्विजं चैव तत्र द्विजं चैव तत्र द्विजं चैव तत्र द्विजं चैव





[illegible]

॥ अथ स मध कथा आदि गोपन ॥  
॥ १ ॥ ॥ अथ स मध कथा आदि गोपन ॥  
॥ १ ॥ ॥ अथ स मध कथा आदि गोपन ॥

[illegible]

महाराष्ट्र की भूमि में प्रचलित अनेक छन्दों में 'गणपति' का मन्त्रक  
'गण' की शब्दावली से प्रचलित 'गणपति' का मन्त्रक । 'गण' शब्द का अर्थ भक्त  
अथवा शिष्य, शिष्या, शिष्या ।

कनक सौम्य के काम में इच्छा करण में रहें । अन्तर्ध आ खदिर  
मोमोंक पर धर कर में मण्डल ।

महाराष्ट्र शासन, शिक्षण विभाग, अहमदनगर जिल्हा, अहमदनगर, महाराष्ट्र

[illegible]

भाषा: डॉ. जगन्नाथ के संग २५ कऽ मनें आन द गलाह । एनि स्वयं सुयोग  
मै लगन गदयल कऽ य दम कऽ २५ जयु जद हाथ द गलाह नाना-ल और अपन  
कऽ आन के लान प्रकार शूद कऽ एलाह तपा मुमुक्षु आन अना कऽ १ के शूद  
दऽ २५

एक घंटा का भावनायुक्त व्याख्यान । इससे ही न अर्ध घण्टिक  
‘कम सुख की धार’ पर बहस । प्रो. कोनार्गहर्ग मॉरि भावनायुक्त ।

राजकुमार ने कहा कि पृथ्वी धीरे-धीरे "आब को हलक कर रही है।"

नामकं यो कश्चिद्विदः "एकं द्वारं भवति न कदापि द्वारं भवति ।"

[illegible]

१९० / द्विभागभक्त

193. न  $\frac{f}{f - v_s}$  का मान बढ़ाये, तब  $\frac{f}{f - v_s}$  का मान बढ़ेगा कि नहीं?  $\frac{f}{f - v_s}$

[illegible][illegible]

१. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 २. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ३. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ४. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ५. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ६. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ७. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ८. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 ९. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः  
 १०. अथ वाच्यं न अत्र अपर पक्षो ननु विदुषां विदुषां भोजनार्थं लोकाः

आय ५१=कम आयकर ध्यान रखें एवं १ मई तक का लाभ प्राप्त

११३६ कालक उद्यान नरु ३२१

पं. मंगलेश झा दू-चरि रा चरित्र क. चरित्रक "बह अ द स बहो ब ब  
 चरित्र क स व विनम्रण य ब स अन्तः अति ।

स्व-विचारकृत समर्थ कर्तृ कल्पयन्ते "इति इह तत्त्वमस्य छन्दः यन्नि छन्द  
कः कालो गच्छेत् । अहं ब्रह्म स्वस्तुत्यनेन भक्त्यै प्रियं किञ्च तदपि वा एव च न  
अग्रे व ज्ञानेन ह्य हाइ अहि ।'

[illegible]

लाल बज्रलाल लो, खुरांगलाल एक वरि अं उल्लख

किहू कानूक उपान्न दह खनी उठाअन्न गत

द्वैतसिद्धिः प्रोक्तव्यमिति चेन्न तदुक्तं ब्रह्मसूत्रे ४५ 'सर्वत्र हि' इति । अतएव तत्र

प्रश्न की प्रकृति "अपेक्षा" के अर्थ में प्रकाश करने का प्रयास  
 है यह प्रश्न का अर्थ है

“मम सुमते” का कर्म प्रत्यय “सा” शब्दों से बना प्रत्यय प्रत्यय “मम”

सामाजिक आन्दोलन और भाजभान १९१





[illegible]



उत्तमवर्ग मात्र धर्म ही, लोक-व्यवस्था शिक्षा पर मड़त हैक। धर्मो समक दमक क प्रान मिश्र, तथा व्यवस्थात्मक मध्यक नशा पिछा इस ओकरा बनैत नहि, बिगड़ैत छैक। धर्मो शिक्षा आ धर्म के भोगवृत्ति के उद्दीष्ट नहि कम ध्यानवृत्ति के प्रोत्साहित करत। अहाँ धर्मन म्यत, शिक्षित होउ सखन की-शिक्षक असली अर्थ बुझवैक।”

नवतमजो उरि कऽ मुक्तक आग पर गेलक। सी० सी० मिश्र मनहंमय चिन्तन करत लगलाह-आधुनिक प्रगतिशील युगक क्रान्तिवादी विचार और एहि युद्धक प्रचलन मानवक आदर्श में कतक अंतर अछि? एक भाइयाक समान मानहर दोसर जलक समान शीतल। एहि दुनू में सत्य कोन?

सी० सी० मिश्र मनहि मन मिर बिजली तथा महात्माजीक ध्यातत्वक तुलना करत लगलाह। एक चञ्चल निहंरिणी समर शान्त महासागर। एक मज्जुपक पृति दोसर सन्तुष्टक भवना। एक देहधमना सुखार्थिका, दोसर देह और सुख के तुच्छ वृक्ष तपस्या निरत। मिश्रजो जतक अधक चिन्तन करत लगलाह ततक अधिक महात्माजीक प्रान हुनक श्रद्धा बढ़त लगलैक।



बुच्चीदाइ तुलसी चौरी लग भाय के कहैत रहथि-“आउन मे ई तुलसी को रोपने छै? दू-चारिटा ‘कोटन’क गमला मझा से।”

त सी० सी० मिश्र आइन मे पहुँचलाह। उपयुक्त वाक्य सुनि एक चिन्ता मन में उत्पन्न भऽ गेलैक, वही काल धरि साबैत रहलाह। अन्त में किछु निश्चय केलैक।

बटुकजी के बना कम कहलथिन्ह-“अहाँ जा कऽ महा आ कडार लऽ आठ।”

बटुकजी आश्चर्य चाँकत भऽ बबलाह-“ले जलैय। देखू बांधा। अपनही रोकियो देलन और आव फेन लाबहु कहै छथ। अहाँ त बोलेत रही जे साइकिल पर जाइ जाएब।”

सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह-“हम त साइकिल पर जाएब, लेकिन अहाँक बहिन धिना परदिक कोना कऽ जौलैत?”

बटुकजी के ई रहि बूझ पड़लैक जे बहिनोइ एथार्थ कहै छथि या हँसी करै छथि। आ मन में रातनय लगलाह-“इ त अजगूतो बात आइ हिनका मुँह से सुनाइ पड़ल। जाने कैसे पछिम मे सुरज उग गेलन।”



द्विरागमनक संस्मरण आनंद राम काव्यका दृष्टान्त कास अथ करत लखलैक।  
मौलिक और कानन

यिक्त दिन मे दावाला पर मरता आधुनिक बुच्चीदाइक नेतर आधुनिक व्यवस्था। कसत कुन्दन में आहुत आ प्रगतिशील शक्ति लगल। आधुनिक दाइ न केवल फऽ बाइ, भाइ आइ बहिन मध्यक गुण मन रह्य लगलैक।

महात्माजी आइन मे अर्थ लाचकरी के रूप करत बजलाह-“समान काम में एहिना सखन एतक अछि। ना, त एहिना हमरा धर से बिदा भेल रहइ। तँ त समान एकठाम नहि रहि सकै अछि। सभ तँ सभक बिडाइ भेनाइ अवश्यभरत छैक। यह मर्यादक नियम धर्मिक। यावत धरि लक एक ठाम रहै अछि नावन धरि एक दोसरक मांह रहै छैक। किन्तु कालचक्र ककरा नचायि एक ठाम नहि रहथ तँ सकै छैक। कतक करै जैवत?”

बुच्चीदाइ के आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह-“सोय समान रहइ। एहि से उत्तम प्रशंसा दे बिजलित मरक हुनू मरि भऽ सकै छैक।”

बुच्चीदाइ ओकर से हुनका एक धर्मि हँसथि माथ मे लग लल्लि। अथ हुनका माय-जिआइन तँ लगत मुडात मे चढ़ा दलथिन्ह।

सी० सी० मिश्र चलत काल महात्माजीक चरण छुँव जलथिन्ह महात्माजी आशीर्वाद दैलथिन्ह-“माला चंडी अहाँ के सी० सी० से चलेलर बनलहु।”

तावत साल कहगिया सभक दिशि लकि कहलथिन्ह-“आधुनिक धर्मन जाइ छैक। महमा ठठे।”

कहर तन कानन लल्लैक, बुच्चीदाइ और जन में वादू बाबू कहि आक्रां करत लल्लि। भुवन मलय कर्त अन्त बजलैक-“सुर रहइ। मंग लखै।”

गाइन दल कर्त-कर्म समदायनिक करण स्वर उठा दैलथिन्ह-

“वइ रे जतन से मियल के पासलहु सेहो भुवर नने जाय।”



हरिमोहन झाक 'काल' काल सभसँ सभसँ महत्वपूर्ण रचनामे अन्तर्भूत भऽ के आयल छनि । ओहि काल सभकेँ एहि संग्रहमे सम्मिलित नहि कथल गेल अछि । कारण जे ओ सभ अन्तर्भूत रचनाक आधारस्थान प्रकाशित होयथे करत । पाठक एत अध्येताक सदिग्धताक कारण एहि सभक श्रुती परीक्षामे दऽ देल गेल अछि ।

हरिमोहन झाक काल काल संग्रह सभसँ महत्वपूर्ण नहि रहल के कारण जे ओ सभसँ रचनासभकेँ ई कविता-संग्रह विशेष आनन्द ओ सन्तोष प्रदान करतनि । एतयक प्रयोजन नहि जे के ललकन 'जनसीदन प्रकाशन' रचनासभकेँ सभसँ यो खण्ड प्रकाशित के पाठक लोकनिकेँ हरिमोहन झाक सम्पूर्ण रचनाकें उपलब्ध आ सुलभ करबाक अनुष्ठान पूरा करत । पाठक साजनिष्ठ संस्थाकें भऽ एहि अनुष्ठानमे आश्रित अछि ।

## क्रम

- सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक / ६  
कन्याक नीलामी डाक / १०  
गिथिलाक मिहिर सँ / ११  
डाला झा / १२  
टी-पाटी / १६  
बुचकुन बाबा / २०  
पंडित सोकनि सँ / २३  
निरसन मामा / २५  
आगि / २६  
अङ्गरेजिया लङ्करीक समदाउनि / ३०  
गरीबनीक सारहमासा / ३१  
श्री यात्रीजीक प्रति : मैथिलीक छपित / ३२  
सौराठ / ३४  
अलगी / ३५  
अशोक-धाटिका मे / ३६  
पटना-स्तोत्र / ४०  
अक्षय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धाञ्जलि / ४३  
हिन्दी ओ मैथिली / ४४  
बुचकुन बाबाक दिट्ठी / ४६  
जगमग जगमग दीप जराक / ५०  
कलकत्ता गेला उत्तर / ५२  
अकाल / ५६  
कलकत्ता हमरा यङ परान्द / ५७

सलगमक रकण्ड / ६०  
 यूढानाथ / ६२  
 नवकी पीढ़ी सैं / ६६  
 पंडित ओ मेम / ६८  
 पंडित-विलाप / ७१  
 गंगाक घाट पर / ७२  
 समथक चक्र / ७४  
 महगी-माहात्म्य / ७५  
 रस-निमंत्रण / ७६  
 अकविताक प्रति : कविताक उक्ति / ७८  
 हम पाहुन छी / ७९  
 अनागत प्रेयसी सैं / ८१  
 भक्त्य-तीर्थ / ८३  
 मिष्टान्न / ८३  
 हे राजकमल / ८४  
 घटक सैं / ८५  
 पंडितजी सैं / ८५  
 कनिर्यौक समस्या / ८६  
 गुयतक / ८६  
 गजल / ८७  
 मातृभूमि / ८८  
 नारी वन्दना / ९०  
 हे सुलहि फेर माय / ९१  
 मातृभूमि वन्दना / ९२  
 चन्द्रमाक मृत्यु / ९४  
 मिशिला वन्दना / ९६

कवि हे ! आब कोदारें धरु / ९८  
 महगी / ९९  
 नव पराती / १००  
 चालिस आ चौहतरि / १०१  
 प्रयोगवादी कविता / १०२  
 स्व० ललित नारायण मिश्रक स्मृति ग / १०३  
 उद्गार / १०५  
 अन्तिम सत्य / १०६  
 मधुर भाषा मैथिली छी / १०७  
 छगुन्ता / १०८  
 विद्यापति पर्य महान हमर / १०९  
 आठ सकल / ११०  
 घूट्टर काला / ११२  
 घनगाम-महिषी स्मृति / ११५  
 मैथिली वन्दना / ११८  
 हे मातृभूमि केर माटी / ११९  
 कहू की ओ यावू / १२०  
 कश्मीर हमर थीक / १२३  
 मंगल प्रभात / १२५  
 दुधकुन बायाक स्वप्न / १२८  
 जय विद्यापति / १३०  
 शुभाशस्ता / १३०  
 पारिचारिका स्तोत्र / १३१  
 मनचन बाबा / १३३  
 एहि बेरक फगुआ / १३५  
 परतारु जुनि / १३६

## सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक

सनातनी बाबा

[ १ ]

ई पिठार सरना सँ भन्य, अरिन भाग्य कूर ।  
तहिना पुतहु रहथि समुद्र म इतिनि ता नहि दूर ।  
न भ्रान्त्य बाले विधवा अछि, करै जनम भार पाट  
वर कोबर रापर करवा लै, जाथि सभा सँघठ ॥

[ २ ]

शान्ति केश, वील हेरथि, ई धर्म नरि फौ धोक ।  
दुइ अक्षर पडि जाथि कलियुग, भरो पुरुषक रोक ।  
कलियुग म लं सकल पाप सौं, क्यों चढ़थि उदार ।  
ब्राह्मण भोजन निषेध करवाथि चूड़ा दहँ अँगार ॥

कलियुगी सुधारक

[ १ ]

बाहर बाजथि, 'तिलक प्रथा' केँ विष सम जानू ।  
घर मे बाजथि, 'दुइ हजार सौं' कम नहि आनू ।  
बाहर बाजथि, 'छुआछूत' केँ हाथ हटाऊ ।  
घर मे बाजथि, 'ई चर्मनि' धिक दूर भाँकू ॥  
बाजथि वग्न विलायती खुइयो टा क्यों जुनि कग  
घर अतनथि फरमाइशी, चटक मटक साडी बड़ो ॥

[ २ ]

ई सुधारक चितन धिक कहथि आत उकठाह ।  
विधवाधर्म मन्दर शनथि रोकथि जाल विवाह ॥  
शोकथि जाल विवाह, मभा मचक हाता धरि ।  
घर म कन्यादान वर्गथि मातमहि खर्ब धरि ॥  
घर म किछु गहि नल करथि, विधवा निस्तारक ।  
सुधारक छथि गहि म्वयं, ननै छथि बैद सुधारक ॥

[ 'विधवा', अगस्त १९२९ ]

सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक / ९



## कन्याक नीलामी डाक

वक्क घटक	गिह नग्नम जन्म भेल छन्हि, वयस न निनिको बीम। टोफनि अपन मिना लियऽ संवत उर्नेस सै होस ॥ कलम चारि वीघ अफना छन्हि, हर बहद बुझ जोड़। इह पड मासा किन्सलकि अछि टका छैन्ह नहि थोड़। यम किमतरा छधि, पानगर हिनका सन भेटत नै अना। (कानमे) नीम टका अरनहुँ कै भेटत, खैब सुपारी पान ॥
कन्याक घटक	कन्या त देखबा मुनका मे अछि हमार मे एक। एकरा प्रनि भरि पोख गनएव ई वापक छन्हि टेक ॥ किन्तु अहाँ त अपन लोक छो जनक देव से लेव। (कानमे) बिनु पचास टका नैन हम छथा न सोपय देव ॥
कन्याक पिता	करब कथा, पहिने जौ हमरा समेट कर्ज सधाबी। चरि सौ सँ गनि दिहऽ छवस्था, छट सिटान लिखबी ॥
वर	लावत टका तीन सै अगल, बाँकी देब सधाथ।
कन्याक पिता	हैडगोट लिख देल जाय, अपने कै कैल जमाय ॥

[ 'मिथिला' - ४६ १९९९ ]

## मिथिलाक मिहिर सँ

हे मिहिर ! फाँड आनय नेत्र बग्याह तेज वैभव विशाल ।  
मुनल क्षितहास मिहिराल मिथिला पर तानु म्नालोप रंशम जाल  
नभय कतय सँ कतय गल, नव-नव परिवर्तन बहुत भेल  
हे मिहिर ! अहाँ युग में किण्क बदयाचल मे छी अर्थात् गल ?

भण्यश्व एहन आँठयल किएक टकसे अछि (ध) नहि एक दोन  
छी वर्तमान घनवैत अहाँ जकरा, से ससरल घिर असोत ॥  
क्षितिजक महफा मे खन्द अहाँ नौहारक अछि लागल आहार ।  
नव-वधू जकाँ हाँइछ अहँक कौखन कह झपल कर उधार ॥

साँहयाएल छी आँचर ठगाक धन हुनकर गोटा किनार ।  
ता कोथमध्य 'तिरहुत'क अर्थ अछि भेल निबिड़तम अन्धकार ॥  
आँहबाक पतिल मध्य बन्द, भरता सँ झपल दीप जकाँ ।  
भितरे चमकै छी मुनल अहाँ हो जना टन पर दीप जकाँ ॥

छावल कुहेस ओ अन्धकार, लधने खहुँदसि झपसी विनाल  
बापुर, ठलुक, फडफड़ करै झालफल म जनक अछि जकाँ ।  
जागू दिनश । फाड़ कुहेस सभ दूर करू बढी विनाल ।  
असि तोक्षण रंशम सँ छिन भिन कय काँटि हटाक निमिर जाल ।

हुदशो कला प्रकटाउ आब, आलाकित हो सभ लाकनर  
धे मृदिन बढाथ चञ्चलता हा ज्ञान कमल विकसित अखर ॥  
लागय किरणक ओ तीव्र शुक, भगय पडाय दुधक ठलुक ।  
यहुव्याप्त अन्धविश्वास तिमिर कै करै रंशम-शर टूक-टूक ॥

मिथिलाक संगरर मध्य आई, दाहिदय, अविद्या, अनाचार ।  
कोनय कन्ह करू नाग, बन्ध अर्थात् पगल सभरर अपार ॥  
जहो न आय जिशिक प्रान्त अन गोधक मध्याह्न काल ।  
सभटा संसार जरि होय छार धधकाऊ लाइश तौल ज्वाल ।

[ 'मिथिला मिहिर - मिथिला' १९३५ ]

मिथिलाक मिहिर सँ / 11

## हाला झा

मैंल किट्ट फाटल पुनन पाग माथ पर,  
काह पर देदे गोवनैर मन अडपछा  
कैन छुल्लाट न त्रिपुह पर ठोप सौन  
शाना रड्डाक एक वक्त पर टोक मे  
देह धिका हाला झा, सुदरी झाक प्रशौर,  
नरहा पौजि, वासो ककरीइक, बलीचे वंश।  
कूकड़क बीया सन-सन तीन दौत मुँहमे छैन्ह  
भाग्य खरास सन, पिन मोहल सन मुँह  
मटर-सटर बल केवल विष सन बजैत छथि ई  
जगिम विवाहमे विक्रमल छथि लावपूर  
हाथमे फराठी नेने पहुँचल छथि सामुर इ,  
झड़एक चप बाद बकाय आगुलक हेतु।

आएल खड्डाम और पनि और शतरजो  
एकटा खजान पर धोयक हेतु आगी ठाड़,  
कारी छोरनच सन पैर धुरिआएल अपन  
प्रशाननक हेतु आगी देल बड़ा हाला झा।  
ओहा महँक मला मोड़ भावय लगलैक हुनका  
तरवा महँक मेल छ'डा फाटल समाय धऽ।

स्वस्थ भला हाला झा, जैको पर आधि बैयला  
एक जुम तमाकु तोर मध्य रखि प्रेम सौ।  
पञ्च दऽ फर्केन धूक आहो ताम पछान्धन  
'कह के कथल क्षम ? धिया-पुता नन भुनका'  
कहाँ गल फल्लो आ कन्हादानी श्वशुर हमर  
हुनका मे जरूरी खानने मे गण्य कथाक छि,  
पुन नकैत एक सरक दिस बजल आ  
'घर मे अछि भाइ व हम बटुआ सँ बहार करु।'

डोंड सँ बहार कौलक बटुआ अपन हाथ ३'  
गाहक धाड़क बुकरी लऽकऽ दलनित निज गाहक रथ  
'जाउ, पिसवा कऽ अनू सौंफ आ मराच दऽकऽ  
भाइ हम पीवि लेब, तखन बाहाधूमि जैव।'  
गोला नर्मदेश्वर सन भाइक पिसा आधि गेल,  
एक ग्लास पनि अङ्गुरिया सार अनि देन।  
डोका जकाँ मुँह खावि बजला तखन हाला झा  
'राम राम ! ई की धिक ? सौसाक गलास ! छी। छी।  
अहाँ त अङ्गुरिया धिक्कहुँ, बूझो नहि जाति पीत  
घर भेल दण्डन भर, वंश भुमवाइ धीक  
हाथमे बन्दे छी चाम आधा मोछ छटन छी,  
सीसा सन अशुद्ध वस्तु मुँह मे लगबैत छी।  
हम छी बेलौधे काको, बाप हमर नरहा पौज  
जन्म सँ नमल अछि संस्कार लघुकौमुदोक  
सीसक पात्र लऽकऽ लधिओ नहि सकैत छी कय  
धातुक गलास घर मे हो त मडबा दिमऽ।'

लाटा ओ गिलास जखन आएल पितरिया तखन  
लाटा मे अहाँही लग छनलैक गिलास मे  
गोला गिर लेलन्हि टप्प दऽ आ मुँह खावि तखन  
एक ठाथ ऊपर सँ धिक्क लगल घटर घटा।

राति मे सँचार लागल हाला झाक आगीमे  
वाटी अठारह आ सौंठ कऽ लगाजाल गेल  
बऽड-बड़ी भटबड कदोमा तिलकर और  
पायड तिलीडी ओ दनीडी, अलाही भैंटा  
एक बट्टा छलितर दही एक बट्टा खाओ गाढ़  
चीनी पर्याप्त मलमोग केरा पाकल खन  
डेह खेर मेंही भन जौत कऽ छलैक पम्पन,

दुःखदा मनीषल तथा अर्चनी और मिनली घन  
तखा जा कऽ चैमल पुनः दाला झा अमन पर  
सप् सप् सपर सपर छाल्ही सकरौड़ी खभा  
मधरा चाटे माडि मधरौलकि भाय वन्नु मभ  
भवा प्रमल, पान डक्क म पेदेह ररि नऽ  
बल्ल "अन दून ररि धुरक च" गह 'गः'  
धुरि कऽ एल्ल, लगलह अजः चाधर मः  
'वाह वाह ! मगही पान बडियाँ बिलक्षण अँध  
खाअ बेस गह डर, रहिओ खुथ छल्लिगार छल  
दोय जयवार मे बिकाणब आह मायक बन !'

ई कवि फराठो लेन लगी मन हा देन  
मन किट्ट फारस धन पाग भास पर  
लेन नहुवागो जग के कल कलकाकोई भजो  
बिदा भालाह, हाथ हा पित अरधर कोन

ਪੰਨਾ 52 / 15

## टी-पाटी

वहना समय में अभिनय का बड़ा लगन छल  
नाम छिपाए मुनन बहताक मूँह में  
अप-डु डेट शिक्षित ममज मध्य हाड रिक  
एक वामु रक्त कहे छे नाक 'टी पाटी' ।

एक दिन एहन मद्यम जे हमरा रम  
अछिन्त निरुप नालगा फुलगर एक  
अछि मे विलक्षण सन मनहर एक कांड छल  
देखि धिल गदगद भेल, बाह रे हमर भाग्य !  
आइ बैसि पाटी मे लगहुँ भऽ जाएब मध्य,  
भद्र जन पीकि मध्य हमहुँ आमीन हेल  
जहन कान भज मे न देखन न सुनन हेव,  
तेहन अगुल भोग्य वस्तुक आस्वाद हेन ।  
निष्पन्न बजाय हुनका सूचना प्रदान केल  
दखू ए । बंद करु भानस भात आइ रति  
बड़का एक पाटी छेक, हमरो नेआत आपल अछि  
कान्हिया न घरम छेव अजुका त कथ कान ?  
अहुँक हेतु भरियक किछु सैन त नहि आग्य  
बेस आव जाइल छी, दाइम लंगिधा गेलैक

दूरे में देखै छी जे अगुल अछि समारड  
कुली ओ टकुल कतार सँ सजाअल अछि  
उज्जर द्वादप श्वन चारि अछिअल और  
नात पकारक कूनदन अछि शोभाजन ।  
हेत बुर पेट - कान टाह सँ सुमानित व्यक्ति  
अचि आचि कसीक शोभा छथि बदा रहल  
दुःखार हमरो सन धोनी और कुलावला  
एक कत दखल जकां बेगल छथि वकायथा ।  
नोल शेरवानी पर लाल कमबंद देन,

रक्त रक्त गाल बहल भक्तदय  
हैकक होत खानगमा गन्ध सँ चु भल  
एक एक रक्त रक्त आगी परमेन अछि  
वस्तुवस्तु शान अछि मयदित सुभान  
कान जेना महाद हैकक ओल अछि  
नुनन धनक मयमल कनक अछि नाल  
हर हरि होल केल सुगति महादय न  
उज्जर मुँहा और नोल शेरवानी बला  
आएल हमरो समीप, फ्लेट एक राखि गेल ।  
एकटा मिहारा और एक फक्का दालमट  
एक रक्तमल और बुनिया एक चौड़ी मात्र  
ताला भवि मयड अर मयमल दुइ कान  
एक चक्की किरकिरी तथा माहल एक कमर  
तकण अनुमान केल इ मय नैक शोक  
कांड कड फक्का भगवानक हनु केल गेल  
इ कय विचार अंकुर टारि दल दाल धा  
मामने बनाअल स्थान मुख्य भवनीयक हनु  
नवल देखै छी जे सभजन निर्मात दल  
अपने नैक भाग छथि लगा रहल  
हम मयमल छहै जल आनन हथ धार्य  
किन्तु जलक दल नहि मयमल त कान कथ  
यनिक वागेन केल दखल म आनन नलि,  
आसु, हमहुँ वागेन केल नैक लय ।  
दुइ एक फक्का मध्य मय भल दालमट,  
मयद तथा बुनिया और किराणन मित्रोन भल  
एक रक्तमल म विजय को जगै कड  
मयमलक जद दाल जल एक कमर हो ।  
एक, मिनट लागल हेत नहीम मय भल,  
निर्मलक पलर हमर निराकर भय गेल ।  
किन्तु अर मयमल एड वलवत रहलहः



धन्य और लाल किन्तु जरा नहि मरुती भो।  
 किन्तुमिश्र क खरि बनक गुहमे रखे छथि कओ  
 एक दानमाह तडि दी। का धरेन छथि।  
 आधा रसगुल्ल म्म जः आधा छडे छुट कओ  
 नम्र फलक म्मले ५० वः नहि करैत छथि  
 हाथ नय। भुख गति गनहुँ हम सभा शंभ  
 मध कओ जहना क प्रम, हमर तर्कन अछि  
 वेसल छो बुधचाप, शान्तरूप निचकार  
 और की लेब से टा क्यो नहि पुछनिहार।  
 लखन दखे छो ३ मह्य विन्यास पुनक  
 बरका अमर आ पमार केन खानमापा।  
 चकर करैत में अनक रग यम् नने  
 अपस्यान तरत पड़इत अंग रहल अछि।  
 आशा समस्त भन कन्दोभूत अछो म,  
 असली बारीक आव भोजक गहीन गल।  
 ना विध ग्वादु चव्य चव्य लला पय भन्य  
 नने अवेछ दुन हार्थ महारत सँ  
 जावन हम अँखि कने मोहय लगलहुँ तावत  
 आगे म रघुल पर अमर एम्बर खाति गेल  
 चामा और ग्वाला और चम्पय और बहल आ  
 विनया और सीस फेर पात्र चमचम करैत  
 मायाक आवरण सँ चकाचौन् दृष्टि भेल  
 थाइ काल बढ जखन नल दिस ध्यान गेल  
 एकमात्र ब्रह्म जकाँ चाह भनि गम्य छल  
 और-और वस्तु छल कवल अपाधि मात्र।  
 शिशुकें बकरीक दूधक पाँटा जग होइक तन  
 कनमा भरि दूध एक सीरो सन पात्र म  
 एक कर दहो संग सानल जतक जाय तन  
 चँनो आध मुट्ठी एक शुद्र नमिदानी ग।

एहो तन्त्र चाह देखि, अशा विलान भन  
 पानि फिर गल अम बनेक छलल म  
 माध दय हाथ झिन्ः लगलहुँ अम कः जना  
 ब्राह्मण बुधुष कनक विरागी के पात्रि कय  
 हरि तारि अल म पदपाँ नाहनास हम  
 गाम्प गे बला काह भाइ दारि नन  
 कि फुकि पीथय भागि लगहुँ निगमस्त भः कः  
 वृजलहुँ जे एही पर सवतिकापात हैत मः  
 होइक राम चहांदक भौतर में गेल जग  
 देलक बनय जटमानल के उदास।  
 अकृति पहि गेल जना आगि मे स्पिरिट कर,  
 पूर्ण समिधाक हेतु व्यकुल भला अग्नदेव।  
 गज्जर मयुर और नील शय्याना बला  
 नाहरि सुटकन जग मुरहा घमाकि गन।  
 कथा नय पूज्य का पनय आ आआत यडि  
 कौनक भुनइ भइति भुल्लक मम्बन्ध नहि  
 क देह खरिका / जे कहने हेछ भुखशुदि  
 लः कः विप आ गलइ ठाठ आपो मे।  
 एतन गन कम जना पर त शरिए गेल  
 भुखान केन छ गल जाओ प्रेम सँ।  
 एला पर पूछे छथि आ 'कहू, केहन पटी रहल  
 गति बहनु याति गल, बढ हम तर्कन छनहुँ  
 अपने त कचर कट कइए कः आएल हेब  
 हमरा हेतु अनन छी ओ मध, म कहि दियः  
 उता दल्लिन्ह--"बस, पाटीक ने नाम लियः  
 माझे जाड मानस मे, पजारु गः औच शीघ्र  
 खीचाडि और मना बगाउ अवक जल्दी हाथ  
 और इ काई लःकः वृत्ति मे झोकि दियः।"

## बुचकुन बाबा

नाद छल्लई गम हम फगुआ का छुट्टी म  
याद म बुचकुन बाबा भटला दलान पर  
कनका ११२ गला नही मगैना लऽ कऽ  
म बुचकुन बाबा ११२५ 'हो कलक कलक'  
पटनके किछु निमजाल नय कनका गम कहह  
कलिका कहै छलह एक दिन विविध गम  
मगिना आनय न्हेगल अजोस गम गम अछि ?"

हमरम मै रहै हम प्रणम कैने पो छवि  
"कह बाबा ! निक छो नै ? छैक आनन्द सभ ?"

एक सुनको कतग धाध मूँह में रखैत बाबा  
कमर चटका कनका हमर आगा में यहा बेलनिक  
'जिडे रहह, एहो भला तौर सँ हाथ ब ला  
पडि कऽ अंगरेजी गीत गायथ जमैत छह !"  
बाबा नयिदली मे मै छडक रमि बहर केल  
नाकक दुनु पु म भा कानिय लगानाह और  
मनयति न एवगाड तना हो सिद्धि उठला  
गाहुरन हँसि हाँसि स्वा नयक विहरेन अछि ।  
बजला "हो, हाथ मे ई कागल कान छौह नारा,  
लउ धन्य मयरा ना छुँई एल पटन म ?"

हम कहलैन "इ न उच्च काटिक पत्र छैक  
नाम लकर छैक बाबा । डनमट्टरह बाँकली  
एकटा मुनेर दो छडकन बुपकार बाबा  
शतपा गहन कान लऽक, बुल्लाम झुकि दो  
बिल्ले म लडि मी अजग पल्लिन गम  
तमि कऽ कान लऽ नल इ टकैत हा  
यैह छिळै लवना धन, यैर कुलक मल्लहा ?

बाबा कहलैन तम मल्लहा तै मम भिन लऽ  
इ अछि यमान कलक विजाल हम  
कनका कऽ उधार अंग एना भऽ दसुआल गम  
दसुय जे कलकन बाक वने पुनहु इ न  
अह मम विजाल लय कलक अनय गम "

हम कहलैन "बा न्हायड प्रवर्तन  
फाट प्राउज गम लडि के धनलैव अछि ।  
बाबा अछि पडि कलक किछु विजाल हँस  
"हम १ कनका गम नाकनिक बाँट को कनका  
औँछ पर पडि नाग मभक पडि ल लऽ  
गदरा लम गदरा के ना कलक अछि छह ।  
'लडिका' अथ जकरा अछि पडि अछि हाँक  
और इ न हँसि जकाँ दललन कन अछि ।  
पदाक चोरि कऽ मिला दलक गद म,  
पाना छह यमो बात जालि कऽ काना कलक "

हम कहलैन यमो । हलि कऽ गम म इ  
सधलै अछि विजाल, मै नय मै ललक अछि ।

बाबा नयि कनका गम लुल्य हाँस बुचकुन बाबा  
बजला—"आर कलकना गम निहल एवग गम  
मो-ग आब बल्ल अछि हन कलक नद मम  
बुझारि पानि म मगे कऽ बाय कऽ  
और गकग हनु ई छ हलक कान भारी बात  
एकटा मल्लहा कन मना टी हलि कल ।"

हम कहलैन "बाबा गम नद अछि लय  
कनका ममान अमिकार मम गम अछि ।  
कुनी गम मैम कऽ अ मल्लहा आब कलक और  
मल्लहा अथ 'डुल' मल्लहा आ दगल नि "

“तुम मनुष्यों को पढ़ाते रहते हैं बुद्धिमान नाथ  
 “तुम २ बुद्धिमान ॥ बुद्धिमान ॥ तुम २  
 इत्यादि, कऽ स्वार्थ लब्ध भाग जन्मा के धन  
 भाग दबड़ भोग भोग ब्रह्म कय दबड़।”

हम कहलैन्ह बाबा । गंगा बुद्धिमान जो न  
 मान ॥ २ ॥ भगवान् तनूच्य अहोर्क पकाइ मन ॥

गमन किछु तउन तखन कहै लगलैन्ह बुद्धिमान बाबा-  
 “बाबू को ? इनारे मे भीम धारा नल छैक  
 बाँड बिपान सभ लाकके भय गेने अछि,  
 स्त्रीभाषाई माथ पर चढ़ाकऽ नचबल अछि  
 बाबा तहर आइधरि मूँह नहि उठाएलैन्ह  
 कहिय नहि आइधरि पीड़ो पर बसलैन्ह ।  
 हम पयलैन्ह हजक नाक तहि बरुलैन्ह ।  
 रोकट में बाहर आ बाहरा पर उलान्क नाँह ।  
 इन यजुआर भइगम भलमान्म लक  
 कोहलखक बासी हमर नान मरदव जा ।  
 कारक जो पुनहु हमर कुसी पर बैसि जाधि  
 रोकट आ कारक तखन रोक हमर कतय जाएत ?  
 नहो जहल पाग हमर खल की खरि पडत ।  
 तहसै त नीक जे हफीम धारि पीठि जइ ॥”

हम कहलैन्ह “बाबा, युग अत्य बदलि गेलै  
 स्त्रोवतें दबाकऽ अत्य गाछि सकबैक नहि ।  
 शास्त्र आ पुताणक आय अकूश भऽ गेल भाथ  
 ललबा हँसबैक न भोगेन अत्य काइत नहि  
 यदा आ पुनहु आय कर्म कऽ वंमन जगत  
 रोकट आ जन्मे करति रोक आय कतय कान  
 पाग और पौज आय बचनक रूपन नहि  
 हमर विचार ज हफीम धारि विविदे जइ ।

[बंदही-विशेषक १९५१]

## पंडित लोकनि सँ

त गौड़न ! अचरु, नया कर  
 किनया पर्वत न तहि झगड़  
 को जगड़ पर्याप्त रवर्ग  
 कर्त ॥ १ ॥ अथवा गवर्ग ।  
 आह लऽ गयन न अहाँ कि ।  
 प्रत्यक्ष अइ छी गुप्त धन ।  
 लमि कय दीपन न नया लम  
 छी नभ मध्य गजत कर्त  
 शास्त्रक प्रमाण दहि दहि  
 ज्योतिषक वचनक पाथ अनक  
 पवित्रो पर अकण लोइ  
 इ म्पिद वक्त धीपण प्रमाण  
 म हो लगल ज परगन  
 रत्नकै कथयि नहि खाथ अन  
 यदि खाथ अन न रत्न बँड  
 न सन्तानक रत्न हऽ कान  
 नऽ पाग करु मां न

हे महाप्रभ ! पंडित भगव  
 अचरु अहाँ ज्ञानद शास्त्रक,  
 सभ कथकाइ आ धमशस्त्र  
 कें पढ़ि चुकल छी आजोवन  
 की एतय लय विद्या पहलहु  
 ज पदमेन कथिया खेत  
 महुना गरी आ गइ मछ  
 आ ॥ २ ॥ समय लागल कर्मा  
 कहिया कत खना रता ।

दखु ब्रतमिक कतय गेल  
 आ चन्द्रलक पर पहुँच गेल  
 आ बदनाय चिदाय शक  
 आ पूज्य श्रेष्ठ मानव अपर

पंडित लोकनि सँ / 23





क ॥ थकाने भनमाया / कनऽ कऽ कामो छति /  
 कऽ थिक्कन पुन रुतक / ककर दोहऽ थिक्कन ?  
 हम कहलैन्ह मना / एहि नाम भन मभ म  
 खालो दहिभगा कर मथन भनमाया छति ।  
 वजला तखन निरसन मामा 'मम' हम वज्र छी नाहे,  
 जो आ करवना धोक / तखन हम काना खिय /  
 शोह सँ न नाके अ वर सान धाति पवि जाऽ  
 पगह य भान खाप जाति आब को दियऽ /  
 पव्व दऽ पकैत थक आही राम निरसन मामा  
 वजला आब जाति पति यौचव महा दुलभ अछि  
 तँ तऽ हम सिद्ध भजन ग्रहर म कर छी नहि  
 वडा ओ अमर सदा मंग म रखैत छी ।

हम कहलैन्ह मामा ! बैसल जाअ नाक जकाँ  
 हाथ मुँह धोय किछु तावत टहाएल जाअ  
 वजला तखन निरसन मामा कनक लजाइन जकाँ  
 मामी तहर सेहो छथुन्ह बाहर म फाटव सऽ  
 कह कहलैन्ह-मामा इ न अन्याय भन /  
 एतेक काल सँ ओ आनय गैद म पकैत छति !  
 पनही सलमसाही पहिरन तखन निरसन मामा  
 वजला तखन, तम म भट करय अरुन छथुन्ह ।

फाटक लग जा कऽ देखल ओखि नाक अपन मभी  
 सडकक-काल धोपल ककरीट पर ठाढ़ छति !  
 खाली पैर नपन अलकतरा पर पकन छैन्ह,  
 सकाचक द्वार एक शब्द नहि चलैत छति ।  
 हम कहलैन्ह मामा एतौ क्राक माना छति ?  
 दहिभन तऽ नरथा म फाका पड़ैत छैन्ह ।  
 धोपल सडक पर नपन पैर म रहक चाही  
 एहि सभ विषय मे किछु ठदार आब भल जाअ  
 मामा कनक सिर्जित भन, बजल किछु थुन इडन

"इ जाख अंगेजी पढि कय ल वही छह  
 आप ओ पिनामह मभ सँ ताहें बाधगा छह  
 हम यजुआई, तोहर मानी बेलीनक कन्या  
 ननका तौ कहैत छहुन जुता पढी कऽ चलैत ।  
 आन कश लख छह अभा माछ छहन छह  
 मम म पगन लखन महा मभ रखैत दैवत  
 'विश्व' केँ 'विशय' उरकऽ उद्वरण करैत छह,  
 यन छथुन्ह सामबरी जा कऽ उपराय देखैत ।"

हम कहलैन्ह-मामा ! शमा आब फैल जाय  
 चलल जाय इ' पर गोबर सँ नोपि कय  
 राम करवाकऽ पऽव बुलिह रखवा दैवक  
 पाक कय मनी मय मभी अपन लथ सँ

तहिना प्रबन्ध भेल, मामी पाक करऽ लगल  
 हम ल गेलहुँ कनेक एन. से सँ क पर्य म  
 पाटी जमल छल, आम्हर बडजा टवुल पर  
 एन. सी. सी. क लइकी बहुता समवेत छल  
 लोप तथा कटलट पर छुगो कटौ छल चलैत,  
 हाथ्य और पिनाद रोजा बीचमे चलैत छल ।  
 नावत दुभंग्य जे पहुँचि गेल निरसन मामा  
 हमन खोजैत आहिनाम अरि नहि बाध  
 गजला ही, मामी पगन अनय भल छथुन्ह  
 और पतय भीरवीक चक्र ना लगैत छह ।  
 चुप हम उठि गेलहुँ, बिदा भलहुँ हुनका संग  
 पुछलन्हि ओ छुँहो मभ क छलि पैजामचाली  
 जुन पाहुनहि अ ताग नाग बीस छडल छलि ।  
 हम कहलैन्ह-ओ छान एन.सी.सी. क लइकी सभ  
 राइफल बंदक आ चलाएल गिरडी अछि  
 जा कऽ मैदान मे कजाप करैत अछि ओ मभ  
 एतने खोरांगना सँ देशक उदार हैत

"युग" रहल हँ। गीत भाषा कृषि में बसात जाइत  
 गीत अकल गगन नीक जुग पल्लव खाइत छल्लत  
 काँच पदार्थक संग कौन गिड़त छल्लत  
 जाति धर्म सभकेँ सा भर्मागत अर्थात् मोरी ने  
 रख रहल दाँद लल मय आइ अरन ओगि  
 नाँ न. अउ धर्म की भद्रता न भद्रत छल  
 जनिहँ पाँच बौद्ध भद्र भल छँद गेह  
 भाइ ब्रह्मचर्यपू से चलि जेतहुँ मकागा घट ।  
 ममा आवि डग ए ममाकेँ कहलथी ह  
 कंक सभ भान दलि रखन विदा हाइ  
 भांगन कृष्णन भल सुखाइत इसा दलक  
 चल आव गेह वलु नाँटि गेहय पडत  
 ई कहत निरगन ममा लेलनि अपन भेटा चोट  
 पहिनि ललन पनही मलमसही दृष्टताहा  
 माभेक हाथ धऽ कऽ हुनका खिचैत निगैत,  
 आली हल जिया भल्लत साइ मल्लपट ।

[ बँदेही जुन १९५३ ]

## आगि

गति में हम स्वयं देखल आगि लागल घर जैय  
 चार सभ पुगल धर्षक कय घर में ५ ५ करय

जाँ रहल अँछ मनमन कर पाँज कर पंधक कर  
 रख भय पिडलन मय, पडवाक लहग न उडैय

जनि रहल अँकल इ छथि आ मरदव प्र जर छथि  
 पाँज कल्ला और भरहा, फडफडा कय सभ जैय,

जाँ रहल पतडाक पुच्छइ, और पडति कर्मकाण्डक  
 मकल आत्तव पतरा बीच धधरा में पडैय

खुश रहल अँछि मूल खंधा गात्र का रसी दुँय,  
 वश का फटल लहव कय, काइला भय भर भैय,

जति पाँचक समरफनी आगम २५ मय तीय  
 और मयादाक वनन पणपण कय दुँय

पग अपकन मिजँ सभ छर जरि कय मय रहल अँछ  
 युग युगनर कर पद आइ गदा में मिलैय

छोट पैयक भेद सूचक मुखन मीठी दुँय  
 भीत का न नीद छल हरिमिन्दवक म डरैय,

हालिका कर एहि दहन में, मयम सभ किछु भय रहल आँछ  
 किन्तु अँहि चिलाक रुपर, एक नलका भर डरैय ।

[ बँदेही अक्टूबर १९५३ ]

## अङ्गरेजिया लड़कीक समदाउनि

बह रे जतन सौं धीयाकेँ पढ़ाअल  
 न धीय मामू जय ।  
 एतथा दिन होस्टल में रखलिऐन्ह,  
 म जौ तयसय ॥  
 कश उघरि आंतय नहि अनर्थक  
 लोक देखत मुँह बाध ।  
 अँघर केँ ठनय नहि फेंकबैक  
 गरि मुन्नीक अहँक नाथ ॥  
 जुता पोररि ने भानस घर जएबैक,  
 जएबैक भात छुआय ।  
 कुसँ टबल पर बैसि नहि खाएबैक,  
 पेन्नी लब अछाय ॥  
 सासुक लग शलज न पहिचानैक,  
 ठाँवर ओ छिभिषाय ।  
 गौतनी सौं अङ्गरेजी जूनि बजयैन्ह,  
 मुँह जएतैन्ह विधुआय ॥  
 आङ्गनक बाहर छुमय नहि जएबैक  
 धँसूर जेनाह पहाय ।  
 दल पितरकँ कनको नहि हँयबैन्ह  
 सभ जएत तमसाय ।  
 अहिठय जे श्रद्धा नहि मर्याद  
 तकर न छैक बपाय ।  
 जी मन हा, कहयैन्ह चुपचारि  
 आनि दल हमर जमाय ॥

[ 'बँदेही' - नवम्बर १९५३ ]

## गरीबनीक बारहमासा

जेठ ह मखि । अगि बरसय, नयि रहल मधुआ द'  
 नकि लग उल्ला रहल हो बहि रहल अछि घाम बा ।  
 जेठ ह मखि । पनि जसयल जस भानल कौन य ।  
 धुआँक दन ओग्य कटे अछि कन पजरनइ ओच य ।  
 सावन ह मखि । बुद्ध बरिसय पुर्वि रहल श्रमधर गो ।  
 एकाँटा घर नहि छैक निन्नु सुतव कान प्रकार यो ।  
 भावव हे सखि । बाहि आएल, डुवल खेत पथार यो  
 माँष महमह कय रहल अछि, काना कऽ हैब बहार यो ।  
 आभिन ह मखि । ऐल मलेरिया, काँट भेल शरीर यो  
 लगि तेसर दिन अयै अछि, काना कऽ धरियौ भीर यो ।  
 कतिक ह मखि ! बड़ भयावन, सासु धैलन्हि खाट यो ।  
 प्रोतम केँ भय गेलैन्ह पिलहो, आब न जीवक बाट यो ।  
 आगहन ह मखि ! भान कुटइत, भेल झाँझर हाथ यो ।  
 फोका पर फोका पड़े अछि, तदपि मूसर साथ यो ।  
 पूस हे सखि । खसय पाला, शौत कट-कट बाज यो ।  
 पानि छुबितहि हाथ गलइछ, काना कऽ करबइ काज यो ।  
 भाष ह मखि । बाध सरिपो, राति भेल पहाइ यो ।  
 आऽहुना म एकटा सलगा काग कऽ कटबइ जाइ यो ।  
 फागुन ह मखि । पवन रानसन, उठय पुरवा जोर यो ।  
 जाइ सभ धय ललक मटिया, फाटि गेल अछि छोर यो ।  
 जेठ ह मखि ! ठठल झकड़, ठहय गद बसात यो ।  
 माछो भिन भिन करय सभलपि काना कऽ परमद भात यो ।  
 वेगाछ ह मखि । चाउर निघटल, आब हैत ठपास यो ।  
 और हगग रागय पुरल, आब न जीवक आस यो ।

[ 'बँदेही' - नवम्बर १९५३ ]

## श्री यात्रीजीक प्रति : मेथिलीक उक्ति

ह हमर सन्तान ।

बीच निम्हूँ मध्य तहर छह इयम्धान ।  
जन्म भित्तु छह छवि न कन अरु छवि भान ।  
जते बाइक होत पदमा धरक प्रतिभावान ।  
जते जोधन कलाकारक हँछ नहि सम्मान  
नहि ठाम करैत ककरा पर छहक नो माद  
नहि गला न नन कंझन, भल छै नहि जान ॥  
ह हमर सन्तान ।

ह चरजी य धनजी बाम ठा मकर  
जन्म रहितहुँ गोल कानो धन कर परिवार  
होइनहु मन्त्र तहर एखन जयजयकार ।  
भज रहितहु मातृभूमिक तो एखन भुवार ।  
जिन्नु कनवी शरदा तग दधुन्ह वरदान  
लखनी में झड़ौ निर्झंगिनी सुभक्त समान  
अन भ्रमक लोक मभ जल्दा करी स्तुतिगान ।  
स्वजन परिजन जिन्नु भ्रमन, मृमि नमो कान ।  
ह हमर सन्तान ।

लाछ देश विदेश धूमठ, पबि नित मन्कार  
लाछ कानिक पीत गावह दूत वनि साकार ।  
साग्न जर्न कर जवह शख बरखार ।  
लाछ कोवता मध्य ना वषा करह अंगार ।  
जिन्नु अपना घरक मारु नो प्रचण्ड धनह  
पैडनक लख तहर रचना परम मरखह  
मातृभूमिक छह हा नै निथ मंज खह  
नै जित्रे लखेन छह तँ मझ दिल्नी जह ।  
हो हडाही पे कडाही चढ़क नहि अनुमान

गन मभ बडुम पगर छह नै नैन ।  
ह हमर सन्तान  
ह रका लागू जहाँ मैदान कान्तर ।  
जहि सँ माहिन्य कर जहि कन विनार ।  
नै छवि नहि मन नै नै नै नै नै नै नै ।  
अन 'बलवान' नै सँ पबि क नै नै ।  
अन स्वागत नै नै नै नै नै नै नै नै ।  
अन रीनाथक आइन कानो पडक आगर ।  
खणि कय भव्य इगहचर कर बाजार ।  
दखि इ न विदोष हाड गन जिक हयव जणन ।  
नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै ।  
अन पर नै नै नै नै नै नै नै नै नै ।  
हमर ठाम मभक हान नै नै नै नै नै नै ।  
नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै ।  
अन वेशम नै नै नै नै नै नै नै नै ।  
अन जपता मध्य तहर नै नै नै नै नै ।  
किन्तु एखन कहे नैनन मूक नै विमान ।  
ह हमर सन्तान

{ 'बैदेवी' लकारा-१९८४ }



## सौराठ

ह सभा सौराठ ।

छी अहाँ की काठ ।

एक दिन शाम्भूय चर्चा हाड चल जस्टिम  
पंडितक पणधुनि सँ जे तीधवत छल गाम ।  
नय मायाय स्मृतिव ज कन्द छल श्रीधरम  
तहि म अछि धनित कयल आइ घर कर दाम ।  
मुनि पड़े अछि सभक मुँह सँ बस, हजारक नाम ।  
औ घोषाठन हाइछ ग्राहक वृन्द सँ अधिराम ।  
हो जेना वरदक हट ।  
हे सभा सौराठ ।

जहि जननिक श्रीअबची सन गला सन्तान ।  
तनिक आइ महज्याची नय सल छथि प्रग ।  
छल जतय शाम्भूय हाडन की विहित धिक कृत्य ?  
ततय कवेल अर्थशाम्भूय नाम हाइछ वृन्द ।  
घटक ओ पजियह कर दोसरे बनल अछि दाट  
सभक मुँह सँ मुनि पड़े अछि दन महज्याक पठ ।  
ह सभा सौराठ

कतहु मात कुलशिनक लगल अधम बाजार ।  
कतहु छथि नामाय पर बसल कलाक कुमार ।  
कतहु एम. ए. दाम छथि रखन एकरैस हजार ।  
कतहु खन विलायतक करवत पूव करार ।  
एहन अर्थ पिशान छथि नररूप मे ड जह  
एछि निवला मीलि जाइछ पादार्थक ओ वृक्ष ।  
मुनि जाइछ पाखरिक ओ घाट ।  
ओ कने अछि ब्राह्मणक ओ वाय ।  
ओहन लोभो कर मुँहमे, दऽ दियेक नाअठ ।  
हे सभा सौराठ ।

[ सिधिका दर्शन - १६ १९५४ ]

## अलगी

ह गय अलगी छोड़ी उत्तम  
पुइस छै त किय नय शान ।  
दृष्टो जर पर धाड छै नाह  
कऽछो पर छुट गय नय शान ।  
गय । वधे भरि भावर रहल  
एनी एवा नय नय शान ।  
एतबे दिनम सिद्धि लल तौ  
एतवा फँसन भुगल जान ।  
नयनक छटा, चलबाक छटा,  
हँसबाक छय नय नय शान ।  
छवि कय न दाइ कहबाक कल  
बिनु हेतुक चमकि उदयक कल ।  
निहुडा कय ओख, लजाय करक  
कामरा कटक्ष फँकबाक कल ।  
छन छन ममारि माधक सडी  
पुनि कनक कल नय नय शान ।  
भुमकीक ब्याल सौ भानी मन  
दन्तबलि इलकबाक कल ।  
बल सौ खमका अँदर कनक  
नयनोवन धमकबाक कल ।  
तरबा सौ अलगा चुकेन  
रहन छ सुन्दर छार पान  
प्रति अंग गुलाबी छड लगत  
नख सौ शिखधरि सौ छँड लाल ।

मय १९९२ म रण १९९६ आ-द्वी

आजिग नवमक न ३ काल

दीहमा छु मनेक रिम्वन

छे म्हाइत न कला मं चले

अमम फलन न्द मंग

रुता म नामन म्हाइत

छे कनपट्टा म जिनर नाग

अन्व.वलिच्छे नमय न री

छे अधिकदी कल्लुकि कपन

ओन मं छे झल्लल काल

नद मै मानलि हथिनी ममान

ना छे चलेन छलछल काल

शमुनक फेन म मदी मे

उर म रुमल लन फूलदा

भनय बल्लोह चट्टी पा

निखरित अपन मक वहा

६ लहदा मगा कामक

बुल्लिखउ ममुरक माइ छे

बुल्लिखउ भाषक चट्टी छे

धीहवा रुमल ममुरी छे ।

जमयइ छे भरि ठेहुन चडाइ

ममुरक म, भनिकल अपन

दिन म्हा उमोडा छे करत

आ उ कय न आइत अइत ।

महुआ मकक नामो नहि छे

लगा ममुर म कय जेता

म १२ छे कयक कनक मोर

ममुर कय ल ३ ममान

बुल्लिखउ लहदा ममुर मनेक

छे ममुर ममुर अन्व. म्हा

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक ।

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक ।

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक ।

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक ।

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक

म ३ छे ममुर म मनेक ।

हूँ कण्ठ्या देखेन पड़ी  
 कोन उर अनी जगद्वज्र हाँसक  
 गय । गहन वृक्ष कऽ को कर्म  
 ला फँसल कर, कतये बजक  
 अँगना गहन गहिमन नै  
 छत्या करिण ई मज्जक  
 आन अलकच्छम छड लान  
 अपना मन मे हाँड छठ म राज  
 हमरो मध एक दिन नऽब रही  
 कैलहुँ नहि कहियो एनेक शान  
 भाँडा मध दिन एहिना रहब  
 मवदा भल हधक लताम  
 छड अँगना म मध भरल एखन  
 गहो सौ भातनि छैं उतान  
 मध पाटि, दूध बननीक जखन  
 सभ छरि जएतठ तोरो गुमान

[ ११५४ ]

## अशोक-वाटिका मे

अशोक बन कहूँ अहाँ  
 मिय छला एतय कहाँ  
 कतय आ गुण्य भूमि छल  
 हुनक चरण कमल जहाँ  
 कहुँ छलीक घँदियो  
 कहाँ विरह नान्दियो  
 बेसत काम गल तर  
 छला असुर निकन्दिनी  
 धरय जी मारि एक कण  
 अण् पहल हुनक चरण  
 मध चढ़ाए एहि छन  
 कए लौ मफल मनुष्य तन ।  
 जल प्रपन्न ! औ अहाँ  
 ओहू समय छली अहाँ  
 ओ याजू, धोइत छली हमर  
 'मया' ओछ पुर कहाँ  
 दखाउ ओ पवित्र भल  
 ननग छमल ओ नोर छल,  
 श्रीमोक्षनोक ओछि सौ  
 गणक जन जहाँ विमल ।  
 भि'धलाक ओहि नोर मे  
 की शक्ति छल ई मे  
 लकेश कै बुझा गेलैन्ह  
 मन्दोदरीक कोर मे  
 मिथिलाक काख सँ हुए  
 बेटी सिया अहाँक सम  
 यहिन ! अहाँक नाम पर  
 चढ़ा रहल सौ फूल डम ।

[ दिव्यर, ११५४ ]

## पटना-स्तोत्र

इ धन्य नरक धन्य मलय ।  
 अहि और अही गन कर स्थान ?  
 मलय नदित जलन अमरुत  
 अहो हारक मांझा अमरुत  
 दल वनि धनि अणित अमरुत  
 भोग धन जनि प्रहरीक सदृश  
 दलन और अनुदान ध्वनि  
 गन सै मात्र लय पाल युक्त  
 धन धन धन धन धन धन धन  
 गच्छत इति छात्र मयान  
 वा कर्मकर्तृ मय अमरुत  
 मल्ल मय लय गदनीवाग  
 मयपु ह। का दशानु  
 नमस्तस्मै मयभक्त  
 चित्तवाहदा मय इव इमले  
 नीहदना मय चिह्नियाक  
 नदिक गदा ऊनद खभद  
 अलगल अलक यारी समान  
 नदित कन्द मयमक दौद  
 छात्र लैत कनहु गिष्ठाक प्राण  
 छात्र गनवालि शिष्ट जका  
 मय गाल पदमन अमरुत  
 चित्तवा मयमरुत अहि गन  
 नमस्तस्मै क्रियावा कमे  
 भभक्त अनुक्षण अहि उल्लट  
 दोग नम विनिर्गम अरित  
 धननकक हरित गुण

कन छधि जलनीक कान  
 गणक मान मड भन रु  
 ब्राह्मण गण ५ अति अति  
 अहि गनाधर्म ध्यानमान  
 मय जलनदु जलनदु  
 मय छधि जलन जलन प्रमद  
 मय जलन कलन मय  
 वा छधिल जलन कलनद  
 धि छु अद दल जलन दल  
 मे पटना छात्र मय छट बाट  
 सधक करि पटना नाम  
 धुद्धा कलन दलन दरी  
 मयक उल्लट कन विनिर्गम  
 काह रहल गव मय नम नम  
 मनुष धनद ता को करवह  
 तन छी मुग्ध, नदित जाव  
 वा कनवा मोहि कलन कल  
 आ मय का कपर उल्लट एक,  
 अरो अलक अलल छात्रदि  
 दलन मय अलगत मय  
 मयगव हनु छात्र ठद भल,  
 अपन माटड मय फट रहल  
 मेलघर कोनो भोधिगर समान  
 विनिर्गम नमशा नहि आनदाम  
 विनिर्गम जाहा नहि भदत अन ।  
 अहि जहाँ पानि उज्ज्व विनिर्गम,  
 दधक नामे कुल देव से,  
 डालन राक्षसी सौनिन वनि,  
 मयकै कय देने अहि मलय,



जन्मवाक्य अर्द्ध एतत् महत्त्वं  
 ज कञ्ज हैत वा हैत आत्र  
 'अभदो' के 'अमृद' छैल सँ  
 पक्कड़े छैन्हि सगल फोलपात्र ।  
 माक्षा सँ याद दुष्प्रपन्न गहाँ  
 भय रहल एक छान्नी मकान  
 लहु पर पाहुन आबि अबि  
 कय दधि जहाँ स्नुअ हान  
 तलाक भाल नहि रहल जहाँ,  
 हूँ आबि नित खाली दोकान ।  
 स रूप देखि हय छी महेन,  
 ज देखि न सकल फाहियान ।  
 हे धन्य नगर पटना महान ।

[ 'छायादि' - जनवरी १९५५ ]

## शब्देय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धाञ्जलि

ह वंदनीय अर्तिशय महान  
 उत्तुंग हिमाचल गिरि समान,  
 अद्वैतपूर्ण व्यक्तित्वधान  
 अतिमहामना विद्यानिधान ।

ह तप, पूत इहमपि कल्प  
 निर्मल चरित्र कंचन समान  
 शिश्न पुष्करिणी मध्य स्फुटित  
 हे पद्मविभूषण कान्तिमान ।

सकार दिव्य गौरव स्वरूप  
 सांस्कृतिक गगनमे शोभमान  
 अति धवल शुभ निर्मल प्रकाश  
 नक्षत्र एक देखीयमान ।

गरिब पाही केर राजकपरौ  
 पुनि विप्र अशुचौ सन महान  
 निभीक बच्च आदर्श भेलहुँ  
 अपने केवल अपने समान ।

शिक्षक साहित्यिक छात्र मध्य  
 गुरुवर वाचस्पति केर समान  
 शतशत सहस्र कंठबलि सौं  
 होइछ अपने केर वशोगान ।

यद्यपि ओ पन्ध्रध तन न रहल  
 अनि सुन्दर राजस्यो ललाम  
 इन्तिहाय करल स्वर्णश्रम  
 अंकित अपने केर अमर नाम ।

हे अमरनाथ ! हे पुण्यनाम ।  
 श्रद्धाञ्जलिम धार्मिक प्रणाम ॥

[ ८ सितम्बर १९५५ ]

## हिन्दी ओ मैथिली

[ १ ]

हिन्दी जहाँ हिन्दमालामा विशाल धिकी  
मैथिलीको मन्दारमा नृत्य मारी नउ  
हिन्दी हिमालय पर उन्नत वनमा भुन,  
मैथिलीको मानस मन्दार अनत नउ ।  
हिन्दी गी हृदय हाट राटुक भुगण धिकी  
मैथिलीको माना बृद्ध उरम अनेन नउ  
हिन्दी जहाँ हस्तिनी समन हाट पुष्ट धिकी,  
मैथिलीको कमल मृगनीम गरीत नउ ।

[ २ ]

हिन्दी जहाँ झुल जहाँ पौर विशाल धिकी  
मैथिलीको मन्दार भातु कागल अनत नउ ।  
हिन्दी जहाँ हिना जहाँ ठाकट सुधवाली  
मैथिलीको मन्दारको काटिमे गरीत नउ  
हिन्दी जहाँ होनक कचौरी छथि गुष्ट दल  
मैथिलीको मन्दारको मन्दार गरीत नउ  
हिन्दी जहाँ मृगना धिकी घोर पट खेव लु  
मैथिलीको नाहनभंग बृद्धि कऽ घरेल नउ ।

[ ३ ]

हिन्दी जहाँ छथि भुगणहाट फल जहाँ,  
मैथिलीको मन्दारको तकी मुष्टको छरीत छथि  
हिन्दी हिमालय पर वसि छथि झुलत जहाँ  
मैथिलीको मन्दार मन्दार मन्दारो तहाँ दैत छथि ।  
हिन्दी हिमालय राग सुनै छथि छार स्वर,  
मैथिलीको मन्दार तहाँ मैथिली गरीत छथि ।

हिन्दी हिमालय पर वसि छथि मन्दार  
मैथिलीको मन्दार मन्दार मन्दार नउ

[ ४ ]

हिन्दी जहाँ छथि जहाँ मन्दारको थराम  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।

[ ५ ]

हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।  
हिन्दी जहाँ मन्दारको मन्दारको मन्दारको  
मैथिलीको मन्दारको मन्दारको चलेत छथि ।

[ मन्दार - मन्दार (१५६) ]

## बुचकुन बाबाक चिट्ठी

मे लिखलनि अछि बुचकुन बाबा  
एहि बसहा रंगक बान्धन पर  
साम्नी श्री ओझा शुभशीघ्र  
कलकत्ता एत नवान्नु बाबा  
ई सगावर ज अपन के  
किछु लिखब जरूरी भऽ गेलऽछि ।  
अपनेक पत्रमांस आएल छल  
फूलदार भाल रंगक लिफाफ  
जकरा उपर छल लिखल पत्रा  
श्री भानुदास भोतर महल ।  
आ चिट्ठी हमर हथ पड़ल  
कारण २ माइक सा अलिह  
माइक गेलऽछि दुनू बहिन ।  
हम छी सखिक केर ल'क शुद्ध  
लक्ष्म खप्पर नाहि छी जनन  
मुझिगे नाहि अछि रसक आव  
चरण लगाय कागा तरह  
टा टा कय आ चिट्ठी बँधल  
पड़ितहि हम भऽ गेलहुँ अवाक ।  
अँ ओ चिट्ठी नइआर बल  
केर हाथ कदाचित पडि जयतिनि  
आ रुमि पड़ितहि कलकत्ता ।  
चेगी हम एत नवान्नु बाबा  
अहक रत रं नून पदय  
एहि टम गाम केर छोटा सध  
छै उड़ा लेत एहन लिफाफ  
तँ ओझा ! जे लिखवाक होय  
से हमरहि नामे लिखल कय ।

छी अहाँ पटनियँ एहन अन्ना ।  
म हमरा नाहि आभाम छऽल  
लिखने छिएक अहाँ अकरा  
नने एबेक अकरा खतिर  
राम केर घोनी एहि वा  
अकरे देहक नाथे मिअन ।  
से हम पुछै छी ओ आझा !  
ई विषय धिकै किछु सकाचक  
बुझल्लि कोना ई गुप्त भेद  
भटल कोना ओकर भया ।  
ई परम अनर्गल बात धोक  
अँगिय आहाँ अन्नेक किए ?  
नइअबल अनयिन अपन  
ओ हुनकर खास महल ऐन  
आहाँ छी सन्निआइन कियेक  
दुनक बोच बनि मुरलचन्द ?  
किछु अन्नाक हो ओकरा खानि  
त मनो कथा नन एबेक  
आ कोकशाख पडि की करीन,  
नइअबल के ऐन नूरि  
त अन्नाहि सभ किछु मिछा तेधन  
धोखा-पुना ककरा हेतक  
थी हारी आहाँ छिए करय ?  
कहबक होय जे जे सभटा  
तहि खानि सेनक रुधि बहिन ।  
नाहि देखल करी दामरक बस्तु  
कर्मक फल छै लगले भेटत ।  
से लिखलनि अछि बुचकुन बाबा  
करनी केर भोध कलय सऽकऽ

और दमहा एक कृपान पर  
 और आज बूढ़क बाल मुन  
 छो और मध्य यज्ञन लोक  
 दम्ब विचारि अन्ध भन म  
 मानह वषक अर्द्ध सादर  
 किछु बौकी नहि रहलक आव  
 ॥ १ ॥ गले छेक अकस विवाह  
 किछु दिन म भासुर महा ज्ञानी ।  
 आ रहा आइ । जानि गियः  
 भावनी कृपा ॥ २ ॥ मानद  
 के छेक योमना कल्याणक  
 ॥ ३ ॥ माग छेक चारिम चलैत ।  
 आवहु बंद पनमा आइ ।  
 ॥ ४ ॥ आ मे अहू मायल हो ।  
 रहिजान गाम कर लोक कहन  
 अर्द्ध दुष्ट अर्द्धक जमल अर्द्ध  
 वरा मग यज्ञ कः सश देन  
 जे अपनक छानका महु के  
 त कह कहन अपा अनध  
 को करानि वचन मानदः ।  
 सभ लोक अर के दाग दल  
 सभ छर भार अर्द्धक कपर  
 ॥ ५ ॥ गदह गचीमा धीक एखन  
 ते मनमा काछा छी कण  
 मान छन अगत अर्द्ध  
 अर्द्ध के अरि की सभ लिखन  
 हम अकसर पाना फालि आइ  
 चिन्ताक कानन सभ हरियरका  
 ग्य भाइक पुडिया लव

वीर्य के अरि मी कारि दय ।  
 च्याख गदि भयमा ॥ १ ॥  
 एतक द्विरागमन लव जैलक  
 बौकी छी कचन ॥ २ ॥ नाम  
 आहिम अपन आनन अवश  
 ॥ ३ ॥ लव लव लव लव  
 ॥ ४ ॥ बहन जग अगक हन  
 इन शुभम विमर्षक विह्व  
 म नमस्कार अर्द्ध वचन कन  
 अर्द्धक गद मन आइ म  
 एहि वन लव कात पर ।

[ १२५४ ]



## जगमग जगमग दीप जराऊ

[ १ ]

सुख सुखराती  
दीयावती  
जगमग जगमग दीप जराऊ ।

कतन दीप ?  
वैत दीप विद्याक सुनिर्मल  
जे छलछल सेसने मिथिला मे  
गौतम कपिल जनक ओ मंडन  
दत्तात्रेय वचस्पति उदयन  
गुरु गणेश पतञ्जल शंकर  
विद्यापति ठाकुर सन कविवर ।  
से सभ दीप मिझाय न पखय  
दय नव मन्त्र प्रकाश बचाऊ  
जगमग जगमग दीप जराऊ ।

[ २ ]

पुनः जनकपुर आ कपिलेश्वर  
गौतम कुण्ड तथा सिंहश्वर  
महिषी ठाकुर करियन सरिसव  
मैंगरीनी बिसफी बाजितपुर  
होमव ज्योतिक केन्द्र मन्नाहर  
पुनः पुनः बाती उसकाऊ  
जगमग-जगमग दीप जराऊ ।

[ ३ ]

घर घर लेसल जाय दिवारी  
भोजू सभ मिलि कय ठकियारी

कहन ठकियार ।

इप्या पट वामनस्यक ख'ह  
आर शूद्र अभिमानक सँदा  
भाम भवना कर गय नयन  
परम्परिक विप्लव गल्लती  
मिथ्य सभ पापनाकाना  
मकल अन्धविश्वास भ्रमना  
परी प्रथा कुरीति तजक  
सभ कर मुँह मे आगि लागक ।  
जं जल्दी पजारय नहि उक्का  
पुनि-पुनि धधरा कय भस्मकाक ।  
हारि जारि सभ भयम जराऊ  
जगमग जगमग दीप जराऊ

[ ४ ]

झाल झाड़ि सभतरि कालुष्यक  
नव घर कै जुनेरि कय चकचक  
विद्या प्रेम शान्ति सौँ झकझक  
भूग दैत सुरक्षित सहयोगक  
नव मय मन्त्रक दीप जराऊ ।  
अनधन लक्ष्मी भर मे आन  
सभ दरिद्रता दूर भगाऊ

सुख सुखराती  
दीयावती  
जगमग जगमग दीप जराऊ ।

[ 'मिथिला दर्शन' - विद्यापति विशेषांक २१५७ ]

## कलकत्ता गेला उत्तर

[ १ ]

निधिलाक भूमि सँ समुत्पन्न  
मिथिलाक पानि सँ उत्पन्न  
कृषि सज्जक ओ जनक कर  
दुज्जस्य सकृति सौं अविच्छिन्न  
ह प्रखर वृद्ध प्रतिभाक पुत्र  
बाप कर न्यायिक रहइत मरुति  
ह तपभूमि मिथिलाक पुत्र  
सादर नमस्ति शतशत प्रणाम  
ह तब लेल नीधिल प्रणम

[ २ ]

जनकक ओ ब्रह्म ज्ञान धन्य  
मंडन कर कम ज्ञान धन्य  
नचस्पतिक नच ज्ञान धन्य  
उदयन कर अग्निहोत्र धन्य  
गंगशक नच नच धन्य  
आ पक्षवधक रामगर्भ धन्य  
सत्पाप अवाची कर धन्य  
विद्यापति कवि कर नच धन्य  
राज शिवसिंहक नच धन्य  
न्यायधक मरुति धन्य  
ओ अभयनथ कर नच नच

[ ३ ]

नील सन मिथिल नरि धन्य

मन्यो मन विदुषी अनन्य  
नचयो मरुतिनी धन्य नम  
लिखिमा टकुसुडन सहा नम

[ ४ ]

नमन्य वैभवा ह अहिक छीक  
अहिक आगाधकार मधरा अहिक  
एक गवर सँ काजय तहो  
ई छीक सभ आभिलष हम  
बनि जय एक ई लाख हम  
संग नचय नच ई लाख हम  
सो नचय पुत्र ई लाख हम

[ ५ ]

गीतम कोर गीतमस्थान धन्य  
कपिलक कपिलश्वर स्थान धन्य  
श्रवण कर करियन ग्राम धन्य  
विद्यापति विद्यापीठ गाम धन्य  
सधकर बटारि कय माटि पुण्य  
कहइत नच नच नच ललाम  
ह नचभूमि मिथिलाक पुत्र  
सादर नमस्ति शतशत प्रणाम

[ ६ ]

मिथिलाक पुगवन पाग धन्य  
मरुति कर पटुया माग धन्य  
अपना देशक ओ छीक धन्य  
ओ नैरी माधुर माछ धन्य  
मिथिला कोर मधुर मखान धन्य

२० तुलसीदास धन धन्य  
 २१ मधुसूदन धन धन्य  
 २२ राम धन धन्य  
 २३ महादेव धन धन्य

[ ७ ]

३ ममय मयकर महाकाल  
 अति धौपण संकटक करल  
 गिहक लय मानव-संस्कृति काँ  
 मुँह खोले जेना महाकाल  
 अंगुष्ठम कर एहि तक्षण युग्मे  
 हर हर राम कर कर महाचार  
 पुनि दिगो जगद्वै महागत्र  
 पुनि कष्ट शान्ति पाठक प्रचार  
 मिथिलाक सत्त गुण छति छति  
 उन्मन विश्व में दिगऽ विग  
 भौतिकवादक धर्मगुरु केँ  
 निज माध हाथ दग दिगो फिर  
 ह बन्धु हमर ई अहिक काज  
 दुर्दान्त ब्रह्म मैथिल नमोज  
 पशुपक पान न चनाकि उद्य  
 कमलक धार कर दान हमर  
 अहिन शक्ति कर आनि पुँज्य  
 विशक्ति कर धिर क.ज.ज. हमर  
 गति नन्दाप न पुन, उद्य  
 २४ एतथक मय्यान हमर  
 ह बन्धु भार ई अहिक अहिक  
 धर्मयत्न सकल अपनक शोक  
 ३ वृक्ष रह बनि सदा एव  
 मिथिला मैथिल केँ गखि देक

हे तपोभूमि मे रहनिहार  
 कलकला गरी स्थित प्रबुद्ध  
 छितल फटकल मिथिलाक पुत्र  
 समवेत बेट बनि कम उदार  
 मन्दिर बनाड निज एहन दिव्य  
 फहराड श्रवण अतिशय विशाल  
 आदर्श ठाँव विचारक, करु  
 सम्मिलित कष्ट सौं शंखनाद  
 हे तपोभूमि मिथिलाक पुत्र  
 सादर सम्बन्धित शत शत प्रणाम  
 हे लक्ष लक्ष मैथिल प्रणाम

[ ११-१२-१९५७ ]

## अकाल

[illegible]

[ 'सिद्धेही' भूत १९५८ ]

कलकत्ता हमरा बड़ पसंद

[ 9 ]

[illegible]

[ 2 ]

[illegible]



राज खजूर कर गुड शनगर  
रसगुल्ला अति ठण्डा उज्जर  
अन्यान्य मधुर अतिशय सुन्दर  
कतहु खिरमोहन कलाकंद

[ ३ ]

कलकत्ता नगरी बड़ विशाल  
माया कर पसरल महाजाल  
पत्तमहला सनमहला मकान  
अनगनित ठाढ़ भूधर समान  
एक एक में नर नारी हजार  
दिन राति जेना लागल बजार  
मधुमाछी कर छत्ता मानू  
दा कयूतरक खोपे जानू ।  
मिझरेल रहै छधि नारी नर  
जेना कि होजमे पाछक घर ।  
समस्त सकल जन एक ठाम  
रामूहिक जीवन एकर नाम ।  
जेना हो मदठा धोर तरु  
अथवा जानू घैरवी चक्र ।  
ककरो खातिर कोठा न बंद ।

[ ४ ]

कलकत्ता आकर्षक नगरी  
रससँ छलकैत जेना मन्दीरी ।  
नित-नित नव-नव अछि आकर्षण

नूतन शोभा प्रतिदिन प्रतीक्षण ।  
भोगीय पाक उदयन कतहु  
नान राक जगद्वीन कतहु  
क्रोडा कंदुक कर स्थान कतहु  
बनकट कर भूधर मान कतहु  
बनन न आफिस गनिहार  
कतहु बंगलिन सुकुमारी  
तिरलीक पौखि सन रंग विरंग  
चमकैत छैन्ह जिनकर साड़ी ।  
कतहु पंजबिन हष्ट-पुष्ट  
शालवार और कुर्ताबत्ती,  
गहुमक पूड़ीकें लजा रहल  
जिनकर मंगसल देहक लाली  
कतहु चलैछ गौरांगी दल  
नव जीवन कर शाने फटैत,  
अपने अपने मध सौ मानलि  
दर्शक गणकें दलमल करैत  
अछि सदा सोहागिन कलकत्ता  
फैशन एहिउमक अलवण  
नित नव बहार नित नवानन ।

[ १९५८ ]

## सलगमक खण्ड

इस विनय को अति उपदेशक भा. १. १. १  
मधक छल गति और बाह्य बसत अत  
अङ्कन पर पर समानता छल गनन  
वृत्ति अमनी कर्त लहलह रत्नचं पुं  
दह चानी संग रम्युल्ल परमई छल  
एकाएक ताहि बीच गर्द भेल ' ३०' अत  
घाट भेल, जाति गल, भाज भङ्गल भन ।"  
जावत छतमिद्वी कनेक देवय लगली मुँहम  
नयन बोझ साथ पकड़ि हगरो उठा दलक  
नन छनहुँ आनि समथ, किछु नई युद्धलधक  
पछी जा कऽ बुझल किन्तु पाली कऽ बुझनहि को ?  
अत आ पगइ ज कदोसक चर्चरी छल  
बनल स्थिति नयनार गम-गम करै  
ताहिमे अभासल एक छदी झाक पान पर  
उत्तर एक खण्ड नयनो केर भेटलन्ह  
हाथ बनि लगले विचिएल ओ - "सलगम थिक  
जनि सभक गेल, एहिमे कानो मंदह नहि ।"  
भइलन्ह मुँहलधक - "तरकरो क अनन छलन्ह ।"  
"परसू छकड़ी वहुवाड़ा सँ अनन छल  
जामे और तरकरो सभक संग-संग  
मलगम कतहुँ सँ एकठ ई आबि गेल हैन ।"  
"सोइ जे कहलथिन्ह - "ई एकठम राकल गेल  
नयक मलगमक रम झाम भरल छन्ह  
छनैक त प्रायश्चित्त लगबै करैन्ह मुदा  
आरो सभकै सेहो, उदारक उपाय नहि ।"  
एक नयनिया किछु साहस कय पुछलथिन्ह त  
महाप्रहाराय अगिरन् तयूरच-

"मलगम का वस्तु थिक न अहाँ जनेन छी  
नयन धरिदर वस ३६ बनेन्ह शयनध वस  
मलगम थिक पारी कलछ पुन नयनक चाँदनी  
लहलह अगिरन् कनि जाइछ अगिरन् भीय  
लहलह वसत मुँहा पर मलगम धय जन्म जेह  
अत गलनयन अति पगारा लन  
आपनयन लिखन छथि नयन स रम्युल्लियऽ  
परपरक खदम, गाइअक अगिन मध्य  
जिह जिकऽ भस्म कऽ मलगमक समर्प ।"  
धर-धर कपैत भेला भोका नयनो जाइक गति  
पौछतजीक जामे दौड़ा दौड़ि जना गंगा कत  
बलुगहा गुलाबजनुन घाट नहि भग भालन्ह  
बालू पावर घाट पर सभ वय गतिन गन

( ३१५८ )

## बूढ़नाथ

बहुत दिन से नाम गुगल छल  
अइ जहाँके देखल बूढ़नाथ ।  
पूड भला सुती गंगनिप छल जहाँ  
छा करेन नवका छल केर कान मित्य ।

मृधा बल तरुणी प्रौड  
हरियर पीयर साडी बाली  
नित झुड झुड घरने रहैछ  
घरनेवाला चरीवाली  
घमकोवाली सोनेवाली  
सभ अवि आनि बचारी  
पचकल लोहाके कनक छवि  
मने छधि अपन बह सखा ।

अगिआएल जेना रही अहाँ  
दारे अछि सभ क्यों जलक धार  
चढ़बै अछि ठंडा बेलपात  
दे अछि चहुँदिस चंदन सोभार ।

अहूँ पसीजि कय पानि पानि  
धले रहैछ छी अलारत्र  
भाबल रहैछ समस दुबल  
पचकल लोहा अगुछ मात्र ।

ले फूलपत माला लोटा  
सहमाह करैत छधि धनत वृन्द

कआ दीकबला कआ हापबला  
कआ भस्मबला, रुद्रक्षबला

मंडक ऊपर त्रिपुड बला  
नोनो रामनामा छाप बला  
'धमधम' करन 'बू बू' करैत  
तिनपडिया बाली दिम तकरैत  
नहि किछु त घट डालबैत  
हरवार लगैने अछि अहाँक  
जे चाहै छधि सायुज्य मोक्ष

चौकठ से भीतर कमल फूल  
औ बेलपात अशिषाय पवित्र  
गमकैत धूप धूपन गुग्गुल  
छी मे जरैत अछि दिव्य दीप

चौकठ से बाहर किंतु आनि  
बहरा कय कोकल चरि डेग  
आगिना कबूतरक बीट युक्त  
भरल गंगाकालक बलान  
जहि नें चमिल सौं छाधि छधि  
लिखने छधि अपन नाम-गाम  
बड़का बड़का जे दुहिमान  
आएल छलह जे एहिठाम  
औ भोजन कय उच्छिष्ट छाडि  
पसलकें आँहीठाम फेंकि  
सभ नित्यकर्म कय बिदा भेल  
छधि छोडि माधिका कर यथान ।

१००० गगन हल, अथवा दशकाम  
 २००० म. हल, पिबु ३००० भाल  
 ३००० १००० २००० ३०००  
 ४००० लड्डू कर ५००० ६०००  
 ७००० हल धुनमाधक ८०००  
 ९००० युग दुग १००० नगान १

घटक । काना वपन नहि  
 बाहिनग रहे आछ निन बर  
 २००० बाली, हँसुली घाली  
 ३००० बाली नथुनी वली  
 ४००० अन्न अँगिया रगारि  
 ५००० पर वैमल पाठ छोल  
 ६००० म मयून लगा लगा  
 ७००० भार जल म वैम वैम  
 ८००० पल करन उन्मुक नान  
 ९००० छातीक दलवचन  
 १००० तपन ग संगान चित  
 ११०० किछ किछु किचोवित करन

१००० वहरा लनल युधुनी  
 २००० कान छँध गही आ एह  
 ३००० लड्डू गारा मैना  
 ४००० धुनली वरहममा  
 ५००० म दान ६००० कः  
 ७००० बुद्धनाथक ले छँध प्रमद

घटक वारक फाटक पर सी  
 एनहुँ जौ मयकक आर भार  
 बुद्धनाथक भँवर सामीग

१००० मदनव पंगल २०००  
 २००० कान छँध ३०००  
 ४००० आछ रति रतिक केन

अछि नगपानिका धन्य एहन  
 ज करछ भ्रमक ई प्रचार  
 मोक्षधनक ई महाद्वार  
 बुद्धनाथक ई जवाहार

हे जगेश्वर २००० भाष  
 सन्निहँ उँ पाल ३०००  
 पथरएल ४००० शीशु भाष  
 ते जम गुड़ ली नम वैमल  
 ६००० मयक नम अछि जौ नाह न  
 ७००० गाइल ८००० ९०००  
 वहरा कः कः १०००  
 छट्टा काका विमल ११००

[ 'विधिमा दर्शन' - फरवरी १९६५ ]



## नवकी पीढ़ी से

नवरात्रि महिना प्रारम्भ १३

[illegible]

नवको पौडी शम्भुन प्रणम

१ । अजित मम अजंक हलोहय परमापी सिद्धिचला ।  
 काहु हला चिह्ना मति मिस्सा खुदिय गावनवाले ।  
 अं अहो नदभाव दम चिह्न गोंक रखाय केल दूर  
 नडल वडो हवाकदा मद्रश गहनी चर्निक कथ चूर चूर ।  
 आहु 'विस्त्राव' नवहाड ठाम  
 नवकी देही शनभर प्रणाम ॥

ऐ ! भसिया मसु अहाँक छत्ती जइत परफा न माइ गम  
 चरबाह मां एतधिन चलेन याद जाध बचारा काँ। ठम  
 ओ अहाँ सली निर्भय एकदम सईकन गिकि का नागर पर  
 ग्ले जात्र भ एकर कृती महम अक समकार एनकर  
 बगो नारत श्रीम ठम ।

निवेदन: पाठ्य पुस्तकें सन १९५५ ई.

प्रे । पिमिया मायु अहाँक छली गऊगा तिवर्षादयःकालं  
कपिलेश्वर और सिमरिय मे कबुला जना गानय बली  
औ अहाँ 'जगज्योति' या 'जगज्योति' न भवत न द्वा चमत्कृत्यो न  
मयूर शिखर ललित न भवत न भवत न भवत न भवत  
इत्येतत् त्वं अष्टि भवत न भवत ।

अनयो मीनो इव इव अजय ॥

१ + द्रव्या मासु भर्त्तुं शक्यं तत्र त्रिंशत् शतवर्षाणि  
पुण्यं एतं भर्त्तुं शक्यं तत्र त्रिंशत् शतवर्षाणि

श्री अहो कृते आ कृत्वा न पत्नी म तस्मात् नाविरुद्धः  
 कृतः म मयरा नारा गता अंगरजा वा न पुत्र भव  
 जगन्नाथ मयके कृतो न न

—नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१) पाय अर्थात् 'बालक दुला' 'मायता मया' कथ की चिन्ता ।  
 २) 'मया' चालेना भवे दुली चल्त पा दय मिष्ट पदं ।  
 ३) अहाँ पढ़ छ 'अ-अ नृत्त' 'इंय' कहि छ चिन्ता 'बालक'  
 वरुवाक भार सँ मुक्त भलि किस्तीक भइस फरफड़ उईत ।

५ अर्थात् समस्तः सर्वाङ्गधाम

स्वामी पाँदरी शान्तशत प्रणाम ॥

७. नाथु अहाँक छल्ले वा ध 'नल्ल' गमनाई के निषेध  
 ८. अथि आ मरिक्क महारथ तुलसीदास पर दाप ईन  
 ९. अहाँ के छी 'द्विज गुरु' खाकी रंगक गणक गौहा ।  
 १०. बन्दक अथि अहाँक हाथ पणिन लकनि छथि रहल मिहरी ।  
 ११. बय सँ हल्ला छति रहल चाम ।

नानकजी पंहुई इतन इतन प्रशाम

पॉलन मेष हायुग त्रयें मध्य कंक काका काका करैत ।  
मिथुन मिथिया कय गारि देत 'कुल्ला' आ 'मिलन्या' कहैत ।  
जानिया नहि विचलित होउ अहं 'बुधचण' भन्नु आगाँ बहैत ।  
राहु दंडा नन कुल्ले मन्मि रहत नन फलैत ।  
मंडन जेग यवाक्य भाम

- कक्षा पाठों शत शत प्रणाम ।

निर्भोक्तृ शब्दों में सतिम पक्षक 'सङ्कोच' इच्छा 'वा' वन् 'यम्'  
 'गद्यम्' । 'वृत्तान्तपान' गद्ये 'वान' चण अपन न्य हाध एम् ।

१. 'अर्थो हृदय' 'परमेश्वर' इत्यादि शब्दाः अथवा  
'हृदय' 'परमेश्वर' इत्यादि शब्दाः अथवा  
'हृदय' 'परमेश्वर' इत्यादि शब्दाः अथवा

५ म्हा श्री हे शान शत पन्नास ।

पंडित ओ मेम

पाँडेन राथ काढ़ी मम छ'थ 'कोफो'  
 पाँडेन छ'थ भमरा मम छ'थ 'मैफो'  
 पाँडेन छ'थ कटार मम छ'थ 'कीमा'  
 मम राथ दुमारा, पाँडेन कटारा  
 पाँडेन छ'थ माड़ा, मम छ'थ खाड़ी  
 पाँडेन छ'थ बंधा, मम फूलकायो  
 पाँडेन गट मम छ'थ पृ  
 पाँडेन अदाही भौल, मम छ'थ 'मृ'  
 मम छ'थ निशामरा पाँडेन छ'थ 'मृ'  
 पाँडेन छ'थ बकाही मम आठमकाम  
 मम छ'थ 'गिना पाँडेन छ'थ दोल  
 मम छ'थ कामरांग, पाँडेन छ'थ आल  
 पाँडेन छ'थ डंका मम छ'थ बोना  
 पाँडेन छ'थ नाली मम छ'थ पुदोना  
 पाँडेन छ'थ दही, मम छ'थ 'आड'  
 पाँडेन छ'थ पन-य मम 'लेमरंड'  
 पाँडेन धरु छ'थ मम छ'थ गुलध  
 पाँडेन गगानल मम छ'थ तलाब  
 पाँडेन नथ छ'थ, मम छ'थ 'मृ'  
 पाँडेन छ'थ हरे मम अगूर  
 पाँडेन छ'थ भुरा मम छ'थ चिनी  
 पाँडेन छ'थ दउआ मम छ'थ गिर  
 पाँडेन करेल छ'थ, मम छ'थ जहेन  
 मम छ'थ प्याली, पाँडेन तानेन  
 मम छ'थ 'ईजत', पाँडेन छ'थ 'चक'  
 पाँडेन छ'थ अहिलक फर, मम छ'थ 'कक'

[illegible]

पंडित छवि नाग मम छवि 'लवङ्ग'  
 पंडित छवि चानन मम छवि 'म्या'  
 पंडित लवङ्गवटी मम 'एम्मा' ।  
 पंडित अंगकाच छवि मम छवि कर्जो  
 पंडित छवि गम्बू मम अंगगो  
 मम छवि बल्ल हय, पंडित छवि टंक  
 पंडित बेलगाड़ी, मम 'स्पुदनीक'  
 पंडित गैर छवि, मम छवि साया  
 पंडित ब्रह्म छवि, मम छवि माया ॥  
 मम छवि सिंहकी पंडित छवि वितांड  
 पंडित छवि पिन्ने मम छवि भारि  
 पंडित छवि हाथी मम छवि जीप ।  
 पंडित छवि कद्दा मम छवि गोप ।  
 पंडित छवि अंगार मम छवि कर्ज  
 मम छवि स्टनलम पंडित अर्ज

[ 'शेवेली - मम - ११६ ]

## पंडित विलाप

अपना के बदलि गये दुखले बात मम पुरना  
 गंदे पड़े गिन न रहने कर को वृद्ध अधवार छ ।  
 जहाँ बटोके बदन धून नई छल धरम आग  
 मम अंग दावदा री रंगी लोकाद रंजु दवकल छ ।  
 उनन कछुआ ज मम रीर को प्रचन म्याद  
 भदल मय खाद पाहो म हमहि न अब कंचल छी  
 पणन हम आम अंगवन, ना अमलन खाते छवि  
 कथे मँ गिंड आ दगाह हम इ मादि महमल छी ।  
 करल हम भांगपुत्रक पठ गीता कर निग घर म  
 नहँ गीता विजाम को फाले दंष्ट्र तमकल छे  
 न लज्ज छेक मरुत अकें पदो अछि उठा धने  
 करे अछि बुद्ध दुखपुनर्क जहाँ मम आम पाकर छी  
 न पुन्यक मापा कहियो ने बहसइत छलो धाये  
 म नवकर्नये कंध बातर, इ हम दंड सुनकन छी  
 जनिऊ औचर रहे छल नाककें पयन झिमे आ  
 पहिरि झलकर छमके छवि ओ हम लज्ज मँ मकचन छी  
 मुदांमदा मय ज आल छली नैहर सँ महफा मे  
 म हाका देखि मडकित पर मडक कर कत अरकल छी  
 नई छवि अब कुलकन्या की छवि नाकरी लोण  
 पुरे अछि किछु = इ मम दांष्ट्र कऽ हम अब धकल छी  
 नला पैग लकी यमकत अछि बुधवार बनि छेडा  
 दुआता सन पयका नम अंगधक भल ममल छी  
 मकामा दुल बनि गन नव अछि क्या न मकामा दिम  
 गिनरिछ घाटकर म्याम जकाँ धकार प्रेमल छी ।

[ 'मिथिल दर्शन' - मम - ११६० ]

## गंगाक घाट पर

[illegible]

धर म पास दुव दे रहल बंगला  
 गल गल गर जकां लाल कलाल कलह  
 महफा स हलकी देन शिशि ज रहल छथि  
 गल गल बकां भइधवाएल आबि गल अछि बसंत  
 काल गला आरि लकां आगी मसरीत अछि

( भाषाविज्ञान-१ १९६० )

गंगाधर पाट शर / 73



## समयक चक्र

[ १ ]

पापन बराम' घरि निम्न उ पिरेन छल,

पेनन बराम' घरि निम्न उ पिरेन छल ।

चन' पर हाथ राखि रति मे मुनन छल,

चानो' पर हाथ राखि रति मे मुनन छल ।

आगत केँ आसन ओ वामन' अ देन छल,

आगत केँ आग न ओ वाम न ओ देन छल ।

नान' गाम' जा जे बटुक' पापन करत छल

नान' गाम' जा जे बहुक पोषण करत छल ।

[ २ ]

जेह मृगनी मध्य घूमल फिरत छल,

मैह मृग-नीनी' मध्य घूमल फिरत छल ।

जुआ' पर वैमि कऽ जे वाच लगवत छल,

जुआ' पर वैमि कऽ ओ दाखल गवैत छल ।

निम्न दू खवास' जहाँ पत ओलवैत छल,

निम्न दुखवास' जहाँ पान ओ छवैत छल ।

चकर' अनेक जनऽ सहमत करैत छल,

चकर' अनेक ततऽ सहमत करैत छल ।

१. कागजी बादाय २. बटुक मत ३. चानीक हल ४. भाव ५. वैमि ६. बराम  
७. आगत नहि ८. वाम नहि ९. अनेक राम १०. अनेकक ११. वामक गाम (मानक)  
१२. स्त्रिक १३. मृगनयनी (मृदुरी) १४. हमेज ओ नीनी माह (अवति वन-वास मे)  
१५. जुआक खेन १६. वाच लगवत १७. बहुदण्डक सुआ १८. वाचल स्वरो राखैत छल  
१९. दू खवास २०. पान बिखवैत छल (भोजनक हेतु) २१. दुखक वास २२. खर-पत  
नऽ कऽ जा छईत छल २३. तौकर २४. वांछा २५. करैत तयि ।

[ 'निर्मित निहित' २-७-१९११ ]

## महगी-माहात्म्य

ओ ओ म. ओ पुन' लिख' ओ  
भाब बेह ओ मजान ओ पिबक ।  
मैय म मजह म चाउर ओ दुध छल  
सब म चुल भरत छल म म ।  
ओ मजह ओ ओह दिनक मवा सँ महग  
वागि ओ ओ ओ बहुक बटुक टोक ।  
एक एक मजमि कर राम भल एक टोक ।  
एक लग्न सरेय ओ एक लाउ कहु धिक

[ २ ]

मरी लाम अब मजक धेध भेल  
नीम' वाधा मखयना छार बनैत छल  
कामा वम जेना ज अपने नहि जानत छ  
हऽर वम खुन छोनक हेतु फनकैत छल  
वेह दुधिय जे शहर मे मकान बना  
अपन रहे छल किरयो लगवैत छल  
पनी कटल पटना मे नमीन नहि जिनका छल  
लग्न टका मज म अधमल करैत छल

[ ३ ]

विमरि ओ पाहुन ओ घाक कर्दीगे आव  
निम्न ओ बराम देल हल ओ विमरि जाउ  
विमर ओ पाहुन युष्म दुध न ओ छल  
मजह म म म ओ ओ म म म  
विमर ओ वामन' मजह मजह मजह  
मजमि कर ओ ओ ओ विमरि ओ  
एकाक हो त अपन राशम ओ ओ ओ  
नहि त आव चुपहि अपन वा म मजह म

[ १९१८ ]

## रस-निमज्जण

दुई घड़ीक पर्त धीक हरियरी छैन जाउ  
रस कलश छगीक गहन पंग यो खैन जाउ  
संग मिलि पियैन जाउ

इजोरियाक चान मे, उषाक सिनुरदान मे  
कलीक मुस्कान मे, पक्षीक हर्षगान मे  
गहूम और धान मे, मकड़ मे ओ मखान मे  
फागु ओ नवान्न मे, जितिया मे, चौठछान मे  
पूआ मे ओ पकवानमे, मिष्टान्न औरपान मे  
मन्दिर मे तीर्थस्थान मे दया मे और दान मे  
वेद मे पुस्त मे, बाइबिल मे ओ कुरान मे  
गीताक दिव्य ज्ञान मे दक्कन रूप ध्यानमे  
कर्मिनीक नान मे, नारोक स्नह दान मे  
नेल नम विनय मे, तारागणक मञ्जान मे  
अदृश्य भगवान मे, पृथ्वीक स्थान स्थान मे  
असख्य रस छलक रहल, छक भरि पियैन जाउ

दुई घड़ीक पर्त धीक...

गगन मे ओ पहाड मे, गंगाक स्नच्छ धर मे  
समुद्र केर कहार मे, जालुक पथार मे  
बर्षा कलुक बहार मे, मेघ मे, मलार मे  
कारी बटाक डभार मे, विद्युत्सलाक हार मे  
रशमी फुहार मे, बगधोर मुसलधार मे  
माछ केर कतार मे, स्त्रच्छन्द जगविहार मे  
हंसमे निगरहार मे, झुमेत मधु बहार मे  
बीणा मे ओ सितार मे, वागेश्वरी बहार मे  
पावनि मे ओ तिहार मे, न्योत मे इकार मे  
भोजनक संचार मे ओ छटमधुर अंचारमे  
सौजन्य मे सत्कार मे, शतरज ओ चौपार मे

मुन्दरक भुगारमे पर्याप्तक दुखार मे  
अगर मे अन्तर मे रसगुल्लक धार मे  
रस अगुव ओछि भरल चरने चरैन जाउ

दुई घड़ीक पर्त धीक

फागुलक यसन मे, मोंद मोंद बान मे  
पुंगे कर पान मे आभमगी भान मे  
माझुरक झोर मे, मनिनीक नार मे  
चन्द्रमुखीक ठोर मे, अचलक हिलोर मे  
गौधीमे, टैंगोर मे, अरिकांचमे तिलकोर मे  
कमल मे ओ गुलाब मे, मुग्धाक हावभाव मे  
नरगरी पोलाव मे, सरसमेक मान्ह साम मे  
राखडी मलाइ मे अजह भरचाइ मे  
राधामे और श्याममे, कृष्णभोग आम मे  
कंसर मे ओ बदाम मे, कौनी मे और साम न  
सब लाल लाल मे, भैंवर पदैत गाल मे  
नृत्य छन्द ताल मे, सुकेशिनीक जाल मे  
मयूर केर पोंछ मे, हरिण केर ओछ मे  
भालमरीक वास मे, भज्जरक मिठाम मे  
सुकुञ्जाक हास मे कटार केर तिलास मे  
रस भरल गल्लाम न, चिर मधुर पियास मे  
शस्त्र केर प्रसंग मे, काश्य केर उमंग मे  
साचकेँ भसा दिवऽ यँसुगे टैन जाउ  
विश्वकेँ अचोर केर राग मे रंग जाउ  
दुई घड़ीक पर्त धीक...

( १९६८ )



ना हम टांक प्रियम करव  
 हम पाहुन छी पाहुनइ करव  
 भीतर सँ जखन गुल्लक हैत  
 बिरहमक हनु आहवान हैत  
 पौवा पर तारासन लगल  
 घबराया के किछु भान हैत  
 भालक गानाऊँ दाहि-दाहि  
 छलछल करैत धृत छारि लेव  
 भालक बदलकै ठन्टि देव  
 जंगेरी कर रम गहि लेव  
 छान्ही मे रसगुल्ला लपेटि  
 एक एकटा मुँह मे देव जैव  
 ओ जखन बेर जतवा औनह  
 सकाई केँ सुरकैत जैव  
 हम पेट देखाएव नहि रम मे  
 कवल धाँधर बखसैत रहव  
 जे जे नानिआ आगँ आआत  
 एहि हवन कुड मे दैत रहव  
 एकटा रती नहि दूति करव  
 कानका नहि दूति मैनात करव  
 जे हैतइ कान्ह मे होइत गहआ  
 हम मधुरक अइ डंकार करव ।  
 हम पाहुन छी पाहुनइ करव ।

हम खर्च न एक्काँ पाड करव  
 गृहिणी केँ खूब बडाइ करव  
 पुत्रधन जे आव बिदाइ करव  
 वा पुनि आग्रह ऐ दाइ करव  
 हम स्थगित तखन जैनाइ करव  
 हम पाहुन छी पाहुनइ करव

## अनागत प्रेयसी सँ

ह मनर चिर जेयमी अज्ञान  
 छी अरु चिरयौवना उदाम  
 गहइ एग पलाक हान बानु  
 हरइ हो मध कर मन अ प्रान  
 छथि असंख्या प्रमपात अहाँक  
 सभक लग जड छी अहाँ एक बेर  
 अछि परम निजुर अहाँ केर स्पर्श  
 सुल जकरा न मुँह न कान  
 कर नियकन्या जेवँ सुपनाप  
 नहन आनगन छानक करत  
 ताइछ टाँह लक गह शून्य  
 मकल मधवाधि जइ छेक विलाय  
 अ धर छी अहाँ अपन बाट  
 पुन माँग कइ लिए न तकरैत  
 जाइ छी दान प्रकाशक अह  
 छी अहाँ निर्वाध ओ स्वच्छन्द  
 द्वार क्या नहि केय मकेँ अछि दड  
 नइव हाँ वा पड़  
 नतुर अधर मुँह  
 गति अहाँ केर गूढ  
 सभक गार लगवैत छी निज फंद  
 लाख अहाँकेँ बुद्धि हाइछ मंद  
 आइधरि एम्हँ न हमरा लगत  
 आइधरि बखल अहाँक न रूप  
 आइधरि नहि भल स्पर्श अहाँक  
 आइधरि भगत अहाँक न गवाद  
 किंतु मनवा छे अवश्य जेवत

[ ३१ ८ १९६८ ]



एक दिन एव करव ह रैन ।  
 शिखर चढ़वा गोंध बा बिन ।  
 भादक धनधाइ इहवात  
 वा बरतक मदीमत बसत  
 वा शरद कर शत निमल प्रत  
 एव करियो अहरे काना कर  
 उ न बुझइत अहरे दर मवर  
 जाहि दिन एक हा स आउ  
 हम कहौ भरि आव और डराव  
 अरुन कचवा कर अहरे न उपाय  
 कहाँ जाऊ, कान लय मड़ाउ ?  
 ह अनारव प्रयसी अज्ञान ।  
 हम कहैं छौ हृदयसँ इ चर  
 कथ हम निर्धय अहौक सत्कार  
 छौ वरण कथाक दिन नयार  
 आजि जाउ हाय गाँहया मऊन  
 अछि मगईया हमर मन मन धऊन  
 ह हमर चिर प्रयसी अज्ञान ।

[ 'अभिषेकना' - मितम्बर १९६० ]

## मत्स्य-तीर्थ

रकुन रामशर आ चआरी म चद्रनथ  
 रहौ म द्रवक धाम हम रहैत छी  
 कचह केँ फाशी और पहा केँ पयामनाथ  
 कचन केँ कथा कधम करत छी ।  
 मरु केँ मरीचानाथ, मिहो निहश्चरनाथ,  
 बचवा बैद्यनाथ, गया गेची केँ वृद्धन छी ।  
 गाड़ केँ मधुस और हिनगा केँ हम्बर  
 गोरक होर केँ गगजल केँ अने छी ।

[ १९६० ]

## मिष्टान्न

पड़ी केँ पूरी आ लिजवा केँ  
 जगन्नाथ हनुआ केँ  
 हम्बर कय कउ जनेत छी ।  
 वली मे हारका आ चीनी म  
 चिदम्बर बुनिया मे गुदावन  
 तोथ हम रहैत छी  
 कलाकन्द फाशी और पन्ना  
 प्रथमगुल्य मगदल केँ मधुस  
 गजा गया केँ वृद्धन छी ।  
 पक्षी केँ चन्द्रनाथ, पंहा केँ  
 पशुपतिनाथ गमश्चर  
 पैय रसगुल्ला केँ कहे छी

[ १९६० ]

## हे राजकमल !

हे राजकमल !

सुन्दर शतदल !

राशि मानसरोवर मध्य स्थितल ।

विकसित इन्दुवत्

अतिशय निमल

मधुपुन कमल

सुरभिन्त प्रेमिल

मौगध मन्दयन्त्रि, कर शीतल

लोक के करत सुस्मित हीतल

चहूँदिस सुगंध खिरबत चलल ।

ओ रूप मनोहर, शील विमल

सौजन्य, चिन्मय, भूषकान धवल ।

अंकित आहिना स्मृति कर पटल

मन परि हँडल ओछ चित्त विकल

गगन उगल अन्वि कथ कील कवल ।

आ दिख्य कमल सुकुमार नवल ।

सम्भक्त करत शक्ति त्रिहवल ।

नजि दल अहाँ नखर भूतल

सुसूक्त रही जहिना सुतल

महिम्न जगत मे कौन अचल

अभुष्ण रहत युग युग प्रतिपल ।

नर्म स्पर्शी ओ विधा न्यकल

सर्वदा अमर भय रहत बनल ।

मुकुमार कथा कर राजमहल ।

सुकुमार काव्य कर राजमहल ।

प्रतिभक्त पुत्र ई राजकमल ।

वाणीक दिवागत पुत्र सबल ।

अगणित मानस मे रहन बनल ।

हे अमर । हमरे पुन राजकमल ।

[ 'आशा' अगस्त-१९६८ ]

## घटक सौं

कन्या ओ बालक पगभर मिलि जैत स्वयं  
ओ जो पिना । आब अहाँ छोड़ करक दाम  
कन्य' आ बालक अपन सभटा विधि कऽ लेताह  
पुरहिजनी । अब नहि दक्षिणाक लियऽ नाम  
कन्या ओ बालक गण्डभ अपन कऽ लेताह  
पजियपड़ । आब रहू बैसल गुहेत झाम ।  
कन्या ओ बालक खोजि लेत एक दोसरकेँ,  
घटकराज । आब अहाँ होउ सटक सीताराम ।

[ १९६९ ]

## पडितजी सौं

बेबी आब एवकांटा तयारी नहि पुजतीह ।  
किचेन मे जा कऽ चिकन आ तरतीह ।  
मम्मी आब कन्य मे जा कऽ रम्मी खलइ छधि  
कन्या आ आब ममवारो वत करतीह ?  
आरो ठडि गेली एराप्लेन मे पाहलट भऽ  
जोना ओ चतुर्धी मे बरक नाक धरतीह ?  
पडित जी ! आब अपन पतहा अहाँ बंद कर  
नहि त महिला पुलिस आबि अहाँकेँ पकड़तीह ।

[ १९६९ ]

## कनियोंक समस्या

कनियोंक आँख में आँसू आना दूल्हा जैसा,  
 हाँ न पसन्द किया फूँक मनवर आँख  
 आँख में आँसू नहरी नहरी कनियोंक हाँथ  
 रसम में रसम दूल्हा चिल्लाता तेरा हाँथ  
 कनियोंक प्रभुश्रावण कहो कनियोंक मुसल  
 हाँ मे आँ मे अंगरे अखबार हाँथ  
 नामु कर पैर आँ दबीनी कनियोंक अँही कह,  
 एखन आँ बजा रहल एल्फ़ेकट गिटार हाँथ

[ १९६९ ]

## मुक्ताक

[ १ ]

पीसी ए पीसी, अहाँ घाहू नीनी  
 हम तो कन काल, जाइ छी एन, सी, सी

[ २ ]

माया अँ मामा, आहाँ फूँक समा  
 बच्चाक रखियाँ, हम जाइ छी मामा

[ ३ ]

ककी ए काकी पैर रियऽ खाकी  
 हम जयव मेन खिलऽ आए छी हाकी

[ ४ ]

बाबा अँ बाबा अँ फूँक लाक  
 हम कन पलन में जाइ छी आटावा

[ १९७० ]

## गजल

ने लदलहुँ फौजदारो जी  
 त रुपय फेर धाँहे की ?  
 खमोलक नोर नहि बरन  
 त ओ कन्दाक विवाहे की ?  
 ने आधा एठ फंकल गेल  
 त फेर ओ भोज-भाते की ?  
 ते बहरान एको बन्दूक  
 त ओ धिक बराते की ?  
 ने लगला जौक बनि कस जे  
 तहन दुल्हाक की ?  
 जे लगला बनि कुटुम मटला  
 त ओहिसे बाढ़ि पाये की ?  
 पहल नहि छेत सुदधरना  
 त ओ बापक मराधे की ?  
 न फनकल जे देयदे सन  
 त ओ गहमन दग्धे की ?

[ १९७१ ]

## मातृभूमि

[ एक पक्ष ]

ह हमा अभिगम, मातृभूमि ललाम ।

कान ठी होइछ एहन मुनर सिनुग्या आम  
कान ठी होइछ एहन रमगर फलना लाम  
कान ठी होइछ एहन मिल दहो केर छौछ  
कान ठी होइछ एहन मुकुमार माझुर माछ  
कान ठी होइछ एहन अरिकाच ओ निलकार  
कान ठी होइछ एहन पदुआक खटगम झार  
कान ठी होइछ एहन बुडा दहो कर भार  
कान ठी होइछ एहन धिन्दायपण सँचार  
कान ठी होइछ एहन मुखशुद्धि केर सत्कार  
कान ठी होइछ एहन शरज केर जोगार  
कान ठी होइछ एहन नोसिक मल्ल व्यवहार  
कान ठी होइछ एहन शाग्वार्थ कर नौछार  
कान ठी होइछ एहन बावाक गर हद्राक्ष  
कान ठी होइछ एहन तरुणीक तीव्र कटाक्ष  
कान ठी होइछ एहन अति सौन्दर सरिमव घग  
कान ठी होइछ एहन कोकरीक सनगर पग  
कान ठी होइछ एहन हरियर पुरैनिछ पान  
कान ठी होइछ एहन कमलक सुगन्ध बसान  
कान ठी होइछ एहन भेदो जनठ टकुरोक  
कान ठी होइछ एहन डालो मृदुल स्पर्शक  
कान ठी होइछ एहन गसिका-प्रगल्भा सरि  
कान ठी होइछ एहन सरहोजि केर प्रिय गारि  
कान ठी होइछ एहन गाम्बिक फौक मखान  
कान ठी होइछ एहन विद्यापतिक ... गान

कान ठी होइछ एहन मुनर सिनुग्या आम  
कान ठी होइछ एहन रमगर फलना लाम  
ह हमा अभिगम, मातृभूमि ललाम ।

[ दोसर पक्ष ]

कोन ठी होइछ एहन इन्द्राक अन्नदह ।  
कोन ठी होइछ एहन इन्द्राक भयकर दह ।  
कोन ठी होइछ एहन अलानाक प्रगह ।  
कोन ठी होइछ एहन अपना दयादक ठह ।  
कोन ठी होइछ एहन गौआक भात विषाह ।  
कोन ठी होइछ एहन आत्म कृत्यक क्याह ।  
कोन ठी होइछ एहन कन्याक वरिष्ठ विवाह ।  
कोन ठी होइछ एहन नारद सनक चुगलाह ।  
कोन ठी होइछ एहन लडखवा मनकाह ।  
कोन ठी होइछ एहन बुडा दहोकर नवाह ।  
कोन ठी होइछ एहन निदाक तीव्र बिराडि ।  
कोन ठी होइछ एहन खरहाक खातिर भारि ।  
कोन ठी होइछ एहन सौराठ सन केर हाट ।  
कोन ठी होइछ एहन स्वर्गातिक काट ।  
कोन ठी होइछ एहन गामक गोलैसी जोर ।  
कोन ठी होइछ एहन बान्धवक निन्दा घोर ।  
कोन ठी होइछ एहन कटु केर अथवा भूट ।  
कोन ठी होइछ एहन अतिशय परस्पर कूट ।  
कोन ठी होइछ एहन पतिदार प्रति आग्रह ।  
कोन ठी होइछ एहन भाइक पत्न लखि हप ।  
कोन ठी होइछ एहन बंधुक उदयसै शूल ।  
कोन ठी होइछ एहन कौशिक कलहक मूल ।  
कोन ठी होइछ एहन खटगम दह पाक ।  
कोन ठी होइछ एहन गामक दुर्लभ फराक ।  
कोन ठी होइछ एहन कलहक गामक गाम ।  
कोन ठी होइछ एहन घालक सफर परिणाम ।



## नारी-वन्दना

गुण-गुणान्तर कर अहाँ चिर सुन्दरी सुकुमारिणी छी ।  
छवि अपन देखबैत अनुपम नित्य नव मनहारिणी छी ।  
मधु भयल अभूत कलश सौँ रस निरंतर दान करइत  
चिर तुलित जग हेतु अक्षय यौवना पनिहारिणी छी ।  
कतहु गृहिणी रूप में पति केर आलाकारिणी छी ।  
कतहु नूर ताल पर स्वच्छन्द नर्तनकारिणी छी ।  
कतहु सोता बनि कोनो रुपक अहाँ अनुसारिणी छी ।  
अतहु राधा रूप कोनो कृष्ण केर अभिमारिणी छी ।  
अपराध गम माहिनी बनि वनहु छाया विहारिणी छी ।  
अफसरा बनि शानकरिणी कतहु शामनकारिणी छी ।  
कतहु भद्रकाल भिडि अहाँ श्रमजीविनी यतिहारिणी छी ।  
कतहु योगेश ब्रह्म में सन्धानिनी व्रतधारिणी छी ।  
सौधिका ननिकव समाजक कतहु पतितोद्धारिणी छी ।  
चित्रपट केर लम्बिका बनि कतहु रसमंचारिणी छी ।  
उन्मत्तमस्ता रजितोपडी सूक्ष्म कंचुकिहारिणी छी ।  
सुस्मिता मधुवर्षिणी बनि कतहु स्वागतकारिणी छी ।  
कतहु औचर कसि अहाँ वीरांगना आसिधारिणी छी ।  
रूप रपचण्डीक धने शत्रु सैन्य विदारिणी छी ।  
सत्त्वगुण केर दिव्यतामे वीणा पुसाक भारिणी छी ।  
तप प्रभावे कतहु बौखन अहाँ प्रलयकारिणी छी ।  
रजगुरुक शक्तिक प्रसादे सृष्टि सतनिकारिणी छी ।  
प्रकृति त्रिगुणात्मक स्वरूपा पुरुष अधनकारिणी छी ।  
हे रहस्ये ! हे तमस्ये ! धन्य हे भवहारिणी छी ।

[ ३१ १०-११७१ ]

## हे दुलहि केर माय

हे दुलहि केर माय !

धन्य भाग अहाँक पति, विद्यार्थिक घर नाम ।  
यशक सौरभ छिरि रहल अछि, हुनक गामक नाम ।  
अमर काकिल गन सौँ, गुजायमान आकाश ।  
दिग दिगन्त पसरि रहल अछि, कीर्ति केर प्रकाश ।  
किहु की हुनका बनेबा मे अहाँक महि हाथ ?  
अथ अछि निश्चय अहाँ केँ, तेँ तबै छी पथ ।  
हे दुलहि केर माय !

भोर उठि पूजाक हुनकर केँ करै छल राम ?  
नित्य हुनक सराई अर्घी केँ, मजै छल नाम ?  
स्नेह सौँ ओरिऔन कथ, केँ दै छलैन्ह जलपान ?  
दही चूड़ा आम अथवा मधुर और मखान ?  
अन्न आदि काय काकिनक, दयबैत छल केँ दह ?  
हुनक कविता दोपम, दूरैत छल केँ स्नेह ?  
पुण्य वग अहाँक प्रति कैलक केहन अन्याय ?  
नम धरि अहाँक देलक, लाक सभ विसराय ।  
हम गल छी चरण पर, श्रद्धाक फूल चढाय ।  
हे दुलहि केर माय !

[ ११७२ ]

## मातृभूमि वंदना

जग में ई देश महान हमर  
ई धरणी स्वर्ग समान हमर ।

उन्नत भरतक शैल्य इतोक  
सर्वोच्च हिमालय केर शिखर  
कैलास में लय कन्या कुमारी  
छाधि पावन तीर्थस्थान हमर ।

गंगा यमुना नर्मदा सिंधु  
गोदावरीक धारा सुंदर  
कृष्णा कावेरी ब्रह्मपुत्र  
मिथिल करैत छाधि प्राण हमर ।

दक्षिण पश्चिम ओ पूर्वांचल  
सह्याद्रि छाधि उच्छल सागर  
बंगोत्कल सौ लय करैत धरि  
कदलीक पत्र सन छाधि हरियर  
अर्वाणित सरवर मनहर मुष्कर  
निर्झर प्रकृतिफ वरदान हमर ।

एहिठाम जनक ओ याज्ञवल्क्य  
गौतम कणाद जैमिनि शंकर  
एतहि प्रकटित धैल सांख्य और  
गीता दर्शन सन ज्ञान हमर ।

एतहि भेला श्री राम कृष्ण  
अवतारी पुरुष महान हमर  
ओ जनक नन्दिनी सीता सन  
कन्या धिकोड अवदान हमर ।

कामल पदावली सरस भभूर  
विद्यापति कवि कर गान हमर  
मैत्री करुणा संदेश देलन्हि  
सिद्धार्थ बुढ़ मुनि तीर्थकार  
तुलसी कवीर नानक मोरा  
गान्धीजी जितकर जन आगर  
ओ राष्ट्रपिता, ओ विश्वबन्धु  
मानवता केर अभिमान हमर ।

[ २५७२ ]

## चन्द्रमाक मृत्यु

चन्द्रमुखी एकद सैं उगरी  
एक लत चन्द्रमा कैं मायाधिक  
पूर ग। पहन उमड़ खाण्ड रड़ मड़ तिल्ल हाज  
कै हगग मुँहक पगन करत ।

हजारो वर्ष सैं काढ़िया उपमान बनल छल ।  
बाल्मीकिसैं लिहापनि परन  
कहन भ्रम म रहलाह ।  
एही घुहार सैं हमर उरमा दैन छलाह

बुद्धिक बकोर  
कुमुदनी बलाहि  
सभ एकर गीछी बहाल छल  
हजारो वर्ष सैं ई लोककैं ठकैत छल ।  
लाखा काम सैं बमकैत छल  
चोरक मुँह चन गन ।

भइ ताहर कलइ खूजल पावर मुँहखाड़ा ।  
मारि चप्पल गरि चप्पल  
सड़ करवौ समधुए ।

व्यास कालिदास सूखास तुलसीदास  
सभ छलाह रहिया  
तन सैं ठकल गनइ  
मुमुयन्द्र चन्द्रवदन जन्म भरि रैत गनइ  
घसल रेकड़ जकैं उपमा रह्यैत गलाह ।  
पशु आकक नउच कवि  
सजग सतर्क छथि ।  
राकट उडबैत छथि ।

नच नच डालक धल  
जब हमर उपमा  
बाल्य सैं दल जायत  
दुमान सैं दल जायत  
गोइया सैं दल जायत  
दुआलस सैं दल जायत

और तार पर चर्चैत  
फाटल आ दूकर ।  
ज ताहर फाटल दूरीत  
चाति तार इहि दूरीत  
ऊपर सैं साजग करतैत  
साम आ कादो  
ऊपर सैं सचि देतैत  
अन्धुआ आ सुधनी  
सुधनी सभ मुँह न रहत बिधुआणल

आब कहिय मुहल  
गेलौह ताहर युग  
लल लिहऽ चोन्चन्द्रक भुसबा आ कोर ।

( ११७२ )

## मिथिला-चन्दना

ई कार्पल गौतमक पुण्यभूमि  
 अंगी पावन तीर्थस्थान हमर  
 नहन उदयन वचस्पति आ  
 गंगेश सदृश विद्वान हमर  
 पूजा निष्ठा ओ कर्पकांड  
 मीमांसा न्यायक ज्ञान हमर  
 सत्त्विक विचार कोमल भाषा  
 आचार सौम्य धिक मान हमर  
 रामा कृष्णक शिव-पार्वतीक  
 भास्विक अपूर्व आख्यान हमर  
 मुग्धा कन्या केर दिव्य रूप  
 दुर्गा केर मूर्ति समान हमर  
 ओ जनक नन्दिनी सीता सन  
 बंटी अनुपम वरदान हमर  
 ओ अध्यागत १ आऊ बंखू  
 सत्कार स्नेह सम्मान हमर  
 हरियर पुरैनि पर अति पवित्र  
 चूड़ा-दहीक जलपान हमर  
 ओ मधुर अमौट मखान हमर  
 ओ सीकी केर सुकुमार कला  
 टकुरे कर शिल्प-विधान हमर  
 अरिपन पोढ़ी ओ भित्ति-चित्रम  
 यंत्रक गूढ़ विधान हमर  
 रस अलंकार यागी-विनोद

आ मुक्त कन्य + गङ्गा हमर  
 जलशक्ति अदभुत चमत्कार  
 प्रतिष्ठा कर ओ अवदान हमर  
 कामना दातृला मगर मधुर  
 क्रांति दानकर केर कल्याण हमर  
 शत्रुनाश मरुत आउ नैन मुन  
 जय जय तनू १ अरु नम हमर

१ २ ३ ४ ५



कवि हे ! आब कोदारि धरू

[illegible]

{ नवम्बर १९७३ }

महंगी

[illegible]

[ 'मिथिला मिहिर' - १७-१-१९७४ ]

## नव पराती

मानिनि ! आव उचित नहि मान  
एखनुक रंग कहन नहि जाइछ  
भल कठिन पान  
अन्य नम अकाश सकल अछि  
गन्ध घर न पान  
अन्य गह्वर भन हारा माने  
मकई मणिक समान ।  
मिसरिक मोल त्रिकल भहुआ  
भल जन भहन  
अपनाक मवामे गनि कऽ  
अन्य करय गुमान  
माडुर माछक स्वाद विमल भल  
विसरल मधुर मखान  
वृट बलभक दण्ड न पछ  
खान भल पकवान ।  
गधा सभ अछि रहि गली  
भना कृष्ण जमान ।  
बाँस नहि नै उरत कछीपर  
आव धौमरिक नान ?  
की खाकऽ अधिक कर कान  
कनक कलश कर गान ?  
कतबो कामिनि रंगन करधु  
नहि हनन छनि पकवान ।  
एहि मर्यादा चलत अछि नहि  
ओ कदक्ष कर गान ।  
आबहु ज्ञान करु हे मानिनि ।  
छादि दिवऽ अभिमान ।

[ 'मिथिला मिहिर' ३-३-१९३४ ]

## चालिस आ चौहत्तरि

चालिस इसवी धरि देखल सतयुगक समय ओ पैया  
आव स्वप्नवत अछि लगत ओ गले कतऽ रम्य  
अच्छक देखल अछि न माहया को छल एक रूप  
पुई आर जिनमे न छल पूर एक अदया  
पूरे एक अदया पैया । लेने छी अंगुर  
भवा, मिश्री, गरी, छांहाय, आर खजुर  
मुवा अइ ई देखि रहल छी, को भऽ गेल समैया  
पेवा मिश्रीसँ दुर्लभ अछि भहुआ आर मकईया  
एक रूपियामे भेटैत छल चाडर तीन पसेरी  
राहड़ि मुड गहम बूटकें लागि जाइ छल धुरी  
तहाँ आव ठोडामे है अछि डेडो पाव न पैया  
पावो भरि सतुआ नहि पेटय, मट्टी भल रूपय  
सोरह सेर दूध किनने छी, अठ सेर कऽ दस्ता  
रको सेर मुन्ना धून है छल, ककरा ई सभ कऽही  
कडू तेल अछि अइ भल रूपयाम कनमा डेड  
कान्हुक बदाममे अछि, आजक अलहुआ गह  
जहि भाव ओअ भनि छल ने नहि भयव चाकर  
अइ जनन कर गान तहियाक जेसँ ककर  
जे दू रूपये जोड़ छल बाँझी सूतक धोनी  
मे पचास रूपये नहि भटव माटिया भऽ गेल भागो  
की खायत की पहिरत जनता ? जानधि गंगा पैया  
चार त्रि नालार भल छल काना कऽ वचनी रंगा ?  
काना कऽ लगत पार-धाट ई यिनु फलवारक नथ  
चौहत्तरिमे एक मात्र रक्षक छनि कृष्ण कन्हैया

[ 'मिथिला मिहिर' ३-६-१९३४ ]

## प्रयोगवादी कविता

हूँ गये नरकारवाली ।

जिस कण्ड है जिग मरक ल  
जगह है न अंग याने म

भोले काज पर टपटप  
मरक भय ना रंग कैन  
गह छे ली तमा तमात्र प. 4 इन  
तुक्तो पर गग मखित हो ।  
नाह पर लो टाल मारइ छे

नगा छे छे गय नरकारवाली ।

पुझनिया वदने गोक छे निरपेक्षा

न को दम आन सेर बचने भौग ।  
बुझनिया कल न नान रहित छे ना  
न को गह आन नी बचने करी ?

बुझनिया लै म छे लगन मिरसी

न को जग न एक मु ना दवे ?

नरकारवाली वद छे न को गमनि कटव

नो गय नरकारी वाली  
अकरहर वद छे भारी  
नरकारवाली न छापल  
मय चौक न नरकार  
मरक न क ना जितल  
नो गय नरकारवाली ।

[ १९७४ ]

## स्व० ललितनारायण मिश्रक स्मृति मे

हूँ अमरकान हूँ पुण्यधाम  
हूँ वंदनीय हूँ नरक प्रणम  
अंकन नरक इतिहास करन  
म्यगशर म हूँ 'ललित' नाम

युग पुण्य दिव्य अतिशय महान  
मिथिलाक पुत्र सिद्धक ममान  
देशक गौरव कोर सुप्रतीक  
गुणक समान देदीप्यमान

गंग मय मयक उर प्रकाश  
नभन मयक मयक निमान  
नरकारवाली न कान सदा  
जनता अवार्तक मुकल्यधाम

हूँ भारतेक वर पुत्र आगर  
मयक गुण प्राप्ती महान  
महयना पूर्वक कएल सदा  
गुणक विद्वानक सुयमान

मिथिलाक विश्वविद्यालय अ  
आदम मयक मयक स्थान  
मयुगीन शिल्प सुकुमार कल  
भारता सम्पत्ति कर नरकारवाली

इतिहास सगलिक प्रमाण  
विस्तार रमय कर निमान  
समाक अनक अछि कोलिमान  
अपेक कय रहल यशोगान

१. नीचे दी गई बातें  
 २. नीचे दी गई बातें  
 ३. नीचे दी गई बातें  
 ४. नीचे दी गई बातें

अपनेक जगत् में होइछ  
 ई शुभ अकालीक  
 अछि बजि रहल आकाश मध्य  
 वाणी दरभंगाक मैथिलीक

१. अकालीक देशक मध्य  
 २. अकालीक देशक मध्य  
 ३. अकालीक देशक मध्य  
 ४. अकालीक देशक मध्य

[ १-१-१९७४ ]

## उद्गार

अहं मौ मैथिलीक महान पर्व आनि गेल  
 आइ इतिहास एक नवीन सर्ग पावि गेल  
 सांस्कृतिक विकास कर नवीन ज्योति जगि गेल  
 विद्यार्थिक मन्दिर में स्वर्ण-कलश सागि गेल

घेतनाक मंच पर नवीन शंख ध्वनित भेल  
 प्रेरणाक बहुमुखी स्रोत सभ ठगड़ि गेल  
 सहित्य नवि उठल, ललित कला मुदित भेल  
 प्रतिभा केर आह्वान में कल्पवृक्ष सागि गेल

वृक्ष ई सिंचित रहय, विकसित रहय, हरियर रहय  
 पल्लवित पुष्पित फलित सुफल रहय, सुन्दर रहय  
 देश में विदेश में सरस्वती सा रहय  
 मैथिली अकावमीक कीर्ति ई अमर रहय

[ १७-५-१९७४ ]



## अन्तिम सत्य

किन्तु नहि बुझत छिय जानै इ तमरा छइ  
मग छिनु तन नहि छु तव पानि कर वनाश छइ  
पग न नाच कहौ इ धरेन जडत छइ  
मुझ २ ईक भाइ थार में कुहामा छइ  
एनु की शिखर २ एकर बाद की हइन छइ  
ई रहस्य क जनेछ २ एकर न परिधाय छइ  
स्वर्ग परमेश्वर कहौ २ ककरो न जानल छइ  
पुनर्जन्म तेन इहो मन कर दिलासा छइ  
मुख कण छे भेटेछ एतऽ सैं सैं सत्य थिकऽ  
शाश्वत ब्रह्म माक्ष आदि, मात्र मुग पिन्गय छइ  
कहिय भगवान क कहहु न कोओ छनि देखने  
कैवर्त मनुष्यक एक सहारा छइ, अशा छइ  
मुख दुखक भाग नहि छनि किएक ज्ञान छइ  
अपन-अपन कर्म छइ कि अपन अपन पामा छइ  
रंग आइ खोलि लियऽ, रस कने पीवि लियऽ  
कलिह एतय रहव करव, तकर कोन आशा छइ  
हंसि लियऽ, बजि लियऽ, प्रेम-गीत गवि लियऽ  
जहि ठाम जेवक अछि, तहाँ कोनो ने भाषा छइ  
काशी प्रयाग जाउ गंगा स्नान कर आउ  
आखिर त एक दिन सैं कर्मनारा छइ  
पूजा कर छौ, भाला गर में पहिरि लइ छौ  
तावत पिजाइत ओम्हर काल केर गडासा छइ  
मिलन छनेक छइ, अनेक छइ बिछोह एतय  
किहुए दिन आशा, तकर बाद त निराशा छइ  
जिनगी ई चिनगी जकाँ एक दिन मित्रा जाएत  
मरी त सिनेह बोच, यैह अभिलाषा छइ

[ १७-४-१९७७ ]

## मधुर भाषा मैथिली छी

भय ४ नवनील कामल  
मधुर भाषा मैथिली छी ।  
रसक गान्धर्व गान्धर्वक  
गुण पुष्करिणीक सुन्दर  
प्रसङ्गित परिमल प्रसूति  
रसक कामल शनदलो छी  
वाग्मती कम्पला वनागक  
गह्वरी केशी बग ओ  
मुरमाँक धाराक जल सौ  
भरलऽहौ गंगाजलो छी ।  
अपार विद्यापनिक जन्मन  
गँजो पोगय जर्ण  
अहाँ कविकोकिजक वृजिन  
कान्त कामल काली छी ।  
अपि मुनिक माणी अहाँ छी,  
दशक सौमिथ्यनो छी,  
भक्ति ओ भृंगार पुरित  
मधुरान्त पदावली छी ।  
भारती सुकुमार अहाँ छी,  
सुन केर भंडारऽहौ छी ।  
गद्यभाष केर बहिरथ  
द्वयवर्णिक सङ्गितो छी ।  
भारतक भृंगारऽहौ छी  
औ विहारक हारऽहौ छी  
अहाँ मिथिला केर मधुमय  
अमरमय रसकंदली छी  
सौलभाक सूत्र म गोंध रहल  
ज भाषाक माला  
तकर सौरभ वृद्धि हिन  
नंदनवनक चम्पाकली छी ।  
मधुर भाषा मैथिली छी ॥

સાઈ જીવ વે પૂમલ સમજા જીયા વડે  
જીવવલસા અગ વિગા રિકાગ વડે

पुनः स्वप्नः मे बन्धुं मे भग्नं  
निषिञ्चत अस्मि मे नोर्ध्वं मे भग्नं  
मे वारं अस्मि मे भग्नं मे भग्नं  
मे भग्नं मे भग्नं मे भग्नं मे भग्नं

अथर्ववेदः श्रीमद्भगवद्गीता

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्री कृष्णाय नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥

[illegible][illegible]

कई बातों में देखि लिये हैं, जो कि, जहाँ जायें जायें

ନିର୍ଦ୍ଦେଶ

[ 4036-3-24 ]

[ 1996-1997 年度 ]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

የዘመናዊ የፍትሕ ሥርዓት ማስፈጸም  
 ለፍትሕ ሥርዓት ማስፈጸም  
 የሚፈልጉትን ሥልጣን ለሚሰጥ  
 ሥርዓት ማስፈጸም ሥልጣን ለሚሰጥ  
 ሥርዓት ማስፈጸም ሥልጣን ለሚሰጥ

ሐዘ ይከፈላል ትክክል ይሆናል ት  
 ነህ ከጋራ ማታወቅ ከፍተኛ  
 ሐዘ ይከፈላል ሐዘ ይከፈላል  
 ከፍተኛ ሐዘ ይከፈላል

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

ॐ पावनं छिद्यं नमः त्वं देव  
 सर्वं कारिणम् अहं त्वं प्रभु  
 अर्चयामि भक्त्या श्रद्धया  
 त्वयि शरीरं कृतं त्वं देव

|      |      |      |      |
|------|------|------|------|
| 2018 | 2019 | 2020 | 2021 |
| 2018 | 2019 | 2020 | 2021 |
| 2018 | 2019 | 2020 | 2021 |
| 2018 | 2019 | 2020 | 2021 |

112 1125 1010 1010 1010  
1125 1125 1125 1125 1125  
1125 1125 1125 1125 1125  
1125 1125 1125 1125 1125

विद्यायां पदं महत्तमं

## आठ संकल्प

संकल्प लागू में आएल छी,  
हम आइ आठ संकल्प करब  
एहि में काना न विकल्प करब  
हम क्रिया करै अमुक-तय करब

[ १ ]

हम पुष्य कर समान करब  
विद्वानक हम यशमान करब  
देशक हम पुनरुत्थान करब  
हम श्रेष्ठ प्रथम संकल्प करब ।

[ २ ]

हम आरम में नहि फुलल रहब  
हम एक योग मिलि जुगल रहब  
सहित्यक भक्ति में सभ मिलि  
हम अक्षत मूल चढ़ैल करब  
हम ई दामर संकल्प करब ।

[ ३ ]

हम अपना में सखत सदा  
अपने भाषा में गप्प करब  
हम कहतु मैथिली बज्जा में  
कहियो नहि लज्जा बंध करब  
हम ई नमर संकल्प करब ।

[ ४ ]

नेना के आब सिखाएब नहि  
मम्मी दैडी मया पापा  
अपने भाषा में नेना के

पार्थिव प्रिया दल करब  
हम ई वीरम संकल्प करब

[ ५ ]

हम मैथिलीक पुस्तक कोनव  
लेखकक हाथ सौ नहि छोड़ब  
अपना भाषा कर पत्र पढ़ब  
ओकरो हम ग्राहक बनल करब  
हम ई पाँचम संकल्प करब ।

[ ६ ]

नव नव साहित्यक सर्जन कय  
हम प्रतिभा केर उपयोग करब  
दासरा के धर्म करक बदला  
हम रचनारमक निर्माण करब  
हम ई छठम संकल्प करब

[ ७ ]

हम मइय अपन अधिकार हनु  
नहि कउन अत्याचार सहब  
हम मरिधन में मैथिलीक  
न्यायचित स्थान दवाय रहब  
हम ई सातम संकल्प करब

[ ८ ]

हममग बालक के नहि बेचब  
बिनु दान नने बरदान कय  
भ्रष्टाचारक उन्मूलन कय  
हम सामाजिक कल्याण करब  
हम ई आठम संकल्प करब ।

[ २३ ११-११३३ ]

आठ संकल्प / १११

## घूँटर काका

घूँटर काका निश्चय खेत आइ धनुरक फऽह  
 लर छैन्ह आगल ज हुनक सुपुत्र  
 कय लगभिन प्रपचार कलहु विवाह  
 छोट मुल मे छोट बंश मे जय  
 साधारण वृत्त मे छोटबन्नाक नाम  
 राहु पर दलबन्ध रहि कंचा एक  
 अधनठबा मरिपहुँ लेलकैन्ह परतारि  
 घूँटर काका निश्चय खेत आइ धनुरक फऽह  
 आगलिय छौंटी कर चनकी देखि  
 दुल गलबिन लाल हुनकर कंठार  
 मुल गात्र धूल कर विचार यध त्याग  
 बशक मयंदा केँ लखा राख  
 दय देलबिन आहि छौंटी केँ सिंदूर  
 ज केँन अछि पहिन सँ वो एल  
 घूँटर काका घल्ल ओख नियरि  
 को विवाह सँ पहिने अछि बो. एत ?  
 तखन आकरा जतिक कोन ठेकान ?  
 ब्रतणी मे भसिऐला कठोर  
 एतय दिन मी छल जे कहुआ पौज  
 सँझ आ धौस बय बलि गेल फल  
 फुल्लुन बबू बड़ावय लगलधेन्ह  
 कनियो कय गली अछि वा एत पास  
 नकर अथ जे बाइनी आव आकल  
 ब्रह्मन करी कचहऽरे मे आय  
 हाथय सभकर आगौ भऽकऽ ठहि  
 और मोर्जकल सभ सँ लती फोस ।  
 घूँटर काका बजला माथ ठाँकत  
 आय पैह जे यौकी छल देखबक

अहम करना राम राम पु. ४  
 छल जे जेक न बरक बल राम  
 खेत बुझी खा दुनक गलबिन जे  
 हाकिम यधर पदन्ह छुऽ भसिन्  
 जत मरन कर मंग निऽनी बर  
 दयग तरनक ज मरत आकल  
 लकऽ लगल अपन अपन कल  
 होख होज पदन्ह हुनका गक  
 बइका बइका बाबू आ बबुआन  
 यधयाक छान बाबू लखेन्ह  
 नेहरा मी मुनन श्रीधरक ममाइ  
 कमी मिरा सँ दूहनी राध  
 आ पचाडी कर कमंडलु दस  
 दडिभा मी श्री बननिया नर  
 आ मुजफ्फरपुर सँ बुनक महु  
 गलिय भस्ने नय लय कऽ अलह  
 डग गही ठार दनह मुगल  
 ओ कलौ होय होन कय सभ मे लग  
 दिन दिन अपन बडान जना फाम  
 ज कहियो शेकऽ चालधन करार  
 कानि जऽ अरज मे दनन्ह होर  
 कंठग छथि नहन बांड भधाह  
 बबुआन केँ लेलन्हि माथ चदाय  
 एव दिन आ मी भऽ लेलन्हि ठीक  
 पाच नच होर पचहि कऽ कान  
 कलवागन कऽ दलन्हि कल कर नर  
 गह भऽक जहने मयंदा छल  
 गहने लगल मुँह मे करिख बुन  
 पुग्छा लोकनिक जे अंगन छल पग  
 मे सभटा भऽ गेल गबनोरक बुड



१३ मानो र ह जैय करल भुड  
 भुड खुमन बैसल कहुआ पौज  
 मन सुटकल अछि नगडा पौज  
 या एल कनियो रहन मारलहु दुग  
 दुटि गन पजुआड वराक दुग  
 मयन भम कर हाई गनह दुग  
 दुर काका जिविए कऽ की करताह ?  
 भुट काका नश्य खता आइ धनुरक फऽड

(११७८)

## वनगाम-महिषी स्मृति

"स छलहुँ एहि घर सहसा में वनगाम  
 लक्ष्मीनाथ गंसडक देखल पवित्र स्थान  
 मुष्कागम मानर अर अग्रम तपकन दुल  
 नद कर गिउ । वस भाव बुदाउ समान  
 नरक पभाव नै अलाकक निर्दि न दुनक  
 सुनलहुँ आनुक्का भक्त लोकक मभुदाय में

महिषी मध्य जा कऽ महिषमाक दान जेल  
 उगग मन्द म ज कऽ प्रगम केल  
 भाँस में विभार भेल तहाँ एक मैथिल  
 भगवताक लल कमल कण्ठ में गीत छल  
 'ह ह लग जात सगदमा दुख दूर करु'  
 लागल जेन काम म भयन वरी दन साँस  
 वीस गलहुँ भत्र मृध नामन समन पर  
 अन्तर में ठुका कर गन गि केल छल

देखल ओ स्थान जहाँ भुनक इह अनेक  
 देखल ओ इनाम जहाँ दानया प्रीतिगरी  
 शंकर क कहन छलहुँ 'जेल पर मोड़ अत्य  
 भौं गलाजा पर नुगा बल्ल १३  
 'मन पुगल' अ 'पुगल' प्रमन शब्द  
 वेह पड़ न मदन मिश्रक दवा १४

धन्य श्री राम छल । धन्य ओ घर छल ।  
 धन्य ओ इनाम छल धन्य ओ प्रीतिगरी  
 धन्य छला मदन मिश्र भट्ट रनक नाथ  
 धन्य ओ मिथिला छल  
 धन्य ओ जीवन छल ।  
 मर्त्यक पवित्र जीवन ।

वेधक मर नहि  
 धम कर 'नरक' मर  
 एह दिय ध्यान नहि ।  
 कृपि लुब्ध ग्राहमा छला ।  
 नदी म पान मन ।  
 मग्ना-मनन ओ तर्पण ।  
 'न' पठ वर धर्म  
 अहिक सदाचार  
 त्याग्य ओ अध्यापन  
 अर्वाधिक योग्य सत्कार ।  
 अर्काच विनकार  
 मग पदुआक इतर  
 दुध अटल तहंठ  
 मधुर आमक अमर  
 चडा-दहं जलपान  
 मधन भक्षण पान  
 काशी कमला क्लान  
 अचल मे घर दान  
 वन कऽ रहन छानाह ।  
 अग्निनि पांडित प्रधान  
 करे छलाह जन दान ।  
 धन्य ओ गृहस्थ छलाह  
 कमनिष्ठ धर्मप्राण ।

आव ओहि माटि पर  
 घनतै कोना कारखना  
 धर्म धर्म वज्रत मधुन  
 भटती लख रहा  
 लोहा गलैत रहन  
 चिमनी सँ धुआँ उठतै  
 वैह होयतैक अग्निहोत्र

अहिक भाष वनपद  
 वैह शाख नद तेन  
 अर ओ इतर ओर  
 भसि लपत भधि तरान  
 अम उभ वडक नल कऽ गडल जाणन  
 रत्रहनि ओ मलजानी पानभरनी नहि धरने

मडनक सत्कार  
 करे जैन मुर्गी पालन  
 अंडा टांस्ट ओपलट निन्य  
 कतिह वकजस्ट

मुणा अच वाचन नहि कृत्तुदक धर्मि हिन  
 'म्यर' प्रमाण' कर स्थान मे कृकड़ रु  
 शरदक स्थान वज्रत अथ भापु कागखना कर  
 पागवना कर्म छ'इ ई नरकनिक धिवाश हाइए  
 टापवला कहै छ'इ ई समाजक विकास थाक

अबती बेर ओहो देखैत ऐलहुँ घर-डोर  
 जाहिमे रहैत छलाह शरदक वर-पुत्र  
 भावना-प्रवीण सुकुमार-हृदय राजकमल  
 देखल ओहो जाहिरक टट जहाँ ग्रामि कऽ ओ  
 सजन करे छलाह काव्य ओ उपन्यास  
 मन मे भेल, रहितैन्ह एहिनाम स्मारक हुनक  
 नान्हियो दा प्रस्तर-भूति

फल हम चढ़ा विविगन्ध  
 किन्तु ग्राहकस काश मात्र भणि ठहल छल  
 कमल लुप्त भला का'इ ता रूप छल  
 हृदयक कान कान मे कलक ठस लागल गेल  
 लागल 'ओ काना वस्तु अलग हरा अयल हाइ

## मैथिली-वन्दना

[illegible]

1936 4 23

## हे मातृभूमि केर माटी

[illegible]

[ ୧୫୯ ]

## कहू की औ बाबू

[ १ ]

बसंत रंग है ज गंधी म कंदरा  
गजल दादा आ कछ्वाली नवय  
किछु दिन में एहां देखन आ बाबू  
ज कविताक संग संग खिल बसंत

[ २ ]

आल पतलधिन्ह अश्विन्त उ म मा  
कविताक अर्थ हमरा किछु बहि लगेय  
चक्रमा भकवि जेव लागी न पाग  
हमरा न दूर अथ दूर भयेय

[ ३ ]

बसंत रंग बाबू कहू को ओ जय  
जमान रंग ही न छिछू नहि परिय  
जहाँ दूध दू धूल है छल टफा म  
नहीं भाव नहि एक निरंग दय

[ ४ ]

पंचमो बसंत— कहू को कशन हम  
सायक बना बाल साध रंग मनेय  
नहन कागजी एत पचलक अउ ज  
भाजा में भरि एत कय नहि खोयेय

[ ५ ]

पुनर्गती १००० है पूरा ब्रामका  
बोली देवरा म न निपटा रखन  
शक्ति मन्त्र के छाड़ देन है ह  
शक्ति नरैयउ पूजा करय

[ ६ ]

संग बाजान में चिकारै एनाह  
ई अंधा नगरीक देख तमसा  
चिनिश में बसी महग दैछ ननुआ  
ई पादिआइन भयको अततर करय

[ ७ ]

पमा कटलधिन्ह भाविन्त बरख ।  
कतहू लख माग के मामो बरैय ?  
अहाँक नाय इमार बड़िन छधि औ बाउ  
जे मम्मी सिखलक से धुनई करय

[ ८ ]

बसंत प्रहसर— कानो एकलअक  
आल कटलधिन्ह गुरु द्रोण कहियो  
आकर भाव प्रसिद्ध सवाक खोले  
कतक शिष्य गुरुजन के तकने फीरै

[ ९ ]

अहिंस म गाना खन अफमानो  
जाना के दैग्यनिह द छलधिन्ह किरानो—



शायं तब मैं छी अहाँ चारु अरु,  
हिमाचलन मनब न वृजय अवय

[१०]

पुष्टिपण्ड वरिच मे । वहाँ में ही आरुन ?  
रुन दलक हज म अरि वरु  
हमर जीर कलकन ट अरु वरु छी  
आ लइका जे छे हम मे वरु नहि पडैय

[११]

महज पा रहल छैक कड़ाक हरी  
कनक राम नको दयावण पडैय  
मुन छी मुन उ कराइ अकन  
पटना म फाड़व नहार हटल वरु

[१२]

पुष्टिपण्ड कय जैद सैं अरु अहाँ कर  
एन टेह पडैय किए ई लरैय ?  
बिगडि ऊँट बजल अरु छी अथाहे  
हमर कन अरु माझ अरु कै सुडैय ?

[११-१२-१३०८]

## कश्मीर हमर थीक

कश्मीर हमर विषय भाल मध परक थीक ।  
पराग अरुन जे अमनाथ हमर थीक  
हम मरु पम अरु अरुनाक नको छे  
अरुन पम अरु शिवानेव नको छे  
मरुन नको महावाग मरु हाथ गहय  
अरुमदपोक छुटल सदा मरु धनय  
मरुन मरुन अरु नको जोग  
पुष्टिपण्ड मरु ई हमर क छीनि मरुन  
अमल्य 'हम किरोट ई व' कौन मरुन ?  
कश्मीर अरु भुक्त मरुन होर हमर थीक  
अरु धातु, अरु नरु अरु भामाया नको  
मरुन मरुन छुटल मरु अरु मरुन अरु  
हैं अरु लरुन कुभकणक पर जूनि कर  
मरुनमरुन अरु रकयोजक वाट मरुन धरु ।  
दबानर सदा मरु ईनिहान कर्षय  
ई पुष्टिपण्ड अरु कौन लरु न मरुन  
मरुन पिसाच छीनि ई नरुन हमर थीक ।  
हम एक जोगय छे लरु वा मुसलमान  
इनाथ मरुन पारमो अरु बौद्ध सभ समान  
हम मरु मिलि वरुन छे, अरुन 'जग जतान'  
हम मरु मिलि वरुन छे अरुन 'जग जतान'  
हमर देश हिंदुनान भुविमल अरु महान  
मरुन मरुन पनक नरुन भुनिमन  
मरुन अरु हिमालय म पनोर हमर थीक  
कश्मीर कय मरुन और चार हमर थीक  
अरु मरुन और पंचनदीक नीर हमर थीक  
कल कल जल प्रधान केर क्षीर हमर थीक

मन्नामः में उतल ओ ममीर हमार शोक  
 पन-वान पहनाम कर रणधोर हमार शोक ।  
 बलजक हनु चार रै जहंग हमार धोक ।  
 सावर तिमन बंधववला तीर हमार धोक ।  
 रदन कर र कंडाव नहन जोर हमार धोक  
 कश्मीर हमार मांग रमा पानि हमार अंग ।  
 रहल रहल अ रहल गदिकान हमार मांग  
 बडना उ अंक हनु, दश अंग-धन  
 बुझतह कहन हाइछे कसर केर लल रंग ।  
 ओ नाल रग जाग कर अवीर हमार धोक ।  
 रानेडका झंकार ओ मजीर हमार धोक ।  
 अ छेव पुन गिलगिट हालोपीर हमार धोक ।  
 ओ रक्त भल दहत मसौडनिक मोर हमार धोक ।  
 चीनीक गोक काल नवदक खीर हमार धोक ।

[ ११७८ ]

## मंगल प्रभात

उठि रहल देश म नरक जगत  
 आँछ आवि रहल नूनन प्रभात  
 नीह मरक कआ मरत आव  
 भरि पट खेतइ मम दल भत

बकार आव बैसतइ ने कआ  
 सभ किछु अवश्य करतैक कआ  
 स्त्रीगण पुरुषक समकक्ष बनत  
 सम्पत्तक हारन समज

नहि रहत वर्ग ओ वर्ग भेद  
 ककरो मन में रहतइ न खेद  
 लखपतियो बुझता अपक स्वेद  
 भांगिरो कै घटतैक भेद

केओ रहत आव नहि भूमिहीन  
 रहतैक ने परती खेत आव  
 छाछानक नहि रहतैक अभात  
 बान्हरा आव खेतइ पालाव

हनैक मुनभ सभ अन चख  
 चहत्तैक ने कधु केर आव दाम  
 घत दूध दही भेटतैक शुद्ध  
 गहि मित्रप केर छनैक नाम

अनुशासन मयाद बडनइ  
 केओ करतइ नहि चोरिक बजार  
 मंगनइ नहि केओ दहेज आव  
 दस बीस तीस चालिस हजार

मंगल प्रभात / 125

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय  
 नमो भगवते वासुदेवाय

मन भाई मुरां में एक संग  
 गीता कृष्ण हाग धमार

पुनि मलय अहिंसा अन्धकार  
 मी अदुत धारक वाणिजान  
 पुनि हंत देश का यशस्वर  
 जय जय जय जय जय किसान

अछि अचि रहल ई हरित कर्मा  
 अछि अचि रहल ई कान्ति शक्ति  
 बहनेक दुध कर धर भाव  
 हरियर हरियर हनेक छल

उछि रहल उछि कर नव बसर  
 हेलैक शहर हेलैक दशर  
 मध लोकरक जेन्ना हल  
 अछि अचि रहल गंगल प्रधान

( १९५६ )

## बुचकून बाबाक स्वप्न

अरे देव रामक बहुत लोक जमा घेत छलन्ह  
बाबुजी नमल छल गलसबु केर दलान ज  
पुछि देखल बुचकून बाबा नासि लैत हमरा मी  
मी बुचकून बाबा नासि लैत हमरा मी  
पछि नै हमरा मधुन को को उपकार होत  
हम रहानी लोक भगिनी कऽ गुआ दिह.

हम कहलन्ह बाबा । जेतोक कल्याण हेत  
नाम प्रकारक योजना सभ बनलन्ह अछि  
जाहि में गरीबी हटा दश मध्यम हंत  
आर्थिक विकास हो, सभतरि सभ क्षेत्र  
नै आर दक्षी कें राज्यक प्रयत्न होत  
नलकष दोग मधुन में सिंचाई होत ।  
अन फल फल में मारस भूमि हरियर होत  
सभ लोकक मुँह पर अब हरियरी अब जेत  
कओ न्हि रहत भूमिहीन, गृहहीन कओ न्हि रहत,  
बेमल वज्र अब कओ न्हि कनहु रहत ।  
गाम गाम बिजली जाएत, नव-नव कारखाना खुलत  
उद्यम परत जाएत, सभतरि देहात में  
घर-घर मशीन करत नाना प्रकार केर  
आब बाबा ! गाम घरक नक्सो बदलि जाएत ।  
महंगी आब दूर होत, सुलभ अन्न-वस्त्र होत  
चाकर गहुम चोनी भेटत अन्न दान पर ।  
करता जे मिलवट स लेन आय जेत मध्य  
नता जे घूम अब इधकहु पहिरनाक  
अनुशासन मां जे करल से दण्डित होत  
पडता जे दहेज आय कारागर जेतह ।  
पुरुष और स्त्रीण जे समान अधिकार रत  
आब कओ ककरो दया कऽ रखीन्ह नहि

अरे देव रामक बहुत लोक जमा घेत छलन्ह  
बाबा नासि लैत हमरा मी

बाबा बजलन्ह बाबा । मन मर्यादा बाबा  
नीक लोक मुँह पर अब कनहु होत  
"कल एक वान दूव हमरा बुझा क" कह  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा

हम कहलन्ह बाबा । मन मर्यादा बाबा  
लल्लु छी गुन छी गुन छी दूव दूव छी  
लल्लु छी गुन छी गुन छी दूव दूव छी  
एहि तरहें माल माल माल वृद्ध भव जव  
होत नियामन नहि त धन कहां में बूझ ।

बाबा बजलन्ह बाबा । मन मर्यादा बाबा  
लल्लु छी गुन छी गुन छी दूव दूव छी

हम कहलन्ह बाबा । मन मर्यादा बाबा  
सभ मिलि छी जेत मधु । उत्पदन बहानी छी  
मंजरीण अपन हाथ पर जति मल्ल छी  
अकसर और नता सभ जेत केर मध्य छी  
महुआक राते नहि जेत मधु । उत्पदन बहानी छी  
जेटन छवाम मधु । पुरी अब मधु नहि  
दूव बाबा । मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा

बाबा बजलन्ह बाबा । मन मर्यादा बाबा  
कल्लु छी गुन छी गुन छी दूव दूव छी  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा  
मन मर्यादा बाबा । मन मर्यादा बाबा



## जय विद्यापति

जं न निरकर अमर कति मर्हन्त्यक भूगण  
यश निमन पश्यन जाँवक विरचित मकल नमर  
विदित मकल मनाए काव्य पद्य भवहार  
छाया पृथ्वी में बहते अछि रस कर निहार  
परम भक्ति केर सुध दान छथि गनिका ला' म  
निरकर कोहि रहैन्ह सवरा उगमम जग में

[ 'स्मृतिका' - छैनक श्रविति १९७९ ]

## शुभाशंसा

ज 'कौचकनध' कर  
भीम केर अज दण्डमल्लिह ।  
ज एकाकीमें 'उपनयनक'  
भोज' चखअल्लिह ।

ज कएलन्हि साहस्य साधन  
घोर तपस्या  
'कृष्णचरित' केर गाथा  
जनिकर छैन्हि 'नमस्या' ।

निर जेवथ से मित्रव  
नमनाथ जा जो कम  
मैथिलीक इतिहास में  
ओ निश्चय रहल अमर ॥

[ नमनाथ उर अभिनन्दन छन्ध-१९८० ]

## परिचारिका स्तोत्र

### प्रथम दर्शन भेला पर

ह मरुतवना परम सुकर्म  
रक्षकवना मरुत मरुत धरि  
क अहाँ छी नार ?

गुहिन गिरिकया मरुत गंगांगि हे मुकुमार  
क दलक अकाल मो एहि लक मध्य उत्तर ?  
देवकन्य मरुत पृथ्वीपर नारण रहि देत  
नरि अरुत उरुत एहि पर सदैव चलैत  
दिव्य गंगांगि पाहल्लक तमस छिरबैत  
चालल छी दल बान्मिक; पली जकाँ चाहकैत  
हसिरी कर पक आएल हों जना कि उदैत  
भन सर सौं स्नान कर होए जकाँ चमकैत  
चाहि मयाहित अहाँ केर छीक  
दृष्टि धिक शाल्लिल्लक पनोक  
साधना संयम एना अवधारि  
कतय मखल ह तारिअ कुयनि ?

### भर्ती भेला पर

नाम कलाइ में सुशोभित अछि मिस्टवाच  
नामन देखि अहाँ चट बनबैत छी  
सजि बाध द्वारा तनमन कैं सुशोभल करी  
नित्य अहाँ स्त्रच्छ परिधान बदलैत छी ।  
बादरकें सीटि, चारु दिस सैं, पलंग पर  
चिक्कन सुकामल, अहाँ सेज बनबैत छी

मन न विनाम नरु दूर दखन्य कल  
मन धरन वहाँ अमन बुझयन छ।

मंग छुटला पू

मम न जानन अमन भी नरु कर मंगन माइ  
हरन कयन न विनिम म न न नरु मरु नरु  
श्रीव नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु  
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

[११६१]

## मनचन बाबा

मनचन यवा शाय बूढ़ नरु

कावो कावो नरु जाइ जाइ

पदने पातर नरु नरु नरु

दुपा नरु नरु नरु नरु

ककन नरु नरु नरु नरु

वैशाख मम मे उत्त पदय  
जठक ल मे घन नहाथ  
निन अमन नरु नरु नरु  
औ एक लगीनरु नरु नरु

यवई मानदह कृष्णभाग

मिपया मुकुल आ भिरजापुर

करवा राडी बधुआ कतकी

करा कटहर लमन यदहर

क रक्षा करत एहि सभ कोर  
क छाएन नरु अम अम  
मतन कदाचित जी न धन  
पदती पदि नाएत कलम बाग  
मनचन बाबा कगरु नरु नरु  
रिझि गेलथिन्ह बाबा नैदपनाथ  
वरदान रूप दैलथिन्ह प्रसाद

बाबा नरु गेलथिन्ह सन पुव  
मल नरु नरु लुनो ममन  
कलमी अमीद पर जनिक नरु  
नरु नरु नरु नरु नरु

मनचन यवा शाय बूढ़ धेना

नरु सभ भलथिन्ह नरु नरु

मनचन बाबा / 133

क. अ. वा. शि. शेषान् 'क्षी' नान्  
क. अ. पु. 'अक्ष' नान्  
क. अ. व. शि. क. शेषान् 'क्षी' नान्  
क. अ. क. शि. शेषान् 'क्षी' नान्

हम सब हवा के दाहि दाहि  
सब गाछ पुसका काटि छूटि  
नव वस्तु लगाएव मन मारिक  
अगूर सब काज बनाम

अथ मन्त्र इ वात मूनि  
गद् गद् ण्ड छिन्नि मन्त्रन काव  
भाजन दधि एहन मपुत  
जे वात कं दवय पछाहि  
अञ्जय ईत हुनका छधीन  
नरा हा एहन बार पुत्र  
अ तोरा एहिना देओ पछाहि  
ई परम्परा अक्षय रहौह ।

बचाक मनक अभिलाष छैन्ह  
मउरी त हमरा एक कान  
एहो गाछी मे गाड़ि दैत  
मुइला पर हृदय जुड़ाएल रहैत

हमरा छड़डी केर खाद पखि  
हगर शक्ति में जुड़ पखि  
उड़ये नय नत फल फल पत  
फल बड़ो होकर बनल रहय  
हर फकि घेलावह जे ईक्टर  
ई कलम बाग हमरे कहाओत

मनचन शाय। आद्य ब्रह्म गीता

{ १९८१ }

134 / हरिमोहन झा रचनश्रवणी

कहूँ अब जो ज कहन मन लैय  
 गुन भल ठहै छै किछु न पर्य  
 जहाँ गंग कंस ज ककुम गडे छन  
 तहाँ अब एहवाक रदा उदैय  
 कदाम पिरा नलबक छन छन  
 लकी अब छुछ पनो बरिय  
 मधुमाम कर ओ गस ग बिसरल  
 वमन्क वहाग म विरहा गवैय  
 कंधन वन्य गगन म नृप ओछे  
 आगक टिका रन कौन बरैय  
 धाँ मास फागन मे फगुआ रबै छल  
 दूध अ इल्लि मजोर बजै छल  
 मयौ मे धम्मर कर ध्वनि उडै छल  
 तहाँ आब ओ स्वर सुनि नाह पाद  
 लाम जना कन मे कदा कहैय  
 अ अन्द कर अब कोटा खनम अछि  
 ड डडु रैम अ विनादक फुन्क्का  
 'मगय भवका' पादपावम

{ C 3 79C2 }

एहि बेरक फगुआ / 135

## परतारु जुनि

[ १ ]

स्वयं पानीक कर गप्प कहत आगल छी  
अन्त अमरचक्र गदग दैत आगल छ  
पुज्य माध कर वन वजैत आगल छी  
दवा और दवाक नाम जपैत आगल छ  
हम छी पूछैत एना किये कौन अरु छी  
हमरा परतारु जुनि हम अशान्त धायल छी

[ २ ]

गंगाक उपदेश यदि शक के उड़ा दितइ  
नदान मलहम जकाँ बधकै पूरा दितइ  
मंत्र यदि काल सग कर फन धुन दितइ  
तत्र यदि कहियो मुडल लक के धुन दितइ  
हमहु सखन अहितहुँ न शक कर कायल छी  
हमरा परतारु जुनि हम अशान्त धायल छी

[ ३ ]

गोश्वरत यहु यदि जगाकै पलटि दितइ  
जेलन भजन जात मुचुकै उनटि दितइ  
दान पुण्य दान यदि माह कर अथ हरितइ  
ध्यान योग कौन यदि करज ई नहि फटितइ  
भाट करिविएक किन्तु मर्महिन शकायल छी  
हमरा परतारु जुनि हम अशान्त धायल छी

[ ४ ]

काल कर निन्दन प्रशंसा स्निग्धताएल छी ।  
विधि केर विधान दखि शुभ विधुआएल छी ।

नाक के पदम जान मध्य आशुभकाल छी ।  
वाम चित्त पदम जकाँ बधकै उदायल छी ।  
शरीर नहि धरैत कल, तब धरु आगल छी ।  
हमरा परतारु जुनि हम अशान्त धायल छी ।

[ ५ ]

कम फलक इन गनि रह अरि वरुन अरि  
इश्वरी नय देखि गूल गर्व जाइन अरि  
कथा पुराण सुनि और नंग भरि जाइन अरि  
मंदिर घे मूर्ति देखि मन पाइ जाइन अरि  
मान मन बच्चा बलि गेल हम चाटबल छी  
हमरा परतारु जुनि हम अशान्त धायल छी

[ ११८३ ]



## परिशिष्ट

( अन्योन्य रचनामे आयल कविता )

|                              |  |
|------------------------------|--|
| हे शमिक । कष्ट लखि अहाँक     | — कवि जी (प्रणम्य देयता)                   |
| हे हे मजूर !                 | — वैह                                      |
| अधि । अनन्त दोगल करणे !      | — वैह                                      |
| हे सीर ! हलापुख धर-खदग       | — वैह                                      |
| अधि । प्रथण्ड घडिके !        | — वैह                                      |
| झौंसीक रानी                  | — वैह                                      |
| हे प्रगतिशील महिला समाज      | — वैह                                      |
| प्रिये ! हम जाइत छी ओहि पार  | — वैह                                      |
| धन्य-धन्य मातृभूमि           | — अयाची मिश्र (गद्यरी)                     |
| धन्य ई मिथिलेशक दरबार        | — वैह                                      |
| हे सीर ! अमर कीर्तिक निधान ! | — वैह                                      |
| हरिहर जन्म किएक लेल          | — पाण्डक महर्ष (खट्टर ककाक तरंग)           |
| फेहन भेल अन्हेर              | — खट्टर ककाक टटयग गया<br>(खट्टर ककाक तरंग) |

## વિષય-સૂચી

| અધ્યાય                   | પૃષ્ઠ |
|--------------------------|-------|
| ૧. વાવૂઝી                | ૧     |
| ૨. જો રિત                | ૨૭    |
| ૩. જો મોફ                | ૨૯    |
| ૪. વાવૂ-સંસ્કાર          | ૪૧    |
| ૫. જયશૂર-મંથિર           | ૪૧    |
| ૬. વિન્ટો હોસ્ટલ         | ૭૪    |
| ૭. પુસ્તક-ચંદાર          | ૮૫    |
| ૮. મી. જન. કાલેજ         | ૯૭    |
| ૯. મોંધ-વિભાગ            | ૧૧૮   |
| ૧૦. રામી કાટ             | ૧૪૦   |
| ૧૧. જોળ અધ્યાય           | ૧૪૮   |
| પરિશિષ્ટ :               |       |
| ૧. પુસ્તકાલિ             | ૧૭૮   |
| ૨. જો લેરખંગા હે લેરખંગા | ૧૮૪   |
| ૩. અન્નિય પત્ર           | ૧૮૯   |

## बाबूजी

( स्तं० पं० जनार्दन झा "जन्मसीध" )

हमारे पिता पं० जनार्दन झा जन्मसीध के हिन्दू साहित्यकार  
छनाह। ओ गन्तु एक पंडित पञ्चांग के रचयिता, हिन्दू धर्म के रक्षक और  
बाबूजी एवं मैथिली के प्रवर्धक रहल ह।

हमारे जन्म १८७२ (कालिक कृष्ण पूर्णिमा) के दिन काशी के  
शामक प्रसिद्धि पंडित परिवार में भेल छल। माता-पिता महाभक्त-  
पाथ्याय तथा साधुव्रथासी पंडित छल।

बाबूजीक मातामह पं० चन्द्रमणि झा एक विद्वान् पण्डित छल।  
कुमरजी नामी जमीनदार छल। माता, महारानी, गुरुदास और  
किशोर्देवीक अलमारी में अने अने पुस्तक छल। छोट छल तहि  
दिन से पुराने पुस्तक अन्तर्गत ओ अने विषय जीवित धनमातृक  
कैलनि।

माता बाबूजीक नदीप बर्षक रहल, तेहन हुनका पिता (पिता) परिवारक  
अमल में लगेन। तदनन्तर बाबूजी अपन मातृक (कुमर बाबूजीपुर)  
में बसि गेल ह।

[एहि सभे पंडित-पण्डित मैथिली के प्रवर्धक छल। अथवा हिन्दू सम्बन्ध में एक  
विद्वान् छल। मातामह पंडित नामक महापुरुष छल। महारानी  
(अर्थात्) मातामह पंडितक कवि पुत्र बाबू बहादुर। ओ हिन्दू धर्म  
कोरत छल। ओ मातामह पंडितक जन्मस्थान में एक मातामह  
रहल छल। संयोग से मातामह एक मैथिली विद्वान् नाम कुमर)  
ओहि बाबूका सौ अथवा नाम ओ रहल छल। मातामह  
दक्षिण ओर दक्षिण ओर मातामह नामक पुत्र रहल ह। ओ मातामह

देलमिन । ओ जमिआर हनेका हा मामम रहि ये छ ज्ञान के भित ।  
ओ अपरिवारक विनय एवमि वाम भवा और नवमम एवम सव नमि कायम  
पमि रोममि । ओ जमिआर जमिआर कृमि वाम । ओ जमिआर जमिआर  
कृमि वामिओर जमिआर जमिआर जमिआर जमिआर जमिआर जमिआर

[illegible]

अभ्यास नाम ५० हीरात्मक मुद्रा, ५० रत्नमय गारुड, ५० कृपा प्रदत्त  
 सेहो शिक्षक होकर मद्रास प्रान्त में रहने लगे। मासिक वेतन ५०० रु.  
 संस्कार देखि हुनका बहुत मानन होयनि। एतन्तु राजा स्व अन्धकार  
 होइत स्थिति रहि रहि राजा के शिक्षा न लेने प्रत्यक्ष प्रमाणित ।

[illegible][illegible]

१०५  
 १०६

मां मेवता ज्ञान-२६ नदि पृष्ठ-३, ७५०१

ਸਭਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ

27-13 6 48 47 17 12 11 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

५ अथवा ति-३ म २, ४, ५

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्राप्त मिलिनी और कलकत्ता में प्रवेश भवन ६, नुमाये ५५५ कवि-  
 शानि प्रसङ्गित भवन ३० के अन्तर्भाषाये सुन्दर कविना वन भवन नाग  
 वन/ह

यंगूजी अष्टाशुभे वर्षे अथवास विष्णु काय करय अथवाह, किं  
 दिन मीनायदी मय मुरसं ह्कृतमे, किं दिन (मधेपुराक ममीय) एकीकी  
 ह्कृतमे । वसंतम वर्षे हुनक विचार वनेही-भायी (चारमे मदीर-मिवागी) पं  
 मचारी साक कया (जगमी देवी हं सेनं ।

१८९६१ बाबू जो जैनपुर (मुकन्दरपुर जिला) गन्तु ओर रिहामबाग +  
 चारि वर्ग अध्यापन कार्य में हैं। जाहि, एक महीन जोधरी रघुनाथ दास।  
 काठन शैक्षिक स्थिति धराह। जो काठनूरम स्थित मित्र नाथन मासिक पत्र  
 मजबूत धराह, जाहिन मद्रासपुति छोरेन लुत्तक बाबू जो सेहो अवन पुति  
 यहाबय नगलधन ।

ओरिष्ठ सभ (१९०० ई.स.) भिन्न (पूर्विका) क दा १ अन्तर्गत मिह  
नेह्न साहित्यपुराणी आ एकात्मिक अन्तर्गत के अन्तर्गत नर १ अभिषेक नर १  
सहस्र १११६ : अन्तर्गत दुर्गा दुर्गा अन्तर्गत भिन्न १ अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
पहले न नर १ अन्तर्गत अन्तर्गत १ अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत

अंतिम समय अत्र पंडित कवि श्रीमनमक भांडारि व. शिवन गुरुजन उद्या  
प० अतिथिवाचन स्वामि (कापी), नारद भ कवि (अंगन , पञ्चरात्र कवि  
(सुरत-गुरु), प० कुरु जा (पंडितजी) प० श्रीमान् मिश्र (गवेषण)। निम्न  
दशवारिक सप्तशतीतिन गीतरी रोहित गुरुजक भांडारि व. शिवन गुरुजन  
जादव गुरुजक देवा मंदार वनछात्र श्री श्रीमो गुरुजक देवा

हनुमन् चरित कथनके दश द्वा उपाख्यान दल अष्टम अंश

प्रथम महाद्वार को मनुष्यों का न ज्ञान था  
द्वितीय पर्वत भीमको, बड़ाहू को देवरास है।  
तृतीय मृग को साय राक्षसी जनपीवन स्थो  
पापी अति पण्डित ब्रह्माभिष को साध्या ते  
दक्ष ब्रह्मादिन को विष्णु प्रलय धन स्तो  
अनको ब्रह्मावे हेतु हाथ गिरि धर्या ते  
मय की पुकार सुनि बौद्ध मुक्ति जनक रा  
भरी बर काह विन नमः विष्णुभ्याम् है।







१९११-१२ ई. में बाबूजी घर पर रहि मेमली द्वारा स्वयंसेवापूर्वक  
 जीविकाप्राप्ति करीत रहलाह । १९१२ में ओ पनवाड़िया प्रियव्रत हाई स्कूल में  
 हिंदी व्याकरण व्यापक निपुण भेलह । १९१२-१३ ई. में ओ नौवां कक्षा में  
 प्रवेश करि पनवाड़ियाक राजबहादुर लक्ष्मी नारायण गिर जूनका स्कूल में  
 प्रवेश करि ।

१९१३ ई. में बाबूजी निवासी शिक्षक सम्पादक भ' द' गंगा नगर में निवासी  
 जगतम लाल प्रसाद कविता 'वचन' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित  
 होलाह । हुनकर मैथिली पद्य में 'मोती' नामक भाषा में होलाह ।

ओ 'कलिकता' आ 'निवासी' नामक उपस्थापक मैथिली में 'नवतन'  
 छलाह ओ मैथिली-निहिरे धारासाहिक रूप में प्रकाशित भ' छल छलैत ।  
 (ओहिमें पूर्व मैथिली में आध्यात्मिक आ उदात्तान निखल जाइत छलैत ।  
 आधुनिक संगक भौतिक सामाजिक उपस्थापक ओमें से बाबूजीक नैलैत ।

बाबूजी अपन सम्पादन-कार्य में लिखित सारांशक सङ्कलन-रचना में  
 'मिथिला मिहिर' के विभूषित क' दलमिल्ल । १९१० में कविपुत्री सन्तोषी  
 (बाबा लक्ष्मीनारायण) नामक भाषा में प्रकाशित लिखल छलैत ओ धारासाहिक  
 रूप में प्रकाशित भेलैत । 'पुनर्निवाह' नामक पत्रिका में लिखल छलैत ।  
 बाबूजी मधुबनी प्रिंटिंग प्रेस में प्रकाशित भेलैत ।

ओ विद्यापतिक पुण्य-पर्व (मस्तिष्क व हिन्दी प्रयास महा केलनि ओ  
 विद्यापति प्रेम में प्रकाशित भेलैत ।)

१९२२ ई. में बाबूजी दरभंगा रहलह । तदनन्तर ओ बसकला कलि  
 मेला में आतय खोमपुरक मकान (७ बीघा बरत) में रहलह । ओ पत्रिका में  
 प्रकाशित भेलह । (ओहि में कालकला विषयक पद्यक मैथिली प्रकाशक  
 कोइलक १०० बरत की विषयक १०० कुटी का मेला रहल छलैत । ओ  
 गोप्य अन्तर्गत निपुण छलैत ।) बाबूजी कलकला में रहि पर रहलह ।  
 एहि अन्तर्गत ओ वकिमबादक उपन्यास 'हरि' आ 'पोथराना ओर'।

ओ हुनकर किछु पद्यक संग 'मोतिमाला' नामक संग्रह में आवाव  
 विद्यापति पाठ्यग्रन्थ छैत । किछु पवित्र उदाहरण नीचा दलमिल्ल -

मजबूत धैर्य भिकवि के आगक फरबि छल उपकार  
 नीध जनक मंगलपुत्रि पति छलैत न उरक विचार  
 परतन ली अपकृत भेलोवर विगरिजावि अवकार  
 शिवा करवि निग उल्लस, पलवि धर्म दल-आचार

'विद्या-वृक्ष' हिन्दी में प्रकाशित केलनि ओ बाबूजी प्रेम (मिथिली स्त्री) में  
 प्रकाशित भेलैत । सन्तोषी सन्तोषी नामक पत्रिका में बाबूजी  
 नौवां कक्षा में हुनकर 'इत्युप-निष्ठा' तथा 'वाचन-मिथिली' प्रकाशित  
 भेलैत ।

१९२३ ई. में बाबूजी नाम बाबूजी नाम ओर मेथ जीविका (मजबूत  
 पक्षी नई) पर पर स्वयंसेवा केलनि । जीविका पूर्णतः माम समक संग बीजक  
 छलैत, धरमल मैथिली नामक संग शिवा में ।

बाबूजी रहि बाबूजीक लेखनी पूर्वकल 'मोती' रहलैत । मिथिलीक महाराज  
 चन्द्रशेखर सिंहक अनुपमपर चन्द्रा हुनकर राजबहादुरीपर ५२ सर्पक  
 मस्तिष्क महाराज हिन्दी पद्यानुवाद सङ्कलन प्रकाशित क' दलमिल्ल ओर महाराजके  
 नमस्कार क' दलमिल्ल । परन्तु किछु वर्ष बाद महाराजक निधन भ' गेलैत ओर  
 तकरा बाद ओ महाराजकी भेलैत (छलैत आ महि) से पला महि ।

१९२३ ई. (जवन हुनक आध्यात्मिक निपुण भेल) बाबूजी बाबूजी  
 विद्यापति मुक्त भ' भेलह । ओ हुनकर अवस्था गति वर्ष में अपर  
 छलैत ओर बाहर बाहर कोनो प्रकाशित महि छलैत । ओ अपन कोठरी में  
 स्थायी सुख १२ रचना करैत रहैत छलैत । कविता, लक्ष्मी, छन्द,  
 कुटिलना हरिणीनिका आदि छन्दों में क' दलमिल्ल ओर जाइत छलैत ।  
 निधुप-पत्रो अधिकतर पद्य में लिखल छलैत । १० विद्यापति मिथ

१. नाम पर बाबूजीक निकटतम मिथिली छलैत—(स्व० श्रीरामलाल  
 कुमरक पुत्र) राजीव सङ्ग कुमर, (स्व० लक्ष्मणरत्न कुमरक पुत्र)  
 महेश्वर नारायण कुमर, (स्व० लक्ष्मण नारायण कुमरक पुत्र)  
 ठाकुर नारायण कुमर (स्व० लक्ष्मण नारायण कुमरक पुत्र)  
 अवधभूषण कुमर पुत्र १०० नाम बाबूजी कुमर अन्तर्गत मगुर  
 परभवा निवास पुत्र १०० नाम बाबूजी कुमर अन्तर्गत लोचन ठा  
 यज्ञदी पुत्र भेलैत—१०० गोपाल कुमर (मिथिली मिथिली  
 सम्पादक) राजबहादुर जयानन्द कुमर, १०० जी० पुत्र १०० जी० पुत्र  
 नारायण कुमर (भ' द' वेदमैन, द' द' विद्यापति बाबूजी) ।

\* हुनकर माता १० जन्म में प्रसाद चन्द्रजीक मृति ग्रन्थ (१९३० में  
 मन्मथपुर जमुही) प्रकाशित भेल छैत आहिने बाबूजीक एकटा  
 संग्रह छैत । ओहिमें मिथिली यात्राक वर्णन छैत (ओहिने  
 हमर संग रहिअनि) ।

[illegible]

कृष्णजी भगवत्पूजक परिवारक रहैत छथीन्ह । हमर माय ग मित्रनर  
हुनका भेसामे रहैत छथीन्ह । खाण्ड्य, यदा यदा पूजहु जाति पाय सब हुनका  
सेवामे लागल रहैत छथिन । हुनका कामकाजक प्रकीर्ण रहैत छथैत ।  
अनएव हुनका ग्यानिर मित्रोदयदिबुज, दरीषक काड़ा, आ आजीक अग्रवेह  
आदि बनेत रहैत छथैत । एह जगामे व्यववसाय, डाकगृह, कनकासव,  
भागीशुष आदि तेने अवैत छनिअत

पारसु जनेः जनैः श्रवणीकं गच्छेत् सार्धं ह्यङ्गना कलेः का जायते  
लोभम रागमेव कलितं न जायते कतिपयं मयात्र प्रकीर्तम् । १९३५ मे मह्यम्

१) वर १० अक्षरों का पद 'सिद्धि' को मग-त सिद्धि रह्यो।  
 २) वर १० अक्षरों का पद 'सिद्धि' को मग-त सिद्धि रह्यो।

Dahlström R., B. 1134

At the end of the day, the

[illegible][illegible]

(१११) १३०० गीतें - ललितोपचरम रूप - जीवतमें प्राप्त भन ३००  
 भवन - १३०० गीतों में ३०० ( )

दुःखित दष्टि - ल-ह ग सुसु, अवस्थामे पातकीनर चक्राक' पटना ज' मेमिपेन ।  
अन्य जनासार कष्टक मासक उपवार, चक्षुषाणि आ संव-मुमुषाक कारदक्ष  
हस्त-द-न क-र पुन मास अयनम् ।

मनुष्यान् राजा विनोदयति और जीवित रहलाह । परन्तु अधिकतर  
मनुष्यजन स्वयं मर जायें, तथा प्रहारक तथा अश्व, परक आदि सेवन  
करते रहलाह ।

दुनकर ( १९४१क ) एक जावाने सत्तशनाको सामायाण अकी अपन  
जीवनक संक्षिप्त परिचय सिखल छलैम जे तौचा बेस जाइत भसि ।

(सदस्यों ई जे काव्यशास्त्रक प्रगदासु श्रीनरेश राजा कमभानन्द सिंहक परिवारमे रहलन्हें । सत्त्वही-प्रपादक द्विपदीजीक कृपासे प्रपाणमें भीर सरपर रहि गतिहो-भोग करवाके अवसर भेटल । एतन्परिप्राय अष्टाव्रत स्कन्धमे अष्टाव्रत कार्य कय सभक प्रिय बनल गइलहुँ । दरभंगाक महाराज रमेश्वर तिरक लगमें गहि वैभक्ति सौख्यहिक दस मित्रिय-मित्रिज सपादल कैयहु । एतन्तर कवकसा जाक इन अवसर लाग्य मैरहुँ ह वनिक दोस और लोख प्रेसमे

[illegible][illegible]



प्रकाशित में। पत्ररत्न वर्षक प्रवृत्तियों परवेज अर्द्ध नाम धादि देखते।  
मिहोर महाराजक वषावली-काव्य रचलहूँ। जाय २९ वर्षक अवस्थामे काव्यवास  
प्रीतिन रचलहूँ। भाव नक न रचलहूँ। समय विना रह्य छी।)

एक नै व गुण नामक कवि वरुणवाह। वैशाखीक प्रथम समाधीक  
(मार्च १९४४) जय क. लक्ष्मण वषावली-काव्य रचलहूँ। भाव नक न रचलहूँ।  
मिहोर महाराजक वषावली-काव्य रचलहूँ। जाय २९ वर्षक अवस्थामे काव्यवास  
प्रीतिन रचलहूँ। भाव नक न रचलहूँ। समय विना रह्य छी।)

अवस्थाक समान उत्तरोत्तर दुनकर आध्यात्मिक प्रवृत्ति वर्धन होत।  
'क' य' (ग' न' प' र) आदिमे धार्मिक तत्त्व देख्य लगलनि। हिंदू धर्म  
विशेषक नामक पुस्तक पढ़लनि। व्यक्तिगत भजन बना-बनाक पुर-  
खनक बिबु महाराजके पठाय लगलनि। सरलासिपदक श्लोकके भग-  
वानक स्तुति करय लगलहूँ।

एकाग्रवर्षं शरणागतनाम्  
महापहारीति बुधिसिद्धम्  
कष्टं कथा नश्यति दीनबाधो  
त्वामाश्रितस्याहं जगद्गुरुम् । x

बाबूजीके अग्रिम समयमे कुछ पारिवारिक लोक देख्य पहुँचल। ७५  
वर्षक अवस्थामे छ. वर्षक भिय पीछ अलमजी (हन्त बाबूक राक्षसी बालक)क  
विषयमे हुनक कथन ओकोद्वार 'मिहिरा मिहिर'मे छलने। 'आदर्शवाक्य'  
नामक संस्मरण सेहो लिखलनि। एतत्तर १९४९मे हन्तबाबूक अग्रिम  
निधनमे ओ और अधिक समाहित भ' केनहूँ। दुइ वर्षक अवतर  
(१९५१/१९५२) ७० वर्षक अवस्थामे ओ स्वयंमनमे गुल भ' गेलहूँ।

बाबूजीके अवस्थामे भेलापर अनेक ठाममे अग्रजके भ्रमण — ओ  
महान स्तनक देखाह हुनक नाम अमर रहल' व प्राचीन और अर्वाचीन  
साहित्य की अग्रिम कला मे हमलाय उनको वषावली-काव्य रचलहूँ।  
द्वारा समाहित बनाय रह्य छी।

ओहि समय बिहार राज्यका परिपक्व निदेशक अग्रहूँ आचार्य गिरधर  
रहाह। ओ हिंदी साहित्य सम्मेलन भवन (कदमदुआ; पटना)मे रहल रहलहूँ।

एतन्महान अनेको रसक ओ धीरु-गिरधरदायकम् नायक छपाक  
सोराठ सभाम नि हुनक वितरण करवने रहल।

ओ बाबूजीक समयमे अग्रजके पारिवारिक और हस्तलिखित कापी हुनक  
खटाम अर्द्ध स्मरणक समय। हमलाय भ' क अग्रज पत्राणमे राखि लेलनि  
ओर कहलनि जे '१०' ओ को मरी वस्तुओं का ब्यावसाय उपयोग किया  
जायगा।' 'क' उर्ध्वक उपरान्त मिहरी स्वयं विदा भ' गेलहूँ और हुनका बाद  
आय कन ५५ आहि सामग्री भवन उपचार होयते ते जात नहि।)



अब एक दिनक अग्रजके बाबूजीक जीवन पर एक विह्वल दृष्टि  
देने भावमे अग्रज अष्ट मंडलावस्थामे पहुँचल, मामभक्त  
आश्रितन' रहलहूँ, हकमे मान लिखलक पाठममे रचित एक प्रामीण बापक  
के कोना परस्परिका एहन बरवान भनि गेलने जे साहित्यक आकाशमे एक  
तक्षक दका चमक उठलहूँ। अष्ट मंडल हिंदी गद्यक आदर्शक युगमे जवन  
मिहिराक वरुणवाहका महामहोपाध्याय लिखल छलहूँ—'कहल भयः जखन  
विहारो हिंदीक उपहास केन जाइत छलक, बाबूजी कुछ हिंदीक तेहन कीमती  
स्थापित केननि जे भाषाके महावीर प्रभाव दिवेली पदम प्रभावित भ' अपन  
समकालक भाषाके देखलनि। बहला बाबूजी ककरोस' पठननि भट्टि किन्तु  
बडलाक उल्लेखमे साहित्य (कविता, दैवी और आदिक उपमा)क अनुवादक  
हरी तवा 'हंदीक भवानी' तवा अष्ट मंडल जेना ओहि समय धरि पढ़ा  
नहि केन छलहूँ। बहला ककरोस' लिखलनि नहि। परन्तु रीतिरानीन कवि  
जका रचनिक काव्यक रचना कय 'अलमजीन उपनाम' प्रकाश भ' गेलहूँ।

राक्षसीक विषयमे कोनो उदाहरण नहि देखल। परन्तु उर्ध्वक सर्वक महा-  
काव्य (मिहोर राज-वर्णन)क रचनाक गेलहूँ। अपना नाम (बाबूजी)क  
प्रकृत भाषा रहलहूँ जे आदर्शक साहित्यक बहल भाषा छल, परन्तु नै  
अधिक प्रथम अ भुनिक उपनामकार हवाक छेद हुनके भेटलनि।  
एहि समय की कहल जाय? आधुनिक संस्कार अथवा दैवी  
चमकल ?

बाबूजीक जीवन अग्रजके साहित्यमे कामे समर्पित रहलनि। ओ अन्त समय  
धरि किछु-ने-किछु लिखलहूँ रहलहूँ।

ओ अग्रज जीवन संस्मरण लिखय लाग रहल, परन्तु ओ १९५० ई० सँ  
अग्रज नहि रहलकनेन।

बाबूजीक तद्विषयक जीवन-वृत्त ओही आधार पर देखल छल।





समुद्रावली, नागपंचमी और सपता-विपत्ता आदिक कथा कह्याक भार देमे पर छलैत । टीसक आइमाइ तथा कयासक आदि क' होरा नहीत छलीह । देवा अतमे कहैत छलथिन—'जेता हुनकर दिन फिरमन तहिना सभक दिन फिरमन ।'

कतहुँ भार अवैत छलीह ते देवा परिछि क सभ वस्तु पतिने प्रगथसीक क'री आदि क' अपित क' छैत छलथिन । तदुपरांत कमेक कोटिक' अपरा सुतेम लेत छलीह, तउन धियापुता सभकेँ दैत छलथिन और कहने-आइम क' न पठवैत छलथिन ।

देवा कोनियो घरमे सुनैत छलीह और हमरो सभने मुना क' कथा कहय सगीत छलीह । एक राति कहय लगलीह—'जखन स'भागुरुम आदि लगलीक और पाण्डव सभ करम लगत'ह स' सुनि'अर पछलथिन—की भी सहदेव ! सहदेवक कोनो उपाय छैक ? सहदेव कहलथिन—हँ एकटा उपाय छैक । एहि सकानक मागिक बन्ध भीम उछाकि लयि त हम सभ सुरंगसँ निकलि जा सकैत छी ।' इमरी कहलथिन—तखन एतेक कालसँ अही रूप किएक छलहु ? सहदेव कहलथिन—'हमरासँ कि केओ पृच्छने छल ? ... ..'

हमर हुंकारो भरथ बंद होइत देखि देवा कहैत पूर्वक हमर गेह हँसाथि पृच्छथिन की ही, बोझ । सुनि रहलःह ?

तावत् बिहाकि उठि गेलैक । मुमि पड़ेक जे जान नारउछियार भेलैक । देवा पूनू हाथ जेहि भागु-पयताक गोहार करय लगलीह—

"जरदोक खरहसुम्ह, कोदिमाक वरी  
राखि लिय मापुराज गरीबक अरी  
दोहाइ नागुराजकेँ".....

देवा भोरे उठि प्रातो गवैत छलीह—

'रागसँ कह मेहु दे सभ, रामसँ कह मेहु ।  
बहुदि एहि जन्म माहीं, माहि ऐतो देहु ।'

बहिनमाइ (देवाक धियका भेटी) हमर पीतो छलीह । ओ अपन सामर (राटी)सँ आदि क' देवान सेबाये रहैत छलीह । ओहो दैवे जकी राति-दिन पूजा-पाठ, व्रत, उपवास, देवाय-छर्मायम लागलि रहैत छलीह । ओ निथ प्रात स्नान कर तुलसी चीरा पर लारासँ जम डारि पाठ करैत छलीह जकर बूरा पक्ति हमरा एखनो मन अछि—

"भाऊम बेर हूँ जयने काएब ।

जेहन बलत पुनि तेहन बगएब ।"

बहिनमाइ बीबीसो एकादशी करैत छलीह और पुरोहित सोमनाथ प्राके' सीधा उत्तमन करैत छलथिन । कतिपय अग्रय नवमीमे छावी कृष्ण तर बोहर से नीचि तिष्ठपूर्वक ब्राह्मण-भोजन करैत छलीह ।

ब्रह्ममाइ गानम-भान कय तमके' खीआ-बिआ, जतमे भव्यं खाय बैसैत छलीह । कखन सभनाक विश्राम करै छैत पलग जो चपचाप चलि बरखा-टकुरी कटैत छलीह । ओ घर नथ एक दुमार जुनाक सभ बीने रहथि (जकर स्मारक बिहू औखन चिद्यमान छैने) । देवा-बाह्यगच्छक ओ त्यागमय वैतथ्य जेवन स्वरण कय असीम अछि । तमाहि अर्धत अछि ।

हमर माय पछित-कया छलीह ओ माँटी (मिथिलक) आचार-विचार, विधि-व्यवहार, ऐसन, पुरहर, मेहो-जतइ, गुमारीक कतरा आदिमे निपुण छलीह । गामक कायागज हुनकासँ सीकीक बूतिया और गोत-नाथ (गिरहूत, नचारी, गहंशवाणी सभदाउनि आदि) सिद्धवाक हुन अवैत छलथिन । माय छूब कोमल स्वरसँ एकटा बिहाय सकैत छलीह—'माय हरि क'हुनी गोकुल ऐह ! टोलक आइमाइ सभ हुनकासँ बिट्टी-पछी निखरैत छलथिन । ओ जावरा बेडि क' एकादशीओ माहि देत छलथिन । एहि समय ओ स्त्री-समजम पाइत,इन कहैत छलीह । देवा हुनका साहगरानी कहैत छलथिन ।

माय पछत्रिशा ओसारा पर बैति जाय रीयर, हरियर मोकी स क' रंग-पिरंगक जाली-पीती सुनैत छलीह । कागाराक भार सठिवाकहुनु लागी प्रकारक (हुपारी, जवय, अभाजी, मखान, छोहारा, किशामत आदिक) कला-पूर्ण गाछ' बनवैत छलीह । ओ चरकक अक्षर और पक्षीम मुन्दर पीतो तैयार करैत छलीह ।

\* एहिंसं सूचित होइत अछि जे ताहि समय स्त्री-समाजमे मनबोधक 'कुण-आम कनक प्रचलित छलैन ।

\* कहियोकाल माय बाबूजीक लिखाओल एक सांकेतिक लिपि मे बिट्टी लिखैत छलीह जकरा ओ 'बनोमा सभर' कहैत छलथिन ।



एक बेर हुनक एक कलाकृति बाबूजी वदुआरा कोशिक केनधी साहेबके  
देसयित ओ गुणत अकरेअ सतेक प्रभावित भेल जे पुरस्कार-स्मरण पर  
लग कलमवागक जमीन मिथि देलकीन ।\*

बाबूजीक प्रथम स्मृति-चित्र मनमे एना बकित अछि । भव्य गौर वर्ण,  
चन्द्र-पश्चिम ललाट, भगवानचला परमे पूजा पर संभल छथि । पात पर  
बहुत राखे गेना कनेल आ तन्वीक मूल छैन । सामने दुर्गो पर राधा-छाणक  
मूर्ति । सराइमे नैवेद्य राखल, तेलमीदल देल छन्हो, 'मथो आ किममिष ।  
हमरा माथमे ठोप कय हाथमे प्रसाद भ' रैत छथि ।

बाबूजीके अधिक काल लिखिते देखैत छलियन रतनमे तैपार पर  
सावनेन भेनि कोकी पर गेज्याक भर' काटि यदामी राक काण्ड पर पृष्ठक-  
पृष्ठ भरने जाइत छलाह । (जबन शोभादा छतम भ' काटत छलैन तखन देवा  
न दियामे हर्-कलीसक बुकनो अरि खरकाक' मोति बना रैत छलथिन ।)†

एकटा स्मृति-चित्र ओर 'र' रहल छै । गुणिनाक शक्तिमे टहाटही  
दुर्गराम बाबूजी मन्त्र पर राक पूजा क रहल छथि । आरुतमे बारिटा छोट-  
छोट राक पर गाउन छै । बीचमे छाटकी चीकी पर शक्तिप्रम राखल  
छथि । बाबूजी पाँताभर आहुत आगत र बैसैत छथि । लगमे हरिहर  
पुस्तक पात पर लाज-लाज कमलक ठेरी साभन छै । एतानि गुणानि  
भगवते भी सत्यशारणावगा 'कय रहल छथि ।

पहिमजी (श्यामलाराव कका) अर्धसहित कथा बंधैत छथि (जे  
गुनक म खुब रौरक नगैत अछि) ।

आखनमे प्रेमनाथ कका मड़का-बड़का पातिलमे केरा गुड़ आँटा दूधमे घोरि  
जीवन प्रभाव बनवैत छथि । भारतीक कीव होइत अछि—

“भारती कीजे राजा रामचन्द्रजी की  
हरि हरि भक्ति करी संसन गुणदायी ह ।”

\* आहुतजन सिद्धिनाक शिवकला केर बिद्वान परमानित भ' रहल अछि,  
मायक ओ अरुबै हुनक-कीसन 'चोप' रूपमे रत्नरत्न भ' सवैत अछि ।

† ओ त्याही नेइत पवन हावा छथि जे नहियाक लिखल साक्षक जकी  
बुझाइन छै ।

ओहुर पक्षधरिवा ओसारावर नाथ एकरंगा राखल छै । ओहि पदक  
भीतर गीत होइत छै—

‘मिया रामजी वला

ओहो बुनि बिलस एकदु वला ।’

तखन प्रसाद पितरण होइत अछि । योपी कका सभक गिनास वा सोटा  
भरने जाइ छथिन । अन्तमे बाहुज सभके भोजन कराओल जाइत छै ।  
(जकर दृश्य मनमे अंकित अछि)—वही-पूजा-वीनो कदीमाक तरकारी सोम,  
भोटा, ओलक अँचार, मुँह काटल बाम ‘‘‘‘ ।

बाबूजी स्वयं उत्साहपूर्वक वही परवैत छथि । “बाबू आरंभाय ! कनक  
एह मटकूरक अक्षिपक कहैत मणाची कपूरसँ गमयस करैत धेर डेकेक  
छलिहगर वही हुनका आगाँ उतार्नि रैत छथिन । (ई प्रायः श्रीनर राज-  
दरबारक प्रभाव छलैन जहाँ निवा सत्कारिक भावमे खिचबि पर बन्दू न क'  
पूत परसल जाइत छलैक ।)

बाबूजीके नवरस आ चहरस दुहुसे समान प्रीति छलैन । क्षीरममे  
वाच्यप्रकाशक संग संग 'पत्रप्रकाश' मही रहैत छलैन । एक सँ एक घटकार  
ध्वजम बगवत रई छलाह—बोलबकाक चटनी, छोहाराक अँचार, अगार-  
दानाक छटमिट्टी । जाबि आधिक्य प्रमत्ता करैत छथिन—“एहिमे हीडक  
स्वाद अपूर्व नवैत अछि । एहिमे श्यामजीर मूत्रिक' येने अत सोमहार भ'  
पेल अछि । बाबूजीके गौरव परम शिव छलैन । 'मिना गोरस कोरसो  
भोजनानाम् ! बहुधा दुधम आम वा कटहरक रस मिमाक आस्वादन करैत  
छलाह । हुनका खोखे बेसी खोएमाक सीख छलैन । राक' निमेषण द'क'  
खुब प्रेमसँ भोजन करवैत रई छलथिन ।

विश्रामक काल बाबूजी हमरासभके कभने जैसाकय रंगविरमक  
मनोरंजक बुझावलि बुझवैत छलाह ।

कहैत । “एक हाथक न छमे आठ हाथक दुग' अँटि सगौन अछि ।”

‘ह, अम्बुला मूर्ति ।

“एहि करोताक गायवर भगवाछा ओझाक सूत सकैत छह ।”

‘ह । गाइ पर अँगपोछ' अँछ' देखैक और छाटवर सूति रहै ।’

“हाथीके नीठ गवैत देखने छहक ।”

‘ह । हम गीत पवैत छह । हाथी पथ जाइत रहै ।”

बहिन (ननूदाह)के देहो एहिबभने खुब मन अवैत छलैन ।

“कहूँ तो बोआ ! माइ धी जाइ छलीह, सगुर-बमाय अबै छलाह ।  
हुनू अपन-अपन बापके गोर लगलन्हि । ई कोना बेलेक ?”

“बेला तो” (मनूबाइ) और भाय जाइत छलीह, और बोम्हरसे बाबूजी आ  
माना अवेस छलाह ।”

“माय बेटी, साबु पुतहु, ममवि भौजी—सब एके बेर फराक-फराक  
पारिमे जा रहसि छथि । छीमे टा चारी छैन, कोता खंतीह ?

“जैमा रैमा बहिनदाइ माय छाइ छथि ।”

कोवन फाल हम सब ‘बकबहोवसात’ सेलाइत छलहुँ । (जिन, बक कतय  
सेलाह ? कसलपुर । धार कोन भेटलैन ? कसला । मास कोन ? कबइ ।  
गाछ कोन ? बटम्ब ! फल कोन ? बटहर । कुल ? कसल । मसुर कोन ?  
कलाकन्द । बाबूण के ? कमल/कासल । कहूँ कोन ? ‘करहिक बम्हमर  
सिनुआ चोख ।’ एही तरहें भिन्न भिन्न अछर पर प्रश्नोत्तरी होइत छलैक ।)

एवंप्रकार खूब आमन्त्र-विमोह होइत रहै छल ।

✕

✕

✕

ओहि समयमे बारहो मास कोनो न कोनो पर्व-तिहार लगने रहैत छलैक ।  
जहाँ क’ना पावनि अवैत छलैक कि रैमा चारि दिन पहिनहिगें हराबरका  
उठावय लागि जाइत छलथिन—‘हे लोकनि ! ओरिआओन भेलैक ? आव  
दिन कहाँ छक ? है बबूजनि ! ओठवाइक बहो पीरल भेलैक ? केरा  
धुपल लेलैक ?’ ‘सोहायन नो ! मगजलीध पातरि पढ़नंग । अंधरा  
बोलैनि ।’ ‘... ? लाकनि ! जिलिडा नमिचा लेलैक । मल्लक  
कोकस पीगन गेलैक । ओठगनक चुड़ा कूटल गेलैक ।’ “और एकटा पकका  
पांडे रैत छलथिन—

“अतिथि रीवान बढ भारी

धिया पुताके ठीक सुनोएत कसल मेमनि भरि चारी ।

सुखरातीमे धूमधम गृध्र उड़वांगी भरीत छलहुँ रैमा आधा रातिह  
छंटी क’क मूष डेरबैत छलीह—

“अनधन मधमी घर कछ, दरिद्राके बहार कक ।”

छटि पावनिमे आग बेसी छहुर-महर होइ छलैक । भुप, चडैरा, चालनि,  
जात पर्यंत छोक लिप्तात कील जाइत छलैक । जात पीसवकाल राना माइक  
रीत होइत छलैक—‘ऊ के गुला महराम ।’

नेहन छवन बतन होमथ सगीत छलैक जे कोमे घर-आइत ममयन न उठैत  
छल । चडैराक चडैरा बकमान पोखनिक पाटपर जाइत छल । पकनैकदम  
भरि छानो पानिमे ठाडि न’ सूर्य देवताके अबै दैत छलथिन । भरि भरि  
जनमूष ठकुआ, केरा भुपवा, नारिखर और कुसिहार । पोखरिह मोइपर  
छोल-पिनही बजैत छलैक । घर अपलापर इंदरामकके प्रसाद भेटैत छल ।  
नारिकेर पाछल जाइ छल और हम मम ओकर जल पैग छलहुँ, चरनामृत  
अजी । देवा ह्वररासयक गरमे साल बड़ी पहिरा दैत छलीह ।

कोनो-कोनो बात ओखिग माणि उठैत अछि । एखनि सुनने रहै कि देवा  
एक चूड़, पानि म थपर छोटि देसनि । हम छिबनिनाक पछैतहुँ । देवा  
‘भोगय-भोगल करैत बजलीह—‘बोआ ! जूड़नीतयक बासि बजो-भास  
राखल छीह । अरुदी मुँह धो लेंह ।”

देवा मनूबाइ आ तावित्रीमे साल-नुसारी पुजबै छलथिन । आनृष्टिथरमे  
बिहारक ऐनपर पीड़ी राखि बहिनगल हमरा हाकमे पान सुपारी आ  
कुम्हक पूर वय पुजैत छलीह—“यमुना कोलन ममके, हम तोतइखी  
भाइक ।”

मनूबाइ, सावित्री, विद्यावती, कुसुम, कुमुद आ मानसी आदि सब सखी-  
बहिनया मित्रक, रानिम माय-चकडा पनाइत छलीह और खूब ठहकारस  
गेल होइत छल—‘बीड़ केसा कछ बरोस ।”

मनूबाइक मनाहिनसभ घरह घरहक फरफट वड़ चुनक मुँह  
सरज्येस छलैत । जन भरक’दवा गरद, पुनि गक ‘बनूना सदबद  
करइ ।’

कनियो पाग उठारवा रानिमे धूर उमलमे जड़ जड़िनाक मय होइत  
छलैक ।

गाममे चकलात उल्लाप छलैक । अन्हरोतरी रंग-बिरंगक प्राणी उठि  
जाइत छलैक । “प्रात बरसल बेहु बंगा मैया” “जामहु हे ब्रजधम”  
उठै सालजी ओर भयो है ...” “मिथ गिन अपत मय आनन्द ।”  
बाबूजी प्रातःकालेक मयैत छलाह—

“जय जय राम जयामुरमुखत जय माधक जय विष्णो !”

वहि कोनो दिम हुनक स्वर नहि मुनाइ पवैत छनैत त ओक कुस्यारि करय अवैत छनैत—पंडितजी कतहु माहुर त ने गेल छथि ?

x

x

x

हुमरा घरमें आदकोस बलिग बरैला बोर छल । ओहिमे विज्ञान कमलवहु छलैक । कहियो काल लोक मानपर किहरी लेलाय माइत छल । एक बेर हमरो छोटा बाबू और कारी कफा अपवा नग ल' गेल रहथि । गावमे ततारंगी बिछा-ओल रहैक । लाल (गोटपीय) होइत रहैक । नुसुम रहनी लफान नग लेवेत ल' जा रहल छल । छानक महाराइत समुद्रक भिरस नाग कमलवहुमे प्रवेश केलक । वही धरि धृष्टि जाइ छल लास-लास कमल और हरिहर-हरियर पुरैतक पात शेषाइ पवैत छल । बीच-बीचमे बरैक छल अलगन सौक । ललताफ कज-धूपण (मुम्मक) तनी । कतहु-कतहु अरेत मुमुद (भेट) फुलएत छलैक । कमलवहुक जोभा देखि मुग्ध भ' गेलहुं ।

गाममे पूजा वा भोजभान होइ छलैक त ओसक-ओस पुरैतक पात आ कमलक फूल बीरमें अवैत छलैक । शकोक-नाकी बरैबिहाइ मेहो । बरैत छल खूब सिहतगर लगेत छल । बरै-भिराडिक तरकारी बनैत छल ।

चौरमे अकरात माछ छलैक । ठाम-ठाम नाहामे खरखी-दभका लागल रहैत छलैक और लोक भाहिक लवैत छल ।

वाडि अमलापर उजाहि उटैत छलैक त एक-एक पीतक कदइ हल्ले-छल्ले रहइत सेतमे ललि अवैत छलैक और लोक अठपेछ मेत निकल अवैत छल । मलहटोलीक मल-हिमरुम भरि-भरि बोट मोट मोट अटाएल साइरान क' अवैत छल ।

तहिना चौरमे रंग-भिराडक चिड़इ छलैक । सैठा, ऊबिडी, विटोण सगर, हुमर । हानक-हाज चिड़इ बरैहोहा देखिवाके दिखाइ अवैत छलैक ।

\* यह बरैला चौर छैक, परन्तु ओसभ भात आज स्वयत्तक ज' गेलैक । रामन पुरैत कमल और अ-रुम (शर) विमोड साइक, कैसीर इ-रि) मुष'क' पात'नक मोरमे चिनीत भ' गेलैक । ओ मोट-मोट कवइ साइर कलक भाइरमे ललि गेलैक । ओ जाल और बला हुमर साथ हुमरिफ फूल भ' गेलैक ।

चौरमे देवरिया धान अंगन जकां उगवैत छलैक । उपरवारमे सिडरा, बकीर, नगर । कानिकेस लोक नमका बूडा खाइत छल । अगहनस ल' पूव भरि कटनी पवैत छलैक । गामक लोक उमड़ि क' सेतमे ललि अवैत छल । दिन भरि मेला लागल रहैत छलैक ।

एक बेर हमहुं प्रेमनाथ ककाक गन छनबानी देखैत गेल रही । चाइकात छानक समुद्र लहराइत छलैक कतहु मीनी हाइत छलैक, कतहु नार पुआक टाज लागल छलैक । पौनी-नसारी गहो खेत-भरिहुममे धूमैत छल । तभके अंठिया-मूठिया मेटैत छलैक । तमीनी पात ल' क, भागी भाता ल' क' अवैत छल, नट होत पर बरहु गवैत छल—'आखिर राम करे सो होइ, एक दिन सबको मरना होय ।'

हम आमा हरिजनपर गेलहुं त बटाइदार पोआरपर बैसोलनि । कतहु थारमे कुथियार पेराइत छलैक । एक मोटा रस पिउनहुं । प्रेमनाथ कका प्रेमस गोइठापर सिटो और खाना बगोलनि । बुझीना एकटा मोट सौरा पकड़ि क' ल' भाएल । हम सेतस हरियर भिरबाई तोड़ि लैलहुं । बाइक रागा बगत । ओ छिट्टी आ साना एखनी धरि मन अलि ।

घर लग पोखरिमे मछहर होइत छलैक त बडका-बडका राहु बोभारीत ल' पोठिया इचका अंभल पवार लामि जाइत छलैक । सबके कुडी लगक' बटल जाइत छलैक । ओहि दिन लोसे टाज माछ-माछ आ क' अथा जाइत छल ।

नटवरमा आ' चरबाडीहमे पोखर जकां दूध-पहीक धार बहैत छलैक । सैकड़ो बैत दूध दूहल जाइ छलैक । दातिलक पातिल माखन मथल जाइ छलैक । गरीबा लोक भरिछाक मट्टा पीबिक मला रहैत छल । आहि ताब पर गामक खोड़ा सब बंध-बैसकी करैत छल ।

चौठचन्द्रक मात (चकचावन)मे क्षीरपूखीक जोश पर दंगल होइत छलैक । ओहिमे सब अपन-अपन जोड़ा लयाक' कुस्ती लड़ैत छल—शिशुभा, भंगला, दनिया, मुसबा.....

कहियो काल पोखरिमे लखीरी महारेवक पूजा होइत छल, कहियो अष्टपदम कीर्तन, कहियो भागवत । कहियो रामभीषा होइत छलैक त मात भरि लवैत छलैक । हग सभ भरि-भरि ताति जामिक' मोला उखैत छलहुं । धनुषीय, सीता-स्वयंवर, लका-दूहल आदि देखबागें खूब मन लवैत छल ।



गाममे भरि बैशाख टास टास पतिमाया चर्चत छलैक । एकटा हुमरो इनार पर छल । के राही-बटोही अर्बत छलाह, तिनका एक-एक आँचुर अँकुरो आइ-नोक संग पासि पिपाभील जाइत छलैन । हुमर इनारक सामने पक्की सड़क पर एक अमरुवर पीपरक गाछ छलैक । रवि और बृहस्पति दिन श्रद्धाही पेटिया जायबला बहुत लोक सोतप छाहरिमे बैसि क' गुस्ताइन छलाह और भीउल जल पोषि क' जाइत छलाह ।

जेठ-भासाइमे सतेरा आठ करैत छलीक जे गाछीवलासभ बाट चलैत लोक के बजा क' आम खोखलैत छलथिन और किछु सँगो क' बैत छलथिन ।

गामसँ कोस भरि पच्छिम उभैत गाममे शिवरात्रिक मेला भगैत छलैक । आवाल-पुढ-बनिता सोटा मेने महादेवपर जल छारण जाइत छल । सड़क पर लोकक घगहि लागि जाइत छलैक । हुमर अपना टोलक अमातक संग जाइत छलहुँ । मेलामे एक दोसरक आइ-र घ' क' घुमैत छलहुँ ।

मेलामे रंग-विरंगक वस्तु बिकाइत छलैक । मिस्सी, बड़ी, कचरी, जिलेबी, मयूराइ, साबिरी आदि इन्तमानबलीसा, दानलीला, नाथजीला जैत छलीह । मोनकिमा, छहोरिया आदि छुटिया चमकी दिनुमी बिसो सैत छल । बहिनबाइ प्रताप और समेत बाँटक हेतु धैरचूत पेसा, सुरही, लाइ बजाशा लैत छलीह । सभ वस्तु मोटा बासिह क' गरपी (पतिभरती)क पाय पर राखि देल जाइ छलैक । हुम सीन पाइमे मकली घट्टक लैत छलहुँ । शिबुआक काम्ह पर अइल भीजसँ सीटी बजबा कटाका छोडैत भास अर्बत छलहुँ । आइबाइ सभ गहाइवक गति रचैत धरैत छलीह —

बमबम भाजा हुँ लुपाल ।

×

बास्याबस्याक अतकपो स्मृति साधक धरा जकाँ उमड़ि जवैत अछि ।

पगुआन' एक मात पछिन्हिमे (यसँत पंचसीसँ) धनुषधारी मिश्रक डक बाजि उठैत छल और फाग गुरु भ' जाइत छल—

'रामजी के हाथ फनक बिचकारी

सियानी के हाथ भवोर ।'

गाछी-टोलमे सभ राति होरी गाओल जाइ छल ।

फगुआ दिनसँ कोना भधे नहि । टोलरिक्त मोहार पर नेहन अँच संवत् फुकाइत छलैक जाहिमे सभ भरिक्त लगडा-गाँटी जरिक' मरम भ' जाइत छलैक । तब लोक घुरखेल करैत रंग उडवैत एक दोसरकेँ अहीर लगवैत,

गिचकारी छोडैत हास्यविनोद करैत छल । सम्पूर्ण मंडनी एक मंग दिनि टंक, सालि मजोरा बजवैत, धमार गवैत, होन्दा पड़ैत, धरबजे-दरबजे घुमैत छल । रंग-अहीर, मेवा-मसाला, पुआ-बड़ी पवैत छल और परबदाकेँ आली-चाँचि दैत भाग्य बर्षैत छल—

मवा आगन्व रहे एहिदारे,

मोहन सेने फाग हौ ।'

अन्तमे कर्णारक गठमे सीसै गामक चोपटिया मिलान होइत छल, जाहिमे हुमर टोल, पुवास्टोल, गाछी और भुसाही, चाकटोल सम्मिलित भ' फगुआक उत्सव सम्पन्न छल ।

इनारपर बास्तीक बाली ठंडइ-गवैत धोरल जाइत छल, बाधाम और गुलाबजल द' क' । लोक सोटे-सोटे पोषि क' मस्त भ' जाइत छल । भरि राति बतत बहार चलैत छलैक और प्रात होइतहि नंदावर गुरु भ' जाइत छलैक

"चैत मासि बुद्धकध कोर्सिया हौ रामा ।"

×

×

×

आशुह फगुआ अर्बत छैक, आशुह कोइली बजैत छैक, आचहु बभंठक मेला लगैत छैक परन्तु आब मो जस्ताम कहाँ ! ताहि दिन दीतरे उर्वस रहेक । सभ दिन होयो, सभ राति दिवाली ! समय जेना मयूराक पोखि नया ब' चर्चैत छलैक । लोक मस्त छल । मस्तीपर मस्ती छलैक ।

आ अलपूरा-भुग छल जाहिमे एक टकामे सोलह खेर बाजर भेटैत छलैक

एहि प्रसभमे एकटा बाध मन पडैत अछि । एक बेर बाधजीक कसोरमे एकटा ताबिक रैसाही पोस्टकारे यजमे रहिएम जे गोपीनाथ बाबा १९०१मे हुनका मुरपनरपुरसँ भिक्षमे रहियन—“एखन कोनो अन्न टकाने पाब पसेरोसँ अधिक नहि भेटैत छैक । एहन दुर्मिष (?) मे गरीबक मुजर कोन होवैक ?”

(यदि आइ ओ बाबा जीवित रहिनथि त पता नहि, एहि दुनूकेँ देखि क की कहितथिन, अलग सभ अन्न पसेरी मे कगना पर आबि गेल छैक ।)

ओ और-भुग छल जाहिमे एक टकाक दू पंग (सोतह खेर) दूध भेटैत छलैक, जाहिमे टकाक खेर भरि मुठ घृत भेटैत छलैक ।



ओ योगागुल छल जाहिमे टकाक एक अईया गरी-छोहारा-किममिल भेटैत छलैक । ओ स्वर्णदुग सभ जाहिमे बाइस रूपमे गरी शुद्ध सोन भेटैत छलैक ।

भाव 'कि पहि जीवनमे फेर कियो ओ स्वर्णदुग, ओ शौरधुग ओ अक्षयुणीयुग धुरिक' अनेक । आव ओ दिन क'नो कल्पना लोकक कथा जकी, क'नो सुख स्वप्न जकी नृति पडैत अछि ।

मदि कालचक्रक मिलेमा पोछा दित नृति मकिनेक त हम भगवानस दासनेना कनिनेल छे एक बेर फेर भैह इन्द्रधनुसी किममिल रीत जलाक देखा दिय । परन्तु भीतल दिन कि फेर अवेत छेक ? प्रमादामि पुनर्जन्त ग दिवता

सा धुम ज देखनमि ते यमलनि । ज नहि देखनमि ते भाव नहिहयो नहि देखि सकताइ ।

ते हि जो दिवमा गता !!

३

## ओ लोक

( गामक समाज )

गाममे एकत-एक जीवत महाप्राण लोक छलाह ।

दखिनकरिका डोहपर छलाह प्रेमनाथ कका ।\* ओ अखन बाइ-मात बाय बैसैत छलाह त हमरा सोर क' जेत छलाह ।

हम अवन मोटिमा-छिपकी नेने बोकि जाइत छन्हि । ओ खदछैत ककाहीनो यामा हाथ करछु त क' एक-एक खद माख हमरो भाग्य देने जाइत छलाह । ओ लाल माख एखन धरि मन अछि । शोर खाइ, तोर बहप । तोटे-पाटे पाणि पीधय पड़य । तबाधि छोड़ैत बहि बनक ।

प्रेमनाथ कका चापक मंत्र जेत छलाह । दूर-दूरसँ कारणी जवैत छैन । ओ भूमिपर तीन टा रेखा जोचि दैल सनयिम, और भाटी जतवैत मंत्र पडैत छलथिन—

‘भारे-भारे तोष बले, दूरे-दूरे ता’ बल

बाम बल तैक रहित बल ....

हुनकर हाथ सतराय लागैत छैन । यदि वाय वा बह्ति दित नहि वा तासँ बनि भाइत छैन तँ मत्र पडि आइय लगेत छलथिन —

‘ताँवर काटय गिर पड़े, यहमन काम बेकाब

बिसहारा रक्षा करय, बीबाइ बीर पार्यती’ ।...

\* ओ भावजीव गतिपीत छलथिन, अयाधी मिश्रक संतान, मात ओ कट्टा बड़ोतर भूमिमे अवल निबाहु करैत छलाह । ओ बिबाह नहि केलनि आजीवन अस्मान्द माताक सेवा करैत रहलाह । हुनका मायके हम ‘मौता’ कहैत छथिन ।

राति पिराति बाम्ह ककरो कोनी विपत्ति पड़ीक त ओ तुरंत पड़ैलि जाइत छलथिन । ओ 'हुस्तिमताई' पड़ैत छलाह और ओकरे जमी बेसी अनेके खातिर जिज्ञेस छलाह ।

सोही हुस्तरासभे 'हेइजिनमा आ भूत प्रेतक बहुत रास खिस्सा कहैत छलीह । ह- हुस्का माछक बमकन बसी बीछक आनि बंत छलिऐम, ओ बहुत जालोबंद पैम छलीह ।

ओही डीहपर छलाह महेन्द्र कका । ओ मसमोही बावहाह छलाह । हुस्का कनमय शक मायवह आम आ कलेमा जायन माभी छलैन (जे बेसी परोपकारे जाइत छलैन) । ओ 'जगन् हुस्का भूत गिबैत' करैत छलाह । अछम हाथ पर कपीया रहैत छलैन जे लोकके कसर-काचुरी कहैत छलाह । अछम हाथ खाड़ी भ जाइत छलैन जे अपना कोटाके 'उनटाक' पैसीपर तबमा भजवैत गजल गाबय लागि जाइत छलाह—

"सिकंदर जबकि जाता था सी बोनो हाथ छाचो थे ।"

एकदिन हुस्का आठममे भोजन करैत रहथि । हुस्कर माय पुछिबैतछलिन— "रैवा थावू ! सभटा जमीन किएक बेचने जा रहस छी ?" ओ छाइन-छाइत भभाक हसि पडलाह "भोज ! भूमि ककर हाइत छै ?" ई जमीन हुस्कर बाप-बाबाके छा गेल । आब हुस्का एकटा बाम्ह जैशेक, "साह, वही दिय ।"

एहन मस्स आ निविकार छलाह महेन्द्र कका । ओ तेहन मनोरंजक विनोदी लोक छलाह जे सम हुस्कासँ बोनि करैत छलैन । परन्तु हुस्का सेम धन सन ! ओ कपना धुनमे बसत रहैत छलाह—

"जिनके महुर्लो में हथारों हाथ औ कानूख थे  
आज उनकी कस पे बाकी दिना कुछ भी नहीं ।"

हमरा घरसँ पूब छलाह राजोबनयन कका (जिनका हुस्का 'बड़का कका' कहैत छलैन) । ओ धनवादन कोलियरीमे हुस्करबंदर छलाह । खुब चतुरी छलैन । गामक लोफके लोकरी सभ बेग छलथिन । गाम अवैत छलाह त लोकक सजा लागि जाइत छलैन । जे जनश्रुति जाइत छलाह से मासक-मास हुस्का बेरापर जिलेको ककरैत छलाह ।

हुस्कर ओ ऐश्वर्य मनने अक्षित अछि । दरजा पर बड़का टा लखर रंक बडा । नोकर-चाकर सभस-अभासित, (लोभी हाह, भुखिम माय आदि)

\* हुस्कर ई वस्ति सभरल नरितार्थ भेजैत । आइ ओही डीहपर हुस्कर ओ प्रेमनाथ ककाक लामोनिजान-बहि छैन ।

सभक पोथी धाड़ूर छीमे रहैत छलैन । परन्तु ओ स्वयं कमल-पत्र जकां निनिपत्र रहै छलाह । तेहन-तेहन जानैक बात कहै छलथिन जे लोकके गप्प लोचिक तबबाक मन नहि होइत छलैन । हुस्कर बचन अमृत सन होइत छलैन (हुस्का सन कोमल मधुरभाषी हमरा जीबान दामर नहि भेटत-ह । ओ हमरा मनके बहुत प्रभावित केननि ।)

हुस्कर छोट भाइ छलथिन जिनभूषण कका (जिनका लोक 'छोटबाबू' कहैत छलैन) । ओ नवयुवक वनक नेता छलाह । राजकुमार जकां रहैत छलाह । ओ हमरासभ (बालमंडली)के मंदानमे फुटपीस शिक्षक हेतु ल जाइत छलाह । ओतय हुस्का कत (मोलपोस्टक जंभाक स्थानमे) हु-हू डा लड़काके काइक दैत छलथिन । परन्तु जहाँ गेद नामे अवैत छलैक जे दूरधाम कबड्डी धनि जाइत छल । हुस्का दाराजा पर बहुत राति छदि प्रायोकोन बजैत रहै छलीह—'मरा माय जानकी बाई, इलाहाबाद ।' हमरा ओतय ईसबामे खुब मन लगैत छल ।

बड़का ककासँ दक्षिण छलाह—उपेन्द्र कका (मास्टर हाइव), ओ भुजपूर पुर कालेजिएट स्कूलमे मास्टर छलाह । अछम छट्टीमे गाम अवैत छलाह, तखन ठावूजीक मग पीपर लजाइत छलाह । कटिनी-कट्टीयो 'पी-बाइ' करैत करैत रातिमे कारह सजि जाइत छलैन ।

दक्षिण धर अवधभूषण कका (बाक बाबू) छलाह जिनकर दरजापर डाकखाना छलैन । ओ डाकरी (होमियोपथी) मेहो करैत छलाह । ओ गदाधरता आलोचक छलाह । हुस्कर टिप्पणी पूरा भा' मासिक होइत छलैन । हुस्कर भूषण म्यंगय तेहन कटगर होइ छलैन जे सभ तीस-पेख आ चटकार मर्गैत छल । हुस्कर गप्प सुतबाक हेतु लोकक भीड़ बानल रहैत छलैन । बाइती हुस्का तरेक मानैत छलथिन जे सभ काजमे हुस्कर जिनार पूछि लेत छलथिन ।

हुस्कर अनुज (मजभूषण कका) भुजपूरपुर धर्म-समाज विद्यालयमे छल-थिन । ओ तेहन नंदनी छलाह जे चकरीक दूधक दही पौरि क जाइत छलाह । (ओ अल्पे वयसमे विवाह भ गेलह) ।

हमरा घरसँ दक्षिण छलाह पं० शिवनाथ झा कदिराज (जे पं० शिवेश्वर झाक पुत्र छलथिन) । ओ आयुर्वेदाचार्य छलाह और पटनामे कुशल वैद्यक रूपमे स्थाय छलाह । ओ गाम अवैत छलाह जे चंदेराह-नन्देरा छात्री हमरा ओहि ठाममे जाइत छलैन और ओ कबनप्राग वनाक 'बाजुजीके' द जाइत छलथिन ।

‘कहाजो ! धारोष्ण गो-बुध संग सेवन कैय आओ ।’ ओ बहुत दिन धरि सीतिपुराये ब्रजन छलाह जकर विशेष प्रभाव हुनक आचार विचारपर छथि । हुनकाये तेहन मोनन्य एव जिहता छथिन सकर एक प्युटाभ रिय ।

एक बेर कहरीयै एकटा पाछक खातिर जगदा भेलैन । ओ कहलकैन—  
‘ह्व शिर देव आ’ शिर लेव ।

कविराजजी पूरापर बैसल रहल । आर्यो-भर्यो तायत्री-जप समाप्त क’ आरमन करैत कहलकैन— ‘ओ बानू ! एखन हमरा काल प्राप्त तीर्थाटन करव दोखो रहल । इस शिर महि देव । जाउ, कसि काटिक’ जे’ जाउ ।’

कविराजजीत छ’टमात्र सपथिन पं० भात’नाथ सा । ओ जोरिह कववहार (पर पंथी, माविता-मोकदमा आदि) और बात’लायमे तेहन बहुर रहलाह ओ ‘चबुरो नजामत’ कहलैन छलाह । (कुमर-बनाब-नीने बल ई विनिगण राममे बसिह जे’ गल छथिन ।)

ओ सभा-दीन नोक छल ह ते’ सामाजिक कार्य (सो-भात परिरागत आदि)मे जगद’ बहुर हुनक ज्ञान हीन छथिन ।

जकरा कचहरीक काज पड़ैत छथेक तकरा ओ हाजोपुर वा मुजफ्फरपुर मे आ क बसीयत काज कर’ रहै छलथिन । एहि समय ओ खूब लोकप्रिय छलाह ।

ओ रही आ मधुरक अधिक प्रेमी छलाह । ते’ भाजमे सभलै भेलो लागल हुनके होइत छथिन । ओ उचितवक्ता स्पष्टवादी छलाह । हेतो हंसिमे कहैत छलथिन— ‘अब कहैक तकर अर्थक जनक अर्थक तनेक मेरक जहल मेरक तेहन तर्कक पावत छथिन, नाथतु ग्रथन । हुनकर उद’त उदारता लोक गुणि जाइत छथिन जे आइ कचहरीक ओल छथिन । ज’हिया ओ पूर्ण ठुल रहैत छलाह, तहिया चारिए बजे रातिमे ‘डि रेपाक’ मेमपूर्वक शतोंत गाथक साथि जाइत छलाह—‘सभत रे मनुषा फिरिजपति’ !

पोषरिक पुकारिकारमे छलाह पं० इन्द्रगिरिनाथ कका । ओ काशी मे म० म० मुरलीधर लामे उपाधि पाइत छलाह । ओ बाघी स्कूलमे संस्कृतक शिक्षक छलाह । कला-पुराण कहलकैन ते’ तहन परस आ सोचक छथिन जे एक बेर मायक एकादशक उद्यानमे हमरा सभके’ धरि राति ज्योति नहि मेलाह । ओ बाबूजीके’ विषयपूर्वक कहैत छलथिन— ‘साइयराज’ हमरा निछु सेवा करवाक भला देन जाय ।’ ओ तेहन कर्मन्ध छलाह जे अनुश्रव कोनो ने

कोनो कार्यमे लागल रहैत छलाह ककरो निन्हा करवाक प्रवृत्ति वा कुरसति हुनका नहि छथिन ।

कारी कका (पं० जीक छोटा वैमात्रेय, रामरत्न कुमर) जानस्युति छलाह । तेहन हंसमुँह आ प्रसन्नचित्त जे सभके’ आनन्दित क’ रहैत छलथिन । तेहन सहमिहलू जे आवाज-पुल्लविता सभक प्रिय छलाह । ओ पटनामे आयुर्वेद पढ़ैत छलाह । गान अर्थत छलाह ते’ हमरा सभके’ खूब स्वादिष्ट पाचक ओजवैत छलाह ।\*

पं० जीक सशेष भंडारिकोर कका छलाह । ओ साधमोहन स्टेटमे गोपभूमि (बुनद्विग)क मैनेजर छलाह । टोलमे परदार मानन जाइत छलाह । गान अर्थत छलाह त हुनका लोक पंच बना क’ न’ जाइत छथिन । आदि-धुरक तकरारत’ जय सोय बहुक जगदा पगन्तमे ओ तेहन हताक करैत छलाह जे दूधक-बूध पानिक-पानि क’ बेल छलथिन । एकबेर चप्पा पोसीक मध्याम परमे केओ कबोमा तोड़िक’ ल’ मेलेन, ओकरा बधलाये ओकर गोटुला परक कुम्हल हुनका बेरा बैलथिन ।

हुनक पुत्र उमाकृष्ण बंगु पानेपुरमे पोस्टमास्टर करैत घरपर सतो देखैत छलथिन । हुनका रत्नानंदर पत्नीसक चौधरी जमेत छथिन । दोषक पुत्रकबूव (कृष्णकायत हरिकान्त, पद्मीकायत, बंगु हेतकर गथागाथ, शिवजी, मदनजी प्रभृति) ओकर प्रमुख सदस्य छलाह । ओ सभ तेना ओणमे आदि जोर-जोरसे मिहगर्भन करय लगै छलाह तेना जूझीतलमे खरहाक गिकार क’ रहैत होथि ।

हुनका घर लग मुखदेबजी छलाह जिनका ओतय मत्तरजीपर बरायति मत्तरब पत्तरब रहैत छथिन । आहास गङ्गागतक स्वागत होइत छथिन ।

अब किशोर कका भाधक तेहन भवत छलाह, जे हयसम ‘माधकका कहैत छलथिन । ओ लोकके’ कहैत छलथिन— ‘ओहिवाल (अन्तिम समयमे) मगाजलक गन कनेक मोही भरणाभूत (माधक होर) मुँहमे धे’ देव जाहिने पाया बनि जाय ।’

गोपी कका कर्मयोगी छलाह । दिन भरि तेवमे अटैत छलाह और साय-काज हमार पर स्नान कय निवर्तीक कूटी छथिन जगद । हुनका अथाड़ापर

\* वायमे आ जगन समुर (बड़ेजी)क मनीर रामदास ओपान्तव जोषि धिकिन्हा करय लगलाह । वेद जे युवावस्थामे हुनक जीवननीमा समाप्त भ’ गेलैन ।

[illegible]

राधाकान्तजी पत्न्यासहि पूजापाठ करित सुखाह ॥ जगन् भवत सुखाह ॥  
त किछ प्रसाद (वेडा, अणा पिढाना) तने अर्पित सुखाह । 'अ' अरु अरि यत्न श्लोक  
पडैत रहैत सुखाह ॥ 'स्वयं न म्नादग्निं कथं निवृत्ता' ॥ अग्न जलिनहि भायके  
पुछैत छपयिन—“की काकी, की बनि रहन छैक ?” भयभर वा दहिवरक नाम  
मुनिवहि हुनक जीव पत्निया आउत सुखन । कथजने पुछैत कहि उठैत  
छपयिन—“वाह ! नरकी इह क' देखनि ?” पायन हुनका भोजनमाद कहैत  
छपयिन । ओ अखन अर्पित सुखाह मायके पुछैत छपयिन—“कहू नाकी,  
नामादान कहिया धनक ?” रहि सभ फाजस हुनका अखन सुत्ताह रहै  
छनीन । ओ जलिनहि मायके आनन्दित क' वत सुखाह ।

कवृत्तों में करत हेतु आगीआम टालक व्यक्ति अर्थात् दैत छलपित ।  
 दुषाष्टिगत प० कुषेवत कुमरको हूननामें विशेष अपेक्षा-भाव दैत  
 छलपित । ओ वृत्ता भक्तिके अवन वैचिकी मय 'करी-कहा-अ-मर' अदि  
 वृत्तोंके मर्यादा छलपित ।\*

पुनरिष्टोक्त जमीनार संपत्ति व भूदूबान, प्रगति बूधर अथवा  
हावनीक सोमपुरी के मादुन रुद्रासन

कविप्रिये ज्ञान-सागरिणी वाणी! और मनुज-मन कथाएँ झलझल सुनास अर्चन  
सुनावन। काहूँ सतीशाल वशिष्ठ-वन बटुकेशीकर श्रवण लव-प्रदण  
सुलभित।

श्री कृष्णजी का कहना है कि "मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है।  
 मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है। मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है।  
 "कर्म" मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है। मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है।  
 मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है। मनुष्य के अन्तर्गत एक ही प्रकार का प्रमाण है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

२१ आदिम २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

गान्धर्वकन्दर्पविभवसि द्वात्रिंशद्विंशतः ६०१४ न  
फोमलकन्दर्पगुणस्य ह्ययमर्थो फलान् गान्धर्वकन्दर्पान् ६०१५ न

गमक पहिल लोकनि (भादुजी) कामभारसंग कक्षा पुष्टि कर कक्षा, पं० परगुराम झा प्रभृति) कक्षा र नदये 'अममभा' रमायित जन छन ह । ओहिमे समय-समयपर एक मिथीय आ भासिक कुरवक चित्र न ह छ । छत्रेक एक बेर रचियही त्त (छत्रि) ल'क' धनभोर विभाजित केवल के पूव दिन अपन हो का पर चित । एकमत नहि भ' सकैक । इतिहासकार दुःसिमा भ गेक । दंगुआक एरि पर ई नद नाला नद नाला नद नाला नद नाला पर गममे दुगुआक न भनैक । पूत दुःसिमा दुःसिमा नद नद भ गेक । बहुत दिन धरि छद्म-छद्म रहनैक ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । हनुमत् पद अष्टोत्तर  
 श्लोक । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । हनुमत् पद अष्टोत्तर

[illegible]



हुजाम बाद भ' भेजेन । परन्तु केओ प्रत्यक्षदर्शी साखी नहि छलथिन  
अनिधोय सिद्ध नहि भ' सकलैन । तबाधि ओ आरजे रहलाह । गाममे  
उत्तेजना भेलैक । तखन चिकनोटाक भं० किजोर भा बजाओल गेलाह ।  
हुनकारेण एक बार धर्मशास्त्रक घोषा गेलैन ।

पंडितजी दुनु पक्षक यथान मुनि निर्णय देनथिन जे 'लोकापवादजय पापक  
प्रायश्चित्त करामेन जाइत ।' ओहि प्राप्तिपन् टीक कटाय प्रायश्चित्त  
करय पड़लैन । बाइम पसेरी सातक भोज देवम पड़लैन । राखन जाक' मुँछ  
जेनाह । ताहि दिन समाजक एहन कठोर अनुशासन छलैक ।

ताहि दिन धर्मक एतेक विचार छलैक जे ककरोसँ कोनो गुप्त पाप भ'  
जाइत छलैक त' ओ स्वयं पंडितक ओतय जा धर्मशास्त्रक अनुसार प्रायश्चित्तक  
व्यवस्था स' कबैत छल ।

गाममे कोनो शगका होइत छलैक तँ बहुधा अपना टोचक बीएलाल कका,  
गुबारिटीनक पश्यामी कका, कुताहीक रामजीबाबू गाछीटीनक रामनन्तन  
मित्र आ कर्तारक ह्रीवस मिथ प्रभृति मध्यस्थ भ' पंचतो क बँत छलथिन ।  
ककरो ओतय कोनो काज-प्रबोजन, भोज-भात होइत छलैक त' सभ अपन-अपन  
टोकना, भहरंजी, जाजिम, भावि पट्ट देख छलथिन ।

एक गोटाक मुन्हा गामभरिक कुटुम्ब युवक जाइत गेलाह । यदि किनको  
ओतय धर-कुवेर कोनो पाहुन जाति आइत छलथिन त' पडासिक घरसँ  
पुनचाप पटुआर बाट' दही, अमोड, अँजार, पाउड आदि पहुँचि जाइत  
छलैन ।

रत्नीगणमे ततेक मर्यादाक विचार छलैन जे विधि-व्यवहारमे कोनो छुटि  
नहि होयब दैत छलथिन । दिसासमनक पीपी म'टल जाइत छलैक त' समाजो  
पीपी, छरेहमम पीपी प्रभृति आधिक' समासाचना करैत छलथिन—“सताबामे  
शीतलचीनी, कबाबचीनी नहि अछि । टेढ़-टेढ़ अहिबकक फर बहारक' दिओक'  
इत्यादि ।

ताहि दिन स्त्रीगण अपन स्वामी, सामुर वर सामुरक नाम नहि न' सकैत  
छलीह । विवाहती पीपीक पत्रिक नाम 'राम' पर छलैत (रामगुलाम) तँ ओ  
रामदानाके' पश्यामशना कहैत छलथिन । तावती पीपीक सामुर छलैन  
भरिया विष्णुपुर तँ ओ भरिया' शरा नहि बर्जय छलीह । ननूबाइक समुरक  
नाम छलैन नवलाल जा आ सावित्रीक समुरक नाम छलैन हजरत मिथ

तँ हथ जाति कुलिक' हुनका दुनु म'राके' ई प्रानो गायब कहैत छलथिन ।

गमह राम कुल दोर सूरत

हजरत मन्द दुलारे ।

ओसभ मायके' कहैत छलथिन—“देखैत छहुन ? बीआ कयकबईत  
छथि ।

ओहि समय एकटा कतम पंचवीक दूज देवबामे भएल रहय जे आनुक  
नोकके' धिक्कास करब काँठन हेतैन । यवका टन तमे पंच लोकनि बैलप  
रहथि, गम्भीर मुद्रामे, जेना समाजपर कोन पार नयट आवि गेल हा ।  
योचमे एक नाहिटा हा ज राखल गेल । एक पंच बजलाल “ई न' रख  
रहल जे ई चिट्ठी छही डाम रहि लय, नहि न' केहन भारी अनर्थ हाइत !  
दोसर दोसर मोटा जे ऊँच दुपटा बहने रहय अनुमान बैलथिन एहने  
कोन सयक ? गँते तापके' भाक भाग आइत । यव ऐगन जवाबस्त होय के  
चाही जे केर अइया कोनो लइकी ऐतत काम न' कर सके ।

जात ई रहैक जे एकटा नयविवाहिता कन्या अपना सामुरमे स्वामीक  
नामसँ 'मित्र प्राणनाथ' क'क' पत्र मिश्रमे रहय । ओ आँचरेमे लिपाक मुकाक'  
पुत्राथ सेटर-बस्मम खस बस जाइत छल । पोटोकात कोन पंचक नयति  
पहि गेलैन । ओ बिट्ठी स'क' पंचासतमे देत क' देलथिन । ओ कथा त  
पतमुकान स' सेतक । पिताके' अजाक' पाँच पसेरी सुपारी जुमाना कय  
गेलैन । बीही दिनसँ ओहि कन्याक पदाइ वद ब' गेलैक ।

गाममे कतहुँ बरियात अमेत छलैक तँ ओकरा शास्त्राचमे हरबाक हेतु  
ममस्त पीपी एकजुट न' जाइत गेलाह । सरियाती सीकदि येगकेनप्रकारेण  
[धन-वत्-वित्तदा पर्यन्त] बरियातोके पराइन कय छोड़ैन सलाह । एक  
बेर गाछीटीनमे कोनो गामसँ बरियात आएत रहैक । बरियातीक विससँ  
समायण पर प्रश्न भेलैक—

‘मयक समान रूप कपि धरी ।’

‘अब ई बोलू जे अब महाकीरजी मण्डरके' एव कारण क' सेतम सब  
गोतापीबला मुद्रिका (भीठी) क कहाँ रखा । ?’

सरियाती विससँ किनको जबाब नहि कुरलैन । जेठरयत सुरंत हृष्टग  
देवथिन—“जन्दी से दोड़क' भं० आरलोनाथ ओताके' बोला मबहुन ।’  
परन्तु ओ गामपर नहि छलाह तखन कौतुकजीक खोज भेल । मैयाक माद



गयाध्याम भेद । ईदक भुविहपर छिन्नवर्ति बनन । छाक लोक मोला घुमेल  
मेन । कलक जतीके मंदार-सायुरक लोकमें भेट भेनेन । मनसक आदास-प्रवास  
भेनेन । एक दिन मन्मिअन एतिय रसकी रहि सय लोक दसद दिन घरक बाट  
छेलेनि ।

माम ऐनापर स्त्रोमस बहुत दिग घरि ओहि सहपाताक आनख बखाय  
करैत रहलीह ।

× × × ×

जो राधे राधे आय गिनेसा जका मति अछि । मोहि आवेशी रती दूरसे  
आव केओ नहि छपि । एहि अद्यायमें जिनका लोकनिक चर्चा अ पल छैत  
हे सय स्मृति-शेष रहि गेल छपि । कलक प्रवाह भेहू स्मृतिके धो-धोछि  
वि.सोपक' देखैत ।

हम सादर तू कुंद भवतांति आगत क रैत छिणन—

य म ग्रामे पुग जात । मृता कालेषु विस्मृता  
शेषा ममारेण किंचित् किंचित् स्मृति-सर्पणम् ।

४

## बाल्य संस्कार

( पञ्चगव्य, दशभंगा, मुषफरपुर )

प्रमद मनस शिला-संस्कारक मुषस्रोत, प्रेयसाक गंगोत्री, छलाह बाबूजी !  
अतः पंचमे बने स लय आ नमरा अनरकोष, हिनोपदेश आ पापवप नीतिक  
प्रकार कष्टकर करीत छलाह । तखन जे मनमें भवत छैन, तिया दैत  
छलाह । कोछम संधि, कोछम सदास, कोछम शब्दकष । लोक गिबल आगमें  
पड़ेन अछि परन्तु हमर आचार आरम्भ ओहीमें भेल । बाबूजी चलैत-गिरैत  
बस्यैत जाइ छलाह—

“कतह न मनधिरवृ, गण कोन-कोन होइ छैक ?”

“मनधरवृत्तज (अर्थात् मगन, नगण मादि) ।

“मगल ककरा कहै छैक ?”

“आहिने तीनू मास गुरु (GSS) होइक, जेना — ‘बाबूजी’ ।

“ओर नगण ?”

“आहिने तीनू मास लघु (LL) होइक, जेना — ‘सरत’ ।”

बाबूजी प्रत्येक छंदक उदाहरण लेना बना रैत छलाह जे पुरत मनमें  
अपि न अदत छल, जेना—

“हुसबिलमिन छन्द भिकैक ई”

“उपेन्द्रवज्रा एकरा कहै छ ।

बाबूजी हमरा बाल्यावस्था-पत्र कौवाक अभ्यास लगा देमनि । एक बेर  
पूछि देखनि—

“हमिओहन जेवत फिरत, क्यों न लखावन तैल ?”





[एहि घनमने पकड़ा जान मन पईत अछि। एकमेर बाबूजी कोनो मित्राधिके 'ने चित्तक प्रयोग चुनवैत छलनि। महमा हमरा एकटा बात सुनि गेल। जहाँ-जहाँ आन भाषामे 'ने' लगैत छैक (पूर्णभूतक क्रियापदमे) तहाँ तहाँ हिन्दीओमे (कलामे) 'ने' लगैत छैक। जेना—हम कँने छलहुं, हम छँने छलहुं, हम कहँने छलहुं (मँने किया पा, मँने खाया था, मँने कहा था)। जहाँ अपन भाषा मे नहि नगैत छैक त हिन्दीओमे नहि। जेना—हम आएस छलहुं, हम गेल छलहुं, हम बाजल छलहुं (मँ आया था, मँ गया था, मँ बोला था)। बाबूजी ई बात सुनि बहुत प्रसन्न भलाहु—'तो' त एक मने बात बहार कौने', ई किनको ध्यान पर नहि अछि नहि। कल्पपुरक पंडितजी बाजि उठलाहु—'ई त भाषा टकाक आचिस्कार भेल। एहिठाम की कार्यकारण सम्बन्ध छैक तकर भाषावैज्ञानिक अनुसंधान होगक बाही।']

ओहि समय राजा बाबू (बादमे प्रसिद्ध गेल राधेश्वर मिश्र) पञ्चसखिया स्कूलमे मैट्रिक परीक्षा देने छलाहु। ओ एक बेर हमरा सभकेँ अपन माथ (बसानपट्टी) ल' गेल रहथि। ओतय हुनकर उमर ५० दिनन्दन मिश्र (ने बाबूजीक प्रिय कुटुम्ब छलनि) हमरा सभकेँ देखि परम उत्कृष्ट भेलाहु। पटना पोली स्नहपुत्रक कइएक दिन राखि लेलनि। ओहि समय हमरा अपन सभसे कथा गहि-बड़ कहवाक अभ्यास छल। सहिस हुनका लोकनिक बहुत मनोरंजन भेलैत।

तहिना बाबूजीक संग एक बेर लबीली गेल रही। ओतय हुनकर भक्त विष्णु हरिवल्लभ नारायण सिंह बहुत स्वागत-सत्कार कँने रहथि।

एक बेर बाबूजी अपना संग भीतर मेने गेलाहु। ओतय कोनो उपनयन रहेक। ओतय पहिले-पहिल बंगालक यासापाटी देखलहुं, बड़का हाथीपर बइसहुं और खुब भोज छलहुं।

कुमार कान्तिनाथ सिंह हमरा बजा क' पुछलनि—'की ओ बटुक। नुनवामे आयल अछि जे अहाँ खुब भुग्रास मिलवैत छी। किछु सुगन्ध ?' मुदा एखने बजा क'। एहि ठाम जे बात भेलैक अछि, ताही पर।'

आ इन्द्रवर (दिव्यवत राज) के मोटरक छिछु कल-पुर्जा लपकाक हेतु कहने छलनि। हम सभकेँ मुना बेलिएन—

"सरकार को सरकार है परकार मोटरकार फ"

ओ एहन अनुप्रासक छटा देखि सकिन स' उठलाहु। बाबूजी के कहलनि—  
"ओ कविजी! हमरा त होइ छल ने अहाँ बटुककेँ गिखा देत हेवन, मुदा भाषा लोहा बाजि बेलिएन।"

राजजी के आवेस बेलनि—'हिनका मोटरसे पुगिमा भुमा लबिजीत। जे कहथि से कीनि दैवत।

हम पुकिबासँ एक पाइक पेन्सिल नेने एलहुं। बाबूजी अपन मित्र सभकेँ कह्य लगलनि—'ननकरवूकेँ चिचाक न नकार त छैन, परन्तु व्यवहारमे अपट्ट अछि।'

पञ्चसखियाक अनेक मधुर संस्मरण अछि।

जम्माष्टमीमे खूब उत्सव होइत छलैक। बड़का-बड़का गर्वया तानपुरा स' क' बैसैत छलाहु और राग-तानक समस्कार देखवैत छलाहु। (माझन खवास जाहि समय मुदा तैयार भ रहल छलाहु। ओ तैम-तैम मिमट धरि तेहन गिरगिरी लगवैत छलाहु जे कुञ्जिहर 'तानसेन' क'हेक' प्रशंसा करैत छलनि और अनादी लोक 'बकाशिया तान' कहैत छलैत।)

रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह साहिब, लंगोत दुहुक मसैत छलाहु। एक दिन डेक्कीमे भोज रहैत। बाबूजी हमरा संग नेने गेलाहु। रायबहादुर हमरा प्रशंसा सुनि परीक्षा लबक हुतु एकटा समझा पुनि फरक हेतु बेलनि—'परम मधुर रसवान।'

परन्तु शर्त ई भना बेलनि जे तरगमक साथी भक्षरक अनिश्चित आन कोनो अक्षर नहि रह्य पावय।

बाबूजीकेँ चिन्ता भेलैक जे एहन कठिन परीक्षा मे हम कोन उपाय भ' सकब। परन्तु सरस्वतीक कृपासे तथामूर्ति भ गेल। हम ओहीठाम कागजपर तेनेजेहमे किछु सन्द जोड़ि, दोहा बना क' सुना बेलिएन—

"राग रागिनी सुर सरस, सुसरि धार समान।

धुनि सुनि पुनि पुनि मन भजन, परम मधुर रसवान ॥"

रायबहादुर उत्पल प्रसन्न भ' पुछलनि—'बटुक, कोन मधुर पैदा दिअ ?' हम कहलनि—'जे हमरा नामसे मेम खाइत हो।' सुस्त हमरा जागी एक बार खीरमोहन आवि गेल।



बाबाओं कबल की कुरि जीवित लेकर ओतो ठेकात नहि।

एकादश जगहोत्रे उठि सोसे मधाम गामको नाति ऐलियन। घरपर ककरो किछु कामक नहि। जखन शुष्क-शुष्क बाह्याण मोटा मेने मविररर पहुँच्य संगनयिन थ धन पटनैम जे महुअ बाह्याण-भोजन हेतु नोति मायल छयिन। बीड़-बीड़ी लीक सिहनाइ आ' कंगी-निमरी गेल। कहएक भार पर बुझा-बुझो-चीनी आवन। तखत बाह्याण-भोजन सम्पन्न भेल। जे भीतो उबरलैन सही घोरिक' बाह्याण सभके' पिटा देनयिन। तन्मि'गतक वस्तु अयमे कोना जेतथि ?

बाबाक भक्ति ताहि सोमा पर पहुँचल छलैन जे अपना गर्भ लगीत छनैन त भगवत्पद' पंथा होइय जगीत छययिन। जाइ होइ छयैन क' मूर्ति पर रजाइ ओझा जवैत छययिन। लीक कहैत छलैन जे हुनका अयोध्या छलैन जे ग्राम: पुन-नोकक कारण छलैन।"

X

X

X

१९९९मे बाबूजी मिथिला-मिहिर'क सम्पादक स दरभंगा आवि गेलाह। हमर सभ ओतहि रहम लगलहुँ। हमर सभक बेरा मया वजारम छल। ई रामबाणक फाटकसँ लय मावबेचरक समीप धरि राडकक दूनु बास लाख रंगक लैकही नयनोरिया आ'क छयैक जाहिमे राजक मिश्रिष्ट ध्वनि (धक्कार, पड़ित प्रभृति) रहैत छलाह। सभ नवाक एके नकवाक, एक दोसरसँ सटल छलैन केवल नम्रारत पता नगीत छलैन, (हमर बेराक तम्बर प्राय १९२ छल।) देहातसँ जे अनभूआर पाहुन अर्थत छलाह ते बहुधा भूतिधा क' दातर तेरा मे (जेना प० उपेन्द्र मोहन मिश्र श्रेष्ठ, प० कपिलधर आ' भास्वी आदिक बेरा पर) खलि आइत छलाह, तयग हमरा ताकि क आनय रहैत छल।

नया बजार खुब चहुटगर छलैन। बिहाड़ा, मधाम, बरैक सुता भार पर बिकाय जवैत छलैन। शुभोवाहाक कबाडिह टाहि लगवैत छलिन—

\* अन्तमे जवधम् हुवा कैमयिन और हुनका एक पुत्र देलायिन (गणेशजी)। ओही वहुत किछु हुनके वकी भजनानन्द छयिन।

† १९३४क भूकम्पमे ओ तेना नष्ट भ' गेलैक जे आज ओहि नया बजारक नामोनिशान नहि छैक।

'जे पतिपाता जे।' लगेमे बरैक कारखाना छलैक। खुब मलाह-बर्फ आइत छलहुँ। मावबेचर पोखरिमे बूमकैत छलहुँ। अद्यावापर राजक पहलवान (जनक सा आदि)के' देखैत छलियैन। धर्मभान सिंहक गोसावासँ दूध ल' अवीत छलहुँ। सोनमे राज मैदानमे फुटबॉल मैच होइत छलहुँ, रानिमे भाप आ' मुभमा (छोट बहिन)के' भगवतीक मन्दिममे वर्मन करा जवैत छलियैन। दुर्गापूजा आ' इन्द्रपूजामे खुब उत्सव होइत छलैक। कहियो जनाप्रभातक नाटक (सत्य हृन्दिभद्र, सायित्रो सत्यवान आदि), कहियो ब्रह्मातक प० रामशाक कोसंग, कहियो गुलदेव आ' पहलवानक कुम्भी, कहियो बटुकजीक भतरंज, कहियो माइस्कोप।

हम बाबूजीक संग 'मिथिला-मिहिर'क कार्यालयमे आइत छलहुँ। ओनय एक कोनमे पत्र-वित्तिकाक बेरो मध्य बैसि 'धुधा', 'माधुरी', 'हँद', 'मनीरंजतक'क काइलो दूबि जाइत छलहुँ। बी० पी० श्रीवास्तवक हास्य-कथा ('लम्बी दाढ़ी' आदि) पढ़थ जे खूब मन लगैत छल। हमर लुपवाप एकटा ओही डंगक कथा लिखलहुँ—'अभीष बंदर'। हमर ओ दास रचना देखि बाबूजीक सहकारी प० जगदीश्वरी प्रसाद ओलाजीके' एतेक मनोविनोद भेलैन जे ओ ओकरा सुवर्णन श्रेष्ठमे छपवा देलयिन।

लालबान गायत्रीसँ डरीकडरी पुस्तक ल' अवीत छलहुँ। गारद बाबूक समेटा उपन्यास मढ़ि गेलहुँ।

अँछे जीमे मेसॉफल्ड ग्रामर, टायल दासक' कंपोजिशन, गंगाधर ट्रांसलेशन। लहौघरि हमरण अवीत अछि अँछे जी रचनाक एकटा आरबहियाँ पुस्तक पढैत छलहुँ, नकर रचयिता छलाह राजेश्वर बाबू (जे नारमे राधूपति भेलाह)।

ओहीसमय बेलाओ गहान्तर गौरीक अग्रहोम आग्रहोम मुरु ब गेलैन। सरकारी स्कूल, फाजि, कचहराक बहिरकार होमय लगनैक। अदका महुका महीन गौरीकीक अनुयायी बनि बकालत पया छोड़्य लगथ ह। (ब्रह्मिकोतर बाबू, धरणीभर बाबू प्रभृति नैन बेसो सुनधाम खरा छल।) सभामे तिरया लग कहिरात छलैन, 'बदेमातरम्' होइत छलीक, जोरदार भाषण होइत छलैक। हमर सभ सुनय जाइ छलहुँ और 'बाँधीजीक अय' करैत अवी छलहुँ।

ओहि समय 'मिथिला-मिहिर' के प्रबंध-सम्पादक छलाह पं० योगानन्द कुमार (३ बाबूजीक छोटे सभियौ छलथिन) । ओ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक उत्साहक छलाह ।\* ओ अखन डेरा पर अवैत छलाह त हमरा किछु ते किछु चिन्तित-वर्द्ध देखि रहैछथि विद्यानन्द कहैत रहलाह हुनके अखन राखेट, उन्नत मासिक मध्य वयसक स्वामी मदन अहिरि सभने अधिक अछि । ओ हमरा व्यापार-प्रणामात्मक प्रेरणा दैत छलाह ।

'मिथिला-मिहिर'मे बाबूजीक अन्ध-विरोधक रचना ('उत्तमप्रान्त' लाहि)मे रस भेटैत छल । हुनकर 'धुनविवाह' (उपन्यास)मे हृदय-प्रसन्न तेहन रहिगए जेह छल जे ओहिना लिखबाक प्रेरणा मगमे होइत छल ।

ओहि समय 'मिथिला-मिहिर' आ 'मिथिला-मोव' (काव्यिक मैथिली भासिक)मे लेखन सैली 'क' मनोरमक विचार चलैत छलैक । 'कैल' लिखल जाय या 'कएल' ? 'मोव'क कथ छलैक जे 'कैल' लिखल 'कइल' पढ़ल जायत जेना 'कैल' बइल । 'मिहिर'क एक छलैक जे तखन त 'पैर'के 'पूर', 'बैल'के 'बएल' लिखल पढ़ल । एहि भाव-मोक्ष हमरो रस भेटैत छल । बाबूजी 'पैर' 'और' लिखैत छलाह और वैद माछम जौनी मिथिला मिहिरमे प्रचलित रहलैन । (हमरो ओहिना लिखबामे युक्तिवा बुद्धि पड़ैत अछि) ।

ओहि समय बहुधा रातक विगत ककाली मंदिरमे पंडित लोकनि के भोज होइत छलैन । बाबू कचोड़ी-अमिरती छनइत छलैक बाबू कोनो-कोनो विषय पर शास्त्रार्थ चलैत छलैन ।

\* १९१२मे ओ मैथिल छात्राण सादरेधरी प्रकाशित भैने छलाह ताहिमे मिथिलाक विविध वर्गक सभक नाम-नाम मोव-मूल-योग्यता-पद आदि विवरण परिलक्ष्य भेल देख छलैक । जहाँ छरि हमरा हमरा अछि ओहिमे पद० ए०क अखनत भाव (रा०) गगनाथ झाक नाम छलैन ओहि प्रथक ऐतिहासिक महत्त्व छलैक । परन्तु आज ओ भाव अपाय भ गेल छैक ।

† मित्रवर समाजक बाबू, दुधन बाबू प्रभृति कअमेज' विरहित छलाह । परन्तु हम, 'कौलज' लिखैत अछल छी । एक बर (वय १९४८मे) मिथिला कालेज (प्रवक्ता)क मैथिली परिषदमे अध्यक्ष पद से भाग लेल जवन मेहनत-मिलन-मिलनमे ई गि छैने रहिगए-

‘मित्रवर समाजक बाबू, दुधन बाबू, कअमेज’ विरहित  
समयमे त मुज दबान् दबान् पौनी प्रसन्नयन ।

एकबेर स्त्री शिक्षा पर विवाद अछि भेलक । 'नारीश्री' शिक्षा विधेया न बा ? बहुत संकल्पितक भेल । हनु पक्षी माना प्रचारक मुक्ति देल गेल । अन्ततोगत्वा ई निर्णय भेल जे—“यद्यपि पठेत् कस्या नाधीयेत् ततः परम् ।” (अर्थात् दम्पत्यक अवस्था धरि कस्या पढ़ैथि, तकरा बाद नहि ।) तात्पर्य ई जे वयसक पूर्वति पढ़ाई बाध भ' जेबाक चाही । एहि सिद्धांत-पक्ष पर एक अतिवृद्ध महामहोपाध्यायक हस्तक्षर भेलैन ।

तहिना एक बर 'शारदा विमल' विरोधमे सभा भेलैक । एक वक्ता बजलाह जे जखन चौवहु बज धरि कस्या कुमारिए रजनीह त हुनका बाकिए बी रहलैन ? यदि शास्त्र सत्य त हुनकर दिलावे' यावक भागी होमथ पड़ैन । ओ शारदा स्वयं ब्रुलटा होइति ते' सभके' अष्ट करय चाहैत अछि ।

एहि पर केबो छलैक नहुनकैन जे शारदा (हरदिलाम) स्त्री नहि पुरण थिक ।

ताहिपर दुर्बलता और अधिक उत्तेजित भ उठलाह—“एखन शारदाके कइ लिख । जखन नाममे 'राप्' प्रत्यय लागल छैक त ओ पुनिलग कोमा स' सभैत अछि ? एखनाके धर्मशास्त्रसे व्याकरणपर आधि गेल ।

ओहि समय पंडित लोकनि साधारणो बालीलायमे 'अस्मदार्थि' सभ सभ शिलषट शब्दक प्रयोग करैत छलाह (जे वाक्यिक परिचायक गृह्यत जाइत छल) । उपनयन-विवाह आदिमे जे हितवध बनैत छलैक से दृष्टिकूटक जकाँ हुनहु बनाओल जाइ छलैक (जैना १३९२के) 'अधरान' दुधनम' लिखल जाइ छलैक । एकबेर हम 'यमुनातीर'क रचनामे 'विपुल-व्यवहारी' लिखने रही से देखि पं० खुर्दी ला बाबूजीके' कहलथिन—“ई तेना अहिक नाम रखलाह ।”

ओहि समय पंडित लोकनि तेहन आचारनिष्ठ होइत छलाह जे एकबेर रोजवखनतः महाविद्यालयमे एकटा बखज आ भेग आबिक पंडित लोकनिसे हाथ मिलौल्योह त ओ सभ स्वर्गदोष प्रक्षालनार्थ सचैत रनान करैत जेलाह । किछु व्यक्ति एहनी छलाह जे मैथिलीभाषाके 'महामाजान' और बाइबोपके 'शायसकोष' कहिक उपहास करैत छलथिन ।



एकवर हुंदाही पर एकटा 'पनिज हिंदू होदल' खुजनेक (बाहिमे भात, दाहि, नरकारी घटनी प वड भोजन करवैत छलैक) परन्तु, ताहि दिन कुशीन बाहुनके पनीजान एक विचार छनैत ओ दिना मौज्ज (अर्थात् जिना घापी मटने) कफरी भीषण मिड भोजन करव (अर्थात् भान खाएब) विधिद बुझैत छलाह । किछुएटा जाहि गाइबोदक देखि 'तो' खनाक व्याख्या करैत छलाह "अबल हिंदू होतो दल । (यदि ओहिमे केओ जाइतो छल, न रासिमे चोराल) ओ केओ भोजन करैत देखि नहि छैन !)

चरभामःसं बहुधा चनौर जैबाक अवसर भेटैत छल । बहिन (ननुवाड) लेह्न भावणी धूनीहजे जल्दी जाबप नहि रैत छलीह । "बीधा कालिह अपना 'पोखरिमे मछरारि हरीक, भाद फाक' जैह ।" बीर जखन दोसर दिन जाय गलैत छलहुँ त — बीधा ! आइ गुरु दिन परितप कोना जैबह ? हुनका ननवि सत अनुनादन करैत छलथिन 'अबधे किने टिकलमे दड़िभंग कोना जैतह ? कालिह अष्टमी क पानरि पकनैक तकर बाद जाय देखैत ।"

ओ सभ बच्चा मारकें जेलोनिया पाहुन मुसि गरम परिहाम करैत छलीह । हुनका सभक बहशक अपूर्व छवि-धरा छलैह । तना अप्पोलिह जलोकिमे बजैत छलीह जे अप्पर-रासलक पडिला हुन परैत छलीह । भगैत छल जेता हमारक धामिमे समस्कार धीरल हाडक । कन्या सभक कोन कथा पनिभरनी परैत मलमल-अप्यजनामे बजैत छलाह । ओ सभ तेहन वाक्पुत्रा जा परिहाय-रनिका छलीह जे आकनमे आत्म-विनीदक बर्षा करैत रहै छलीह । (एकवर 'बाल्यवर्हीक पाहुनके' अंग्य केलथिन— गिनी लोहार के कनक छोटमे जाएल छलैत ?) । हुमका सभक चमस्कार ओ जल्दमिमा हमरा बाल्य-मनकें बहुत प्रभावित करैत ।\*

चनौर सेमे एकटा महान् साध ई होइत छल जे महामहोपाध्याय पं० गणेशदास सभक वयस होइत छल । ओ कृपिधत् लमैत छलाह । निरन्तर पूजा-पाठ या आस्त-बधाम सनल । जयमे स्मृति-ग्रन्थक पणार सगल

"हम' कथा-साहित्यमे (विशेषतः नारी पाठक चित्रणमे) चनौरक चर्चा छल पड़ल अछि । अलकार जिआ' (वर्षरी)क स्वीमण, 'कबलक मनुना' (प्रणम्य दवत)क सारस्वती, 'कन्याक जीवन' (रंगमाला)क चित्तिर याद, बहुत किछु ओही साहित्यिक चिकीह ।

रहेत छलैत । मनु, पञ्चवक्त्र अदि पराजित हाशेन, जायसामय । दूर-दूरक साहित्यात्म्य विद्वान् हुनकायो व्याकरण या धर्म-संस्कृत एकटा सहायक हेतु अवैत छलथिन । एकवर हुम अर्थात् (परीक्षा)क संस्कृत नाम पुष्पविपुल त ओ शब्दकमलमयमे एकटा शब्द देना देखि 'एरुवपट' । ओ हुमर जिआसु-वृत्ति देखि बहुत प्रभु होइत छलाह । ओसाजीके लहैन छलथिन "जगदीश बाबू ! ई गना मस्कारो छथि । जखन भजन भवथि, हमराने अचण्य भेट करा देखैत ।" हुमकर अनेको स्मृति मनमे अंकित अछि ।\*

ताहि समय मोतिपुराक तेहन आचार-विचार छलैक जे एक बेर कोनो भोजमे घोखरम एकटा सलगम (डालनामे) पड़ि मेलाक कारण समस्त भोज भङ्गल भ गनैक । भोला सभके (बाहिमे हुनहु रही) बालुशाहीक बदला बालुशेवर विधुव पड़लैत ।†

चरभंगा देशमे बाबूजीके भेट करबाक हेतु माया प्रकारक कमि कमाकार अवैत रहैत छलथिन । जखन बाबूजी हुनका लोकनिक संग साहित्यालाप करय लगैत छलाह त अल्प-वयसक भारि अलकारक बर्षा होमय लागि जाइत छल । बलोक न हुनका एकरनिक जिह्वे पर रहैत छलैत । घुटकी बजवैन देरी अनुजुष्ट तीवार,

\* एक बेर कोनो मोट-सोट जमींदार अपन पढ़नवान सन बेटाके 'स' क' एलथिन और पुछलथिन—'पणितनी । 'ई' ('सप्तलराएत') कितना रोज अपने के साथ रहला पर अपने जकती सखकीरित के विदोआम बम बर्षत छम ?" पं० जो अगाधमहत्ता हुनका देखि उत्तर दलथिन "ई कतेक दिन हमरा संग रहन हमरा संग भ मजत छथि मे कइय त' बड़ कठिन, परन्तु यदि तौ मास हमरा संग रहि गेलहु, त हम परि अवश्ये हिनका सन भ' जावब ।"

(हुनका लोकनिक एक-सो-एक सूक्ष्म अर्थ या मुठोक्ति होइत छलैत । एक गैपानिकके केओ पुछलथिन - 'अयने ब'छो रोचव ?' ओ उत्तर दलथिन - "हमरा पाछी नहि ।" तात्पर्य ई ज बास्के गोबरेम आरन होइत अछि, तखन ई कोना देखि सकैत छी ?)

† ओही मनोरंजक घटनाक संस्मरण जःकाजधानी (पटना-चरभंगा)के प्रकाशित भ' चुकल अछि ।

एक बेर पं० त्रिलोकनाथ मिश्र बजितहि कहलथिन—

“जनसौदन-सान्निभ्यात् जन कोधि न सीदति ।”

बाबूजी जगने उत्तर देलथिन—

“मुष्टे त्रिलोकनाथे तु लोकः को न प्रसीदति ?”

एहन-इहन प्रत्युत्पन्नतिपूर्ण वादिलास होइत रहैत छथेन जे मुखामे मान्य आवि गइल छल । ओहन कान्यकास्त्र विनोदक भाषाकरणमे हमर जे संस्कार बनल से आना जाक साहित्य-सर्जनमे प्रस्फुटित भेल ।\*

x + +

१९२२क बाद हम सभ दरभंगासे लाम गेलहुं । बाबूजीकेँ कलकत्ता गेबाक रहैत । एक दिन उपेन्द्र ककाक संग अतरंग भेलाइत रहिय । हम जगमे दैतन होय दैत रहियेन । ककाजी हमरा इन्फि' कलकत्ता पहुँचो पून चण्डी, जा सो चले गण्डी ।” बाबूजीकेँ कहलथिन—“पं० जी, हरिमोहन जीवह मयंक भ' गेलाह और एखनपरि छुट्टे छथि । स्कूलमे कविया देवेन ? बाबूजी कहलथिन—“तखन अही अपने स्कूलमे नाम भिजा दिऔन ।”

बाबूजी हमरा खर्च द' क' कलकत्ता गेलहुं । हम मास्टर साहेबक संग मुनफकरपुर भेलहुं ।

बी० बी० क'लेजिएट स्कूलक हेडमास्टर छलाह पी० यो० (भयानी भूषण) भट्टाचार्य । ओ हमर अकरेजीक परीला भेलनि । पंडितजी (१० टी० एम० पीधरी) संस्कृतक और पं० सरस्वती वर्मा हिन्दीक । हमर उत्तरहँ ओ लोकनि पूर्ण संतुष्ट भेलाह । हम मैट्रिक कक्षामे भर्ती भ' गेलहुं ।

हेड मास्टर साहेब ककाजीकेँ कहलथिन—“कुमरजी, आपका भतीजा टाँच कर लकड़ा है । लेकिन, हिस्सा का जिम्मा आपको लेना होगा ।”

ककाजी गणितक अध्यापक छलाह । हिस्सा-कित्तासमे तेहम पक्का जे सभ लोहा गानैत छथैन । ओ बन्दपसा कोट पर गोल कारी टापी पहिरैत

\* हमर ओ संस्कार नश्यमे 'बटुर ककाक तरंग' आदिमे दिशेष रूपसे अभिव्यक्त भेल हो से संभव ।

छलाह, बाहिमे रीयदार बेहूत और बसी प्रसादकी लगेत छथैन । ओ समयसे पहिले कान ई केनहि जे हमरा अपना कलम ले' गेलाह आ हमर कविताक काफी ल' क' अपना दरारमे बन्द क' बेथनि और पत्रलाह—“देखो बच्चा । आज मे कविता-कविता छोड़ो और हिताच मे नामा जोड़ो । नहीं तो देखते हो यह बंडा ?”

हमर सभस छंद बंद 'ब' भेल । पद्यसे गद्य पर आधि भेलहुं । अखनहीं अकगनिन और के० पी० समुक्त अमदेवराक पहिवा पर गड्डो चमय लागल । पोएट्रीक स्वाम एयोमेट्री भेलक ।

हमरा सभक डेरा स्कूलक हातामे छल । कोहिमे मास्टर साहेब और पं० जीक भलावा तीन-चारिटा विद्यार्थीओ रहैत छलाह । ओ नभ पार नगाक' भासस करैत छलाह । दिनमे आठ-दशनि एकटा सरकारी, रातिमे रोटी । सपसी (चपरासी) चौका-बलन करैत छल । जवंच हिताच पं० श्री रज्जत छलाह । (कलकत्तासे बाबूजी प्रतिभास मनिभाटंर पठा दैत छलाह ।)

पंडितजीक कथन छनैन—“मुखारिनां हुतो विद्या ! विद्यार्थीकेँ मुखस कोन प्रयोजन ? छुन्नु-रुक्ख आ क' विद्या प्राप्त करक स हो ।” केना छल अँचर-खटमिट्टी वा कोनो बटकार यस्तु खाप से हुनका मछ, नहि होइत छथैन । (हमर दरभंगाक बहुसख श्रीभ केँ मुखपरपुर छी'गि देलक ।)

पं० जी जनबखालकेँ आरंभ छाक (एकलव्य) मृक्षंत छलथिन । कारण जे ओ जनबद नहि करैत छलाह, चारि आने पक्क बना मोटियाक कुर्सी पहिरैत छलाह, खाती पेर रहैत छलाह और प्रत्येक मंगलकेँ महावीरजीक पूजाक हेतु पं० जी केँ केराक पाल काटि क' आदि दैत छलथिन ।

डेराकेँ भरि राति मखरक अखंड कीर्तन होइत छलैक । एक बेर आनन्द रामसे मनहरी नेने ऐलाह और लयाक' भरि राति आनन्दसे सुतलाह । हुनका एहि तरहें निविशत भ' फोंक कटैत देखि पंडितजी कुरुरैत रहलाह वा भोरे त्रिंति आनन्दकेँ तेहन-तेहन चक्रबुझत धातु-रूप पृथ्व मयमविन जे आकन्धक मिट्टी-पिट्टी गुम । पं० जी हुयम्भन्त करैत कहलथिन—“मनहरीओ लयाक' मुतबह आ ब्याकरणो आवि जेतीह, ई पदु खात कोना भ' सकैत छीह ? एहि बेर संस्कृतमे लड्डु भेटलौह ।” तहियारि केँ आनन्दक मनहरी नहि लगैत ।

पं० जी आदित्य ब्रह्मचारीके बहुत मानेंत छलथिन । हुनका सत्यवादी गुणिष्ठिर कहैत छलथिन । परन्तु, एकदिन ओहो घुसाइय पड़ि गेलाह । बात ॥ भेनैक न आनन्दक मामलें पोखरि क बहका भाष आधन रहैम । ओ बह विन्याससँ सरस-प्रोलाभोस गेय । पंडितजी प्रेम्बुनका खरस पलरके मुँहमे रैत छलाह कि 'प्रथमे साते मलिकोपास 'भ' रैलै । ब्रह्मचारी हाथमे एकटा तार लेन छोड़ल एलथिन - पंडितजी ! जगनेक पित्ती मरि गेलह ।" पंडितजीक हाथसँ भाछ छुटि गेलैन । ब्रह्मचारीके देख्य लगलथिन—“हो गुणिष्ठिरक अथतार ! ई बात कनेक अम्बिक कहितह त कि ब्रह्मपथ लागि जलौह ?” ब्रह्मचारी निश्चय छलाह । ई पर धरैत कहलथिन—“गुरुजी, आव दोसर तार बाओत त नहि कह्य ।

मास्टर साहेब धनका सिद्धांत, सादा जीवन एव रोम विधारक सोक छलाह । कोनो संक-संका घेजव नहि चाहैत छलाह । एक बेर कमलाकासके अत्यंत भेजगलें बावरी छटैमे देखि हुनासके सजाय कैथोसँ गरिबराबर करवा देलथिन ।

कन्हौलो स्टेट्स एकरा छात्र (पंडित बाबू) मास्टर साहेबक जिय लयथिन । हुनका पान अंशक अध्यास छनैन, मुदा मास्टर साहेब लग देवा काल बीच जका मुँहसा न पुइक क रैत छलाह । एक दिन कोनो विद्यार्थी मुँहमे सिगरेट धगीने रह्य । ओ मास्टर साहेबके देखि जरिते सिगरेट मुट्ठीमे कम्बक लेनक । ताहि चिन शिक्षकक लेहन छाछ छनैन ।

हमरा सभके केवल छ प्रोथियोनी दुस्तक पदवाक अनुमति छल । (दया 'ब्रह्मचर्य ही जीवन है') एक दिन मास्टर साहेब हमरा हाथमे सरद आवुक उपन्यास (त्राय बंदवास) देखि हीन हालनि आ आवज देननि—“अभी पुनितक का छयतीसवीं बियोरम बनाकर दिखवाओ ।”

तहिना एक बेर कैथो नील पर देमिसलसँ लिखि बेग रहैक—

“एक तरफ है इम्तिहान और एक तरफ है मातृक !  
इस दुतरफी आग में कैसे सजेगी आवक ?”

मास्टर साहेबके सन्देश भेसँग जे लो हमरे लिखल हैत । ओ हमरा बजाक ओटप लगलाह—“उहू की जगसी छांटता है । अभी से माजिक-भाशुक की बात करता है ।” पं० जी रग पर कितकिरी चड़ा देलथिन—

“कुपरजी ! इस ग' बाइ धरि मुल्ले मडि कीलिएक जे 'इशक' ककरा कहैय छैक, आ आर-काण्टक छोडा मभ नुकएसे ओकर पठ पढ़य लागि जाइत अछि । मास्टर साहेबक हुनमे भैव—“अभी उन साइन को रखव के मिठाओ ।” (पाछा पत्रा लगलैन जे ओ दोसर विद्यार्थीक लिखल छथैक ।)

आहि समयक किछु मज्जी न्हयि, रामजी (जे बादमे इन्जीनियर भलाह) जा मिथवापाल प्रह्लादास (ज बादमे सम्पादनी भ' गेलाह) । इदयनारायण आ मिण्टा फुटबॉलक 'बमिशन' छलह । ओहि समयमे कोनो 'रुटुहन्त शुनिषन' (छत्रपंच) नामक मस्तर नहि छनैन परन्तु विद्यार्थी ओकनमे जे पारस्परिक ग्रीहादे भाव छनैन जे आब दुतंभ अछि ।

हेउमास्टर साहेब सहुदय वैष्णव छलाह । प्रत्येक सनिक अन्तिम घटीमे हमरा सभके कामक- कवमे बैस कय प्रार्थना करबैत छलाह—

“अक्युल केतव रामनारायणम्  
कृष्ण रामोदर वामुदेव भजे ...”

हुनक कोमल स्वर हमरा सभके मज्जीमूत क' दैत छल ।

हमर स्कूल राष्ट्रीय भाषाभाषा ओतप्रोत छल । अधिकंश शिक्षक या छात्र अद्वयक घोती-कुर्ता पहिरैत छलाह । कोनो पर्य होइत छनैक त' द्विन्दु मुसलमान, सभ एक संव भिनि “मुजसाम् मुकसाम्” करैत छलाह ।

ताहि दिनक गुरु कारिकेरम् होइत एलाह । अपरमे शुष्क-कठोर भीतर सँ आठ कोमक । ओ सोकनि हमरा सभके पुत्रवत् बनैत छलाह आ हमहुँ सभ पितृ-गुण्य मानैत छनिदेह । आव बुझना जाइछ जे ओइ कठोर अनुशासनक मूलमे कोन वरगस्थ भरल रहैत छनैक ।

तहिना विद्यार्थीके सभक परीक्षाकाल अखवारसँ सात होइत छनै । बीचमे की सभ प्रकिया होइत छनैक, जे हमरा सभके जात नहि छल । जेना मशीनमे मिशका खसीता पर चरनक टिकट बहराइन छैक, तहिना हम सभ रिजल्ट बुझैत छलहुँ ।

१९२५ (साब)मे मैट्रिकक परीक्षा 'ब' क' हम काम जायत रही । एक दिन हमरा ओहि टाय पूजा होइत रह्य, ओही बीच मास्टर साहेब अखवार तेने ऐलाह । बाबूजीके कहलथिन—“पं० जी, मधुर कोब्राड, इरिगोहन कस्ट भेज छथि ।”

एकर धीरे-धीरे स्कूलक ओहि अनुशासनके छविक जे हमर बाबावर मनके मोड़िक पाठ्य-विषय पर कन्द्रित हो देलक । यदि से तहि शिक्षण त प्रेम कायाकासेमें सँवैत रहि अँवहुँ । स्कूली जीवन मध्याह्नक काल पर आनि देलक ।

हमरा मैट्रिकमें डिस्टिक्ट स्कास्टरशिप भेटल । प्रवेशिका परीक्षाक ओ सफलता हमरा कालेजक जीवनमें प्रवेश करवाक मार्ग खोलि देलक । जीवनवश्यक विद्या निर्धारित भ' गेल और निश्चित लक्ष्य दित अग्रसर होवाक प्रेरणा भेटल ।

५

## इश्वर-मंदिर

( चोमरा, काशीवाड़ी आ बालिका बधू )

१९२४क प्रीतदावकाशत हन घर पर रही । बाबूजी सेहो किछु दिवस हुनू कलकत्तामें गाम आबल रहल । ओहि बीच एक दिन एक बधोबूढ़ पंडित में अपकन पाग पहिरने रहल हमरा दरवाजा पर चौकाई सँवरलहुँ । ओ छलहुँ सोमाक पं० सोमलाल मा के अपन कन्नाक हेतु घर-बाबनाने आयल छलहुँ ।

बाबूजी हुनकर साममें परिचिन छललसि । ( प्रविष्टि पंडितक रूपमें जनैत छललसि । ) हुनू गोठामे मिष्टान्नकारक आदान-प्रदान हमसँग भेलसि । एक दिवस पञ्चुबादे भरणाम, साधित-म गोष्ठ, बातर दिवस परिवार सकुरी, बरत पीठ । हुनू नँसमें बडका-बडका पोछि । बाबूजी बटकराव लखीसाल आ परिवार-पात मिलाम रूप कहललसि—“ई मलिकावन योग होयत ।” बाबूजीक हुनू भग्यी, डाकधर व आ ५० भारताय छा, अनुमोदन कौलसि । पञ्चाङ्ग देखिक' बिबाहक तिथिओ निश्चित भ गेल । ५० गा आशीर्वादस्वरूप पाँच गोठ जनउ सुपारी भयत बटुआसँ बहार कय हमरा हाथमें राखि देलसि ।

साहि दिवस बापक (वर)में किछु पुछवाक प्रयोजने तहि रहल । जेन-देवक कोनो घरमें माहि सोमाके बहिनदाक एक भवनी स्त्रियनि दाइ रहैत छलीहुँ जे घरकटा जनेस पठवैत रहै प्रसोह । सभके' खुशी भेलैत जे ओतपरमें गुरु मार-बोर आसीत ।

नियत समय पर (‘बापाहरस्य प्रथम रिवते’) पं० श्रीक छोटा भाव (पं० सुन्दर लाल मा) ऐलात और हमरा ज' गेलहुँ । सहिमा मैथिल समाजमें बरिधातिक



कोतो आच्छादरे नहि रहैक । केसन डाक डाक सज्ज गेल रहैक । लोमा हमरा सामसँ नोन काम दक्षिण, बरेका धोरक ओहि पार । हम मथ खीटा-बाकीक समय ए० जीक सलाम पर पहुँचि गेलहु ।

आजमे गीत-नाच नृप स गेलैक । एक सुन्दर स्त्रीमण परिचयन गरीक ऐलीह और हमरा भीतर सँ ऐसीह । अपने गान जकाँ गहु ठाम गंगा-मधुनी मज्जम देखवाम आयल । सुन्दर एकदमनाक सज्ज-सज्ज कञ्ज-कञ्ज-वसकी बाकी सेहो छलीह ।

समसँ जाया एक बड्कला किनारी छलीह, जे मैना जकाँ चहकैत छलीह ओ हमर हाथ सँक बिधि करीत बाइ छलीह । बहुत रास बिधि-बाध भेलैक ।

छन्दोग मज्जिसँ किवाह होइत-होइत बहुत रासि चीति गेलैक । हम औपाय लामि गेलहु । कसम की भेलैक से सभ मन नहि अछि । जखन रात्रिमे एक बेर नित्य टुटल त अहिवागव पातिलक मज्जिम प्रकाशमे देखवामे साधल जे हम भूमि-काया पर छी और दोसर सीतलपाटी पर बँह निगरीरी एक शालिकाक संघ निशामन छथि ।

ताहि समय ई प्रथा छलैक जे चतुर्थी पर्यन्त घर-कमराक पूरक-पूरक ख्या बिग्रान होइत छलैक और बीचमे बिधिकरी अगोरिक रहैत छलथि । (ब्रह्म-चर्यक रक्षिका यत्कि ।)

यद्यपि आजमे अजोह घर-कमराके देखैत एकर प्रयोजन नहि छलैक, तथापि बिधिकर वामन त आसन्नके छलैक तीन राति छरि हमरो ओहिना मठरीक अन्तर्भागमे रहम पडल । ओ अनुनामिका स्वयं पोछरी (हमरा सँ किछुए दिन बढ) छलीह । तथापि ओ रूपन जेठी जनवैन हमरा बोधा करैत छलीह (और हमहुँ 'वधिन' कहिक' सम्बोधन करैत छनिऐन) । हमर समस्त परिचर्या (जानन, काजर, बिज्जो, मेधा मिथी दूध आदि)क भार हमके ऊपर छलैक । ओ पुहोराओ जकाँ उड़ि-उड़िक' काज करैत छलीह ।

हमर साहु (पि खवाइ बाली) बड्क अचेली छलीह । बहुतसमसँ अछारहु डा घाटीमे सधुरक गचर रहबैत छलीह । छीरक पारी पर भरि बट्टा छलैही उल्लोकि देस छलीह । रंग-धिराक गायी सिनुमिया मधुबहु कृष्ण-मोदक अमार लागि बाइ छल ।

भोजन-काल गीत होइत छल—

“बाबितपुरसँ मुग्गा आएल, नेह लयाओल रे ।

नोमा सेक बसेर, अमृतफल खोजल रे ।”

हमर मधु भ्राइमाइके कहेन छलथि—“की कहिभोन बहिरा ! ई किछु खेपे नहि करैत छथि, कहेन ओ 'दिक' छुँदि दैत छथि । माम खेतहु त' मयना मायसँ उपरास देसीबाहु ।” ई कहेत-कहेत हुनका बाँधियो नीर मरि भर्जन छलैक ।

बाइ-बाइ कहेन छलथि—“बहिरा ! गङ्गा नन्नाक' एहन जमाय पीमनि अछि । गहन नोक छनिन त' फररो दिस आबियो उद'क' नहि मर्जन छथि ।”

बहुत किछु अपने नाम जकाँ जगत छल । तेना हमरा मायक 'बहिरा' सलपिन औरपुरपत्नी बहिरा एवम सामुक बहिरा छलथि रामवती बाइ (ज जोहने छ'हमरि छन'बन) । तेना कामपर यज्ञिक सखी-बहिनसँ अर्जत छलथि, गङ्गा एहोम अर्जत छलीह । केओ (हमरा धायुके) 'काको' कहैत छलथि, जमो 'बाबी' । सभ जगमो सलतक प्रतीक छलीह ।

हमर बिधिकरी व्यवहारक गिदा देत रहैत छलीह — “बाइ-माइत ऐला पर उठिक' ठाढ़ स' काइ, माथ बापि ली' इत्यादि । ताहि दिनक 'बद' तेहन लजकाठर होइत छलहु ज सकासक गिधीके फुडफुडाक' नहि खाइत छलाह । (बखन मुहम नीक नको धुलि जाइत छलैत त' सेए घो'टि आइत छलाह) । हमरो बहुत किछु तहिना रहम पडैत छल ।

तहिनाक खोना-काना बात मन पडैत अछि त' हँसो लागि जाइत अछि । एक-दु टा चूटनका कहि रैत छी ।

ताहि दिन ई व्यवहार छलैक जे बरके बरखभूमि स' जैबाक हेतु गार भाटा तक जाइत छलथि । हमरा अपन सार त' छलाह नहि, ए० जीक सरमेदा (बासुदेवपुरक चतुर हा) लोटा नेने संग गेलाह । किछु दूर मैदानमे गेताक बाद ओ खज्जाह—“ओला ! हमरा रती-ही भ' नेन अछि । जाब जम्हारमे किछु नहि पुगैत अछि । लोटा त' तेन जाओ ।” ई कहेत जहिना हमरा हाथमे जलपात्र दबम लगलाह कि ओ

नीची लक्ष्मि पड़नी। श्री बजलाह—“जाह, जल त' धमि पड़ल। आब बाबाजी (बूझामणि दास)क इनार पर चतन जाओ।”

श्रोतव्य तेना पर बजलाह—“हमरा त हमर डेनल, दोल, डबलनि, किछु नहि मुर्तत अछि। अपनहि मानि भरिलन जाओ। एतय के देखत ?” फिरती बेर कहलनि—“हमरो हाथ धरोभ चल्।” पर ऐसा पर मेहोरा करय लगलह—“ई सभ बात पीसोके नहि कहवैन। सुनतीह त' हमरा कस्तिक त'र क' देतीह।”

तथापि भेद जुनिए गेलैन। बाबाजी पं० जंक पत्रिमरिनीके कहि दलभिन और ता हमरा विप्रकरीके। ओ बनुर जा पर भरसि पडलनि—“ऐ हो चतुर ! तो भेहन असुरि, अमरोजक छह ? नहि गुनैत छोह त' सग किछु गेलहुन ? भरि बट छामो करवैन तेनहुन अछि। गमक जे साक देखैत हतैत से की कहैत हतैन ? छोहर चतुर नाम के रखलकोह।”

तहिवासे ओ पहर दिन अछैत छोटा स' क' हमरा पर सवार अ जाइत छलाह—“ओजा ! चलन जाओ, दिनभरि अ जाओ।”

ओह गमय दहा व्यवहार रहेक जे पशुर्धक साह दिन घरके तेस-उबदन (पोसल हरदि सविशय आदि) नगाक' रवान कराअ-अ जाइत छमैन। एहि कायक हेतु एक विशाल, गुनधुम, प्रोडा हथिनी जकां थप घल करैत ऐलीह। बर दुम्बर आ परिवारिका डू कर ! ओ बरक छाती पर एक लोढ़वा मगाला बोपि तेना चलकैत, दममलिन करैत, मदेन कलाक तेहन सलख परिभय देवय जयसीह जे ओ कैवा सृष्टमार बरके नहुन पड़नीत। कहती छैक जे ‘त्रिपाहमे विभि भारे से ओ बीराजना नीक जकां अनुभव करा देखनि। एखे नहि ! ओ तेना कूट करय लगलीह जेना फोवरक दर सागर-मण्डल मटिक महादेव या स्वरोधय विष्णु प्रीय ! जोहून-जोहून एकदोसस साथ सुनि मनमे दित त बहुत छठम, परन्तु, ओहन भतंग से के मुँह लगवैत ?

अखन हुन अखन विभिनिशित्त से ओहि तिरपुशक नागिन कंसिनेन त' ओ विहंसि कटलीह—“की करवैक बीजा ! स सुरक अभासिन एहिना कहैत छैक। राखोजीके जलकपुरमे मारि भेल रहैत। कवि ई सभ दृश-परिहास एहिठाम सोमामे नहि छैत, त' कि बाबिलपुरमे छैत ?”

बात त' यथार्थे। तब सावुरमे रंग-रमन होइतहि छैक। त' कोबरके ‘कोतुकावार’ कहल जाइत छैक। परन्तु बर बुद्धिक त' दहेज के नेन ! खंजनि दाइ सुनलनिन त ओहि हास्य-रसिकाक मंजन क' बेलबिन—“अच्छे ! आहीक एहन सपरसीध जे हमरा पाएकक उपहास करय ! हिनकासँ बोसि करवैन ! ई सुनबोक बन्या छथि त' नहि बजैन छथि। दोसर रहेत त' बुझा दीज ..... ”

जुजनि बरद तमकिक' गलीह और एक सत्तरि वर्षक वृद्धाके नेने ऐलीह, भिनका बातरा छमैन (बान्क रस नहि)। आब तोक-झोंक वा खटमधुर परिहास कोनो करने नहि रहल। सहिधाने फेर कहियो कोनो बाढक हेतु छजनि दाइके नहि कहतिऐन।

चतुर्थी दिन परंभा मधुराएने चरैत रह्यैक। जखन पीठ खाइत-खाइत नी दमठि गेल और तमसीनक हेतु लुसफूस करय आगम त' एक दिन पित्रिकरी के कहमिएम। ओ भानस घरमे गेलीह और अपर तर कोनो वस्तु मुकीत ऐलीह। एकान्तम खुरबाप एकटा ‘गाय’ (बक) बहार कय हमरा हाममे ध' बेलगि। परन्तु मुँहमे रैत बेरी ओ मुडक गुलगुला जकां लागल। विनोदिनी विधिकरी बिबलिला उगरीह—“केहन छका देमहूँ, बीजा !” पुन एक कटाक्षपूर्ण मुसक्री छोड़ैत थजलीह—“यहैत पस्त पर सोभ नहि करक जाही।”

ओ हमरा संगथैया जकां बुझि एहन-एहन शर्ध-विनोद करैत ऐलीह जे अंतस्तकके मुद्र-मुद्रा दैत छल। (इतकर ओ कैशोय-सुभष सहज निर्भय सख-साह एखन छरि स्मृतिमे अछिउत थछि और मनके माधुर्यसँ भरि रैत अछि।)

अखन धनुर्धक समस्त विद्वि-व्यवहार सम्पन्न भ' गेलैक तखन मिश्रीध कःपम विधिकरी एकान्त शयनागारमे बालिका बधूके छोड़ि बेलबिन। ओ लाजवती जकां जकां शनूचित छलीह अथक प्रथम कला उत्तर भौन शङ्क भेरीत। बात भेद जे हुनकर नाम ‘मुन्द्रा’ छैत, ओ गायक बन्या पाठशासार्थ मास क' चुकल छथि आब पड़बाक हेतु बलीफा भेटल छैन; विद्यालय-निरोधक दीप बाबू (जैता)क हारसँ एक पुरतक पुरस्कार भेटल छैन—कन्या मुवायिनी।

ओहन तिरिह एकान्त-बसीदा बालिकासँ और कथे की होइत। हमहूँ निर्विकारफोक कायम लगलहुँ। ओ अहरोक्त कवन किम्वदो धार्मिक बहुरा गेलीह से बुझबः योग्य नहि छैन।





छल, तथापि पं० जीक समस्तोष सं ईक ठोप करत पड़ैत छल । हमरा विवि-  
वत पूजा करत छल कहि अर्थ छल, केवल कनक नाक हवाय, आँख मुनि  
किछु श्लोक बुझबाय पूजाक स्वांग क' लैत छलहुँ ।

पं० जी हमरा पुत्रवत् मार्जित छलाह । हमरा अधिकत समय पर जोखन,  
असपन भेटत, कानेज जलधामे विमल नक्षि हुँ ताहि पर हुनक पूर्ण ध्यान  
रहैत छलैन । यो भाषा पहन गति अछिह हमरा उठैत छलहुँ— 'ओमा,  
उठू पड़ ।' हम सारिहुँ पड़ैत छी । तहि, मे खुसबाक हेतु ओ जीक तरसै  
तकैत रहैत छलाह ।

जखन हम हीरक घासी उमरवैत छलहुँ कि पं० जी टोकि दैत छलाह—  
'ओमा, अर्धक तेन अछुद होइत अछि हाथ मटिया जेउ ज'ओ ।' पक्षपात  
वेसी हाथे ओखन पड़ैत छल ।

कालीबाड़ीमे एकसँ एक कर्मपाथे छलाह । जखन-जखन बाह्य भूमि  
माइ छलहुँ तखन-तखन हुनकर आँखि स्नान परैत छलहुँ । काँहो माँस  
कोनो ने कोनो धार्मिक इशम लगामे रहैत छल । बापाइ भास दैलवे लाइयक  
काहेक त अँखिसे इतरगत छोजि क' स' अवैत छलाह और जुनज पक्षमे  
रविदिन मन्त्र पढ़ि प' पहुँच म अछल छलाह । धारणी भूमिमाये रक्षाधाम  
और प्राङ्ग भुवरा क' अन्तक एवं मनामाय जाइ छल । आध्वनमे विनु-  
पक्ष आ बैदीपक्षक धूम-धाम रहैत छल । पाठत साकनि साँवरक जगम हन-  
पर पौती-जोड़ि बिसि हुन । अन्ततरी समुद्र पाठ करैत छलाह— 'अम-  
स्तार्य, नमस्तार्य नमस्तार्य नमो नमः ।'

पावणि तिहुआमे हमरा डेउईसँ पावकुछला सत्ताधिक हाथक बनाओल  
नामा प्रदाक विद्यामे पदमात्र (अक्षर-वदका विस्वाकार नैसमक लहू,  
बटन, मटरी, जाहि) बहैतक पड़ैत अर्धत रहै छल । कृष्णाधारी आँखिमे  
फलाहारी मधुर, मखानक ऊँर, विहुआक हलुला, आँमाक' कलाकद,  
बेलाक पायस, भाँडी । ( ताहि समय भाँडी छी अ ने भेर छलैत अरि-भरि  
बट्टा भरतक जाइत छल ।)

कालीबाड़ीमे अन्त विविध विविध छलैक । उठैत छलैत लाल  
दशिममे खुमता मीन । पूव विल बोझि का जीनीक गाछी । (ताहि समय  
लास वेदाना जीनी बुझने पकड़ा छलैक ।) पश्चिम दिश बडका हमार  
और दूर धरि पक्षाल गच्छरी (मकोय)क संग पूव रसमय परिवेष छलैक ।

कालीबाड़ीमे प्राणनामे एक विहाल कठहरक बाछ छलैक, ताहिमे जहि  
सँ कुमारी धरि फल लक्षम रहैत छलैत । लोक दू तीन मास धरि सजवा  
कोआ जोठी देल जाति तरकारी साइत रहै छल । पं० जीक नामसँ अरुना  
जलमयःगक बट्टा-बट्टा मान्यहुँ भूमिमा आभ अवैत छलैन त' काठरीमे  
पक्षाल हाँस जाइ छलैन । आँहि समय दू अने भेर दहू चुड़ा छलैक । पश्चिम  
विद्याधी लोकिनि तीन पाठमे अरि हाँस अलखइ क' लैत छलाह ।

गीतनजीमे नामक विरहीत गुन छलैन । सविजन नाकपर पिछ अकल  
रहैत छलैन । दुर्वासा आँखि जनी नुरंग अग्निबच बापुबच भ' जाइ छलहुँ ।  
एक दिन हमर एर शिर सहनठो (अगदीश) हमरासँ भेट करत आयल  
रह्य । हम ओकरा सन जगपान करौलैक । ई वक्षितहि हमरा लसि देल-  
कैनि । पं० जी कोनो कार्यसँ नाम गेह रहल । हुनक पर समटा बार छी प  
नेल रहलैन । अन्ततरी तुरंग एक चिट्ठी लिखि आदम क' दोड़ा दोड़ी  
लोमा गठा देलभिन ।

'पुष्पाइ मामाजीक अरुणकमलमे कोटिलाः दैनिक प्रणाम । मामा  
मूर्ति मे एतव अज्ञाजी भटि गेलाह । ई एकटा गैमम-माला छोड़ाक संग  
एकटे शीतल-जिह्वी लुपति ब'छ । अम पत्र परैत शरी आँखि गेल जाय,  
हिमका यक्षोचित पतिमा कराओल जाइत । इति गीतनस्य ।'

पं० जी नामसँ अमलाहु और हमरा पंचवज्र क' यक्षोपवीत बडबाम  
एक गह्वर जाठ गावरी मन्त्र अपकल मुह कमलनि । परभु गीतनजीके  
एतवसँ सन्ताप नहुँ भेलैन । ओ टिगसि क' किछु दिनक हेतु नाम चल  
गेलाह ।

किछु दिनक उपरान्त लामाने धार्मिक बंधक लिखल एक नाट्यटा  
लिखल भाषा जाइत अनुर मर्म वेणी उपरामे भरल छल ।

'अप्र ... एतव लोक बजैत अछि ने अहाँ मरणा-वस्थन महि  
करैत छी वातावरण देखाए देल बस्तु आ अर्थन छी । और महि जानि की की  
करैत छी ... । ई सभ कि नीक बात छैक ? ...'

ई प्रश्नक प्रथम पत्र छल । हम भाष पर हाथ राखि लेलहुँ—'है प्रथम  
एहन पश्चिम-पुत्रीक संत निबोह दैत ? ई त' भरि जगम पठै पड़ैत रहलीह ।'

कालीबाड़ीमे मन्त्रोक्तक एवटा ज्योतिषी रहैत छलाह । ओ कलित  
ज्योतिषीक व्यवसाय करैत छलाह । लामकुछली, हस्तरेखा आदि देखि फल





ई सभ देखि रू० को आ हुनक १०८ मित्र सभ समेट प्रशासकिय सम-  
साह—'ओझाजी, एतिका केटा एतिका नमय तखन कोरा ने पंडितक  
संस्कार जगरीन ?'

रचना उसीमें समाप्त कर, सब प्रयोगों के विचारों के साथसाथ साहित्य  
माफ़ी करीत बनाह, जाहिमें हलकर अनेको नवयुवक मिल (रासारमय टंकन,  
जगदाश नारायण मेहोत्रा प्रभृति) उत्कृष्टपूवक साहित्यमि होइ सकतह ।  
अहिमें समस्तान्न भूति सेहो होइ सकत । एक बेर समस्था रहैक अदरा' हम  
अकर भूति प्रायः यहि सगहे' कैमे रहिएक—

एतद्वर वृत्त है अतएव मे फाटि गई टिंग ली चढरा,  
ऐसेहि कास मे सांग सबाहुन सायुध आनि धिरी चढरा  
ऐसे मृतचञ्चल हैं हम जो जब रौन सुई तो यही भढरा  
जहारा न बनी वसुमार की मोचहि बौध्द आनि गई भढरा ।'

एहन्-एहन् तास्य शिनीहर्षं हस्तक मनोरंजनं ह्रादयति कर्मणः । परन्तु यः जीव  
चिन्तां वदति आह भूयते । पुनः अपन उपदेशक स्वरूप कलात्मक जाति जाद  
छात्रात् — 'मोक्षा, स्वात्काममव्ययं तपः ।'

कालेजमे एकरा एक विशिष्ट प्रोफेसर छलहु। प्रो० जीरेण्डर पदार्थ (इंग्लिश), प्रो० जीवम कृष्ण सरकार (दिलोसोफी), प्रो० रामप्रसाद सोमना (हिन्दी), प्रो० रामनाथ झा (संस्कृत), जे सब अपना-अपना विषय मे नग्यान छलहु।

१५। टेम्क बन्द नकाय कइ भ' सही त तम एक त्रिपद लेखी।  
 सतत पाठ्य पू. लके जायमीर मे सतक के होयके। कोह नकाय जय।  
 पर कपल गमाइ दे 'दखय वस्तु' प्रभु नैग कइह' सीह नकाय लेखी। तप  
 सगलहुं। कश्मल से ज' येन तखन युगवन्तिही प' कइ। हिल' प  
 क्षानि मेनहुं। आतिमे तास छै वग वगे धरि कइहो नन्द वध पु. तीलेवुन  
 लगा क' (जीर सामने बड़ी राज) दोसि कइ और समसार एक पुन्ये  
 कोनी छी टा प्रधनक उतर तोन बंशमे स्थित। तकरा ब' द नवय परि-  
 क्षन कनि अगत कापी देखी और न' कइ ववर दी। एही त'ह' प्रत्यक  
 पेरा। दोषाया प्रक्रिया वर्तनहि शुभाभन क' लेखहुं।

गंगी मण्डली सप्त हस्तैः ख्याताः जे अष्टराजी क्षेत्र क' रहल छथि । यद्यपि-  
गंगीजी कनकुहरी कायस्थ जे १० जीक बराबर काली रस मंत्रक प्रयोग क' रहल  
छथिन । १० जी, भगवती के नन्दरावस लगसाह । 'निरात्मन्वो तन्मोक्षर

जननि कं पतिं नरयणम् । ह्यप्रीतिं देयं नरः शत्रुं न प्रीतिं ह्यप्रीतिं नरः-  
यतीति शरणं नृपः क्व होय कं दीप्तं सपत्नम् ।

जगत्त पतीता भवन्ति तेनहं श्रीर प्रमथन्न वेष्टत तं वेष्टयहं ते सम  
दा ह्य पर्व्वहिकां वृत्तय श्री । श्री गुरु विपन्न श्री हुमा निजि वेष्टु ।  
प्रत्येन दिन गहिना भेन

इसके पश्चात् कद वृक्षों के तहत नगर नगर बिहारी-उड़ीसा परियोजना के अंतर्गत  
छत। यह दिन नूतन नगर के निर्माण परीक्षा होना शुरू है। सचने  
आश्चर्यजनक के रूप में की जा रही है। इससे पहले हमने आश्चर्यजनक  
सेल है।

सं० जी गवगद् होइय जगन्नाह— "ब्रह्म ब्रह्मणी ! जे हमरा एइय पक्ष देखीयसि । ई सभटा हुनके सुधा धिकैस ।

क. नील-हीन औ नू रवे लूज मन्नाइ दिगोईई बीनल औः पूमेंतः सकन  
इहल ।

+ + + +

१९०३ का मुद्रण डिहागढ में होत । मोन-क कथा भाजितपुरमे करिनी  
बलि क' पत्र से निह । परम सु महकाली उरैद देरी बुल का पर मास्त्रीय  
प्रतिपक्ष नहि मेरी म तीन दिन धर्म गुरु प्रदेन ह बदिपा मुक्त नहि जनीन  
सुतीक

चारु कवि । न प्रद भयं । निमुर काजरीके, गजव गरीक ।  
 न मासी - न प्रद भयं । छविता न हक जनाति । न नरु गोपन  
 गेन छन न । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 निमुर काजरीके, गजव गरीक । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 न मासी - न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।  
 न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं । न प्रद भयं ।

मन्वन्तु नोन दिन छीन गति मन्तनी बका रहि जाहिम राति निशि-  
 दुवक कन्धर धरमे जानल गेलहु आब जा मुकु नर कनी नहे रिक्कित  
 कल छवहि । अछुहु ब लकाय मन्तनी । मन्तनी बनि गेल छवहि ।

अनियत श्रमक हेतु मुद्रक मुद्रक आदि माह धर्मन गहत छत्रधर्म : भाग  
कतिपय मुद्रक कतेक उपस्थित देखा देन छत्रधर्म : आदि माह गण प्रणना  
करेन छत्रधर्म—राष्ट्र । धर्म सुन्दर । माहान् देवधर्म : देवता, ब्रह्मदेव



२० श्री गुरुभ्यो नमः । अथ विष्णु-वैष्णवी-पञ्चक-पूजा-विधिः ।  
आर्यायामि सद्यः कलितं भेषम् । हृदयं नाम धामनि मे निजि मेलम् ।



[illegible][illegible][illegible]

अमेरिकी प्रसिद्ध डॉक्टर (हिल साहब) एक बर अपने द्यूटोरियल  
रजिस्ट्रार एक टाँका रखि के एक एहन दुःखदायक शोध कया जिहू जहाँमे  
होरो (पयानादक) केवल एक बर अन्तमे प्रस्ट होयि , " बाही  
कीरियसमे (५० मिनटक भीतर) हमके ली कया लिखिक' दयाक छय । हमर  
मख लिखिन कय (The Good Samaritan) वेसि हुनका तत्कालीन  
समयमे जे ओ १० मे ९ नम्बर हमरा देखति । सहकारी नमके आपसमे  
भेरीन जे (हिल साहब ५० प्रतिशतसे बेसी ककरो नहि दन छलियन) के हमरा  
नखे दयाक एक 'ना न' दयति ।

कालजय एक प्रहसन भेल तबिक जी पा श्रीवास्तवक माकसे दम ।  
 धाँहिने हम 'मोलाना'क पार्थ कैन ही । हमर शेर शेरधनी मा काम फाफ  
 पल उहँ अन्काबल कतै रोके घोखा मऽ मर्तन के कोना भगलीए मोलवी  
 छभ । आहि नफन लाभलक फलस्यकन कतै तो जहँ वला सेहो हसर प्रभ  
 धनि गंवाह । और बज्जे सलुनक मुदाशराम हमरा न जय लकाह ।'

[illegible][illegible][illegible]

मिटी सभ्यता की ओर अनुगमन करने पर सब का सब पक्षों में सुधार चलने लगे । ईक मंगल सब प्रकार का वायुमय स्थिति परिवर्धक लक्ष्मी पाई जाइत छलै । वायुमय से तो सब प्रकार हमरा मंगल जल-प्रपात कोटिगो बने के प्रयत्न पड़ेत छल । आदि जीवस कसो जागस खोजियो महि के सकैत छल । हमरा सूतिका प्रयत्नाक अभ्यास छल तँ सु बंदा धरि कुहीं देवुत पर वैसिक प्रयत्ना-सिध्दामे लक्षिकर्य बूझ पड़ैत छल । हम सुलक्ष्मी मानसी प्रयत्नक छलहुँ । किताब काफी खिरल रहैत छल । परन्तु काम भय बस्तु प्यासवान सजाक राख्य पड़ैत छल ।

मुनिटेंटेंट या धार्मिक (धार्मिक सहाय) राउट देखने अर्थात् छलाह न' समझे पहिले हमरे काठरी (रूम न-१) में आवि जाइत छलाह । तें विशेष करके मनकी रह्य पर्वत छन । आगेर आगेर वहाँ टा टाटप (चुट) मुँहमे लगोने तेना धुनि जाइत छलाह जेना कोनो जेम्क जफसर मुआयना क' रह्य हो । रातिमे वत बजे होस्टलक मेड बन्द भ' जाइत छलैक, तकरा बाद केओ भीतर अहर नहि जा सकैत छल । सुनतः एत प्रिकवट रात्र छलाह हाथी मैत छलियन ।

मिन्टोमे प्राग्ना धार्मिक चुनल-चुनल मिच्छापी रहैत छलाह । कई दयमे किछु त हमर पुरान सहयोगी छलाह जेना जगदीश, विश्वम्भर भीमरी आदि) और अनेक नवी सखी बनि गेलालह - जगन्नाथमण महिजन, अहेन्द्र प्रसाद वर्मा रमचन्द्र छत्रगति, जगदीश भिन्नु कश्यप आली किकर प्रकाश, देवी दास चटर्जी, जगन्नाथी दास प्रभृति । सीमिबर मैत (फोर्ब्स इन्टर) मे सर्वधी सतीश चन्द्र मिश्र, राधाशिव प्रसाद, प्रभृति । छात्रावासमे मिश्र जी आदर्श क' क' चुनल जाइत छलाह और अरुण सक्का (क) मुनिटेंटेंट देखने लाइत छलाह ।

मिंटोक एक आकर्षक भूति अछि मेरक सहभोजन । एक कतारमे पाँच-छौं ठा मेत छलैक । हम नाहि मेसमे खाइत छलहुँ तकर नाम छल 'गया मेत', ओकर बाबाजी छलहुँ बाबूलाल दा । भनगियाकें 'आभाजी' कहल जाइ छलैक मे पहिले पहिले ओहो ठाम चुनलहुँ किछु ज्ञानो लव भइत चुनबामे आवत । जेना तमना कें 'वसन्ता', श्रीकें 'रत्ना', अदीरकें 'वही' मामकें 'सुन्दर' बेमनके' रामराजन 'छोखा' कहल छलैक । हम सब गोट बीसक छल ओहि मेमे भोजन करैत छलहुँ । जो बजैक बाद आसन लागि जइत छलैक । हुन सब पीसी जोर नैसैत छलहुँ । अन्तमे मुन आग'री मारी, काटी, निमास राखल रहैत छल । तखन एक दिग्दर्शक परसल भुक्त

१. जीवन यात्राक काले कस भिन्न-भिन्न पथक धरिषा भेलाह । गलीस बन्द दिनु दिन पोखर मेसमे खाइत क मुन्य स्वाध्यायीस भेलाह । बीसवीं जी गमाक कसकट भेलाह । अर्थात् ही हाइकोटेक बज भेलाह । मन्त्रक जी मधेपुर आ रतनचन्द्र जो मधेपुरामे आचार्य भेलाह । चटर्जी पटना आइस कालेमे और सरकार मुँगेर कोनजमे प्राध्यापक भेलाह । भिन्नु कश्यपजी मालवा प्रोफेसर संस्थानक निवेशक भेलाह । जगन्नाथी दास बीमा सम्पत्तिक एजेन्ट भेलाह । और सगी सब क कसय गेलाह से पता नहि ।

होइत छल । मेरी आउरक बात सोना ग्राहिक दासि, रतनार त्रिपाठी, आलूक मेरी भुजरी, कोखा, चटर्जी, पापट रातिमे गरम फुलका । छल अन्तर मेम कसक पहिलहि हमरा सभक कोठरीमे न' अडैत छल । और एहन भोजनक कार्य एक धारीक हु जाका भात । माछ-मीस बहोक फराक कार्य छलैक । हु पाइए प्लेट ।

चारि बजे मन्त्रा भेटैत छल । छोटा कवीर, आरि टा मधोना, अन्तरा ए० प्लेट हुनुम नीम पाइए प्लेट ।

मासमे एक डू बेर (कोनो पर्वक दिन) मेसमे दिग्दर्शक 'फीड' (भोज) होइत छल । सोनाक, ए० रतन बूटक दासि, हीन कवीर, किन कगी, मीट कगी, चारि, फटनेट, किनमिना आलू गोखा जक चटर्जी, पापटका मेवद आ निट्टु हीटमर कसक रमचन्द्र । ओहि समय पिंटुक रसगुल्ला नामी छलैक । और त संटेड (न रानीन चुनचुन महमहु करैत) 'पिपीक' आउरक रसगुल्ला, दू-दू पाए बैत छलैक । अहन राजनी भासक एन्टरा चार्ज कवल आठ आना माल । ताहि दिन 'मिन्टो' आ पिंटो' रटनाक भाग छलैक ।

आहि समय दू टाका मासमे अहन भोजन भेटैत छल, सेहल आइ दस टाका रोडमे भेटव सभन नहि । हमरा मुनिटेंटेंटोमे पचीस टाका मासमे हामरासभ भेटैत छल तें सप्तका खर्च नीक जका बनि जाइत छल ।

रवि दिन भी हे रहैत छल । इच्छानुसार चुनय जाइत छलहुँ । कहियो जोन दिस जाइत छलहुँ तें एक भूमे गोजपर पर चढ़ि जाइत छलहुँ । कपरस गच्छे माछ देखाइ पडैत छल । तहिवा पटवामे मकान खे देगी जेने छलैक । एन बेर गोजभरक भीतर जाक देखवाक मौका भेटि गेल । भागल जेना कोनो जगहार गुफाक भेटमे पति गेल होइ । एक बेर जोरस दासि छलहुँ - ओम् । आरकास तें अतिव्यक्ति होमय लागल - 'ओम्, ओम्' ।

कोनो कोनो रविके नामक कविराज ए० विश्वनाथ दासक ओतम (पद्मकुशी) जाइ छलहुँ । हुनका खास साधन राउण्ड समझल मे बगैर कुटैत रही छलैत । 'कवी' नाम गूढ़ शास्त्रीय विधिमे प्रवेश निमांश करैत छलियन । ताना प्रकारक आसक अरिष्टक होतल आलमारीमे भरल रहैत छलैत । सूत्र स्वादिष्ट अन्न रसम क पापक पचवैत छलहुँ । तेहन महाराज गन्धा होइ छलैत । ओ तानुद्दिन चहक मयाधन छलहुँ । रटनामे पीथ जीन बाथ हुनके नाम छलैत ।







प्रथमें छपलैल)। सन्ध्या काल साप्ताहिक शिक्षा और मासिक कन्वाय  
आदिम लेख देल छलैन, आहिम यदा-कदा कित जाय जाइल छलैन। परन्तु  
कोनो निश्चित छात्र नहि छलैन। सिध पैच उताव मेझी भ' गेल छलैन।  
सोन दाह (हमर कनिष्ठा बहिन) क सम्पादना क प्रयास छलैन। अतः चिन्तित  
छलाह। परन्तु अधिक स्थिति एहन पहिछा अ गिजिन्य भ' क एन० ए०  
कस्नाह हेतु परता आ सरिनहुँ अतएव एह वर्ष पत्राह स्थगित कर  
परल। एहि बीच हम पुस्तक भंडार (सहस्रियासराय)मे रहि पुस्तक लिख-  
लहुँ और साहित्य ग्रन्थोपार्जन हम एम० ए० क' सकलहुँ।

— ४ —

## पुस्तक भंडार

(सहस्रियासराय पटना)

१९२०मे बी० ए० करने वाला बाद हम पुस्तक भंडार (सहस्रिया-  
सराय) में रहलें। ओही समय ओ भंडारक प्रमुख साहित्यिक केन्द्र छलैन।  
आकर अध्ययन आचार्य रामजीवन शरण (जो पढ़ित शिक्षक रहि चुकल  
छलाह) सत्य-साहेब नामक प्रख्यात छलाह। ओ स्वयं लेखक छलाह और  
लेखकक आदर करैत छलाह। ओ संपादक सहस्रियासराय में  
प्रकाशित भेल छलाह और सहीमान नाममात्राधी लेखकके पुस्तक लिख-  
बाक हेतु प्रोत्साहित करैत छलाह।

१९१९मे गखन बाबूजी दरभंगामे मिथिला मिहिरक सम्पादक रहि  
नमन मास्टर हातेकें रहिते पहिल देखत रहलैन। ओ बाबू जोसँ पुरय  
परीक्षाक हिन्दी अनुवाद लेखक छलाह। ओ बाबूजीके अपन बहका  
भाव जेकाँ बुरा आकर करैत छलैन। हमरा हिन्दी सम्पादनक कोनो-  
कार्य प्रथम पुरय लेखक और हमर उतर भूमि बहुत प्रशंस होइत छलहुँ।

एक बेर १९२०मे (आइ० ए० परीक्षाक बाद) भंडार गेल रही। ओहि  
समय बनीपुजीजी (पुस्तक सम्पादक) क संयुक्त दृष्टि आ उपमान होइत  
छलैन। १९२० (अन) मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक आय-  
वेशन मुजफ्फरपुरमे भेल रहैत। ओहिम मास्टर सन्ध्या सहेरियासरायमें  
एक साहित्यिक वाक्यामे असी साज मे भेल रहलै। ओहिमे बाबूजी,  
सोन सम्पादन सहाय मिश्र, बाबू भोला काल दास, बिबल जी प्रभृति बोट  
प्रोमेक वर्तमान सम्मानित रहलै। जीवन कति सम्मेलनक सकसपर हमरा  
आशु कियतपर प्रत्यक्ष भेटल रहलै। (ऊपर बताइत आगाँ काज बिनेव  
प्रमाण देलै।)

अतएव १९२१ मे हम पुस्तक भंडार गेलहुँ त' मास्टर साहेब हमरा  
बेजिबट प्रमाण भेलाह। मेनेर (नधुनी बाबू) के कहलैन— 'पहले  
सड़क को अवगत करायल।' मैनेजर साहेब पूजा कटमणि और बचनमे

कोनू म'ह' अनुवादक हाकासंगे हार्मिड पुरस्तिक वातप'र व' मेट गरभा-गरन कचोडी-तिलेवी ओर टटका रही आनि गेल । मतये कहलहुं— 'अप-मारस'न' नृपस भवतु ।'

ओहि समय मास्टर साहेब'र ई धुन गया। धनैत जे संस्कृतके कोना सुनम बनाओल जाय । तहिवा विद्यार्थी मनके प्र-भाव लेना शब्द रूप, छापु कयक पहाड़ा पढाओल जाइ छनैत जे संस्कृत पढ़ाई अर्का सधैत छनैत । श्री हमरा बानी नेहन नव प्रण नीम संस्कृत रचन पर पुरस्ति । निम्न ह-मनि आहिसे विद्यार्थी कमे विनये संस्कृत बाजब सीखि जायि । हम एक एहन अभिनय रूपमे 'नीम दिगमे संस्कृत' 'प्रद'प' ह'मनि जे तिस्रि विद्यार्थी एके मासमे संस्कृतमे काजीबाज और पद्याचार करय जाणि जायि । ओ पुस्तक तैक लोकप्रिय भेलक जे तीमे दिनमे प्रथम संस्कृत छाप गनैत । एहन जाणातीन मनलनार्थी ओसाहित भ' मास्टर साहेब हमरा एक थोडरी पुस्तक लिखब कहथहि संस्कृत अनुवाद पर । तहिवा एहमे एहन अनुवाद मिश्र'ओल जाइत छनैत— यथा—'देवदत्तः ग्राम मण्डलि' (देवदत्त ग्राम जाइ छयि), परंतु यदि एहन वाक्य रूप लेनि जेना— 'देवदत्त जियकी घरद छयि त' ओ तिलेवी 'वसुधैको क' नहर तिस्रि'को मय प्रहति जहने हम एहन-एहन जहने मय'न' जय' जिय' कुटुंबका अरु कयपहुन आदि कय यथा विद्युत जायि मयि—'कि क' मय'न' य' य'म' भरि रेलिग' । कालसक्य ओही पुस्तक गरभा गरम जियेवी जका हाथो-हाथ पय रे गेल ।

तदुपरांत मास्टर साहेब हम'गमे सनकानक पुस्तक सरस संस्कृतमे लिख-कोलनि । ( जेना— 'राम कथा', 'कृष्ण कथा' आदि ) जे खूब लोकप्रिय भेल और दूर-दूर धरि प्रसिद्ध भ' गेल । हम' नीम दिगमे जय'नी सेहो नाल पड़ल ) ।

ओहि बीच (माघ, बशील, १९२९सं ) दूस्तक अडारस मास्टर गेल एक मैथिलीक मासिक पत्रिका बहार कैलनि—'मिथिला' । ओकर संपादक भेवाह पं० कृष्णदत्त नृपत और व' व' भोच' गेल य'ग । अ शिक्षा मन्त्रालयक वयतय बहरापन—

'कुमर पुरातन नीति भिरत छयि, दाय नदीन समानी  
अलि आशा तथापि जे रखना हुनू हुनूके राखी ॥'

हमरा हुनू प'ट' धनैत धन'तु । हास्य व्यंग्यक रचनासँ पत्रिक के मासिक बनैकाक कार हमरा बर बेल् गेल । हम एक बहुरंगर सख देखिग— 'स्वराज्य क लेख', जे हम' मैथिलीक प्रथम स्वयं रचन' छ' । मिथिलाक छात्र-पत्रक विद्य' भाग्य मासिक दूध' प्रथम मिथिलाक छात्र-पत्रक उदभवित गी रहै सक' । अरु— (अप'मोनि वन'रि, आकर्षक रूप प्रदान कैनि । हुनको विद्यु' ज'य'न' स'म'नी'य'नेहा व'य' क' देखिग । जेना—'म' मासमे पत्रिक डालि—'विनु पयाम ट'रा जेन हम' य' न' ज'य'न' देख । एहि उपन-विकस'न' बड़ि गेलैक । जखन आषाढ़ मासमे गीराठ मयमे आ'नि' गेल त' हाथो हाथ पसरि गेल ।

ओही मासक विद्यार भनैत 'मिथिला' और य'नी आकर्षक और लोक'प'य' मैथिली रूप' टा आ'य' ज'य'न' उदभाव लेल जाय । ओही आर हमरे उ' र' द' गेल । ओहीमे कय'य'न' क ज'य'न' भेलैक । (अकर नवी 'मैथिली मैथ'क प्रकरण भेल ) ।

अहि समयमे एहन अ'य'ने तिस्रि-मैथिलीक सभा-प्रमुखी जनेक । मास्टर—'ह'के' मैथिली प्रकाशन वि' नव अ'य'न' छरीम । हुनक विद्या-पति प्रेससँ विद्यापति पदा'य'न' ब'ह'य'न' छलैत और विद्यापति पंचांग' बहराइन छलैत । विद्य'य'न' य'य'न' य'य'न' ।

मास्टर—'मैथिली-काव्य' छ'न' तेहन आ'य'न' छल जही लेखक, अभ्यास, ह'दि, कथाकार एक सम्मिलित रचिब'र ज'य'न' रहैत छल'ह । तहिपाक (१९-२०-४०क बीचमे) अत'नी स्मृति-लिख' अ'य'न'मे मा'यि उठैत अछि ।

एक दिन मा'य'सँ शिवपूजन सहाय य'य'न' लकीने, पान' फलोठने, म'य-म'य' मु'य'कारादत 'बाज'के' हेतु मेट'न' लक'न' क' रहल छयि । दोसर दिन अच्युत'न'द' र'त' जो वर'य'न' भ'न' क'य'क' व'नी'य'क' म'य'य'न'—य'व'री लकीने आ' रहल छयि । एक दिन १० फरिलेखर मिश्र चीता दाद' लिखि रहल छ'य' दो' र'त' म'य'न' न'य'य'न' ज'य'न' 'म'य'न' मिथ' । एक दिन उपेक्ष महारथी अपन एक'य'न' क'य'मे त'य'य'न' भ' सुजाताक विद्य' वेना रहल छयि । मास्टर साहेब स्वयं एक लीख'न'पाटी पर म'य'न'द'पर ओक'य'न' बाल ग्राह्यक निम'य'न'मे संलग्न छयि ।

मास्टर साहेब हमरा ब'नी'न' घरक म'य'सँ ज'य'न' मार्ग'त' छल'ह । अपना ब'य'न' क' भो'य'न' ज'य'न' छल'ह । म'य'न'मे लुट' ल'य'न'कारी भो'य'न' ब'नी'त









राजक गण्ड होना छोड़ के छोड़ि '१' उठवाए मन गहि होइ छल । कतेको  
 बेर भोजन रहि जाइत छल । काकी (नयादावासी) अपन छोटी बालक लक्ष्म-  
 नस (निधानाह या नीयानस) के संग संगी क' भोजन करैत छलीह ।  
 काकी- हेतु को बाला मा-० पध्याहार बरवैत छलचिन, सुनि पिउव  
 वी आ प्रसाद लक्ष्मणी भनवैत छलचिन । चौदहस आदि पात्रमे भो  
 क्षियमपूर्वक बाला मा-० स्थापित भजन मनवैत छल । जानबै  
 अवेतन खोजैत छल । काकी आदि अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 छल ताहिमे सखीही, हनुमन्तगर्भ जो-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 गणपनाथ स्थापित (यका लक्ष्मीकामा ब-०, मा-०, मा-०, मा-० अहिमे  
 बसैत छल । कविगान पं० विद्वत्नाथ सा, वैद्य जी (पं० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 और पं० विष्णुलाल सास्त्री आदिक हाथ-पणिहात होमय समेत छल ।  
 रत्नमुक्ताक बर्षाक संग-संग हास्य विमोदक बर्षा लेही होमय समेत छल ।

बाबू काकाजी अग्रिम रहताह हम मिश्रित रूप में से बाबू रहलहुं  
 और हुनक स्नेह-साधन समेत रहलहुं । (१९४० जनवरीमे ओ इच्छा प' भ'  
 गेह-ह और ली अनुमति आभार-विनायक केरु लक्ष्म भ' गेल ।)

ओहि समय (१९३० मे) पटना कालेजक दसम विभागमे पाँच टा प्राध्या-  
 पक छलहुं । बाबू साहब सिंह (अध्यक्ष) निम्नलिखित पाँच पाँच पाँच पाँच पाँच  
 यमुना प्रसाद और पाँच धीरेन्द्र मोहन दत्त । बाबू साहब साहब यमुना और  
 समस्त श्री विभाग लीमराज प्रसाद बाला छल ।

१९३१-३२ सालक पहिने उच्च आदर्श होत छलैत तकर एक दुष्टांत  
 देत छी । जवना यमुना बाबू विद्वत्नाथ साहब अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 न' बाबू बाबू विद्वत्नाथ साहब, अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 हुनकर अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 एहि कुर्वी पर नहि बस सकैत छी, और मँह भलैक । बाबू बाबू पावत रह-  
 लहुं दान विभागक अध्यक्ष बनल रहलहुं ।

हम पटना कालेजमे विज्ञानोन्निकूल गोवाहटीक सिकेटी छलहुं । ताहि  
 काममे एक बेर कलकत्ता टिप ल' गेल रही । कलकत्ताक ओ प्रथम यात्रा एखन  
 धर मनमे अंकित छल । मीठा पानी चमकै । सुदृढ़ अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 दामगोटी हरिनाथ गोहार पुन काल कालकाल अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०  
 हटवै ल'उता' क बिद्याल लोकाल (आहिमे सूई भ' ल' क' मोहरकार छि  
 बिरादल सखी । रंघ-भिरंगी दृष्टिनुपी परिधानमे अगिल रमणीक जु'क

देवि वृत्ति पदक देना काले १९३१-३२ सालक पहिने पाँच टा प्राध्या-  
 पक छलहुं । बाबू साहब सिंह (अध्यक्ष) निम्नलिखित पाँच पाँच पाँच पाँच  
 यमुना प्रसाद और पाँच धीरेन्द्र मोहन दत्त । बाबू साहब साहब यमुना और  
 समस्त श्री विभाग लीमराज प्रसाद बाला छल ।

१९३२ मे हम एम० ए०क परीक्षाक बाद मापके' मैथिली छान म  
 गेलहुं । बाबू साहब सिंह (अध्यक्ष) निम्नलिखित पाँच पाँच पाँच पाँच  
 यमुना प्रसाद और पाँच धीरेन्द्र मोहन दत्त । बाबू साहब साहब यमुना और  
 समस्त श्री विभाग लीमराज प्रसाद बाला छल ।

यमुना प्रसाद और पाँच धीरेन्द्र मोहन दत्त । बाबू साहब साहब यमुना और  
 समस्त श्री विभाग लीमराज प्रसाद बाला छल ।

१९३३ मे हम एम० ए०क परीक्षाक बाद मापके' मैथिली छान म  
 गेलहुं । बाबू साहब सिंह (अध्यक्ष) निम्नलिखित पाँच पाँच पाँच पाँच  
 यमुना प्रसाद और पाँच धीरेन्द्र मोहन दत्त । बाबू साहब साहब यमुना और  
 समस्त श्री विभाग लीमराज प्रसाद बाला छल ।

पटना न्यायि अदालतमे हमके' बन्ने रहल । हम अगेको जे छरि बीम-  
 पकाल आदिमे अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-० अ-०

यावत् सार मास्तर साहूक लहेरिमानासमे रहलाह हस बागवति ओतम जाइत रहलहुं । जलम १९४४मे ओ पटना आविक अपन नम-निमित्त भवनमे रहम भएलाह त पुन अपन साहित्य साधनामे लगि गेलाह । सर-लीक अन्तिम मज्जन्तपूर्ण हूनि सभमे— मैथिली रामायण अर्थात् मुलसीकृत रामायणक नैधिसीकरण) । मैथिली रामायण हनयो मैथिली अक्षरक परिचापक सैन । ओ अक्षर अरि सुकरा अपन बाससम्पत्तेहु प्रदान करित रहलहुं ओर हमरौ आत्मे फल सजिन रहसिमेन । १९५१ ईस.मे ओ नाकेतवासी भ' गेलाह ओर ओहि साठायपूर्ण साहित्यिक प.प.राक एक परिवर्ण अथवा सभासत भ' गेल ।

१. पब्लिक लाइब्रेरी और पुस्तक भंडारक बनेको संस्मरण हम अपठ्ठी ग्रंथ (१९४२) 'बर्दी छाया'क शिवपूजन स्मृति बंक (१९६३) और 'स्मृति बंक' (१९६९)मे प्रथम छिदेन ।

१. नहि वि अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 २. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ३. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ४. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ५. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ६. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ७. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ८. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 ९. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।  
 १०. अज्ञा कृतमा च उच्छेदः । विव शङ्क च उच्छेदः ।







प्रेमपूर्णक योगीश्वरि । भवेत्तु नटलनि । रात्रिमे विहारा भवितुं काम बन्धना  
तमके उत्सव देखा लंनधिन । हमरा कहलनि—“काहि हूँ बजे एक  
बड़ा महुँ महुँ प्रवचन केनेन प्रवच ?”

हम कहलनि—“वेन हम काहि केह बजे काहेभसे जाय रात्रि ।  
अही महुँ प्रवचन तेपार रहब ।”

दासर दिन (१५ जनवरी, १९३४के) हम निमत समयपर डेरा भावि  
गेलहुँ । महुँ बोटे पहिगडिसे तैयार रहल । इन्द्र पुछलनि—“जी भैया! फाटन  
तै मात ?” भाउनि कहलनि—“बन्नु भौआ, नीचे सबक परल’ लेब ।”

हम तब सीढ़ीसे नीचा उतरय लगलहुँ । तब ओ डोराय सागि गेलैक ।  
जेना केओ जे’र जोरसँ दुनुआ भुला रहल होइक । छतक फकी सभ एक एक  
बोत छुटिक’ फेर जुटि जाइक । भाव जे गरी बाध पर खसल । पत्नी  
बिचिया उठनीह—भूकम्प !

हम तब जरी जलदा सटनीत नीचा उतरि अहिना लौकिक बाहर अवैत  
छी कि ओ सकल कादल गल्ल जकी अइल । क’ खनि पड़लैक ।

(महि एकी सभ बिलम्ब होइत छ’ ओर सहित कबू-शायम-भ’ जाएत ।  
ओर ई जीवन कया महि सिखल जा गइत ।)

भावत बाहकाल प्राराम-प्राराम होय सबलैक । साधनेबाना बड़का  
मकान मेहो भूमिद’ समलैक—हमरा समक आसँ बलवान पहाड बाधि  
लैक । साबल ईट सुली कइल, जइना हमके नर्तन करैत हम तब कीनहुँ  
सहकषक भावि गेलहुँ । किकत’अपिभूत भेल डाढ़ ।

तबत हमर हूँ ठा प्रिय बिबाही रासिनसँ दोइक देलाह । कालीकान्त  
ओर रामकृष्ण । तबतबात काबेल जा होस्टलक छात्र-दल पहुँचि गेलाह ।  
गलीयक प्रयागसे अइला तरसँ सामान सभ बाहक करय लागि गेलहुँ ।  
भायत कविताजी सूचना पवैत देल’ पहुँचि गेलहुँ ओर हमरा समके जइना  
ओनय कदमक’ डेर परल’ गेलाह । ओहि रातिक भयंकरता नहि बिगरेत  
अछि । यदि गति क’ जइना जाइत—भूकम्प । ओर ओहि महल्ला  
सीढ़ि क’ महुँ पर भावि जाइ । बँधलौक एत बिचार्यौ

(१) बाधमे कानीय बू आर्पावत’ इच्छितन नेकनक भैनेजर भेला । ओर  
रासकृष्ण भावू लहेगियासराय सरस्वती एकेकमोक प्राचार्य ।

एहटा कृति सगौलनि । छ’क मदीमे एहटा घंटी मटका देनधिष । भि जसम  
भूकम्प हेत’ घंटी बाजि उठल’ ओर सुनि रना लोक पदा जाएत ।

करीब दू मजे रात्रिमे घंटी टनटना उठल’ । सुनी दे’ी सभ लोक सभ-  
पत’ उठल । भाव माध, सब पुर्वीयक सहार, टिपटिप खुब पवैत लोक  
जाइ घर-घर कपैत लडकपर डाढ़ रहल । (ओर उपमे की छलैक) पाछाँ  
पता लागल जे एहटा भूकम्प घटी पर छ’णि देल छलैक तँ घटी बाजि  
उठल छलैक ।

तबत तरहक समान र उदय लगलैक । भूकम्प ठाग पृथ्वी क टि गेलैक  
अछि । सहक तरसँ पासिक होत छुटि पड़लैक अछि । रेल सार बाक सभ  
बदल गेलैक अछि । भूकम्प कीनैक महुँ सभ बाध क’ देल गेलैक । भाव  
कहिना खुलैक तकर ठेकान नहि । दोसर दिव रात्रिमे लोभाक  
छोटका पं० ओ हठावल पियासल हमरा समक सीढ़ि लगवैत भावि  
पहुँचलाह । अहिना भावसे देर उपरह रहल । (ताव भा बेलपाडीयें)  
हमरा समके नेन गेल हूँ । हमर सम भाउन व जिनपुर गेलहुँ । भाउक  
घर टूटिक’ छ’ि पड़ल छलैक । भाव बाबूजी टटभरमे भावि भेल छलाह ।  
हमरा समके देखि चिन्ता पूर भेलैन । हमर विचार भेल जे भाव एके डेर  
पक्के मकान बना ली । कमसँ कम सोमाने पं० ओक जेहन पक्का छैन,  
तेहुनो । दोसरे एहोडा पक्का मकान नहि छलैक । ककरासे पुछियैक ?  
पत्नीबाना ओसाजीके तहि सभ भूष ज्ञानगी छलैन । ओ प्रथम समलैक  
कायमे आवाहनत हमर महामक रहलाह । तहिना सस्तीक समय छलैक ।  
छी आगे हजार ईट पावल गेल । पूतारीहसँ बाठ कने महुँ कोइला भाएल,  
चैलपाडी पर कइये खेप । ओसाजी अपना मामसे हाजिबाद कारीगरके  
आनिब’ भट्टा कुचोलीन । भूष माम ईट बहरलैक । छी आगे रात्रि मिस्री  
रोज नैन हम रेशा बाजि भने । हूँ पाइक महुँ पिआ ईट छपियैक, खुब  
मसल भ क’ इत भरि खसैत रहल । भाव जीव संग जपनगर जा क’  
नेपथ म न खुन करीते गेलहुँ । समरत पुनँ सरही कारीगर बड़ी जइनीन,  
कवाड़, बिहारी कनीमक । तहिना अछारह जइने भाग लोहाक छड़, चौदह भांने  
धान सिमेंट आएल रहल ।

ओसाजीक विचारानुसार छत पिटेबाकाल होराक मोरा मेथी ओर  
कटोक कटर छोडा गेल गेल रहै (बा’क्षसँ खूब निद्राह रहैक) । मकान





जहाँ जाने पड़े। कुछ रोना करना हुआ मिलेगा।' मेरा साहचरक कथनाई मेतर्न शरसर तौर परय लगेन छलीन। मातरी हाथन रूपय देन करे छल-  
यिम सा, मित्राई छल।'। श्रीमती सेनके सवेस बहुत प्रिय छलीन। तौ निध  
सदेसक धार हुन। बसो गायन गेन छलीन और जे अर्ध छलधिन तिनका  
प्रताय देल जाइ छलीन। हमरा भेटत जे हम अस्तिपुत्रेक ग्रहण करैहुं आहि  
महाशयक प्रति सोदा कसहि आपन।

चर्यन विभागक अध्यक्ष श्री० शंभुभाष राय गंभीर व्यक्ति छलाह और  
गाम्भीर्यके विरुद्धक परिचायक बूझैत छलाह। ओ दार्शनशास्त्र और दार्शनिकके  
परस्पर विरोधक सम्बन्ध मानैत छलाह। अतएव हुनका जब बेसि हमरा  
समीक्षा पाज करय पड़ैत छल। ओ नृपराय यैसन करीन बनवैत रहै छलाह।  
हाथमे पैमिल आ रबर मेले लिखैत आ भेटवैत जाइ छलाह। "विस्तर आ  
आपकी अडारहु पीरियड है। लेकिन बार पीरियड और सेवा होगी।  
But you are a young man, you will not mind a few more  
classes." और १८ काटिक, २२ बना देल गेल। आहि दिन प्रोफेसर 'जेकनि'के  
कहिथो काल खुरीक काज करय रहैत छलीन। कौनो कौनो केस माथक माथ  
बसीत छलीक। एहन एहन अवसर पर राय साहब हमरा बसायें बोल्हवैत कहै  
छल ह—'सादी, ठमको खुरीमे जभा होगा। इस बीच न जयदहमाग  
तय्य ईयर का कीस भी पूरा कर दीजियेगा। 'संस्कृत' भाषा मे बहुत  
बाकी है। Exam तय्य होत आ गया है। इस बार आपकी ऐच्छनाय जाइ  
दिना जा रहा है। But you are a young man you will mind  
a few more classes. आहून-आहून अवसर पर हमर ज परब ड जाइ छल। राय साहब आध  
एच मुसकाम ग्रहित कहैत छलाह- Many Thanks

चर्यन विभागक दोसर दूरिष्ट प्राध्यापक छलाह श्री० रंगीन हुनदार।  
ओ अपन भाषा अनुसंधान सदा गंभीर मूढमे रहैत छलाह। ओ साइकोलोजी  
पढ़वैत छलाह, विशेषतः feeling आ emotion। ओ बसका साहित्यमे  
'काय'क विशेष रूपमे प्रवृत्त छलाह। ओ विबलि ग पुत्रके phallus  
worship कहैत छल। एही तरहें धर्म आ कलाक क्षेत्रमे गीन प्रतीकस्थक  
व्याख्या करैत छलाह। ओ चिरकुमार, सरा बहार, विनोदक भंडार छलाह।  
अपने रसमे मग्न रहै छलाह। अर्ज वीरक वरामशाय आरामकुर्सीपर लेस  
देखुन गरवीर गानते, बिहार मुहमे लगीन बसला-इतिवृत्त पत्र पत्रिका  
पत्रि हामीनामं दुआ उड़वैत छलाह। कौनो राजनीतिक दण्ड करय आहि

जाइ छलैत त' हाथ जोड़ि कहैत छलधिन—'माता, आशय आपारी जहा-  
जेर की खबर राखे।'

ओ तेहुम काव्यप्रतिभा छलाह जे अनेकी विरलाकार हुन। अनेय  
अर्चन रहै छलधिन। एक दिन एह उद्योगमाय कविधर्म से हमर परिचय करबैत  
बजसाह—'होरो मोहम, इति कोवि। इतका पोती का पोताहै, ... हम  
विस्मय भ' बठगहुं, एहि बीच वादय दर्पकतक्षणीके' हलने पोतीका पोता  
(पौच पीढ़ीके हितवा) कोना भ' मेरीन ? ओ हमर मुख वरैत देखि बजसाह  
"—साजी, ई ठोमही समझा ह। इनके ह' बौध का ऐहेंत (पति का पता)'  
बोल रहा हूँ।'

एक दिन हाथपान पुस्तिकेन त' बजसाह—'विस्तर, का हालचात  
रहेगा आज लोडस्टर (कड़का सोना मछली मिला) क्या खादगा ? हल-  
दार छलैत तेहुम जोर (मातव स्पीनर जका) बनासकयमे लेबरर दैत छलाह  
जे हस्पुर्न कंधाउंके गुंन उरैत छल। "Philosophy is the mother of  
all Sciences" दण्डन करय आ गन अक्षयमे बजैत छल—'अतस्त मोहोर  
है हुनार माहव, ओर ओ' राग तो रकी ओ तरह मे' मयाते हैं।

कौनो साहब मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालामे डिमोन्स्ट्रेटर छलाह और  
Havelock Ellis क "Studies in sex" पर निश्चय करैत छलाह।  
हुनकाई मध्य करवामे खूब मन नयैत छल। ताना प्रकारक प्रश्न उरैत छल  
ओर ओहिपर मनोरंजक दृष्टि छिड़ि जाइत छल। राधाकृष्ण और कौनो-  
सज्जक प्रेममे की अन्तर ? Sexless love (सैनवासना रहित प्रेम) होइ  
सैक वा नहि ? प्रेम आ रोमांसमे की अंतर ? कौनो साहचरक कव्य छलैत जे ई  
सभ हा मूलतः एकै थीक। 'सब Nibado का बेल है। यही सबकी  
नचाकर (मवा) लेता है।' किऐक एक के देखि मामत्ति होइ छैक और  
दोहरा के नहि ? एकर की फॉर्मला छैक ? Love क conditioning आ  
unconditioning (संश्लेषण आ उच्चाटन) भ' सकैत छैक ? एक  
love जे दोहरापर पोना transfer होल जा सकैत छैक ? एही सभ



१९२६ में 'मिनिटा' भारत आइल ह। आ स्पोटन पर उ छलल। ओ कृषकोमे खेतीक काम सेन छलल। जहाँ कानो जेठमे खेतीक देखित छलल कि लोक ईन छललियन— 'स ई मरे ?' ओ ओ ई देखे का यक है 'वरिष्ट पू मरे' ओ आरुमें पार्श्वक गुच्छ नचलन तेहन देखीमे आगा बरिष्ट गड छलल। ई हुनका पीनमे जमल कलिन।

हम बिबिध गोमाइली सेक्रेटरी छलहुँ। हनिष्यद सभामे सेहो योग दान देन छलल। समय-समय पर बृहत् कवि सम्मेलन होइ छलल। एक बेर महाकाव 'नरनाथी मेहा' अछल रहल। ओ ई० बालवीरलाल शास्त्रीक एक काव्य गोष्पर लेनक मुख भ' गेल। जे अपन कुर्वाक जेवमे जे किछु रहल ते हुनका हाथमे क' देखलिन। ओहि समय एहम-एहम चिचिन्त अ छलिके धमज द देवा नार अधिकतर हमरे ऊपर रहैत छल।

ओही आग्रवास पटना कॉलेजमे भेयिनी साहित्य परिषदक स्थापना भेलक। प्रत्यक्ष निरन्तरित सभसँ डा० अमरनाथ झा यात्रिक ओकर उद्घाटन केल रहल। ओकर प्रथम सेक्रेटरी भेलाह उमाकांत मिश्र ओर हुनका बाद दिवाकर झा (दूनु एम० ए०क उमाही छात्र)। ओ सभ साहित्यिक क संकल्पमे सेवनीक एन मकौरजक जावा करल ब'हल छलल। हमसँ भाग्यद सौम्य जे हम कानो तेहन रोचक एकाकी लिखि दिअनि जे दिनेशपूर्ण होइक। हम तेहने बस्तु लिखि देखिएन—'डोप सँ गी'।

ओकर कमानक ई छलन जे एक बड़का टोकलता देहासमे सब छवि जे निहुरक टास कथ कालेजमे जाइ छल। परन्तु पटनाक सहरी बसात लगला अगर ओ नगा धरल जाइ छल जे टोपके भिटा क टोप पहिरल लागि जाइ छल। ओर जर मे प्रियकुक रिपतिमे आबि जाइ छल। भंग पड़टगर बसा छलक।

ही लोक नई लेखनि लल्लागाइ बाबू (राय गङ्गाधर कुमारीन जेवक बालक) जे अति समय हमरे लेखक होइतले रहि बी० ए० मे पढ़ल छल। ओ मैथिली प्रथम 'मन्त्र' छलक पटनामे (हमरा कालेजक विशाल

हाथमे) भ'वत कल भेल। पटनाक समस्त सम्प्रदाय मैथिली भाषी (तदा अस्मान्य भाषाभाषी मैथिली प्रेमी) ओहिमे बहुत अधिक सक्रियमे आएल रहल। काठक श्रुत जमलक। छ'मिति द्वारा अकर मचन ह्वारक विचार भेलक। परन्तु ओकर पाहुनि के ल' पैदाइ और ओ की भेलक से रता बहि।

तकरा बाद संघिन महासभा, मैथिली साहित्य परिषद एव आग्रवास गोष्ठीक दिवस हमरा विछेद काय निमंत्रण केर ल'गल संयोजनन करल जाइ आरुपूर्वक सभामे ल' जाय लगलाह। एहि स'हे मुम्बईपुर, दरभंगा, मधुबनी, जजिपुर, बरहमोइया, जोहना रोड सह मा आदि अनेक स्थानक अधिवेशनमे सम्मिलित भेलहुँ और समानुपात (विशेषतः श्री विद्या पर्व विद्यालय आ गिरिक प्रसाद त्रिपाठी) पर भागल कैलहुँ।

सागरर कृष्ण काव्यसक प्रकाशमे परिचित रहे छलल। ओहिमे घर आइ छलहुँ क' हुनका हेतु काव्यभाषी बस्तु सभ मेमे जाइ छललैन। अग्रम-प्राथ, डाक्टरिष्ट, कलकान्त, मार्गिगुह, मिमोसलदि कर्ण वर्तक सागरी तथा मेवा, मिथी, मसाला जाबि बहुत रास सामान। केनर, कलूरी, चिल्लीप, आदिक पारखी छलल। एक एकटा बस्तु ल' क' परीक्षा कर दिअली करैत जाइ छलल— एरि बेर ओर सभ बस्तु न टोल छोड़, मुदा, बालोचनमे किछ फेंकलहुँ ब्रह्म गरी अरि "म एके सभ कथ जेन छललिन। आब ननकिछु किछु लिखि हो'खार सेन जाइ छल। परन्तु एकम क्षरि खूब पयका नहि भेलाह प्रक्षि। सागिर क ई मुपरीक वदला बरैवा मुपारी ल' ऐलाह अछि। मवनि बिजयम कलला जल।

मासके कलन सभसिग 'दू गडवे' छल दूध दही कोछविमोद। बहुत मिठक दूध पटनामे कल जेवनीग 'अग्रम' कथ 'दोहा' कल कल छल। (माइ सेन) दू छल मे भ'व 'सेन' जल। 'मन्त्र' जल मन्त्र जल 'मन्त्र' जल और मरि मरि मरक्यो नह 'मन्त्र' जल छल।



















मं' लेनेक। कोधोनीके' गोनी मारि डेलकेन। मोजी, भानवघात बंद करे।

ओहि राखि केओ अन्न जन वृषण मजि कोलक। सुम्पूर्ण राखु कोना सारि धन धरि सोन-राम रहन मे कर्बविदिग अछि।

ओहि समय मति जानि केहन ईव दुर्गेण उलोक मे हमरो परिवार पर भिषतिक पड़ाइ दूहि पड़ल। नीने नमैने सोनटा भोषण बन्नाघात केन।

पहिने व हाउ बाबूक आसमग सुन्दर भविष्यु केनक (मलमजो) जे कोओ बर्षक छप्राह सुनिवातिक उमरसे अकाल फलितत भ गेलाह।

दुःख बाबू ओहम संस्कारी, तेजस्वी प्रणामिय वृद्धक विनोय अहि राखि सकलाह। अतः शरीर अर रोगके प्रस्थ 'अ' गेलाह। डा० टी० एन० इनर्जिक भित्तिया कोमक लमलैत। रुद्धोमदेविक इनेकमय पदम लगलैत। ओकर कार्य पूरा जेता पर बेहुरा पर जाओ आनि गेलनि। पुनः बाबूकरक रावसे काज पर जाय लगलाह। ओओ हाउमोनिपमपर नीत कावे लगलाह, परन्तु आब ओहिमे बेहताक स्वर, रहैत छलैत।

१९४९क पुनारवकाशमे श्री मशरक संघ नाम गेलाह कहलनि—'बेबा, हल छडि धरि लोख जाएत। प्रसाद देने।

पाक परसे बाबूजीक। चट्टी आइल—'एतय दूध बाबू अपना शवक संग मकुलाल पड़ुणि गेलाह। बहुत 'दनपर हुनका देखि क' अस्मात प्रसन्न भेल। एहि ठाम केहातक हवा पानिमे रहने स्वास्थ्य और बढ़िओ अनि जल-मैत। एतय खूब मन लखैत भेल। बाबू भात खाइ छथि। कतख जेलाइ छथि, माया बननैत छथि। मगरज कुपारसे पूर्ण सयस 'अ' क' पटना जयताह। 'तयलतर 'पुनवष' क' क' भिखने छलहु—'अबैत राख एकटा बुधैतना ई भेयन जे बहुआरी कोठीक दुल संग उमटन उनटि गेल रहैत 'गहिसे' पौआके किछु चोद लगलैत। परन्तु ओहिने कोनो विशेष अभिप्रात नहि 'लेवैत।'

परन्तु किछु दिन बाद दोसर चिट्ठी आएल—'बखान। इन्जबाय के कारिह कोनोतर पचाएक पाँचरमे रबे छलैत। दोसरेक काउर कारिक' दोसरेक देखकेन। बहुत अरुह उपचार करैत गेलैन परन्तु ओ अरन इहोला संशय कय - '... ..'। ककरा बाबू आना गहि पड़ि भेल। अखिक आना अहारा 'अ' गेल। नरहराज गान ऐलहु'। आब ओ

लक्षण नहि छलाह जे दोहि क' अखिकम कोर समदमसे उठारि फव स' जेतथि। जर जरमे दोघावली' दीप जरीत छलैत। जयना जरमे अहारा मम पड़ैत छल। बाबूजी जीवामृत अवस्थाम गहल छलाह। करेबपर पाथर राखि किया कर्म कैस गेलैन।

बाबूजी ओहम दोहरा बाकक खायात तहि दूहि खायाह। पूर पूर म' गेलाह। उषादीन जकां 'इ' लललाह। फेर गामसे बहरा कतहु नहि गेलाह।

हुनकर चिन्तासु मूलापरोष फेर उमड़ि ऐलन। एहि फेर (२१. ६. ५१ के) ७९ बयक अवस्थामे हुनका अपना मों गेने गेलैन।

ओहि समय हल सन सन कात रंगीनाट मटियामे आनि गेल रहै। गामसे फेकर दोइस आपल—'बाबा त विशा हो गेलस।'

श्री रामवर बरहरि हुनक सेवामे रहैत छलैन। ओहि राखि कहलनि हो केसबद, जाइ राखि तौ एतहि रहि जाइ। हमर हालति ओक नहि बुझि पड़ै अछि। जयना कलमयानक प्रथम पाकल गालतनु भाव आलमारीमे रखने रहल। बायके कहने रहलनि—'तनकिरवूक ऐलापर ड' देखैत। जयन अन्पेन्डि कियाक हेतु लभटा प्रयोजनस्य बस्तु पहिनिहि सरिमाक' रखलैलनि। २९. ६. १९५१ के' ७९ बयक अवस्थामे लमस्त माधामोहक संभनबे मुक्त भ' गेलाह।

हम सध पुनः बाबूक गान ऐलहु'। भैया कहल यता त पहिनिहि बलि भेल छलाह। काब तनकिरवू कहयवला सेहो नहि रहलाह। दुर्गभागवत बाह-बाव किमको अखिक दलोक नहि भ' सकल।

हम इन्ज बाबूक कमिमाके आकाशत दितेले जे हुनक वृत्त संस्कारिणी कमा (रमा, रमा)के जयना संघ राखि कालेबन पड़ैत और अखिया बरके जिमाह करैत।

बावत् धरि बाबूजी बर इन्ज बाबू छलाह हुनकर जीवनक माटी समतल भूमिपर समान गतिसे चलैत रहैत। पटनासे दूध गाम से पटना। आब

१. भदमानक कुपारसे ई दूध बाबू पूरा भ' गेल। रमा आ रमा कालेब-के बाकि सुयोग्य भ' गेलीह और हुनक जिमाह खूब सुखी संपन्न प्रति-पेठत बरिवासे सुयोग्य बरती भेलैत। (जकर वर्णन पथर स्थान भेटत।)

और आम दृष्टि में। हमर बहुकेन्द्रित मन बहुमुखी रहे। परहीं बेसी बाहरे रहलहुँ। एहिकुन निश्चितता किना गेल। ओ सारा नहि रहल। तब तब वास्तव भा चिन्ता गायब हो जाति गेल। जँवतमे तेहन मोह भोजि गेल जेना कोनो जगतिनमे मध्य विरामक बाद रीज बढ़ति जाइ छीक ओर नव नव बुरा बदलि आधन जगत् छीक। (श्रीकृष्ण वृत्तान्त आकाश अध्याय-सभमे भेटत, जकरा एहि नदरसे 'वृत्तान्त' कहल जा सकैत अछि।)



## दर्शन विभाग

१९४८ (२ मार्च)मे हम बी० एन० कालेजक परना कालेजमे आदि गेलहुँ। ओहि समय पटना कालेजमे एहन विभागक अल्पक संख्या भाव में धीरे-धीरे होत रहल। ओ हमर 'न्याय दर्शन' आ 'वैशेषिक दर्शन'क रूपमे सरन माध्यमे विषय विवेचन तथा हनर अध्यापनक क्वालिटी प्रभावित छल। ओ हमरा पटना कालेजमे अवकाश देल गेल। यद्यपि सरकारी शैक्षिक सामान्य बच, होला हम बहुत पछिहि बार कम चुकल छलहुँ। (चाही कि जेकर अवस्था न' बेस छल) तथापि विवेक योग्यता और अनुभवक आधार पर सीनियर ग्रँडमे हमर नियुक्ति भेल। पटना कालेजमे आदि हम १९४८-४९ कालेमे प्राप्य एवं पध्यातक रसमक अध्यापन एवं परीक्षण करल सकलहुँ।

आचार्य दत्त जयन प्रसिद्ध कृति 'इन्द्रोद्घातन दू द दिग्गज फिलोसफी' क हिन्दी संस्करण करवाक भाव हमरा ऊपर बेलनि। हम (जयन सहकर्म) प्रो० निरंजन मिश्रक सहयोगसे श्रीजी ओ प्रब प्रस्तुत क' देखलैन। (ओ भारतीय दर्शन' पुस्तक संघ र, पटनासँ प्रकाशित भेल और हिन्दी भाषी क्षेत्रमे बहुत लोकप्रिय भेल।)

पटना विश्वविद्यालयक एहन नीति कुलपति (श्री जङ्गलर सिंह) हमरा नियमित तर्ककार (डिप्टिफा लीजिस्) पर दिग्गज कायदेसँ एक मौलिक मध्यम मिश्रण कहलनि, जाहिसे 'सूत्रबद्धके' विषय दूसरामे सुगमता होइत। तदनुसार हम नियमित तर्ककार निरंजन, जाहिमे एहन ओ मनोरंजक उदाहरण द्वारा विषयके सुगम भा शैक्षिक बनौलहुँ। ओ पटना विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भेल ओ बौद्धपुस्तक निर्धारित भेल।

बिहार राज्यभाषा परिषद्, पटना, द्वारा प्रकाशित एवम् अङ्ग्रेजीभाषाभाषा रामायण पर श्रमिक 'पूरुषोत्तम दर्शन'मे केवल द्वैत धर्मिक वर्णन छलनि। परिषद्क जतुरोपर हम ओकर प्रस्तावक शैक्षिक समकालीन वास्तविक दर्शन

(मध्य प्रत्ययवाद, तन्म दस्तुकाद, अमहात्म्याद, अहिंसकवाद आदि)क परि-  
भाषात्मक निवरण जोड़ि देतिथि ।

सत्कालीन राज्यपाल श्री आर० आर० बिशारक भादेबाबुद्वारा इस  
प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक बिहारक अवस्था (Philosophical  
Contributions of Bihar in Ancient, Medieval and Modern  
Ages) पर तीन अल्पाक्षरी लेखि क' देतिथि । जे ओ अवस्था सम्पारित ग्रंथ  
Bihar Through the Ages के अग्रविष्ट क' प्रकाशित कैलनि ।

१९४८मे ओरिएण्टल कलेजके दूरस्थाने भेल रहैक आदिमे म० म० डा०  
उमेश मिश्र लेखेइरी रहैक का डा० अमरनाथ झाक भाषण भेल रहैक ।  
ओहिमे हम 'पुनर्जन्म और कर्मफल' पर अपन आलोचनात्मक निबन्ध पढ़े  
रही जे विद्वन्मंडलीक ध्यान आकृष्ट कैलनि ।

१९४९मे एहिमे (फिलोसोफिकल आर्थिक अध्ययन) पढ़ावे भेल  
रहैक । ओहिमे स्थानीय मंत्री, आचार्य दत्त हमरा पंडित-सभा संबोधित  
करबाक आह्वान कैलनि । ओहिमे हज मिमिल, फार्सी, संस्कृतमे लय दधि  
भारत परिक प्रविष्ट पंडित उमके आमंत्रित कैने छलनि । एकसँ एक  
उद्भव आलोचक विद्वान् आगत भेल ।

आधिपत्य म० जेदगाहरी लेहने आचारनिष्ठ छलाह जे केवल केवलपक्ष  
रहैक कहि क' रहैत छलाह । ओ आज्ञा-कहिथो चीनी नइ कहै छलाह ।  
हम आग्रहपूर्वक वाक्य देलनि त कनेक ओह पर 'राखि बजलाह—'ओम्,  
ओलुम् कयमे ।'

पंडित सभमे विचारक मुख्य विषय छलैक—'अवच्छेदकता' जाहिपर  
परजीक सुप्रसिद्ध विद्वान् प० राजेन्द्र नाथक एक जट्ट पुस्तिका (अवच्छे-  
दकतादि विषय) छलाह क' लायल रहैक । अवच्छेदकता पर महान लक्ष्मण  
भाषण भेलैक, परंतु प्रत्येक क्षणमे लेखक रास अवच्छेदकताक लच्छा रहैक जे  
ओलाओल ओहिमे ओकरा क' रहै गेलाह । मिमिलक एक सुप्रसिद्ध  
दीर्घाधिकार हम प्रार्थना कैलनि जे ओ सरल भाषामे ओलाके अवच्छेदकता  
क अर्थ सुलभ । ताहिपर ओ जे आदेश करय लगलाह तकर तमून  
नीचा देल जा रहैक अछि :—

'यदाभावक प्रतिसीधी चीक यदाभाव । प्रतिसीधितान्छेदकता अछि  
यदाविच्छेद अवच्छेदकता । अद्वय यदाभावभावक यदाविच्छेद अव-



कठोरसत्तानिष्ठ अवच्छेदकः निश्चितः प्रतियोगितानिष्ठ अवच्छेदकः। त्रीणि च  
प्रतियोगित्वकं साव अर्थं श्रीक । यदाभावाभावाकप्रतियोगी भवेत् यदाभावाभावा,  
इतिप्रोक्तः अवच्छेदकता येन यदाभावाभावाक प्रतियोगितानिष्ठ अवच्छेद-  
कता । अवच्छेदकता अस्ति यदवच्छिन्नं अवच्छेदकतानिष्ठ अवच्छेदकता,  
अतः यदाभावाभावाक साव अर्थं भवेत् यदाभावाभावाक अवच्छेदकता निश्चित-  
रता निश्चित प्रतियोगिता निश्चित अवच्छेदकता निश्चित अवच्छेदकता निश्चित  
प्रतियोगिताः अत्राह ।"

समस्त अतःगणके केहन अर्थं, य भवेत् द्वयनि के पाठक स्वयं अनुमान  
कं संकत द्वय ।

१९५० मे विहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलनक दशा अधिवेशनमे  
हम धर्तन काकाक अध्यक्षता करैत उपर्युक्त उद्घरण ईत कहने रहिऐक जे  
भावधु ध्यायावादी, प्रवीणवादी भा अतीकवादी और लगानधु एकर अर्थ ।  
एकर अर्थ दोहव करवाक हेतु सेहने 'सुख' 'दोष' गोपालन'वन' वादी ।  
(हमर ओ अव्यक्तीय प्रापण जाहिमे हम प्रदीनशास्त्रके सरस काव्यसु उपगा  
सेने रहियैत । सम्मेलनक येनातिक 'साहित्य'मे प्रकाशित भेल रह्य । जेहे  
केहनो कितल श्रीरस विषय रहौक हम ओकरा तेहने रोचक ठंगस उपस्थित  
करैत छलहु जे प्रोफाके भाग्य आ'म जाइ छलैन । एत पोष्टीमे 'अव-  
च्छेदकताक प्रसंग कहलऐक—'अवच्छेदकता'क अन्त सारबहुक अगवाही  
भेसक । भावावयव चकित भ' भेलह । तखन हम कह्य सगतिऐम—पं०  
गंगेन उपर्युक्त अपना द्वायन पर बैठल विद्यापीठगके मडा रहत छलैन—  
'यम मन धूमः तत्र तत्र वः'।

भीतर शानस चले पत्नी बीच पवारैत सनचिन । कवि जायिनहे  
केवल धुआं धुनक म' क' रहि जाइ छलैन, बरख नहि बहराइ छलैन । ओ  
बाख सँकमे धुआं भरि ऊपरसँ ओकर मुह बंद कय दत्तानपर गैभीह और  
ओतम सँक पटक क' पुकलचिन—'यम धूमः कुत्र वः' ।

पंडितजी अभाक् भ' भेलह । एहन प्रश्न कोनो सा'सार्थमे कोनो म'ह  
केने छलैन । यदि तुरंत समाज'न नहि क' विचिन त तम्ह कहियैत पंडित जी  
अपने परनोसँ बराबर भ' भेलह सेहो विद्यापीठभक्त समझ । मतएनजी छलएवझ  
करय सगलह—अर्था ई जे धुआं अगने छी जे अगित छलैन अस्ति ई अगि  
नहि छलैन । जहाँ मृतसँ संनान धूम रह्यैत तहाँ जाति कयमे रह्यैक ।" अतः

आति-बाधक एका परिवार है। वे—‘एक बच्चा गुलाबखेरेन पुनः एक लक्ष बहिः।’ एवं प्रकार जहाँ जहाँ कक्षा सपासक है। इति गेन जहाँ जहाँ भवच्छेदकता कीटाइत गेन। एहीसे विविधामे तच्छेदकता प्रकटित भवति।

इ कथा (वि विवदन्तीक रूपमे प्रकटित है) सुनि कोष्ठीमे आनन्द-विरोधक लहरी आनि जाइ छलैक। और नवयुवायक एक घरस दृष्टिभूमि भनि जाइत छलैक। एहि प्रकार ह्य जटिल विषयके लेह्य रोजक बना दैत छलैक जे ओ पुरेन सभके सुखदम भ’ जार छलैक।

मयाक जोड़ि तथामे हम दू टा प्रस्ताव केन छै—

(१) नवयुवायक कक्षा भाषामे व्याख्या केन भ’।

(२) ४० वं ५० वं गणपदवार परमेश्वर ‘परमेश्वर’ के प्रकाशमे मानल जाय।

हम यथाशक्य यद्दि दुव् संकल्पके विचारविमल जलसह (जकार वषट्क घवात्प्राय एहि पुस्तकमे भेटैत)। हम जेको विद्वत्विद्यालयमे नवयुवायक पर व्याख्या केनहुँ और भवच्छेदकता-प्रकारता आ एक तरह व्याख्या भयन लय (‘भारतीय दर्शनमे भाषा-विश्लेषण’)मे केनहुँ। ५० रासपदवार परमेश्वर ‘परमेश्वर’ दर्शनमे भवच्छेदकता कबहुँ (जे जखन आरतीस दर्शन गरिगइत सुदृढक नीतिमे ‘वर्णन’मे आरामाहिक कपसे (१९५८-६० क ४६६ प्रकाशित भेल)। ओ पर जहाँ सखेन जलक सपासकमे करोड़कोटसँ बहुराहत छलैक (जकर परमेश्वर-तु सभितमे हमहुँ छलहुँ)।

एहिना ४१० जे ५० पौ० आनेयक सपासकमे दोरादामिसँ प्रकाशित दर्शन हँड जेककक लर राबहुजान मेमोरियल वॉल्यूम (१९६४)के ह्मर ‘परमेश्वर दर्शन’क परिचयात्मक विमल छपत जे विदेशीय विद्वानक व्याख्या आकृष्ट केलकनि। हम हिन्दीमे ‘परमेश्वर दर्शन’ पर परिचयक किछु अप्पाय लिखने छलहुँ जे राबहुजाना परिपक्व अप्पाय ५० रासपदवार बाँडे प्रकाशनामे छ’ गेताह।

१९५२मे विश्वविद्यालयक नव विभागक अनुसार प्राध्यापक तीन ठा खेनो बनलैक—प्रोफेसर, रीडर आ सेक्टर। (जैना धार्मिक, गीय, भवच्छेदक)। आसकोत्तर विभाग कलेजसँ पुनक न’ गेलैक। हमरो खेन विभाग कथा कलेजसँ बरनवा हाउसमे जाति भेल।

१९५२ (जून)मे डॉ० बल भवकाश प्रह्लाद कीलनि, तत्पश्चात् हम हुनक स्थान पर विभागाध्यक्ष तथा रीडर नियुक्त केलहुँ। १९५९मे बुनिगिरी प्रोफेसर क पद पर प्रोफेसर भेलहुँ। १९६६मे ‘सेलेक्शन प्रोफेसर’ के आइलहुँ। सर्वनमैट भविसमे २५ वर्षक आयु पर सेवा निवृत्ति होइत छलैक, परन्तु बुनिगिरी परिवर्तमे ६९ वर्ष पुरत कर। भव. (१५ सितम्बर, १९७०मे) हम अनकाक प्राप्त केलहुँ। एव प्रकार हम भव. १९ नवम्बर वर्ष भनि रह्येन विभागक अध्यक्ष बनल रहलहुँ। नवपदमे केहीन एक एक बु० जो० ती० (विश्वविद्यालय अनुशासन अधिनियम) तथा वायमारने विषय प्रोफेसर नियुक्त भेलहुँ और पाँच वर्ष (१९७२ धरि) आहि पदपर रहल केलहुँ।

हम अपन सुदीर्घ कार्यकालमे दर्शन विभागके भवन्तिन परिवार जकाँ बुनैत रहलहुँ। अपन सहोपी करिगइत बाबू निरामन्द बाबू प्रभुतिके छोट भए जकाँ और सहकर्मिणी कुमारी छत्रा बु० के कथा जकाँ बनैत रहलिन। विभाग कथा अगोभूत कलेज भिला कभ गोट जीवित दर्शनक प्राध्यापक आ प्राध्यापिका छौह जाहिमे अधिकांश हमर सिखे रहलिन। यथा अतोक बाबू वसन्त रावू, मधुसूदनजी, तर्मदेवरा, हजरेव, रामुन्, राधिका, प्रतिभा, इ विरा प्रभुति।

हमरा सभमे लेह्य पारम्परिक मोहाई जाम रहैत छल जे माममे एक दिन किनको न भेलको जीवित सभक जीवितो होइत छलनि। यदि कोनो बात स’ क’ मतमे न’ आइ छल त हम सभ बाँबीबादी (हृदय-परिवर्तन) नीति मयलिय पुनः एक न’ जाइन छलहुँ।

कोही अप्पाय विभागसभामे हमरा सभमे एतेन सान्जसँ देखि भाषण सभत छलनि। पुछैत जाइ—‘अहाँक विभागमे ‘पू’ नहि अछि?’ हम कहैत छलियनि—‘हमरा विभागमे नीति ठा छूँ अछि—‘विमल विरोधकोषी, रिपीजन और एषियस (भारतीय दर्शन, सर्वदर्शन और नीति दर्शन)। एकरा अनिश्चित और कीनो नुन तहि अछि। दर्शन विभागमे आस्तिगत, प्रोबन्स, वा सम्प्रदायवाद सब मय मानवतावायमे विखीन भ’ जाइ छल। ‘सर्व पदाः ह्यियपदे निमज्जन्।’

हमकोत्तर विभागमे (पंचम-वषट्क वर्षमे) छल-छात्राक संख्या लगभग षेड-तय छलनि। पहिने केवल दस-बीस छ छात्रा छलीह। परन्तु सके सभल जनता, रईस-बढ़ैत ओ सब छात्रक घरपरि और तनुपदास कोट्स अधिक न’ गेलीह। ओहू नुनकुटी दत्तात्रेयनमे सभ साइ-बहिन जकाँ







१९१४-१९, १९ मे हम विज्ञान विश्वविद्यालय (नेपालक) कादम्बल पर 'फिलोसोफी' कोर्समे परीक्षा सम्बन्धी परिषोधन कार्यक हेतु काठमांडू गेलहुं ।

१९१५ (मार्च) मे हम विश्व भारतीय विमाननर शांति निकेतन कादम्बल 'क' ग्रेड ग्राह्य (विशेषतः अध्यापकता) पर भाषण देलहुं । ओहिमे हमर गुण अचर्य धीरे-धीरे मोहन रस एवं अन्धकार विमोहक विज्ञान उपस्थित रहल । हमर ग्राह्य छरन का देखक क्षतिग्रस्त शीशी मे भ्रम प्रकाशित भेलाह ।

१९१६ (मई) मे हम दम्बाजरी निर्माण आयोगक वरिष्ठ-परीक्षकामक सम्मिलित सर्वोच्च वेतन सेवक हेतु मम्पूरी गेलहुं । ओहिमे आनी आन वरिष्ठ सम्मिलित छलाह (मार्च का० टी० आर० श्री० मुक्ति, डा० श्री० डी० शर्मा, डा० देवराज, डा० सुनिन्द किश प्रभृति । हम सब समझन रस दिम धोमस रहि कार्य करैत गेलहुं ।

वर्षान्त-सम्मिलित अप्रिम बैसक १९१६मे अन्तमलाई युनिवर्सिटी, और १९१७मे अहमदाबादमे भेजक । हुनका एक-एक सप्ताह रहि हम सब कार्यकें धारा बढोसहुं ।

१९१७ (नवम्बर) मे विश्व भारतीय विमाननपर हम पुनः शांति निकेतन गेलहुं । और विमानन सर्व विषयक गोष्ठीक अध्यक्षता कैलहुं । ओहिमे तात्कालीन कुलपति डा० कालिदास भट्टाचार्य हेतु अपन निबंध पा क कैं रहल । हम अपन दम्बमार्गक दृष्टि उपस्थापित कैलहुं ।

१९१८मे (अक्टूबर) मे अखिल भारतीय वर्गन परिवर्तक अधिवेशन दिल्लीमे हमरा अध्यक्षतामे भेल । ओहिमे हमर अध्यक्षीय भाषणक विषय छल—'आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे भारतीय दर्शनक महत्त्व' । जे विचारोत्तेजक निबंध उपस्थित सिद्धांतमयी ध्याम आकृष्ट कैलकेंग और परिपक्व मुल-पत्र 'वाचनिक' मे प्रकाशित भेलक ।

ओहि वर्ष १९१८ (दिसम्बर) मे इंडियन सिन्डिकेट कांसुलर अधिवेशन पटनामे भेलक । अधिवेशन अधिपति विद्यालयक वरिष्ठ विभागाध्यक्ष डा० सन्निध्यान्त मुर्तिक अध्यक्षतामे भेल । हम लोकल सेक्रेटरीक रूपमे समस्त सदस्यसभक स्वागत-सम्बरक दायर्यक प्रभाव कैने रहल । जाहिमे

अपन सहयोगी वरिष्ठ परिवारक समस्त तत्त्वक हादिक सहयोगी पूर्ण प्रशान्त भेल ।

१९१९मे १० कि० कंसुलर अधिवेशन कर्नाटक (धारवाड़) मे डा० बेदेकरक अध्यक्षतामे भेलक । ओहिमे धर्म एवं समाज दर्शनक मागीनीत अध्यक्ष रहि आवि प्रकलाह । हुनका स्वागत हेतु और अध्यक्षताक कार्य सम्पादित करायल भेल ।

१९२०मे हम मद्रास युनिवर्सिटीमे आयोजित नाथी दर्शन विषयक मूल्याधिकार संशोध्यक निर्माण दायि सम्मिलित भेलहुं । सम्मिलनाङ्क राज्य-पाठ सरदार वरुणल सिंह ओकर सुद्वादन कयन कलाह । डा० महादेव, डा० देव केलापति, डा० श्याम, डा० श्याम, डा० बोशी (पुनः) प्रभृति नाथी वरिष्ठक विशेष विज्ञान ओहिमे अत्यन्त-अत्यन्त विचार प्रकट कैने रहल । नाथी मार्ग महिमा वर्णन पर हमर व्याख्यान भेल जे अत्यन्त (स्कारिभा) मे प्रकटित भेल ।

एहि बीचमे हमरा सम्मिलित कार्यक्रमक और अधिक विस्तार भेलक । अन्तर्जीक मात्रक दर्शन विषयक प्रत्येक हिन्दी अनुवादक हेतु कयन कला केन्द्रीय और राज्य सरकार अकादमी सम्मिलित द्वारा प्रकाशनक हेतु सम्मिलित-रक्त सुधी प्रस्तुत करवाक हेतु अनेको बैठक विन्नी शास्त्री प्रवन तथा हिन्दी निदेशालयमे भेलक जाहिमे आनी आन अध्यक्ष (प्रया विन्नीक डा० रामचन्द्र पांडेय, जयपुरक डा० वामदेव प्रभृति) सेहो सम्मिलित भेल रहल । एहि बीच हम साहित्य अकादमी (दिल्ली) क तत्त्वच पजीनीत भेलहुं । सुनिन्द रत्निक सविम कमीतक अन्तर्जी-हिन्दी समीकरण सम्मिलित तथा अन्य विद्वत्विद्यालयक अनुदान आयोक्त रिमर्च ग्रन्थ कमीटीक हेतु । एहि सब कार्यकें अनेक जेर दिन्नी शास्त्र रहलहुं ।

१९२१मे हम बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जतर निदेशक डा० शिव लाल प्रसाद छात्रा) और मद्रास विश्वविद्यालयक, (नगर दर्शन विभागाध्यक्ष डा० याकुब मदीह छात्रा) तन्तुत तत्त्वचध्यामे संश्रयमे आयोजित भारतीय दर्शन संशोध्यक अधिवेशन कैलहुं । ओहिमे महात्मा गांधीक सहजन्य वर्गन एवं विनोबा जोक सुबोध सिद्धान्त पर परिचर्चा तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दर्शन विषयक निबंध पाठ भेल जाहिमे हमर अनेको शिष्य सेहो भाग लेलनि । हमर अध्यक्षीय महत्त्व तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निबंधक संक-





१९३३ (मह मास) में भारतीय रेलवे शताब्दीक समारोहक अवसर पर विशेष प्रकारक कलक्रेटक डिब्बा जारी भेलक जेना एक खोच (सेब) में बंधल बिन धरि बनेच्छ समझक' संकेत छलहुँ। सोचलहुँ जे एहि मुविधाक जमि ठोठावत जाही। मासके बहुत दिनसँ जगन्नाथजीक दर्शन करवाक अभिलाषा छलै। ओ जगन्नाथ सागरि बंधक छलीह। ते हुनक सेवामे पुतहुँ और रमणजीकेँ सेहो क' केलिएन।

इस सब १५ तारीखन रातिमे घटनासँ बिना भ' १५केँ भोरेमे कसकता पहुँचलहुँ। मास १५ बनेच्छा भेलैक जे अपन माति (चनो-क चन्द्रनक्षत्र)में प्रवेश करत छली। चन्द्र काजू स रघु गोशालामे बड़ा बूझनाह। ओ हुनका समकेँ देखि अग्रस्त छलनिग भ' सकलहुँ। तुरन्त न' केर कामागसँ दस-बीस या बाध कटवाक' मंगोपनि और केमि-टोह क ओकर सोनर जरसँ समकेँ तुम्हिकी केलि। अग्रस्त ग्राम प श्रमक मानावरण झरोक। इस सब मोर्चा मे खुम रागन करैत जेलहुँ। सतुरर धरी चूड़ा आ बेसी चीत्ती खाइत जेलहुँ। मास किसक भीनी छकरा ओ रिमायशी भीना कहैत छल-यिन नहि ब्यस्त छलीह। एतक सबू क गुन आ ताब मिथी बेकि ओ बहुत प्रसन्न भेलीह। नइका बाँटर भेल कयसतामे रूध बिबरन करम जाइत छलीक। सब बाबू ओहिमे नानी-माथीकेँ बेसाम संपूर्ण कसकता पुनः सेनाह। काकीबाइसँ दक्षिणेश्वर धरि। इस सब माससँ रामकृष्ण आश्रम (बेलूर मठ) सेहो देखि ऐलहुँ।

२ बजे राति इस सब एकदमरे तारा बिना क' भोरेमे पुरी पहुँचलहुँ। रूध वाला प्रसन्नतामे जाहि डेर रहि गेलहुँ। मासक दिचार भेलैक जे समस्त पहिले समुद्र समतल क' भागी। इस सब समुद्र तट पहुँचलहुँ।

पुलौह हाथ बरा क' ओहि स्थानपर क' केलनिग जहाँ बंदिग' लोक खान करैत छल। ओ ओर रमणजी हुनका ब' क' जड़मे बँधि गेलनिग। ताबहुँ सेहन ओरसँ झिलकोर ऐलीक जे सब मोटाकेँ छनदून करैत बनि गेलैक। ओहि तरंगक प्रवाहसँ बाककेँ एकटा भासचर्मजगल जात्र भेलैक जे पांखुरक एक हड्डी बहुत दिनसँ छिटकल छलीक, ओर कसको अन्धकार नीने ठीक नहि होइत छलीक से ठीक न' भेलैक। मासकेँ जलरेखामसँ तर होइत छलीक। से चिकित्साक काम समुद्र क' देखलैक।

'मन्त्रज कल देखिब ता फला' पुरंत ओ हड्डी अगम अगहरर नाहि भेलैक। मास मानससँ बिचिया लठरीह बोझ। देखू, भगवानक माया, हुसर बाहि ठीक भ' गेल। ओ जगन्नाथजीक महिमा गायन सरलहुँ।

मंदिरमे दर्शन कराबल क' गेलिएन। बाकसदसँ गद्गद भ' गेलीह। हस्तगत बान्ध-दक्षिणा देलनि। अटक पर बड़ोना बड़ीलनि, पुनः भीलनि। श्रमेश्वरमे प्रसादी कचची दक्षरं क' गेलीह। आहुत बाद जमल दक्षिण ओ गकरकन तरकारी पहिले पहिल भेलहुँ। मधुन स्वादिष्ट जामल।

मासकेँ र रज्य भारतक एक कयक देखैवान हेतु बास्टेपर ल' गेलहुँ। भीतम राखनारस भ' रज (पुनः रज कयलहुँ) रज पर धारण कल देन ओकर मंदिर हुनक पंथ पवित्र बनलैक।

मासकेँ बहुत दिनसँ समस्त रज्यभर दृष्ट रहल। अतः अग्रस्तपुर (देही घाट) भ' नः "अग्रस्त रज्य न' गेलिएन, नाहिने दुभका बहुत अग्रस्त भेलैक। पं. तु प्रचर धर्ममे रूपक बालुवन सत्यमे हुनका रैर बसल छलीक। ओ चट्टी माह पहिरैत छलीह। पुनः कसकता होइत देखावत भ' नक दर्शन क ओर हुनका घटना नेने ऐल्लिएन।

मास मकरा ब्रह्मचरन बड़ गेल छलीह। अतः दोसर सेप (१९२४ अग्रस्त)मे हुनका ओहि दिस ल' गेलिएन, ओहि दिसमे मधुरा, मुन्दावन, अग्रस्त दिल्ली, अग्रस्त आदि देखैत ऐल्लिएन। ओहुँ मासमे ऐचर वृत्तांत ओ बहुत दिन धरि लोककेँ बिरासलहुँ रहैत रहलनिग। विशेषत मधुराक इतिहासीक मंदिर, मुन्दावनक रज मंदिर, सेनाकुन (चट्टी स्त्रीगण 'जब रास' कसक' परस्पर भाविरागन करैत छलीह)। मधुरा-धीक विधायन घाट पर एत एत मयक विनायक काज, एक-एक हाथ भास नदरीमे लाबा बंधाक हेतु मुह बीने रहैत छल। अग्रस्तक मधुरागन मंदिर सब बासक सेनाक मूत्र नाहिमे स्वयं महावीर जी हुनका हाथसँ कयन प्रसाद (बल्लूक दीक्षा) मग ट क' क' केलनिग। मासपर मास बहुत दिन धरि एहि सब बाकाक वृत्तांत ओर अपन पुत्रीहुक सेनाक प्रकाश करैत रहलीह।

ओहि समय पटना अकाशवाणी केन्द्रमे मैक्सिमि कारा वेसमानी महिला कठिनतासँ भेटैत छलनिग। एक दिन रुकन मास्वावन (जे ओहि समय पटना रेडियोमे ब्रह्माह) हुनका भीतम ऐलहुँ ओर धुनका देवीकेँ देखिवा



वार्ता प्रेषक हेतु प्रोत्साहित किये। ओ मीडिया में कोनों-कोनी विवर (यथा यथा संस्मरण आदि) पर वार्ता देखन देखनी है।

१९५२ में केन्द्रीय आकाशवाणीक तद्विधानमें एक अखिल भारतीय सांस्कृतिक समारोह आयोजन होत गे। ओहिमें विविधा संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करवाक हेतु एक सैद्धांतिक प्रयोजन पत्रिका के अवन होत बनाके ल' जाति और अंतर विद्यापति गोलक आयोजन प्रस्तुत करवा। एक दिन ३० अक्टूबर सप्ताह (जे विहार सरकार, मिथ्या विद्यापति उप-निदेशक कलाह) हमरा जोषा ऐलाह और सुमन देवीक स्वीकृति पावि हुनक साध मनालीत कर पठा देखियन। ओ अपन मंस्तीमें पंथनवाली काकी सभा सचिववाली नियो आदिके सम्मिलित कर सदस्यत्व दिहली गेलीह। अंतर सात वोटो नाग कंसमें हिनका समके ठहरावित देखेन। (जहाँ एलाह अन्त-ध्वनि आशुष कलाकार मंस्तीके ठहरवाक सुलीह।) १४-११-१९५५ के निमत समय पर आकाशवाणीके दिहका लोकनिक गीत (विद्यापतिक अक्षरावाली) वर पिक केल गेलीह। ई गीत प्रथम समय पर जहिने छोटी गायन शैलीक मीडियातीक स्वरमें मीडिया गीत के अर्थ आकाशवाणीके प्रसारित भेल। ओ सान्नालीन प्रसारण मंत्री केसकरनिक ह्रास कलाकार पुरस्कार करि क' पटका ऐलीह। ओहि समय एहि पटनके ततेक बहल देल गेलक जे समाचारपत्र समय में अखिल चित्तित भेल। एलाह ई वर में ओहि त हिमका लोकनिक स्वागत होत गेलीह (आहिने पाठपुर प्रथमक अहिना कलाक संगीतक सेहो जाति क' धन्यवाद देखियन)। आगतपुरक इतिहासमें ओ सभा प्रायः प्रथम महिला-समूह छल।

एही बीच (१९५३ में) पटनाक सामाजिक सांस्कृतिक इतिहासमें एक महत्वपूर्ण घटना भेलक। ओ घटने केतना इतिहासिक अर्थ, एक दिन सचिवर जो अन्तर्गत आदिक अंतर वर, गायत्री, सप्रेम आधु अटलंकरओ, सप्रेमरायण ठाकुर प्रभुति वर-बीस तोटे वसत रही। ओहिमें विवर भेलक जे एक वरुण कलाक समय के सभाके नव केतना आनंद। कदएकटा नाम प्रस्तावित भेलक। अन्तमें केतना नाव रहलक।

ओ 'केतना' समाजके ससे मर केतना आनि देखक। सैद्धांतिक धर्मधर्मों-विद्यापति सब अन्तर्गत नाव एलाह जे सत्सक संस्थाके लोक जुठव लागि गेलाह। जे अन्तर्गत और-पक्षमें रहल सुलीह सेहो सभा सुब बाधिक एक अन्तर्गत सब कलाक ओहिमें नाव समझीह। संगीतक ओही



ले जत खाद भायल छिरीक । अथवा प्राचीन काले चरमाय कम्प  
 दम्पत गुरु । भोजन चरनी, लेनरिक खादि । गरी १- कुहरीनी  
 अर्ध जे वस्तु नीच क दाय हई छीनी । जो दम्पत गुरु अर्धमि । १ अ  
 चरमाय चरनी री १ त धुनिक ।

मानमे गरी १ नीच क दाय गुरु तप मे छीनी वरिज । काममे  
 क दाय विनिमय दुरुमेय गुरु १ नीच । यदि जाइ छल ह गुरु १ अर्ध  
 प्राय जाइ छन ओर छनी । प्राय प्रयतिन थ जइ छन — दम्पत चरण  
 अथवा दम्पत अर्ध क दाय ।

१९५७ मे हग कर्मो, अथवेर ओर कलकता मेमहु । कश्मीरक वर्णन  
 गाजाक अथवामे भइत । अथवेरमे एक वृद्ध प्रवासी मैथिल सम्बन्धन भेल  
 छल जकर संभाजक छल ह प० रघुनाथ भार्गव पुनः । मेधुन चरु नदी  
 रमि छिह जे प्रवासी मैथिलक बहना पजिकारे जका छलाह हुकरा दम्पते  
 ओरद ल' गेलाह । जोहि सभमे म० म० जेय मिश्र, कुमार गंगाधर मिह  
 प्रा० जानन मिश्र सहो गविर्धन छलाह । प्रवासी मैथिलमे जवन माधुमि  
 मिथिलाक प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति देवबामे आएल । ओ सभ मैथिली भाषाक  
 प्रति बहुत प्रेम रखैत छलाह और 'कथादात' 'छट्ट कथा' आदि पत्रि क'  
 जानन दीन छलाह । हमरा सभके बहुत प्रेम चो स्वागत-सुखार केनि ।  
 दिसम्बर ५७मे कलकता (महानागि सभ स प्रधान मंत्री गुरुजीक अध्यक्ष-  
 तामे वाइस कमेटीमे भेल रहैक । ओहिमे हमर (मैथिलीक गुरु रही ।  
 (चमुपर मिथिलमजी सेही रहथि । ओहि समय पद्मनाभा साहू गुरुवर  
 छनीह । हुनका ओतय (राजभवनमे) नेहरूजीक संग सभसत छेकक शयु  
 निमन्त्रित छलाह, जाहिमे हमहु सब गेभहु ।

कलकताक मैथिली प्रेमी अधुन विरोध पार्क मे हुना समक अति-  
 मन्त्र केलनि । ओहिमे भारी संख्यामे लोक जुटल रहथि । हमरा सभके  
 मैथिलीक स्वातन्त्र्यसभमे भात-गव प्रदान केल गेल ।

मुमदा देवी दिल्ली जा क' केन्द्रीय भाषासाधनीक समारोहमे मैथिली  
 गीतक सुमारण क' ऐल छनीह । सचर्य हुनको अभिनन्दन केल गेल । बुझि  
 पड़ल जे सब बंगाल जका मिथिलीक स्वातन्त्र्य मान्नु या प्रेम उमड़ि रहल  
 छ । प्राय कुछेक दिन पूर्व हमर विम्वन ब्रजका नारायण नारायण कथा छल  
 छल । आसामितीही गुरुजी ओहि साय अपनी फूट के' मेलाक

रहलाह । परन्तु ई जानि दुख भेल जे एह ठाम दुखाला छै । एक अखिल  
 भारतीय मेधुन संघ, योग्य अखिल भारतीय मिथिला लोक संघ

हुनक उद्देश्य १- 'मैथिली संघर्ष' । दुनु विम्वन चरमा-चर ।  
 महान् चरमा रहथि । मयोदुड मिथिलेश्वर, हरिधर मिश्र, कांठ उवाही  
 मेला वाचक महेज जीवनी प० प्रबोध चरण १ विम्वन अथवा डोमन सा प मे  
 श्वर वाचु उविम्वन प० नहुआर वाचु प० दामन वाचु प्रभृति ।

दुनु संघ मे २२ जेहि २२ क अध्यक्ष । ई द्विज हग, श्री सविप्रमजी)  
 मन्त्र केलहु, जे २२ एड् पुन दलके एक कटका हग गभ जा'द । हग  
 अथवा चरमा रोडमे अथवा भ गिग विम्वन सभ जे (जे भोदि सभ क २०  
 पी० ए० ० क नेदानी करी छलाह और ओर ओर जी० आर जी० छथि) क पथ्या  
 मे टहरन रहै । अलि डेगमे हग सभक एक कथा (पावली) अथवा प्रति  
 पुनः नन्द मिथिल सभ रीय छल । नृनानागयण जी (विम्वनिल), मिश्र  
 काम आ अथवा क) अलि सेहो छल ह ओहि समय राजकमल नभयुवक  
 छल ह । भारी अथवा पुनः नृनानागयण जी कावेमे नागि पथ्याह प० म० अथवा ।  
 प० हीनाराम झा और देवनी रयण ला मर्माति सेही पूर्ण पागवान देवनि ।  
 दुनु दलक सभ स-सभाग अथवा सभ पहिमे बेगवरी वादमे सभ सभ ) हमरा डेग  
 पर अवेत गेलाह और पथ्या सभ लैत रहलाह । तीन चारि दिनक अनौरव  
 प्रधानमे पुन दलक नृनानागयण सभ सभ मैथिलीकरण भेल और एकीकरण चल  
 सकल भेल । मधीन सस्थाक नाम प्रायः मैथिली संघ पड़ैक । ओहि उर-  
 लधामे २६ वृद्ध और (मिथिला निकेतनमे) भेल । जाहि मे दुनु दलक  
 सभय सभिल्लि सभ सभ प्रेमपूर्वक हमरा लाकनिके छुड मिथिलाक रीतिर  
 (अथवा विम्वन सभ, माछ, भोजन करौनि । ता० ३१ दिसम्बरक'  
 रातिमे ओ लाकनि स्टेशन आदि हुनरा सभके तेहन भान भरल हुनकर विदा  
 केलनि जेना ओनी सेही हुनकर विदा केल जाइ छनि ।

१९५७मे हमर ज्येष्ठ पुत्र रामसीहन (गोपालजी) प० ए० मनोविज्ञानमे  
 केलनि । १९५८ मे दिल्लीमे चलवर स्टेटक भूतपूर्व स्वायत्तता क० रामभद्र  
 झा (ज वाच जीक मित्र छल) क सुपुत्र प्रा० जानन कुमार ओला गुरु  
 ओतय गोपालजीक वैवाहिक प्रस्ताव भ' क' ऐलाह ।

१ सुभद्रा देवीक ओहि कलकता सभाक संस्मरण मिथिला दान  
 प्रायः १९५८, जनवरीमे छल रहै ।



















१७-६-७७ कस्कीनी

पञ्चोत्तरीक मुक्तजीव मदिशो महराष्ट्र गणक निमग्न पावि एतत् पञ्च  
छी । ठाकुर भद्र पोनावर पतिता पुत्रा पर बैसन छथि । पं० मनुक, भ  
छा तथा प्रमोद पुनोपरीयन वैद भ० पति रहल छथि । कादीनी एक  
धर्मिनी तथा एक कटकुमारी गेहो प्रथम देवाक हेतु भावन छथि । बर्ध-  
नार्थि लभक सेवा लागल अछि । सम्पूर्ण यातावरणमे दमिक उत्साह भरल  
अछि । दूना गम्भीर भद्रकुमारी (प्राय गी देवी)मे आध्यात्मिक विषय  
पर समीक्षक आशय भेलने के भावनाय सगरी संवादक स्वरण करा  
देनक ।

२६-७-७७, दरभंगा

भद्र हरमंगा जाकाजगती केन्द्रमे मेधनी गण मोडीमे सम्मिलित  
भेलहु । हमर 'साकमार' तथा 'सत्त्वम संवाक प्रायश्चित्त' पर विमोद  
वाता प्रसारित भेल । कविहर अमरजी और डॉ० भवनाथ भिन्न जीक  
मनोरमक गण रोही भेलने ।

उदुपरांत हम सब डॉ० लक्ष्मण झा (कुलपति, विधिला विश्वविद्यालय, नो  
भेट कय अद्युपेन वैलिपन न विविक्त गोरन मुक्ततः संस्कृत श्री दर्शन न  
क' छैक, १२५० एही दुनु विषयक स्नातकोत्तर पदार्थ एतत् महि होइत अछि ।  
ई केहन विद्वत्पणा छीक ? ओ हहरा एहि प्रमाणक हेतु धन्यवाद दएत  
जीव आश्वासन देलनि जे आब सर्वप्रथम एकरे आवश्यकता कैल जायत ।

१८-८-७७, पटना

मेधनी संस्थाके 'ध्यास'जी द्वारा अनुदित 'विप्रदास' (हरत मनुक  
प्रतिष्ठ उपस्थित)क विमोचन केलहु । भावमुक्ति पं० मुनीश कुमार झा,  
पं० श्रीकान्त ठाकुर विद्यानकार, श्री दीनानाथ झा पं० श्रीरामचन्द्र शास्त्री,  
श्री राम कान्त झा, जयदेव बाबू, विद्याकर बाबू प्रभृति गणमान्य लोक  
गमाराहुत उपस्थित छलाह । हम ध्यास'जीक विमोचनीय वैधिली सेवाक  
सहायक करैत शुभकामना प्रदान केलिएन ।

२६-९-७७, पटना

भाद्र पक्षानीय राजकीय शिक्षण संस्थानमे पुनराही, सहृदय साहित्य सेवा  
उपस्थित बर्धनी जी द्वारा संयोजित 'कामायनी मोडी'मे कविहर आरसी

जीक सम्मिलित हमर सत्यवतामे मनोजित भेल । हम आरसी जीक जनैक  
संस्मरण कहि शुभकामना प्रदान केलिएन । एहि अवसर पर बर्धनी प्रवासी  
जी, कुमुद जी अकिम जी प्रभृति मद्रा अरन-अरन उद्गार प्रकट केलनि ।  
बर्धनीय ठाकुर परिवारक साहित्यिक रस रस वैद भ० पति केन कवि  
सम्पन्नमे एक मनादित प्रमोदपतिमे कविजी सुमन कान्त २२-  
मिल एह हृदयपरी लाव मनके । वसंत प्रभावित केलनि ।

२८-९-७७ पटना

भाद्र शुक्लमेधन बर्धनी द्वारा आयोजित कीर्तन-गीता निमग्नमे एक  
साहित्यिक गमाराह भेल जाहिमे हमर सत्यमि बर्धनी उपस्थितमे शुभकामना  
प्रदान केल भेल । आहोमे सब आ पुराण पुनरीक्षीक प्रविष्टि साहित्यकार  
उपस्थित छथि । वदित श्रीकान्त ठाकुर विद्यानकार बाबू अक्षयमि मिह प्रि  
मदन मोहन झा पं० दीनानाथ झा पं० श्रीरामचन्द्र शास्त्री, पं० मुधाशु केकर  
चौधरी, जयदेव बाबू 'ध्यास' जी, प्रो० आनन्द भिन्न गोपराजी, श्रीमान्य जी,  
प्रमोद कुमार चौधरी, सुजन जी, रवीन्द्र ठाकुर मोहन भागदत्त, कुलानन्द  
जी, मुक्त सोम अचरनाथ जी, रामानन्द 'रमण' प्रभृति शुभाक्षणा प्रकट करै  
छथि । हम अरन मेधिली सेवाक प्रसंगमे विद्वत् संस्मरण सुनबैत छिएन ।

२-१०-७७, जनकपुर

हमसंगीय परमी कनकाद, भूधनजी आ हमकर सकल संगीक संग संग  
पुन होहु । श्रीरामजीक मामुर (अध्यापक बन्धुम आ अशोक वाटिका  
पत्तिनह छथि आयल छलहु, एतत् हुनकर नेत्रक सदिर धौनी छल, ग चिर  
अभिलाष आइ मूर भेल ।

बधर डॉ० धीरेन्द्रजीक हमर देवाक गूणना भेटने त ओ सदस्यन  
(राम भरोम कपडि प्रभृति साहित्यकारक संग) हमर आवात होइत  
(हृदयमे आदि पट्टेन छथि । दोनर दिन अखिल मेघान मेधिली साहित्य  
परिषद्, २०-२१-७७ कॉलेज कैम्पस आ आधुनिक सादृष परिवर्तक सम्मिलित  
तत्प्रायमे ज्ञानकी गतिरक विद्यालय प्रमोदमे हमर मेधिली सेवाक पुरस्कार  
स्वरूप अभिनन्दन कैल जाइछ । हुनका लोकनिक साहित्यिक पत्रिका 'अर्चना'  
एह अन्वय मेधिली कृत दक्षि आयल होइछ । सभामे अगेत गणमान्य  
मेधिली साहित्यकार उपस्थित छथि जे मेधिलीक गरम भक्त छथि पं०

मृत्त प्रसार उपलब्ध है। यद्यपि पञ्चावलीक रूपान्तर होने क्षति, तत्पर किन्तु  
अर्थ सुनवैत सृष्टि।

रातिमे शुभकाल के आगम शुद्ध मिश्रण के रीतिमें प्रोत्तिमान होकर  
अच्छ। हनकाल के अन्त में देवि मानन्द होइत अछि।

१९९-३७, पटना

पटना रातिमे मध्य शीतलीक अगोजन छल जाहिमे हम, पं० श्रीरामचन्द्र  
गोस्वामी और हनकाल के बाद सम्मिलित भेलहुं। हम उर्दू गजल और  
संस्कृत छंदक गंगा गुरुजी सुनीलने।

२४-११-३७, पटना

आइ बेतना समिति के विचार गोस्वामी अध्यक्षता केलहुं। ओहिमे डा०  
जयकान्त मिश्र, डा० प्रबोध साहायण मिश्र, डा० प्रभावती साहू तथा हिंदी,  
बंगला और उर्दूका प्रतिनिधि (क्रमशः डा० मदन किशोर गोस्वामी डा० सेन  
महा डा० मधु) प्रभृति आलापक साहित्यमे मधुमेतना पर आनन्द-अपन मिश्रण  
पाठ केलनि। हमहुं अपन समर्थतात्मक विचार देलियेन।

२५-११-३७, पटना

आइ राति बेतना समितिमे कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता केलहुं। ओहिमे  
बंभुर गुप्तजी, मणिपद्म जी, गणेशजी, बुद्धिनाथ जी, गुंजन जी, प्रवासो  
जी इत्यादि कवि अपन-अपन छंदक कविता सुनीलनि।

२५-१२-३७, लहृविवासरार

संस्कृत श्रुतमे 'संस्कृत लोक' के समारोहमे विविध साहित्यिक रूपमे  
भायल छी। आचार्य रामकृष्ण साहू (जे हमर विशेषार्थ रहि चुकल सखी)  
सदस्य एवं स्थित स्ताना केलियेन। विद्याभारती श्री दिगम्बर ठाकुर, मन्मथ  
वि० वि० क कुमपति पं० रामचरण समी, मधुपदी, मणिपद्म जी आदि  
उपस्थित छलाह।

हम एक कविता सुनीलहुं। हम आइ जाठ संकल्प करल।

४-२-३८, पटना

साहित्य आचार्य जयकान्त मिश्रक अध्यक्षता कएलहुं एतय आयल  
छी। एतयहुं वन वन मतमे भाष्य केलक। विद्याभारती आचार्य  
जयकान्त एक भव विभिन्न भाषा-मार्ग उपलब्ध छलाह। शुद्ध भाषा डा०

उपलब्धकर बोधी नव अध्ययन निर्वहित भेलाह। हम भविष्यी समिति  
अध्यक्षक हेतु बंभुर डा० जयकान्त मिश्रक नाम प्रस्तावित कीलियेन जे सर्व-  
सम्मतिसे स्वीकृत भेल।

६-२-३८, काशी

एतय काशी विद्यापीठमे हनकाल प्राध्यापकक नियुक्ति करल जायल छी।  
कुमपति डा० रामचरण साहूक संन देसि कय अगवर्तिता केलहुं।

कार्योचरान्त पुस्तकालयाध्यक्ष पं० मधुसूदन साहू हमरा सभकेँ अपना  
अभिव्यक्ति देलाह और संस्कृत-मेलन, मानस मंदिर तथा बुद्धि-वैद्यक केरा  
पर (इमाना मंदिर) पढ़ेबा गेलहुं। जीतम बोधी साहू (पं० सुदीप साहू  
पुन) हमरा 'संस्कृत भवसाधु' एवं किछु अन्य पुस्तक देलीअन  
जाहिमे काव्यिक प्राचीन प्रसिद्ध पंडित (पं० अवि कुमार साहू, गंगाधर  
साहू, आचार्य साहू) एवं अन्य आचार्य/कवि पत्र-पत्र देल छलन। ओ  
सभ भाव-व्यपार में गेल छल और आकर पुनः प्रकाशन नामक चाही।

१२-२-३८, पटना

आइ एक भवकर मोर समारोह सुनि सल्लो रहि गेलहुं। सन्धान-द  
बाबू एक बर दुर्घटनामे कालवस्तु में गेलाह। ओ कव्यिक विद्याभारती  
गाम (पुनहु) जा रहल छलाह। पन्तु देवी विभिन्न गतिः। हनकर ओ  
जीवत हेतु नेहरा अक्षिमे नयैत अछि। भाव पटनामे हमर ओहत सल्लो-  
पूर्वक 'साहू' कहलवला महि रहलाह।

२-५-३८, काशी

एतय संस्कृत विद्याभारतीमे प्रयोग नियुक्ति करवाक हेतु श्रेष्ठतम कविटीक  
संस्कृत 'अ' भाषा में दुर्घटना पं० मधुसूदन साहू और मधुसूदन  
साहूक संन देसि कय अगवर्तिता केलियेन। मिश्रता  
बोध गंधा-५ प्रो० गोस्वामी नाम अनुसंधान केलियेन। प्रो० समर जाल  
पाठेह हमरामें भेल करल (इमाना मंदिर) देलाह। प्रो० जयकान्त साहू  
मन्मथपद्म पं० अनुसंधान ठाकुर, प्रो० विद्याभारती गुरु प्रभृति गेलहुं। दोसर  
दिन हम प्रो० दिगम्बर साहू आहूँ नाम के Friends of Linguistics  
Analysis in India and Philosophy के काङ्ग्रेसि रामचंद्र एमोन्ट करल



११६

प्रकाश, प्रकाशिता अतिरिक्त के द्वितीय । अती शीत पर भुवनज के कार्य, प्रतियोग हेतु । अतः प्रकाश प्रकाश अत्यन्त यत्न, अतिरिक्त । ३१-५-७५, राहुरा

आइ भुवनजीक छूथ धिवाइ पं० सदाशिव जी (डिप्टी कलेक्टर, कल्याण) देवीस भेजत । हम सब किछु माटा (माताजी आ हुनकर सौतू कल्याण, लक्ष्मीजी, श्रीमन्ताय जी प्रभुनि) पटनासे बरियातमे अपनहुँ सँ बरभंगारें ओझाजीक संग अछि, चन्द्र, गणेशजी आदि सम्मिलित भेलाह । जनवासा एकटा सकल इच्छासे छलैत । हमर गृहबाग प्रथम ओझा जीक बहुलाइ प्रो० जवाहर श्राव ओतथ छल । भुवनजी नीक जकाँ सभजन भेल ।

दशर दिन हम आपसँ वनगम, महिषी आ बाबा लक्ष्मीनाथ गोलाई और सनगारक मंदिर दखन क' ऐलहुँ । मदन मिश्रक द्वार और राज कमलक घर सेहो । ओहिछाम हुनकर के भावना समझल से पछमे भक्त कहलहुँ के 'मिथिला मिहिर'मे (१-७-७५) प्रकाशित भेल ।

११-७-७५, पटना

आइ कपूरद भणिपदम जी ऐलाह । सरस साहित्यिक चर्चा कलय सामेल । एतना बाइसे हिनकर बालि चोकि-ओलाह हमरा सभक आगी राखि देसनि । एही बीच मुमन मीन आदि भेलाह और हमरा सभकेँ धर्मजीक कामाधमा गेठामे ले' गेलहुँ जहाँ कविबर आनकी नरसम बाइसक अभिनन्दन केल गेलैन । हमहुँ सभ हुनकर सवसला करैत अपन सुभोद्धार प्रकट केलैतैन । साक्षी जी अपन ओजसवी भाषण एवं कवितासँ सभकेँ मुग्ध क' बेलनि । उमाशंकर वर्मा (संयोजक) सभकेँ कन्याशर प्रदान केलथिन ।

२-१०-७५, लखनऊ

एतए लखनऊ युनिवर्सिटीमे दशम मासक रीडर नियुक्त करबाक लेल आदल छी । ओहि अर्थिमे दिल्लीक प्रो० बहाउद्दीन, कलाटकक प्रो० शाह, कुलपति डा० मिश्र, विभागाध्यक्ष सुधी कपूरेश्वर धर्मा सेहो छलाह ।

ओतयसँ मोटर द्वारा लखनऊ भेलहुँ जतय हमर भर्तजी रमा रहैत छलहुँ । हमरा देखि आ' सभ उत्साहमे भ' उठै छथि । रमा नुरमा हाटसँ माछ भोगस तख सगत छथि । बच्चा सभ हमरामे नभि ज'एत छथि ।

आज्ञाजी और बच्चा सभक संग विगाना पार्क देखल जाइत छी । ओतय 'निराला' जीक भण्ड्य संगसरस-संग ग' ब्यापिन छैन । 'निराला' कविताक जोक आधार पर निर्मित 'बहु सोहरी परवर, इलाहाबाद के पक्ष पर' पर्यन्त सजापूर्ण मृत्ति दृग्ग्राह्ये अर्थः अर्थ । अवन साहित्यक एक प्रति स्नेह-सम्मानक एहन सुन्दर अभिव्यक्ति देखि मन गुणवत्ता जाइत अछि ।

११-१०-७५, दरभंगा

साहित्य अकादमीक मैथिली समितिक मीटिंगमे आयल छी । संगमे श्रीमन्ताय जी और पं० गोविन्द झा सेहो छथि । हम सब भाषाजीक आशय (संवाली टानाम) ठहरल छी । संस्कृत विश्वविद्यालयक भवन (आनन्द बाग)मे बैठक छैक । यवातमय सभ मोटे ओझाजीक संग ज'ए छी । ओतय डा० जयकान्त मिश्र (संयोजक), सुमन जी भणिपदम जी, माय'न'ब जी, रमाकान्त जी तथा श्रीमती नीरजा देवीसँ भेट होइत अछि । मैथिली साहित्यमे प्रगति अनबाक हेतु अनेकी प्रस्ताव पारित होइत अछि ।

१२-११-७५, पटना

आइ बेचना समितिक विद्यापति जयपीरमे कवि सम्मेलनक अध्यक्षता करैत छी । श्री किरणदा, सुमनजी, मणिपदम जी, व्याधवा, सायानन्दजी, सोनेजी, सु'न'ब जी, भण्डेयजी श्रीमती शांति सुमन प्रभृति एक सुन्दर शरस कविता होइत छैर । हमहुँ एकटा गजब गादि सुनबैत छी—

कहू की श्री बाबू, किछु महि फुरैए  
ई युग देखै छी, छवुटा संगैए ।

(ओ बेतनाक संघ पर प्रायः हमर अतिम कविता अछि) ।

१२-१२-७५, पटना

एतए डेरमे एकसरे छी । भुवनजीक यात्र और कविता दरभंगा छथि । गोपालजी रहियाक विद्यापति पर्वमे गेल छथि । एतय केवल बहादुर अछि । प्राग कास रमाकात ठहरल जाइत छी । एकाएक विविध सम्पन्न होइ अछि । पेर तलबलाय संगैत अछि । अखिर आगो अग्नार भ' जाइ अछि । छोमे छथि पर्वत छी । छात्राध्यक्ष किछु छात्र (आनन्द प्रभुनि) मिश्र पर लडा पैरा केन अर्थय छथि । डा० अनाद कुशर ठाकुर देखि कटैत छथि जे 'पार्थ सन' बीमारी अछि । बहादुर जीखि दैत छथि और राय दैत छथि जे आरब अकसर बाहर नहि जाइ ।



बाबूक (जि हमर शिष्य छन्हि) और जिनका नाम ३७ ध्यात-ध्यात, माता आर्यो-जित छथि) पिन पर स धारण करैत छिन्है। ध्यात-ध्यात, सभक ध्यात-ध्यात प्रदान करैत छथि।

२०-१-८०, पटना

श्री० बाबूकी नाम आ पटना कोलेजमे श्री० सुमर नाक भाषण (मैमिनी आ सताजीक तुलना) मे अव्यवस्था करैत हेतु ल' गेलन्हि। सभमे ध्यातजी, परमात्मक ध्यातजी, गोपेशजी, कपिलेश्वर जी प्रभृति छन्हि। श्री० जानन्य मिश्र सभके ध्यात-ध्यात प्रदान करैत छथि।

२३-४-८०, पटना

आद वेतना समितिक प्रवृत्त भावना दृष्टि द्वारा विचारित अवस्थामे आयो-जित जानकी नवमी मे सपरिवार सम्मानित भेलन्हि। श्रीमती रंजनाजी, प्रभावतीजी, साकुलताजी, कविताजी, वीजाजी आदिक भाषण भेलनि। श्रीमती प्रभावती, रंजना, वीजा, मधु आदि कांटी विचारित गेस गोलनि आदिनि शुद्ध मिथिलाक वातावरण बनि गेल।

बधुपर अवस्था बाबू, अनिरुद्ध बाबू, भावना जी, गोपेशजी, गोपेशजी, रवीन्द्रनाथ जी प्रभृति अपन-अपन उद्गार प्रकट करैत छथि।

हम सौदाजी प्रति अपन भ्रातृजति अर्पित करैत मिथिलाक माटिक भेटी सभके सन्तोषित करैत कह लएल जे ओ सभ तिमर-द्वेष कपी भुक्तक जे सँ दि सकताह, तिनके बरण करब। एहि पर योतम सन्तोषित सभ कन्या हाथ ठठा क' अगुनोदन करैत छथि। ई देखि भावना भेल जे आव तिसकामुर मदिनी भवानी जागि रहल छथि।

सुताइ १९५० सँ सुताइ १९५१, पटना

विशाल-विशाल अकस्मात अहि सुता आइत छथि। लगैत छथि जेना हम ऊपर उठल जा रहल छी। ऊपर आर ऊपर कही ल' जा रहल छथि? कानमे विभिन्न स्वर सुनाइ रहल अछि—'अर्थ ई की स गेलनि?' ठाँवर, अस्पताल, हमजँदी, एम्बुलेंस "ह्वह्व-अटलट" फुरै। तकरा बाद सुन्य दृष्टि अंधकार। पता नहि कतेक दिन अपेत रहैत छी। क्षणिक चैतन्य अवस्था छथि, जननीमौनिक प्रकाश जगै। पानीके देखि पुछैत छिन्है—हम कहाँ छी? काहीमे कि प्रकाश? ओ कहैत छथि—पटनेमे छी, इन्टेन्सिब केशर

युनिटमे। डाक्टर मना करैत छथि—एखन डिजिटलमे छथि...बेसी नहि बजबिनी। भाषणजी, लखन जी, रमनजी, सुननजी, कुपवाइ सभ सेवामे लागल छथि। करो ह्व इ त'वय जा छथि, मरी कल लेने अवस्था छथि...कैओ बरसाहा स'क' बैसल छथि। पुनः बेहोशी। फेर धम धमि जाइ अछि।

दू-धारि चोटे सीरस लग ठाढ़ छथि। श्री० मशोक कुमार ठाकुर, श्रीमती, श्रीमती जी—सभ नहूँ-नहूँ कथ क' रहल छथि—आइ पाँच दिन पर बेहोशी दूर भेलैन अछि। एखन बहुत हिफाजतक जरूरत छैन।

कतेको साक पुछारी करव अवस्था छथि। कितका कितको बीमरि जाइत छिन्है। सधुपर सतीस बाबू आनन्द बाबू, ध्यातजी। गोपेश जी अख-बार पाठ क' सुनवैत छथि—अपनेक बीमारी विस तरफरक ध्यान आइल भेलैत छथि। मुख्य मशोक आदेश छनि जे भित्तिमा मे काना लुटि नहि रहि पावब। कतिपय मौजमंजलक सखस सेहो जिम्मा लेने अवस्था छथि। घोषणा होइत छथि जे हमर बिकटताक स्थिति आर सरकार करत, परन्तु ओ कार्यान्वित होवयक पहिनाइ अस्पताल सँ दिशाल दूरिस्कट भेटि आइत छथि।

अणुका बाबू बरबर पुछारी क' जाइत छथि—माता, भाव केहम हाल? हम कहैत छिन्है—अहाँ शाक हरण छ, तँ हमरा कोमे टा रहल, फूलस्टॉप नहि पड़ल। बूझी तँ हमर एके ठाँवर अहाँ छी ए० के०। आ मुस्कुरा क' कहैत छथि—साब सेरा जा रहैत छी। आनन किछु किछु बसैत-किरैत रहब।

हमरा जागवय लगैत छथि। एखन तँ हम पक्ष पर अपने ल' करोटी नहि फेरि सकैत छी, अपना पैर धर ठाढ़ क' बलि कोना सकब? परन्तु ओ जावस्त क' बँसल छथि।

दू जुलाई के हम तहिमा एम्बुलेंस पर आयल छी, १५ के वेश वापस जाइ छी। आदि ठगिस कोठ सँ बाहर जचितहि पूर्वक प्रकाशमे अहि घोषणा जाइ अछि। रङ्ग मे धाक भाइ कान्हा लपिन छथि, परन्तु ओ घाट नहि, धरमे ल' अवस्था छथि।

धोर अहचि स' भेल अछि। रतना पुछै छथि—ककानी, माझूर माझ

सोचाक मम होइत अछि । ओ अपना घरसँ माछ यमा क' लवैत अछि ।  
फूलबाइ ग सक फुम्हरीगे जेन अ पल छवि । ओ रचि खानि दैत अछि ।

एक-दू सामक निरन्तर ओषध लेबम, विद्याम एवं पथ्य भोजन सँ खरीर  
एहि यीम 'अ' जाइत अछि जे स्वयं ठाढ़ मम दय-वीस बेग चलि बापकम  
जा मर्बैत छी । ल'क मम कटैत छवि जे हुमर पुनर्जन्मे भेल अछि 'अपनहु'  
बुझि पवैत छवि जे ममक द्वार पर जाक' कीरि जायस छी ।

परन्तु एघन बुझर अमन नहि भेल छल । इतिहासक राय भेनैन जे हमर  
अखिर आरंभसँ मही दौध्रि 'अ' जायस जरूरी अछि । नव विभागाक केबिन  
मे भर्ना भेलहु । '४ नवम्बर' केँ सुप्रसिद्ध केन्द्र-रिसेपश ४०० ए० एन० पांडेय  
मानवविज्ञानक अतिरेजन कैलनि । साधारणतः सःक एक मन्ताहम ठीक 'अ'  
जाइ अछि । परन्तु हुकरा अ'हु ने चिन्ता सन्धिया गेलीह । 'अ'केर खामिये  
हामर चौक मजाल—'सबनस ! जेसि मे एतेक सोचि कहै छैँ माहि  
मेस । अहाँ दिखब क्षमोति लेने छैह । आब मयबाजक भरोस ।' स्वस्थ  
मत्री (उमेश्वर वर्मा) जिज्ञासा मे अवैत छनि । 'हामरके' कटैत छविन—  
कहुना अछि बचा लिपीन । पांडेय जी मजैत छवि जे ओ अपना भरि  
प्रयोग करतह परन्तु फन तेँ भगवानक हाथमे छैन ।

दोसर दिन म'प 'अ' जेन त'हि हामर आश्चर्य चलि 'अ' देणहु—  
अरे ! ओतबा राते बागित कीला सुखा गेल ? भगवानक सीला । आब  
महाँक बाँझि बाँझि जायत । परन्तु छेर मोचि नहि लेहै ।

एकर भार लकम जी अपना उपर सैत छवि । ओ छी बजे रात सँ  
लय छी बडे कार धरि न'रम मे यंगल रते छवि । अहाँ कनेका हाथ सुबुगाय  
जमैत छल आ दहिम करीट छेरम सगै छनहुँ कि ओ छ' सैत छलाह । हाक  
एहन साधना हेसि ममकेँ आश्चर्य लवैत छैक । लसमम एक मात केबिनमे  
रहेत छी । बल्लो राति-दिन लंग रहि परिवर्ण करैत छवि । हरिवर पट्टो  
संगीने डेर' अवैत छी । लदुपराभन एक मासक बाद सैसक जीव क' चरमा  
भेटैत अछि ।

अगत १९५१ सँ फरवरी १९५२, पटना

विप्लवक समाप्ति नहि भेल अछि । लगातार वर्ष दिन हरि अहिनस  
परिवर्ण करैत-करैत परतीक स्थाय्य अछि रहैत छनि । शक्ति-दत्त जागि

बाहु पर अनेक सेवा करैत रहलीह तकर परिणामस्वरूप स्थायित्व दुर्लभता  
सँ ग्रस्त 'अ' लम्बायत गेल कहाँत छवि । ठाढ़ होइते चक्कर आवय रगत  
छनि आ किछु छा नाह । डल छनि । आब हमरा प्रपन्न मैथिली हुमके विराज  
रहल अछि । समस्त परिवारक लोक (बाबू घेडा, सीनू लमस, सीनू काँची  
फुल्ल, ह' रमा, हुमना हेतु चितित छविन । लाना प्रकाश उपचार  
चलि रहल छनि । लक्ष्म जेहन ईश्वरेच्छा । के पहिने जायत तकर निश्चय  
नहि ।

विगत डेढ़-दू वर्ष सँ लगातार सकट पर सकट हमरा खीर निवृत्तिवादी  
(खीर गीतवादी), बना देत अछि । अपना भक्तिमे अस्मा नहि रहि गेल  
अछि ।

१९८० (१ जुलाई)क बाद के हम जीवि रहल छी से अवैत अछि जेना  
किछु दिनक एषमटेन्शन या डब बाँक घेत (अनुदान) भेटल हो । फतवा  
बिनक हेतु से बना नहि । ई परिस्थिती जीवन कहना खीनल मही बना नहि ।  
आब फर कहियो ओ बहारक दिन आगन्त-विनायक अपन आधि सक्ता तकर  
आशा कम्मे अछि ।

एहि बीच हमर 'ट्रैन्स ऑफ लिमिटेडक एनालिसिस' छपिक' आवि  
गेल अछि । अपन अंतिम कृति आत्मकथा (जीवन यात्रा) जकर चारिटा  
फर्मा एहन छलन अछि, सेहो अपन जीवन यात्रा सँ पहिने प्रकाशित भेल सी  
त संतोष हेत ।

मार्च १९५२ सँ

१८ मार्च ८२ केँ हम सभ दोसर विद्यायाक मकलमे भिक्षा गहाड़ी  
मोहल्ला (धरहरा कोठी रोड)मे आवि गेलहुँ । 'बुवनजी बरभगा सँ आवि  
सभ गणजल बना जाइत छवि । ई डेरा बरमानक दृष्टिमे अनुचिधगर  
ह'एहुँ हमसँ स' जाग भेल जे ब'पमे रगगीर बकमत रहैत छलाह ।

पत्नीकेँ ब'प रहल जा'म छ'र । स'म ल'गला दिखल न'इत छनि ।  
स'म ल'गल ग'र ग'रि जा'इते ग'ना च'रने ज' फल'डाम प'सि आ'स  
छनि । दु'द ब'रि प'म 'अ' र'ग र'गनि मु'ग छ'र ग'रत ग'नि ग'रत ग'रत  
हु'क' ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत  
हु'क' ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत

४०० ब'रि ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत ग'रत



नाटक रङ्ग मैदान सेही उन्नीस आधिन सभ मोटे विषयानुपूरक हुमका  
सर्वे सही कानून मुँहमे जाइत देखीत रह्यित । वेडा नटा क अन्तर हउ विनी,  
राना, रमा, कुमारी बाद सभ मोटे जाहि सेवा करैत रह्यथिन । गोदावरी  
एकटा एकेपुत्रोपेव जा तयुपरीत एक पैर सै तेहो देखीतबिन । परन्तु हानस  
मे सुधार नहि भेलनि । आज ओ हथम उठि-बैकि क' अपन परिचर्या करवा  
मे असमर्थ भ' गेलीह । दू गोटा धरा क' बाहर ले जायत, फेर क' जायनि ।  
देवनी बलिसे भेलनि ।

१८ अगस्त के मैथिली गोष्ठी (सीदपुर) वित्त सँ सीनेट हाँस मे हमर  
अतिथिबन्ध केल गेल ।

२२ मई के बिहार राष्ट्रभार्यापतिपरक दिवस कतिपय बसोबुद्ध हिन्दी  
सेवीक संग हमरो बस हमार टाका पुरस्कार भेटल ।

२९ जून के मैथिली जगदमी दिवस अन्त्या बसोबुद्ध मैथिली सेवीक  
संग एक हजार एक टाका पुरस्कार प्राप्त केलहुँ ।

जीवन गणना-विपत्ताक सिस्मा अछि । एक दिन हमी स दोसर दिन  
हमर । एक दिन पुरस्कार स योगर दिन रूठ जा मे समाधान तेहन बस देखान  
के सब हँसी छिना गेल ।

रक्षा बंधन दिन हम पत्नी केँ राखी धारि देलियेन स ओ बजलीह—  
आज हमरा जीवाक आसोबि नहि रिअ' । हमर शरीर पराश्रित भ' गेल,  
एहन जीवन जी-दक' की कान्य । हमर मोह छे-दि रिअ' ।

तकरा बाद हुनक एक सप्ताह भ' गेलनि ।

१ मार्च के ओ कोमा मे जावि गेलीह और (१४ अगस्त केँ १० बजे  
रामिने सर्वशक्ति हेतु विदा भ' गेलीह । बेहरा सीम्य-अकुल रहनि जेना सुतल  
होयि । भारे बाक भाइक संग मैथिल गोष्ठी बना सब दान्ह पर ले  
गेलथिन ।

हुनका नलि गैराक बाब हम एकसर भ' गेलहुँ । गोदावरीक मेहो  
झाकर दरभंगे मे गेलनि स सभक विचार सँ पटनाक डेरा उन्नीस लक्षारमा-  
सराय जावि गेल । लक्षारमास मे जाप्राजाक अगमे एकटा डेरा जवननी  
ठीक क' रखने छलाह । मुश्किल जकाँ हम बलि देलहुँ ।

अपना जीवन पर दृष्टिमान करै छी स एकरा खेल जकाँ बुझि पड़ैत  
अछि । ज्योन अर्द्ध जना एहेन जीवन सीलाक सृष्टिकार जे सभसँ महान्  
कथक रहल, हमरा मुकुन्द हास्यनधारी पाठकमिआ क' क एहि  
नाटकसारा मे पढ़ैत जायि । किन्तु दिन और पार करवाक [वा बसवाक]  
बाँकी अछि । छकरा बाब सचनिका पाठ ।

क्षण बाबो मूला खलमपि मुवा काम रतिरः

अर्थ वित्तहीनः अलमपि स संपूर्ण विभवः

नराजीर्णो रक्षैः नट हव वलीमंदिष्ठ तनुः

मरः संगाररंके विदति यमभीमी जयलिकाम् ।

एवा चत 'आत्मकथा' मित्रमाक बाद हम सोचैत छी के ई 'आत्मा' के  
थिकाह जिनकर कथा हम कहने छी । ई स सँह परि भेल के सोते रामायण  
पढ़ि गेलहुँ, नीता किनकर गाम ।

सबाबस न ई प्रश्न उठैत अछि जे 'आत्मकथा' क अर्थ की ? यदि एकर  
अर्थ होइक अपन (आत्मक) कथा स भारी ओझराहटि । जाहि आत्मक  
विषयमे उल्लिखल, गीता, बसन्तक एतेक राख विवचन कैत गेल छैन (जे  
आजीवन एहेन अर्थमे लेलहुँ अछि) ताहि आत्मक स आत्मक अन्तर्भाव  
नहि भेल अछि । तबन रूप रकर कथा कहि रहल छी ? हम ककरा 'हम'  
माससँ अभिहित क' रहल छी ? हम की के ।

ई प्रश्न उपर सँ जेहे साँझ लखैत जाइ, भीतर सँ सहेने जटिल अछि ।  
रक्षाक भीतर रक्षा छेक नयान जकाँ सहेत जाउ और अन्तर मे लक्ष-लक्ष  
परस भेटैत आमत । अन्तमे की हास सागत ? क्षुब्ध ।

गुन गन प्रश्न पर आउ । हम के छी ? कोह हम ? पचास वर्ष सँ  
वपेट पत्रारिका स्तान पड़ैत आब रहल छी कसब कोह हम कुन आवाज ।  
परन्तु एकर स्पष्ट उत्तर नहि भेटैत अछि । बर'ली कहैत छथि—आत्मानं  
विद्धि [अपनाकेँ जानु] । परन्तु कोना जानु ? कतबो अर्थ, सभसँ  
निश्चयान कहे आत्मबोधन महि होइत अछि । जहाँ कहब के पर्वत साधन  
[सम सम सम निधिना उपरति अन्त सागवान त्रिवक् नैराध्य मुमुक्षुत्वं  
ईश्वर प्राप्तिमान अर्चि] प्राप्त कक लक्षण आत्मज्ञान [वा ज्ञान ज्ञान] हैत ।  
अर्थात् 'हम के छी' से जनवाक हेतु भरि जम्म अवस्था करैत रहू योगाभ्यास



## परिशिष्ट-१

## पुष्पांजलि

हम अहाँक सीरस्मे बँसल छी । अहाँक जन्मठेमे जूब जमजोगार ठीप लागार हाथमे साल चुड़ी देखि अहाँक ओ आलिका-बधुवावा। हथ बाँजिमे नाथि उठैग अछि, अहिना अहाँक हाथ हमरा धराओल गेल रहय — 'इसो दुमरा नाम्नी कयां तुम्हमहुं संगरहे ।'

अहाँ तेहन सरल, निरुचल, निरीह प्रकृतिक छलहुं जे हमरा धरमे अविच्छिन्न सभक स्नेह-पात्री बनि गेलहुं । अहाँक धुव, भाग्य, मास्विक जँणबी हस्का देखि हमर माय-बाबूजी अहाँकेँ मुनिबग्या कजेल छलहुं । अहाँ हमरा जीवनक तेहन अविच्छिन्न अंग बनि गेलहुं जे हम सम्पूर्णतः अहाँपर निर्भर भ' गेलहुं ।

हम अपन सभटा काज अहाँकेँ सँपौल छलहुं । अहाँक गेलहुं ? मुने छी ? माथमे ठण्का तेल पचा बिज कगीक' दिथ । हमर जन्म पर्यन्त मोहिमादे' देवाक भार अहाँपर छल । परसो बरहर धरि छाया जकी संगिनी बनल रहलहुं, जीवन-यात्राक समस्त सुख-दुखमे सम्मिलित रहलहुं । हमरा आकाश छल जे हमरा सभत धरि अहाँ अहिना निमाहि देव, परन्तु निरुचर काज पहिनिहि अहाँकेँ छीलिक' स' गेल, जखन हमरा अहाँक सहाराक सभसँ अधिक प्रयोजन छल ।

१९२०मे हम तेहन अवसर कपस दुःखित पड़ि गेलहुं जे मेहोश अवस्थामे एम्बुलेस का'मे लदिक होलियेअ केयर आओर नदुपरालत भेलक काल-चिकित्सा विभागमे भर्ती भेलहुं । मोहिमे लगातार प' न' अवस्था छल धरि अहाँनिस भगि-भगि राति जागिक' अहाँ हमर जे अष्टपासी गहर करल रहलहुं तकर दृष्टान्त भेटल कठिन अछि । परन्तु हमरा रोगक पायसँ छोड़पथाक प्रयासमे अहाँ स्वयं कालक मुँहमे पड़ि गेलहुं । १९२१क अक्टोबर धरि अहाँ स्वस्थ या प्रसन्न छलहुं । हमरा प्रतिभास जेक करायल देनू फाबिदोजी विभागमे भ' जाइत छलहुं । हमर आरोग्य सामान्य उपलब्धमे

महावीरजीक संदेशमे नदहू चढ़य प्रयास अहाँ भितरमे कर्ने रही परन्तु अतदुपरमे नहि आनि कहौं एक प्राणसेवा राग आनि अहाँकेँ प्रस्तुत' लेल । दू-तीन मास धरि अहाँक पोषणमे पानि बहार कयल गेल, परन्तु आ राग क्रमशः बढ़िगाले गेल । जखन दिसम्बरमे अहाँक हज्जार सी० सी० पानि बहरायल तखन डक्टर सार्वभिक माय डगकलनि आओर आ अन्तिम निदान कयलनि जे हमरा आओर अहाँकेँ दूमर नहि देल गेल ।

१९२२क जनवरीमे अगस्त धरि बारम्बार एम्बुलेस आ रक्त परीक्षा कयल गेल बारम्बार स्तब्ध आओर शापित पड़ल अ गेल । परन्तु रोग बढिगाले गेल । अहाँ जीनसँ क्षीणतर होइत गेलहुं, कमपातसँ बुझल गेल सँ आ सँह असाध्य रोग अछि, जकर नामे सुनैत लाकिके' कौसाक सजाय जकी दू भ' पड़ैत छैक । परन्तु अहाँ अपन सभत सभ सहा दृष्टिक अनुकूल अनीम साहस आ धैर्यपूर्वक आदिपतित रहि चुपचाप आइ भयंकर रोगसँ सामर्थ्य करैत रहलहुं । अहाँ हमरा अपन बुरा कण्ट दूजय नहि देलहुं ।

आधा रातिमे अहाँक कोठरीसँ कुहरवाक शब्द सुनाइ पड़ैत छल—'हे राम-हे-कृष्ण आब जखी ज'चल ।' परन्तु जखन हम उठिक' अहाँक समीप ज'ए छलहुं त' अहाँ हमर आइत पानि चुपचाप आगत भ'क' पड़ि रहैत छलहुं । जेना कोनो कष्ट नहि हो ।

हम निरवध भौरे जाक' पुछाओ करैत छलहुं—की रातिमे निद्रा पवत ? अहाँ क्षीण स्वस्थमे कहैत छलहुं—'है । 'बस स' न,ह भेस' ? 'नहि ।' हम लासवस्त भ' जाइत छलहुं, परन्तु कनिया जे अहाँक सेवामे रहैत छी त' कहैत छलीह—'आधो भोर राति कछ-कछ अट्ट-पट्ट करैत रहलीह अछि । हिनका सभमे दुःख नहि होइन्हू ते' नहि कुम' दैत छलिन ।'

अहाँक तेहन मोर अरुचि भ' गेल जे कोनो भक्ष्य खायथक च्छे नहि होइत छल । भोरमे १ चम्मच दही-भ'न आओर रातिमे आधा कप दूध, आग भाग आहार रहि गेल । बारम्बार-बदलाक रस, हेलिक्स पयन्त कनक ठोरमे लगाक' छोड़ दैत छलहुं । हम अहाँकेँ कहैत छलहुं, 'अहाँ एहन मोर चन्दापण जत पर कय दिन जगिथ रहि सकय ।' । अहाँ एक कष्ट-विषयता नृषक-दुष्टिमे हमरा बिस लकैत रहैत छलहुं—'हे भगवन' हम जानाक' बुझाछ जे हमरा भीतरमे बहुत बेचैनी भ' रहल अछि । जोय क इच्छा ककरा नहि होइत छैक ? परन्तु हमरा आवेने नहि ज'एत अछि । की कक ? नगैत अछि







अभी सहीना अचिंतन अवस्थामें तबिल में रहने के लिये तबिल — तबिल दिश सप्त रा = छवि गोलाक समानि जहाँ एक आसनेमें रहल रहल। अहाँक दुसरे अचिंतन अवस्थामें रहल। जेम्हा तबिल रहल होइ। परन्तु अहाँ 'जीव कोश'में छलहुँ।

गोलाचरी ११वां दृश्य नाव तथा पीथीजी प्रभृति से स्वयं छलाह। कान वा नाद से प्रचलाय पवेल देरी समस्त कुटुम्ब परिवारक लोक भावि पहुँचलाह। दरभंगाई कुलराह, भोजाजी, मुसलजी दृश्यक कतिपय, देना पीथीसे लखनजी, काशीपुरसे रमा भोजाजी, दिल्लीसे बुलहिन कपल भादि ।

एहि बीचमे निजे अर्धत गेलाह तनिका अहाँक प्रत्यक्ष भावि आओर यथा-कदा रहित हाथक मन्त्रा से वृक्ष पड़लनि जेन ह्वाका सरके बिह्लि रहल होइअनि। परन्तु नहि जानि पीछि सकलअनि वा नहि।

१४ अगस्तक राति अहाँक काल राति छल। १०॥ यजे र तिमि एका-एक अहाँक कंठमें भर-पड़ी भेष आओर तबिल मार्ग द्वारा अहाँक प्राण वायु निकलित बेल। अर्थात् सजाओल गेल। अहाँक मुख मासुनपर केहूँ हौम्प सातिका भाभा विराजमान छल जेना अहाँ मुख निहामे निमग्न होइ। हम भोहिपर फूल बजा बैसहुँ।

हम अहाँक सौरभमे बैसल अहाँक हाथ धरल छी। आव ई हाथ जे ५० वर्षसँ हमरा हाथमे छल, मन्त्रदा हेतु बिछुड़ि रहल अछि। किछुए काउम लोक अहाँके एहि सोझागत रूपमे उठार गुनबी घटल जायत आओर ओतय विनायक अभिनमे मस्मक गंगाजीमे विलयन क' देन, जहाँ ६ वर्ष पूर्व वपनजी (६ वर्षक पीन) बेल छथि।

हमरा भी वृष्य देसनाक सहस्र नहि होयत। अहाँके लोक अभीपर उठाकल जा रहल अछि। जेना चारि पहारक काहूपर मरुफापर साँभुर आयल रहि ताहिना अहाँके आइनाचरि बोटा काहूँ द' क' घाटल जा रहल अछि। जहाँमें केजो घुँवक तहि अवैत अछि। अहाँ अगम जीवन पीन सजायक' भावि देखहुँ।

हम अहाँक अन्तिम अनुरोधक पूर्ति नहि क' सकलहुँ। जौनिसे रहो अहाँ नोर नहि रहल अछि। आव के अन्तरा अन्तरा भावि-से मोछि मरता-

पूज्य करन— 'अहाँक अनु अचिंतन अवस्थामें पड़ल।' आव हम ककरा संबोधन करबक 'अ', जहाँ देखलहुँ 'मुँ छी' । आओर अहाँक उपर भेटल 'हूँ' अर्थात् 'हो'।

एहि अवस्थालासक प्रवाहमे जी मुखदा भोजनी देवी फेर-कहिवा-रूप कौन रूपमे अवतीर' होइनीह वा कहियो नहि होइनीह।

## परिशिष्ट—२

## ओ दरभंगा : ई दरभंगा

ओ दरभंगा—(१)

जीवनक एहि संक्षेपवर्णनमे हम पुनः दरभंगा भाबि गेल छी, जे ओ समयक प्रभाव-भाव वितीने रहल । ओहि समय (१९२०-२२ मे) बाबूजी राम धारा मिहिरक) सम्पादक रहल । हम सब हुनके संगे मया साजारा मे राग रहल । राम धाराक फाटकमें से' मध्यवर्धक हरि सटकक हुनू कान सान-सान स्वाकन न्तर छलैक जाहिमे राजक सि-मन्त नहुनमाक अधिकारी तथा पवित्र प्रभाव रहल सनाह । ओहिमे एटा जनाकमे हम सब रहैत छलहुँ । सब वसाक एकै रंग, एकै साह-सवसाक और एक-बीतरामें सटल छलैक । हममे तस्वर देल छलैक । हम सब प्रायः १३५ नम्बरमे रहैत छलहुँ । मयमे सप्रेममोहन मिश्र (बैद्य) आ १० नम्बरमे रहल प्रभूनि छलाह । देहान्तमें गतेको अनभूआर पाहुन अवैत छलाह त भुविपा क दोसर श्रमके चल जाइत छलाह । तखन हमसब ओहि क' काम' रहैत छल ।

माधवेश्वर-गोखरिमे छूम छूमकी छलहुँ । सोहावर राजक पहलव-न (जनक झा) क अन्धारा छलनि रफाक कारखानामे बहरा-बहरा चहुँत चलैत देखै छलहुँ, धर्मसास सिद्धक गोवाधामें दूध ल' अवैत छलहुँ ।

सहक पर मलायक बर्फ चलैत छल । क ठर अवसामे जम जौल त गुरुन' क' कसरि क नैवेद्य अकौ पाल पर देल छल । गुरुजीबाबाक कवाकिन दाहि सगरीत अमे छलीह—त पमियाजा से' । ओ गोल-गोल सटमधुर फल (अपूर सम) एक पाउमे जाठ टा दैत छलाह, से श्रुव गुरुगुला क' आइन छलहुँ । धूम गरुड परिवरा छल ।

रातिमे माय आ सुभाडा [छांट महिने]के माधवेश्वर मन्दिरमे दामन कराव' ल' जाइत छलनि । ओत' माय अतमविभोर क' महादेवक गीन उठा दैत छलीह—'कलन इरव दुख मोर हे श्रीगान्ध' ।

हेरा पर बाबूजीसँ नैट करवाक हेतु अने ही दार्ष्टनिक मित्र अवैत रहल छलनि यथा गोसपुरक पवित्र भिक्षुकमाय मिश्र, कविबर हीताराम आ

प्रभृति । घातिलाप कलामे तेहन धनेय-दमकक यथा होम' समैत छलैक जे एकर धार रहि जाइत छल । एक बेर गोसपुरक पण्डितजी हमर नाम बाजीतपुरक स्मिप करैत कहलनि—

'बाजी त पुर करो जनने ताबत बाबूजी पूर्ण क' वेतवित नहि त गोम पुरक सोन पुर करत' एह-एह बाभिलास ह'इन छलनि, जे जात-द जावि जाइत छल ।

मम-ममयय रामनाम, हरिमन्दिर, कंकाकी मन्दिर आदिमे पावन म-मन्त्रि' र जट सिम' बृहत भाव होइत छलनि । बाबल धूर्ती-कचोड़ी, जिनगी छताइत छलैक, पावन मन्त्रि लोकमिक जातकामें चलैत छल । [जेन' धर्ममे घटव सगवेत अछि । अवन घट फूटि गेल स' घटव' से १] वात बिच-धमे अवच्छेदक ताक लच्छा छल' चलैत छल । ममम विम होइत छलैक पलम लच्छाए राश्ट्रीक लच्छा चल' चलैत छल । घटव घटव' मोर' क' बाबूजीर पात पर राजमोगक यथा होम' समैत छल । हमहुँ बाबूजीक सभ विद्यार्थी रूपमे बाह' छलहुँ ।

हृष्टपूजाक समारोहमे जातिक सम्मिष्ट भाविका तिष्ठेवरी बाह' तानपुरा पर दुपरी सर्वल छलीह—'का जान' प्रीति की रीति सट उरज । तुमस जा रे बानस ।'

ओ त समयक अनेको मन्दिरजग समुनि अछि १० १. मसक यलन जमाकानक टक (सहस्रहरिबन्धन), गीत मन्त्रिदक न'द'म'न, मुसलम आ पशुपतानक दगल, सीराइक बटुकबोक सगरज राममणि और तार'पाइक न'कम तथा अमदीय कविक बूटी रामायण, जाहिमे रामायणक दोहा जोडा गे' भाति-भातिनक जड़ी-बूटीक गुवला बहार क' अनाह मनोरंजन करैत छलाह । बाबूजी सभ बात कोनो अर्जन्तिमृत रीति सिनेमाक छिटफुट दृश्य जका तर्जैत अछि ।

हमसब ओ [१९२९-३३] दरभंगा मन पईत अछि अखन महेश्वरामराय गुरुक अन्धारमें पैथिली यातिक पथिक, 'मन्त्रि' वरुण = छम छेन हार 'कम्पावत' उग्याइ छल । 'मिथ' न प्रेम, विश'मय रसाधनी रिम पात स'वतायत मिश्रमन्त्रि-नचान । ए न गायन जे भट म जे दरभंगा भावनाशील अवैत छल, सकरो नाम विद्यापति ठाकुर छलैक । ओहि समय पुस्तक बजार विश्वरत्निय छल ।

सम्बन्ध अच्युतानन्द दत्तजी रघुवंशक आ हुनके अनुज परमावधजी सेल-  
द्वयक मैथिली पद्य सुवाप करैत छलाह । प० कपिलेश्वर मिश्र 'सीतादास'  
और कमलेशजी 'भजन मिश्र' लिखैत छलाह, माधुर साहेब जीवनाथ  
रायजीसँ तिरहुता भक्षर लिखवाय मुन्धर टाहण दनबौने छलाह । गंगाधर  
बाथू, नानेश्वर बाथू, कमल बाथू, पलट बाथू, बाबि हमरा सबकेँ मैथिली  
सेवाक हेतु प्रस्तावित करै छलाह एवं धर्मसार बँट छलाह ।

पुस्तक भंडारमे जनकपुरक सण्डलीक कमलापर कोबरसीला होइ छल,  
और भावलताजीक मैथिलीपत्र [रामजीक उहकन] स्नेहपूजक गाओल जाइ  
छलनि—

गरि हम तहि ई छी

हम कजा कहै छी ।

हमरा ओ दरभंगा मन पड़ैत अछि—

—जखन दुधरी बाजारमे घाटि जाने बेर रहू और भोट-बोट माकुर छी  
जाने बेर भेटैत छल ।

—जखन जमीनी नेबो पाइमे पाँच-झो टा बँट जल ।

—जखन हरियर पुरनिक पात, लाल-लाल कमलक फूल और सुग्गक  
सब बरैक छलाक, कारो-कारो फलेना आमुनक पवार लागल रहैत छलैक ।

—जहाँ रंग-विरंगक लाल-नीलर आमक अमार लागल रहै छलैक और  
दुध आनाने जलखरी भरि जाइत छलैक । जहाँ भारपर दही चलेत छलैक,  
वू आवि भटखू ।

हमरा ओ समय मन पड़ैत अछि जखन अलाह मासक वर्षा—दुर्भीले  
भिजैत-तिरैत बड़का आमबाजी अवैत छल । एक टाकामे बीस-पचास टा  
बड़का-बड़का मालदह आम उल्लिखि दैत छलैक । दूधवाली एक आगमि सेहो  
लौटा और दुध दैत छल ।

हमरा ओ दरभंगा मन पड़ैत अछि, जखन हम सब आ बस जी पतया  
जनाव आन खाय बँसैत छलहुँ त' बोभा लगवैत-लगवैत केहुनीसँ रस बह  
लागि जाइत छल, और बीच-बीचमे सरिगोक जठरीक जांगपर सपटा ओछि  
दुआइए केँ उठैत छलहुँ ।

ओहि समयक एकटा रोचक घटना कहैत छी । मुस्तक भण्डारसँ हम  
सब बीकाक टमटमसँ दरभंगा गेल रहौ । कुमार गंगाधर सिद्धक अतिथ ।  
हम, दत्तजी, शिवपूजनजी, प० करिसेवर मिश्रजी, कमलेशजी ओ  
महारथीजी । ओतम गणधन आओर ठंडा चरदक बाद हम सब तुमलजी  
(साहि समयक सम्पादक मिथिला मिहिरक) ओतम अवैत गेलहुँ । कबिबर  
प० सोनाराम जा पहिमाहि ओतण बंसल रहबि अओर अतिचारकेँ अत्याचार  
सिद्ध करैत रहबि । एचमेर भूनाक पाटी चाल रहल छलैक । हमहुँ सब  
ओहिमे सम्मिलित भ' गेलहुँ । चंदक संग-संग काबडरमक आस्वादन होइत-  
होइत राति भ' गेल । सोइपर सोइ सेहो मतोरंगक सप होम' लगलैक जे  
ओड़िक' विद्या होयबाक मन किनको नहि होइत छलनि । तखन घरबेवा आएह  
कयनि जे आव भोजन कइए केँ जाइ । दत्तजी मस्तमीसा निर्विकार लोक  
छलाह । कहलखिन—बेत, तखन ओर अमिक' दण्य हो । आसने घर वैसिक'  
गण्यक छुटका छूट' लागल । बीसारा पर छनन-मनन होइत छलैक । हमरा  
सभकेँ एतबा धैर्य नहि रहल जे सब बस्तु बनि गेला पर भोजन आरम्भ  
करी । सेना-सेना जे वनेत गेलैक, से आगामे अवैत गेल—सरल तिलरोर,  
अफाइन भात, अहोरी-भाटा, गूडक दालि, भदवर, जालू-कुम्हू-झी, यही-  
आम । एवं प्रकार जे पूजा भूटा सँ प्रारम्भ भेल छल ते दही आमक पूर्णप्रति  
पाबि नमाय भेल । एहि दीर्घकालीन गण्यक प्रवाहमे एकटा इहो लाभ भेल  
जे राजवंशिक संग गणधनमे छटुर ककाम एक तरंग (चाणक्यक जन्मभूमि)क  
महात्मा सेहो भेटि गेल । सब गोटाकेँ अपूर्व आनन्द आवि गेल । सहृदय-  
शिरोमणि सुमनजीक ओहिठामक ओ चण्ड स्फुरित, शिखर, मूरभित, लोमनस्य-  
पूर्ण यहभोज अचावधि स्मरण अछि ।

ई दरभंगा (२)

आइ पचास वर्षक उपरान्त पुनः दरभंगा आवि गेल छी, जेथ जीवन  
अपने माटि पानि पर निःशेष करबाक हेतु । अतीतक ओ आकर्षक स्मृतिविल  
खीज केँ एत' ल' आगल अछि । परन्तु एत' अजला पर हमर ओ परिचित  
दरभंगा कतहुँ देखबामे नहि अवैत अछि । ई शहर अवचिन्हार जकाँ लगैत  
अछि । मनमे आगल जे ओ तथा बाजार देखि जावी जहाँ बापूजीक संग रहैत  
रही । गेलहुँ, एक छोरसँ दोसर छोर घरि छानि भयनहुँ । ओ नयावाजारक  
घर कतहुँ नहि भेटल । कालक रोसर जेकरा रोलिक' सरपट-सपाट छड़क  
बना देने छैक आहिमे ओकर नामोनिशान नहि छैक । अतीतक लेखमात्र  
बिहल नहि । ते ओ नगरी ते ओ टाल । ते सोम साहि ते सहिजनक गाछ ।  
कतरा पुष्पिक ? कनेक काध याव पर हृष्य व' बैसल रहलहुँ ।



स्वास्थ्य सुधारक हेतु दूध-आमक लोभसे बरभंगा जायल छी । भोरे पाव  
परि कुछ सोझुघक हेतु बहादुरके एकटा चरैया जोर लोटा सक'  
पठौलएक । ओहि समय एक चरियामे सोरह सेर दूध दू बैलमे भार पर जवैत  
छलैक । बहादुर लभतरिसे छिछिया लायल, कतहु गहि भेटलैक । लगन,  
हारि-वारि एक चरहक दोकानसे एक रुप दूध लवा चरियामे नेने आयल ।  
एक टाकामे बड़का-बड़का पचीस टा मालबज आम चालिल दंत छल । तहाँ  
आब एकोटा गौंग मालबज नहि देखलैक । छी चरिये किलोक बरसे जोखिक'  
एक आमक दाम लू चरिया भेलक । एहि पावे सदाकमे पचास गुना मूल्य दूध  
कोना भ' गेलैक ? एहि प्रश्नक उत्तर कोन अर्थशास्त्री (वा अनर्थशास्त्री)  
देलाह ?

आब ओ बरभंगा नहि रहि गेलैक । वहिया माय-बाप जिवंत छलाह ।  
आब मरि गेलाह । हुनका पचास-सम्मी का गेलनि । पहिने मेना के मित्राभोज  
जाइत छलनि साठे भवतु सुरीता देवी निखरवायिनी । आब धिबद-पुनार  
मुँहसे गुनैत छिदैक—सम्मी को पावसे, पापा को सम्मी से प्यार हो गया,  
प्यार हो गया ।

हम सोच' लगलहुँ—हम कत' आबि गेल छी ? किछक जाबि गेल छी ?  
ई कोनो वैद बरभंगा छिक जे पचास वर्ष पहिने देखि कुकल छी ? नहि,  
आब त ओ जीवित गहि अछि । ओकर आस्था मरि गेलैक । जाइ की बाँचल  
लैक ।

तावत कतहुँ कानमे अमृतवर्षा भ' उठल नारीकण्ठसे—

हुसहि जवम भेल, हुसहि समाजोत्त सुख सपसहुँ नहि भेल  
हे भोलानाथ

अरे ! ई स' वैद गीत अछि जे हमर माथ गवैत छलीह । नहि, नहि ओ  
अपन संस्कृति नहि मुहल अछि । मायतु पर्यन्त ई लोकनि जीवित रहनीह  
सावत पर्यन्त अपन संस्कृतिक आरना कयमपरि नहि मरि सकैत अछि । हिनके  
गम्भक मध्य रहि आतिपूर्वक मरि सकब ।

□

## परिनिष्ठ—३

## अन्तिम पत्र

अय्य ! मुनै छी ।

आइ हम अहाँके पत्र लिखब बैसल छी । हम जनै छी जे ई चिट्ठी  
अहाँके कहियो नहि पहुँचब, तथापि लिख रहल छी । एकरा पत्रहपन  
छाड़ि और की कहल जाय ? परन्तु ई बतहुन पढ़िनहिसे अछि । अहाँक  
गलापर और बड़का आ रहल अछि ।

अहाँके सेम एक रुप भ' गेल । अहाँ कहाँ छी, कोना छी, से के कहत ?  
कोन गतासे लिख ? की सम्बोधन क' क' लिख ? एक दिन अहाँ हमर सभ  
फिख छलहुँ । आइ केओ नहि । निष्ठुर काल सभटा सम्बन्ध-सूत्र छिन्न क'  
अहाँके ल' गेल । तथापि ओहिना सम्बोधन क' रहल छी जेना आजीवन  
करैत ऐलहुँ—“अय्य मुनै छी । कहाँ छी ? मुनू ।”

१५ अगस्तके (स्वाधीनता दिवसमे) अहाँ सभटा पाथिव बन्धनसे मुक्त  
भ' गेलहुँ । परन्तु हम और अधिक माया-मोह क्लेशक बन्धनमे पड़ि गेल  
छी । लोकप्रियाद अहाँ भेल जाइ अछि । साथे की ? परिवारक मोह कोनो  
तरहे सभह'रि पाव ल' गेल । ओतय जे केओ अपलाह, अहाँक भूरि-भूरि  
प्रशंसा करय लगलाह । आइ-माससभ कहय लगलीह जे अहाँके केओ कहियो  
ककरोसँ लपटा करैत नहि देखलक । ई सभ मुनि हमरा अहाँक प्रति और  
बेसी कष्ट उमड़ि आयल ।

हम बेहूषि रहौ । आइमे कोना की भेलैक से नहि बुझबिएक । एतये  
बुझाबिएक जे सब कुटुम्ब पहुँचि गेलाह और लोक जकाँ भोज भेलैक ।

तकरा बाब हम सभ पटना ऐलहुँ । ओ जेना भूतहा घेरा जकाँ जानल ।  
सभक विचार भेलैक जे आब हम पटना छोड़ि बरभंगा जाक' रहौ । (अहाँक  
संग विचार रहल ।) पटनाक सोझाक समीप ओहुँका खेती मारिखार  
बन्धुधर एक मोट स्मारक-बन्ध प्रकाशित कैलनि जाछ आहिमे अहाँक प्रति  
स्नेह-वन्दन अछि । ओ अहाँ मरि देखि सकयहुँ ।



सहैरबासराज (बंगाली टीका) में ओझाजीक सभीयें एक भकानमे हमरा आनत बेल अछि । एतय गोपाकजी, भुवनजी (आ हुनकर कनिया) छथि । कुलदास बराबर आबि क' देखि आइ छथि । ओझाजी बेटी-बमायक मायह पर अमेरिका भेज छथि । मायः एक-दू मासमे आबि जैतछ । दिल्लीत हुनहि और राबोसँ सखनजी सेहो बू-सोन बेर आबि क' देखि गेल छथि । एहि मुझमे रूपक कन्यादान नहि भ' सकलैक । गुहरी आव मायेक स्कूलमे पढ़म लागल अछि । अहाँक मेने परिवारक सभ सोक उदासीन अछि । ककरो मुहपर उस्तास नहि छैक जे अहाँक जिवितमे छभैक । और हमर तँ कबे की ? साज भरिमे कहिया ओन पढ़े-लिखार ऐनक और मेतक ते बुझि नहि पड़स । हमर ओ सीनू बचाइ जसि रहल अछि । तकर अहाँ चिन्ता नहि करव । परन्तु मनक दुख के बाटि सकैत अछि ? ओझाजी, चौधरीजी, रतना, रमा सब फड़े छथि जे बदरीनाथसँ भ' जाइ । परन्तु आब कि ओ सह्यायिनी रहलीह जिनका संग तँ जाइ छलिन । आब एकसर कवहु जेबाक मन नहि होइ अछि ।

एहि बीचमे कइएकटा शीत-पटना बटित भेल अछि । अहाँक ओ संगिनी सेहो अहाँक बादे विदा भ' गेलीह । अहाँक बहिनपुत्र (चन्द्र) सेहो । परन्तु हम केहू बढाह छी । जहाँ तँ एहि संसारक घटना सबसँ बहुत ऊपर उठि गेल छी ।

अहाँकें हमरा आधिक बहुत चिन्ता छल । कहि गेल रही जे अहाँक हेतु बेसी गोर नहि अहाँवा । परन्तु तँ नहि भ' पवैत अछि । अतीतक तीत-भीठ स्मृतिमे डुबल रह छी और आरम्भक घा लिखैत काल तेना बहोबही नोर बहुत खनैत अछि जे लिखलाहा अखर सभ धोखरि जाइत अछि । फेर लिखै छी, फेर कटै छी—बैह जसि रहल अछि ।

एहू ठाम साहित्यकार बन्धु सभ जिलावा-पुछारीमे अवैत रहे छथि और संयोग भ' जाइ छथि । परन्तु मनमे ओ शान्ति नहि भेटैत अछि । रहि-रहि क' अहाँक स्मृति सावन-भादसक घटा जकाँ मनमे उमड़ि रहल अछि ।

सकामे मयोरु नाटिकामे सीताजीक मूर्ति देखि अहाँ केहन बिह्वल भ' गेल रही ! शिवाजीक जन्म विषोमे गेल । सारे जन्म बनबासे होइत रहलैक, हमरा मनमे सेहो सत भावना भ' रहल अछि ।

अहाँकें हम कोन-कोन नाच नहि मचीलहुँ ! अहाँ वालिका बचूत सभमे ऐलहुँ । सहियसँ एकपडिवा जकाँ हम टेमायेनी करैत रहलहुँ । अहाँ एक कोमल सुकुमार तारक बीणाक रूपमे भेटल रही, परन्तु हमरा बजावत नहि भावत, ओन जकाँ पिटैत रहलहुँ । और अहाँ हमरा प्रभन करक हेतु तबटा नाच मचैत रहलहुँ ।

अहाँक अनेको स्मृति-चित्र सिनेमाक रूप जकाँ आँखिमे नाच उठैत अछि ।

अहाँ भारतीय सांस्कृतिक समारोह (१९५५)मे मिथिलाक प्रतिनिधि-रूपमे दिल्ली जा रहल छी और ओतय अहाँक विद्यापति-संगीत केन्द्रीय शाकाण-वाणीसँ प्रचारित होइ अछि । और अहाँ सरकारनीन मंत्री केसरकर हाथसँ पुरस्कार ल' क' अवैत छी ।

कलकत्ता (१९५७)मे मैथिल समान द्वारा अहाँक अभिनन्दन होइत अछि और अहाँकें किछु कहबाक अनुरोध कैल जाइ अछि । हमरा मनमे चिन्ता होइ अछि एहन विघट समारोहमे अहाँ पहिल-पहिल माइक पर कोन बाजि सकव ! परन्तु अहाँकें नहि जानि कतयसँ शक्ति आबि जाइ अछि और अहाँ अप्रसन्नचित्त रूपसँ भाषण क' जाइ छी ।

पटना चेतना समितिक विद्यापति-सभमे अहाँ साहसपूर्वक मंचपर आबि हमर मध्यम मित्र नाटकमे 'भारती' क भूमिकामे उत्तरि अभिनय कयलहुँ । एक मध्य-वयस्का गृहिणीक एहन साहस देखि मैथिल कन्या सभकेँ अभिनव प्रेरणा भेटैत छैन और पचीस वर्ष पूर्व (१९२५)क ओहि घटगाकेँ आब एक ऐतिहासिक महत्व बेल जाइत अछि [और जे महिला समितिक 'विद्यार्थिका'मे प्रकाशित भेल अछि ।]

बंबईमे जखन [१९६५मे] हमर 'कन्यादान' फिल्मक शूटिंग होइत रहल तखन अहाँ ओतय यम दिन रहि अभिनेत्री लोकनिकें मैथिल वेदभूषा एवं आचार-व्यवहारक प्रशिक्षण देने रहिऐन [जकर सचित्र संस्मरण 'मिथिला निहिर'मे बहारावल रहल ।]

कहाँ धरि बनाउ ! एहन-एहन अनेको घटना मन पड़ैत अछि । एकटा बात मन पाड़ि रहैत छी । हम हुनू मोदी राजगीरक विधुत् रज्जुमार्ग पर गेल रही । अहाँकें हम बुलाबल गेलहुँ जे ओना सामने अवैत कुर्सीपर लपकि क' बँसि जाइ । तापत देखैत छी जे अहाँ पहिनिहि ओहिपर बसि ओहि



पार पहुँचि जाइ छी और हम ठाढ़ रहि जाइ छी । [एह बेर तँ अहाँ सँह कैलहुँ अछि । हमरा तँ देखिहि ओहि पार बलि भेलहुँ ।]

एक बेर [१९५७मे] अहाँ हुनरा तँ काशीर [धीनवर] भेल रही । ओतम गुलबर्गसँ खेलनमर्ग छोड़ा पर अनेक जकेंक गदी पार करैत धस हजार फुट ऊपर पहुँचि हिमालयक दशन कैलहुँ । अहाँक ओ अम्बारोहिनी श्रीरामनाथना आर्यक रूप एखन धरि मने अछि अछि ।

१९७८ धरि अहाँक शरीर पूर्ण स्वस्थ सुन्दर आ निर्दुःख रहल जे देखि लोककें आश्चर्य होइत छलैत । परन्तु तकर बाद [१९७९मे ८१ धरि] हम देखन भयंकर सभसँ दुःखित रहलहुँ जे ८१ धरि दायामत रहलहुँ और रात्रिबिवा हमर सेवा-अश्रुमा सभटा परिचर्या करैत अहाँ स्वयं दूटि गेलहुँ । तकरा बाद [८२मे] तेहन महाकाशक मुँहमे पड़लहुँ जे गोर उठि नहि सकलहुँ । हमर रोग छोड़ैवाक जीवन संघर्षमे अहाँ अन्तकें बलिदान क' देलहुँ ।

अहाँक ई सभ मुण कोना बिरु ? जेकर चित्तवाक भेटा करैत छी, जेकर और अधिक मन पड़्य जनैत अछि । अहाँक सहनशीलता, दायिमता, संयम, संतोष, जेकर सभ सराहना करैत छल [जे हमरा नहि छल] । अहाँ आजीवन हमर सेवा क'लहुँ मनसँ अपन प्राचीन संस्कृतिक पलपातिनी छलहुँ जाहि द्वारे पवित्र लोकनि अहाँकें मुक्तिया कहैत छलाह ।

जखन [१९७९मे] जगजीक लोक-संस्करणमे हुनका नामसँ स्वर्गीय शब्द देखियऐन तँ कूटि-कूटि कामल रही । हुनकर स्वामी राखल हमजीक बीया [जे श्री जोड़-पटाव सीधक हेतु रखने छलाह] देखियऐन तँ कष्ट कन्दम क' लठल रही । आब अहाँक फोटो आवि देखि हमरा ओहिना भ' जाइ अछि । अहाँ हुनरा कहने रही जे आब हमर मोह छोड़ि दिअ' । हमर कोटा पूरा भ' गेल ।

हुनरा जनैत अछि जे अहाँ कोनो निदान त' क' आयल छलहुँ और से तुरा कर प्रत्यक्ष मिलल बलि भेलहुँ । स्वर्ग दिव विजैत सदाशक्त हेतु अन्त प्रधान क' भेलहुँ । हजुँ मनबैत छी जे अहाँ अहाँ ओहने प्रभुलत मान्य चित्तसँ बलि जाइ । लोकक कहव छैन जे चित्तक धरामे अहाँक मुख-मण्डल देना जकेंक छन जेना जीवजीक अम्बरीक्षामे ।

अहाँ जयैत काल एकटा उपदेश देने रही—मनके रोकब । अहाँक एहि पदवर मनके हम मनमे रखने छी । परन्तु एकर तात्पर्य ब्रह्ममे नहि भयैत अछि । आब के कहत ?

राति हम अहाँकें स्वप्न देखने रही । अहाँ कोनो तेज धारामे एकतरि मावपर बहल जा रहल छी । कोनो पतवार खेववला नहि अछि । हमरा भय होइत अछि जे अहाँकें तय बड़ा क' भ' जायत । संवेदा अहाँकें अहाँपर खिलिआव लागि जाइ छी । तावतु अहाँ कथय बिलोम भ' जाइ छी से पता नहि ।

हम जनैत छी जे आब अहाँक ओ शरीर, अहाँक ओ मन आब हुनरा कहियो नहि भेटत । परन्तु अहाँ एक बात हमरा बेल क' छकब ? भुइँषापर की होइ छैन से ककरी जानल नहि छैक । जे मेलाह जे पुरि क' नहि ऐलाह, और जे कहे छथि से नेवे नहि कैल छथि । अतएव यदि ओहि ठाम वस्तुतः परलोक होइक, अहाँक सूक्ष्म शरीर हो, ओहिमे भाव-ग्रहण आ संश्लेषनक शक्ति होइक तँ अहाँ कोनो संकेत द्वारा सूचित क' दिअ' । एहिमे हमर नहि, सम्पूर्ण जातिक उत्थार हेतक ।

हम हृदयसँ अहाँकें अन्तर्वाद दैत छी जे अहाँ जहाँ होइ, जेना होइ, भगवान मुखी राखत, कहवाण करत । और हम कष्ट की नहि छी ! शुभास्ते सन्तु पाशागः ।

अहाँक भूतपूर्व जीवनसंगी  
[जिनकर अहाँ पचास बर धरि संगिनी भ'  
सहप्राणिनी बनल रहियऐन]